हिन्दी घर

ہندی گھر

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی، اُردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

हमारी नई किताबें

महात्मा गाँन्धी की वसीयत
(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : स्व० श्री मंजर अली सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गाँन्धी बाबा
(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान
275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता
100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गाँन्धी के बलिदान से सबक़
क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है
क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़
क़ीमत दो आने

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت
(ہندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: سورگیہ شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا
(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران
275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا
100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق
قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے
قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق
قیمت دو آنے۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Mutthiganj, Allahabad.

नए-नए रास्ते खुलने की आशा है. आकाश के दूसरे गोलों के साथ हमारा सम्बन्ध मानव उन्नति के मार्ग पर एक बहुत बड़ा सीमा चिन्ह है. मानव समाज की इससे बहुत बड़ी आर्थिक और नैतिक काया पलट हो सकती है.

एक ख़ास मज़ाक़ की बात इस बनावटी चाँद के सम्बन्ध में यह हुई कि हीरोशिमा और नागासाकी के बमों द्वारा इन्सानी बरबादी से जिन लोगों के अंतःकरन (ज़मीरों) को चोट नहीं लगी थी, जो लाखों बन्दरों और सुअरों को हर साल अपने साइन्सी तजरबों के लिए तड़पा-तड़पा कर मारते रहते हैं, रूसी सैटिलाइट की एक कुतिया की मौत का ख़याल करके ही उनके दिल पिघल गए और उनकी छातियों से दूध टपक पड़ा !

हम सोवियत रूस को, दुनिया को और दुनिया की जनता को इस नई ईजाद के लिए दिल से बधाई देते हैं.

15-11-57 —सुन्दरलाल

نئے نئے راستے کھلنے کی آشا ہے ۔ آکاش کے دوسرے گولوں کے ساتھ ہمارا سمبندھ مانو اُنتی کے مارگ پر ایک بہت بڑا سیما چنھ ہے ۔ مانو سماج کی اِس سے بہت بڑی آرتھک اور نیتک کایاپلٹ ہو سکتی ہے ۔

ایک خاص مذاق کی بات اِس بناوٹی چاند کے سمبندھ میں یہ ہوئی کہ ھیروشما اور ناگا ساکی کے بموں دوارا انسانی بربادی سے جن لوگوں کے انتہ کرن (ضمیروں) کو چوٹ نہیں لگی تھی، جو لاکھوں بندروں اور سوروں کو ہر سال اپنے سائنسی تجربوں کے لئے تڑپا تڑپا کر مارتے رہتے ہیں، روسی سیٹیلائٹ کی ایک کتیا کی موت کا خیال کر کے ہی اُن کے دل پگھل گئے اور اُن کی چھاتیوں سے دودھ ٹپک پڑا ۔

ہم سوویت روس کو، دنیا کو اور دنیا کی جنتا کو اِس نئی ایجاد کے لئے دل سے بدھائی دیتے ہیں ۔

15. 11. 57 —سندر لال ۔

में वह कहीं अधिक सहायक है. उस रास्ते में और गाँधी जी के बताए हुए रास्ते में समन्वय भी हो सकता है और हमारे और दुनियाँ दोनों के लिए हितकर हो सकता है. पर हमारे लिए इस समय सबसे बड़ी ज़रूरत यही है कि हम राजनैतिक, नैतिक, आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक सब मामलों में पहले अपने अन्दर निगाह डालें और देश की करोड़ों ग़रीब जनता, उसकी आवश्यकताओं और अपने आदर्शों को निगाह में रखते हुए अपने आगे का रास्ता तय करें और विश्वास के साथ उस पर चलें.

रूस का बनावटी चाँद

पिछले कुछ सप्ताह से दुनिया भर के लोगों की निगाहें सोवियत रूस के दोनों सेटेलाइट की तरफ़ जा रही हैं जिन्हें लोग बनावटी चाँद भी कहते हैं. दुनिया भर के अख़बारों में जितनी चरचा इन बनावटी चांदों की हुई है उतनी शायद ही कभी किसी और चीज़ की हुई हो. इस घटना के हमें दो ख़ास नतीजे मालूम होते हैं. पहला यह कि दुनिया को युद्ध से बचाने और शान्ति क़ायम रखने में इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है. दुनिया ने देख लिया कि साइन्सी उन्नति की दौड़ में रूस दूसरे सब देशों से कहीं आगे निकल गया. रूस की इस ईजाद ने साबित कर दिया कि यह ज़माना जनता का ज़माना है और साइन्सी और दिमाग़ी दौड़ में भी कोई साम्राज्य वादी देश साम्यवादी या समाज-वादी देशों से अन्त में बाज़ी नहीं ले जा सकता. दूसरे देशों के अन्दरूनी मामलों में बार-बार दख़ल देने वाले साम्राज्य वादी देशों के ग़लत मनसूबों को भी इससे काफ़ी धक्का पहुँचा है. यह भी ज़ाहिर है कि इस तरह के ग़लत मनसूबे अभी ख़त्म नहीं हुए हैं. हाल में अमरीका और इंगलैन्ड की तरफ़ से जो ख़बर निकली है कि वह पचास और छोटे बड़े राष्ट्रों को अपने साथ मिलाकर कम्युनिस्ट देशों और ख़ासकर रूस के ख़िलाफ़ एक नया मोर्चा खड़ा करना चाहते हैं, वह ख़ासी अफ़सोसनाक है. ज़ाहिर है कि दुनिया के दोनों प्रधान अखाड़ों में एक दूसरे को मिटाने की घातक इच्छा अभी मिटी नहीं है. पर हमें विश्वास है कि दुनिया के छोटे-छोटे और पिछड़े हुए देश इस बात को समझते जा रहे हैं और समझेंगे कि इस तरह की गुटों में शामिल होना उनके अपने लिए कितना घातक और दुनिया के लिए कितना ख़तरनाक है. कुल मिलाकर हमें विश्वास है कि रूस की इस नई ईजाद का असर—जिसका युद्ध विद्या के साथ भी गहरा सम्बन्ध है—दुनिया की शान्ति के लिए अच्छा ही होगा.

दूसरा बड़ा नतीजा रूस की इस नई ईजाद का यह होगा कि दुनिया की जनता, उसकी आर्थिक उन्नति, उसके स्वास्थ्य, उसके फैलाव और उसकी ख़ुशहाली के लिए अब

میں وہ کہیں بہتر اور عام جنتا کے لئے کہیں ادھک ہتکر ہے۔ وشو شانتی کے قایم کرنے میں بھی امریکی راستہ کے مقابلے میں وہ کہیں ادھک سہائک ہے۔ اُس راستے میں اور گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے میں سملنویہ بھی ہو سکتا ہے اور ہمارے اور دنیا دونوں کے لئے ہتکر ہو سکتا ہے۔ پر ہمارے لئے اِس سمے سب سے بڑی ضرورت یہی ہے کہ ہم راجنیتک، نیتک، آرتھک، ادیوگک اور سماجک سب معاملوں میں پہلے اپنے اندر نگاہ ڈالیں اور دیش کی کروڑوں غریب جنتا، اُس کی اوشکتاؤں اور اپنے آدرشوں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے اپنے آگے کا راستہ طے کریں اور وشواس کے ساتھ اُس پر چلیں۔

روس کا بناوٹی چاند

پچھلے کچھ سپتاہ سے دنیا بھر کے لوگوں کی نگاہیں سوویت روس کے دونوں سیٹلائٹ کی طرف جا رہی ہیں جنہیں لوگ بناوٹی چاند بھی کہتے ہیں۔ دنیا بھر کے اخباروں میں جتنی چرچا اِن بناوٹی چاندوں کی ہوئی ہے اُتنی شاید ہی کبھی کسی اور چیز کی ہوئی ہو۔ اِس گھٹنا کے ہمیں دو خاص نتیجے معلوم ہوتے ہیں۔ پہلا یہ کہ دنیا کو یدھ سے بچانے اور شانتی قایم رکھنے میں اِس سے بہت بڑی مدد مل سکتی ہے۔ دنیا نے دیکھ لیا کہ سائنسی اُنتی کی دوڑ میں روس دوسرے سب دیشوں سے کہیں آگے نکل گیا۔ روس کی ایجاد نے یہ ثابت کر دیا کہ یہ زمانہ جنتا کا زمانہ ہے اور سائنسی اور دماغی دوڑ میں بھی کوئی سامراج وادی دیش سامیہ وادی یا سماج وادی دیشوں سے انت میں بازی نہیں لے جا سکتا۔ دوسرے دیشوں کے اندرونی معاملوں میں بار بار دخل دینے والے سامراج وادی دیشوں کے غلط منصوبوں کو بھی اِس سے کافی دھکا پہنچا ہے۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ اِس طرح کے غلط منصوبے ابھی ختم نہیں ہوئے ہیں۔ حال میں امریکہ اور انگلینڈ کی طرف سے جو خبر نکلی ہے کہ وہ پچاس اور چھوٹے بڑے راشٹروں کو اپنے ساتھ ملا کر کمیونسٹ دیشوں اور خاص کر روس کے خلاف ایک نیا مورچہ کھڑا کرنا چاہتے ہیں، وہ خاصی افسوسناک ہے۔ ظاہر ہے کہ دنیا کے دونوں پردھان اکھاڑوں میں ایک دوسرے کو مٹانے کی گھاتک اچھا ابھی مٹی نہیں ہے۔ پر ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کے چھوٹے چھوٹے اور پچھڑے ہوئے دیش اِس بات کو سمجھتے جا رہے ہیں اور سمجھیں گے کہ اِس طرح کی گٹوں میں شامل ہونا اُن کے لئے کتنا گھاتک اور دنیا کے لئے کتنا خطرناک ہے۔ کل ملا کر ہمیں وشواس ہے کہ روس کی اِس نئی ایجاد کا اثر—جس کا یدھ ودیا کے ساتھ بھی گہرا سمبندھ ہے—دنیا کی شانتی کے لئے اچھا ہی ہوگا۔

دوسرا بڑا نتیجہ روس کی اِس نئی ایجاد کا یہ ہوگا کہ دنیا کی جنتا، اُس کی آرتھک اُنتی، اُس کے سواستھ، اُس کے پھیلاؤ اور اُس کی خوشحالی کے لئے اب

खड़ा कर दिया. हाल में रूस से मदद के समझौते की खबरें छपी हैं. हमारी राय इस बारे में साफ़ है. सबसे पहले यह कि न हम यह चाहते हैं और न इसकी ज़रूरत मानते हैं कि भारत किसी भी दूसरे देश के सामने इस बात के लिए हाथ पसारे, या किसी-से-किसी रूप में करज़ा ले. दूसरे यह कि अगर किसी से मदद लेनी ही हो तो वह बजाय दान या नक़द क़रज़े के केवल माल के आदान प्रदान के रूप में होनी चाहिए और वह भी अपनी हैसियत और अपनी बिसात देखकर. चीन की आर्थिक कठिनाइयाँ आज से दस बरस पहले हमारी आजकल की कठिनाइयों से कम नहीं थीं. पर चीन ने किसी साम्राज्यवादी देश के सामने हाथ नहीं पसारा. अपनी औद्योगिक (सनअती) उन्नति के लिए चीन ने केवल रूस से थोड़ी बहुत मदद ली है, और वह मदद भी, जहाँ तक हमें मालूम है' केवल इस रूप में थी कि तीन अरब अमरीकी डालर की क़ीमत का माल, मशीनें इत्यादि, जिसकी चीन को ज़रूरत थी और रूस दे सकता था, रूस चीन को पाँच बरस के अन्दर पाँच क़िस्तों में दे, और उतनी ही क़ीमत का माल, ऐसा जिसकी रूस को ज़रूरत है और चीन दे सकता है, कच्चा माल इत्यादि, चीन रूस को दस साल के अन्दर दस क़िस्तों में दे, और इस लेन देन में रूस का जो रुपया कुछ दिनों अटका रहे उसके लिए एक फ़ीसदी सालाना सूद के हिसाब से उतना ही अधिक माल चीन अपने यहाँ से रूस जाने वाले माल में बढ़ा दे, और बस. तीसरे हमारी साफ़ राय यह भी है कि इस तरह की अगर कोई मदद लेनी ही हो तो हमें साम्राज्यवादी देशों के बजाय जहाँ तक हो सके कम्युनिस्ट या ग़ैर साम्राज्यवादी देशों की मदद का अधिक स्वागत करना चाहिए. इस निगाह से यदि रूस से भारत का इस तरह का समझौता हमें अमरीका या इंगलैन्ड की मदद से बेनियाज़ कर सके तो उस दरजे तक हम उसे ग़नीमत समझते हैं.

असली इलाज

लेकिन अन्त में हम फिर दुहरा देना चाहते हैं कि देश के जिन दुखों की ऊपर के ख़त में चरचा की गयी है उनका असली इलाज हमारा इन सब बातों में महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते को ठीक-ठीक समझना और उस पर अमल करना ही हो सकता है. इंगलैन्ड और अमरीका के पूँजी-वादी रास्तों की नक़ल, जो हम इस समय कर रहे हैं, हमारे इन दुखों को और अधिक बढ़ा देगी. रूस और चीन का कम्युनिस्ट रास्ता भी एक रास्ता हो सकता है और है. अंग्रेज़ी या अमरीकी रास्ते के मुक़ाबले में वह कहीं बेहतर और आम जनता के लिए कहीं अधिक हितकर है. विश्व-शान्ति के क़ायम करने में भी अमरीकी रास्ते के मुक़ाबले

کھڑا کردیا ۔ حال میں روس سے مدد کے سمجھوتے کی خبریں چھپی ہیں ۔ ہماری رائے اِس بارے میں صاف ہے ۔ سب سے پہلے یہ کہ نہ ہم یہ چاہتے ہیں اور نہ اِس کی ضرورت مانتے ہیں کہ بھارت کسی بھی دوسرے دیش کے سامنے اِس بات کے لیئے ہاتھ پسارے' یاکسی سے کسی روپ میں قرضہ لے ۔ دوسرے یہ کہ اگر کسی سے مدد لینی ہی ہو تو وہ بجائے دان یانقد قرضے کے کیول مال کے آدان پردان کے روپ میں ہونی چاہیے اور وہ بھی اپنی حیثیت اور اپنی بساط دیکھ کر ۔ چین کی آرتھک کٹھنائیاں آج سے دس برس پہلے ہماری آجکل کی کٹھنائیوں سے کم نہیں تھیں ۔ پر چین نے کسی سامراج وادی دیش کے سامنے ہاتھ نہیں پسارا ۔ اپنی اودیوگک (صنعتی) اُنتی کے لیئے چین نے کیول روس سے تھوڑی بہت مدد لی ہے ۔ اور وہ مدد بھی ' جہاں تک ہمیں معلوم ہے' کیول اِس روپ میں تھی کہ تین ارب امریکی ڈالر کی قیمت کا مال ' مشینیں اتیادی' جس کی چین کو ضرورت تھی اور روس دے سکتا تھا' روس چین کو پانچ برس کے اندر پانچ قسطوں میں دے' اور اتنی ہی قیمت کا مال' ایسا جس کی روس کو ضرورت ہے اور چین دے سکتا ہے' کچا مال اتیادی' چین روس کو دس سال کے اندر دس قسطوں میں دے' اور اِس لین دین میں روس کا جو روپیہ کچھ دنوں اٹکا رہے اُس کے لیئے ایک فی صدی سالانہ سود کے حساب سے اتنا ہی ادھک مال چین اپنے یہاں سے روس جانے والے مال میں بڑھادے' اور بس ۔ تیسرے ہماری صاف رائے یہ بھی ہے کہ اِس طرح کی اگر کوئی مدد لینی ہی ہو تو ہمیں سامراج وادی دیشوں کے بجائے جہاں تک ہوسکے کمیونسٹ یا غیر سامراج وادی دیشوں کی مدد کا ادھک سواگت کرنا چاہیئے ۔ اِس نگاہ سے یدی روس سے بھارت کا اِس طرح کا سمجھوتہ ہمیں امریکہ یا انگلینڈ کی مدد سے بے نیاز کرسکے تو اُس درجے تک ہم اُسے غنیمت سمجھتے ہیں ۔

اصلی علاج

لیکن انت میں ہم پھر دوہرا دینا چاہتے ہیں کہ دیش کے جن دکھوں کی اوپر کے خط میں چرچا کی گئی ہے اُن کا اصلی علاج ہمارا اِن سب باتوں میں مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستے کو ٹھیک ٹھیک سمجھنا اور اُس پر عمل کرنا ہی ہو سکتا ہے ۔ انگلینڈ اور امریکہ کے پونجی وادی راستوں کی نقل' جو ہم اِس سمے کر رہے ہیں' ہمارے اِن دکھوں کو اور ادھک بڑھا دیگی ۔ روس اور چین کا کمیونسٹ راستہ بھی ایک راستہ ہو سکتا ہے اور ہے ۔ انگریزی یا امریکی راستے کے مقابلے

तिजोरियों और बंकों में जमा हैं, सच्ची सफलता की अन्दाजा उस हालत से करना चाहिये जिसमें देश के सब से नीचे के लोग, सब से ग़रीब लोग रहते हैं. पूँजीपति की अर्थनीति की कसौटी इसके ठीक उल्टी है. हमारे आजकल के शासक जैसे भी हो सके देश की कुल औद्योगिक (सनअती) उपज और देश का कुल धन बढ़ाने की चिंता में हैं. देश के लाखों और करोड़ों ग़रीबों, मजदूरों, किसानों और दस्तकारों को ऊपर उठाना उनके लिये इतने अधिक महत्व की और इतनी जल्दी की चीज नहीं है. यह ग़लत आर्थिक नीति ही हमारे इस समय के अधिकतर दुक्खों का कारण है. हमें पूरा विश्वास है कि अगर इस मामले में हम गांधी जी के बताए रास्ते पर चले होते या अब भी चलें तो हमें बाहर के किसी देश से एक पैसा भी भीख या क़र्ज़ माँगने की जरूरत नहीं है. इस बारे में गांधी जी के विचार और कम्युनिस्ट विचार, कई बातों में अलग अलग होते हुए भी, बहुत दरजे तक मिलते हुए हैं. पर रोना यही है कि हमारी आज की आर्थिक नीति न गांधी वादी है और न मार्क्सवादी. हमारी आजकल की आर्थिक नीति शुद्ध पूँजीवादी है, जो अन्त में साम्राज्यवाद की तरफ़ ले जाए बग़ैर नहीं रह सकती. अभी से जब कि प्रान्त प्रान्त में हमारे लाखों बुनकर भूखे मर रहे हैं और गांव गांव के कोल्हू पट पड़े हुए हैं, हमें अपनी मिलों के कपड़े और मिलों की चीनी बेचने के लिये देश के बाहर मन्डियों की तलाश रहती है. हम बार बार कह चुके हैं कि देश की जनता के हित में यह नीति ग़लत और बरबादकुन है.

अपनी इस ग़लत आर्थिक नीति के कारण दूसरे देशों के सामने हाथ पसारने ने हमारे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी पेचीदगियां पैदा कर दी हैं. श्री के० के० कृष्णमचारी ने अमरीका में और दूसरे साम्राज्यवादी, देशों में जिस तरह की गिरी हुई बातें कहीं उन पर देश और पार्लिमेंट के अन्दर काफी ले दे मच चुकी है. श्री कृष्णमचारी ने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को अमरीका में ग़लत चित्रित किया और अपने देश को लजाया इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता. "न्युयार्क टाइम्स" के सम्वाददाता ने श्री कृष्णमचारी की तरदीद की. जिस तरह तरदीद की है वह कृष्णमचारी को इस विषय में गुनहगार ठहराने के लिये काफी है. हमारे प्रधान मन्त्री को उनका बचाव इसलिये करना पड़ता है कि बदक़िस्मती से प्रधान मन्त्री की राय में देश के बढ़ने के लिये बाहर से पैसा आना जरूरी है और श्री कृष्णमचारी ने जैसे भी बन पड़े पैसा लाने की कोशिश में कसर नहीं उठा रखी.

एक दूसरी पेचीदगी हमारी इस ग़लत चाल ने यह पैदा कर दी कि उसने हमें मदद देने वालों में रूस और अमरीका को फिर एकबार प्रतिस्पर्धी (रक़ीबों) के रूप में लाकर

تجوریوں اور بنکوں میں جمع ہیں، سچی سپھلتا کا اندازہ اُس حالت سے کرنا چاہئے جس میں دیش کے سب سے نیچے کے لوگ، سب سے غریب لوگ رہتے ہیں۔ پونجی پتی کے ارتھ نیتی کی کسوٹی اِس کے ٹھیک الٹی ہے۔ ہمارے آج کل کے شاسک جیسے بھی ہوسکے دیش کی کل ادیوگک (صنعتی) اُپج اور دیش کا کل دھن بڑھانے کی چنتا میں ہیں۔ دیش کے لاکھوں اور کروڑوں غریبوں، مزدوروں، کسانوں اور دستکاروں کو اوپر اٹھانا اُن کے لئے اِتنی ادھک مہتو کی اور اِتنی جلدی کی چیز نہیں ہے۔ یہ غلط آرتھک نیتی ہی ہمارے اِس سمے کے ادھک تر دکھوں کا کارن ہے۔ ہمیں پورا وشواس ہے کہ اگر اِس معاملے میں ہم گاندھی جی کے بتائے راستے پر چلے ہوتے یا اب بھی چلیں تو ہمیں باہر کے کسی دیش سے ایک پیسہ بھی بھیک یا قرض مانگنے کی ضرورت نہیں ہے۔ اِس بارے میں گاندھی جی کا وچار اور کمیونسٹ وچار، کئی باتوں میں الگ الگ ہوتے ہوئے بھی، بہت درجے تک ملتے ہوئے ہیں۔ پر رونا یہی ہے کہ ہماری آج کی ارتھک نیتی نہ گاندھی وادی ہے اور نہ مارکس وادی۔ ہماری آجکل کی ارتھک نیتی شدھ پونجی وادی ہے، جو انت میں سامراجیہ واد کی طرف لے جائے بغیر نہیں رہ سکتی۔ ابھی سے جب کہ پرانت پرانت میں ہمارے لاکھوں بنکر بھوکے مر رہے ہیں اور گاؤں گاؤں کے کولہو پٹ پڑے ہوئے ہیں، ہمیں اپنی ملوں کے کپڑے اور ملوں کی چینی بیچنے کے لئے دیش کے باہر منڈیوں کی تلاش رہتی ہے۔ ہم بار بار کہہ چکے کہ دیش کی جنتا کے ہت میں یہ نیتی غلط اور بربادکن ہے۔

اپنی اِس غلط ارتھک نیتی کے کارن دوسرے دیشوں کے سامنے ہاتھ پسارنے نے ہمارے انتر راشٹریہ سمبندھوں میں بھی پیچیدگیاں پیدا کردی ہیں۔ شری کے۔ کے۔ کرشنامچاری نے امریکہ میں اور دوسرے سامراجیہ وادی دیشوں میں جس طرح کی گری ہوئی باتیں کہیں اُن پر دیش اور پارلیمینٹ کے اندر کافی لے دے مچ چکی ہے۔ شری کرشنامچاری نے بھارت کی انتر راشٹریہ استھتی کو امریکہ میں غلط چترت کیا اور اپنے دیش کو لجایا اِس میں کوئی سندیہ نہیں ہوسکتا۔ "نیویارک ٹائمس" کے سمواد داتا نے شری کرشنامچاری کی تردید کی۔ جس طرح تردید کی ہے وہ شری کرشنامچاری کو اِس وشے میں گنہگار ٹھہرانے کے لیئے کافی ہے۔ ہمارے پردھان منتری کو اُن کا بچاؤ اِس لیئے کرنا پڑتا ہے کہ بدقسمتی سے پردھان منتری کی رائے میں دیش کے بڑھنے کے لئے باہر سے پیسہ آنا ضروری ہے اور شری کرشنامچاری نے جیسے بھی بن پڑے پیسہ لانے کی کوشش میں کسر نہیں اُٹھا رکھی۔

ایک دوسری پیچیدگی ہماری اِس غلط چال نے یہ پیدا کردی کہ اُس نے ہمیں مدد دینے والوں میں روس اور امریکہ کو پھر ایک بار پرتی اسپردھی (رقیبوں) کے روپ میں لاکر

तरफ़ अन्दर की यह पिछ-घसीट और बरबादकुन शक्तियों दोनों के बीच से देस की नाव को सफलता पूर्वक लेकर लेजा सकने वाला आदमी हमें अभी दूसरा दिखाई नहीं देता. जवाहरलाल जी की देशभक्ति, सचाई और बहादुरी में भी किसी को सन्देह नहीं हो सकता.

देश के दुखों का मूल कारण

देश के इस समय के उन दुखों का जिनकी ऊपर के खत में चरचा है मूल कारण हमें यह दिखाई देता है कि देश के और कांग्रेस के अनेक बड़े बड़े नेताओं को शायद कभी भी महात्मा गांधी के आर्थिक (माली), औद्योगिक (सनअती), और एक दरजे तक नैतिक (इखलाक़ी) सिद्धान्तों में विश्वास नहीं हुआ. देश के इस समय के अधिकतर नेता अंगरेज़ी तालीम की उपज हैं, और अनेक अच्छाइयां रखते हुए भी और बरसों महात्मा गांधी के नजदीक रहते हुए भी, पच्छमी तालीम के ग़लत असर से ऊपर नहीं उठ सके.

बाहर से पैसे की मदद और हमारी आर्थिक नीति

पिछले अगस्त के महीने में तोक्यो के अन्दर हम एक दिन एक अमरीकी दोस्त से बातें कर रहे थे. हम उनसे कह रहे थे कि एशियाई देशों की इच्छा और उनके हित के विरुद्ध अमरीका का एशियाई देशों के उद्योग धन्धों में अपनी पूँजी लगाना और इस तरह उन देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दखल देना बड़ी ग़लत चीज़ और आर्थिक साम्राज्यवाद (इकॉनामिक इम्पीरियलीज़्म) की जड़ है, इत्यादि. हमारे अमरीकी दोस्त ने तुरन्त उलट कर हमें जवाब दिया, उनके शब्द हमें अब तक याद हैं—
"you cannot say that. Your own......has been going on his knees requesting U. S. A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

अर्थात्—"आप यह नहीं कह सकते. आपका अपना ......घुटनों के बल अमरीका से प्रार्थना करता रहा है कि अमरीका भारत में अपनी पूँजी लगावे, और इसके बदले में अमरीका से हर तरह की रिआयतों का वादा करता रहा है, जैसे यह कि भारत सरकार पचास साल तक ऐसे उद्योगों को जिनमें अमरीका की पूँजी लगी होगी राष्ट्र की या समाज की सम्पत्ति नहीं बनाएगी, इत्यादि."

महात्मा गांधी का उसूल था और हमें विश्वास है कि वह सोलह आने ठीक था कि किसी भी देश की आर्थिक सफलता का अन्दाज़ा उन धनराशियों से नहीं करना चाहिये जो वहां के बड़े बड़े लोगों और अमीरों की

طرف اندر کی یہ پچھ گھسیٹ اور بربادکن شکتیاں دونوں کے بیچ سے دیش کی ناؤ کو سپھلتا پوروک لے کر لے جا سکنے والا آدمی ہمیں ابھی دوسرا دکھائی نہیں دیتا۔ جواہر لال جی کی دیش بھکتی' سچائی اور بہادری میں بھی کسی کو سندیہہ نہیں ہو سکتا ۔

دیش کے دکھوں کا مول کارن

دیش کے اِس سمے کے اُن دکھوں کا جن کی اوپر کے خط میں چرچا ہے مول کارن ہمیں یہ دکھائی دیتا ہے کہ دیش کے کانگریس کے انیک بڑے بڑے نیتاؤں کو شاید کبھی بھی مہاتما گاندھی کے آرتھک (مالی)' اودیوگک (صنعتی)' اور ایک درجے تک نیتک (اخلاقی) سدھانتوں میں وشواس نہیں ہوا ۔ دیش کے اِس سمے کے ادھکتر نیتا انگریزی تعلیم کی اپج ہیں' اور انیک اچھائیاں رکھتے ہوئے بھی اور برسوں مہاتما گاندھی کے نزدیک رہتے ہوئے بھی' پچھمی تعلیم کے غلط اثر سے اوپر نہیں اٹھ سکے ۔

باہر سے پیسے کی مدد اور ہماری آرتھک نیتی

پچھلے اگست کے مہینے میں توکیو کے اندر ہم ایک دن ایک امریکی دوست سے باتیں کر رہے تھے ۔ ہم اُن سے کہہ رہے تھے کہ ایشیائی دیشوں کی اِچھا اور اُن کے ہت کے وِرودھ امریکہ کا ایشیائی دیشوں کے ادیوگ دھندوں میں اپنی پونجی لگانا اور اِس طرح اُن دیشوں کے اندر کے معاملوں میں زبردستی دخل دینا بڑی غلط چیز اور آرتھک سامراج واد (اکانومک امپیریل ازم) کی جڑ ہے' اِتیادی ۔ ہمارے امریکی دوست نے تُرنت الٹ کر ہمیں جواب دیا' اُن کے شبد ہمیں اب تک یاد ہیں—"You cannot say that. Your own......has been going on his knees requesting U. S. A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

ارتھات—" آپ یہ نہیں کہہ سکتے آپ کا اپنا...گھٹنوں کے بل امریکہ سے پرارتھنا کرتا رہا ہے کہ امریکہ بھارت میں اپنی پونجی لگاوے' اور اِس کے بدلے میں امریکہ سے ہر طرح کی رعایتوں کا وعدہ کرتا رہا ہے' جیسے یہ کہ بھارت سرکار پچاس سال تک ایسے ادیوگوں کو جن میں امریکہ کی پونجی لگی ہوگی راشٹر کی یا سماج کی سمپتی نہیں بنائے گی' اتیادی ۔"

مہاتما گاندھی کا اصول تھا اور ہمیں وشواس ہے کہ وہ سولہ آنے ٹھیک تھا کہ کسی بھی دیش کی آرتھک سپھلتا کا اندازہ اُن دھن راشیوں سے نہیں کرنا چاہیے جو وہاں کے بڑے بڑے لوگوں اور امیروں کی

देश की पीछे घसीट शक्तियाँ

दूसरी ओर देश में अभी तक इस तरह की पीछे घसीटने वाली शक्तियों का भी ज़ोर ख़त्म नहीं हुआ है जो अगर क़ाबू पाजाएं तो देश को रसातल में पहुँचाए बिना नहीं रह सकतीं. इन्हीं शक्तियों ने महात्मा गांधी की जान ली. पंजाब के "हिन्दी रक्षा आन्दोलन" पर हम अपने विचार प्रगट कर चुके हैं. यह ग़लत आन्दोलन अधिकतर इसी तरह की शक्तियों का कारनामा है.

हाल में पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दो मुख्य कार्यकर्ता दिल्ली में हमारे एक प्रतिष्ठित मित्र से मिलने आए. हमारे मित्र ने उनसे इस आन्दोलन की निरर्थकता पर बातें की. इस पर उन दोनों में से एक ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा—"मुख्य प्रश्न हमारे सामने हिन्दी का नहीं है, मुख्य प्रश्न जवाहरलाल और जवाहरलाल की सरकार को गिराना है." यह भी एक खुली बात है कि इस आन्दोलन में पंजाब भर के अन्दर और कहीं कहीं पंजाब से बाहर भी पंडित जवाहरलाल नेहरू को हिन्दुओं का विरोधी दर्शा कर जनता की नज़रों में गिराने की काफ़ी कोशिश की गई है.

देश को पीछे घसीटने वाली और बरबादी के गढ्ढे में गिराने वाली ये शक्तियां जगह जगह और भी तरह तरह के रूप धारण करती रहती हैं.

पंजाब के इस ग़लत हिन्दी आन्दोलन से देश को और ख़ासकर हिन्दी को कितना नुक़सान पहुंचा है इसका कुछ अन्दाज़ा इस एक बात से लगाया जा सकता है कि हमारी पार्लिमेंट के अठासी मेम्बरों ने सरकार को यह नोटिस दे दिया है कि सन् 1990 से पहले हिन्दी को अंग्रेज़ी का स्थान देने की बात न की जावे. श्री राजगोपालाचारी जैसे अनेक नेताओं ने तो यह साफ़ कह दिया है कि अंगरेज़ी की जगह हिन्दी को अगर कभी भी सरकारी अन्तर्प्रादेशीय भाषा बनाने की कोशिश की गई तो बलकान की तरह देश के टुकड़े टुकड़े हो जावेंगे. पंजाब के नादान हिन्दी प्रेमियों और उनके मददगारों ने राष्ट्र भाषा की हैसियत से हिन्दी को ख़त्म कर देने में अपनी तरफ़ से कोई कोशिश उठा नहीं रखी.

पं० जवाहरलाल नेहरू और उनकी सरकार

इन नाज़ुक हालात में वर्तमान शासन के अन्दर अनेक दोषों के होते हुए भी—और वह दोष बड़े गहरे दोष हैं—हमें पंडित जवाहरलाल नेहरू का अस्तित्व और देश के शासन की बाग का उनके हाथों में होना बहुत ही ग़नीमत मालूम होता है. कई बातों में हमारा उनका गहरा मतभेद है. पर एक तरफ़ नाज़ुक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और दूसरी

دیش کی پیچھے گھسیٹ شکتیاں

دوسری اور دیش میں ابھی تک اِس طرح کے پیچھے گھسیٹنے والی شکتیوں کا زور بھی ختم نہیں ہوا ہے جو اگر قابو پا جائیں تو دیش کو رساتل میں پہنچائے بنا نہیں رہ سکتیں۔ اِنہیں شکتیوں نے مہاتما گاندھی کی جان لی۔ پنجاب کے "ہندی رکشا آندولن" پر ہم وچار پرگٹ کر چکے ہیں۔ یہ غلط آندولن ادھکتر اِسی طرح کی شکتیوں کا کارنامہ ہے۔

حال میں پنجاب ہندی رکشا آندولن کے دو مکھیہ کاریہ کرتا ۔ ...لی میں ہمارے ایک پرتشٹھت متر سے ملنے آئے۔ ہمارے متر نے ...ن سے اِس آندولن کی نررتھکتا پر باتیں کیں۔ اُس پر اُن دونوں ...یں سے ایک نے بڑی سنجیدگی کے ساتھ کہا—"مکھیہ پرشن ...مارے سامنے ہندی کا نہیں ہے، مکھیہ پرشن جواہر لال اور ...جواہر لال کی سرکار کو گرانا ہے۔" یہ بھی ایک کھلی بات ہے ...ہ اِس آندولن میں پنجاب بھر کے اندر اور کہیں کہیں پنجاب ...ے باہر بھی پنڈت جواہر لال نہرو کو ہندوؤں کا ویرودھی درشا ...ر جنتا کی نظروں میں گرانے کی کافی کوشش کی ...ئی ہے۔

دیش کو پیچھے گھسیٹنے والی اور بربادی کے گڑھے میں گرانے ...لی یہ شکتیاں جگہہ جگہہ اور بھی طرح طرح کے روپ دھارن ...ی رہتی ہیں۔

پنجاب کے اِس غلط آندولن سے دیش کو اور خاص کر ...ندی کو کتنا نقصان پہنچا ہے اِس کا کچھ اندازہ اِس ایک ...ت سے لگایا جا سکتا ہے کہ ہماری پارلیمنٹ کے اٹھاسی ممبروں ... سرکار کو یہ نوٹس دے دیا ہے کہ سن 1990 سے پہلے ہندی ... انگریزی کا استھان دینے کی بات نہ کی جاوے۔ شری راج ...پالاچاری جیسے انیک نیتاؤں نے تو یہ صاف کہہ دیا ہے ... انگریزی کی جگہہ ہندی کو اگر کبھی بھی سرکاری انتر ...ادیشیہ بھاشا بنانے کی کوشش کی گئی تو بلقان کی طرح دیش ... ٹکڑے ہو جاویں گے۔ پنجاب کے نادان ہندی پریمیوں اور ...ن کے مددگاروں نے راشٹر بھاشا کی حیثیت سے ہندی کو ختم ... دینے میں اپنی طرف سے کوئی کوشش اُٹھا نہیں رکھی۔

...ڈت جواہر لال نہرو اور اُن کی سرکار

اِن نازک حالات میں ورتمان شاسن کے اندر انیک دوشوں ... ہوتے ہوئے بھی—اور وہ دوش بڑے گہرے دوش ہیں—ہمیں ...ت جواہر لال نہرو کا استیتو اور دیش کے شاسن کی باگ ...ن کے ہاتھوں میں ہونا بہت ہی غنیمت معلوم ہوتا ہے۔ ... باتوں میں ہمارا اُن کا گہرا متبھید ہے۔ پر ایک ...ف نازک انتر راشٹریہ استھتی اور دوسری

है, न कि उस का .ख़याल करना और अपने दिल पर .ख़राब नक़्श (असर) डालना और दिल को मैला करना."

देश के दिल की आवाज़

ज़ाहिर है ऊपर की हर बात हर अंश में ठीक नहीं कही जा सकती. कहीं कहीं अत्युक्ति (मुबालग़ा) की मात्रा भी साफ़ है. लेकिन इस में भी शक नहीं कि जिन मित्र ने यह .ख़त लिखा है उनके यह दिल की आवाज़ है. एक वह ही नहीं, लगभग ये ही या इसी तरह की बातें आज लाखों देश वासियों की ज़बान पर हैं. इसमें कोई शक नहीं कि यह आवाज़ इस समय देश के दिल की आवाज़ है.

दिल्ली में हमने भारत सरकार के एक ऊँचे और ज़िम्मेदार कर्मचारी को यह ख़त पढ़कर सुनाया. उन्होंने बड़े ध्यान के साथ सुना. उनका चेहरा कुछ गम्भीर मालूम हुआ. हमने समझा शायद उन्हें यह बातें अच्छी नहीं लगीं. हमने झिझकते हुए कहा:—"इन बातों में कुछ सचाई तो अवश्य है." उन्होंने तुरन्त उसी गम्भीरता के साथ जवाब दिया:—"जी नहीं! कुछ सचाई नहीं, पूरी सचाई है, इसमें जो लिखा है वह बिलकुल सच है." हमारी उनकी इस पर देर तक बातें होती रहीं.

अंग्रेज़ी की एक कहावत है—'जनता की आवाज़ भगवान की आवाज़ होती है.' इसी से मिलती हुई उर्दू की एक कहावत है—'आवाज़ -ए-.ख़ल्क़ को नक़्क़ारए .ख़ुदा समझो.' इसमें कोई शक नहीं कि ऊपर के ख़त की बातों में एक बहुत बड़ा अंश सचाई का है.

आज की कांगरेस

बयालीस बरस हमने अपने नाचीज़ ढंग से कांगरेस की सेवा की है और काफ़ी नज़दीक से तन्मय होकर की है. कांगरेस का देश पर बहुत बड़ा अहसान है. हमारे दिल में अब भी कांगरेस का बड़ा आदर है. कांगरेस और कांगरेस सरकार दोनों में इस समय भी काफ़ी ऐसे लोग हैं जिनसे बढ़कर आदमी देश में मिलना कठिन है. पर इसमें भी सन्देह नहीं कि कांगरेस संस्था आज़ादी मिलने के बाद से तेज़ी के साथ नीचे को जा रही है, कांगरेसी नेताओं, धारा सभाओं और पार्लिमेंट के कांगरेसी मेम्बरों और कांगरेसी मिनिस्ट्रों में आज काफ़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो देश की आज़ादी के संग्राम के दिनों में शायद कहीं दिखाई भी न देते थे. काफ़ी मिनिस्टर ऐसे हैं जिन्हें हमारे जैसे लोग पहचानते भी नहीं, जो सन् 1947 के बाद कांगरेसी बने हैं, और आज कांगरेस के बड़े से बड़े मशविरों में उनकी आवाज़ सुनी जाती है.

ھے، نہ کہ اُس کا خیال کرنا اور اپنے دل پر خراب نقش (اثر) ڈالنا اور دل کو میلا کرنا."

دیش کے دل کی آواز

ظاہر ھے اُوپر کی ھر بات ھر انش میں ٹھیک نہیں کہی جا سکتی. کہیں کہیں اتیشیوکتی (مبالغہ) کی ماترا بھی صاف ھے. لیکن اِس میں بھی شک نہیں کہ جن متر نے یہ خط لکھا ھے اُن کے یہ دل کی آواز ھے. ایک وہ ھی نہیں، لگ بھگ یہ ھی یا اِسی طرح کی باتیں آج لاکھوں دیش واسیوں کی زبان پر ھیں. اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ آواز اِس سمے دیش کے دل کی آواز ھے.

دلی میں ھم نے بھارت سرکار کے ایک اُونچے اور ذمہ دار کرمچاری کو یہ خط پڑھ کر سنایا. اُنھوں نے بڑے دھیان کے ساتھ سنا. اُن کا چہرہ کچھ گمبھیر معلوم ھوا. ھم نے سمجھا شاید اُنھیں یہ باتیں اچھی نہیں لگیں. ھم نے جھجھکتے ھوئے کہا:—"اِن باتوں میں کچھ سچائی تو اَوشیہ ھے." اُنھوں نے ترنت اُسی گمبھیرتا کے ساتھ جواب دیا:—"جی نہیں! کچھ سچائی نہیں، پوری سچائی ھے، اِس میں جو لکھا ھے وہ بالکل سچ ھے." ھماری اُن کی اِس پر دیر تک باتیں ھوتی رھیں.

انگریزی کی ایک کہاوت ھے—'جنتا کی آواز بھگوان کی آواز ھوتی ھے.' اِسی سے ملتی جلتی اُردو کی ایک کہاوت ھے—'آوازِ خلق کو نقارۂ خدا سمجھو' اِس میں کوئی شک نہیں کہ اُوپر کے خط کی باتوں میں ایک بہت بڑا انش سچائی کا ھے.

آج کی کانگریس

بیالیس برس ھم نے اپنے ناچیز ڈھنگ سے کانگریس کی سیوا کی ھے اور کافی نزدیک سے تنمے ھو کر کی ھے. کانگریس کا دیش پر بہت بڑا احسان ھے. ھمارے دل میں اب بھی کانگریس کا بڑا آدر ھے. کانگریس اور کانگریس سرکار دونوں میں اِس سمے بھی کافی ایسے لوگ ھیں جن سے بڑھ کر آدمی دیش میں ملنا کٹھن ھے. پر اِس میں بھی سندیہہ نہیں کہ کانگریس سنستھا آزادی ملنے کے بعد سے تیزی کے ساتھ نیچے کو جا رھی ھے. کانگریس نیتاؤں، دھارا سبھاؤں اور پارلیمنٹ کے کانگریسی ممبروں اور کانگریسی منسٹروں میں آج کافی تعداد ایسے لوگوں کی ھے جو دیش کی آزادی کے سنگرام کے دنوں میں شاید کہیں دکھائی بھی نہ دیتے تھے. کافی منسٹر ایسے ھیں جنھیں ھمارے جیسے لوگ پہچانتے بھی نہیں ھیں جو سن 1947 کے بعد کانگریسی بنے ھیں، اور آج کانگریس کے بڑے سے بڑے مشوروں میں اُن کی آواز سنی جاتی ھے.

के चलाने के पहले उसके लिये बुनियाद मजबूत बनानी थी. यानी होशियार, क़ाबिल, मातबिर (विश्वसनीय) लोग जिम्मेदार बनाने थे. और हुकूमत का डर होना चाहिये था, न कि इस .कदर आजादी दे दी कि हर शख्स अपने फ़रायज़ (कर्तव्यों) को भूल बैठा और मन माना जो चाहा सो कर रहा है. कोई पुरसाँ हाल नहीं. दफ़्तरों की अजीबो .गरीब हालत है. किसी के काम करने से मतलब नहीं. समा खराशी (कान खाना) और गोलबाजी (पार्टीबन्दी), फिरकाबन्दी से .फ़ुरसत नहीं. मालूम नहीं यह हुकूमत इस तरह कब तक और कैसे चलेगी. लोगों के दिलों में डर, तहज़ीब, प्रेम, आजजी (नम्रता) जैसी चीजें रह नहीं गई हैं. नई रोशनी के लोग और लड़के सिर्फ़ इसी धुन में रहते हैं कि किस तरह दूसरे की आँखों में धूल झोंकें और जियादह से जियादह फ़ायदा उठावें. सिवाय इसके कुछ नहीं कहा जाता—.खुदा हाफ़िज़ ! बाहर चाहे हिन्दुस्तान की कुछ भी .कद्र हो या नाम हो, अन्दरूनी हालत तो अबतर ही नजर आती है. ऐसा मालूम होता है कि हिन्दुस्तान मग़रबी (पच्छमी) चका चौंध में आ गया है और उसका दिलदादा (प्रेमी) हो गया, जो कि निशान बरबादी और ज़वाल (पतन) का है. हमारे देश में भी कारखानेजात बकसरत खुलते जा रहे हैं जिसकी वजह से दस्तकारी का ज़वाल और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है. एजुकेशन का बुरा हाल है. वह दिन बदिन एक्सपेन्सिव (.खर्चीली) और बेसूद (निरर्थक) सी हो गई है. जमाने के बदलने से या रविश (गति) से हर चीज और तौर तरीक़ में बेहतरी की सूरत पैदा करनी थी. इस नए पैसे ने जिन्दगी अलग तल्ख़ (कड़वी) करदी. बाजारों में जल्द कोई चीज मिलती नहीं, इसका बदल पुराने पैसे में अनपढ़ और ग़रीब दुकानदार जानते नहीं, और होशियार लोगों ने अपनी कमाई की सूरत निकाल ली. चाहिये तो यह था कि जिन्दगी की रविश (चाल) बिलकुल सादा और पाक हो, दिलों में नेकी, हमदर्दी, सेवा का भाव पैदा हो, न कि सिनेमा और तरीक़ तालीम व .क़ायदे कानून उलझन पैदा करने वाले बनाकर लोगों को और नई जेनरेशन (नसल) के आदर्श को गिरा दिया. क्या यही हमारी चुनीदह (चुनी हुई) हुकूमत का शेवा (तरीका) है ? ऐसी डेमोक्रेसी से तो .गुलामी बदरजहाँ बेहतर थी ! ख़ैर, कहाँ तक कहा जावे. और आप पर तो सब रोशन है. मेरा कहना सूरज को चिराग दिखाना है. लेकिन सिर्फ़ यही है कि आप से दिल का बोझ कुछ हलका करने को जी चाह उठता है. फिर भी सोचता हूँ कि जो कुछ हो रहा है मालिक (ईश्वर) की मौज (इच्छा) से ही है. इसमें आगे चलकर कुछ फ़ायदा मक़सूद (अदृष्ट) होगा. शिकवा शिकायत करना बेकार है, ख़राब चीज की तरफ़ से आँख हटा लेना ही बेहतर

کسی اسکیم کے چلانے سے پہلے اُس کے لئے بنیاد مضبوط بنانی تھی ۔ یعنی ہوشیار، قابل، معتبر (وشواسنیہ) لوگ ذمہ دار بنانے تھے ۔ اور حکومت کا ڈر ہونا چاہئے تھا، نہ کہ اِس قدر آزادی دے دی کہ ہر شخص اپنے فرائض (کرتویوں) کو بھول بیٹھا اور من مانا جو چاہا سو کر رہا ہے ۔ کوئی پرساں حال نہیں ۔ دفتروں کی عجیب و غریب حالت ہے ۔ کسی کو کام کرنے سے مطلب نہیں ۔ سمع خراشی (کان کھانا) اور غول بازی (پارٹی بازی)، فرقہ بندی سے فرصت نہیں ۔ نہ معلوم یہ حکومت اِس طرح کب تک اور کیسے چلے گی ۔ لوگوں کے دلوں میں ڈر، تہذیب، پریم، عاجزی (نمرتا) جیسی چیزیں رہ نہیں گئی ہیں ۔ نئی روشنی کے لوگ اور لڑکے صرف اِسی دھن میں رہتے ہیں کہ کس طرح دوسرے کی آنکھوں میں دھول جھونکیں اور زیادہ سے زیادہ فائدہ اُٹھاویں ۔ سوائے اِس کے کچھ نہیں کہا جاتا — خدا حافظ ! باہر چاہے ہندستان کی کچھ بھی قدر ہو یا نام ہو، اندرونی حالت تو بدتر ہی نظر آتی ہے ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہندستان مغربی (پچھمی) چکاچوندھ میں آگیا ہے اور اُس کا دلدادہ (پریمی) ہو گیا ہے، جو نشان بربادی اور زوال (پتن) کا ہے ۔ ہمارے دیش میں بھی کارخانے جات بکثرت کھلتے جا رہے ہیں جس کی وجہ سے دستکاری کا زوال اور بیروزگاری بڑھتی جا رہی ہے ۔ ایجوکیشن کا برا حال ہے ۔ وہ دن بدن ایکسپینسو (خرچیلی) اور بے سود (نرارتھک) سی ہو گئی ہے ۔ زمانہ کے بدلنے سے روش (گتی) سے ہر چیز اور طور طریقہ میں بہتری کی صورت پیدا کرنی تھی ۔ اِس نئے پیسے نے زندگی الگ تلخ (کڑوی) کر دی ۔ بازاروں میں جلد کوئی چیز ملتی نہیں ۔ اِس کا بدل پرانے پیسے میں اَن پڑھ اور پرانے دوکاندار جانتے نہیں، اور ہوشیار لوگوں نے اپنی کمائی کی صورت نکال لی ۔ چاہئے تو یہ تھا کہ روش (چال) بالکل سادہ اور پاک ہو، دلوں میں نیکی، ہمدردی، سیوا کا بھاؤ پیدا ہو ۔ نہ کہ سنیما اور طریقے تعلیم، قاعدے قانون اُلجھن پیدا کرنے والے بنا کر لوگوں کو اور نئی جنریشن (نسل) کے آدرش کو گرا دیا ۔ کیا یہی ہماری چنیدہ (چُنی ہوئی) حکومت کا شیوا (طریقہ) ہے ۔ ایسی ڈیمو کریسی سے تو غلامی بدرجہا بہتر تھی ! خیر، کہاں تک کہا جاوے ۔ اور آپ پر تو سب روشن ہے ۔ میرا کہنا سورج کو چراغ دکھانا ہے ۔ لیکن صرف یہی ہے کہ آپ سے دل کا بوجھ کچھ ہلکا کرنے کو جی چاہ اُٹھتا ہے ۔ پھر بھی سوچتا ہوں کہ جو کچھ ہو رہا ہے مالک (ایشور) کی موج (اِچھا) سے ہی ہے ۔ اِسی میں آگے چل کر ضرور کچھ فائدہ مقصود (ادرشٹ) ہوگا ۔ شکوہ شکایت بیکار ہے ۔ خراب چیز کی طرف سے آنکھ ہٹا لینا ہی بہتر

देश की हालत पर एक ख़त

देश और सरकार के एक सच्चे हितचिन्तक, नेक, ईमानदार, समझदार, ग़ैर जानिबदार, और तजरबेकार मित्र का हमारे पास एक .खत आया है. "नया हिन्द" के भी वह शुरू से प्रेमी रहे हैं. उस खत का एक हिस्सा, उन्हीं शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं. वह लिखते हैं —

"ज़माना कुछ ऐसा .खराब आगया है कि इनसान .खुदग़रज़ होता जा रहा है. सेवा भाव और प्रेम भाव बिलकुल नेस्त नाबूद होते जा रहे हैं. हरेक अपने कारबार में मश.गूल और परेशान है. मँहगाई और टैक्स बढ़ते जा रहे हैं जिसकी वजह से ज़िन्दगी वबाले जान बन गई है. अगर कोई ईमानदारी, नेकनीयती से रहना चाहे भी तो हज़ार मुशकिलों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है. बेईमानी, रिश्वतखोरी, दग़ाबाज़ी और झूट का बोल बाला है, जिसकी 'ज़िम्मेदार हमारी मौजूदा हकूमत और कारकुनों का गिरा हुआ कैरेक्टर है. पब्लिक पर इस क़दर टैक्स लगा दिये हैं कि जिनका असर बेचारी मिडिल क्लास पर पड़ रहा है और वह पिसी जा रही है, और पूँजी वाले या धन्धा करने वाले अपनी चालाकी और ऐयारी से .खुश और मालामाल हैं और बेईमानी का मौक़ा मिल रहा है, जो रुपया हकूमत इकट्ठा कर रही है या आमदनी बढ़ा रही है वह बिलकुल बेतरतीबी और बेहूदा तौर से बरबाद हो रहा है. या यह कहो कि चन्द चालाक और ग़द्दार लोगों की जेबों में जा रहा है. यह फ़र्स्ट और सेकेण्ड फ़ाइव इयर प्लैन्स सिर्फ़ काग़ज़ी घोड़े हैं या दुनिया की आँखों में धूल झोंकी जा रही है. देखना तो यह है कि जिस .क़दर रुपया .खर्च हो रहा है क्या वाक़ई हुआ भी है और काम भी उसके एवज़ हुआ है? लेकिन इसकी ग़रज़ किसको है? यह सर दर्द मोल कौन ले? जो हो रहा है होने दो! किसी स्कीम

دیش کی حالت پر ایک خط

دیش اور سرکار کے ایک سچے ہت چنتک' نیک' ایماندار' سمجھدار' غیر جانب دار' اور تجربہ‌کار متر کا ہمارے پاس ایک خط آیا ہے . "نیا ہند" کے بھی وہ شروع سے پریمی رہے ہیں . اس خط کا ایک حصہ' انہیں کے شبدوں میں ہم نیچے دے رہے ہیں . کمانوں کے اندر کے شبد ہمارے ہیں . وہ لکھتے ہیں —

"زمانہ کچھ ایسا خراب ہو گیا ہے کہ اِنسان خودغرض ہوتا جا رہا ہے . سیوا بھاؤ اور پریم بھاؤ بالکل نیست نابود ہوتے جا رہے ہیں . ہر ایک اپنے کاربار میں مشغول اور پریشان ہے . مہنگائی اور ٹیکس بڑھتے جا رہے ہیں جس کی وجہ سے زندگی وبال جان ہو گئی ہے . اگر کوئی ایمانداری' نیک نیتی سے رہنا چاہے بھی تو ہزار مشکلوں اور مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے . بے‌ایمانی' رشوت خوری' دغابازی اور جھوٹ کا بول بالا ہے . جس کی ذمہ‌دار ہماری موجودہ حکومت اور کارکنوں کا گرا ہوا کیریکٹر ہے . پبلک پر اِس قدر ٹیکس لگا دیئے ہیں کہ جس کا اثر بےچاری مڈل کلاس پر پڑ رہا ہے اور وہ پسی جا رہی ہے' اور پونجی والے یا دھندا کرنے والے اپنی چالاکی اور عیاری سے خوش اور مالا مال ہیں' اور بے‌ایمانی کا موقع مل رہا ہے . جو روپیہ حکومت اکٹھا کر رہی ہے یا آمدنی بڑھا رہی ہے وہ بالکل بےترتیبی اور بیہودہ طور سے برباد ہو رہا ہے. یا یہ کہو کہ چند چالاک اور غدار لوگوں کی جیبوں میں جا رہا ہے . یہ فرسٹ اور سیکنڈ فائیوایر پلین صرف کاغذی گھوڑے ہیں یا دنیا کی آنکھوں میں دھول جھونکی جا رہی ہے . دیکھنا تو یہ ہے کہ جس قدر روپیہ خرچ ہو رہا ہے کیا واقعی ہوا بھی ہے اور کام بھی اُس کے عوض ہوا ہے ? لیکن نہ اِس کی غرض کسی کو ہے ? یہ سردرد کون مول لے ? جو ہو رہا ہے ہونے دو !

18 हिस्सों में तक़सीम कर दिया गया है ताकि मज़मून आसानी से समझ में आ सकें. इन जिल्दों में गान्धी जी की ज़िन्दगी की फ़िलासफ़ी, उनके जीवन दर्शन की झाँकी हमें देखने को मिलती है. इनसे हमें सबक़ मिलता है कि जिस रास्ते चलकर आज पच्छिम ज़िन्दगी और मौत का खेल खेल रहा है उससे हिन्दुस्तान को कैसे बचाया जा सकता है और ख़ुद पच्छिम इस ख़ुदकुशी से कैसे अपने को बचा सकता है ?

पहली जिल्द के पहले हिस्से में स्वराज, समाजवाद और साम्यवाद की चर्चा है. दूसरे में इस बात की चर्चा है कि जो श्रम करे वही खाने का हक़दार है. तीसरे में आर्थिक बराबरी का सिद्धान्त पेश किया गया है. चौथे में पैदायशी अमीरों को बताया गया है कि उनकी जायदाद उनके पास महज़ थाती या धरोहर की शक्ल में है, वे उसके मालिक नहीं हैं.

दूसरी जिल्द के पहले हिस्से में मशीनरी और उद्योग-वाद की चरचा है. इसमें यह दिखाया गया है कि ज़िन्दगी में मशीनों की मुनासिब जगह क्या है. दूसरे में स्वदेशी की विवेचना की गई है. तीसरे में उत्पादन के स्वरूप पर तफ़सील में बहस की गई है. चौथे में गाँव के उद्योग धन्धों की मुल्क के आर्थिक निज़ाम में मुनासिब जगह आँकी गई है. पाँचवें में खादी के बुनियादी पहलू और विकेन्द्रित उद्योग-वाद में उसकी महत्ता को दिखाया गया है. छठवें में दूसरे हाथ के धन्धों का ज़िक्र किया गया है और सातवें में नुमा-इशों को किस ढंग से करना चाहिये इस पर विचार किया है.

तीसरी जिल्द के पहले हिस्से में काम और मज़दूरी की चरचा है कि किस तरह मज़दूर के शोषण को ख़त्म किया जा सकता है ? दूसरे में मज़दूरी की दर पर बहस की गई है कि कम-से-कम मज़दूरी कितनी होनी चाहिये उतनी कि जिससे पेट भरा जा सके और इनसान-इनसान की तरह रह सके. तीसरे में किसानों और मज़दूरों के संगठन पर प्रकाश डाला गया है. चौथे में अहमदाबाद की मशहूर हड़ताल पर रोशनी डाली गई है जिसके नेता ख़ुद गान्धी जी थे. पाँचवें में हड़ताल और पिकेटिंग की चरचा है. छठवें में किसानों और ज़मींदारों की चरचा है. सातवें में औद्योगिक विवादों को किस तरह शान्ति से सुलझाया जा सकता है इसके उसूल समझाये गये हैं.

श्री खेर ने बड़ी मेहनत के साथ इन जिल्दों का सम्पादन किया है. हम नवजीवन पब्लिशिंग हाउस को इतने उपयोगी प्रकाशन के लिये बधाई देते हैं. हमारी दरख़ास्त है कि राजनीति और मज़दूरों की तहरीक में दिलचस्पी लेने वाले हर कार्यकर्ता और देश भक्त देशवासियों को इन जिल्दों का गम्भीर अध्ययन करना चाहिए. छपाई सफ़ाई सब बहुत उम्दा है.

—वि० ना० पांडे.

---

18 حصوں میں تقسیم کر دیا گیا ہے تاکہ مضمون آسانی سے سمجھ میں آ سکیں ۔ اِن جلدوں میں گاندھی جی کی زندگی کی فلسفی، اُن کے جیون درشن کی جھانکی ہمیں دیکھنے کو ملتی ہے ۔ اِن سے ہمیں سبق ملتا ہے کہ جس راستے پر چل کر آج پچھم زندگی اور موت کا کھیل کھیل رہا ہے اُس سے ہندستان کو کیسے بچایا جا سکتا ہے اور خود اِس خودکشی سے کیسے اپنے کو بچا سکتا ہے ؟

پہلی جلد کے پہلے حصے میں سوراج، سماج واد اور سامیہ واد کی چرچا ہے ۔ دوسرے میں اِس بات کی چرچا ہے کہ جو شرم کرے وہی کھانے کا حقدار ہے ۔ تیسرے میں آرتھک برابری کا سدھانت پیش کیا گیا ہے ۔ چوتھے میں پیدائشی امیروں کو بتایا گیا ہے کہ اُن کی جائیداد اُن کے پاس محض تھاتی یا دھروھر کی شکل میں ہے، وے اُس کے مالک نہیں ہیں ۔

دوسری جلد کے پہلے حصے میں مشینری اور ادیوگ واد کی چرچا ہے ۔ اِس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ زندگی میں مشینوں کی مناسب جگہ کیا ہے ۔ دوسرے میں سودیشی کی ویویچنا کی گئی ہے ۔ تیسرے میں اُتپادن کے سوروپ پر تفصیل میں بحث کی گئی ہے ۔ چوتھے میں گاؤں کے ادیوگ دھندوں کی ملک کے آرتھک نظام میں مناسب جگہ آنکی گئی ہے ۔ پانچویں میں کھادی کے بنیادی پہلو اور ویکیندرت ادیوگ واد میں اُس کی مہتتا کو دکھایا گیا ہے ۔ چھٹویں میں دوسرے ہاتھ کے دھندوں کا ذکر کیا گیا ہے اور ساتویں میں نمائشوں کو کس ڈھنگ سے کرنا چاہئے اِس پر وچار کیا گیا ہے ۔

تیسری جلد کے پہلے حصے میں کام اور مزدوری کی چرچا ہے کہ کس طرح مزدور کی شوشن کو ختم کیا جا سکتا ہے ؟ دوسرے میں مزدوری کی در پر بحث کی گئی ہے کہ کم سے کم مزدوری کتنی ہونی چاہئے، اتنی کہ جس سے پیٹ بھرا جا سکے اور اِنسان اِنسان کی طرح رہ سکے ۔ تیسرے میں کسانوں اور مزدوروں کے سنگٹھن پر پرکاش ڈالا گیا ہے ۔ چوتھے میں احمدآباد کی مشہور ہڑتال پر روشنی ڈالی گئی ہے جس کے نیتا خود گاندھی جی ہی تھے ۔ پانچویں میں ہڑتال اور پکیٹنگ کی چرچا ہے ۔ چھٹویں میں کسانوں اور زمینداروں کی چرچا ہے ۔ ساتویں میں اُدیوگک ویواروں کو کس طرح شانتی سے سلجھایا جا سکتا ہے اِس کے اُصول سمجھائے گئے ہیں ۔

شری کھیر نے بڑی محنت کے ساتھ اِن جلدوں کا سمپادن کیا ہے ۔ ہم نوجیون پبلشنگ ہاؤس کو اِتنے اُپیوگی پرکاشن کے لئے بدھائی دیتے ہیں ۔ ہماری درخواست ہے کہ راج نیتی اور مزدوروں کی تحریک میں دلچسپی لینے والے ہر کاریہ کرتا اور دیش بھکت دیشواسیوں کو اِن جلدوں کا گمبھیر ادھیین کرنا چاہئے ۔ چھپائی صفائی سب بہت عمدہ ہے ۔

—وی۔ نا۔ پانڈے ۔

ECONOMIC AND INDUSTIAL LIFE AND RELATIGNS, VOLS. (i), (ii) AND (iii)

ज़िन्दगी के आर्थिक (इक़्तसादी) और औद्योगिक पहलुओं और कारख़ाने के मालिकों और मज़दूरों के आपसी सम्बन्धों पर महात्मा गान्धी के लेखों, ख़तों, तक़रीरों, उपदेशों और बातचीतों का संग्रह (मजमुआ). संग्रहकार और सम्पादक—वी० बी० खेर; शाया करने वाले नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद; तीनों जिल्दों के दाम आठ रुपया.

महात्मा गान्धी न सिर्फ़ मुल्क के सियासी नेता थे बल्कि नई बुनियादों पर दुनिया की तामीर करने की तालीम देने वाले भी थे. पच्छिम ने यूरोप और अमरीका के मुल्कों और रियासतों में इस दरजे कारख़ाने बनाये और इन कारख़ानों की पैदावार को इस क़दर यकजाई (केन्द्रित) कर दिया कि मुल्कों की दौलत चन्द पूँजीपतियों के हाथों में इकट्ठा हो गई और अमीरों और ग़रीबों के बीच की खाई इतनी गहरी और चौड़ी हो गई और वह नफ़रत और आपसी कशमकश से इतनी भर गई कि उसने पच्छिमी सभ्यता और तहज़ीब की बुनियादों को ही जड़ से खोखला कर दिया. अमीर बेहद अमीर हो गये और ग़रीब बेहद ग़रीब हो गये. ग़रीबों के पेट ख़ाली हो गये और अमीरों की पेटियाँ भर गईं. पच्छिम ने उसका एक ही हल निकाला और वह हिंसात्मक समाजवाद. गान्धी जी ने तजवीज़ की कि इस हल के नतीजे में हम दो ख़ौफ़नाक जंग देख चुके हैं और तीसरी जंग की जिस पैमाने पर तैयारियाँ हो रही हैं उससे मर्ज़ और मरीज़ दोनों ही ख़त्म हो जायेंगे. मर्ज़ को ठीक करने के लिए गान्धी जी का नुसख़ा था—अहिंसात्मक सोशलीज़्म. इसे कैसे दुनियाँ में क़ायम किया जाय, समाज को कैसे इस तरफ़ लाया जाय, लालच को कैसे त्याग में बदला जाय, नफ़रत के दरिया को कैसे मुहब्बत के सरचश्मे में बदला जाय, किन बुनियादों पर मज़दूरों का संगठन किया जाय, अमीरों और ग़रीबों के फ़र्क़ को मिटाकर कैसे समाज में बराबरी के दरजे को क़ायम किया जाय, उत्पादन का किस तरह विकेन्द्रीकरण किया जाय और दुनिया की तहज़ीब को किस तरह हिंसा की बुनियादों से हटाकर अहिंसा की बुनियादों पर क़ायम किया जाय—इसकी तफ़सील आपको इन तीन जिल्दों के क़रीब आठ सौ सफ़ों में देखने को मिलेगी. इन जिल्दों को

ECONOMIC AND INDUSTRIAL LIFE AND RELATIONS, Vols. (i) (ii) AND (iii)

زندگی کے ارتھک (اقتصادی) اور اودیوگک پہلوؤں اور کارخانے کے مالکوں اور مزدوروں کے آپسی سمبندھوں پر مہاتما گاندھی کے لیکھوں، خطوں، تقریروں، اُپدیشوں اور بات چیتوں کا سنگرہ (مجموعہ)۔ سنگرہ کار اور سمپادک—وی۔ بی۔ کھیر؛ شائع کرنے والے نوجیون پبلشنگ ہاؤس احمدآباد؛ تینوں جلدوں کے دام آٹھ روپئے۔

مہاتما گاندھی نہ صرف ملک کے سیاسی نیتا تھے بلکہ نئی بنیادوں پر دنیا کی تعمیر کرنے کی تعلیم دینے والے بھی تھے۔ پچھم نے یورپ اور امریکہ کے ملکوں اور ریاستوں میں اس درجے کارخانے بنائے اور اِن کارخانوں کی پیداوار کو اِس قدر یکجائی (کیندرت) کردیا کہ ملکوں کی دولت چند پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں اکٹھا ہو گئی اور امیروں اور غریبوں کے بیچ کی کھائی اتنی گہری اور چوڑی ہوگئی اور وہ نفرت اور آپسی کشمکش سے اتنی بھر گئی کہ اُس نے پچھمی سبھیتا اور تہذیب کی بنیادوں کو ہی جڑ سے کھوکھلا کر دیا۔ امیر بے حد امیر ہو گئے اور غریب بے حد غریب ہو گئے۔ غریبوں کے پیٹ خالی ہو گئے اور امیروں کی پیٹیاں بھر گئیں۔ پچھم نے اِس کا ایک ہی حل نکالا اور وہ ہنساتمک سماجواد۔ گاندھی جی نے تجویز کی کہ اِس حل کے نتیجے میں ہم دو خوفناک جنگ دیکھ چکے ہیں اور تیسرے جنگ کی جس پیمانے پر تیاریاں ہو رہی ہیں اُس سے مرض اور مریض دونوں ہی ختم ہو جائیں گے۔ مرض کو ٹھیک کرنے کے لئے گاندھی جی کا نسخہ تھا—اہنساتمک سوشلزم۔ اسے کیسے دنیا میں قایم کیا جائے، سماج کو کیسے اِس طرف لایا جائے، لالچ کو کیسے تیاگ میں بدلا جائے، نفرت کے دریا کو کیسے محبت کے سرچشمے میں بدلا جائے، کن بنیادوں پر مزدوروں کا سنگٹھن کیا جائے، امیروں اور غریبوں کے فرق کو مٹا کر کیسے سماج میں برابری کے رتبے کو قایم کیا جائے، اُتپادن کا کس طرح وکیندریکرن کیا جائے اور دنیا کی تہذیب کو کس طرح ہنسا کی بنیادوں سے ہٹا کر اہنسا کی بنیادوں پر قایم کیا جائے—اِس کی تفصیل آپ کو اِن تین جلدوں کے قریب آٹھ سو صفحوں میں دیکھنے کو ملے گی۔ اِن جلدوں کو

इन टोपियों के इस्तेमाल का भी अजीब हाल होता है. कोई इनको किसी के खौफ़ से लगाता है तो कोई इनका उपयोग जाती लोभ से करता है. कोई किसी पालिसी से लगाता है तो कोई रयाकारी से. लिहाजा सियासी टोपी एक शुबहे की चीज हो कर रह गई है और "अविश्वास" की छाप उसपर लग गई है इसलिये उसकी पोजीशन किसी हाल में साफ़ नहीं रही.

यह टोपियाँ और झन्डियाँ प्रचार तो अपना अधिक रखती हैं समाचार से भी अधिक, परन्तु सर रहते हुए भी अगर इज्जत न पा सकें तो 'अचरज'.

लाखों मनुष्य रंग बिरंगे लेबिल लगाये हुये हैं अपने सरों पर, लेकिन हमारी नजर और अनुभव में कितने ही वह सर है कि जो बे लेबिल हैं और ज्यादा आनरेबिल .

اِن ٹوپیوں کے استعمال کا بھی عجیب حال ہوتا ھے ۔ کوئی اِن کو کسی کے خوف سے لگاتا ھے تو کوئی اِن کا اپیوگ ذاتی لوبھ سے کرتا ھے ۔ کوئی کسی پالیسی سے لگاتا ھے تو کوئی ریاکاری سے ، لہٰذا سیاسی ٹوپی ایک شبہ کی چیز ہوکر رہ گئی ہے اور 'اوشواس' کسی حال میں چھاپ اُس پر لگ گئی ھے اِس لئے اُس کی پوزیشن کسی حال میں صاف نہیں رہی ۔

یہ ٹوپیاں اور جھنڈیاں پرچار تو اپنا ادھک رکھتی ھیں سماچار سے بھی ادھک، پرنتو سر پر رہتے ہوئے بھی اگر عزت نہ پاسکیں تو 'اچرج' ۔

لاکھوں منشیہ رنگ برنگ لیبل لگائے ہوئے ھیں اپنے سروں پر، لیکن ھماری نظر اور انوبھو میں کتنے ھیں وہ سر کہ جو بے لیبل ھیں زیادہ آنرا ایبل ھیں ۔

दिमाग़ों के अन्दर सियासी खिचड़ी पकती रहती है और सरपोश ढँका रहता है खोपड़ी की देगची पर—बाज़ भूखे और नदीदे अधगली ही खा जाते हैं ढकनी खोलकर, और बाज़ जल्दी भी नहीं छोड़ते वे सवेरे होकर, जिसके नतीजे में या तो उनके पेट में दर्द उठने लगता है या बद-हज़मी हो जाती है. यह सियासी बदहज़मी समाजी ज़िन्दगी के लिये निहायत ख़तरनाक है जिसका ख़मयाज़ा बुरी तरह भुगतना पड़ता है न केवल उस एक व्यक्ति को बल्कि सारी देगची को.

यह 'सरपोश' क़ौम-फ़रोश भी साबित होते हैं बाज़-बाज़ समय. क़ौम-फ़रोशी का सौदा सूदमन्द साबित होता है इनके लिये. इसलिये वह टोपियाँ अपनी रंगीन कमाई से आलीशान कोठियाँ बनाती हैं बक़ीया अपनी ज़िन्दगी ऐश आराम से गुज़ारने के लिये—आज हमारी नज़र में बहुत सी ऐसी टोपियाँ भी हैं और इनकी बनाई हुई कोठियाँ भी.

यह रंग-बिरंग की टोपियाँ जैसे किशतियाँ हों रंगीन बादबान वाली और चल रही हों जीवन के समुन्द्र पर विचार धाराओं के सहारे सहारे.

या जैसे यह टोपियाँ साइज़ में जैसे कमरशियल लिफ़ाफ़े, पर रंग में गोया सियासी इशारे.

यह टोपियाँ अपने-अपने रंग में सन्देश लिये फिरती हैं इधर से उधर.

हर टोपी नीति रखती है अपनी-अपनी और पैग़ाम अपना अपना. इसलिये यह कहना ठीक है कि हर टोपी प्रचारक भी है और प्रकाशक भी, मगर क्योंकि इनके रंग पक्के और वचन सच्चे नहीं इसलिये मार खा जाती हैं सियासत के मैदान में और आ गिरती हैं अन्त में सत्य के चरणों में.

दिमाग़ी भावनाओं का असर टोपियों पर अवश्य पड़ता है. इसी का यह कारण होता है कि बाज़ टोपियाँ काली, बाज़ पीली और बाज़ लाल या सुफ़ेद नज़र आती हैं. ऊपर से जो भी उनके रंग हों पर भीतर से अकसर काली होती हैं और तास्सुब के उन पर जाले होते हैं. इसलिये जो कुछ वह देखती हैं जालेदार आखों से.

जब किसी पार्टी का पार्टी से और नीति का नीति से विरोध होता है तो उसका आप से लाज़मी तौर पर विचार बदलता है—ख़्याल पलटता है. विचार और ख़्याल बदलता है तो मार्ग भी बदलता है और मार्क भी. ऐसी ही हालत में सर टोपियाँ बदलते हैं और टोपियाँ सर बदलती हैं. बाज़ टोपियाँ "फ़िट सिर" न मिलने के कारण उड़ती फिरती हैं हवा में या अटकी रह जाती हैं स्मतूल फ़िज़ा में.

دماغوں کے اندر سیاسی کھچڑی پکتی رہتی ہے اور سرپوش ڈھکا رہتا ہے کھوپڑی کی دیگچی پر— بعض بھوکے اور ندیدے ادھ گلی ہی کھاجاتے ہیں ڈھکنی کھول کر' اور بعض جلدی بھی نہیں چھوڑتے وے سویرے ہوکر' جس کے نتیجے میں یا تو اُن کے پیٹ میں درد اُٹھنے لگتا ہے یا بدہضمی ہوجاتی ہے - یہ سیاسی بدہضمی سماجی زندگی کے لئے نہایت خطرناک ہے جس کا خمیازہ بری طرح بھگتنا پڑتا ہے نہ کیول اُس ایک ویکتی کو بلکہ ساری دیگچی کو.

یہ 'سرپوش' قوم فروش بھی ثابت ہوتے ہیں بعض بعض سمے . قوم فروشی کا سودا سودمند ثابت ہوتا ہے ان کے لئے. اِس لئے وہ ٹوپیاں اپنی رنگین کمائی سے عالیشان کوٹھیاں بناتی ہیں بقیہ اپنی زندگی عیش آرام سے گزارنے کے لئے— آج ہماری نظر میں بہت سی ایسی ٹوپیاں بھی ہیں اور اُن کی بنائی ہوئی کوٹھیاں بھی.

یہ رنگ برنگ کی ٹوپیاں جیسے کشتیاں ہوں رنگین بادبان والی اور چل رہی ہوں جیون کے سمندر پر وچار دھاراؤں کے سہارے سہارے .

یا جیسے یہ ٹوپیاں سائز میں جیسے کمرشل لفافے' پر رنگ میں گویا سیاسی اشارے .

یہ ٹوپیاں اپنے اپنے رنگ میں سندیش لئے پھرتی ہیں اِدھر سے اُدھر .

ہر ٹوپی نیتی رکھتی ہے اپنی اپنی اور پیغام اپنا اپنا . اِسلئے یہ کہنا ٹھیک ہے کہ ہر ٹوپی پرچارک بھی ہے اور پرکاشک بھی' مگر کیونکہ اِن کے رنگ پکے اور وچن سچے نہیں اس لئے مار کھاجاتی ہیں سیاست کے میدان میں اور آ گرتی ہیں انت میں ستیہ کے چرنوں میں .

دماغی بھاؤناؤں کا اثر ٹوپیوں پر اوشیہ پڑتا ہے .سی کا یہ کارن ہوتا ہے کہ بعض ٹوپیاں کالی' بعض پیلی اور بعض لال یا سفید نظر آتی ہیں. اوپر سے جو بھی اُن کے رنگ ہوں پر بھیتر سے اکثر کالی ہوتی ہیں اور تعصب کے اُن پر جالے ہوتے ہیں . اِس لئے جو کچھ وہ دیکھتی ہیں جالے دار آنکھوں سے .

جب کسی پارٹی کا پارٹی سے اور نیتی کا نیتی سے ورودھ ہوتا ہے تو اسکی آپ سے لازمی طور پر وچار بدلتا ہے . خیال پلٹتا ہے . وچار اور خیال بدلتا ہے تو مارگ بھی اور مارک بھی . ایسی ہی حالت میں سر ٹوپیاں بدلتے ہیں اور ٹوپیاں سر بدلتی ہیں . بعض ٹوپیاں" فٹ سر" نہ ملنے کے کارن اُڑتی پھرتی ہیں ہوا میں یا اٹکی رہ جاتی ہیں سمتول فضا میں .

इन्तिक़ाम का भाव यह रखती हैं अपने चाव में.
तलवार की काट यह रखती हैं अपनी धार में.
जिदाल क़ताल में ख़ून की नदियाँ यह बहाती हैं.
अमन आशती में सुलह के फरहरे यह उड़ाती हैं.
दरगाह की कलसी पर हिलाल का परचम यह लहराती हैं.
बजरंगबलि की छतर पर हनुमान का निशान यह उड़ाती हैं.
शासन के भवन पर इठला इठला के यह चलती हैं.
जनसंघ के संगठन से अखन्ड अखन्ड यह पुकारती हैं.
दलित के मन मन से दमन दमन यह चिल्लाती हैं.
सुर्ख़ फ़ौज के मोर्चे से नारा इंक़लाब का यह लगाती हैं.
एकता के संगम पे गङ्गा जमनी राग यह आलापती हैं.
प्रेम के मन्दिर पे धार्मिक भाव यह जगाती हैं.
पीपल के दरख़्त पे हिन्दू मुसलिम फ़िसाद यह कराती हैं.

यदि 'विश्व शान्ति' के अन्दोलन इनके दम से चलते हैं तो 'विश्व युद्ध' के हंगामों में झण्डे इनके लहराते हैं.

यह सब कुछ सही; इनकी तमाम रंगीनियाँ, दिलचस्पियाँ और ख़ूबसूरतियाँ अपनी जगह पर, लेकिन इस-तक़लाल नहीं होता इनके मिज़ाज में. धैर्य नहीं होता इनके स्वाभाव में—हवा का रुख़ देखकर यह अपना रुख़ फेरती हैं और फ़िज़ा का रङ्ग भांप कर यह अपना रंग बदलती हैं. कितनी तलव्वन मिज़ाज होती हैं यह और कितनी हवा परस्त !

झंडियों और टोपियों का एक दूसरे से ऐसा ही सम्बन्ध है जैसे हर रंग को रंग से निसबत, लेकिन जब हवा साथ नहीं देती समय का तो हम देखते हैं रंग बिरंग की टोपयाँ उड़ती फिरती हैं पवन में या जलती नज़र आती हैं अग्नि में.

जैसे किसी राज का सिक्का चालू रहता है राज भर में, इसी प्रकार राज-रंग की टोपियाँ परछाइं होती हैं राज-चलन की. जैसे किसी खोट के कारण या किसी नीति के अनुसार सिक्का टकसाल बाहर हो जाता है, वैसे ही टोपियाँ भी यकायक उड़ जाती हैं सरों से और दूसरी आ बैठती हैं उनकी जगह.

टोपियाँ ढक्कन का काम भी देती हैं. इसलिये इनको सरपोश भी कहा जा सकता है. सरपोश बनकर यह बहुत से बड़े-बड़े बेवक़ूफ़ों की ऐब पोशी भी करती हैं और बहुत से शासकों को नई-नई आफ़तों से बचाती हैं उनके पाप ढांककर.

यह रंगीन सरपोश कितने ख़ूबसूरत ऐब पोश होते हैं सचमुच. लेकिन इनके नीचे कितना गन्दा मादा परवरिश पाता रहता है कभी-कभी. आख़िर यह कि अन्दर ही अन्दर फूलते-फलते किसी भी वक़्त वह फूट निकलता है और सारा भेद खुल जाता है बदबू फेलकर.

اِنتقام کا بھاؤ یہ رکھتی ہیں اپنے چاؤ میں ۔
تلوار کی کاٹ یہ رکھتی ہیں اپنی دھار میں ۔
جدال قتال میں خون کی ندیاں یہ بہاتی ہیں۔
امن آشتی میں صلح کے پھریرے یہ اُڑاتی ہیں ۔
درگاہ کی کلسی پر ہلال کا پرچم یہ لہراتی ہیں۔
بجرنگ بلی کی چھتری پر ہنومان کا نشان یہ اُڑاتی ہیں ۔
شاسن کے بھون پر اِٹھلا اِٹھلا کے یہ چلتی ہیں ۔
جن سنگھ کے سنگٹھن سے اکھنڈ اکھنڈ یہ پکارتی ہیں ۔
دلت کے من من سے دمن دمن یہ چلاتی ہیں ۔
سرخ فوج کے مورچے سے نعرۂ اِنقلاب کا یہ لگاتی ہیں ۔
ایکتا کے سنگم پہ گنگا جمنی راگ یہ الاپتی ہیں ۔
پریم کے مندر پہ دھارمک بھاؤ یہ جگاتی ہیں ۔
پیپل کے درخت پہ ہندو مسلم فساد یہ کراتی ہیں ۔

یدی 'وشو شانتی' کے آندولن اِن کے دم سے چلتے ہیں ، تو 'وشو یدھ' کے ہنگاموں میں جھنڈے اِن کے لہراتے ہیں ۔

یہ سب کچھ سہی؛ اِن کی تمام رنگینیاں' دلچسپیاں اور خوبصورتیاں اپنی جگہ پر' لیکن استقلال نہیں ہوتا اِن کے مزاج میں ۔ دھیریہ نہیں ہوتا اِن کے سوبھاؤ میں — ہوا کا رخ دیکھ کر یہ اپنا رخ پھیرتی ہیں اور فضا کا رنگ بھانپ کر یہ اپنا رنگ بدلتی ہیں ۔ کتنی تلون مزاج ہوتی ہیں یہ اور کتنی ہوا پرست !

جھنڈیوں اور ٹوپیوں کا ایک دوسرے سے ایسا ہی سمبندھ ہے جیسے رنگ کو رنگ سے نسبت' لیکن جب ہوا ساتھ نہیں دیتی سمے کا تو ہم دیکھتے ہیں رنگ برنگ کی ٹوپیاں اُڑتی پھرتی ہیں پون میں یا جلتی نظر آتی ہیں اگنی میں ۔

جیسے کسی راج کا سکہ چالو رہتا ہے راج بھر میں' اِسی پرکار راج رنگ کی ٹوپیاں پرچھائیں ہوتی ہیں راج چلن کی ۔ جیسے کسی کھوٹ کے کارن یا کسی نیتی کے انوسار سکہ ٹکسال باہر ہو جاتا ہے ویسے ہی ٹوپیاں بھی یکایک اُڑ جاتی ہیں سروں سے اور دوسری آ بیٹھتی ہیں اُن کی جگہہ ۔

ٹوپیاں ڈھکن کا کام بھی دیتی ہیں ۔ اِس لئے اِن کو سرپوش بھی کہا جا سکتا ہے ۔ سرپوش بن کر یہ بہت سے بڑے بڑے بیوقوفوں کی عیب پوشی کرتی ہیں اور بہت سے شاسکوں کو نئی نئی آفتوں سے بچاتی ہیں اُن کے پاپ ڈھانک کر ۔

یہ رنگین سرپوش کتنے خوبصورت عیب پوش ہوتے ہیں سچ مچ ۔ لیکن اِن کے نیچے کتنا گندہ مادہ پرورش پاتا رہتا ہے کبھی کبھی ۔ آخر یہ کہ اندر ہی اندر پھولتے پھلتے کسی بھی وقت وہ پھوٹ نکلتا ہے اور سارا بھید کھل جاتا ہے بدبو پھیلا کر ۔

झंडियाँ बेज़बान होती हैं लेकिन आवाज़ रखती हैं अपनी हरकत में. अपनी हरकत से वह अपना मतलब प्रगट करती हैं और अपने रङ्ग से अपना संदेश देती हैं. इनके रंग में एलान होता है जंग का भी, पैग़ाम होता है अमन का भी, इनके साये में तहरीक होती है इनक़लाब की, इनकी सरपरस्ती में तक़रीब होती है बग़ावत की, भूख के मारे इनके गहवारे में पलते हैं और ख़ून के धारे इनकी लहरों में रहते हैं. इनसानी ख़ून से यह अपना कपड़ा रंगती हैं और ख़ून का क़ुरता इनका इनक़लाब को न्योता देता है. इनकी मचलती लहरें हवा को अपना हमनवा बनाती हैं और फ़िज़ा पे आते जाते रङ्ग इनको अपना हमरङ्ग करते हैं.

झंडी के रङ्ग से शासन का रद्दोबदल होता है. और टोपी की बदला बदली से नीति में तबदीली आती है (जैसी नीति वैसी टोपी) जब विचार बदलता और ख़याल पलटता है तो उसका असर खोपड़ी पर पड़ता है. खोपड़ी से क्या क्या गुल खिलते और भेद निकलते हैं वह सब इन टोपियों का ही असर होता है, क्योंकि टोपियों को दिमाग़ से पका हुआ माद्दा तैयार मिलता है.

पार्टी की नीति का—झंडियाँ अपने ऊँचे स्थान से हुक्म चलाती और फ़रमान जारी करती हैं. सलाम करने वाले झुक झुक जाते हैं उनके सम्मुख. नमस्कार करने वाले कमान हो जाते हैं इनके सामने दरबार में.

अलम-बरदार उनकी वफ़ादारी का हलफ़ उठाते और प्रण (एहद) करते हैं इताअत गुज़ारी का—वह उन सब को अपनी सरपरस्ती में लेकर उनके पक्ष में अपनी राय जताती हैं.

झंडिया कभी हरकत करती हैं कभी साकित (ख़ामोश) रहती हैं. जब हरकत करती हैं तो जैसे साँप लहराते और बल खाते हैं. अपनी हरकत से वह हरकत लाती हैं समाज में और हवायें लाती हैं एहसास की अवाम में. जब ख़ामोश रहती हैं तो जैसे फ़िज़ा ख़ामोश, जब चलती हैं तो चलती ही चली जाती हैं पूरब से पच्छिम, फिर पलट कर दक्खिन से उत्तर तक. जब चुप रहती हैं तो पत्ता तक दम साध जाता है उनकी एक चुप पर, लेकिन इनकी चुप में भी मसलहत होती है. वह अपनी चुप के वक़्फ़े में बहुत कुछ काम कर लेती हैं चुपके चुपके.

सलामती कौंसिल में लहरा कर यह अमन शान्ति की नुमाइन्दगी करती हैं मगर क्रान्ति से भी साज़बाज़ रखती हैं.

पीस कान्फ्रेंस में उड़ कर हवा अमन की यह बांधती हैं पीस-मेकर बनकर.

(UNO) यूनो की फ़ौजें लेकर यह आगे आगे जाती हैं चीफ़-आफ़ दी आर्मी होकर. समाज-सभा की स्थापना करके प्रार्थना और धर्म के पाठ पढ़ाती हैं.

جھنڈیاں بے زبان ہوتی ہیں لیکن آواز رکھتی ہیں اپنی حرکت میں ۔ اپنی حرکت سے وہ اپنا مطلب پرگٹ کرتی ہیں اور اپنے رنگ سے اپنا سندیش دیتی ہیں۔ اِن کے رنگ میں اعلان ہوتا ہے جنگ کا بھی پیغام ہوتا ہے امن کا بھی' اِن کے سایہ میں تحریک ہوتی ہے انقلاب کی' اِن کی سرپرستی میں تقریب ہوتی ہے بغاوت کی' بھوک کے مارے اِن کے گہواروں میں پلتے ہیں اور خون کے دھارے اِن کی لہروں میں رہتے ہیں ۔ اِنسانی خون سے یہ اپنا کپڑا رنگتی ہیں اور خون کا کرتا اِن کا اِنقلاب کو نیوتا دیتا ہے ۔ اِن کی مچلتی لہریں ہوا کو اپنا ہم نوا بناتی ہیں اور فضا پہ آتے جاتے رنگ اِن کو اپنا ہمرنگ کرتے ہیں ۔

جھنڈی کے رنگ سے شاسن کا رد و بدل ہوتا ہے ۔ اور ٹوپی کی بدلا بدلی سے نیتی میں تبدیلی آتی ہے (جیسی نیتی ویسی ٹوپی) ۔ جب وچار بدلتا اور خیال پلٹتا ہے تو اُس کا اثر کھوپڑی پر پڑتا ہے ۔ کھوپڑی سے کیا کیا گل کھلتے اور بھید نکلتے ہیں وہ سب اِن ٹوپیوں کا ہی اثر ہوتا ہے ۔ کیونکہ ٹوپیوں کو دماغ سے پکا ہوا مادہ تیار ملتا ہے ۔

پارٹی کی نیتی کا—جھنڈیاں اپنے اونچے استھان سے حکم چلاتی اور فرمان جاری کرتی ہیں۔ سلام کرنے والے جھک جھک جاتے ہیں اِن کے سمکھ ۔ "نمسکار کرنے والے کمان ہو جاتے ہیں اِن کے سامنے دربار میں ۔

علمبردار اِن کی وفاداری کا حلف اُٹھاتے اور پرن (عہد) کرتے ہیں اطاعت گذاری کا—وہ اُن سب کو اپنی سرپرستی میں لے کر اُن کے پکش میں اپنی رائے جتاتی ہیں ۔

جھنڈیاں کبھی حرکت کرتی ہیں کبھی ساکت (خاموش) رہتی ہیں۔ جب حرکت کرتی ہیں تو جیسے سانپ لہراتے اور بل کھاتے ہیں ۔ اپنی حرکت سے وہ حرکت لاتی ہیں' سماج میں اور ہوائیں لاتی ہیں احساس کی عوام میں ۔ جب خاموش رہتی ہیں تو جیسے فضا خاموش ۔ جب چلتی ہیں تو چلتی ہی چلی جاتی ہیں پورب سے پچھم تک اور پھر پلٹ کر دکھن سے اتر تک ۔

جب چپ رہتی ہیں تو پتا تک دم سادھ جاتا ہے اُن کی ایک چپ پر' لیکن اُن کی چپ میں بھی مصلحت ہوتی ہے ۔ وہ اپنی چپ کے وقفے میں بہت کچھ کام کر لیتی ہیں چپکے چپکے ۔

سلامتی کونسل میں لہرا کر یہ امن شانتی کی نمائندگی کرتی ہیں مگر کرانتی سے بھی سازباز رکھتی ہیں ۔

پیس کانفرنسوں میں اُڑ کر ہوا امن کی یہ باندھتی ہیں— پیس میکر بن کر ۔

(UNO) یو نو کی فوجیں لے کر یہ آگے آگے جاتی ہیں چیف آف دی آرمی ہو کر ۔ سماج سبھا کی استھاپنا کر کے پرارتھنا کرائی اور دھرم کے پاٹھ پڑھاتی ہیں ۔

टोपियाँ और झंडियाँ

श्री अब्दुल हलीम अंसारी

दोनों तरजुमान होते हैं अपने अपने लक्ष्य और मत के.
दोनों पैग़ाम होते हैं अपने अपने संघ और मन के.

टोपियाँ जब सरपर होती हैं तो कुछ लेती हैं दिमाग़ से और कुछ देती भी हैं दिमाग़ को.

दिमाग़ उनके प्रभाव से बहुत सी चीज़ें स्वीकार करते हैं और टोपियाँ कुछ प्रभाव अपनी भरती भी हैं दिमाग़ों के भीतर. टोपियाँ पार्टी परिचय का काम करती हैं अपने ऊँचे स्थान से. टोपियाँ नीतियाँ रखती हैं अपनी अपनी तर्ज़ और रंगत में जैसे झंडियाँ क्रांतियाँ रखती हैं अपनी अपनी लहर और हरकत में. विशेष रङ्ग और विशेष ढङ्ग की टोपियाँ और झंडियाँ निशानियाँ होती हैं जो अपनी अपनी संस्थाओं की नुमायन्दगी करती हैं, जिनके प्लान और प्रोग्राम वैसे ही अलग अलग होते हैं जैसे छूत छात के स्थान अलग अलग. एक के स्टेज पर दूसरा नहीं जा सकता. दूसरे की सीमा में तीसरा नहीं आ सकता. जो क़ौमी सुधारकों के "लफ़्ज़ी एकता" के मरकज़ (केन्द्र) होते हैं वही मूल में सियासी छुआछूत के संगठन होते हैं.

झंडियाँ प्रेम और एकता का पैग़ाम देती हैं मिली-जुली सभा में—कितनी ठन्डी और शान्त पूर्ण होती हैं, उनकी वह शीतल छाया और प्रेम सभा—ज़ाहिर में कितनी अच्छी होती हैं वह प्रेम भरी झंडियाँ और दिलकश उनकी रंगीनियाँ.

यह एकता का संगठन रचाती हैं और मेल मिलाप का संगम बनाती हैं. यही अपने ताने बाने से क़ौमी जामे तैयार करती हैं. लेकिन क़ौम का शीराज़ा भी यही बिखेरती हैं और एकता का दामन भी यही नोचती हैं. फ़िरक़ेवारी की आग भी यही बुझाती हैं लेकिन अपने दामन से हवा देकर उस आग को भड़काती भी यही हैं. मुख़ालिफ़ हवा को भाप यह रोकती हैं लेकिन काट भी यही करती हैं हवा का, और रुख़ भी उसका यही फेरती हैं. यह दबी आग पर फूंक मारती हैं लेकिन सुलगी आग पर ख़ाक भी यह डालती हैं. संगठन यह बनाती और बिगाड़ती हैं. हलचल यह मचाती और दबाती हैं—बेशक चूँकि दो रुख़ी इनकी पालिसी होती है और दोतरफ़ा इनका रुख़, इधर कुछ तो उधर कुछ, कभी कुछ तो कभी कुछ.

ٹوپیاں اور جھنڈیاں

شری عبدالحلیم انصاری

دونوں ترجمان ہوتے ہیں اپنے اپنے لکش اور مت کے ۔
دونوں پیغام ہوتے ہیں اپنے اپنے سنگھ اور من کے ۔

ٹوپیاں جب سر پر ہوتی ہیں تو کچھ لیتی ہیں دماغ سے اور کچھ دیتی بھی ہیں دماغ کو ۔

دماغ اُن کے پربھاؤ سے بہت سی چیزیں سویکار کرتے ہیں اور ٹوپیاں کچھ پربھاؤ اپنے بھرتی بھی ہیں دماغوں کے بھیتر ۔ ٹوپیاں پارٹی پریچے کا کام کرتی ہیں اپنے اونچے استھان سے ۔ ٹوپیاں نیتیاں رکھتی ہیں اپنی اپنی طرز اور رنگت میں جیسے جھنڈیاں کرانتیاں رکھتی ہیں اپنی اپنی لہر اور حرکت میں ۔ وشیش رنگ اور وشیش ڈھنگ کی ٹوپیاں اور جھنڈیاں نشانیاں ہوتی ہیں جو اپنی اپنی سنستھاؤں کی نمایندگی کرتی ہیں ۔ جن کے پلان اور پروگرام ویسے ہی الگ الگ ہوتے ہیں جیسے چھوت چھات کے استھان الگ الگ ۔ ایک کے اِسٹیج پر دوسرا نہیں جا سکتا ۔ دوسرے کی سیما میں تیسرا نہیں آ سکتا ۔ جو قومی سدھارکوں کے "لفظی ایکتا" کے مرکز (کیندر) ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے سنگٹھن ہوتے ہیں ۔

جھنڈیاں پریم اور ایکتا کا پیغام دیتی ہیں ملی جلی سبھا میں ، کتنی ٹھنڈی اور شانت پورن ہوتی ہے اُن کی وہ شیتل چھایا اور پریم سبھا—ظاہر میں کتنی اچھی ہوتی ہیں وہ پریم بھری جھنڈیاں اور دلکش اُن کی رنگینیاں ۔

یہ ایکتا کا سنگٹھن رچاتی ہیں اور میل ملاپ کا سنگم بناتی ہیں ۔ یہی اپنے تانے بانے سے قومی جامے تیار کرتی ہیں ۔ لیکن قوم کا شیرازہ بھی یہی بکھیرتی ہیں اور ایکتا کا دامن بھی یہی نوچتی ہیں ۔ فرقہ واری کی آگ بھی یہی بجھاتی ہیں لیکن اپنے دامن سے ہوا دیکر آگ کو بھڑکاتی بھی یہی ہیں ۔ مخالف ہوا کی بھاپ یہ روکتی ہیں لیکن کاٹ بھی یہی کرتی ہیں ہوا کا اور رخ بھی اس کا یہی پھیرتی ہیں ۔ یہ دبی آگ پر پھونک مارتی ہیں لیکن سلگی آگ پر خاک بھی یہ ڈالتی ہیں ۔ سنگٹھن یہ بناتی اور بگاڑتی ہیں ۔ ہلچل یہ مچاتی اور دباتی ہیں—بےشک چونکہ دورخی اِن کی پالیسی ہوتی ہے اور دو طرفہ اِن کا رخ ، اُدھر کچھ تو اُدھر کچھ ، کبھی کچھ تو کبھی کچھ ۔

की देवी मानी जाती है. शिव का विवाह गौरी काली से हुआ. गौरी का अर्थ है सफेद और काली का अर्थ है काली. गौरी प्रेम को .जाहिर करती है और काली नफ़रत को. इन दोनों की क्रिया और प्रतिक्रिया से ही सृष्टि का अन्त होता है. इस तरह भारत के पुराणों में इस विश्व के सारे फैलाव को कहानियों के रूप में समझाया गया है, ताकि कम समझ आदमी भी आसानी से समझ सके. इस ढंग से उसमें ऐसी बातें भी कह दी गई हैं जिन्हें ठीक ठीक समझने के लिये बड़ी व्याख्या की .जरूरत है.

इसी तरह शरीर विद्या (फ़िज़ियालोजी) का हाल है जिसमें वैद्यक विद्या (इल्मेतिब), इल्मे सेहत, दिन और रात का बनना, मौसमों का बनना, नसलों की पैदाइश, कफ, वात और पित्त सब अपनी अपनी जगह आ जाते हैं.

इसी तरह रोगों (पैथालोजी) का हाल है. रोग भी तीन तरह के होते हैं—शरीर के रोग, मन के रोग और जीवनी शक्ति के रोग. इसमें भी शक नहीं कि यह सब अलग अलग चीजें एक दूसरे में रली मिली हुई हैं. हम कह चुके हैं कि .कुदरत में कोई ऐसी लकीरें या दीवारें हैं ही नहीं जो एक चीज को दूसरी चीज से या एक क़िस्म की चीजों को दूसरी क़िस्म की चीजों से अलग करती हों. हक़ीक़त एक अथाह और बेपायां, बे किनार समन्दर है जिसमें हम सब बुलबुलों की तरह बनते और बिगड़ते और फिर बनते और बिगड़ते रहते हैं. कड़े से कड़े रोग .क़ुवते इरादी से, मन की अवस्थाओं से अच्छे किये जा सकते हैं और सूक्ष्म से सूक्ष्म मानसिक विचार जड़ औषधियों द्वारा बदले जा सकते हैं.

इनसाइक्लोपीडिया ब्रीटेनिका में प्राणीशास्त्र (जुओलोजी) पर निबन्ध इस सम्बन्ध में पढ़ने योग्य है. सब जगह वही तीन के जोड़े और वही अनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत.

کی دیوی مانی جاتی ہے ۔ شو کا وِواہ گوری کالی سے ہوا ۔ گوری کا ارتھ ہے سفید اور کالی کا ارتھ ہے کالی ۔ گوری پریم کو ظاہر کرتی ہے اور کالی نفرت کو ۔ ان دونوں کی کریا اور پرتیکریا سے ہی سرشٹی کا انت ہوتا ہے ۔ اسی طرح بھارت کے پرانوں میں اس شو کے سارے پھیلاؤ کو کہانیوں کے روپ میں سمجھایا گیا ہے، تاکہ کم سمجھ آدمی بھی آسانی سے سمجھ سکے ۔ اس ڈھنگ سے اس میں ایسی باتیں بھی کہہ دی گئیں ہیں جنہیں ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے بڑی ویاکھیا کی ضرورت تھی ۔

اسی طرح شریر ودیا (فزیالوجی) کا حال ہے جس میں ویدک ودیا (علم طب)، علم صحت، دن اور رات کا بننا، موسموں کا بننا، نسلوں کی پیدائش، کف، وات اور پت سب اپنی اپنی جگہہ آ جاتے ہیں ۔

اسی طرح روگوں (پیتھالوجی) کا حال ہے ۔ روگ بھی تین طرح کے ہوتے ہیں—شریر کے روگ، من کے روگ اور جیون شکتی کے روگ ۔ اس میں بھی شک نہیں کہ یہ سب الگ الگ چیزیں ایک دوسرے میں رلی ملی ہوئی ہیں ۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ قدرت میں کوئی ایسی لکیریں یا دیواریں ہیں ہی نہیں جو ایک، چیز کو دوسری چیز سے یا ایک قسم کی چیزوں کو دوسری قسم کی چیزوں سے الگ کرتی ہوں ۔ حقیقت ایک اتھاہ اور بےپایاں، بےکنار سمندر ہے جس میں ہم سب بلبلوں کی طرح بنتے اور بگڑتے اور پھر بنتے اور بگڑتے رہتے ہیں ۔ کڑے سے کڑے روگ قوت ارادی سے، من کی اوستھاؤں سے اچھے کئے جا سکتے ہیں اور سوکشم سے سوکشم مانسک وچار جڑ اوشدھیوں دوارا بدلے جا سکتے ہیں ۔

انسائیکلوپیڈیا برٹینیکا میں پرانی شاستر (زوالاجی) پر نبندھ اس سمبندھ میں پڑھنے یوگیہ ہے ۔ سب جگہہ وہی تین تین کے جوڑ اور وہی انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت ۔

और कारण शरीर कहा जाता है और जिन्हें ईसाई सन्त सेन्ट पाल ने 'बाडी, सोल एण्ड स्पिरिट' के नाम से पुकारा है. इन तीनों का एक दूसरे से नाता एक अलग और दूसरा विषय है.

मन्वन्तर विद्या यानी ऐन्थापालोजी के अन्दर हम चित्त विद्या (साइकालोजी), देह विद्या (फ़िज़ियालोजी) और समाज शास्त्र (सोशियालोजी) तीनों को शामिल कर सकते हैं. यही तीन आत्मा, ग़ैर आत्मा और इन दोनों का मेल है. यही माइन्ड, मैटर और लाइफ़ यानी चेतन, अचेतन और प्राण हैं.

इस तरह चक्कर पूरा करके हम फिर उन्हीं उसूलों पर आजाते हैं. हमारा ज्ञान (इल्म) और हमारा अनुभव (तजरबा) जितना बढ़ता जाता है और हमारी अन्दर की शक्तियाँ जितनी जितनी खुलती जाती हैं उतना उतना ही जिन चीज़ों को हम दूर और निकम्मा समझते थे उन्हें नज़दीक और काम का समझने लगते हैं. निजी स्वार्थ और ख़ुदग़रज़ी की निगाह से यही चीज़ें हमारे दुनियावी सुख सौख्य को बढ़ाने वाली साबित होती हैं और त्याग और हक़ीक़ी शान्ति की निगाह से यही चीज़ें हमें सबके साथ हमारी एकता दिखलाकर लोकसंग्रह यानी ख़िदमते ख़ल्क में ज़ियादह से ज़ियादह मदद देने वाली बन जाती हैं.

इतिहास (तारीख़) में तीन चीज़ें ख़ास होती हैं. एक तिथिवार हालात जिसे क्रानालोजी कहते हैं जिसका सम्बन्ध काल यानी समय से है. दूसरे भूगोल यानी जियोग्रेफ़ी जिसका सम्बन्ध देश और जगह से है. तीसरे घटनाओं का बयान यानी नैरेटिव जो इतिहास का मुख्य अंग है, जिसका सम्बन्ध गति यानी हरकत से है. यह तीनों भी उसी शक्ति के कारनामे हैं जो अकेली ही, सब कुछ कर सकती है और जिसके बिना कहीं कुछ किया ही नहीं जा सकता. इन्ही अर्थों में ईश्वर अल्लाह को सर्व शक्तिमान क़ादिरे मुतलक़ या 'आलमाइटी' कहा जाता है.

यदि हम इतिहास को ध्यान से देखें तो इतिहास के यही तीन रूप गौरी, काली, और शक्ति के रूप में दिखाई देते हैं. इन्हीं के ज़रिये दुनिया के सब पदार्थ, सब जानदार सब राष्ट्र, क़ौमें नसलें और सभ्यताएँ पैदा होती हैं, बढ़ती हैं और गिर कर ख़त्म हो जाती हैं. इन्हीं तीनों ताक़तों को ब्रह्मा, विष्णु और शिव या रुद्र नामों से पुकारा गया है. यही तीनों नाम तीनों गुणों रजस, सत्व और तमस को ज़ाहिर करते हैं. ब्रम्हा का विवाह 'सरस्वति' से हुआ जो ज्ञान की देवी मानी जाती है, क्योंकि कर्म बिना ज्ञान के निष्फल है और ज्ञान बिना कर्म के ख़तरनाक. विष्णु का विवाह लक्ष्मी से हुआ जो धन और सुख सौख्य

اور کارن شریر کہا جاتا ہے اور جنہیں عیسائی سنت سینٹ پال نے' باڈی' سول اینڈ اسپرٹ' کے نام سے پکارا ہے ۔ اِن تینوں کا ایک دوسرے سے ناتا ایک الگ اور دوسرا وشے ہے ۔

ملونتر ودیا یعنی اینتھراپالوجی کے اندر ہم چت ودیا (سائیکالوجی)' دیہہ ودیہ (فزیالوجی) اور سماج شاستر (سوشیالوجی) تینوں کو شامل کرسکتے ہیں ۔ یہی تین آتما' غیر - آتما اور اِن دونوں کا میل ہے ۔ یہی مائنڈ' میٹر اور لائف یعنی چیتن' اچیتن اور پران ہیں ۔

اِسی طرح چکر پورا کرکے ہم پھر انہیں اصولوں پر آجاتے ہیں ۔ ہمارا گیان (علم) اور ہمارا انبھو (تجربہ) جتنا بڑھتا جاتا ہے اور ہماری اندر کی شکتیاں جتنی جتنی کھلتی جاتی ہیں اتنا اتناہی جن چیزوں کو ہم دور اور نکما سمجھتے تھے اُنھیں نزدیک اور کام کا سمجھنے لگتے ہیں ۔ نجی سوارتھ اور خود غرضی کی نگاہ سے یہی چیزیں دنیاوی سکھ سوکھیہ کو بڑھانے والی ثابت ہوتی ہیں اور تیاگ اور حقیقی شانتی کی نگاہ سے یہی چیزیں ہمیں سب کے ساتھ ہماری ایکتا دکھلا کر لوک سنگرہ یعنی خدمت خلق میں زیادہ سے زیادہ مدد دینے والی بن جاتی ہیں ۔

اِتہاس (تاریخ) میں تین چیزیں خاص ہوتی ہیں ۔ ایک تتھی وار حالات جسے کرانالوجی کہتے ہیں جس کا سمبندھ کال یعنی سمے سے ہے ۔ دوسرے بھوگول یعنی جیوگریفی جس کا سمبندھ دیش اور جگہہ سے ہے ۔ تیسرے گھٹناؤں کا بیان یعنی نریٹو جو اتہاس کا مکھیہ انگ ہے' جس کا سمبندھ گتی یعنی حرکت سے ہے ۔ یہ تینوں بھی اُسی شکتی کے کارنامے ہیں جو اکیلی ہی سب کچھ کر سکتی ہے اور جس کے بنا کہیں کچھ کیا ہی نہیں جا سکتا ۔ اِنہیں ارتھوں میں ایشور اللہ کو سروشکتیمان' قادر مطلق یا 'آل مائیٹی' کہا جاتا ہے ۔

یدی ہم اِتہاس کو دھیان سے دیکھیں تو اتہاس کے یہی تین روپ گوری' کالی' اور شکتی کے روپ میں دکھائی دیتے ہیں ۔ اِنہیں کے ذریعے دنیا کے سب پدارتھ' سب جاندار' سب راشٹر' قومیں' نسلیں اور سبھیتائیں پیدا ہوتی ہیں' بڑھتی ہیں اور گر کر ختم ہو جاتی ہیں ۔ انہیں تینوں طاقتوں کو برھما' وشنو اور شو یا رودرناموں سے پکارا گیا ہے ۔ یہی تین نام تینوں گنوں رجس' ستو اور تمس کو ظاہر کرتے ہیں ۔ برھماکا ویواہ 'سرسوتی' سے ہوا جو گیان کی دیوی مانی جاتی ہے' کیونکہ کرم بنا گیان کے نشپھل ہے اور گیان بنا کرم کے خطرناک ۔ وشنو کا ویواہ لکشمی سے ہوا جو دھن اور سکھ سوکھیہ

भारत के "इतिहास" में मानव इतिहास के ख़ास ख़ास युगों का बर्णन है.

यूरोपियन विद्वान बर्गसन ने जिसे 'टार्पर, इन्सटिंक्ट और इनटैलीजेन्स' कहा है उसी को भारत के पुराणों में 'तमस, रजस और सत्व' कहा गया है. देवी भागवत में इसे बड़े विस्तार के साथ बयान किया गया है.

हम ऊपर कह चुके हैं कि आजकल की सान्इस के अनुसार क़ुदरत की सारी ताक़तें एक तरह बिजली की ताक़त के अन्दर आ जाती हैं. यह विश्वास बड़े बड़े साइन्सदानों का विश्वास है. हो सकता है कि अगला क़दम साइन्स यह ले कि वह बिजली की ताक़त को विश्वव्यापी प्राण यानी सबकी जान के साथ मिलाकर एक कर दे. इसी विज्ञान को अंगरेजी में ऐनीमामुन्डी या वाइटैलिटी कहते हैं. इसी प्राण या जान को माइन्ड फ़ोर्स भी कहा जाता है. यही वह इच्छा शक्ति, वह क़ुवते इरादी यानी रूहे कुल की ज़हूर में आने की वह इच्छा है जिसकी बाबत उपनिषदों में कहा गया है—'मैं एक हूँ और बहुत हो जाऊँ'. इसलाम में इसी को अल्लाह के मुंह से 'हो जा' कहना बताया गया है. यह व्यापक इच्छा शक्ति ही ज्ञान शक्ति, बुद्धि शक्ति या संकल्प शक्ति के ज़रिये काम करती है. यही विश्व की क्रिया शक्ति है. क़ुदरत की सारी शक्तियाँ इसी के अन्दर समाई हुई हैं और इसी से काम कर रही हैं.

मामूली नल से निकला हुआ पानी का फ़ौवारा बहुत बड़े दबाव के अन्दर फ़ौलाद की छड़ से ज़ियादा सख़्त हो जाता है. हवा का एक ज़बरदस्त झोंका अपनी हरकत की तेज़ी की वजह से समन्दर के ऊपर पानी की उलटी मीनार या सहारा के रेगिस्तान में रेत की मीनार बन जाता है. ठोस चीज़ें तरल हो जाती हैं, तरल गैस यानी हवा बन जाती हैं. गैसें और अधिक लतीफ़ होकर ईथर बन जाती हैं, वग़ैरह वग़ैरह. इसी तरह इनकी तेज़ी को कम करने और बहाव को बढ़ाने से तरह तरह की लहरें पैदा हो जाती हैं जिन्हें साइन्सदाँ 'वेव्ज़' कहते हैं. अन्त में जाकर ये सब गति, हरकत और लहरें चाहे पिन्ड के अन्दर और चाहे ब्रह्मान्ड के अन्दर उसी विश्वात्मा की गति है जो अपनी माया (लीला) के ज़रिये एक से अनेक मालूम होने लगता है. इसी से अनगिनत नाम और रूप पैदा होते हैं. आत्मा के इसी अपने चारों तरफ़ के नृत्य को पुराणों में शिव का ताण्डव नृत्य कहा गया है.

जो शक्ति आत्मा और ग़ैर आत्मा में नाता जोड़ती है उसी को योगभाष्य में 'चित्त बल' और महाभारत और पुराणों में 'काम संकल्प शक्ति' कहा गया है. इसी से मनुष्य के वह तीन शरीर बनते हैं जिन्हें स्थूल शरीर,

بھارت کے "اتہاس" میں مانو اتہاس کے خاص خاص یگوں کا ورنن ہے ۔

یوروپین ودوان برگسن نے جسے 'ٹارپر' انسٹنکٹ اور انٹالیجینس' کہا ہے اُسی کو بھارت کے پرانوں میں 'تمس' رجس اور ستو' کہا گیا ہے ۔ دیوی بھاگوت میں اِسے بڑے وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ہے ۔

ہم اُوپر کہہ چکے ہیں کہ آجکل کی سائنس کے انوسار قدرت کی ساری طاقتیں ایک طرح بجلی کی طاقت کے اندر آجاتی ہیں ۔ یہ وشواس بڑے بڑے سائنسدانوں کا وشواس ہے ۔ ہوسکتا ہے کہ اگلا قدم سائنس یہ لے کہ وہ بجلی کی طاقت کو وشوویاپی' پران یعنی سب کی جان کے ساتھ ملا کر ایک کر دے ۔ اِسی وگیان کو انگریزی میں اینیما مونڈی یا وائٹیلٹی کہتے ہیں ۔ اِسی پران یا جان کو مائنڈ فورس بھی کہا جاتا ہے ۔ یہی وہ اچھا شکتی' وہ قوت ارادی یعنی روح کل کی ظہور میں آنے کی وہ اچھا ہے جس کی بابت اپنشدوں میں کہا گیا ہے— "میں ایک ہوں اور بہت ہوجاؤں ۔" اِسلام میں اسی کو اللہ کے منھ سے 'ہوجا' کہنا بتایا گیا ہے ۔ یہ ویاپک اچھا شکتی ہی گیان شکتی' بدھی شکتی یا سنکلپ شکتی کے ذریعے کام کرتی ہے ۔ یہی وشو کی کریا شکتی ہے ۔ قدرت کی ساری شکتیاں اِسی کے اندر سمائی ہوئی ہیں اور اِسی سے کام کررہی ہیں ۔

معمولی نل سے نکلا ہوا پانی کا فوارہ بہت بڑے دباؤ کے اندر فولاد کی چھڑ سے زیادہ سخت ہو جاتا ہے ۔ ہوا کا ایک زبردست جھونکا اپنی حرکت کی تیزی کی وجہ سے سمندر کے اوپر پانی کی الٹی مینار یا صحارا کے ریگستان میں ریت کی مینار بن جاتا ہے ۔ ٹھوس چیزیں ترل ہو جاتی ہیں' ترل گیس یعنی ہوا بن جاتی ہیں ۔ گیسیں اور ادھک لطیف ہوکر ایتھر بن جاتی ہیں' وغیرہ وغیرہ ۔ اِسی طرح اِن کی تیزی کو کم کرنے اور بہاؤ کو بڑھانے سے طرح طرح کی لہریں پیدا ہوجاتی ہیں جنہیں سائنسداں 'ویوز' کہتے ہیں ۔ انت میں جاکر یہ سب گتی' حرکت اور لہریں' چاہے پنڈ کے اندر اور چاہے برہمانڈ کے اندر' اُسی وشوآتما کی گتی ہے جو اپنی مایا (لیلا) کے ذریعے ایک سے انیک معلوم ہونے لگتا ہے ۔ اِسی سے انگنت نام اور روپ پیدا ہوتے ہیں ۔ آتما کے اِسی اپنے چاروں طرف کے نرتیہ کو پرانوں میں شوکا تانڈو نرتیہ کہا گیا ہے ۔

جو شکتی آتما اور غیر آتما میں ناتا جوڑتی ہے اسی کو یوگ بھاشیہ میں 'چت بل' اور مہابھارت اور پرانوں میں 'کام سنکلپ شکتی' کہا گیا ہے ۔ اِسی سے مانشیہ کے وہ تین شریر بنتے ہیں جنہیں اسٹھول شریر'

एक दूसरे के साथ खिल्त मिल्त होती रही हैं. सच्ची बात यह है और हम शब्दशः यह कह सकते हैं कि हम सब शारीरिक निगाह से और आत्मा की निगाह से दोनों निगाहों से एक दूसरे का अंग हैं और एक हैं, फिर भी हर एक अपना अलग सापेक्ष वजूद भी रखता है. इसी का नाम एकता में अनेकता और अनेकता में एकता, यानी वहदत में कसरत और कसरत में वहदत है.

इंजील में लिखा है:—"ईश्वरीय क़ानून के अनुसार सब चीज़ें एक दूसरे के वजूद में मिल जाती हैं." कारण साफ़ है क्योंकि सब एक ही चेतन की कल्पना से पैदा हुई हैं और उसी एक कल्पना के अंग हैं. वह सब जगह हाज़िर नाज़िर, सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान, रूहेकुल, सबको सबके अन्दर एक किये हुए है. यूरोप के मशहूर साइन्सदां" डाक्टर ऐलेक्सिस कैरल ने अपनी पुस्तक "मैन दि अन्नोन" में इसी सचाई को साइन्स के शब्दों और साइन्स के तरीक़े से बड़ी सुन्दरता के साथ बयान किया और समझाया है.

यही कारण है कि आदमी के दिल में इस बात की ज़बरदस्त और गहरी लगन है कि वह इस भिन्नता में एकता को देख सके. इसीलिये साइन्स प्रकृति की सब शक्तियों को अपने अधिकार में लाने की कोशिशों में लगी रहती है. इसीलिये मानव समाज धीरे धीरे इसी एकता को साक्षात करने की तरफ़ क़दम बढ़ा रहा है. सबके साथ अपनी एकता को साक्षात करने में ही सर्व शक्तिमत्ता का रहस्य यानी क़ुदरते कामिल का राज़ छिपा हुआ है.

ज्योतिष विद्या यानी इल्मेनजूम (ऐस्ट्रानोमी) के अन्दर भूगोल विद्या (जियाग्रेफ़ी) और भूगर्भ विद्या (जियालाजी) दोनों शामिल हैं. पुराणों के अनुसार हमारी इस धरती की रचना में सात आवरण हैं. इन्हीं को मिट्टी, पानी, आग, हवा वग़ैरह नामों से पुकारा जाता है. इसी ज्योतिष के अन्दर भूतल विद्या (फ़िज़ियोग्राफ़ी) और इसी में वंश विद्या (बायोलाजी) शामिल हैं. वंश विद्या में मणि विद्या (मिनरालोजी) वृक्ष विद्या (बाटेनी), प्राणी विद्या (ज़ूआलोजी), आ जाती हैं. प्राणी विद्या का ही एक रूप मन्वन्तर विद्या यानी ऐन्थ्रापालोजी है.

भारत के पुराणों में पाँच ख़ास चीज़ों का बयान आता है :—एक सर्ग यानी दुनिया कैसे बनी, दूसरे प्रति सर्ग यानी दुनिया कैसे ख़त्म होती है, तीसरे वंश यानी जानदार कैसे पैदा होते हैं, चौथे मन्वन्तर यानी मनुष्य की पैदाइश का इतिहास और, पाँचवे वंशानुचरित यानी मनुष्य की नसलों का इतिहास. इन्हीं पांचों के साथ साथ पुराणों में अवतारों का ज़िक्र है. अवतार का मतलब है "हुलूल" के ज़रिये उस अल्लाह की क़ुदरत और उसकी शक्ति का ख़ास ख़ास चीज़ों या आदमियों में ज़हूर.

ایک دوسرے کے ساتھ خلت ملت ہوتی رہی ہیں . سچی بات یہ ہے اور ہم شبدشہ یہ کہہ سکتے ہیں کہ ہم سب شاریرک نگاہ سے اور آتما کی نگاہ سے دونوں نگاہوں سے ایک دوسرے کا انگ ہیں اور ایک ہیں، پھر بھی ہر ایک اپنا الگ ساپیکش وجود بھی رکھتا ہے . اِسی کا نام ایکتا میں انیکتا یعنی وحدت میں کثرت اور کثرت میں وحدت ہے .

انجیل میں لکھا ہے:—"ایشوریہ قانون کے انوسار سب چیزیں ایک دوسرے کے وجود میں مل جاتی ہیں ." کارن صاف ہے کیونکہ سب ایک ہی چیتن کی کلپنا سے پیدا ہوئی ہیں اور اُسی ایک کلپنا کے انگ ہیں. وہ سب جگہہ حاضر ناظر، سرویاپک 'سرو شکتیمان' روحِ کل' سب کو سب کے اندر ایک کئے ہوئے ہے . یورپ کے مشہور سائنسداں ڈاکٹر ایلیکسس کیرل نے اپنی پستک "مین دی اننون" میں اِس سچائی کو سائنس کے شبدوں اور سائنس کے طریقے سے بڑی سندرتا کے ساتھ بیان کیا اور سمجھایا ہے .

یہی کارن ہے کہ آدمی کے دل میں اِس بات کی زبردست اور گہری لگن ہے کہ وہ اِس بھنتا میں ایکتا کو دیکھ سکے . اِسی لئے سائنس پرکرتی کی سب شکتیوں کو اپنے ادھیکار میں لانے کی کوششوں میں لگی رہتی ہے . اِسی لئے مانو سماج دھیرے دھیرے اِسی ایکتا کو ساکشات کرنے کی طرف قدم بڑھا رہا ہے . سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو ساکشات کرنے میں ہی سرو شکتیمتا کا رہسیہ یعنی قدرتِ کامل کا راز چھپا ہوا ہے .

جیوتش ودیا یعنی علم نجوم (ایسٹرانومی) کے اندر بھوگول ودیا (جیوگریفی) اور بھوگربھ ودیا (جیولاجی) دونوں شامل ہیں . پرانوں کے انوسار ہماری اِس دھرتی کی رچنا میں سات آورن ہیں . اِنہیں مٹی' پانی' آگ' ہوا وغیرہ ناموں سے پکارا جاتا ہے . اِسی جیوتش کے اندر بھوتل ودیا (فزیوگرافی) اور اِسی میں ونش ودیا (بائیولاجی) شامل ہے . ونش ودیا میں منی ودیا (منرالوجی)' ورکش ودیا (باٹینی)' پرانی ودیا (زوالوجی) آجاتی ہیں . پرانی ودیا کا ہی ایک روپ منونتر ودیا یعنی اینتھراپالوجی ہے .

بھارت کے پرانوں میں پانچ خاص چیزوں کا بیان آتا ہے:—ایک سرگ یعنی دنیا کیسے بنی' دوسرے پرتی سرگ یعنی دنیا کیسے ختم ہوتی ہے' تیسرے ونش یعنی جاندار کیسے پیدا ہوتے ہیں' چوتھے منونتر یعنی منشیہ کی پیدائش کا اتہاس پانچویں ونشانو چرت یعنی منشیہ کی نسلوں کا اتہاس' اِنہیں پانچوں کے ساتھ ساتھ پرانوں میں اوتاروں کا ذکر ہے . اوتار کا مطلب ہے "حلول" کے ذریعے اُس اللہ کی قدرت اور اُس کی شکتی کا خاص خاص چیزوں یا آدمیوں میں ظہور .

भागवत में और योग वासिष्ट में लिखा है कि:—"सब चीजें, हर जगह, हर तरह से और हर समय मौजूद हैं." योग भाष्य में लिखा है:—"सब में सब की आत्मा है. सब में सब के सब गुण मौजूद हैं." मशहूर साइन्सदाँ जीन्स लिखता है:—"हर इलेक्ट्रान सारे विश्व भर में फैला हुआ है." एक दूसरा साइन्सदां डा. ऐलेक्सस कैरल लिखता है:—"मनुष्य का आपा सब जगह यानी सारे विश्व में फैला है." योग वासिष्ट में लिखा है:—"अणु दुनियाओं में हैं और दुनियाएँ अणुओं में हैं."

इस बुनियादी सचाई के होते हुए भी हम चीजों को अलग अलग नाम दे लेते हैं. यह नाम हम हर चीज के किसी न किसी अलग गुण या उसकी किसी न किसी खास सिफ़त के कारण देकर अपना काम चलाते हैं. न्याय शास्त्र में, योग वासिष्ट में और ब्रह्म सूत्रों में इस बात को बहुत अच्छी तरह खोल कर और विस्तार के साथ बयान किया गया है.

दुनिया के सब नाम रूप आदमी ने अपनी आसानी के लिये गढ़े हैं. इन नाम रूपों पर ही सब साइन्सों की बुनियादें हैं. नहीं तो कुदरत में सब एक है. सब रोशनियों की किरनें एक दूसरे में मिली हुई हैं. शबनम (ओस) की बूँद के अन्दर आफ़ताब (सूर्य) मौजूद है और शबनम की बूँद आफताब के धधकते हुए गोले के अन्दर मौजूद है मैं जब उत्तरी ध्रुव और दक्खिनी ध्रुव यानी कुतुब शुमाली और कुतुब जनूबी की बात करता हूँ तो वह मेरे मन के अन्दर होते हैं और मेरा मन उनमें मौजूद होता है. यह अनन्त आकाश और उसके अन्दर अरबों खरबों और शंखों सितारे और सैयारे सब मेरी छोटी सी आँख के अन्दर हैं और इन सब में भी सब को देखने वालों की आंखें मौजूद हैं. बेतार के रेडियो ने साबित कर दिया है कि सब आवाजें, सब जगह से उठने वाली सब जगह सुनी जा सकती हैं और सब जगह मौजूद हैं. जो सितारे और सैयारे एक दूसरे से करोड़ों और अरबों मील की दूरी पर हैं उन सब पर रोशनी की किरनों के द्वारा बराबर एक दूसरे का अक्स पड़ता रहता है. हमारे शरीर के सब तन्तु हमारे खून के जरिए एक दूसरे से मिले रहते हैं. हर छोटे से छोटे ऐटम की हर हरकत विश्व भर की अनगिनत हरकतों का नतीजा होती है और वह खुद अपने द्वारा अनगिनत हरकतों को जन्म देती है. हर मनुष्य अनगिनत पुरखों की औलाद होता है और उसी तरह अनगिनत मनुष्यों का पुरखा होता है. यदि हम दुनिया के मनुष्यों के सब पिछले रिश्तों का पता लगा सकें तो हमें मालूम होगा कि हर मनुष्य दुनिया भर के बाक़ी सब मनुष्यों के साथ खून के रिश्ते से जुड़ा हुआ है. इनसान की सारी नसलें बराबर

بھاگوت میں اور یوگ واسشٹ میں لکھا ہے کہ:—"سب چیزیں، ہر جگہ، ہر طرح سے اور ہر سمے موجود ہیں." یوگ بھاشیہ میں لکھا ہے:—"سب میں سب کی آتما ہے. سب میں سب کے گن موجود ہیں." مشہور سائنسداں جینس لکھتا ہے:—"ہر الیکٹران سارے وشو بھر میں پھیلا ہوا ہے." ایک دوسرا سائنسداں ڈاکٹر ایلکسس کیرل لکھتا ہے:— "منشیہ کا آپا سب جگہہ یعنی سارے وشو میں پھیلا ہے." یوگ واسشٹ میں لکھا ہے:—"انو دنیاؤں میں ہیں اور دنیائیں انوؤں میں ہیں."

اِس بنیادی سچائی کے ہوتے ہوئے بھی ہم چیزوں کو الگ الگ نام دے لیتے ہیں. یہ نام ہم ہر چیز کے کسی نہ کسی الگ گن یا اُس کی کسی نہ کسی خاص صفت کے کارن دے کر اپنا کام چلاتے ہیں. نیائے شاستر میں' یوگ واسشٹ میں اور برہم سوتروں میں اِس بات کو بہت اچھی طرح کھول کر اور وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ہے.

دنیا کے سب نام روپ آدمی نے اپنی آسانی کے لئے گڑھے ہیں. اِن نام روپوں پر ہی سب سائنسوں کی بنیادیں ہیں. نہیں تو قدرت میں سب ایک ہیں. سب روشنیوں کی کرنیں ایک دوسرے میں ملی ہوئی ہیں. شبنم (اوس) کی بوند کے اندر آفتاب (سوریہ) موجود ہے اور شبنم کی بوند آفتاب کے دہکتے ہوئے گولے کے اندر موجود ہے. میں جب اتری دھرو اور دکھنی دھرو یعنی قطب شمالی اور قطب جنوبی کی بات کرتا ہوں تو وہ میرے من کے اندر ہوتے ہیں اور میرا من اُن میں موجود ہوتا ہے. یہ اننت آکاش اور اُس کے اندر اربوں کھربوں اور شنکھوں ستارے اور سیارے سب میری چھوٹی سی آنکھ کے اندر ہیں اور اِن سب میں بھی سب کو دیکھنے والوں کی آنکھیں موجود ہیں. بےتار کے ریڈیو نے یہ ثابت کر دیا ہے کہ سب آوازیں' سب جگہہ سے اٹھنے والی' سب جگہہ سنی جا سکتی ہیں اور سب جگہہ موجود ہیں. جو ستارے اور سیارے ایک دوسرے سے کروڑوں اور اربوں میل کی دوری پر ہیں اُن سب پر روشنی کی کرنوں کے دوارا برابر ایک دوسرے کا عکس پڑتا رہتا ہے. ہمارے شریر کے سب تنتو ہمارے خون کے ذریعے ایک دوسرے سے ملے رہتے ہیں. ہر چھوٹے سے چھوٹے ایٹم کی ہر حرکت وشو بھر کی انگنت حرکتوں کا نتیجہ ہوتی ہے اور وہ خود اپنے دوارا انگنت حرکتوں کو جنم دیتی. ہر منشیہ انگنت پرکھوں کی اولاد ہوتا ہے اور اُسی طرح انگنت منشیوں کا پرکھا ہوتا ہے. یدی ہم دنیا کے منشیوں کے سب پچھلے رشتوں کا پتہ لگا سکیں تو ہمیں معلوم ہوگا کہ ہر منشیہ دنیا بھر کے باقی سب منشیوں کے ساتھ خون کے رشتے سے جڑا ہوا ہے. اِنسان کی ساری نسلیں برابر

यानी साउन्ड, रोशनी यानी लाइट, गरमी यानी हीट, बिजली (इलेक्ट्रीसिटी), और तरह तरह की किरनें (रेज़) और इनसे सम्बन्ध रखने वाली विद्याएँ आजाती हैं. अन्त में जाकर इन सब का सम्बन्ध विद्युत यानी बिजली से बताया जाता है. अणु यानी ऐटम की बाबत अभी तक यूरोप के विद्वानों में अलग अलग विचार हैं. कोई उसे एक छोटी से छोटी माद्दी यानी ठोस चीज़ समझते हैं और कोई केवल एक लहर (वेव) या शक्ति (इनरजी) बताते हैं. ऐसे ही दो विचार रोशनी के बारे में भी रह चुके हैं. तीसरे हिस्से में ज्योतिष शास्त्र है जिसे अंगरेज़ी में ऐस्ट्रानोमी कहते हैं. इस तीसरे हिस्से में भी ऊपर के दोनों आकार एक तरह से मिल जाते हैं. इसमें सब ब्रह्मान्डों यानी आकाश के गोलों, अनन्त सूर्यों, सितारों, सैयारों, सौर्य जगतों, आसमानों का बनना, चक्कर काटना, उनके आपस के रिश्ते और एक दूसरे पर उनके असर, हमारी जमीन के रहने वालों पर उनके असर, सब आ जाते हैं.

इस निगाह से ज्योतिष के दो भाग हो गए हैं. एक गणित यानी मामूली ऐस्ट्रानोमी और दूसरा फलित यानी ऐस्ट्रालोजी. इन्हीं दोनों को नजूम भी कहते हैं. इनका सम्बन्ध हमारी धरती की बनावट, हमारे समय के विभागों, हमारे मन की हालतों और हमारी धरती के अन्दर की धातों, हमारे मौसमों, हमारे ज्वार भाटों, हमारे सम्मूम व तूफ़ानों जिन्हें अंगरेज़ी में Simooms and Typhoons कहते हैं, हमारे ज़लज़लों, तरह तरह के जानवरों, वनस्पतियों और इनसानी क़ौमों की पैदायशों वग़ैरह वग़ैरह से भी बिलकुल साफ़ है. इसी पर हमारे ज्योतिषी पाँच साल, सात साल, बारह साल, छत्तीस साल, सौ साल, बारहसौ साल, छत्तीस सौ साल, चार हज़ार तीन सौ बीस साल वग़ैरह के युग बना लेते हैं. इन सबका सम्बन्ध उन अरबों खरबों दुनियाओं से है जो ज्योतिष का विषय है.

यह बात भी साफ़ समझ में आ सकता है कि ये सब चीज़ें और सब साइन्सें एक दूसरे में मिल जाती हैं. अगर ऐटमों से दुनियाएँ बनी हैं तो हर ऐटम के अन्दर सब दुनियाएँ मौजूद हैं. बड़ के दरख़्त में बीज और बीज में पूरा दरख़्त मौजूद हैं. बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा दोनों बेअन्त हैं. जगह, समय और हरकत यानी स्पेस, टाइम और मोशन सब द्रष्टा यानी आत्मा के मन की हालतें हैं. इन सबका अस्तित्व सापेक्ष यानी केवल एक दूसरे के सम्बन्ध से है. दूरबीन को अगर हम ध्यान से देखें, चलती रेल को पास से खड़े होकर और फिर दूर पहाड़ से खड़े होकर देखें तो यह बात साफ़ समझ में आ जाती है. हम अपने सपनों और गहरी नींद पर निगाह डालें तब भी हम इसे समझ सकते हैं.

یعنی ساؤنڈ، روشنی یعنی لائٹ، گرمی یعنی ہیٹ، بجلی (ایلیکٹروسٹی)، اور طرح طرح کی کرنیں (ریز) اور اِن سے سمبندھ رکھنے والی ودیائیں آجاتی ہیں۔ انت میں جا کر اِن سب کا سمبندھ ودیوت یعنی بجلی سے بتایا جاتا ہے۔ انو یعنی ایٹم کی بابت ابھی تک یورپ کے ودوانوں میں الگ الگ وچار ہیں۔ کوئی اِسے ایک چھوٹی سی چھوٹی مادی یعنی ٹھوس چیز سمجھتے ہیں اور کوئی کیول ایک لہر (ویو) یا شکتی (انرجی) بتاتے ہیں۔ ایسے ہی دو وچار روشنی کے بارے میں بھی رہ چکے ہیں۔ تیسرے حصے میں جیوتش شاستر ہے جسے انگریزی میں ایسٹرانومی کہتے ہیں۔ اِس تیسرے حصے میں بھی اوپر کے دونوں آکار ایک طرح سے مل جاتے ہیں۔ اِس میں سب براہمانڈوں یعنی آکاش کے گولوں، اننت سوریوں، ستاروں، سیاروں سوریہ جگتوں، آسمانوں کا بننا، چکر کاٹنا، اُن کے آپس کے رشتے اور ایک دوسرے پر اُن کے اثر، ہماری زمین کے رہنے والوں پر اُن کے اثر، سب آ جاتے ہیں۔

اِس نگاہ سے جیوتش کے دو بھاگ ہو گئے ہیں۔ ایک گنت یعنی معمولی ایسٹرانومی اور دوسرا پھلت یعنی ایسٹرالاجی۔ انہیں دونوں کو نجوم بھی کہتے ہیں۔ اُن کا سمبندھ ہماری دھرتی کی بناوٹ، ہماری سمے کے وبھاگوں، ہمارے من کی حالتوں اور ہماری دھرتی کے اندر کی دھاتوں، ہمارے موسموں، ہمارے جوار بھاٹوں، ہمارے سموم و طوفانوں جنہیں انگریزی میں Simooms and Typhoons, کہتے ہیں، ہمارے زلزلوں، طرح طرح کے جانوروں، ونسپتیوں اور اِنسانی قوموں کی پیدائشوں وغیرہ وغیرہ سے بھی بالکل صاف ہے۔ اِس پر ہمارے جوتشی پانچ سال، سات سال، بارہ سال چھتیس سال، سو سال، بارہ سو سال، چھتیس سو سال، چار ہزار تین سو بیس سال وغیرہ کے یگ بنا لیتے ہیں۔ اِن سب کا سمبندھ ان اربوں کھربوں دنیاؤں سے ہے جو جیوتش کا وشے ہے۔

یہ بات بھی صاف سمجھ میں آسکتی ہے کہ یہ سب چیزیں اور سب سائنسیں ایک دوسرے میں مل جاتی ہیں۔ اگر ایٹموں سے دنیائیں بنی ہیں تو ہر ایٹم کے اندر سب دنیائیں موجود ہیں۔ بڑ کے درخت میں بیج اور بیج میں دوسرا درخت موجود ہے۔ بڑے سے بڑا اور چھوٹے سے چھوٹا دونوں بے انت ہیں۔ جگہ، سمے اور حرکت یعنی اِسپیس، ٹائم اور موشن سب درشٹا یعنی آتما کے من کی حالتیں ہیں۔ اِن سب کا استتو ساپیکش یعنی کیول ایک دوسرے کے سمبندھ سے ہے۔ دوربین کو اگر ہم دھیان سے دیکھیں، چلتی ریل کو پاس سے کھڑے ہو کر اور پھر دور پہاڑ سے کھڑے ہو کر دیکھیں تو یہ بات صاف سمجھ میں آجاتی ہے۔ ہم اپنے سپنوں اور گہری نیند پر نگاہ ڈالیں تب بھی ہم اِسے سمجھ سکتے ہیں۔

पर केवल इस मादी दुनिया, इस अचेतन जगत की निगाह से भी अगर हम ज़रा ध्यान से देखें तो हमारे सब आदि और अन्त, आग़ाज़ और अंजाम, सब एक दूसरे में मिल जाते हैं. मानव समाज के अन्दर न कोई अलग नस्ल है और न कोई अलग राष्ट्र या क़ौम. साइन्स भी इस चीज़ को मानती है कि इनसान की सब नसलें एक दूसरे में मिली हुई हैं. सब में सब का खून है. कोई किसी से जुदा नहीं. आजकल की राजनीति भी इस चीज़ को समझती जा रही है और इसे जल्दी से जल्दी साक्षात कर लेना चाहती है कि दुनिया में कोई अलग राष्ट्र नहीं, कोई अलग क़ौम नहीं. सब सब में हैं और सब एक हैं. इसे समझ लेना ही असली बहबूदी के रास्ते पर चलना है. यही ईश्वर अल्लाह को समझने का ज़ीना है.

अंगरेज़ कवि टेनिसन ने लिखा है : "हर आदमी के छोटे से वजूद के दोनों तरफ़ एक अथाह गहरा समन्दर है जिसमें से एक तरफ़ से निकल कर वह उसी में दूसरी तरफ़ जा मिलता है". गीता में लिखा है :—"सब भूत यानी प्राणी शुरू में अव्यक्त यानी ग़ैर ज़ाहिर मिले हुए थे, बीच में यह सब अलग अलग व्यक्त यानी ज़हूर पिज़ीर हुए और आख़ीर में फिर यह सब अव्यक्त यानी एक दूसरे में मिल जावेंगे". हम सब ग़ैब (अज्ञात) से आये हैं और ग़ैब ही की तरफ़ जा रहे हैं. हमारी जो यह बीच की हालत है यही हमारी सारी इनसानी तारीख़ है. संस्कृत में इसी को इतिहास-पुराण कहते हैं. सब इतिहास-पुराण इसी बीच की हालत का बयान करते हैं. इसमें हमारी सर्ग यानी ख़िलक़त, हमारा विकास यानी इर्तक़ा (एवोलूशन), और प्रलय यानी क़यामत (डिज़ोलूशन), सब आ जाते हैं. इसी में महाभूतों यानी ऐटम्स और जीव ग्राम यानी सब जानदारों का हाल शामिल है.

हरबर्ट स्पेन्सर ने इस सचाई को अपनी पुस्तक "दि सिन्थेटिक फिलासोफ़ी" में बड़ी सुन्दरता से दर्शाया है. रूसी सन्त विदूषी मैडम ब्लेवैट्सकी ने अपनी पुस्तक "दि सीक्रेट डाक्ट्रिन" की तीन बड़ी बड़ी जिल्दों में इसे और भी अधिक सुन्दरता के साथ बयान किया है. यह दोनों पुस्तकें इस मामले में भारत के इतिहास-पुराण का ही नया रूप हैं.

विश्व के इस इतिहास को और हमारी सारी साइन्सों और विद्याओं को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है. एक पंचभूत-शास्त्र जिसमें आजकल की सब केमिस्ट्री, फ़िज़िक्स, उन अणुओं और परमाणुओं का हाल, जिन्हें न्यूट्रान प्रोटान, इलेक्ट्रान वग़ैरह नामों से पुकारा जाता है, सब गैसें, धातें, तरल पदार्थ, ठोस पदार्थ सब इसी में आ जाते हैं. दूसरे भूतशक्ति-शास्त्र, जिसमें कुछ फ़िज़िक्स, कुछ डायनेमिक्स शामिल है. इसमें शक्ति, इनरजी, फ़ोर्स, आवाज़,

پر کیول اِس مادی دنیا اِس اچیتن جگت کی نگاہ سے بھی اگر ہم ذرا دھیان سے دیکھیں تو ہمارے سب آدی اور انت، آغاز اور انجام، سب ایک دوسرے میں مل جاتے ہیں۔ مانو سماج کے اندر نہ کوئی الگ نسل ہے اور نہ کوئی الگ راشٹر یا قوم۔ سائنس بھی اِس چیز کو مانتی ہے کہ اِنسان کی سب نسلیں ایک دوسرے میں ملی ہوئی ہیں۔ سب میں سب کا خون ہے۔ کوئی کسی سے جدا نہیں۔ آجکل کی راجنیتی بھی اِس چیز کو سمجھتی جا رہی ہے اور اِسے جلدی سے جلدی ساکشات کر لینا چاہتی ہے کہ دنیا میں کوئی الگ راشٹر نہیں، کوئی الگ قوم نہیں۔ سب سب میں ہیں اور سب ایک ہیں۔ اِسے سمجھ لینا ہی اصلی بہبودی کے راستے پر چلنا ہے۔ یہی ایشور اللہ کو سمجھنے کا زینہ ہے۔

انگریز کوی ٹینیسن نے لکھا ہے:—"ہر آدمی کے چھوٹے سے وجود کے دونوں طرف ایک اتھاہ گہرا سمندر ہے جس میں سے ایک طرف سے نکل کر وہ اُسی میں دوسری طرف جا ملتا ہے۔" گیتا میں لکھا ہے:—"سب بھوت یعنی پرانی، شروع میں اویکتی یعنی غیر ظاہر ملے ہوئے تھے، بیچ میں یہ سب الگ ویکت یعنی ظہور پذیر ہوئے اور آخیر میں پھر یہ سب اویکت یعنی ایک دوسرے میں مل جاویں گے۔ ہم سب غیب (اگیات) سے آئے ہیں اور غیب ہی کی طرف جا رہے ہیں۔ ہماری یہ جو بیچ کی حالت ہے یہی ہماری ساری اِنسانی تاریخ ہے۔ سنسکرت میں اِسی کو اِتہاس پوران کہتے ہیں۔ سب اتہاس پوران اِسی بیچ کی حالت کو بیان کرتے ہیں۔ اِس میں ہماری سرگ یعنی خلقت، ہمارا وکاس یعنی ارتقا (ایوولوشن)، اور پرلے یعنی قیامت (ڈیزولوشن) سب آ جاتے ہیں۔ اِسی میں مہابھوتوں یعنی ایٹمس اور جیو گرام یعنی سب جانداروں کا حال شامل ہے۔

ہربرٹ اسپنسر نے اِس سچائی کو اپنی پستک "دی سنتھیٹک فلسفی" میں بڑی سادرتا سے درشایا ہے۔ روسی سنت ودوشی میڈم بلیواٹسکی نے اپنی پستک "دی سیکریٹ ڈاکٹرن" کی تین بڑی بڑی جلدوں میں اِسے اور بھی ادھک سندرتا کے ساتھ بیان کیا ہے۔ یہ دونوں پستکیں اِس معاملے میں بھارت کے اتہاس پوران کا ہی نیا روپ ہیں۔

وشو کے اِس اِتہاس کو اور ہماری ساری سائنسوں اور ودیاؤں کو تین حصوں میں بانٹا جا سکتا ہے۔ ایک پنچ بھوت شاستر جس میں آجکل کی سب کیمسٹری، فزکس انوں اور پرمانوؤں کا حال، جنھیں نیوٹران، پروٹان، الیکٹران وغیرہ ناموں سے پکارا جاتا ہے، سب گیسیں، دھاتیں، ترل پدارتھ، ٹھوس پدارتھ سب اِسی میں آجاتے ہیں۔ دوسرے بھوت شکتی شاستر، جس میں کچھ فزکس کچھ ڈائنمکس شامل ہے۔ اِس میں شکتی، انرجی، فورس، آواز

अनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत

डाक्टर भगवानदास

पिछले लेखों में हम आत्मा और अनात्मा की चरचा कर चुके हैं, और आत्मा यानी रूह को ही असल वजूद और अनात्मा यानी बाहर की सारी दुनिया को एक तरह से फ़रेब, माया या धोखा दिखा चुके हैं. हम यह भी बता चुके हैं कि आत्मा या रूह यानी असल वजूद एक ही है. इस एकता में अनेकता यानी वहदत में कसरत भी एक धोखा है. वही अल्लाह है. वही हम सब का "मैं" है. वही है, और कुछ है ही नहीं. इस लेख में हम यह दिखाना चाहते हैं कि इस दुनिया में अनात्मा की सारी साइन्सें, सब जड़ विद्याएँ, इस दिखाई देने वाले विश्व आलमे जहूर से ही सम्बन्ध रखती हैं और इसी का इतिहास हैं.

उन साइन्सों में से एक एक के लिये हमें एक एक विषय यानी एक एक महदूद दुनिया, परिमित सृष्टि गढ़नी पड़ती है. हमें कोई ऐसा मज़मून लेना पड़ता है जिसका शुरू भी हो और आख़ीर भी, जबकि असल वजूद में कहीं कोई अलहदगी, कोई सिरा, कोई शुरू या कोई आख़ीर, है ही नहीं. सारा वजूद, सारा अस्तित्व, असल हक़ीक़त एक बे-अन्त समन्दर है, एक दरियाए बेकिनार है जिसका न कोई ओर है और न कोई छोर. पर हमारे लिए इस दुनिया को समझने के सिवाय इस तरह के फ़रज़ी टुकड़े कर करके देखने के और कोई तरीक़ा भी नहीं है.

मिसाल के तौर पर हमने अपना एक सौर्य जगत, एक निज़ामे शम्सी फ़र्ज़ कर रखा है. उसी के अन्दर हमारी धरती का यह गोला है, इनकी हमने एक एक इकाई बना रखी है. तब हम इनकी अलग अलग साइन्सें बना पाते हैं और उनमें अलग अलग खोज कर सकते हैं.

ऐसे ही मानव इतिहास को समझने के लिये हमें अलग अलग नसलें, जातियाँ और राष्ट्र यानी क़ौमें फ़र्ज़ कर लेनी पड़ती हैं. हर जाति या क़ौम का हम एक प्रारम्भ यानी आग़ाज़ और एक अन्त यानी अंजाम मान लेते हैं. फिर इस तरह के एक ही फ़रज़ी राष्ट्र की आयु के भी हम अलग अलग फ़रज़ी टुकड़े कर लेते हैं और टुकड़ों को राष्ट्र के इतिहास के अलग अलग युग (ज़माने) मान लेते हैं. यही हमारी दिमाग़ी दौड़ के लिये अलग अलग मैदान हो जाते हैं.

ایکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پچھلے لیکھوں میں ہم آتما اور اناتما کی چرچا کر چکے ہیں، اور آتما یعنی روح کو ہی اصل وجود اور اناتما یعنی باہر کی ساری دنیا کو ایک طرح سے فریب مایا یا دھوکا دکھا چکے ہیں۔ ہم یہ بھی بتا چکے ہیں کہ آتما یا روح یعنی اصل وجود ایک ہی ہے۔ اس ایکتا میں انیکتا یعنی وحدت میں کثرت بھی ایک دھوکا ہے۔ وہی اللہ ہے۔ وہی ہم سب کا "میں" ہے۔ وہی ہے اور کچھ ہے، ہی نہیں۔ اس لیکھ میں ہم یہ دکھانا چاہتے ہیں کہ اِس دنیا میں انا تما کی ساری سائنس، سب جڑ ودیائیں، اِس دکھائی دینے والے وشو عالم ظہور سے ہی سمبندھ رکھتی ہیں اور اسی کا اتہاس ہیں۔

اِن سائنسوں میں سے ایک ایک کے لئے ہمیں ایک ایک وشے یعنی ایک ایک محدود دنیا، پریمت سرشٹی گڑھنی پڑتی ہے۔ ہمیں کوئی ایسا مضمون لینا پڑتا ہے جس کا شروع بھی ہو اور اخیر بھی، جب کہ اصل وجود میں کہیں کوئی علیحدگی، کوئی سرا، کوئی شروع یا کوئی اخیر، ہے ہی نہیں۔ سارا وجود، سارا آستتو، اصل حقیقت ایک بےانت سمندر ہے، ایک دریائے بے کنار ہے جس کا نہ کوئی اور ہے اور نہ کوئی چھور۔ پر ہمارے لئے اِس دنیا کو سمجھنے کے سوائے اِس طرح کے فرضی ٹکڑے کر کر کے دیکھنے کے اور کوئی طریقہ بھی نہیں ہے۔

مثال کے طور پر ہم نے اپنا ایک سوریہ جگت، ایک نظام شمسی فرض کر رکھا ہے۔ اُسی کے اندر ہماری دھرتی کا یہ گولا ہے، اِن کی ہم نے ایک ایک اکائی بنا رکھی ہے۔ تب ہم اِن کی الگ الگ سائنسیں بنا پاتے ہیں اور اُن میں الگ الگ کھوج کر سکتے ہیں۔

ایسے ہی مانو اِتہاس کو سمجھنے کے لئے ہمیں الگ الگ نسلیں، جاتیاں اور راشٹر یعنی قومیں فرض کر لینی پڑتی ہیں۔ ہر جاتی یا قوم کا ایک ہی فرضی راشٹر کی وایو کے بھی ہم الگ الگ فرضی ٹکڑے کر لیتے ہیں اور ٹکڑوں کو راشٹر کے اتہاس کے ایک پرارمبھ یعنی آغاز اور ایک انت یعنی انجام مان لیتے ہیں۔ پھر اِس طرح کے ہم الگ الگ یگ (زمانے) مان لیتے ہیں۔ یہی ہماری دماغی دوڑ کے لئے الگ الگ میدان ہو جاتے ہیں۔

अनाजील—बाइबिल (इंजील का बहु वचन)

सालिक—ईश्वर-प्रेमी, आसार—लक्षण (असर का बहुवचन) नजात—मोक्ष हालिक—मौत

तरदीद—खंडन हक़—ईश्वर

मा अन्ज़िला मिन क़ब्लिक़—"यही बातें हमने पहली धर्म पुस्तकों में कही हैं".

ऐ ईश्वर प्रेमी तू गीता और बाइबिल को भी पढ़ और यह मालूम कर कि मोक्ष के लक्षण और मौत का कारण क्या है. ऐ 'मुहिब' ईश्वर की किताबों का खंडन नहीं करना चाहिये. क़ुरआन में भी लिखा है कि "यही बातें हमने पहली धर्म पुस्तकों में कही हैं".

اناجیل—بائبل (انجیل کا بہو وچن) سالک—ایشور پریمی آثار—لکشن (اثر کا بہو وچن) نجات—موکش" ہالک—موت تردید—کھنڈن حق—ایشور "ماأنزل من قبلک"—"یہی بات ہم نے پہلی دھرم پستکوں میں کہی ہیں .

اے ایشور پریمی تو گیتا اور بائبل کو بھی پڑھ اور یہ معلوم کر کہ موکش کے لکشن اور موت کا کارن کیا ہے . اے محب ایشور کی کتابوں کا کھنڈن نہیں کرنا چاہیے . قرآن میں بھی لکھا ہے کہ" یہی باتیں ہم نے پہلی دھرم پستکوں میں کہی ہیں" .

(29)

करते हैं मसाजिद में यह अल्लाह को बन्द,
मंदिर को समझते हैं समाँ से वह बुलंद,
हिन्दू-ओ-मुसलमाँ हैं यह दोनों जाहिल,
लड़ते हैं मज़ाहिब पे कहीं दानिशमंद ?

मसाजिद—(मसजिद का बहु वचन) समाँ—आकाश (ईश्वर से मतलब है) बुलंद—ऊँचा जाहिल—मूर्ख मज़ाहिब—धर्म (मज़हब का बहु-वचन) दानिशमंद—समझदार

मुसलमान मसजिदों में अल्लाह को बंद किये हुए हैं. हिन्दू मंदिर को ईश्वर से भी ऊँचा समझते हैं. यह दोनों ही मूर्ख हैं. समझदार लोग कहीं धर्म के पीछे लड़ाई करते हैं ?

(29)

کرتے ہیں مساجد میں یہ اللہ کو بند،
مندر کو سمجھتے ہیں سماں سے وہ بلند،
ہندو و مسلماں ہیں یہ دونوں جاہل،
لڑتے ہیں مذاہب پہ کہیں دانش مند؟

مساجد— (مسجد کا بہو وچن) سماں—آکاش (ایشور سے مطلب ہے) بلند— اونچا، جاہل— مورکھ، مذاہب— دھرم (مذہب کا بہو وچن)، دانش مند— سمجھدار

مسلمان مسجدوں میں اللہ کو بند کئے ہوئے ہیں—ہندو مندر کو ایشور سے بھی اونچا سمجھتے ہیں . یہ دونوں ہی مورکھ ہیں . سمجھدار لوگ کہیں دھرم کے پیچھے لڑائی کرتے ہیں ؟

शाही—बादशाहत　　गम—रंज
वह्म—शंकाएँ　　नजात—छुटकारा
हक़—ईश्वर　　आगाही—परिचय

जब तक शराब नहीं होती, मछली और मुरग़ी बेकार होती है. जब तक फ़क़ीरी न हो बादशाही दुनिया के लिए मुसीबत हो जाती है. ऐ 'मुहिब' हम जबतक ईश्वर को न समझेंगे तब तक दुनिया की चिन्ताओं और दुखों से छुटकारा नहीं मिल सकता.

(26)

जिस दिल में न हो उस बुते दिलदार की याद,
होती नहीं उस क़ल्ब को हिस्से बेदाद,
आक़िल है तो भाग अहले दुई से सौ कोस,
इस नफ़्स की यारी का है अंजाम फ़साद.

बुते दिलदार—प्रियतम (ईश्वर) क़ल्ब—मन, अंतर.
हिस्से बेदाद—अन्याय की अनुभूति
आक़िल—समझदार　अहले दुई—ईश्वर को संसार से अलग समझने वाले　नफ़्स—मन
अंजाम—नतीजा　फ़िसाद—झगड़ा

जिस दिल में ईश्वर की याद नहीं है वह अन्याय करता है तो उसे दुख नहीं होता. अगर तू समझदार है तो ईश्वर को संसार से अलग समझने वालों से अलग रह. अपने मन की बात मानने का नतीजा हमेशा झगड़ा ही होता है.

(27)

इस जाते अहद के हैं अजब रंग हजार,
बुलबुल है कहीं और कहीं है गुल्जार,
इस आलमे अश्काल से छूटेगा वही,
रखेगा जो हर वक़्त ख़याले दिलदार.

जाते अहद—ईश्वर　गुल्जार—बाग़
आलम—दुनिया, अश्काल—रूप (शक्ल का बहु वचन)
दिलदार—प्रियतम (ईश्वर)

उस एक परमेश्वर के हजार रंग हैं. कहीं वह बुलबुल है और कहीं बाग़. जो आदमी हमेशा ईश्वर का ध्यान रखेगा उसीको इस रूपों के संसार से मुक्ति मिलेगी.

(28)

गीता को, अनाजील को ऐ सालिक पढ़,
आसारे नजातो सबबे हालिक पढ़,
तरदीद न कर हक़ की किताबों की 'मुहिब'
क़ुरआन में "मा अंज़ल मिन क़ब्लिक़" पढ़,

فقر—فقیری　غم—رنج　وہم—شنکائیں
نجات—چھٹکارا　حق—ایشور　آگاہی—پریچے

جب تک شراب نہیں ہوتی، مچھلی اور مرغی بیکار ہوتی ہے ۔ جب تک فقیری نہ ہو بادشاہی دنیا کے لئے مصیبت ہوجاتی ہے ۔ اے 'محب' ہم جب تک ایشور کو نہ سمجھینگے تب تک دنیا کی چنتاؤں اور دکھوں سے چھٹکارا نہیں مل سکتا ۔

(26)

جس دل میں نہ ہو اُس بت دلدار کی یاد،
ہوتی نہیں اُس قلب کو حس بیداد،
عاقل ہے تو بھاگ اہل دوئی سے سو کوس،
اِس نفس کی یاری کا ہے انجام فساد

بت دلدار—پریتم (ایشور)، قلب—من، انتر
حس بیداد—انیائے کی انوبھوتی عاقل—سمجھدار اہل دوئی—ایشور کو سنسار سے الگ سمجھنے والے نفس—من
انجام—نتیجہ فساد—جھگڑا

جس دل میں ایشور کی یاد نہیں ہے وہ انیائے کرتا ہے تو اُسے دکھ نہیں ہوتا ۔ اگر تو سمجھدار ہے تو ایشور کو سنسار سے الگ سمجھنے والوں سے الگ رہ ۔ اپنے من کی بات ماننے کا نتیجہ ہمیشہ جھگڑا ہی ہوتا ہے ۔

(27)

اُس ذات احد کے ہیں عجب رنگ ہزار،
بلبل ہے کہیں اور کہیں ہے گلزار،
اِس عالم اشکال سے چھوٹیگا وہی،
رکھے گا جو ہر وقت خیال دلدار ۔

ذات احد—ایشور گلزار—باغ عالم—دنیا اشکال—روپ (شکل کا بہو وچن) دلدار—پریتم (ایشور)

اُس ایک پرمیشور کے ہزار رنگ ہیں ۔ کہیں وہ بلبل ہے اور کہیں باغ۔ جو آدمی ہمیشہ ایشور کا دھیان رکھیگا اُسی کو اِس روپوں کے سنسار سے مکتی ملے گی ۔

(28)

گیتا کو اناجیل کو، اے سالک پڑھ،
آثار نجات و سبب حالک پڑھ،
تردید نہ کر حق کی کتابوں کی 'محب'
قرآن میں "ما انزل من قبلق" پڑھ،

जाहिल—मूर्ख ग़ाफ़िल—बेख़बर
वल्लाह—ईश्वर की सौगंद आक़िल—योग्य
दीवाना—पागल

मैंने माना कि तू इस समय बड़ा विद्वान माना जाता है और तुझे विद्वानों के कपड़े पहनने का अधिकार है लेकिन अगर तुझे अपनी और ख़ुदा की ख़बर नहीं है तो ईश्वर की सौगन्द तू विद्वान नहीं, पागल है.

(23)

हिन्दू-ओ-मुसलमाँ में अगर्चे दिल है,
भाई का मगर भाई 'मुहिब' क़ातिल है,
हो जाए अगर तफ़रिक़-ए-वहमी दूर,
अक़वाम का इत्तिहाद क्या मुश्किल है ?

क़ातिल—हत्यारा तफ़रिक़-ए-वहमी—बेकार का मतभेद
अक़वाम—जातियाँ (क़ौम का बहुवचन) इत्तिहाद—एकता

अगर्चे हिन्दू और मुसलमान दोनों के सीने में दिल है मगर फिर भी भाई भाई का ख़ून बहा रहा है. अगर दोनों का बेकार का मत भेद दूर हो जाए तो इन दोनों जातियों का मिलना क्या मुश्किल है ?

(24)

है दोस्तीए अहले-वतन ग़ैर पै शाक़,
लेकिन है बिरादर का बिरादर मुश्ताक़,
साँपों से नहीं कम हैं 'मुहिब' वह इंसाँ,
जो हिन्दु-ओ-मुस्लिम में बढ़ाते हैं निफ़ाक़.

अहलेवतन—देशवासी शाक़—असह्य
मुश्ताक़—प्रेमी निफ़ाक़—दुश्मनी

देशवासियों में आपस का प्रेम दूसरे लोग नहीं देख सकते. लेकिन भाई को भाई से प्यार तो होता ही है. ऐ 'मुहिब' वह लोग जो हिन्दुओं और मुसलमानों में झगड़ा बढ़ाते हैं साँपों से कम नहीं हैं.

(25)

बे मै के हैं बेलुत्फ़ यह मुरगो माही,
बे फ़ुक्र के इदबारे जहाँ है शाही,
दुनिया से ग़मो वहम से न पायेंगे नजात,
जब तक न हक़ से हो 'मुहिब' आगाही.

मै—शराब
मुर्गो माही—मछली और (मुरगी का गोश्त)
फ़ुक्र—फ़क़ीरी इदबार—दुर्भाग्य

جاھل—مورکھ' غافل—بےخبر' واللہ—ایشور کی سوگند' عاقل—یوگیہ' دیوانہ—پاگل .

میں نے مانا کی تو اس سمے بڑا ودوان مانا جاتا ھے اور تجھے ودوانوں کے کپڑے پہننے کا ادھیکار ھے لیکن اگر تجھے اپنی اور خدا کی خبر نہیں ھے تو ایشور کی سوگند تو ودوان نہیں' پاگل ھے .

(23)

ھندو و مسلماں میں اگرچہ دل ھے'
بھائی کا مگر بھائی 'محب' قاتل ھے'
ھو جائے اگر تفرقۂ وھمی دور'
اقوام کا اتحاد کیا مشکل ھے ؟

قاتل—ھتیارا' تفرقۂ وھمی—بیکار کا مت بھید' اقوام—جاتیاں (قوم کا بہو وچن)' اتحاد— ایکتا .

اگرچہ ھندو اور مسلمان دونوں کے سینے میں دل ھے مگر پھر بھی بھائی بھائی کا خون بہا رھا ھے . اگر دونوں کا بیکار کا مت بھید دور ھو جائے تو اِن دونوں جاتیوں کا ملنا کیا مشکل ھے ؟

(24)

ھے دوستئی اھل وطن غیر پے شاق'
لیکن ھے برادر کا برادر مشتاق'
سانپوں سے نہیں کم ھے 'محب' وہ اِنساں'
جو ھندو و مسلم میں بڑھاتے ھیں نفاق .

اھل وطن—دیش واسی' شاق—آسہیہ' مشتاق—پریمی' نفاق—دشمنی .

دیش واسیوں میں آپس کا پریم دوسرے لوگ نہیں دیکھ سکتے . لیکن بھائی کو بھائی سے پریم تو ھوتا ھی ھے . اے 'محب' وہ لوگ جو' ھندوؤں اور مسلمانوں میں جھگڑا بڑھاتے ھیں سانپوں سے کم نہیں ھیں .

(25)

بے مئے کے ھے بےلطف یہ مرغ و ماھی'
بے فقر کے ادبار جہاں ھے شاھی'
دنیا کے غم و وھم سے نہ پائیں گے نجات
جب تک نہ حق سے ھو 'محب' آگاھی .

مئے—شراب' مرغ و ماھی—مچھلی اور مرغی (کا گوشت) ادبار—دربھاگیہ

दीद—दर्शन   खुदावंदे जलील—महान ईश्वर
खलील—हजरत इब्राहीम का नाम   ज़ात—व्यक्तित्व
दलील—सबूत, तर्क   क़ंदील—बड़ा लैम्प

यदि तू ईश्वर को देखना चाहता है तो इब्राहीम की भाँति अपने को संसार की हर चीज़ में समझ. ऐ 'मुहिब' हर आदमी खुद ही इस बात का सबूत है कि वह ईश्वर से एकाकार है. सूरज के दिखाने के लिये सूरज ही क़ंदील हो सकता है, इसी तरह ईश्वर से एकाकार होना स्वयं सिद्धि है.

(20)

क्या ढूंढता है काबे की गिल में उसको,
मेहराब में या फ़र्श की सिल में उसको,
बर्बाद न कर उम्र जहाँगर्दी में,
घर बैठ के देख अपने ही दिल में उसको.

क़ाबा—मक्का में मुसलमानों का तीर्थ   गिल—मिट्टी, जहाँगर्दी—दुनिया में घूमना.

ईश्वर तुझे न काबे की मिट्टी में मिलेगा न वहाँ की मेहराब में और न फ़र्श के पत्थर में. दुनिया में घूम कर उम्र बर्बाद न कर. ईश्वर को अपने दिल में देख.

(21)

क्या रूहे खुदा क़ल्बे मज़ाहिर में है नेस्त?
क्या रूहे ज़नो मर्द मक़ाबिर में है नेस्त?
देख अपने खयाल को झुका कर गर्दन,
बातिन में तो हस्त और ज़ाहिर में है नेस्त.

क़ल्ब—मन, अंतर   मज़ाहिर—प्रकट वस्तुएँ
ज़नोमर्द—स्त्री पुरुष   मक़ाबिर—(क़ब्र का बहु वचन)
नेस्त—नहीं है   बातिन—मन, अंतर.

क्या भगवान की आत्मा प्रकट वस्तुओं के अंदर नहीं है? वह ऐसे ही उनके अन्दर है जैसे क़ब्रों में मनुष्यों की आत्माएँ. तू गर्दन झुका कर भगवान का ध्यान कर तो उसे देखेगा. वह दिल के अन्दर है, बाहर कहीं नहीं.

(22)

माना कि तू इस वक़्त का अल्लामा है
बर में भी फ़ज़ीलत का तेरे जामा है,
जाहिल जो रहे खुद से खुदा से ग़ाफ़िल,
वल्लाह तू आक़िल नहीं दीवाना है.

अल्लामा—विद्वान   बर—शरीर
फ़ज़ीलत—योग्यता   जामा—पोशाक

دید—درشن، خداوند جلیل—مہان ایشور، خلیل—حضرت ابراھیم کا نام، ذات—ویکتتو، دلیل—ثبوت، ترک، قندیل—بڑا لیمپ.

یدی تو ایشور کو دیکھنا چاھتا ھے تو ابراھیم کے بھانتی اپنے کو سنسار کی ھر چیز میں سمجھ. اے 'محب' ھر آدمی خود ھی اِس بات کا ثبوت ھے کہ ایشور سے ایکا کار ھے. سورج کے دکھانے کے لئے سورج ھی قندیل ھو سکتا ھے، اسی طرح ایشور سے ایکاکار ھونا سویم سدھی ھے.

(20)

کیا ڈھونڈتا ھے کعبہ کی گل میں اُس کو،
محراب میں یا فرش کی سل میں اُس کو،
برباد نہ کر عمر جہاں گردی میں،
گھر بیٹھ کے دیکھ اپنے ھی دل میں اُس کو.

کعبہ—مکہ میں مسلمانوں کا تیرتھ، گل—مٹی،
جہاں گردی—دنیا میں گھومنا.

ایشور تجھے نہ کعبہ کی مٹی میں ملیگا نہ وھاں کی محراب میں اور نہ فرش کے پتھر میں. دنیا میں گھوم کر عمر برباد نہ کرنا. ایشور کو اپنے دل ھی میں دیکھ.

(21)

کیا روح خدا قلب مظاھر میں ھے نیست ؟
کیا روح زن و مرد مقابر میں ھے نیست ؟
دیکھ اپنے خیال کو جھکا کر گردن،
باطن میں تو ھست اور ظاھر میں ھے نیست.

قلب—من، انتر، مظاھر—پرکٹ وستوئیں، زن و مرد—استری پرش، مقابر—(قبر کا بھووچن)، نیست—نہیں ھے، باطن—من، انتر.

کیا بھگوان کی آتما پرکٹ وستوؤں کے اندر نہیں ھے ؟ وہ ایسے ھی اُن کے اندر ھے جیسے قبروں میں منشیوں کی آتمائیں. تو گردن جھکا کر بھگوان کا دھیان کر تو اسے دیکھے گا. وہ دل کے اندر ھے، باھر کہیں نہیں.

(22)

مانا کہ تو اِس وقت کا علامہ ھے،
بر میں بھی فضیلت کا تیرے جامہ ھے،
جاھل جو رھے خود سے خدا سے غافل،
واللہ تو عاقل نہیں دیوانہ ھے.

علامہ—ودوان، بر—شریر، فضیلت—یوگتا، جامہ—پوشاک.

[पिछले नम्बर से आगे]

रुबाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(17)

सब एक हैं हिन्दू-ओ-मुसलमाँ ज़ंगी,
करती है अलग इनको दिलों की तंगी,
हर रंग हुआ डूब के जिस ख़ुम में साफ़,
वह ख़ुम है मुहम्मद की 'मुहिब' बेरंगी.

ज़ंगी—काला (यहाँ मतलब पापी से है) ख़ुम—शराब का मटका

बेरंगी—(यहां तात्पय निस्पृहता से है)

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक से पापी हैं. इन दोनों को दिलों की तंगी अलग करती है. ऐ 'मुहिब' मुहम्मद साहब की निस्पृहता हर एक पाप को धो देती है.

(18)

बातिन है वही हक़, वही ज़ाहिर है,
फ़ाइल है वही और वही क़ादिर है,
हिन्दू-ओ-मुसलमाँ पे नहीं कुछ मौक़ूफ़,
जो मुनकिरे वहदत है वही काफ़िर है.

बातिन—छिपा हुआ ज़ाहिर—खुला

फ़ाइल—करने वाला क़ादिर—शक्तिमान

मौक़ूफ़—निर्भर

मुनाकिरे वहदत—ईश्वर की एक रूपता को न मानने वाला.

वही ईश्वर खुला भी है, छिपा भी है, वही सब कुछ करता है और वही सर्व शक्तिमान है. चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान, ईश्वर की एक रूपता जो भी न मानेगा वह काफ़िर कहा जायगा.

(19)

गर चाहता है दीदे ख़ुदावंदे जलील,
देख आप को हर चीज़ में मानिन्दे ख़लील,
तू ज़ात पे अपने है 'मुहिब' आप दलील,
सूरज के दिखाने को है सूरज क़ंदील.

[پچھلے نمبر سے آگے]

رباعیات محب

شری 'محب'

(17)

سب ایک ہیں ہندو-و-مسلماں زنگی،
کرتی ہے الگ اُن کو دلوں کی تنگی،
ہر رنگ ہوا ڈوب کے جس خم میں صاف،
وہ خم ہے محمد کی 'محب' بیرنگی۔

زنگی—کالا (یہاں مطلب پاپی سے ہے) خم—شراب کا مٹکا، بیرنگی—(یہاں تاتپریہ نس پرہتا سے ہے)۔

ہندو اور مسلمان دونوں ایک سے پاپی ہیں۔ ان دونوں کو دلوں کی تنگی الگ کرتی ہے۔ اے 'محب' محمد صاحب کی نس پرہتا ہر ایک پاپ کو دھو دیتی ہے۔

(18)

باطن ہے وہی حق، وہی ظاہر ہے،
فاعل ہے وہی اور وہی قادر ہے،
ہندو-و-مسلماں پہ نہیں کچھ موقوف،
جو منکر وحدت ہے وہی کافر ہے۔

باطن—چھپا ہوا، ظاہر—کھلا، فاعل—کرنے والا، قادر—شکتی مان، موقوف—نربھر، منکر وحدت—ایشور کی ایک روپتا کو نہ ماننے والا۔

وہی ایشور کھلا بھی ہے، چھپا بھی ہے، وہی سب کچھ کرتا ہے اور وہی سرو شکتیمان ہے۔ چاہے ہندو ہو چاہے مسلمان ایشور کی ایک روپتا جو بھی نہ مانے گا وہ کافر کہا جائیگا۔

(19)

اگر چاہتا ہے دید خداوند جلیل،
دیکھ آپکو ہر چیز میں مانند خلیل،
تو ذات پہ اپنے ہے 'محب' آپ دلیل،
سورج کے دکھانے کو ہے سورج قندیل۔

उसे ज़रूर दे दो; क्योंकि बिलाशक उसने आग की गरमी बरदाश्त करके खाना तैयार किया है और उसका सारा प्रबन्ध किया है."

—अबुहुरैरह, बुख़ारी: अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"एक दूसरे के साथ हाथ मिलाओ. तो एक दूसरे के ख़िलाफ़ तुम्हारे सब बुग़्ज़ यानी द्वेष तुम्हारे दिलों से मिट जावेंगे; एक दूसरे को हदीये यानी भेंट दिया करो, इससे तुम में एक दूसरे के साथ मुहब्बत बढ़ेगी, और इससे तुम्हारे दिलों की गहरी से गहरी नफ़रतें भी मिट जावेंगी."

—अता-अल-ख़ुरासानी, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि —"अपनी पारसाई (धार्मिकता) का ज़रा सा भी मज़ाहरा (दिखावा) करना 'शिर्क' है, यानी अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत करने के बराबर है."

—उमर बिन अल ख़त्ताब, मुआज़ बिन जबल से, इब्न माजह: बेहक़ी.

—अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.

اسے ضرور دے دو؛ کیونکہ بلا شک اس نے آگ کی گرمی برداشت کر کے کھانا تیار کیا ھے اور اس کا سارا پربندھ کیا ھے."

—ابوھریرہ، بخاری: ابوداؤد: ترمذی.

محمد صاحب نے کہا:—"ایک دوسرے کے ساتھ ھاتھ ملاؤ، تو ایک دوسرے کے خلاف تمھارے سب بغض یعنی دویش تمھارے دلوں سے مٹ جاویں گے؛ ایک دوسرے کو ھدیے یعنی بھینٹ دیا کرو، اس سے تم میں ایک دوسرے کے ساتھ محبت بڑھے گی، اور اس سے تمھارے دلوں کی گہری نفرتیں بھی مٹ جاویں گی."

—عطاالخراسانی، مسلم.

محمد صاحب نے کہا کہ—"اپنی پارسائی (دھارمکتا) کا ذرا سا بھی مظاہرہ (دکھاوا) کرنا 'شرک' ھے، یعنی اللہ کے سوا دوسرے کی عبادت کرنے کے برابر ھے."

—عمر بن الخطاب، معاذ بن جبل سے، ابن ماجہ: بیہقی.

انوادک—شری مجیب رضوی.

पैग़म्बर ने कहा कि:—"तुम में से कोई ईमान वाला नहीं है जब तक कि उसने उस तालीम के ज़रिये जो मैंने लाकर दी है अपनी शहवतों पर क़ाबू हासिल न कर लिया हो."

—अब्दुल्लाह बिन अमरू नवावी.

پیغمبر نے کہا کہ:—"تم میں سے کوئی ایمان والا نہیں ہے جب تک کہ اُس نے اُس تعلیم کے ذریعہ جو میں نے لاکر دی ہے اپنی شہوتوں پر قابو حاصل نہ کر لیا ہو."

—عبداللہ بن عمرو' نواوی۔

पैग़म्बर ने कहा :—"ऐ अबुज़र ! इनसानों की तंज़ीम यानी संगठन से बढ़कर कोई अक़लमन्दी का काम नहीं है, अपनी नफ़्स पर क़ाबू रखने से बढ़कर कोई तक़वा यानी परहेज़गारी नहीं है और सबके साथ अच्छा बरताव करने से बढ़कर कोई तारीफ़ की बात नहीं है."

—अबुज़र, बेहक़ी.

پیغمبر نے کہا:—"اے ابوذر! اِنسانوں کی تنظیم یعنی سنگٹھن سے بڑھ کر کوئی عقلمندی کا کام نہیں ہے' اپنے نفس پر قابو رکھنے سے بڑھ کر کوئی تقویٰ یعنی پرہیزگاری نہیں ہے اور سب کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنے سے بڑھ کر کوئی تعریف کی بات نہیں ہے."

—ابوذر' بیہقی۔

जाबिर कहता है कि :—"रसूल से एक आदमी की चरचा की गई जो बहुत इबादत करता था और उसी में लगा रहता था, फिर रसूल से एक ऐसे आदमी की चरचा की गई जो अपने को गुनाह से बचाता रहता था. इस पर रसूल ने कहा—'इबादत करने वाला उसके बराबर नहीं हो सकता जो गुनाह से अपने को बचाता है."

—जाबिर, तिरमिज़ी.

جابر کہتا ہے کہ:—"رسول سے ایک آدمی کی چرچا کی گئی جو بہت عبادت کرتا تھا اور اُسی میں لگا رہتا تھا' پھر رسول سے ایک ایسے آدمی کی چرچا کی گئی جو اپنے کو گناہ سے بچاتا رہتا تھا۔ اِس پر رسول نے کہا—'عبادت کرنے والا اُس کے برابر نہیں ہو سکتا جو گناہ سے اپنے کو بچاتا ہے."

—جابر' ترمذی۔

मुहम्मद साहब ने कहा कि :-

"तुम्हारे ख़िदमतगार तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे जान माल की रक्षा करते हैं; अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंपा है; जिस किसी के हाथों में उसका भाई हो उसे चाहिये कि उसे वही खाना खिलावे जो ख़ुद खाता है और वही कपड़े पहनावे जो ख़ुद पहनता है. उनसे कोई ऐसा काम न लो जो उनकी ताक़त से बाहर हो और अगर तुम उनसे कोई ऐसा काम लो तो उन्हें उस काम के करने में ख़ुद मदद दो."

—माअरूर बिन सुवैद, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

محمد صاحب نے کہا کہ:-

"تمہارے خدمتگار تمہارے بھائی ہیں اور تمہارے جان مال کی رکشا کرتے ہیں۔ اللہ نے اُنہیں تمہارے ہاتھوں میں سونپا ہے؛ جس کسی کے ہاتھوں میں اُس کا بھائی ہو اُسے چاہئے کہ اُسے وہی کھانا کھلاوے جو خود کھاتا ہے اور وہی کپڑے پہناوے جو خود پہنتا ہے۔ اُن سے کوئی ایسا کام نہ لو جو اُن کی طاقت سے باہر ہو اور اگر تم اُن سے کوئی ایسا کام لو تو اُنہیں اُس کام کے کرنے میں خود مدد دو."

—معرور بن سوید' بخاری؛ مسلم؛ ابوداؤد؛ ترمذی۔

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जब कभी तुम में से किसी का ख़िदमतगार तुम में से किसी के पास खाना लेकर आवे, तो अगर तुम उसे अपने साथ बिठाकर खाना न खिलाओ, तो कम से कम उस खाने में से दो चार लुक़्मे

محمد صاحب نے کہا—"جب کبھی تم میں سے کسی کا خدمتگار تم میں سے کسی کے پاس کھانا لے کر آوے؛ تو اگر تم اسے اپنے ساتھ بٹھاکر کھانا نہ کھلاؤ' تو کم سے کم اُس کھانے میں سے دو چار لقمے

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"हर आदमी को चाहिये कि अपने घर में घुसते वक़्त अपनी बीवी और बच्चों को सलाम करे."

—अनस, तिरमिज़ी.

अनस कहता है कि :—

"मुहम्मद साहब जब कभी बच्चों के पास से निकलते थे तो उन्हें 'सलाम' ! करते थे."

—अनस, बुख़ारी: मुसलिम.

जरीर और अनस दोनों का बयान है कि :—

"पैग़म्बरे ख़ुदा जब कभी औरतों के पास से निकलते थे तो उन्हें 'सलाम' ! करते थे."

—जरीर, अहमद; अनस; बुख़ारी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जो आदमी सवारी के ऊपर चला जा रहा हो उसका फ़र्ज़ है कि उस आदमी को सलाम करे जो पैदल चला जा रहा है; जो आदमी पैदल चला जा रहा हो उसका फ़र्ज़ है कि उस आदमी को सलाम करे जो बैठा हो, और जो लोग थोड़ी तादाद में हों उनका फ़र्ज़ है कि अपने से बड़ी तादाद वालों को सलाम करें."

—अबु हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम: तिरमिज़ी: अबुदाऊद.

अनस कहता है :—"पैग़म्बर साहब मुझसे कहा करते थे—'ऐ मेरे बच्चे ! जब तू अपने बाल बच्चों में आय तो उन्हें सलाम कर, यह चीज़ तेरे लिये और तेरे घर वालों के लिये दोनों के लिये बरकत साबित होगी.'"

—अनस, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जब तुम लोग अपने घरों के अन्दर जाओ तो घर के लोगों को सलाम करो और जब बाहर निकलो तो घर के लोगों से सलाम करके बिदा लो."

—क़तादह, बेहक़ी.

लोगों ने पैग़म्बर से पूछा :—"नजात क्या है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और घर में बैठकर गुनाहों पर रोओ."

—उक़बह बिन आमिर, तिरमिज़ी.

محمد صاحب نے کہا کہ:—ہر آدمی کو چاہئے کہ اپنے گھر میں گھستے وقت اپنی بیوی اور بچوں کو سلام کرے۔"

—انس، ترمذی۔

انس کہتا ہے کہ:—

"محمد صاحب جب کبھی بچوں کے پاس سے نکلتے تھے تو اُنہیں 'سلام' ! کرتے تھے۔"

—انس، بخاری: مسلم۔

جریر اور انس دونوں کا بیان ہے کہ:—

"پیغمبر خدا جب کبھی عورتوں کے پاس سے نکلتے تھے تو اُنہیں 'سلام' ! کرتے تھے۔"

—جریر، احمد: انس: بخاری۔

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جو آدمی سواری کے اوپر چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو پیدل چلا جا رہا ہے؛ جو آدمی پیدل چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو بیٹھا ہو، اور جو لوگ تھوڑی تعداد میں ہوں اُن کا فرض ہے کہ اپنے سے بڑی تعداد والوں کو سلام کریں۔"

—ابو ہریرہ، بخاری: مسلم: ترمذی: ابوداؤد۔

انس کہتا ہے:—"پیغمبر صاحب مجھسے کہا کرتے تھے—'اے میرے بچے ! جب تو اپنے بال بچوں میں جائے تو اُنہیں سلام کر، یہ چیز تیرے لئے اور تیرے گھر والوں کے لئے دونوں کے لئے برکت ثابت ہوگی۔'"

—انس، ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا—"جب تم لوگ اپنے گھروں کے اندر جاؤ تو گھر کے لوگوں کو سلام کرو اور جب باہر نکلو تو گھر کے لوگوں سے سلام کر کے بدا لو۔"

—قتادہ، بیہقی۔

لوگوں نے پیغمبر سے پوچھا:—"نجات کیا ہے ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"اپنی زبان پر قابو رکھو اور گھر میں بیٹھ کر اپنے گناہوں پر روؤ۔"

—عقبہ بن عامر، ترمذی۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

एक बद्दू अरब पैग़म्बर के पास आया और कहने लगा :—"मुझे कोई ऐसा काम बता दीजिये जिससे मैं जन्नत में जा सकूँ." पैग़म्बर ने जवाब दिया—"तुमने बात थोड़ी कही पर सवाल बहुत बड़ा किया. अगर कोई जानदार तुम्हारे पास हैं तो उन्हें आज़ाद कर दो, अगर कोई ग़ुलाम तुम्हारे पास हैं तो उन्हें भी आज़ादी दे दो. तुम्हारा कोई नातेदार अगर तुम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उससे प्यार करो; और अगर तुम यह न कर सको तो भूखों को खाना खिलाओ और प्यासों को पानी पिलाओ, और लोगों से नेक काम करने के लिये कहो और बुरे काम करने से उन्हें मना करो; अगर तुम यह भी न कर सको तो अपनी ज़बान बन्द रखो जब तक कि उससे कोई अच्छी बात न निकले."

—बरा बिन आज़िब, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—

"क़यामत के दिन सात तरह के आदमियों को अल्लाह अपने साए में ले लेगा, और उस दिन सिवाय अल्लाह के और किसी का साया काम न देगा: एक वह आदमी जो लोगों के ऊपर सरदार है और सबके साथ इन्साफ़ का बरताव करता है; दूसरे वह जवान आदमी जिसने अपनी जवानी को अल्लाह की ख़िदमत में बिताया हो; तीसरे वह आदमी जो जब भी दुआ माँगने की जगह से निकलता है तो जब तक फिर उसी जगह वापिस न आ जावे उसका दिल उसी जगह अटका रहता है; चौथे वह जो अल्लाह के लिये एक दूसरे से प्यार करते हैं; उसी के लिये मिलते हैं और उसी के लिये अलग होते हैं; पाँचवें वह आदमी जो अल्लाह को याद करता रहता है और जब भी याद करता है तो उसकी आँखों से आँसू गिरते रहते हैं; छठे वह आदमी जिसके दिल को अगर कोई ऊँचे ख़ानदान की और .ख़ूबसूरत औरत भी अपनी तरफ़ खींचती है तो वह कहता है,—'सचमुच, मैं अल्लाह से डरता हूँ;' और सातवें वह आदमी जो .ख़ैरात देता है और उसे छिपाता है, यहाँ तक कि उसका दाँया हाथ जो कुछ देता है उसकी उसके बाँए हाथ तक को ख़बर नहीं होती."

—अबु हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"आदमियों में सब से ज़ियादह लायक़ वह है जो दूसरों को उनसे पहले सलाम करता है."

—अबु उमामह, अबु दाऊद: तिरमिज़ी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ایک بدو عرب پیغمبر کے پاس آیا اور کہنے لگا:—"مجھے کوئی ایسا کام بتا دیجئے جس سے میں جنت میں جا سکوں۔" پیغمبر نے جواب دیا—"تم نے بات تھوڑی کہی پر سوال بہت بڑا کیا۔ اگر کوئی جاندار تمہارے پاس ہیں تو انہیں آزاد کر دو، اگر کوئی غلام تمہارے پاس ہیں تو انہیں بھی آزادی دے دو۔ تمہارا کوئی ناتے دار اگر تمہارے ساتھ برائی کرے تو تم اسے پیار کرو؛ اور اگر تم یہ نہ کر سکو تو بھوکوں کو کھانا کھلاؤ اور پیاسوں کو پانی پلاؤ، اور لوگوں سے نیک کام کرنے کے لئے کہو اور برے کام کرنے سے انہیں منع کرو؛ اگر تم یہ بھی نہ کر سکو تو اپنی زبان بند رکھو جب تک کہ اس سے کوئی اچھی بات نہ نکلے۔"

—براابن عازب، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا کہ:—

"قیامت کے دن سات طرح کے آدمیوں کو اللہ اپنے سائے میں لے لیگا اور اس دن سوائے اللہ کے کسی کا سایہ کام نہ دے گا۔ ایک وہ آدمی جو لوگوں کے اوپر سردار ہے اور سب کے ساتھ انصاف کا برتاؤ کرتا ہے؛ دوسرے وہ جوان آدمی جس نے اپنی جوانی کو اللہ کی خدمت میں بتایا ہو؛ تیسرے وہ آدمی جو جب بھی دعا مانگنے کی جگہہ سے نکلتا ہے تو جب تک پھر اسی جگہہ واپس نہ آجاوے اس کا دل اسی جگہہ اٹکا رہتا ہے؛ چوتھے وہ دو آدمی جو اللہ کے لئے ایک دوسرے سے پیار کرتے ہیں، اسی کے لئے ملتے ہیں اسی کے لئے الگ ہوتے ہیں، پانچویں وہ آدمی جو اللہ کو یاد کرتا رہتا ہے اور جب بھی یاد کرتا ہے تو اسکی آنکھوں سے آنسو گرتے رہتے ہیں، چھٹے وہ آدمی جس کے دل کو اگر کوئی اونچے خاندان کی اور خوبصورت عورت بھی اپنی طرف کھینچتی ہے تو وہ کہتا ہے—'سچ مچ' میں اللہ سے ڈرتا ہوں؛ اور ساتویں وہ آدمی جو خیرات دیتا ہے اور اسے چھپاتا ہے، یہاں تک کہ اس کا دایاں ہاتھ جو کچھ دیتا ہے اس کی اس کے بائیں ہاتھ تک کو خبر نہیں ہوتی۔"

—ابو ہریرہ، بخاری: مسلم۔

محمد صاحب نے کہا کہ:—"آدمیوں میں سب سے زیادہ لائق وہ ہے جو دوسروں کو ان سے پہلے سلام کرتا ہے۔"

—ابو امامہ، عبداللہ: ترمذی۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

डाक्टर मिरज़ा अबुल फ़ज़ल

मुहम्मद साहब ने कहा :—

"क़यामत के दिन हर आदमी से 'पाँच बातों की बाबत सवाल किया जावेगा: उसकी ज़िन्दगी की बाबत यह कि तूने अपनी ज़िन्दगी कैसे बसर की; उसकी जवानी की बाबत यह कि तुम जवान से बूढ़े कैसे हो गए; उसकी दौलत की बाबत यह कि तुमने दौलत कैसे कमाई और यह कि वह दौलत किस किस काम में ख़र्च की; और उसके इल्म की बाबत यह कि तुमने अपने इल्म का क्या उपयोग किया."

—इब्न मसऊद, तिरमिज़ी.

अबु मूसा कहता है कि :—"मैं अपने दो भतीजों को लेकर रसूल के पास गया. मेरे भतीजों में से एक ने कहा,—'ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह ने जो मुल्क आपको हुकूमत करने के लिये दिया है उसके किसी हिस्से पर हम दोनों को गवरनर मुक़र्रर कर दीजिये.' मेरे दूसरे भतीजे ने भी यही बात कही. इस पर पैग़म्बर ने जवाब दिया,—'अल्लाह की क़सम ! मैं किसी ऐसे आदमी को कहीं अफ़सर मुक़र्रर नहीं करता जो ख़ुद मुझ से मुक़र्रर किये जाने के लिये कहता है, या जो अफ़सर होने की इच्छा रखता है.'"

—अबू मूसा, बुख़ारी: मुसलिम: अबु दाऊद: नसाई.

अनस कहता है:—"मैंने यह देखा कि जब कभी पैग़म्बर के सामने कोई ऐसा मामला लाया गया जिसमें किसी ने किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया हो और जिसे नुक़सान पहुँचा है वह बदला लेना चाहता हो तो पैग़म्बर ने हमेशा यही हुक्म दिया कि माफ़ कर दो."

—अनस, अबु दाऊद: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह नेक है और वह लोगों से सिवाय नेक कामों के और कोई काम क़ुबूल नहीं करता."

—अबु हुरैरह, मुसलिम : तिरमिज़ी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا:—

"قیامت کے دن ہر آدمی سے پانچ باتوں کی بابت سوال کیا جائیگا : اُس کی زندگی کی بابت یہ کہ تو نے اپنی زندگی کیسے بسر کی؛ اُس کی جوانی کی بابت یہ کہ تم جوان سے بوڑھے کیسے ہو گئے؛ اُس کی دولت کی بابت یہ کہ تم نے دولت کیسے کمائی اور یہ کہ وہ دولت کس کس کام میں خرچ کی؛ اور اُس کے علم کی بابت کہ تم نے اپنے علم کا کیا اُپیوگ کیا۔"

—ابن مسعود، ترمذی ۔

ابو موسیٰ کہتا ہے کہ:—"میں اپنے دو بھتیجوں کو لے کر رسول کے پاس گیا ۔ میرے بھتیجوں میں سے ایک نے کہا—'اے اللہ کے رسول ! اللہ نے جو ملک آپ کو حکومت کرنے کے لئے دیا ہے اُس کے کسی حصے پر ہم دونوں کو گورنر مقرر کر دیجیئے ۔' میرے دوسرے بھتیجے نے بھی یہی بات کہی ۔ اِس پر پیغمبر نے جواب دیا—'اللہ کی قسم ! میں کسی ایسے آدمی کو کہیں افسر مقرر نہیں کرتا جو خود مجھسے مقرر کئے جانے کے لئے کہتا ہے' یا جو افسر ہونے کی اِچھا رکھتا ہے ۔"

—ابن موسیٰ، بخاری: مسلم: ابوداؤد: نساءی ۔

انس کہتا ہے:—"میں نے یہ دیکھا کہ جب کبھی پیغمبر کے سامنے کوئی ایسا معاملہ لایا گیا جس میں کسی نے کسی کو کوئی نقصان پہنچایا ہو اور جسے نقصان پہنچا ہو وہ بدلہ لینا چاہتا ہو تو پیغمبر نے ہمیشہ یہی حکم دیا کہ معاف کر دو ۔"

—انس، ابوداؤد: نسائی ۔

محمد صاحب نے کہا :—"اللہ نیک ہے اور وہ لوگوں سے سوائے نیک کاموں کے اور کوئی کام قبول نہیں کرتا ۔"

—ابو ہریرہ، مسلم : ترمذی ۔

बराबर पैदल ही आया जाया करते थे. मेरे दिल पर चिन्तामणि जी का, उनकी सादगी और सच्चरित्रता का बहुत असर पड़ा. हालाँकि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन फिर भी उस समय से लेकर आख़ीर तक मेरे ऊपर हमेशा उनकी मेहरबानी बनी रही.

चिन्तामणि जी को स्वदेशी आन्दोलन के बढ़ते हुए सैलाब को रोकने के लिये इलाहाबाद लाया गया था. ख़ास तौर पर युनिवर्सिटी के अन्दर विद्यार्थियों पर गरम दल के बढ़ते हुए असर को रोकने का काम चिन्तामणि जी के सुपुर्द किया गया. चिन्तामणि जी बहुत अच्छे वक्ता थे. उनकी दलीलों की काट आसान न थी. उनके प्रोपेगेन्डा का श्रीगणेश जहाँ तक मुझे याद है, आक्सफ़ोर्ड केम्ब्रिजबोर्डिंग हाउस से हुआ था, जो अब ग़ालिबन हालेन्ड हाल के नाम से प्रसिद्ध है. उनके पहले लेक्चर में मैं भी मौजूद था. हाल ठसा ठस भरा हुआ था. प्रोफ़ेसर भी मौजूद थे. चिन्तामणि जी ने स्वदेशी और बायकाट के ख़िलाफ़ बड़ी तर्क पूर्ण तक़रीर की. ज्योंही उन्होंने बोलकर ख़त्म किया विद्यार्थियों ने आवाज़ें लगाईं —,"सुन्दरलाल जी भी बोलें." दोनों तरफ़ के ख़याल विद्यार्थियों ने सुने और जब वोट लिये गये तो कुल इने गिने चार वोट चिन्तामणि जी को मिले और क़रीब चार सौ उनके ख़िलाफ़. चिन्तामणि जी ने प्रेम से आकर मुझसे हाथ मिलाया और कहा—"बधाई !" उस पहली मीटिंग का तजरबा इतना मँहगा पड़ा कि फिर बायकाट के विरोधियों को युनिवर्सिटी के किसी हॉस्टल में दूसरी मीटिंग करने का साहस न हुआ.

[बाक़ी अगले नम्बर में]

برابر پیدل ہی آیا جایا کرتے تھے ۔ میرے دل پر چنتامنی جی کا اُن کی سادگی اور سچرترتا کا بہت اثر پڑا ۔ حالانکہ میرے وچار اُن سے نہیں ملتے تھے لیکن پھر بھی اُس سمے سے لے کر آخر تک میرے اوپر ہمیشہ اُن کی مہربانی بنی رہی ۔

چنتامنی جی کو سودیشی آندولن کے بڑھتے ہوئے سیلاب کو روکنے کے لئے الٰہ آباد لایا گیا تھا ۔ خاص طور پر یونیورسٹی کے اندر ودیارتھیوں پر گرم دل کے بڑھتے ہوئے اثر کو روکنے کا کام چنتامنی جی کے سپرد کیا گیا ۔ چنتامنی جی بہت اچھے وکتا تھے ۔ اُن کی دلیلوں کی کاٹ آسان نہ تھی۔ ان کے پروپیگنڈا کا شری گنیش، جہاں تک مجھے یاد ہے، اکسفورڈ کیمبرج بورڈنگ ہاؤس سے ہوا تھا، جو اب غالباً ہالینڈ ہال کے نام سے پرسدھ ہے۔ اُن کے پہلے لکچر میں میں بھی موجود تھا ۔ ہال ٹھسا ٹھس بھرا ہوا تھا ۔ پروفیسر بھی موجود تھے ۔ چنتامنی جی نے سودیشی اور بائیکاٹ کے خلاف بڑی ترک پورن تقریر کی ۔ جیوں ہی اُنہوں نے بول کر ختم کیا ودیارتھیوں نے آوازیں لگائیں— "سندر لال جی بھی بولیں۔" دونوں طرف کے خیال ودیارتھیوں نے سنے اور جب ووٹ لئے گئے تو کل اِنے گنے چار ووٹ چنتامنی جی کو ملے اور قریب چار سو ان کے خلاف ۔ چنتامنی جی نے پریم سے آکر مجھ سے ہاتھ ملایا اور کہا— "بدھائی!" اِس پہلی میٹنگ کا تجربہ اتنا مہنگا پڑا کہ پھر بائیکاٹ کے ورودھیوں کو یونیورسٹی کے کسی ہوسٹل میں دوسری میٹنگ کرنے کا ساہس نہ ہوا ۔

[باقی اگلے نمبر میں]

[बाक़ी सफ़ा 264 का]

बहुत सी बातें र्क कर दीं जो हिन्दुओं को विदेशी लगती थीं. अपनी इस क़ुरबानी से उन्होंने हिन्दोस्तान की मिली-जुली कलचर की वह शानदार कहानी लिखी कि जिसकी झाँकी हमें मँझले ज़माने में बनी हुई हर किताब और हर तस्वीर में, हर क़िले और हर महल में, हर शेर और हर नज़्म में मिलती है.

[अंग्रेज़ी से अनुवादक—वि० ना० पांडे]

[باقی صفحہ 264 کا]

بہت سی باتیں ترک کردیں جو ہندوؤں کو ودیشی لگتی تھیں ۔ اپنی اِس قربانی سے اُنہوں نے ہندستان کی ملی جلی کلچر کی وہ شاندار کہانی لکھی کہ جس کی جھانکی ہمیں منجھلے زمانے میں بنی ہوئی ہر کتاب اور ہر تصویر میں، ہر قلعے اور محل میں، ہر شعر اور ہر نظم میں ملتی ہے ۔

[انگریزی سے انوادک— وی ۔ نا ۔ پانڈے]

मजबूर होकर घर लौट जाऊँ तो इलाहाबाद में आन्दोलन ठन्डा पड़ जायगा. मकान मालिक बेचारा बड़ा परेशान हुआ. पुलिस के सामने उसने इक़रारनामा रक्खा. सरकारी वकील से भी सलाह मशविरा लिया गया, मगर मुझे निकालने की कोई क़ानूनी सूरत न निकली. ज़ाब्ते से अब हमारी पार्टी का अड्डा 56 चौक गंगादास में क़ायम हो गया.

इसी बीच कुछ ऐसे वाक़ेयात पेश आये जिनसे गरम दल के हिन्दुस्तान के नक़्शे में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह हो गई.

जो बुज़ुर्ग हमें मदद और सलाह मशावरा दिया करते थे उनके ख़िलाफ़ सरकार ने क़दम उठाने शुरू किये. सबसे पहला हमला पंडित श्रीकृष्ण जोशी पर हुआ. वह सरकारी अफ़सर थे और डिप्टी कलेक्टरी के ओहदे पर थे. उन्हें बरख़ास्त कर दिया गया. बाबू शशि भूषण चटर्जी का इलाहाबाद से ग़ाज़ीपुर तबादला कर दिया गया. पंडित बालकृष्ण भट्ट को कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी पर ज़ोर डालकर नौकरी से बरख़ास्त करा दिया गया और अन्त में कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी के ज़रिये बाबू रामानन्द चटर्जी को प्रिंसिपल के पद से इस्तीफ़ा देने को मजबूर कर दिया गया. प्रिन्सिपल के पद से हटकर बाबू रामानन्द ने इलाहाबाद में ही इन्डियन प्रेस से, 'प्रवासी' नामक बंगला मासिक पत्र और 'Modern Review' नामक अंग्रेज़ी मासिक-पत्र निकालना शुरू किया. बाद में रामानन्द बाबू कलकत्ते चले गये और अपने दोनों पत्र भी कलकत्ते से जाकर निकालने लगे.

सर तेजबहादुर सप्रू को, जो उस समय डाक्टर सप्रू थे, मुझसे बेहद दिली मोहब्बत थी हालाँकि राय उनकी मालवीय जी से मिलती थी. यही कैफ़ियत डाक्टर सच्चिदानन्द सिन्हा और मुंशी ईश्वर शरण की थी.

इलाहाबाद से उस ज़माने में 'नीम सरकारी' दैनिक 'पायोनियर' और नरम दल का दैनिक 'इन्डियन पीपुल' निकलते थे. 'इन्डियन पीपुल' का सम्पादन काली बाबू करते थे किन्तु काली बाबू भी नरम दल के नेताओं की नज़रों में उतने नरम न थे जितना कि वे उम्मीद करते थ. चुनानचे मालवीय जी, पंडित मोतीलाल जी और दूसरे नरम दली नेताओं ने मिल कर 'लीडर' का प्रकाशन शुरू किया. 'इन्डियन पीपुल' भी 'लीडर' में ही मिला लिया गया. 'लीडर' के सम्पादन में मदद देने और गरम दल के नौजवानों से मोर्चा लेने के लिये स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि को इलाहाबाद बुलाया गया. यह तो याद नहीं रहा कि चिन्तामणि जी उस समय कहाँ रहते थे लेकिन इतना मुझे याद है कि वे साउथ रोड में 'लीडर' के दफ़्तर में

مجبور ہوکر گھر لوٹ جاؤں تو الہٰآباد میں آندولن ٹھنڈا پڑ جائیگا. مکان مالک بے چارہ بڑا پریشان ہوا. پولیس کے سامنے اُس نے اِقرار نامہ رکھا. سرکاری وکیل سے بھی صلاح و مشورہ لیا گیا مگر مجھے نکالنے کی کوئی قانونی صورت نہ نکلی. ضابطہ سے اب ہماری پارٹی کا اڈا 56 چوک گنگا داس میں قایم ہوگیا.

اِسی بیچ کچھ ایسے واقعات پیش آئے جن سے گرم دل کے ھندستان کے نقشے میں الہٰآباد کی ایک خاص جگہ ہو گئی.

جو بزرگ ہمیں مدد اور صلاح مشورہ دیا کرتے تھے ان کے خلاف سرکار نے قدم اُٹھانا شروع کیئے. سب سے پہلا حملہ پنڈت شری کرشن جوشی پر ہوا. وہ سرکاری افسر تھے اور ڈپٹی کلکٹری کے عہدے پر تھے. اُنھیں برخاست کردیا گیا. بابو ششی بھوشن چٹرجی کا الہٰآباد سے غازی پور تبادلہ کر دیا گیا. پنڈت بال کرشن بھٹ کو کائستھ پاٹھ شالا کی منیجنگ کمیٹی پر زور ڈال کر نوکری سے برخاست کرا دیا گیا اور انت میں کائستھ پاٹھ شالا کی منیجنگ کمیٹی کے ذریعے بابو رامانند چٹرجی کو پرنسپل کے پد سے استعفیٰ دینے کو مجبور کر دیا گیا. پرنسپل کے پد سے ہٹ کر بابو رامانند نے الہٰآباد میں ہی انڈین پریس سے 'پرواسی' نامک بنگلا ماسک پتر اور 'Modern Review' نامک انگریزی ماسک پتر نکالنا شروع کیا. بعد میں رامانند بابو کلکتے چلے گئے اور اپنے دونوں پتر بھی کلکتے سے جاکر نکالنے لگے.

سرتیج بہادر سپرو کو، جو اُس سمے ڈاکٹر سپرو تھے، مجھسے بے حد دلی محبت تھی حالانکہ رائے اُن کی مالویہ جی سے ملتی تھی. یہی کیفیت ڈاکٹر سچدانند سنہا اور منشی ایشور شرن کی تھی.

الہٰآباد سے اُس زمانے میں 'نیم سرکاری' دینک پایونیر' اور نرم دل کا دینک 'انڈین پیپل' نکلتے تھے. 'انڈین پیپل' کا سمپادن کالی بابو کرتے تھے کنتو کالی بابو بھی نرم دل کے نیتاؤں کی نظروں میں اُتنے نرم نہ تھے جتنا کہ وے امید کرتے تھے. چنانچہ مالویہ جی، پنڈت موتی لال جی اور دوسرے نرم دلی نیتاؤں نے مل کر 'لیڈر' کا پرکاشن شروع کیا. 'انڈین پیپل' بھی 'لیڈر' میں ہی ملا لیا گیا. 'لیڈر' کے سمپادن میں مدد دینے اور گرم دل کے نوجوانوں سے مورچہ لینے کے لئے سورگیہ سی. وائی. چنتامنی کو الہٰآباد بلایا گیا. یہ تو یاد نہیں رہا کہ چنتامنی جی اُس سمے کہاں رہتے تھے لیکن اِتنا مجھے یاد ہے کہ وے ساؤتھ روڈ میں 'لیڈر' کے دفتر میں

पिता जी क्या खयाल करेंगे. मगर सब कुछ सोचने के बाद मैं आख़री निश्चय पर पहुँच गया.

वाइस चान्सलर ने पूछा—"क्या .फ़ैसला किया ?"

मैंने जवाब दिया—"आपकी सलाह न मानने का मुझे बड़ा अफ़सोस है. मेरी गुस्ताख़ी माफ़ हो, मैं बहुत मजबूर हूँ."

दूसरे दिन मैं वाइस चान्सलर के हुक्म से यूनिवर्सिटी से अलग कर दिया गया. इस तरह मेरे विद्यार्थी जीवन का अन्त हो गया.

मेरे युनिवर्सिटी और हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकाले जाने के बाद साथियों के दिल गुस्से से भर गये. नित्यानन्द चटर्जी मेरे साथ ही एल-एल० बी० में पढ़ते थे. युनिवर्सिटी से मेरे निकाले जाने के बाद उन्हें एक दिन भी युनिवर्सिटी में रहना गवारा न हुआ. उन्होंने वाइस चांसलर को मेरे साथ किये गये अन्याय के ख़िलाफ़ एक सख़्त ख़त लिखा और उस ख़त के साथ साथ एल-एल० बी० के दर्जे से अपना इस्तीफ़ा भी भेज दिया.

बोर्डिंग हाउस से निकलने के बाद मैंने दोस्तों के साथ मकान की तलाश शुरू की. आगे-आगे हम लोग पहुँचते थे और पीछे-पीछे तीन-चार पुलिस के दरोग़ा और आधे दर्जन सिपाही. मकान मालिक यदि अपना मकान क़िराये पर देने को राज़ी भी हो जाता था तो पुलिस वाले उसे बाद में इतना डराते-धमकाते थे कि वह अपनी बात से फिर जाता था. कई घन्टे सर्फ़ किये, कई ख़ाली माकानों को देखा मगर पुलिस के डर के मारे सभी मकान मालिक अपने वादे से फिर गये. आख़िर में वह रात मुझे नित्यानन्द के यहाँ बितानी पड़ी.

दूसरे दिन कुछ और दोस्त, जिनसे पुलिस वाले पूरी तरह वाक़िफ़ न थे, मकान की तलाश में निकले. आख़ीर में चौक गंगादास में 56 नम्बर का मकान किराये पर लेने का उन्होंने फ़ैसला किया, होशियार दोस्तों ने, जिनमें एक या दो वकील भी थे, मकान मालिक से यह इक़रार-नामा लिखवाया—"चाहे कैसी ही आफ़ते इनसानी, आफ़ते सुलतानी और आफ़ते नागहानी आये साल भर तक न किरायेदार मकान ख़ाली करेगा और न मकान मालिक ही किरायेदार को हटायेगा." जब इक़रारनामा लिख लिया गया और मकान मालिक के उसपर दस्तख़त हो गये तो एक दोस्त उसे मेरे दस्तख़त के लिये मेरे पास लाये. फ़ौरन ही हम लोग अपना सामान लिये दिये माकान में दाख़िल हो गये. हस्ब मामूल पुलिस भी हमारे पीछे पीछे पहुँची. मकान मालिक से उसने ज़ोर दिया कि वह मुझे मकान से अलग करे. उस का ख़याल था कि अगर मैं इलाहाबाद से

پتا جی کیا خیال کریں گے. مگر سب کچھ سوچنے کے بعد میں آخری نشچے پر پہنچ گیا.

وائس چانسلر نے پوچھا—"کیا فیصلہ کیا؟"

میں نے جواب دیا—"آپ کی صلاح نہ ماننے کا مجھے بڑا افسوس ہے. میری گستاخی معاف ہو، میں بہت مجبور ہوں."

دوسرے دن میں وائس چانسلر کے حکم سے یونیورسٹی سے الگ کر دیا گیا. اِس طرح میرے ودیارتھی جیون کا انت ہو گیا.

میرے یونیورسٹی اور ہندو بورڈنگ ہاؤس سے نکالے جانے کے بعد ساتھیوں کے دل غصے سے بھر گئے. نتیا نند چٹرجی میرے ساتھ ہی ایل. ایل. بی. میں پڑھتے تھے. یونیورسٹی سے میرے نکالے جانے کے بعد اُنھیں ایک دن بھی یونیورسٹی میں رہنا گوارا نہ ہوا. اُنھوں نے وائس چانسلر کو میرے ساتھ کئے گئے انیائے کے خلاف ایک سخت خط لکھا اور اُس خط کے ساتھ ساتھ ایل. ایل. بی. کے درجے سے اپنا استعفیٰ بھی بھیج دیا.

بورڈنگ ہاؤس سے نکلنے کے بعد میں نے دوستوں کے ساتھ مکان کی تلاش شروع کی. آگے آگے ہم لوگ پہنچتے تھے اور پیچھے پیچھے تین چار پولیس کے دروغہ اور آدھے درجن سپاہی. مکان مالک یدی اپنا مکان کرایہ پر دینے کو راضی بھی ہو جاتا تھا تو پولیس والے اُسے بعد میں اتنا ڈراتے دھمکاتے تھے کہ وہ اپنی بات سے پھر جاتا تھا. کئی گھنٹے صرف کیئے، کئی خالی مکانوں کو دیکھا مگر پولیس کے ڈر کے مارے سبھی مکان مالک اپنے وعدے سے پھر گئے. آخیر میں وہ رات مجھے نتیانند کے یہاں بتانی پڑی.

دوسرے دن کچھ اور دوست، جن سے پولیس والے پوری طرح واقف نہ تھے، مکان کی تلاش میں نکلے. آخر میں چوک گنگاداس میں 56 نمبر کا مکان کرائے پر لینے کا انھوں نے فیصلہ کیا. ہوشیار دوستوں نے، جن میں ایک یا دو وکیل بھی تھے، مکان مالک سے یہ اقرارنامہ لکھوایا—"چاہے کیسی ہی آفت انسانی، آفت سلطانی اور آفت ناگہانی آئے سال بھر تک نہ کرایہ دار مکان خالی کرے گا اور نہ مکان مالک ہی کرایہ دار کو ہٹائے گا." جب اقرار نامہ لکھ لیا گیا اور مکان مالک کے اِس پر دستخط ہوگئے تو ایک دوست اُسے میرے دستخط کے لئے میرے پاس لائے. فوراً ہی ہم لوگ اپنا سامان لئے دیئے مکان میں داخل ہوگئے. حسب معمول پولیس بھی ہمارے پیچھے پیچھے پہنچی. مکان مالک سے اُس نے زور دیا کہ وہ مجھے مکان سے الگ کرے. پولیس کا خیال تھا کہ اگر میں الہ آباد سے

विलियम डिग्बी जैसे लेखकों की किताबें उन्होंने ध्यान से पढ़ीं. इटली आदि के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी उन्होंने पढ़ा. ठीक उस समय एक छोटी सी घटना हुई जिसने मंज़र अली की ज़िन्दगी पर गहरा असर डाला. म्योर सेंट्रल कालेज के प्रिंसिपल जे० जी० जेनिंग्ज़ उन दिनों एम०ए० को अंगरेज़ी पढ़ाया करते थे. जेनिंग्ज़ ने मंज़र अली से भारत के आए दिन के दुष्कालों और उनके कारणों पर एक निबन्ध लिखने को कहा. जो किताबें कोर्स में पढ़ाई जाती थीं उनमें इन दुष्कालों या क़हतों की वजह बारिश की कमी बताया गया था. लेकिन नई किताबें पढ़े हुये मंज़र अली ने इसकी वजह अपने निबन्ध में अंगरेज़ों की शोषण नीति को बताया. प्रिंसिपल जेनिंग्ज़ को निबन्ध पढ़कर गुस्सा आ गया. उन्होंने मंज़र अली को डाँटा डपटा और समझा कर निबन्ध बदलने को कहा. मंज़र अली ने अपनी राय न बदली. इस पर वह एम० ए० क्लास से निकाल दिये गये. सन् 1908 में उन्होंने एल० एल० बी० पास कर लिया. इस सबका नतीजा यह हुआ कि मंज़र अली हमारे दल में जी-जान और जोश .खरोश के साथ शामिल हो गये.

विद्यार्थियों के अन्दर गरम दल के बढ़ते हुये प्रभाव को देखकर यू० पी० की सरकार चौकन्ना हो गई. यूनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर के साथ मिलकर उन्होंने हम लोगों के ख़िलाफ़ .कदम उठाने का .फैसला किया. मैं ही पेश पेश था इसलिये मेरे ख़िलाफ़ पहले .कदम उठाने की बात सोची गई.

सबसे पहले मुझ पर हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकलने का नोटिस तामील कर दिया गया. मार्च 1907 का महीना था. इम्तहान क़रीब थे. [illegible] बोर्डिंग हाउस [illegible] हिन्दू [illegible] थे [illegible] मुझे [illegible] अलग करते हुये [illegible] हुआ था [illegible] साथ यह [illegible] थे कि मैं [illegible] जारी रखूँ, यूनिवर्सिटी अधिकारियों के पास से यह परवाना आया कि मुझे एल० एल० बी० क्लास से रस्टीकेट किया जाता है. वाइस चांसलर की ओर से यह भी कहा गया कि यदि मैं वादा कर लूँ कि इम्तहान .खत्म होने तक राजनीति में कोई भाग न लूँगा तो मेरे निकाले जाने का हुक्म रद्द किया जा सकता है. यह भी कहा गया कि ऐसी सूरत में हिन्दू बोर्डिंग से भी मुझे अलग करने का हुक्म भी वापस ले लिया जायगा. मैंने थोड़ी देर तक सोचा. बन्दिनी भारत माता की तस्वीर मेरे सामने आई. अपनी ज़िन्दगी की मोड़ पर मैं खड़ा था. मेरे उस वक़्त के .फैसले पर मेरी आगे की ज़िन्दगी का दार मदार था. मैंने यह भी सोचा कि मेरे बूढ़े

ولیم ڈگبی جیسے لیکھکوں کی کتابیں اُنہوں نے دھیان سے پڑھیں۔ اِٹلی آدی کے سوتنترتا سنگرام کا اتہاس بھی اُنہوں نے پڑھا۔ ٹھیک اُس سمے ایک چھوٹی سی گھٹنا ہوئی جس نے منظر علی کی زندگی پر گہرا اثر ڈالا۔ میور سنٹرل کالج کے پرنسپل جے۔ جی۔ جیننگز اُن دنوں ایم۔ اے کو انگریزی پڑھایا کرتے تھے۔ جیننگز نے منظر علی سے بھارت کے آئے دن کے دشکالوں اور ان کے کارنوں پر ایک نبندھ لکھنے کو کہا۔ جو کتابیں کورس میں پڑھائی جاتی تھیں اُن میں اِن دشکالوں یا قحطوں کی وجہ بارش کی کمی بتایا گیا تھا۔ لیکن نئی کتابیں پڑھے ہوئے منظر علی نے اُس کی وجہ اپنے نبندھ میں انگریزوں کی شوشن نیتی کو بتایا۔ پرنسپل جیننگز کو نبندھ پڑھ کر غصہ آگیا۔ اُنہوں نے منظر علی کو ڈانٹا ڈپٹا اور سمجھا کر نبندھ بدلنے کو کہا۔ منظر علی نے اپنی رائے نہ بدلی۔ اِس پر وہ ایم۔ اے کلاس سے نکال دیئے گئے۔ سن 1908 میں اُنہوں نے ایل۔ ایل۔ بی پاس کرلیا۔ اِس سب کا نتیجہ یہ ہوا کہ منظر علی ہمارے دل میں جی۔ جان اور جوش خروش کے ساتھ شامل ہوگئے۔

ودیارتھیوں کے اندر گرم دل کے بڑھتے ہوئے پربھاؤ کو دیکھ کر یو۔ پی۔ کی سرکار چوکنی ہو گئی۔ یونیورسٹی کے وائس چانسلر کے ساتھ مل کر اُنہوں نے ہم لوگوں کے خلاف قدم اٹھانے کا فیصلہ کیا۔ میں ہی پیش پیش تھا اِس لئے میرے ہی خلاف پہلے قدم اٹھانے کی بات سوچی گئی۔

سب سے پہلے مجھ پر ہندو بورڈنگ ہاؤس سے نکلنے کا نوٹس تعمیل کر دیا گیا۔ مارچ 1907 کا مہینہ تھا۔ امتحان [illegible] قریب تھا [illegible] ہندو [illegible] کو تھا۔ میرا سامان بورڈنگ ہاؤس کے کمرے سے باہر کر دیا گیا۔ مالویہ جی ہندو بورڈنگ ہاؤس کے [illegible] تھے اور مجھے ہوسٹل سے الگ کرتے ہوئے انہیں [illegible] جبکہ ساتھ یہ [illegible] میں [illegible] پڑھائی جاری رکھوں، یونیورسٹی ادھیکاریوں کے پاس سے یہ پروانہ آیا کہ مجھے ایل۔ ایل۔ بی۔ کلاس سے رسٹی کیٹ کیا جاتا ہے۔ وائس چانسلر کی اور سے یہ بھی کہا گیا کہ یدی میں وعدہ کر لوں کہ امتحان ختم ہونے تک راج نیتی میں کوئی بھاگ نہیں لونگا تو میرے نکالے جانے کا حکم رد کیا جا سکتا ہے۔ یہ بھی کہا گیا کہ ایسی صورت میں ہندو بورڈنگ ہاؤس سے بھی مجھے الگ کرنے کا حکم بھی واپس لے لیا جائیگا۔ میں نے تھوڑی دیر تک سوچا۔ وندنی بھارت ماتا کی تصویر میرے سامنے آئی۔ اپنی زندگی کی موڑ پر میں کھڑا تھا۔ میرے اِس وقت کے فیصلے پر میری آگے کی زندگی کا دارو مدار تھا۔ میں نے یہ بھی سوچا کہ میرے بوڑھے

और लक्ष्मण एल-एल. बी. के विद्यार्थी थे. लाला जगन्नाथ खन्ना ने बाद में लन्दन जाकर इंजीनियरिंग पढ़ी और बी. बी. सी. आइ. रेलवे के डिवीजनल इंजीनियर होगये. स्वर्गीय रामप्रसाद सिंह हिन्दी की कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के बड़े भाई थे. पुलिस में दारोगा थे. स्तीफ़ा देकर क्रान्तिकारी पार्टी में शामिल हो गये. लक्ष्मण प्रसाद के पिता रायबहादुर लाला प्रागदास सेशन्स जज थे और लक्ष्मण प्रसाद भी बाद में सेशन्स जजी से ही रिटायर हुये. जब तक जिये खादी ही पहनते रहे और इसके लिये कई साल उनकी तरक़्क़ी रुकी रही.

भाई मंजरअली सोख़्ता के साथ मेरा प्रेम इतना बढ़ा कि हम दोनों 'एक जान दो क़ालिब' की तरह बन गये. मंजर-अली का जन्म सन् 1884 में बदायूँ में हुआ था. उनके पिता शेख़ मुबारक अली नवाब बदायूँ के चचेरे भाइयों में से थे. एक पुराने सूफ़ी सिलसिले से उनके घराने का सम्बन्ध था. उसी से ख़ानदान की अल्ल 'सोख़्ता' यानी 'दग्ध' या 'जला हुआ' पड़ गई. 1857 में इनके ख़ानदान ने इन्क़लाब में हिस्सा लिया, और नतीजे में ख़ानदान के बहुत से लोग लड़ाई के मैदान में मारे गये. बहुतों को फाँसी लगी और ख़ानदान की तमाम जायदाद ज़ब्त हो गई. शेख़ मुबारिक अली फ़ारसी के विद्वान थे. नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आकर पंडित मोतीलाल नेहरू के यहाँ मुन्शी हो गये. मोतीलाल जी ने हमेशा उनके साथ दोस्त और भाई का सा बर्ताव किया. मंजर अली का ख़ानदान आनन्द भवन में ही रहता था. मंजर अली वहीं रहकर बड़े हुये. नेहरू ख़ानदान के साथ उनका आख़ीर तक प्रेम सम्बन्ध क़ायम रहा. सब उन्हें आम तौर पर मन्ना भाई कह कर पुकारते थे.

बंग भंग के जमाने में मंजर अली मेरे साथ ही म्योर सेंट्रल कालेज में एम० ए० और एल-एल० बी० साथ साथ पढ़ रहे थे. एल-एल० बी० के और विद्यार्थियों में भाई पुरुषोत्तमदास टण्डन, स्वर्गीय रमाकान्त मालवीय, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री स्वर्गीय रविशंकर शुक्ल, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, और श्री दुर्गाशङ्कर मेहता भी थे. नीचे के दरजों में पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त, स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्र देव, स्वर्गीय गणेश शङ्कर विद्यार्थी, वेंकटेश नारायन तिवारी और स्व० कृष्णाकान्त मालवीय भी थे. हालाँकि ये लोग पार्टी के मेम्बर नहीं थे लेकिन राजनीति से इन्हें पूरी हमदर्दी थी. बाद में उसी हमदर्दी ने इन्हें आजादी की लड़ाई में आगे की लाइन में लाकर खड़ा कर दिया और बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ इन लोगों ने कीं.

बंगभंग के आन्दोलन का मंजर अली पर गहरा असर पड़ा. देश की आर्थिक और राजनैतिक कैफ़ियत को उन्होंने समझना शुरू किया. दादाभाई नौरोजी, रमेश चन्द्र दत्त

اور لچھمن ایل . ایل . بی کے ودیارتھی تھے . لالہ جگناتھ کھنا نے بعد میں لندن جاکر انجینیرنگ پڑھی اور بی . بی . سی . آئی . ریلوے کے ڈویژنل انجینیر ہوگئے . سورگیہ رام پرساد سنگھ ہندی کی کویتری سوبھدرا کماری چوہان کے بڑے بھائی تھے . پولیس میں داروغہ تھے . استعفیٰ دے کر کرانت کاری پارٹی میں شامل ہوگئے . لچھمن پرساد کے پتا رائے بہادر لالہ پراگ داس سیشن جج تھے اور لچھمن پرساد بھی بعد میں سیشن ججی سے ہی ریٹائر ہوئے. جب تک جیئے کھادی ہی پہنتے رہے اور اِس کے لئے کئی سال اُن کی ترقی رکی رہی .

بھائی منظر علی سوختہ کے ساتھ میرا پریم اتنا بڑھا کہ ہم دونوں 'ایک جان دو قالب' کی طرح بن گئے . منظر علی کا جنم سن 1884 میں بدایوں میں ہوا تھا . اُن کے پتا شیخ مبارک علی نواب بدایوں کے چچیرے بھائیوں میں سے تھے . ایک پرانے صوفی سلسلے سے اُن کے گھرانے کا سمبندھ تھا . اُسی سے خاندان کی ال' سوختہ' یعنی 'دگدھ' یا' جلا ہوا' پڑگئی . 1857 میں اِن کے خاندان نے انقلاب میں حصہ لیا' اور نتیجے میں خاندان کے بہت سے لوگ لڑائی کے میدان میں مارے گئے . بہتوں کو پھانسی لگی اور خاندان کی تمام جائداد ضبط ہو گئی . شیخ مبارک علی فارسی کے ودوان تھے . نوکری کی تلاش میں الہ آباد آکر پنڈت موتی لال نہرو کے یہاں منشی ہوگئے. موتی لال جی نے ہمیشہ اُن کے ساتھ دوست اور بھائی کا سا برتاؤ کیا . منظر علی کا خاندان آنند بھون میں ہی رہتا تھا . منظر علی وہیں رہ کر بڑے ہوئے . نہرو خاندان کے ساتھ اُن کا آخیر تک پریم سمبندھ قایم رہا. سب اُنہیں عام طور پر منا بھائی کہہ کر پکار تے تھے .

بنگ بھنگ کے زمانے میں منظر علی میرے ساتھ ہی میورسنٹرل کالج میں ایم . اے اور ایل . ایل . بی . ساتھ ساتھ پڑھ رہے تھے . ایل . ایل . بی . کے اور ودیارتھیوں میں بھائی پرشوتم داس ٹنڈن' سورگیہ رما کانت مالویہ' مدھیہ پردیش کے مکھیہ منتری سورگیہ روی شنکر شکل' ڈاکٹر کیلاس ناتھ کاٹجو' اور شری درگا شنکر مہتا' بھی تھے . نیچے کے درجوں میں پنڈت گووند ولبھ پنت' سورگیہ اچاریہ نریندردیو' سورگیہ گنیش شنکر ودیارتھی' وینکٹیش نراین تیواری اور سورگیہ کرشنا کانت مالویہ بھی تھے . حالانکہ یہ لوگ پارٹی کے ممبر نہیں تھے لیکن راج نیتی سے اُنہیں پوری ہمدردی تھی بعد میں اُسی ہمدردی نے اُنھیں آزادی کی لڑائی میں آگے کی لائن میں لاکر کھڑا کردیا اور بڑی بڑی قربانیاں اِن لوگوں نے کیں .

بنگ بھنگ کے آندولن کا منظر علی پر گہرا اثر پڑا . دیش کی آرتھک اور راج نیتک کیفیت کو انھوں نے سمجھنا شروع کیا . دادا بھائی نوروجی' رمیش چندر دت'

और श्रद्धा पैदा हो गई और उन्हें भी मुझसे दिली प्रेम हो गया. हालाँकि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन जब जब मैं पूना जाता था ठहरता लोकमान्य के यहाँ था मगर पूज्य गोखले से मिलने जरूर जाता था. श्री गोखले के साथ मेरा यह प्रेम सम्बन्ध उनकी मौत के समय तक बराबर बढ़ता ही गया और आज भी मैं उन्हें प्रेम और आदर से याद करता हूँ.

गोखले जी की इलाहाबाद यात्रा से यहाँ की राजनैतिक हालत पर कोई खास असर नहीं पड़ा. नरमदली नेताओं ने फिर आपस में सलाह करके 1907 में ही यू. पी. पोलिटिकल कान्फ्रेंस का इजलास यहाँ करने का फ़ैसला किया. मेयो हाल में पंडित मोतीलाल नेहरू की सदारत में सम्मेलन हुआ. पार्टी की हिदायत पर मैं भी इस कान्फ्रेंस में दर्शक की हैसियत से शामिल हुआ. मुझे मोतीलाल जी के वे फ़िक़रे याद रह गये हैं जो इन्होंने सदर की हैसियत से कहे थे. उनके लफ़्ज़ हैं :—

"For Indians to talk of Swaraja and of-turning out the British is like a pygmy with-a broom in his hand trying to fight the giant."

यानी—"हिन्दुस्तानियों के लिये स्वराज्य की और अंग्रेज़ों को निकालने की बात करना वैसा ही है जैसे कोई नाचीज़ आदमी बड़े भारी जिन्न से झाड़ू लेकर लड़ने की कोशिश करे."

मोतीलाल जी के इस फ़िक़रे को सुनकर दर्शकों ने इतना हो हल्ला मचाया कि मालूम हुआ कान्फ्रेंस टूट जायगी, मगर बड़ी कोशिशों के बाद लोग ख़ामोश हुए.

मोतीलाल जी उस ज़माने में नरमदल वालों के सरताज समझे जाते थे. एक बार वे प्रसिद्ध इतिहासकार मेजर बामनदास बसु से एक दावत में इलाहाबाद में मिले. मेजर बसु धोती पहनकर उस सरकारी अफ़सरों की दावत में गये थे. मोतीलाल जी ने इनकी धोती की ओर इशारा करके उन्हें टोका :—

"Major Basu! you appear to have got Swaraja."

यानी—"मेजर बसु, मालूम होता है कि आपको तो स्वराज्य मिल गया."

ग़रज़ यह कि यू. पी. पोलिटिकल कान्फ्रेंस का इजलास भी बढ़ती हुई आज़ादी की चाह को कम न कर सका. हमारे काम का दायरा बढ़ा और नये नये साथी पार्टी में भरती होने लगे. इन नये साथियों में स्वर्गीय मंज़रअली सोख़्ता, स्वर्गीय बाबू लक्ष्मण प्रसाद, स्वर्गीय लाला जगन्नाथ खन्ना और स्वर्गीय ठाकुर रामप्रसाद सिंह मुख्य थे. इनमें मंज़र

اور شردھا پیدا ہو گئی اور اُنھیں بھی مجھسے دلی پریم ہو گیا. حالانکہ میرے وچار اُن سے نہیں ملتے تھے لیکن جب جب میں پونا جاتا تھا ٹھہرتا لوکمانیہ کے یہاں تھا مگر پوجیہ گوکھلے سے ملنے ضرور جاتا تھا ۔ شری گوکھلے کے ساتھ میرا یہ پریم سمبندھ اُن کی موت کے سمے تک برابر بڑھتا ہی گیا اور آج بھی میں اُنھیں پریم اور آدر سے یاد کرتا ہوں ۔

گوکھلے جی کی الہ آباد یاترا سے یہاں کی راجنیتک حالت پر کوئی خاص اثر نہیں پڑا ۔ نرم دلی نیتاؤں نے پھر آپس میں صلاح کر کے 1907 میں ہی یو. پی. پولیٹکل کانفرنس کا اجلاس یہاں کرنے کا فیصلہ کیا ۔ میو ہال میں پنڈت موتی لال نہرو کی صدارت میں سمیلن ہوا ۔ پارٹی کی ہدایت پر میں بھی اِس کانفرنس میں درشک کی حیثیت سے شامل ہوا ۔ مجھے موتی لال جی کے وے فقرے یاد رہ گئے ہیں جو اُنھوں نے صدر کی حیثیت سے کہے تھے ۔ اُن کے لفظ ہیں :—

"For Indians to talk of Swaraja and of turning out the British is like a pygmy with a broom in his hand trying to fight the giant."

یعنی—"ہندستانیوں کے لئے سوراجیہ کی اور انگریزوں کے نکالنے کی بات کرنا ویسا ہی ہے جیسے کوئی ناچیز آدمی بڑے بھاری جن سے جھاڑو لے کر لڑنے کی کوشش کرے ۔"

موتی لال جی کے اِس فقرے کو سن کر درشکوں نے اتنا ہو ہلہ مچایا کہ معلوم ہوا کانفرنس ٹوٹ جائیگی' مگر بڑی کوششوں کے بعد لوگ خاموش ہوئے ۔

موتی لال جی اُس زمانے میں نرم دل والوں کے سرتاج سمجھے جاتے تھے ۔ ایک بار وے پرسدھ اِتہاسکار میجر بامن داس بسو سے ایک دعوت میں الہ آباد میں ملے ۔ میجر بسو دھوتی پہن کر اُس سرکاری افسروں کی دعوت میں گئے تھے ۔ موتی لال جی نے اُن کی دھوتی کی اور اشارہ کر کے اُنھیں ٹوکا :—

"Major Basu! You appear to have got Swaraja."

یعنی—"میجر بسو' معلوم ہوتا ہے آپ کو تو سوراجیہ مل گیا ۔"

غرض یہ کہ یو ۔ پی ۔ پولیٹکل کانفرنس کا اجلاس بھی بڑھتی ہوئی آزادی کی چاہ کو کم نہ کرسکا ۔ ہمارے کام کا دایرہ بڑھا اور نئے نئے ساتھی پارٹی میں بھرتی ہونے لگے۔ اِن نئے ساتھیوں میں سورگیہ منظر علی سوختہ' سورگیہ بابو لچھمن پرساد' سورگیہ لالہ جگناتھ کھنا اور سورگیہ ٹھاکر رام پرساد سنگھ مکھیہ تھے ۔ اِن میں منظر

[पिछले अंक से आगे]

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

पंडित सुन्दरलाल

मुल्क के सियासी नक़्शे में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह बन गई. ख़ुदीराम बोस, मुज़फ़्फ़रपुर बम दुर्घटना से दो महीने पहले इलाहाबाद आये. उनके बाद रासबिहारी बोस, अरविन्द बाबू के भाई बारीन्द्र कुमार घोष, सूफ़ी अम्बा प्रसाद, भगतसिंह के चचा सरदार अजीतसिंह और लाला हर दयाल आदि नेता बारी-बारी से इलाहाबाद आए. गुप्त सभाओं में उन्होंने हम लोगों से बातें कीं, कार्य-क्रम बनाया और चले गये. हम लोगों की यह गुप्त सभायें चौक गंगादास के 56 नम्बर के मकान में हुआ करती थीं. यह मकान मैंने किराये पर ले लिया था. उस ज़माने के चौक गंगादास के लड़कों में बड़ी देश भक्ति और निडरता थी. हमारी मीटिंगों के वक़्त वह ऐसा चौकस पहरा बैठा देते कि ख़ुफ़िया पुलिस की वहाँ पर-छाईं तक न फटक पाती.

इलाहाबाद की यह कैफ़ियत देखकर नरम दली नेताओं की परेशानी बहुत बढ़ गई. मालवीय जी ने स्वर्गीय गोखले को निमंत्रण देकर इलाहाबाद बुलाया. लाल-पाल-बाल (लाला लाजपत राय, बिपिनचन्द्र पाल और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की त्रिमूर्ति को लोग इसी नाम से पुकारते थे) के व्याख्यानों के असर को वे काटना चाहते थे. किन्तु खुले मैदान में श्री गोखले का व्याख्यान कराने की हिम्मत नहीं पड़ी. पुराने कायस्थ पाठशाला के हाल में श्री गोखले की मीटिंग हुई. क़रीब दो सौ आदमी व्याख्यान सुनने के लिये मौजूद थे. मैं भी कौतूहल वश उस मीटिंग में चला गया. मेरी तरफ़ इशारा करके लोगों ने शिकायत की कि इसी लड़के ने इलाहाबाद में आग सुलगा रक्खी है. गोखले ने मुझे अपने पास बुलाया और मुझसे वादा लिया कि मैं दूसरे दिन उनसे ज़रूर मिलूँ. दूसरे दिन डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा के यहाँ गोखले जी की दावत थी. वहाँ मैं पहुँच गया. इत्तला होने पर श्री गोखले ने मुझे वहीं बुलाया. मुझे देखते ही सब ने एक साथ मेरी शिकायतें शुरू कर दीं. मगर गोखले जी बहुत प्रेम से मुझसे मिले. मुझसे उन्होंने कहा—"मैं तो तुम्हारे जैसे नौजवानों की तलाश में हूँ. मुझे तो तुम्हारे जैसे ही युवक चाहियें." श्री गोखले से मेरी जो बातें उस अवसर पर हुईं उससे मेरे दिल में उनके लिये बेहद इज़्ज़त

[پچھلے انک سے آگے]

سن 1905 کا دیشی آندولن اور میرا راجنیتک جیون

پنڈت سندر لال

ملک کے سیاسی نقشہ میں الہ‌آباد کی ایک خاص جگہہ بن گئی ۔ خودی رام بوس، مظفرپور بم درگھٹنا سے دو مہینے پہلے الہ‌آباد آئے اُن کے بعد راس بہاری بوس، اروند بابو کے بھائی باریندر کمار گھوش، صوفی امبا پرساد، بھگت سنگھ کے چچا سردار اجیت سنگھ اور لالہ ہر دیال آدی نیتا باری باری سے الہ‌آباد آئے۔ گپت سبھاؤں میں اُنہوں نے ہم لوگوں سے باتیں کیں، کاریہ کرم بنایا اور چلے گئے ۔ ہم لوگوں کی یہ گپت سبھائیں چوک گنگا داس کے 56 نمبر کے مکان میں ہوا کرتی تھیں ۔ یہ مکان میں نے کرایہ پر لے لیا تھا ۔ اُس زمانے کے چوک گنگاداس کے لڑکوں میں بڑی دیش بھکتی اور نڈرتا تھی ۔ ہماری میٹنگوں کے وقت وہ ایسا چوکس پہرہ بٹھا دیتے کہ خفیہ پولس کی وہاں پرچھائیں تک نہ پھٹک پاتی ۔

الہ‌آباد کی یہ کیفیت دیکھ کر نرم دلی نیتاؤں کی پریشانی بہت بڑھ گئی ۔ مالویہ جی نے سورگیہ گوکھلے کو نمنترن دے کر الہ‌آباد بلایا ۔ لال-پال-بال (لالہ راجپت رائے، وپن چندر پال اور لوکمانیہ بال گنگا دھر تلک کی تری مورتی کو لوگ اِسی نام سے پکارتے تھے) کے ویاکھیانوں کے اثر کو وہ کاٹنا چاہتے تھے۔ کنتو کھلے میدان میں شری گوکھلے کا ویاکھیان کرانے کی ہمت نہیں پڑی۔ پرانے کائستھ پاٹھ شالا کے حال میں شری گوکھلے کی میٹنگ ہوئی ۔ قریب دو سو آدمی ویاکھیان سننے کے لئے موجود تھے ۔ میں بھی کتوہلوش اُس میٹنگ میں چلا گیا ۔ میری طرف اشارہ کر کے لوگوں نے شکایت کی، کہ اِسی لڑکے نے الہ‌آباد میں آگ سلگا رکھی ہے ۔ گوکھلے نے مجھے اپنے پاس بلایا اور مجھسے وعدہ لیا کہ میں دوسرے دن اُن سے ضرور ملوں ۔ دوسرے دن ڈاکٹر سچدانند سنہا کے یہاں گوکھلے جی کی دعوت تھی ۔ وہیں میں پہنچ گیا ۔ اِطلاع ہونے پر شری گوکھلے نے مجھے وہیں بلوایا ۔ مجھے دیکھتے ہی سب نے ایک ساتھ میری شکایتیں شروع کر دیں ۔ مگر گوکھلے جی بہت پریم سے مجھسے ملے ۔ مجھسے اُنہوں نے کہا—"میں تو تمہارے جیسے نوجوانوں کی تلاش میں ہوں ۔ مجھے تو تمہارے جیسے ہی یووک چاہئیں ." شری گوکھلے سے میری جو باتیں اُس اوسر پر ہوئیں اُس سے میرے دل میں اُن کے لئے بےحد عزت

सियासी पद्धति के ऐसे ज़रूरी और लाज़मी जुज़ बन गये थे कि जब 1857 की पहली आज़ादी की जंग छिड़ी तो उसमें आज़ाद फ़ौजों ने मुग़ल बादशाह बहादुर शाह को ही अपना क़ौमी नेता बनाया, हालाँकि मुग़ल बादशाह के पास न तो ख़ज़ाना ही था और न फ़ौज ही.

भाषा (ज़बान), साहित्य (अदब), विज्ञान (साइंस), दर्शन (फ़लसफ़ा), कला (आर्ट, और धर्म सम्बन्धी बातों के आधार पर हमें यह मानना पड़ेगा कि मुसलमानों और हिन्दुओं ने सदियों एक साथ रह कर एक भावना (जज़्बा), एक से रहन सहन और एक सी मिली जुली तहज़ीब और कलचर को तरक़्क़ी दी. एक से माली (आर्थिक ढाँचे की बुनियाद पर उन्हों ने मिली-जुली शानदार हिन्दोस्तानी कलचर का महल खड़ा किया. चाहे मुग़ल बादशाह के मातहत लोगों को देखा जाय या किसी सूबे के नीम आज़ाद सूबेदार के मातहत रहने वालों को, ये लोग रीति-नीति में, सदाचार में, मज़हबी उसूलों में, सियासत और हुकूमत की बातों में, कला और आर्ट में तथा ज़िन्दगी के नुक़्ते नज़र में मराठों, राजपूतों, सिक्खों और जाटों या दूसरे हिन्दोस्तानियों से जुदा न थे.

पुराने ज़माने का अगर हम ग़ौर जानिबदारी से अध्ययन करें तो हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि मध्य युग में हिन्दू मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों के इतिहास में ऐसी कोई बात हमें नहीं मिलती जिससे बटवारे से पहले के हिन्दोस्तान के फ़िरक़ेवाराना दंगों और झगड़े-फ़िसाद की जड़ें हम उनमें खोज सकें. इसके बरख़िलाफ़ उस ज़माने की तारीख़ (इतिहास) से यह ज़ाहिर होता है कि मध्य युग के मुसलमान शासक बिना भेदभाव के हुकूमत करते थे. वह हिन्दू और मुसलमानों दोनों के साथ एक सा बरताव करते थे. हुकूमत के मामलों में, आर्ट और कलचर के मामलों में, अदब और शायरी के मामलों में वह कोई भेद भाव नहीं करते थे. वह हिन्दुओं को, हिन्दू मज़हब को, हिन्दू रहन-सहन और आचार-विचारों को, हिन्दू दर्शन और अध्यात्म को बारीकी से देखते और समझते थे और उस पर अमल करने की कोशिश करते थे. मुसलमान बादशाहों, सुलतानों और सूबेदारों के इस रवैये को देखकर हिन्दोस्तान का आम मुसलमान भी हिन्दुस्तानियत का दावेदार बन गया. वह हिन्दुस्तान का दम भरने लगा. मुस्लिम जनता ने हिन्दू रीति-रिवाजों को अपना लिया. दूसरी तरफ़ हिन्दुओं की प्राचीन और सच्ची बर्दाश्त या सहन शीलता और विभिन्नता में भी एकता खोज निकालने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश ने मोहब्बत से बढ़ाये हुए मुसलमानों के हाथ को उसी मोहब्बत के साथ क़ुबूल किया. इसका असर यह हुआ कि मुसलमानों ने अपना कलचर से ऐसी

[बाक़ी सफ़ा 271 पर]

سیاسی پدھتی کے ایسے ضروری اور لازمی جز بن گئے تھے کہ جب 1857 کی پہلی آزادی کی جنگ چھڑی تو اُس میں آزاد فوجوں نے مغل بادشاہ بہادر شاہ کو ہی اپنا قومی نیتا بنایا، حالانکہ مغل بادشاہ کے پاس نہ تو خزانہ ہی تھا اور نہ فوج ہی ۔

بھاشا (زبان)، ساھتیہ (ادب) ، وگیان (سائنس) ، درشن (فلسفہ) ، کلا (آرٹ) ، اور دھرم سمبندھی باتوں کے آدھار پر ہمیں یہ ماننا پڑیگا کہ مسلمانوں اور ہندؤں نے صدیوں ایک ساتھ رہ کر ایک بھاؤنا (جذبہ) ، ایک سے رہن سہن اور ایک سی ملی جلی تہذیب اور کلچر کو ترقی دی ۔ ایک سے مالی (ارتھک) ڈھانچے کی بنیاد پر اُنہوں نے ملی جلی شاندار ہندستانی کلچر کا محل کھڑا کیا. چاہے مغل بادشاہ کے ماتحت لوگوں کو دیکھا جائے یا کسی صوبے کے نیم آزاد صوبیدار کے ماتحت رہنے والوں کو، یہ لوگ ریتی ۔ نیتی، میں سدا چار میں، مذہبی اُصولوں میں، سیاست اور حکومت کی باتوں میں، کلا اور آرٹ میں تتھا زندگی کے نقطہ نظر میں مراٹھوں، راجپوتوں، سکھوں اور جاٹوں یا دوسرے ہندستانیوں سے جدا نہ تھے ۔

پرانے زمانے کا اگر ہم غیر جانب داری سے ادھین کریں تو ہم اسی نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ مدھیہ یگ میں ہندو مسلمانوں کے آپسی سمبندھوں کے اتہاس میں ایسی کوئی بات ہمیں نہیں ملتی جس سے بٹوارے سے پہلے کے ہندوستان کے فرقہ وارانہ دنگے اور جھگڑے فساد کی جڑیں ہم اُن میں کھوج سکیں ! اِس کے برخلاف اُس زمانے کی تاریخ (اِتہاس) سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ مدھیہ یگ کے مسلمان شاسک بنا بھید بھاؤ کے حکومت کرتے تھے ۔ وہ ہندو اور مسلمانوں دونوں کے ساتھ ایک سا برتاؤ کرتے تھے ۔ حکومت کے معاملوں میں، آرٹ اور کلچر کے معاملوں میں، ادب اور شاعری کے معاملوں میں وہ کوئی بھید بھاؤ نہیں کرتے تھے ۔ وہ ہندوں کو، ہندو مذہب کو، ہندو رہن سہن اور اچار ۔ وچاروں کو، ہندو درشن اور ادھیاتم کو باریکی سے دیکھتے اور سمجھتے تھے اور اُسی پر عمل کرنے کی کوشش کرتے تھے ۔ مسلمان بادشاہوں، سلطانوں اور صوبیداروں کے اِس رویے کو دیکھ کر ہندوستان کا عام مسلمان بھی ہندستانیت کا دعویدار بن گیا ۔ وہ ہندستان کا دم بھرنے لگا. مسلم جنتا نے ہندو ریت رواجوں کو اپنا لیا ۔ دوسری طرف ہندؤں کی پراچین اور سچی برداشت یا سہن شیلتا اور وبھنتا میں بھی ایکتا کھوج نکالنے کی زبردست خواہش نے محبت سے بڑھائے ہوئے مسلمانوں کے ہاتھ کو اُسی محبت کے ساتھ قبول کیا ۔ اِس کا اثر یہ ہوا کہ مسلمانوں نے اپنی کلچر سے ایسی

[باقی صفحہ 271 پر]

में हमें सिर्फ़ कुछ शासकों की हुकूमत में थोड़ी बहुत कट्टरता या ज़्यादती की मिसालें मिलती हैं. और इन शासकों के बारे में भी यह साबित किया जा सकता है कि उनकी ज़्यादतियों की वजह कुछ और ही थी और उनका वार भी थोड़े से लोगों को ही सहना पड़ा.

कई घटनाओं से यह साबित होता है कि धार्मिक मत-भेद का ज़्यादा असर न था. मिसाल के तौर पर अगर ओहदों की ही बात ले ली जाय तो यह साफ़ है कि मुसलमान बादशाहों के यहाँ हिन्दू ऊँचे से ऊँचे ओहदों पर मुक़र्रर किये जाते थे. बग़ैर हिन्दुओं की सलाह के मुसलमान हाकिम एक क़दम भी न चलते थे. औरंगज़ेब ऐसे बादशाह के बड़े से बड़े जनरल भी राजपूत राजा थे. महमूद ग़ज़नवी ने ख़ुरासान जीतने के लिये अपने जिस जनरल को भेजा वह तिलक नाम का एक ब्राह्मण था. हम देखते हैं कि उस समय की आपसी लड़ाई में हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग अलग मज़हबी हैसियत से कभी लड़ाई नहीं हुई. मुसलमान सुलतानों के हिन्दू सेनापति और हिन्दू राजाओं के मुसलमान सेनापति अपने ही मज़हब वालों से लड़ते हुए नज़र आते हैं. इतिहास में ऐसे हिन्दू और मुसलमानों के सैकड़ों क़िस्से भरे पड़े हैं जहाँ दोनों ने अपने मालिकों की तरफ़ वफ़ादार रहकर अपने ही मज़हब वालों के साथ भंयकर लड़ाई लड़ी. ऐसी भी मिसालें हैं कि जहाँ हिन्दुओं के साथ हिन्दुओं ने दग़ाबाज़ी की है और मुसलमानों ने मुसलमानों के साथ. असली बात तो यह है कि उस समय ज़ाती अहसानों का ही सबसे ज़्यादा असर पड़ता था, न कि क़ौम, मज़हब या मुल्क का. उस ज़माने की वफ़ादारी की भावना (जज़बा) सिर्फ़ दो शब्दों में ज़ाहिर होती है—'नमक हलाल' और 'नमक हराम'.

यह भी याद रखना चाहिये कि हिन्दोस्तान के मुसलमान हाकिमों ने, चाहे वह जहाँ से आये हों, दर असल हिन्दोस्तान को ही अपना घर बना लिया था. बाबर फ़रग़ाना से आया और वह कभी कभी समरक़न्द लौटने के मीठे सपने भी देखता था. लेकिन बाबर और उसकी औलाद इसी मुल्क में रही. क़िस्मत उन्हें यहाँ खींच लाई और हिन्दोस्तान के बाहर से सारे नाते-रिश्ते उन्होंने तोड़ लिये. उनके अपने वतन में उनके ख़ानदान के अनगिनत दुश्मन थे जो मौक़ा पाते ही उनका सब कुछ छीन लेने पर उतारू थे. ऐसी हालत में उन्हों ने हिन्दोस्तान की जनता की ज़िन्दगी में अपने आपको मिला-खपा दिया. हिन्दुस्तान की जनता की ज़िन्दगी के साथ उन्होंने हमदर्दी दिखाई और उनके सुख दुख में सच्चे साथी बने. यह कोई छोटी बात नहीं है. मुग़ल बादशाह हिन्दोस्तान की समाजी और

میں ہمیں صرف کچھ شاسکوں کی حکومت میں تھوڑی بہت کٹرتا یا زیادتی کی مثالیں ملتی ہیں ۔ اور ان شاسکوں کے بارے میں بھی یہ ثابت کیا جا سکتا ہے کہ ان کی زیادتیوں کی وجہ کچھ اور ہی تھی اور اُن کا وار بھی تھوڑے سے لوگوں کو ہی سہنا پڑا ۔

کئی گھٹناؤں سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ دھارمک مت بھید کا زیادہ اثر نہ تھا ۔ مثال کے طور پر اگر عہدوں کی ہی بات لے لی جائے تو یہ صاف ہے کہ مسلمان بادشاہوں کے یہاں ہندو اونچے سے اونچے عہدوں پر مقرر کئے جاتے تھے ۔ بغیر ہندوؤں کی صلاح کے مسلمان حاکم ایک قدم بھی نہ چلتے تھے ۔ اورنگزیب ایسے بادشاہ کے بڑے سے بڑے جنرل بھی راجپوت راجا تھے ۔ محمود غزنوی نے خراسان جیتنے کے لئے اپنے جس جنرل کو بھیجا وہ تلک نام کا ایک براہمن تھا ۔ ہم دیکھتے ہیں کہ اُس سمے کی آپسی لڑائی میں ہندوؤں اور مسلمانوں کی الگ الگ مذہبی حیثیت سے کبھی لڑائی نہیں ہوئی ۔ مسلمان سلطانوں کے ہندو سیناپتی اور ہندو راجاؤں کے مسلمان سیناپتی اپنے ہی مذہب والوں سے لڑتے ہوئے نظر آتے ہیں ۔ اِتہاس میں ایسے ہندو اور مسلمانوں کے سیکڑوں قصے بھرے پڑے ہیں، جہاں دونوں نے اپنے مالکوں کی طرف وفادار رہ کر اپنے ہی مذہب والوں کے ساتھ بھینکر لڑائی لڑی ۔ ایسی بھی مثالیں ہیں کہ جہاں ہندوؤں کے ساتھ ہندوؤں نے دغابازی کی ہے اور مسلمانوں نے مسلمانوں کے ساتھ ۔ اصلی بات تو یہ ہے کہ اُس سمے ذاتی احسانوں کا ہی سب سے زیادہ اثر پڑتا تھا، نہ کہ قوم، مذہب یا ملک کا ۔ اُس زمانے کی وفاداری کی بھاؤنا (جذبہ) صرف دو شبدوں میں ظاہر ہوتی ہے—'نمک حلال' اور 'نمک حرام' ۔

یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ ہندستان کے مسلمان حاکموں نے، چاہے وہ جہاں سے آئے ہوں، دراصل ہندستان کو ہی اپنا گھر بنا لیا تھا ۔ بابر فرغانہ سے آیا اور وہ کبھی کبھی سمرقند لوٹنے کے میٹھے سپنے بھی دیکھتا تھا ۔ لیکن بابر اور اُس کی اولاد اِسی ملک میں رہی ۔ قسمت اُنہیں یہاں کھینچ لائی اور ہندستان کے باہر سے سارے ناتے رشتے اُنہوں نے توڑ لئے ۔ اُن کے اپنے وطن میں اُن کے خاندان کے انگنت دشمن تھے جو موقع پاتے ہی اُن کا سب کچھ چھین لینے پر اُتارو تھے ۔ ایسی حالت میں اُنہوں نے ہندستان کی جنتا کی زندگی میں اپنے آپ کو ملا کھپا دیا ۔ ہندستان کی جنتا کی زندگی کے ساتھ اُنہوں نے ہمدردی دکھائی اور اُن کے سکھ دکھ میں سچے ساتھی بنے ۔ یہ کوئی چھوٹی بات نہیں ہے ۔ مغل بادشاہ ہندستان کی سماجی اور

रामायण के मशहूर लेखक गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

> जित देखौं तित तोय।
> काँकर, पाथर, ठीकरी सब में देखूँ तोय॥

अल्लाह कहाँ नहीं है? वह हर जगह है और कहीं भी नहीं है! वही मूरत में है और वही पुजारी में भी है. वही कुफ़्र में भी है और वही इसलाम में भी है! वही हिन्दुओं में भी है और वही मुसलमानों में भी है! इनसान ने अपनी कम अक़्ली की वजह से दुई का परदा डाल रक्खा है इसीलिये वह अपने ग़ुरूर में यह समझने लगा है कि अल्लाह यहाँ है और वहाँ नहीं है, वह इसलाम में है और कुफ़्र में नहीं है.

ऐसी बहुत सी मिसालें आसानी से दी जा सकती हैं कि हिन्दुस्तान में इसलाम ने हिन्दुओं की पूजा के तरीक़ों से बहुत सी बातें अपने अन्दर शामिल कर ली हैं. माला, प्राणायाम, योगाभ्यास, वेदान्त, फ़लसफ़ा—सब इसलाम में शामिल हो गये. हिन्दू मजहब और इसलाम के संगम को ही 'प्रेम धर्म' या 'मजहबे इश्क़' के नाम से पुकारा गया. यहाँ उसकी तफ़सील में जाने की जरूरत नहीं है. इतना ही कह देना काफ़ी है कि बिना ख़ास कोशिश के ही यह दोनों मजहब आसानी से एक दूसरे से मिल जुल गये. कबीर, नानक, दादू, चैतन्य, तुकाराम, शाह क़लंदर, बाबा फ़रीद, चिश्ती और दूसरे सूफ़ी सन्तों ने कामयाबी के साथ हिन्दोस्तान की जनता में एक ऐसा धर्म फैला देने की कोशिश की जिसमें हिन्दू-मुसलमानों, दोनों की मजहबी ख़ूबियाँ शामिल थीं.

मध्य युग के धार्मिक साहित्य (अदब) से, चाहे वह मुसलमानों का हो या हिन्दुओं का, पढ़ने वाला उसके आजादाना नुक़्ते नजर और उदार दृष्टि से जरूर प्रभावित हो जावेगा. हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने यह महसूस कर लिया था कि ऊपरी रीति रिवाजों, रूढ़ियों और कर्म-कांडों और पूजा और परिस्तिश के बाहरी ढँगों में चाहे जो फ़र्क़ हों, मजहबी जिन्दगी की भीतरी और बुनियादी सचाई दोनों में एक सी थी. इसीलिये मध्य युग के सूफ़ी सन्तों ने हिन्दू धर्म और इसलाम के बाहरी तरीक़ों को अहमियत न देकर उनकी भीतर की सुन्दरता पर ही जोर दिया. यही वजह है कि उस जमाने के हिन्दू और मुसलमान दोस्ती और मोहब्बत के साँचे में ढल गये. दोनों के लिये एक ही मुल्क, एक ही राज, एक ही शहर, एक ही मोहल्ले, और और एक ही गली में मित्रता और शांति से रहना मुमकिन हो सका. दोनों मजहबी तास्सुब को कम करने में कामयाब हुए. पूरे एक हजार वर्ष के मुश्तरका (सम्मिलित) इतिहास

راماین کے مشہور لیکھک گوسوامی تلسی داس جی نے لکھا ہے :—

> جت دیکھوں تت توئے
> کانکر، پاتھر، ٹھیکری سب میں دیکھوں توئے ۔

اللہ کہاں نہیں ہے ؟ وہ ہر جگہہ ہے اور کہیں بھی نہیں ہے ! وہی مورت میں ہے اور وہی پوجاری میں بھی ہے ۔ وہی کفر میں بھی ہے اور وہی اسلام میں بھی ہے ! وہی ہندؤں میں بھی ہے اور وہی مسلمانوں میں بھی ہے ! انسان نے اپنی کم عقلی کی وجہ سے دوئی کا پردہ ڈال رکھا ہے اسی لئے وہ اپنے غرور میں یہ سمجھنے لگا ہے کہ اللہ یہاں ہے اور وہاں نہیں ہے، وہ اسلام میں ہے اور کفر میں نہیں ہے ۔

ایسی بہت سی مثالیں آسانی سے دی جا سکتی ہیں کہ ہندستان میں اسلام نے ہندؤں کی پوجا کے طریقوں سے بہت سی باتیں اپنے اندر شامل کر لی ہیں ۔ مالا، پرانا یام، یوگا بھیاس، ویدانت، فلسفہ—سب اسلام میں شامل ہو گئے ۔ ہندو مذہب اور اسلام کے سنگم کو ہی 'پریم دھرم' یا 'مذہب عشق' کے نام سے پکارا گیا ۔ یہاں اس کی تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے ۔ اتنا ہی کہہ دینا کافی ہے کہ بنا خاص کوشش کے ہی یہ دونوں مذہب آسانی سے ایک دوسرے سے مل جل گئے ۔ کبیر، نانک، دادو، چیتن، تکارام، شاہ قلندر، بابا فرید، چشتی اور دوسرے صوفی سنتوں نے کامیابی کے ساتھ ہندستان کی جنتا میں ایک ایسا دھرم پھیلا دینے کی کوشش کی جس میں ہندو مسلمانوں، دونوں کی مذہبی خوبیاں شامل تھیں ۔

مدھیہ یگ کے دھارمک ساہتیہ (ادب) سے، چاہے وہ مسلمانوں کا ہو یا ہندؤں کا، پڑھنے والا اس کے آزادانہ نقطۂ نظر اور ادار درشٹی سے ضرور پربھاوت ہو جاوے گا ۔ ہندؤں اور مسلمانوں دونوں نے یہ محسوس کر لیا تھا کہ اوپری ریتی رواجوں، روڑھیوں اور اور کرم کانڈوں ۔ اور پوجا کے اور پرستش کے باہری ڈھنگوں میں چاہے جو فرق ہوں، مذہبی زندگی کی بھیتری اور بنیادی سچائی دونوں میں ایک سی تھی ۔ اس لئے مدھیہ یگ کے صوفی سنتوں نے ہندو دھرم اور اسلام کے باہری طریقوں کو اہمیت نہ دے کر ان کی بھیتر کی سندرتا پر ہی زور دیا ۔ یہی وجہہ ہے کہ اس زمانے کے ہندو اور مسلمان دوستی اور محبت کے سانچے میں ڈھل گئے ۔ دونوں کے لئے ایک ہی ملک، ایک ہی راج، ایک ہی شہر، ایک ہی محلے اور ایک ہی گلی میں مترتا اور شانتی سے رہنا ممکن ہو سکا ۔ دونوں مذہبی تعصب کو کم کرنے میں کامیاب ہوئے ۔ پورے ایک ہزار ورش کے مشترکہ (سملت) اتہاس

उन्होंने .करीब-.करीब सभी मशहूर हिन्दू ग्रंथों का .फारसी में तरजुमा कर डाला. उपनिषद्, महाभारत, रामायन, भगवद्‌गीता, धर्मशास्त्र, पुराण, योगवशिष्ट, योगसूत्र, वेदान्त-शास्त्र आदि सभी ग्रंथों के .फारसी में तरजुमें किये गये.

इनके बाद के लेखकों में शेख़ अहमद .फारूक़ी (1563-1624 जोकि मुजाहिद-अलीफ़-ए-सानी के समान ही मशहूर है और मिर्ज़ा जान जानान मज़हर (1699) के नाम लिये जा सकते हैं. मज़हर साहब ने हिन्दुओं की मूर्ति पूजा के बारे में लिखा है—

"मूर्ति पूजा—मुसलमान सूफ़ियों की ध्यान और साधना यानी 'ज़िक्र' के समान ही है. इसलाम के पहले अरब के बाशिन्दों के विश्वास से इस मूर्ति पूजा की कोई समानता नहीं है. अरब के बाशिन्दे समझते थे कि मूर्तियों ही में .ख़ुद शक्ति और असर भरा हुआ है. वे महज़ परमात्मा को पाने का ज़रिया मात्र नहीं हैं, जबकि हिन्दुस्तान के मूर्ति पूजक मूर्तियों को अल्लाह तक पहुँचने का सिर्फ़ एक ज़रिया मानते हैं."

इतना ही न था . एक ओर मुसलमान आलिम अपनी छान-बीन और दलीलों के ज़रिये हिन्दू अध्यात्म और फ़लसफ़े को समझने की कोशिश करते थे तो दूसरी ओर उसे फ़लसफ़े को अपनी ज़िन्दगी में उतार कर उसका अभ्यास करते थे. 'गुलशने राज़' के मशहूर लेखक महमूद शबिस्तारी (1317) ने बुतपरस्ती के बारे में लिखते हुये इसलाम से उसका मेल और उसकी बराबरी इस तरह समझाई है:—

"मूर्ति इस दुनिया में मोहब्बत और एके की तस्वीर खींचकर रख देता है. ज़ुन्नार या जनेऊ पहनने का क्या मतलब है? जनेऊ पहनने का मतलब यह है कि जनेऊ पहनने वाला तीन तरह की ख़िदमतों (सेवा) का अहद लेता है—(1) अपने माँ बाप और ख़ानदान की ख़िदमत (2) जनता की ख़िदमत और (3) अल्लाह की ख़िदमत. जनेऊ के तीन तागे इन्हीं तीन तरह की सेवाओं की याद दिलाते हैं. 'कुफ़्र' हो चाहे 'दीन' दोनों का मक़सद अल्लाह तक पहुँचना है. मूर्ति पूजा कहती है कि ईश्वर एक है अगर मुसलमान यह समझ ले कि मूर्ति क्या है तो वह यह भी समझ जायगा कि मूर्ति पूजा भी अल्लाह तक पहुँचने का ज़रिया है; और यदि मूर्ति पूजक जान ले कि मूर्ति क्या है तो वह ईश्वर के रास्ते से कभी न भटकेगा. मूर्ति के पुजारी ने मूर्ति को सिर्फ़ बाहर से देखा इसीलिये वह '.काफ़िर' हो गया और मुसलमान ने भी मूर्ति को सि.र्फ़ बाहर से देखा इसीलिये वह भी मूर्ति के राज़ (रहस्य) को न समझ सका और इन्साफ़ की रू से अपने मज़हब से हट गया.

انھوں نے قریب قریب سبھی مشہور ھندو گرنتھوں کا فارسی میں ترجمہ کر ڈالا. اُپنشد، مہابھارت، رامائن، بھاگود گیتا، دھرم شاستر، پران، یوگ وششٹ، یوگ سوتر، ویدانت شاشتر آدی سبھی گرنتھوں کے فارسی میں ترجمے کئے گئے .

اِن کے بعد کے لیکھکوں میں شیخ احمد فاروقی (1563-1624) جو کہ مجاہد الیف اے ثانی کے سمان ہی مشہور ھے اور مرزا جان جانان مظہر (1699) کے نام لئے جا سکتے ھیں . مظہر صاحب نے ھندؤں کی مورتی پوجا کے بارے میں لکھا ھے :—

"مورتی پوجا—مسلمان صوفیوں کی دھیان اور سادھنا یعنی 'ذکر' کے سمان ھی ھے . اِسلام کے پہلے عرب کے باشندوں کے وشواس سے اِس مورتی پوجا کی کوئی سمانتا نہیں ھے . عرب کے باشندے سمجھتے تھے کہ مورتیوں ھی میں خود شکتی اور اثر بھرا ھوا ھے . وہ محض پرماتما کو پانے کا ذریعہ ماتر نہیں ھے جبکہ ھندستان کے مورتی پوجک مورتیوں کو اللہ تک پہنچنے کا صرف ایک ذریعہ مانتے ھیں ."

اتنا ھی نہ تھا . ایک اور مسلمان عالم اپنی چھان بین اور دلیلوں کے ذریعہ ھندو ادھیاتم اور فلسفے کو سمجھنے کی کوشش کرتے تھے تو دوسری اور اُس فلسفے کو اپنی زندگی میں اتار کر اُس کا ابھیاس کرتے تھے . 'گلشن راز' کے مشہور لیکھک محمود شبستاری (1317) نے بت پرستی کے بارے میں لکھتے ھوئے اِسلام سے اُس کا میل اور اُس کی برابری اِس طرح سمجھائی ھے :—

"مورتی اِس دنیا میں محبت اور ایکے کی تصویر کھینچ کر رکھ دیتی ھے . زنار یا جنیؤ پہننے کا کیا مطلب ھے ؟ جنیؤ پہننے کا مطلب یہ ھے کہ جنیؤ پہننے والا تین طرح کی خدمتوں (سیوا) کا عہد لیتا ھے— (1) اپنے ماں باپ اور خاندان کی خدمت (2) جنتا کی خدمت اور (3) اللہ کی خدمت . جنیؤ کے تین تاگے اِنھیں تین طرح کی سیواؤں کی یاد دلاتے ھیں. 'کفر' ھو چاھے 'دین' دونوں کا مقصد اللہ تک پہنچنا ھے . مورتی پوجا کہتی ھے کہ ایشور ایک ھے . اگر مسلمان یہ سمجھ لے کہ مورتی کیا ھے تو وہ یہ بھی سمجھ جائیگا کہ مورتی پوجا بھی اللہ تک پہنچنے کا ذریعہ ھے؛ اور یدی مورتی پوجک جان لے کہ مورتی کیا ھے تو وہ ایشور کے راستے سے کبھی نہ بھٹکے گا . مورتی کے پوجاری نے مورتی کو صرف باھر سے دیکھا اِسی لئے وہ 'کفر' ھو گیا اور مسلمان نے بھی مورتی کو صرف باھر سے دیکھا اِسی لئے وہ بھی مورتی کے راز (رھسیہ) کو نہ سمجھ سکا اور انصاف کی رو سے اپنے مذھب سے ھٹ گیا .

हिन्दुस्तान और इसलाम

डाक्टर सयद महमूद

इसलाम के दुश्मनों ने, जिनमें .खास तौर पर यूरोप के इतिहास लेखक हैं, इसलाम को बदनाम करने की भरसक कोशिश की है. उन्होंने इसलाम के ख़िलाफ़ हर तरह का झूठा प्रचार किया है. इस प्रचार का नतीजा यह है कि ग़ैर मुसलिम दुनिया को .करीब-.करीब इस बात का यक़ीन हो गया है कि इसलाम कठमुल्लापन, तास्सुब, मारकाट और .कत्लेआम का प्रचार करने वाला मज़हब है, हाँलाकि सचाई इसके बिलकुल ख़िलाफ़ है. यह सही है कि मौलवियों का एक तबक़ा ऐसा था जो इसलाम को सबसे ऊँचा मज़हब मानता था, लेकिन ऐसे मुसलमानों की भी कोई कमी न थी जो सब मज़हबों में सचाई ढूढ़ने की बराबर कोशिश करते रहते थे. ऐसे मुसलमानों की भी कमी न थी जो सब मज़हबों में बुनियादी सचाई के दर्शन करते थे और चाहते थे कि सब मज़हब मिल जुल कर रहें. ऐसे भी बेशुमार मुसलमान फ़क़ीर और सूफ़ी थे जो अल्लाह के रास्ते पर सिर्फ़ सचाई का ही सहारा लेकर चलते थे. ये .फ़क़ीर और सूफ़ी कहते थे कि अलग अलग मज़हब अल्लाह तक पहुँचने के महज़ अलग अलग रास्ते की तरह हैं जिनका मक़सद एक उसी अल्लाह तक पहुँचना है. ऐसे बहुत से मुसलमान दरवेश और उपासक थे जो बिना किसी भेद भाव के हिन्दुओं और मुसलमानों, अमीरों और ग़रीबों सबको परमात्मा के एक ही रास्ते पर, यानी नेकी और सचाई के रास्ते पर चलने का उपदेश देते थे.

यूरोप वालों ने तो बहुत बाद में आज़ादी के साथ मुख़्तलिफ़ मज़हबों की छान-बीन करने की विद्या जारी की और वह भी सिर्फ़ इने-गिने लोगों ने, लेकिन मुसलमानों में ऐसे बहुत से आलिम हुए हैं जिन्होंने अपनी किताबों में ख़ालिस अक़्ल को कसौटी मानकर ग़ैर जानिबदारी (निष्पक्षता) के साथ मुख़्तलिफ़ मज़हबों के एक से बुनियादी उसूलों पर रोशनी डाली है. इनमें सबसे मशहूर विद्वान और आलिम अबू रेहान अलबेरूनी थे. उन्होंने ग्यारहवीं सदी में तफ़सील के साथ हिन्दू मज़हब, हिन्दू .फ़लसफ़े, और हिन्दू शास्त्रों पर लिखा है.

हिन्दुस्तान के बीच के ज़माने में, जिसे 'मध्ययुग' कहा जाता है, हिन्दुओं के धार्मिक साहित्य को पढ़ने और समझने के लिये मुसलमान विद्वानों ने बड़ी मेहनत की है.

ہندستان اور اِسلام

ڈاکٹر سید محمود

اِسلام کے دشمنوں نے، جن میں خاص طور پر یورپ کے اِتہاس لیکھک ہیں، اِسلام کو بدنام کرنے کی بھرسک کوشش کی ہے ۔ اُنہوں نے اِسلام کے خلاف ہر طرح کا جھوٹا پرچار کیا ہے ۔ اِس پرچار کا نتیجہ یہ ہے کہ غیر مسلم دنیا کو قریب قریب اِس بات کا یقین ہو گیا ہے کہ اِسلام کٹھ ملاپن، تعصب، مار کاٹ اور قتل عام کا پرچار کرنے والا مذہب ہے ۔ حالانکہ سچائی اِس کے بالکل خلاف ہے ۔ یہ صحیح ہے کہ مولویوں کا ایک طبقہ ایسا تھا جو اِسلام کو سب سے اونچا مذہب مانتا تھا، لیکن ایسے مسلمانوں کی بھی کوئی کمی نہ تھی جو سب مذہبوں میں سچائی ڈھونڈھنے کی برابر کوشش کرتے رہتے تھے ۔ ایسے مسلمانوں کی بھی کمی نہ تھی جو سب مذہبوں میں بنیادی سچائی کے درشن کرتے تھے اور چاہتے تھے کہ سب مذہب مل جل کر رہیں ۔ ایسے بھی بےشمار مسلمان فقیر اور صوفی تھے جو اللہ کے راستے پر صرف سچائی کا ہی سہارا لے کر چلتے تھے ۔ یہ فقیر اور صوفی کہتے تھے کہ الگ الگ مذہب اللہ تک پہنچنے کے محض الگ الگ راستے کی طرح ہیں جن کا مقصد ایک اُسی اللہ تک پہنچنا ہے ۔ ایسے بہت سے مسلمان درویش اور اپاسک تھے جو بنا کسی بھید بھاؤ کے ہندوؤں اور مسلمانوں، امیروں اور غریبوں سب کو پرماتما کے ایک ہی راستے پر، یعنی نیکی اور سچائی کے راستے پر چلنے کا اُپدیش دیتے تھے ۔

یورپ والوں نے تو بہت بعد میں آزادی کے ساتھ مختلف دھرموں کی چھان بین کرنے کی ودیا جاری کی اور وہ بھی صرف اِنے گنے لوگوں نے؛ لیکن مسلمانوں میں ایسے بہت سے عالم ہوئے ہیں جنھوں نے اپنی کتابوں میں خالص عقل کو کسوٹی مان کر غیر جانبداری (نشپکشتا) کے ساتھ مختلف مذہبوں کے ایک سے بنیادی اصولوں پر روشنی ڈالی ہے ۔ اِن میں سب سے مشہور ودوان اور عالم ابوریحان البیرونی تھے ۔ انہوں نے گیارھویں صدی میں تفصیل کے ساتھ ہندو مذہب، ہندو فلسفے اور ہندو شاستروں پر لکھا ہے ۔

ہندستان کے منجھلے زمانے میں جسے 'مدھیہ یگ' کہا جاتا ہے، ہندوؤں کے دھارمک ساہتیہ کو پڑھنے اور سمجھنے کے لئے مسلمان ودوانوں نے بڑی محنت کی ہے ۔

लिये आज तक 'विश्व वाटिका' या बागे दुनिया' (Garden of the world) के नाम से मशहूर है. इतिहास लेखक सर विलियम म्यार के मुताबिक़ :—

"मैसोपोटामिया का यह कुल दोआब सदा से अरब बद्दुओं से ही आबाद रहा है और काल्डिया और दक्खिनी शाम दर असल अरब के ही हिस्से हैं. इस प्रदेश में रहने वाले क़बीले, जिनमें उस समय कुछ प्रचीन मूर्ति पूजक थे और अधिकतर कम से कम कहने के लिये ईसाई थे, अरब जाति के मज़बूती से जुड़े हुये अंग थे और इस हैसियत से नए अरब धर्म यानी इसलाम के दायरे में शामिल थे." ❋

अरब के ये दोनों प्रान्त शाम और इराक़ सदियों से पच्छिम की रोमी हुकूमत और पूरब की ईरानी शहनशाहियत के मातहत चले आते थे. इसी प्रदेश में इन दोनों विशाल बादशाहतों की सरहदें एक दूसरे से मिलती थीं. सन् 527 ई० के बाद से इन दोनों बादशाहतों में पूरे सौ बरस तक लगातार जंग होती रही जिनमें कभी ईरानी विजेता यूरोपीय महाद्वीप के अन्दर तक अपनी सल्तनत बढ़ा ले जाते थे और कभी रोमी सेना फ़िरात के किनारे तक आ पहुँचती थी. सरहद के इन प्रदेशों की क़िस्मत बार बार बदलती रहती थी. ठीक इस समय पूरा शाम और इराक़ का उत्तर-पच्छिमी भाग रोम के मातहत था और बाक़ी इराक़ ईरान के अधीन जबकि दक्खिन के रेगिस्तानी अरब क़बीलों ने मोहम्मद साहब ही के वक़्त में अपना नाता मदीने की नई क़ौमी सरकार के साथ जोड़ लिया था शाम और इराक़ का ज़रख़ेज़ अरब इलाक़ा विदेशियों के क़ब्ज़े में था और वहां की अरब प्रजा ग़ुलामी के दिन काट रही थी.

ऐसी सियासी कैफ़ियत में अरब की नई क़ौमी सरकार के नेताओं की विदेशियों की ग़ुलामी में आहें भरते हुए इस अरब इलाके को ग़ुलामी से छुड़ाकर मदीने के साथ मिलाने की ख़ाहिश एक क़ुदरती और जायज़ ख़ाहिश थी. लेकिन इससे भी ज्यादा गहरे सबब थे जिन्होंने अबुबक्र और उस के सलाहकारों को इराक़ और शाम की राजनीति में दख़ल देने और ईरान और शाम की ज़बरदस्त और ताक़तवर बादशाहतों से लोहा लेने पर मजबूर कर दिया.

[बाक़ी अगले नम्बरों में]

لئے آج تک 'وشو واٹیکا' یا 'باغ دنیا' (Garden of the world) کے نام سے مشہور ہے۔ اِتہاس لیکھک سر ولیم میور کے مطابق :—

"میسوپوٹامیا کا یہ کل دو آب سدا سے عرب بدوؤں سے ہی آباد رہا ہے اور کالڈیا اور دکھنی شام دراصل عرب کے ہی حصے ہیں۔ اِس پردیش میں رہنے والے قبیلے، جن میں اُس سمے پراچین مورتی پوجک تھے اور ادھکتر کم سے کم کہنے کے لئے عیسائی تھے، عرب جاتی کے مضبوطی سے جڑے ہوئے انگ تھے اور اِس حیثیت سے نئے عرب دھرم یعنی اِسلام کے دائرے میں شامل تھے۔" ❋

عرب کے یہ دونوں پرانت شام اور اعراق صدیوں سے پچھم کی رومی حکومت اور پورب کی ایرانی شہنشاہیت کے ماتحت چلے آتے تھے۔ اِسی پردیش میں اِن دونوں وشال بادشاہتوں کی سرحدیں ایک دوسرے سے ملتی تھیں۔ سن 527 عیسوی کے بعد سے اِن دونوں بادشاہتوں میں پورے سو برس تک لگاتار جنگ ہوتی رہی جن میں کبھی ایرانی وجیتا یورپی مہادیپ کے اندر تک اپنی سلطنت بڑھا لے جاتے تھے اور کبھی رومی سینا فرات کے کنارے تک آپہنچتی تھی۔ سرحد کے اِن پردیشوں کی قسمت بار بار بدلتی رہتی تھی۔ ٹھیک اِس سمے پورا شام اور اعراق کا اتر پچھمی بھاگ روم کے ماتحت تھا اور باقی اعراق ایران کے ادھین۔ جب کہ دکھن کے ریگستانی عرب قبیلوں نے محمد صاحب ہی کے وقت میں اپنا ناتا مدینے کی نئی قومی سرکار کے ساتھ جوڑ لیا تھا شام اور اعراق کا زرخیز عرب علاقہ ودیشیوں کے قبضے میں تھا اور وہاں کی عرب پرجا غلامی کے دن کاٹ رہی تھی۔

ایسی سیاسی کیفیت میں عرب کی نئی قومی سرکار کے نیتاؤں کی ودیشیوں کی غلامی میں آہیں بھرتے ہوئے اِس عرب علاقے کو غلامی سے چھڑا کر مدینے کے ساتھ ملنے کی خواہش ایک قدرتی اور جائز خواہش تھی۔ لیکن اِس سے بھی زیادہ گہرے سبب تھے جنھوں نے ابوبکر اور اُس کے صلاح‌کاروں کو اعراق اور شام کی راج نیتی میں دخل دینے اور ایران اور روم کی زبردست اور طاقتور بادشاہتوں سے لوہا لینے پر مجبور کردیا۔

[باقی اگلے نمبروں میں]

❋ The Caliphate by Sir W. Muir, p.48.

फिर से सुशासन क़ायम किया. ग़रज़ यह कि बारह महीने के अन्दर राज भर में फिर से शान्ति, अमन और व्यवस्था क़ायम होगई. जिन बाग़ियों ने ख़ुद अधीनता स्वीकार कर ली अबुबक्र ने उनको माफ़ कर दिया.

[6]

अब हम अरब के भूगोल (जुग़राफ़िया) की ओर एक नज़र डालना चाहते हैं. अगर अरब में वह सब इलाक़ा शामिल किया जावे जो भौगोलिक लिहाज़ से साफ़ साफ़ अरब के जज़ीरे में शामिल है, जिसमें अरब जाति के लोग बसते हैं और जहाँ अरबी भाषा बोली जाती है, तो अभी तक अरब का एक बहुत बड़ा और ज़रख़ेज़ इलाक़ा मदीने की क़ौमी सरकार से बाहर और विदेशियों के क़ब्ज़े में था. अगर हम अरब की भौगोलिक सरहदें मुक़र्रर करना चाहें तो ईरान की खाड़ी से लेकर हिन्द महासागर, लाल समुद्र, स्वीज़ नहर तक तीनों ओर का समुद्र तट, उसके बाद उत्तर में लेबेनान पर्वत से मिला हुआ रूम सागर का किनारा और ऊपर जाकर छोटी छोटी पहाड़ियों का वह सिलसिला जो एशिया कोचक से शाम को अलग करता है और दजला और फ़िरात नाम की बड़ी नदियाँ जो इन पर्वतों से निकल कर एक दूसरे के बराबर बराबर बहती हुई, गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिलकर ईरान की खाड़ी में जा गिरती हैं. या दजले से पूरब की वे पहाड़ियाँ जो आजकल इराक़-अरबी को इराक़-अजमी से अलग करती हैं, अरब की क़ुदरती भौगोलिक सरहदें हैं. इसके सिवाय अरब की कोई दूसरी सरहदें मुक़र्रर की ही नहीं जा सकतीं. ईरान की खाड़ी के पच्छिम के प्रदेश बहरैन को बसरा के मैदान से अलग करना जबकि दोनों के बीच कोई भौगोलिक रेखा नहीं है और दोनों में सदियों से एक ही क़बीलों के लोग आबाद चले आते हैं, या शाम के रेगिस्तान को नज्द के रेगिस्तान से अलग समझना क़ुदरती हद बन्दी के उसूलों के ख़िलाफ़ एक बेइन्साफ़ी होगी.

दजला और फ़िरात का दोआब 'मैसोपोटामिया' या 'इराक़' के नाम से मशहूर हैं. पुराने इतिहास में इसी इलाक़े को सुमेर या बैबीलोनिया (बाबुल,) कहा गया है. इस का अधिक दक्खिनी भाग 'काल्डिया' या 'ख़ल्द' कहलाता है. काल्डियाके उत्तर में बाबुल और असुरिया के बहुत पुराने देश हैं. दजला और फ़िरात की नहरों का हज़ारों बरस पुराना सिलसिला इस समय तक केवल अपने अवशेषों द्वारा संसार के निर्माण कला-विशारदों को चकित करता रहा है. उत्तर में शाम (सुरिया) संसार की सभ्यता का लगभग उतना ही प्राचीन और उतना ही मशहूर केन्द्र रह चुका है. काल्डिया का प्रदेश अपने दिल को लुभाने वाले नज़ारों और सरसब्ज़ी के

پھر سے سوشاسن قایم کیا. غرض یہ کہ بارہ مہینے کے اندر راج بھر میں پھر سے شانتی، امن اور ویوستھا قایم ہو گئی. جن باغیوں نے خود ادھینتا سویکار کر لی ابوبکر نے اُن کو معاف کر دیا.

[6]

اب ہم عرب کے بھوگول (جغرافیہ) کی اور ایک نظر ڈالنا چاہتے ہیں. اگر عرب میں وہ سب علاقہ شامل کیا جاوے جو بھوگولک لحاظ سے صاف صاف عرب کے جزیرے میں شامل ہے، جس میں عرب جاتی کے لوگ بستے ہیں اور جہاں عربی بھاشا بولی جاتی ہے، تو ابھی تک عرب کا ایک بہت بڑا اور زرخیز علاقہ مدینے کی قومی سرکار سے باہر اور ودیشیوں کے قبضے میں تھا. اگر ہم عرب کی بھوگولک سرحدیں مقرر کرنا چاہیں تو ایران کی کھاڑی سے لے کر ہند مہاساگر، لال سمدر، سویز نہر تک تینوں اور کا سمدر تٹ، اُس کے بعد اتر میں لبنان پروت سے ملا ہوا روم ساگر کا کنارہ اور اُوپر جاکر چھوٹی چھوٹی پہاڑیوں کا وہ سلسلہ جو ایشیا کوچک سے شام کو الگ کرتا ہے اور دجلہ اور فرات نام کی بڑی ندیاں جو اِن پروتوں سے نکل کر ایک دوسرے کے برابر برابر بہتی ہوئی، گنگا اور جمنا کی طرح ایک دوسرے میں مل کر ایران کی کھاڑی میں جا گرتی ہیں، یا دجلے سے پورب کی وے پہاڑیاں جو آجکل اعراق عربی کو اعراق عظمی سے الگ کرتی ہیں، عرب کی قدرتی بھوگولک سرحدیں ہیں. اِس کے سوائے عرب کی کوئی دوسری سرحدیں مقرر کی ہی نہیں جا سکتیں. ایران کی کھاڑی کے پچھم کے پردیش بحرین کو بصرہ کے میدان سے الگ کرنا جب کہ دونوں کے بیچ کوئی بھوگولک ریکھا نہیں ہے اور دونوں میں صدیوں سے ایک ہی قبیلوں کے لوگ آباد چلے آتے ہیں، یا شام کے ریگستان کو نجد کے ریگستان سے الگ سمجھنا قدرتی حدبندی کے اُصولوں کے خلاف ایک بےانصافی ہو گی.

دجلہ اور فرات کا دوآب، 'میسو پوٹامیا' یا 'عراق' کے نام سے مشہور پرانے اتہاس میں اِسی علاقے کو سومیر یا بیبیلونیا (بابل) کہا گیا ہے. اس کا ادھک دکھنی بھاگ 'کالڈیا' یا 'خلد' کہلاتا ہے. کالڈیا کے اُتر میں بابل اور اسوریا کے بہت پرانے دیش ہیں. دجلہ اور فرات کی نہروں کا ہزاروں برس پرانا سلسلہ اُس سمے تک کیول اپنے اوشیشوں دوارا سنسار کے نرمان کلا وشاردوں کو چکت کرتا رہا ہے. اتر میں شام (سوریا) سنسار کی سبھیتا کا لگ بھگ اتنا ہی پراچین اور اتنا ہی مشہور کیندر رہ چکا ہے. کالڈیا کا پردیش اپنے دل کو لبھانے والے نظاروں اور سرسبزی کے

अरब ख़ालिद की ओर मारे गए. बनी हनीफ़ा के जिन लोगों ने बग़ावत में हिस्सा न लिया था उनका एक प्रतिनिधि मण्डल अबुबक्र से मिलने मदीने गया. अबुबक्र ने उनके साथ प्रेम और इज़्ज़त का बर्ताव किया. इन अरबों ने भी अब अरब ख़लीफ़ा की मातहती और इसलाम दोनों को क़ुबूल कर लिया. जिस तरह ख़ालिद ने उत्तर और मध्य अरब की बग़ावतों को शान्त किया उसी तरह दूसरी टोलियों ने दूसरे सेनापतियों के अधीन पूरब और दक्खिन के प्रान्तों में फिर से सुशासन क़ायम किया.

बहरैन प्रान्त के ईसाई सरदार मोज़ेर ने मोहम्मद साहब के समय में इसलाम क़ुबूल कर लिया था. मोज़ेर के उत्तराधिकारी ने अबुबक्र के ख़िलाफ़ बग़ावत खड़ी कर दी और अपने को फिर से ईसाई ज़ाहिर किया. बहरैन के मुसलमान रेज़िडेण्ट अला ने उसे एक दिन शराब के नशे में चूर पाकर गिरफ़्तार कर लिया और उस प्रान्त को अपने क़ाबू में कर लिया. होज़ैफ़ के मातहत एक सैन्यदल ने उमान प्रान्त में फिर से सुशासन क़ायम किया.

तिहामा में कुछ बद्दू डाकुओं ने मौक़ा पाकर अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ क़ाफ़िलों को लूटना शुरू कर दिया और थोड़े दिनों के लिये उस इलाक़े में राह चलना नामुमकिन कर दिया. इनके एक सरदार फ़ुजाअ ने ख़लीफ़ा के पास आकर यह कहकर कि मैं आस पास के बाग़ियों को शान्त करना चाहता हूँ. कुछ अस्त्र-शस्त्र हासिल कर लिये और फिर इन्हीं हथियारों की मदद से उस संकट के समय में तिजारती तथा दूसरे क़ाफ़िलों की लूट मार जारी कर दी. अबुबक्र ने फ़ुजाअ को पकड़वा मंगाया और इस दग़ाबाज़ी की सज़ा में मदीने के क़ब्रिस्तान के पास ज़िन्दा जलवा दिया.

आम तौर पर अबुबक्र अपने फ़ैसलों में नरम दिल था और शरण में आये शत्रु के साथ उदारता का बर्ताव करता था.† फ़ुजाअ की सज़ा की ओर इशारा करते हुये अबुबक्र अपने अन्त के दिनों में अकसर कहा करता था—"यह काम मेरी ज़िन्दगी के उन तीन कामों में से है जिनकी बाबत मैं सोचा करता हूँ कि अगर मैंने ये न किये होते तो अच्छा था." लेकिन फ़ुजाअ की यह सज़ा दूसरों के लिये एक नसीहत हो गई. अरब की उस समय की हालत पर इसका डरावना असर पड़ा.

यमन में अबुबक्र ने एक ईरानी सरदार फ़ीरोज़ को हाकिम मुक़र्रर करके भेजा. वहां के कुछ अरबों ने फ़ीरोज़ के ख़िलाफ़ बग़ावत की लेकिन बग़ावत शान्त कर दी गई. इसी प्रकार मुहाजिर और अकरमा ने हज़्रमौत के सूबे में

† Sir William Muir.

عرب خالد کی اور مارے گئے بنی حنیفہ کے جن لوگوں نے بغاوت میں حصہ نہ لیا تھا اُن کا ایک پرتینِدھی منڈل ابوبکر سے ملنے مدینے گیا۔ ابوبکر نے اُن کے ساتھ پریم اور عزت کا برتاؤ کیا۔ اُن عربوں نے بھی اب عرب خلیفہ کی ماتحتی اور اسلام دونوں کو قبول کرلیا۔ جس طرح خالد نے اتر اور مدھیہ عرب کی بغاوتوں کو شانت کیا اُسی طرح دوسری ٹولیوں نے دوسرے سینا پتیوں کے ادھین پورو اور دکھن کے پرانتوں میں پھر سے سوشاسن قایم کیا۔

بحرین پرانت کے عیسائی سردار موزیر نے محمد صاحب کے سمے میں اِسلام قبول کر لیا تھا۔ موزیر کے اُترادھیکاری نے ابوبکر کے خلاف بغاوت کھڑی کر دی اور اپنے کو پھر سے عیسائی ظاہر کیا۔ بحرین کے مسلمان ریذیڈنٹ الہ نے اُسے ایک دن شراب کے نشے میں چور پا کر گرفتار کرلیا اور اُس پرانت کو اپنے قابو میں کر لیا۔ ہوزیف کے ماتحت ایک سینیہ دل نے عومان پرانت میں پھر سے سو شاسن قایم کیا۔

تہاما میں کچھ بدو ڈاکوؤں نے موقع پاکر اپنی پرانی عادت کے مطابق قافلوں کو لوٹنا شروع کر دیا اور تھوڑے دنوں کے لئے اُس پرانت میں راہ چلنا ناممکن کر دیا۔ اُن کے ایک سردار فوجاع نے خلیفہ کے پاس آ کر یہ کہہ کر کہ میں آس پاس کے باغیوں کو شانت کرنا چاہتا ہوں کچھ استر شستر حاصل کر لئے اور پھر اُنہیں ہتھیاروں کی مدد سے اُس سنکٹ کے سمے میں تجارتی تتھا دوسرے قافلوں کی لوٹ مار جاری کر دی۔ ابوبکر نے فوجاع کو پکڑوا منگایا اور اِس دغابازی کی سزا میں مدینے کے قبرستان کے پاس زندہ جلوا دیا۔

عام طور پر ابو بکر اپنے فیصلوں میں نرم دل تھا اور شرن میں آئے شترو کے ساتھ اُدارتا کا برتاؤ کرتا تھا۔ † فوجاع کے سزا کی اور اِشارہ کرتے ہوئے ابوبکر اپنے انت کے دنوں میں اکثر کہا کرتا تھا—"یہ کام میری زندگی کے اُن تین کاموں میں سے ہے جن کی بابت میں سوچتا ہوں کہ اگر میں نے یہ نہ کئے ہوتے تو اچھا تھا۔" لیکن فوجاع کی یہ سزا دوسروں کے لئے ایک نصیحت ہو گئی۔ عرب کی اُس سمے کی حالت پر اِس کا ڈراونا اثر پڑا۔

یمن میں ابوبکر نے ایک ایرانی سردار فیروز کو حاکم مقرر کر کے بھیجا۔ وہاں کے کچھ عربوں نے فیروز کے خلاف بغاوت کی لیکن بغاوت شانت کر دی گئی۔ اِس پرکار مہاجر اور اکرما نے حضرموت کے صوبہ میں

इनकार कर दिया. सजाह् अपनी सेना सहित यमामा सूबे की ओर बढ़ी.

यमामा का सूबा अरब के ठीक बीच में थोड़ा सा पूरब की ओर है. यहाँ पर बनी हनीफ़ा नाम का एक बड़ा ईसाई क़बीला आबाद था. इन लोगों ने मोहम्मद साहब के समय में मदीने की सरकार को अपनी सरकार मान लिया था. लेकिन अब वे चालीस हज़ार की तादाद में अपने एक सरदार मुसैलमा के अधीन बग़ावत पर आमादा थे. मुसैलमा कुछ पहले से पैग़म्बरी का दावा कर रहा था और बनी हनीफ़ा के ज़्यादातर लोग उसे अपना शासक मानते थे. मुमकिन है अनेक विश्वासी ईसाइयों के दिलों में इस समय यह ख़्याल पैदा हो रहा हो कि अगर अरब के क़दीम बुत परस्तों में एक महान पैग़म्बर पैदा हो सकता है तो ईसाइयों में क्यों नहीं ?

सजाह् अपनी सेना के साथ मुसैलमा से जाकर मिल गई. दोनों में बात चीत हुई और उनके दिल इस क़दर मिल गए कि यमामा के पैग़म्बर ने इराक़ की पैग़म्बरा के साथ शादी करली. यमामा सूबे की आधी मालगुज़ारी सजाह् को सदा के लिए दहेज़ (मेहर) में देदी गई. चन्द रोज़ के बाद ही अपनी ज़्यादातर फ़ौज मुसैलमा के सुपुर्द करके सजाह् उत्तर की ओर अरब की सरहद को फिर से पार कर इराक़ लौट गई. इसके बाद उसकी कोई खबर नहीं मिली. अलबत्ता इस बेइन्तज़ामी के वक़्त में कुछ दिनों तक थोड़े से इराक़ी घुड़सवार उसके नाम पर यमामा और उसके आस पास थोड़ी बहुत मालगुज़ारी वसूल करते रहे.

अबुबक्र ने इकरीमा और शोरह् बिल के मातहत एक फ़ौजी टुकड़ी मुसैलमा को परास्त करने के लिये पहले ही से यमामा भेज दी थी. इस फ़ौज ने मुसैलमा की विशाल सेना से बुरी तरह हार खाई. सारी साज़िशों का सबसे ज़्यादह असर इसी सेना पर था. इसी पर उन्होंने सबसे ज़्यादह धन हरबे-हथियार और अपनी क़ाबलियत सर्फ़ की थी. ख़ालिद अब यमामा की ओर बढ़ा. अक़रबा नामक मुक़ाम पर दोनों ओर की सेनाओं में बड़ी घमासान लड़ाई हुई. दोनों ओर के सेनानियों ने ख़ूब वीरता के जौहर दिखाए. आख़ीर में बाग़ियों को पीछे हटना पड़ा. मुसैलमा अपने बचे हुए आदमियों के साथ पीछे हटकर एक बाग़ में दाख़िल हुआ और उसका दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया. बाग़ के बाहर एक ऊंची चहार दीवारी थी. ख़ालिद की अरब सेना ने बाग़ को घेर लिया. दरवाज़ा खुला. मुसैलमा और उसके सब साथी मैदान में काम आए. यह बाग़ मुस्लिम इतिहास में "मौत के बाग़" के नाम से मशहूर है. विजय ख़ालिद की ओर रही, लेकिन अनेक ज़ख़्मियों के अलावा 360 मुहाजिर, क़रीब 300 अनसार और क़रीब 500 दूसरे

انکار کر دیا ۔ سجاہ اپنی سینا سہت یماما صوبہ کی اور بڑھی ۔

یماما صوبہ عرب کے ٹھیک بیچ میں تھوڑا سا پورب کی اور ہے ۔ یہاں پر بنی حنیفا نام کا ایک بڑا عیسائی قبیلہ آباد تھا ۔ ان لوگوں نے محمد صاحب کے سمے میں مدینے کی سرکار کو اپنی سرکار مان لیا تھا ۔ لیکن اب وہ چالیس ہزار کی تعداد میں اپنے ایک سردار موسیلما کے ادھین بغاوت پر آمادہ تھے ۔ موسیلما کچھ پہلے سے پیغمبری کا دعویٰ کر رہا تھا اور بنی حنیفا کے زیادہ تر لوگ اسے اپنا شاسک مانتے تھے ۔ ممکن ہے انیک وشواسی عیسائیوں کے دلوں میں اس سمے یہ خیال پیدا ہو رہا ہو کہ اگر عرب کے قدیم بت پرستوں میں ایک مہان پیغمبر پیدا ہوسکتا ہے تو عیسائیوں میں کیوں نہیں ؟

سجاہ اپنی سینا کے ساتھ موسیلما سے جاکر مل گئی ۔ دونوں میں بات چیت ہوئی اور اُن کے دل اِس قدر مل گئے کہ یماما کے پیغمبر نے اعراق کی پیغمبرا کے ساتھ شادی کرلی ۔ یماما صوبہ کی آدھی مال گذاری سجاہ کو سدا کے لئے دھیز (مہر) میں دے دی گئی ۔ چند روز کے بعد ھی اپنی زیادہ تر فوج موسیلما کے سپرد کر کے سجاہ اتر کی اور عرب کی سرحد کو پھر سے پار کر اعراق لوٹ گئی ۔ اِس کے بعد اُس کی کوئی خبر نہیں ملی ۔ البتہ بےانتظامی کے وقت میں کچھ دنوں تک تھوڑے سے اعراقی گھوڑ سوار اُس کے نام پر یماما اور اُس کے آس پاس تھوڑی بہت مال گذاری وصول کرتے رہے ۔

ابوبکر نے اکریما اور شورہ بل کے ماتحت ایک فوجی ٹکڑی موسلیما کو پراست کرنے کے لئے پہلے ہی سے بھیج دی تھی ۔ اس فوج نے موسلیما کی وشال سینا سے بری طرح ہار کھائی ۔ ساری سازشوں کا سب سے زیادہ اثر اِسی سینا پر تھا ۔ اِسی پر انہوں نے سب سے زیادہ دھن حربہ ہتیا اور اپنی قابلیت صرف کی تھی ۔ خالد اب یماما کی اور بڑھا ۔ اقربا نامک استھان پر دونوں اور کی سیناؤں میں بڑی گھماسان لڑائی ہوئی ۔ دونوں اور کے سینانیوں نے خوب ویرتا کے جوہر دکھائے ۔ آخیر میں باغیوں کو پیچھے ہٹنا پڑا ۔ موسیلما اپنے بچے ہوئے آدمیوں ساتھ پیچھے ہٹ کر ایک باغ میں داخل ہوا اور اُس کا دروازہ بھیتر سے بند کرلیا ۔ باغ کے باہر ایک اونچی چہاردیواری تھی ۔ خالد کی عرب سینا نے باغ کو گھیر لیا ۔ دروازہ کھلا ۔ موسیلما اور اُس کے سب ساتھی میدان میں کام آئے ۔ یہ باغ مسلم اتہاس میں "موت کے باغ" کے نام سے مشہور ہے ۔ وجے خالد کی اور رہی، لیکن انیک زخمیوں کے علاوہ 360 مہاجر، قریب 300 انصار اور قریب 500 دوسرے

लड़ाई में क़ुरैश की तरफ से लड़कर एक बार मोहम्मद साहब को परास्त किया था और जिसने मोहम्मद साहब की मौत से थोड़े ही दिनों पहले मुता की लड़ाई में रोमन सेना के हाथों से खोई हुई जीत छीनी थी. खालिद को इस समय सबसे पहले मदीने से उत्तर की ओर पैग़म्बरी के एक नए दावेदार तोलैहा को ज़ेर करने के लिये भेजा गया.

तोलहा बनी असद नाम के बाग़ी क़बीले का सरदार था. शाम की सरहद पर बनी ग़तफान नाम का एक दूसरा पुराना ईसाई क़बीला था. बनी ग़त.फान का एक सरदार उयेना सात सौ सिपाहियों के साथ तोलैहा से जा मिला. बोज़ाखाँ की लड़ाई में खालिद ने दोनों बाग़ी क़बीलों की मुश्तरका .फौज को शिकस्त दी. तोलैहा ने अपनी बीबी समेत भाग कर शाम में रोमी हुकूमत की सरहद के अन्दर पनाह ली. उयेना गिरफ़्तार करके जंग के दूसरे क़ैदियों के साथ .खलीफा के पास मदीने भेज दिया गया. .खलीफ़ा ने उयेना और उसके सब साथियों को माफ़ कर दिया और उन्हें आज़ाद करवा दिया. तोलैहा को भी माफ़ कर दिया गया. उसे इत्तला भेज दी गई. उसके दिल पर इसका असर हुआ. उसने .फौरन शाम से अरब लौटकर इसलाम क़ुबूल कर लिया और इसके बाद ईरान के साथ अरबों की लड़ाइयों में उसने ख़ूब वीरता के हाथ दिखाए. बनी असद और बनी ग़तफान दोनों क़बीलों के लोगों ने अबुबक्र को मोहम्मद साहब का वारिस और अपना हाकिम मान लिया. खालिद ने इसके बाद एक महीना बोज़ाखाँ में रहकर आस पास के सूबों में फिर से अमन और आमान .क़ायम किया. खालिद के इतनी जल्दी .फतह हासिल करने की एक ख़ास वजह यह थी कि जबकि तोलैहा, उयेना और उनके थोड़े से साथी रोमी शासकों के हाथों में खेल रहे थे. ज़्यादातर अरब मदीने की नई .क़ौमी सरकार को अपनी सरकार समझते थे. बाग़ियों की और अबुबक्र की मेहरबानी ने भी इस समय बहुत बड़ा काम दिया.

खालिद अब पूरब की ओर मुड़ा. इस ओर ईरान की खाड़ी के पास बनी तमीम नाम का एक बहुत बड़ा ईसाई .क़बीला था जिसकी अनेक शाखें उत्तर में इराक़ के अन्दर फ़िरात नदी तक फैली हुई थीं. इस .क़बीले की एक शाख का नाम बनी यरबोआ था. बनी यरबोआ की एक ईसाई औरत सजाह ने, जो बहुत दिनों से इराक़ में रहती थी, इस समय .ख़ुद पैग़म्बरी का दावा किया, कई ईसाई .क़बीलों से एक बहुत बड़ी सेना लेकर, मदीने को ज़ेर करने के लिये, वह अरब की सरहद में दाख़िल हुई. सरहद के इस पार बनी यरबोआ के लोगों ने सजाह का साथ दिया. लेकिन बनी तमीम के ज़्यादातर लोगों ने सजाह का साथ देने से

لڑائی میں قریش کی طرف سے لڑکر ایک بار محمد صاحب کو پرلست کیا تھا اور جس نے محمد صاحب کی موت سے تھوڑے ہی دنوں پہلے متاع کی لڑائی میں رومن سینا کے ہاتھوں سے کھوئی ہوئی جیت چھینی تھی۔ خالد کو اِس سمے سب سے پہلے مدینے سے اُتر کی اور پیغمبری کے ایک نئے دعویدار طولیہا کو زیر کرنے کے لئے بھیجا گیا۔

طولیہا بنی اسد نام کے باغی قبیلے کا سردار تھا۔ شام کی سرحد پر بنی گتفان نام کا ایک دوسرا پرانا عیسائی قبیلہ تھا۔ بنی گتفان کا ایک سردار اُئینہ سات سو سپاہیوں کے ساتھ طولیہا سے جا ملا۔ بوزاخاں کی لڑائی میں خالد نے دونوں باغی قبیلوں کی مشترکہ فوج کو شکست دی۔ طولیہا نے اپنی بیوی سمیت بھاگ کر شام میں رومی حکومت کی سرحد کے اندر پناہ لی۔ اُئینہ گرفتار کر کے جنگ کے دوسرے قیدیوں کے ساتھ خلیفہ کے پاس مدینہ بھیج دیا گیا۔ خلیفہ نے اُئینہ اور اُس کے سب ساتھیوں کو معاف کردیا اور اُنہیں آزاد کروا دیا۔ طولیہا کو بھی معاف کردیا گیا۔ اُسے اطلاع بھیج دی گئی۔ اس کے دل پر اِس کا اثر ہوا۔ اُس نے فوراً شام سے عرب لوٹ کر اِسلام سوکار کر لیا اور اُس کے بعد ایران کے ساتھ عربوں کی لڑائیوں میں اُس نے خوب ویرتا کے ہاتھ دکھائے۔ بنی اسد اور بنی گتفان دونوں قبیلوں کے لوگوں نے ابوبکر کو محمد صاحب کا وارث اور اپنا حاکم مان لیا۔ خالد نے اِس کے بعد ایک مہینہ بوزاخاں میں رہ کر آس پاس کے صوبوں میں پھر سے امن اور آمان قایم کیا۔ خالد کے اِتنی جلدی فتح حاصل کرنے کی ایک خاص وجہہ یہ تھی کہ جب کہ طولیہا، اُئینہ اور اُن کے تھوڑے سے ساتھی رومی شاسکوں کے ہاتھوں میں کھیل رہے تھے، زیادہ تر عرب مدینے کی نئی قومی سرکار کو اپنی سرکار سمجھتے تھے۔ باغیوں کی اور ابوبکر کی مہربانی نے بھی اِس سمے بہت بڑا کام دیا۔

خالد اب پورب کی اور مڑا۔ اِس اور ایران کی کھاڑی کے پاس بنی تمیم نام کا ایک بہت بڑا عیسائی قبیلہ تھا جسکی انیک شاخیں اتر میں اعراق کے اندر فرات ندی تک پھیلی ہوئی تھیں۔ اِس قبیلے کی ایک شاخ کا نام بنی یربوا تھا۔ بنی یربوا کی ایک عیسائی عورت سجاہ نے جو بہت دنوں سے اعراق میں رہتی تھی اِس سمے خود پیغمبری کا دعویٰ کیا اور کئی عیسائی قبیلوں سے ایک بہت بڑی سینا لے کر مدینے کو زیر کرنے کے لئے عرب کی سرحد میں داخل ہوئی۔ سرحد کے اِس پار بنی یربوا کے لوگوں نے سجاہ کا ساتھ دیا۔ لیکن بنی تمیم کے زیادہ تر لوگوں نے سجاہ کا ساتھ دینے سے

[5]

ओसामा की फ़ौज शाम तक बढ़ी चली गई. रोमी सेना पीछे हट चुकी थी. ओसामा शाम की सरहद पर के कुछ सरकश ईसाई क़बीलों को सजायें देकर जुरमाने के धन और बाग़ियों के ज़ब्त शुदा माल के साथ दो महीने के बाद मदीने लौट आया. शहर की हिफ़ाज़त की फ़िक्र अब जाती रही. अबुबक्र ने फिर थोड़ी सी सेना लेकर मदीने पर हमला करने वाले बाग़ियों को, जो ख़ुज़ा के मैदान में फिर से इकट्ठा हो रहे थे, आख़री शिकस्त दी. इसके बाद अबुबक्र फिर कभी मदीने से बाहर जंग के लिये नहीं निकला.

अब सिर्फ़ मदीने से बाहर की बग़ावतों को ख़त्म करने का मसला बाक़ी था. अबुबक्र ने कुल वफ़ादार अरब सरदारों को जमा किया और जितनी फ़ौज जमा की जा सकी उसकी अलग अलग टुकड़ियाँ बनाकर उन्हें अलग अलग दिशाओं में रवाना कर दिया. इन सब बग़ावतों को शान्त करके अरब को फिर से एक राष्ट्रीय शासन के अधीन लाने में अबुबक्र को पूरा एक साल लग गया. इन फ़ौजी दलों में जो ख़ालिद इब्न वलीद के मातहत भेजा गया उसने बग़ावत को दबाने में बहुत तारीफ़ के क़ाबिल काम किया. ख़ालिद के चरित्र को बयान करते हुए इतिहास लेखक सर विलियम म्योर लिखता है —

"इसमें कोई शुबहा नहीं कि इसलाम के शुरू के दिनों में अबुबक्र और उमर के बाद सबसे अधिक महान व्यक्ति वलीद का बेटा ख़ालिद था. इस बात का सेहरा सबसे अधिक उसी के सर बाँधना चाहिये कि इसलाम ने इतनी जल्दी अपनी हालत को फिर से मज़बूत कर लिया और इसके बाद वह इतना अधिक तेज़ी के साथ फैलता चला गया. ख़ालिद एक जाँबाज़ सिपाही था. उसकी बहादुरी जल्दबाज़ी की हद को पहुँची हुई थी, लेकिन बहादुरी के साथ साथ उसमें ठण्डे दिल से और तुरन्त फ़ैसले तक पहुँचने की भी क़ाबलियत थी.

"जिन जंग के मैदानों में ईरान की बादशाहत और शाम की रोमी शहनशाहियत दोनों की क़िस्मत का फ़ैसला हो गया उनमें ख़ालिद ने जो अमली होशियारी दिखलाई उसके सबब उसे दुनिया के बड़े से बड़े सिपहसालारों में गिना जाता है. बार बार लेकिन हमेशा अजीबो ग़रीब होशियारी और जाँबाज़ी के साथ उसने ऐसी मुसीबतों के वक़्त पांसा फेंक दिया जिनमें अगर वह हार जाता तो उसकी हार का मतलब इसलाम का ख़ात्मा होता."

ख़ालिद की ग़ैर मामूली बहादुरी के सबब इसलाम के इतिहास में उसे 'सैफ़-अल्लाह' यानी 'अल्लाह की तलवार' के नाम से पुकारा जाता है. यह वही ख़ालिद था जिसने ओहद की

[5]

اوساما کی فوج شام تک بڑھی چلی گئی ۔ رومی سینا پیچھے ھٹ چکی تھی ۔ اوساما شام کی سرحد پر کے کچھ سرکش عیسائی قبیلوں کو سزائیں دے کر جرمانے کے دھن اور باغیوں کے ضبط شدہ مال کے ساتھ دو مہینے کے بعد مدینے لوٹ آیا ۔ شہر کی حفاظت کی فکر اب جاتی رھی ۔ ابوبکر نے پھر تھوڑی سی سینا لے کر مدینے پر حملہ کرنے والے باغیوں کو' جوخذا کے میدان میں پھر سے اکٹھا ھورھے تھے' آخری شکست دی ۔ اِس کے بعد ابوبکر پھر کبھی مدینے سے باھر جنگ کے لئے نہیں نکلا ۔

اب صرف مدینے سے باھر کی بغاوتوں کو ختم کرنے کا مسئلہ باقی تھا ۔ ابوبکر نے کل وفادار عرب سرداروں کو جمع کیا اور جتنی فوج جمع کی جاسکی اُس کی الگ الگ ٹکڑیاں بنا کر اُنھیں الگ الگ دشاؤں میں روانہ کردیا ۔ اِن سب بغاوتوں کو شانت کر کے عرب کو پھر سے ایک راشٹریہ شاسن کے ادھین لانے میں ابوبکر کو پورا ایک سال لگ گیا ۔ اِن فوجی دلوں میں جو خالد ابن ولید کے ماتحت بھیجا گیا اُس نے بغاوت کو دبانے میں بہت تعریف کے قابل کام کیا ۔ خالد کے چرتر کو بیان کرتے ھوئے اتہاس لیکھک سرولیم میور لکھتا ھے ـــــ

" اِس میں کوئی شبہ نہیں کہ اِسلام کے شروع کے دنوں میں ابوبکر اور عمر کے بعد سب سے ادھک مہان ویکتی ولید کا بیٹا خالد تھا ۔ اِس بات کا سہرا سب سے ادھک اُسی کے سر باندھنا چاھئے کہ اِسلام نے اِتنی جلدی اپنی حالت کو پھر سے مضبوط کرلیا اور اِس کے بعد وہ اِتنی ادھک تیزی کے ساتھ پھیلتا چلا گیا ۔ خالد ایک جانباز سپاھی تھا ۔ اُس کی بہادری جلدبازی کی حد کو پہنچی ھوئی تھی' لیکن بہادری کے ساتھ ساتھ اُس میں ٹھنڈے دل سے اور ترنت فیصلے تک پہنچنے کی بھی قابلیت تھی ۔

" جن جنگ کے میدانوں میں ایران کی بادشاھت اور شام کی رومی شہنشاھیت دونوں کی قسمت کا فیصلہ ھوگیا اُنمیں خالد نے جو عملی ھوشیاری دکھلائی' اُس کے سبب اُسے دنیا کے بڑے سے بڑے سپہ سالاروں میں گنا جاتا ھے ۔ بار بار لیکن ھمیشہ عجیب و غریب ھوشیاری اور جانبازی کے ساتھ اُس نے ایسی مصیبتوں کے وقت پانسہ پھینک دیا جن میں اگر وہ ھار جاتا تو اُس کی ھار کا مطلب اِسلام کا خاتمہ ھوتا ۔"

خالد کی غیر معمولی بہادری کے سبب اِسلام کے اِتہاس میں اُسے 'سیف اللہ' یعنی 'اللہ کی تلوار' کے نام سے پکارا جاتا ھے ۔ یہ وھی خالد تھا جس نے احد کی

अबुबक्र ने धीरज के साथ उमर को जवाब दिया—

"यदि शहर के चारों तरफ़ .ख़ूंख़्वार भेड़ियों के झुण्ड के झुण्ड फिर रहे हों और मैं शहर के अन्दर अकेला रह गया हूँ तब भी सेना जायगी. मेरे मालिक (मोहम्मद साहब) के मुँह से निकला हुआ एक लफ़्ज़ भी ख़ाली नहीं जा सकता."

मुमकिन है दूरन्देश अबुबक्र की निगाहें इस समय इस बात की ओर भी रही हों कि इन तमाम बग़ावतों का असली सरचश्मा कहाँ है. सेना गई. अबुबक्र कुछ दूर तक पैदल ओसामा के साथ साथ गया. बिदाई के वक़्त अबुबक्र ने ओसामा को इन लफ़्ज़ों में आदेश दिया—

"देखना बेवफ़ाई से ख़बरदार रहना, अदल और इन्साफ़ (न्याय) के रास्ते से ज़रा भर भी इधर उधर न होना. किसी को अंग-भंग की सज़ा न देना. न किसी बालक, या बूढ़े या औरत का क़त्ल करना. खजूर के दरख़्तों को आग न लगाना न उन्हें किसी तरह का नुक़सान पहुँचाना, न किसी ऐसे दरख़्त को काटना जिससे आदमियों या जानवरों को खाना मिलता हो. सिवाय जीवन निर्वाह की ज़रूरत के किसी पशु-पक्षी या ऊँट को न मारना. उस मुल्क के लोग जो खाना तुम्हारे खाने के लिये अपने बर्तनों में लाएँ उसे अल्लाह का नाम लेकर खा लेना. सिर मुँडाए साधू अगर तुम्हारी मुख़ालफ़त न करें तो उन्हें किसी तरह की तकलीफ़ न पहुँचाना अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो. अल्लाह तलवारों और वबाओं से तुम्हारी हिफ़ाज़त करे!"

ओसामा के जाने के बाद अरब की जो हालत हुई उसे एक लेखक ने इन लफ़्ज़ों में बयान किया है—

"अरब में चारों ओर बग़ावत होने लगी. लोग इसलाम छोड़ने लगे. नई क़ौमी सरकार के ख़िलाफ़ ईसाई और यहूदी गरदन उभारने लगे. विश्वासी मुसलमानों की हालत ऐसी हो गई जैसे बिना गड़रिये की भेड़ें! उनका रसूल जा चुका था, उनकी तादाद घट रही थी और उनके दुश्मन बढ़ रहे थे."

मौक़ा पाकर कुछ बाग़ियों ने फ़ौरन मदीने पर चढ़ाई कर दी. मुख्य सेना ओसामा के साथ रवाना हो चुकी थी. अबुबक्र ने हर बालिग़ आदमी को हथियारबन्द होने और शहर की हिफ़ाज़त करने के लिये सबको जमा होने का हुक्म दिया. ख़ुद फ़ौज की कमान्दारी की. लड़ाई हुई. बाग़ी परास्त होकर तितर-बितर हो गए. इस छोटी सी जीत का आम अरबों के दिलों पर बहुत अच्छा असर पड़ा. नतीजा यह हुआ कि आस पास के क़बीलों से ख़िराज मदीने आने लगा.

ابوبکر نے دھیرج کے ساتھ عمر کو جواب دیا—

"یدی شہر کے چاروں طرف خونخوار بھیڑیوں کے جھنڈ کے جھنڈ پھر رہے ہوں اور میں شہر کے اندر اکیلا رہ گیا ہوں تب بھی سینا جائیگی۔ میرے مالک (محمد صاحب) کے منھ سے نکلا ہوا ایک لفظ بھی خالی نہیں جاسکتا۔"

ممکن ہے دور اندیش ابوبکر کی نگاہیں اس سمئے اس بات کی اور بھی رہی ہوں کہ ان تمام بغاوتوں کا اصلی سرچشمہ کہاں ہے۔ سینا گئی۔ ابوبکر کچھ دور تک پیدل اوساما کے ساتھ ساتھ گیا۔ بدائی کے وقت ابوبکر نے اوساما کو ان لفظوں میں آدیش دیا—

"دیکھنا بیوفائی سے خبردار رہنا، عدل اور انصاف (نیائے) کے راستے سے ذرہ بھر بھی ادھر ادھر نہ ہونا۔ کسی کو انگ بھنگ کی سزا نہ دینا۔ نہ کسی بالک، یا بوڑھے یا عورت کو قتل کرنا۔ کھجور کے درختوں کو آگ نہ لگانا نہ انہیں کسی طرح کا نقصان پہنچانا، نہ کسی ایسے درخت کو کاٹنا جس سے آدمیوں یا جانوروں کو کھانا ملتا ہو۔ سوائے جیون نرواہ کی ضرورت کے کسی پشو پکشی یا اونٹ کو نہ مارنا۔ اس ملک کے لوگ جو کھانا تمہارے کھانے کے لئے اپنے برتنوں میں لائیں اسے اللہ کا نام لے کر کھا لینا۔ سر منڈائے سادھو اگر تمہاری مخالفت نہ کریں تو انہیں کسی طرح کی تکلیف نہ پہنچانا۔ اب اللہ کے نام پر آگے بڑھو۔ اللہ تلواروں اور وباؤں سے تمہاری حفاظت کرے!"*

اوساما کے جانے کے بعد عرب کی جو حالت ہوئی اسے ایک لیکھک نے ان لفظوں میں بیان کیا ہے—

"عرب میں چاروں اور بغاوت ہونے لگی۔ لوگ اسلام چھوڑنے لگے۔ نئی قومی سرکار کے خلاف عیسائی اور یہودی گردن ابھارنے لگے۔ وشواسی مسلمانوں کی حالت ایسی ہوگئی جیسے بنا گڈریے کی بھیڑیں! ان کا رسول جاچکا تھا، ان کی تعداد گھٹ رہی تھی اور ان کے دشمن بڑھ رہے تھے۔"

موقع پاکر کچھ باغیوں نے فوراً مدینے پر چڑھائی کردی۔ مکھیہ سینا اوساما کے ساتھ روانہ ہو چکی تھی۔ ابوبکر نے ہر بالغ آدمی کو ہتھیار بند ہونے اور شہر کی حفاظت کے کرنے لئے سب کو جمع ہونے کا حکم دیا۔ خود فوج کی کمانداری کی۔ لڑائی ہوئی۔ باغی پراست ہوکر تتر بتر ہوگئے۔ اس چھوٹی سی جیت کا عام عربوں کے دلوں پر بہت اچھا اثر پڑا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آس پاس کے قبیلوں سے خراج مدینے آنے لگا۔

The Caliphate, its Rise, Decline and Fall, by William Muir, pp. 10-11.

[पिछले अंक से आगे]

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वम्भरनाथ पांडे

[4]

बग़ावत की पहली ख़बर उत्तर में शाम की सरहद पर के उन सूबों से आई जो मोहम्मद साहब के समय में भी रोमी साज़िशों का मरक़ज़ (केन्द्र) रह चुके थे. धीरे धीरे दूसरे अनेक सूबों से भी इसी तरह की ख़बरें मदीने पहुँचने लगीं. लेकिन ये सब बग़ावतें उत्तर, पूर्व और दक्खिन के सिर्फ़ उन प्रान्तों में हुईं जो रोम या ईरान दोनों में से किसी के मातहत रह चुके थे. इन बग़ावतों में हिस्सा लेने वाले सिर्फ़ या तो कुछ ईसाई अरब क़बीले थे और या वह क़बीले थे जो हाल में ईसाई से मुसलमान हुये थे क़ुदरती तौर पर इन्हीं में रोमी लोगों की साज़िशें सबसे ज़्यादह कामयाब हो सकती थीं. रोम और ईरान की सरहद से ही यह सब बग़ावत शुरू हुईं. इन बग़ावतों का सबसे बड़ा केन्द्र अरब की सरहद से भी दूर इराक़ के उत्तर में था जहाँ से सजाह नाम की एक ईसाई स्त्री ने निकलकर अरब पर धावा किया और मोहम्मद साहब के बाद ख़ुद पैग़म्बर होने का दावा किया.

एक बार मालूम होता था कि 23 बरस की सारी कोशिशें बेकार गईं.

ओसामा के कूच से पहले ही उस ज़माने के दूसरे सब से बड़े अरब नीतिज्ञ उमर ने आकर अबुबक्र को इन बग़ावतों की अफ़वाहों की ख़बर दी. उसने इत्तला दी कि कई ओर से मदीने पर हमले की तय्यारियाँ हो रही हैं और यह सलाह दी कि सेना को शाम जाने से रोककर मदीने की हिफ़ाज़त के लिये रखा जाए.

अबुबक्र के नाज़ुक और अनभ्यस्त कन्धों पर इस समय बड़ी गहरी ज़िम्मेवारी थी. केवल उसकी सच्चाई, उसके धीरज, उसके साहस, उसकी व्यावहारिक बुद्धि और इन सब से बढ़कर एक अल्लाह और उसके रसूल मोहम्मद पर उस की गहरी श्रद्धा ने इस संकट के समय उसका साथ दिया. इसलाम और अबुबक्र की ख़ुशक़िस्मती से मदीना, मक्का और तायफ़ जैसे ख़ास-ख़ास अरब शहरों और बीच के वह सब अरब क़बीले जो सियासी नुक़्ते नज़र से कभी दूसरों के मातहत न हुये थे अपने ईमान और नई क़ौमी सरकार की ओर अपनी वफ़ादारी में पक्के रहे.

[پچھلے انک سے آگے]

عرب کی کلچر 'سبھیتا اور اِسلام

وشومبھر ناتھ پانڈے

[4]

بغاوت کی پہلی خبر اتر میں شام کی سرحد پر کے اُن صوبوں سے آئی جو محمد صاحب کے سمے میں بھی رومی سازشوں کا مرکز (کیندر) رہ چکے تھے ۔ دھیرے دھیرے دوسرے انیک صوبوں سے بھی اِسی طرح کی خبریں مدینے پہنچنے لگیں ۔ لیکن یہ سب بغاوتیں اتر' پورو اور دکھن کے صرف اُن پرانتوں میں ہوئیں جو روم یا ایران دونوں میں سے کسی کے ماتحت رہ چکے تھے ۔ اِن بغاوتوں میں حصہ لینے والے صرف یا تو کچھ عیسائی عرب قبیلے تھے یا وہ قبیلے تھے جو حال میں عیسائی سے مسلمان ہوئے تھے ۔ قدرتی طور پر انہیں میں رومی لوگوں کی سازشیں سب سے زیادہ کامیاب ہوسکتی تھیں ۔ روم اور ایران کی سرحد سے ہی یہ سب بغاوتیں شروع ہوئیں ۔ اِن بغاوتوں کا سب سے بڑا کیندر عرب کی سرحد سے بھی دور اعراق کے اُتر میں تھا جہاں سے سجاہ نام کی ایک عیسائی استری نے نکل کر عرب پر دھاوا کیا اور محمد صاحب کے بعد خود پیغمبر ہونے کا دعویٰ کیا ۔

ایک بار معلوم ہوتا تھا کہ 23 برس کی ساری کوششیں بےکار گئیں ۔

اوساما کے کوچ سے پہلے ہی اُس زمانے کے دوسرے سب سے بڑے عرب نیتگیہ عمر نے آکر ابوبکر کو اِن بغاوتوں کی افواہوں کی خبردی ۔ اُس نے اطلاع دی کہ کئی اُور سے مدینے پر حملے کی تیاریاں ہورہی ہیں اور یہ صلاح دی کہ سینا کو شام جانے سے روک کر مدینے کی حفاظت کے لئے رکھاجائے ۔

ابوبکر کے نازک اور ان ابھیست کندھوں پر اِس سمے بڑی گہری ذمہ‌داری تھی ۔ کیول اُس کی سچائی' اُس کے دھیرج' اس کے ساھس' اُس کی ویاوہارک بدھی اور ان سب سے بڑھ کر ایک اللہ اور اُس کے رسول محمد پر اُس کی گہری شردھا نے اِس سنکٹ کے سمے اُس کا ساتھ دیا ۔ اِسلام اور ابوبکر کی خوش‌قسمتی سے مدینہ' مکہ اور طایف جیسے خاص‌خاص عرب شہروں اور بیچ کے وہ سب عرب قبیلے جو سیاسی نقطہ نظر سے کبھی دوسروں کے ماتحت نہ ہوئے تھے اپنے ایمان پر نئی قومی سرکار کی اُور اپنی وفاداری میں پکے رہے ۔

ग़ज़ल

श्री सआदत 'नज़ीर' एम.ए.

कई इन्क़लाब1 देखे, सुने कितने ही फ़साने2 !
मुझे क्या फ़रेब 3 देंगे तेरे वादे या बहाने !

मेरे तजरबों ने आख़िर किया राज़ आशकारा4,
कि हैं जालसाज़ियों 5 के यह तमाम कारख़ाने.

न वह वलवले6 हैं बाक़ी, न बुलन्द हौसले7 हैं,
उन्हें आंखें ढूँढ़ती हैं, जो गुज़र गये ज़माने.

मेरी कमनसीबियों ने मेरी आस8 को न तोड़ा,
मेरी ज़िन्दगी ने ठुकरा दिये मर्ग9 के बहाने.

कहीं अब्र10 बन के बरसे, कहीं मिस्ल राद11 गरजे,
बने इन्क़लाब आवर12 मेरे इश्क़13 के तराने.

मैं मिटा के चैन लूँगा तेरे नादरी चलन को,
मैं लुटा ही के रहूँगा तेरे जौर14 के ख़ज़ाने.

मुझे ! बर्क़ 15 देखना है ! तू जलाएगी कहाँ तक?
मैं नये-नये बनाता ही रहूँगा आशियाने16.

मेरी कोशिशें यही हैं कि बहार ऐसी आये,
कि ज़बाँ से बुलबुलों की सुने गुल17 नये तराने.

मेरा इश्क़ एक मोअम्मा,18 मेरी ज़ीस्त19 एक उक़दा20,
जो है ज़ीशऊर 21 समझे, जो है दर्दमन्द, जाने

तेरी बज़्म22 में पलट कर मैं अब आऊँ या न आऊँ,
न भुला सकेगी दुनिया मेरे दर्द के फ़साने

यह 'नज़ीर' ! रंज23 कैसा ? वही फिर बना ले माला !
कि फ़क़त समेटना है, जो बिखर गये हैं दाने.

---

1. क्रान्ति 2. कहानी 3. धोखा 4. भेद का खुल जाना 5. धोखेबाज़ियाँ 6. जोश 7. इरादे 8. उम्मीद 9. मृत्यु 10. बादल 11. बिजली 12. क्रान्ति लाने वाले 13. प्रेम 14. अत्याचार 15. बिजली 16. घोंसले, घर 17. फूल 18. समस्या 19. जीवन 20. भेद 21. बुद्धिमान 22. सभा 23. दुख.

غزل

شری سعادت 'نظیر' ایم. اے۔

کئی انقلاب 1 دیکھے' سنے کتنے ہی فسانے2 !
مجھے کیا فریب 3 دینگے ترے وعدے یا بہانے !

میرے تجربوں نے آخر کیا راز آشکارا4'
کہ ہیں جعل سازیوں 5 کے یہ تمام کارخانے۔

نہ وہ ولولے 6 ہیں باقی' نہ بلند حوصلے7 ہیں'
انہیں آنکھیں ڈھونڈھتی ہیں' جو گزر گئے زمانے۔

میری کم نصیبیوں نے میری آس 8 کو نہ توڑا'
میری زندگی نے ٹھکرا دیئے مرگ 9 کے بہانے۔

کہیں ابر 10 بن کے برسے' کہیں مثل رعد 11 گرجے'
بنے انقلاب آور 12 میرے عشق 13 کے ترانے۔

میں مٹا کے چین لونگا ترے نادری چلن کو'
میں لٹا ہی کے رہونگا ترے جور 14 کے خزانے۔

مجھے' برق ! 15 دیکھنا ہے ! تو جلائیگی کہاں تک ؟
میں نئے نئے بناتا ہی رہوں گا آشیانے 16۔

میری کوششیں یہی ہیں کہ بہار ایسی آئے'
کہ زباں سے بلبلوں کی سنیں گل 17 نئے ترانے۔

مرا عشق اک معمہ'18 میری زیست19 ایک عقدہ20'
جو ہے ذی شعور 21 سمجھے' جو ہے درد مند' جانے۔

تیری بزم22 میں پلٹکر میں اب آؤں یا نہ آؤں'
نہ بھلا سکے گی دنیا میرے درد کے فسانے۔

یہ 'نظیر' ! رنج 23 کیسا ؟ وہی پھر بنالے مالا !
کہ فقط سمیٹنا ہیں' جو بکھر گئے ہیں دانے۔

---

1. کرانتی؛ 2. کہانی؛ 3. دھوکا؛ 4. بھید کا کھل جانا؛ 5 دھوکے بازیاں؛ 6. جوش؛ 7. ارادے؛ 8. امید؛ 9. مرتیو؛ 10. بادل؛ 11. بجلی؛ 12. کرانتی لانے والے؛ 13. پریم؛ 14. اتیاچار؛ 15. بجلی؛ 16. گھونسلے' گھر 17. پھول؛ 18. سمسیا؛ 19. جیون؛ 20. بھید؛ 21. بدھیمان؛ 22. سبھا؛ 23. دکھ۔

दिसम्बर 1957 دسمبر

जिल्द 24 جلد नम्बर 6 نمبر

दिसम्बर 1957 دسمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج، الہ آباد

نیا ھند

इस नम्बर के खास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام

—विश्वम्भरनाथ पांडे

—وشومبھر ناتھ پانڈے

हिन्दुस्तान और इसलाम

ھندستان اور اِسلام

—डाक्टर सैयद महमूद

—ڈاکٹر سید محمود

अंग्रेज़ी से अनुवादक

—انگریزی سے انوادک

—वि॰ ना॰ पांडे॰

وی نا پانڈے

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन
और मेरा राजनैतिक जीवन

سن 1905 کا سودیشی آندولن
اور میرا راجنیتک جیون

—पंडित सुन्दरलाल

—پنڈت سندر لال

अनेकता में एकता यानी
कसरत में वहदत

انیکتا میں ایکتا یعنی
کثرت میں وحدت

—डाक्टर भगवानदास

—ڈاکٹر بھگوان داس

हमारी राय

ھماری رائے

देश की हालत एक पर खत

دیش کی حالت پر ایک خط

—पंडित सुन्दर लाल.

—پنڈت سندر لال۔

[हिन्दुस्]तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

[ہند]ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

कानों से सुना है कि उनके सामने असली प्रश्न भाषा का नहीं. असली प्रश्न पं० जवाहर लाल नेहरू और उनकी सरकार को गिराने का है. देश की इस समय की स्थिति में यह जानकर कि इस तरह के नासमझ और ख़तरनाक लोग भी अभी तक देश में मौजूद हैं हमारा दिल काँप उठता है. कुछ सिख भाइयों, सिख अफ़सरों, वगैरा के पक्षपात पूर्ण व्यवहार और कुचरित्र तक की शिकायतें सुनने में आई हैं. यदि ऐसा है तो जिन्हें ऐसी शिकायतें हैं उनका फ़र्ज़ है कि उन्हें प्रेम के साथ मास्टर तारासिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नोटिस में लावें. और मास्टर तारासिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का धर्म है कि इस तरह की शिकायतों की पूरी जाँच करके पंजाब के अन्दर सिखों के चरित्र को ऊँचा, निष्पक्ष और सबके लिये प्रेम भरा बनाने की पूरी कोशिश करें. कम से कम इस तरह के रोग का यह इलाज नहीं है कि देश भर में या प्रान्त भर में वैमनस्य की आग भड़कादी जावे.

भाषाएँ और लिपियाँ सदा बदलती रही हैं, और बदलती रहेंगी. हिन्दी भाषा के प्रेमियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे देश की सब दूसरी भाषाओं से प्रेम दर्शाकर और उनकी उन्नति चाह कर ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का सच्चा भला कर सकते हैं. दूसरी भाषाओं से द्वेश पैदा करके कदापि नहीं कर सकते. पंजाब की जनता और पंजाब के सब देश सेवकों से हमारी प्रार्थना है कि वे जिस तरह भी और जितनी जल्दी हो सके इस झगड़े को ख़तम करें और सिखों, हिन्दुओं और सब पंजाब निवासियों में प्रेम और मेल मिलाप को बढ़ाने, मज़बूत करने और बनाए रखने का हर तरह प्रयत्न करें. इसी में उनका भला है, इसी में देश का भला है. इसके विपरीत रास्ता बरबादी का रास्ता है.

12-10-57 —सुन्दरलाल.

[illegible] ہندی بھاشا کا [illegible] اصلی پرشن [illegible] اور اُن کی سرکار کو گرانے کا ہے۔ دیش کی اس سمے کی استھتی میں یہ جان کر کہ اس طرح کے ناسمجھ اور خطرناک لوگ بھی ابھی تک دیش میں موجود ہیں ہمارا دل کانپ اٹھتا ہے۔ کچھ سکھ بھائیوں سکھ افسروں وغیرہ کے پکشپات پورن ویوہار اور کو چرتر تک کی شکایتیں سننے میں آئی ہیں۔ یدی ایسا ہے تو جنہیں ایسی شکایتیں ہیں اُن کا فرض ہے کہ انہیں پریم کے ساتھ ماسٹر تارا سنگھ اور شرومنی گوردوارا پربندھک کمیٹی کے نوٹس میں لائیں اور ماسٹر تارا سنگھ اور شرومنی گوردوارا پربندھک کمیٹی کا دھرم ہے کہ اس طرح کی شکایتوں کی پوری جانچ کر کے پنجاب کے اندر سکھوں کے چرتر کو اونچا، نشپکش اور سب کے لئے پریم بھرا بنانے کی پوری کوشش کریں۔ کم سے کم اس طرح کے روگ کا یہ علاج نہیں ہے کہ دیش بھر میں یا پرانت بھر میں ویمنسیہ کی آگ بھڑکا دی جاوے۔

بھاشائیں اور لپیاں سدا بدلتی رہی ہیں، اور بدلتی رہیں گی۔ ہندی بھاشا کے پریمیوں سے ہماری ونمر پرارتھنا ہے کہ وے دیش کی سب دوسری بھاشاؤں سے پریم درشا کر اور اُن کی انتی چاہ کر ہی راشٹر بھاشا ہندی کا سچا بھلا کر سکتے ہیں۔ دوسری بھاشاؤں سے دویش پیدا کر کے کداپی نہیں کر سکتے۔ پنجاب کی جنتا اور پنجاب کے سب دیش سیوکوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وے جس طرح بھی اور جتنی جلدی ہو سکے اس جھگڑے کو ختم کریں اور سکھوں، ہندوؤں اور سب پنجاب نواسیوں میں پریم اور میل ملاپ کو بڑھانے، مضبوط کرنے اور بنائے رکھنے کا ہر طرح پریتن کریں۔ اسی میں اُن کا بھلا ہے۔ اس کے وپریت راستہ بربادی کا راستہ ہے۔

—سندر لال۔ 12.10.57

और [illegible] हल नहीं कर रहे हैं.

[illegible] सुनते हैं तो हमें और [illegible] हिन्दी कहां खतरे में [illegible] हिन्दी पर हमला कर रहा है? कौन किसको हिन्दी पढ़ने [illegible] रोक रहा है? हाल के पंजाब के दौरे में हम सैकड़ों [illegible] से बात कर चुके हैं, कोई भी. सिख हिन्दी पढ़ने से इन्कार नहीं कर रहा है. इन्कार केवल कुछ हिन्दुओं को पंजाबी या गुरुमुखी पढ़ने से है. [illegible] इस आन्दोलन का नाम हिन्दी रक्षा आन्दोलन की जगह [illegible] आन्दोलन शायद ज्यादा ठीक होता. इसका [illegible] साफ है. दो ही उपाय हो सकते हैं. [illegible] इलाकों की बोल चाल की ज़बान पंजाबी है उनका [illegible] पंजाबी सूबा और जिन में बोल चाल की ज़बान हिन्दी है उनका एक हिन्दी सूबा, दो अलग अलग सूबे [illegible] के साथ बना दिये जावें और या अगर सारे पंजाब का एक 'सूबा' या एक 'राज' रखना है तो जरूरी है कि पंजाबी इलाके में अधिकतर काम पंजाबी में हो और हिन्दी इलाके में हिन्दी में, और सिख और हिन्दू और और सब लोग, पंजाबी बोलने वाले और हिन्दी बोलने वाले' सब प्रेम के साथ दोनों भाषाएँ और दोनों लिपियां अच्छी तरह सीखें जिस से सारे पंजाब के सब कामो में सबको आसानी हो. जरूरत इस बात की है कि दिलों में बजाय नफरतों, डरों और दुश्मनियों के प्रेम, विश्वास और भाई चारे के भाव हों.

कहीं कहीं यह भी सुनने में आया है कि हिन्दी के प्रेमी चाहते हैं कि पंजाबी पढ़ना उनके लिये लाजमी न हो. आन की बात को छोड़कर हम इसे भी बिल्कुल नहीं समझ सकते. स्कूलों में कौन कौन विषय लाजमी हों और कौन कौन अख्तियारी यह बात बहुत छोटी और शिक्षा विभाग के तय करने की है. हमें भूगोल के लाजमी होने में कोई एतराज नहीं, गणित के लाजमी होने में कोई एतराज नहीं, शायद अंगरेजी के लाजमी होने में भी कोई एतराज नहीं. हमें एतराज है केवल पंजाबी के लाजमी होने में और वह भी पंजाब में रहकर ! आखिर पंजाबी बेचारी से इतनी नाराजगी क्यों? पंजाबी न जानने से हिन्दी वालों को प्रान्त भर की नौकरियों, काम काज और व्यापार में जो नुकसान रहेगा वह जाहिर ही है.

हमने अपने पंजाब के दौरे में और भी कई तरह की बातें सुनी हैं. कहा जाता है कि यह सारा झगड़ा कुछ लोगों की मिनिस्टरियों और मेम्बरियों का झगड़ा है. अगर यह सच है तो जनता और उसके सच्चे सेवकों को इस तरह झगड़े [illegible] से जितनी जल्दी हो निकल आना चाहिये. हमने [illegible] आदमियों को यह कहते भी अपने

[illegible] سے ہی کئی بڑے خطروں کی چرچا بھی نہیں کر رہیں [illegible]

جب ہم "ہندی کی شکشا" کی بات سنتے ہیں تو ہمیں اور بھی اچرج ہوتا ہے ۔ پنجاب کے اندر ہندی کہاں خطرے میں ہے؟ کون ہندی پر حملہ کر رہا ہے؟ کون کس کو ہندی پڑھنے پڑھانے سے روک رہا ہے؟ حال کے پنجاب کے دورے میں ہم سیکڑوں سکھ بھائیوں سے باتیں کر چکے ہیں، کوئی بھی سکھ ہندی پڑھنے سے انکار نہیں کر رہا ہے ۔ انکار کیول کچھ ہندؤں کو پنجابی یا گرمکھی پڑھنے سے ہے ۔ تب پھر اس آندولن کا نام ہندی رکشا آندولن کی جگہ پنجابی ودروھی آندولن شاید زیادہ ٹھیک ہوتا ۔ علاج بالکل صاف ہے ۔ دو ہی اپائے ہو سکتے ہیں ۔ یا تو یہ کہ جن علاقوں کی بول چال کی زبان ہندی ہے ان کا ایک ہندی صوبہ، دو الگ الگ صوبے ایمانداری کے ساتھ بنا دئے جاویں، اور یا اگر سارے پنجاب کا ایک 'صوبہ' یا ایک 'راج' رکھنا ہے تو ضروری ہے کہ پنجابی علاقے میں ادھکتر کام پنجابی میں ہو اور ہندی علاقے میں ہندی میں، اور سکھ اور ہندو اور سب لوگ، پنجابی بولنے والے اور ہندی بولنے والے، سب پریم سے ساتھ دونوں بھاشائیں اور دونوں لپیاں اچھی طرح سیکھیں جس سے سارے پنجاب کے سب کاموں میں سب کو آسانی ہو ۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ دلوں میں بجائے نفرتوں، ڈروں اور دشمنیوں کے پریم، وشواس اور بھائی چارے کے بھاؤ ہوں ۔

کہیں کہیں یہ بھی سننے میں آیا ہے کہ ہندی پریمی چاہتے ہیں کہ پنجابی پڑھنا ان کے لئے لازمی نہیں ۔ ان کی بات کو چھوڑ کر ہم اسے بھی بالکل نہیں سمجھ سکتے ۔ اسکولوں میں کون کون وشے لازمی ہوں اور کون کون اختیاری یہ بات بہت چھوٹی اور شکشا وبھاگ کے طے کرنے کی ہے ۔ ہمیں بھوگول کے لازمی ہونے میں کوئی اعتراض نہیں، شاید انگریزی کے لازمی ہونے میں بھی کوئی اعتراض نہیں ۔ ہمیں اعتراض ہے کیول پنجابی کے لازمی ہونے میں اور وہ بھی پنجاب میں رہ کر ۔ آخر پنجابی بیچاری سے اتنی ناراضگی کیوں؟ پنجابی نہ جاننے سے ہندی والوں کو پرانت بھر کی نوکریاں کام کاج اور بیوپار میں جو نقصان رہے گا وہ ظاہر ہی ہے ۔

ہم نے اپنے پنجاب کے دورے میں اور بھی کئی طرح کی باتیں سنی ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ یہ سارا جھگڑا کچھ لوگوں کی منسٹریوں اور ممبریوں کا جھگڑا ہے ۔ اگر یہ سچ ہے تو جنتا اور اس کے سچے سیوکوں کو اس طرح کے جنجال سے جتنی جلدی ہو سکے نکل آنا چاہئے ۔ ہم نے کچھ پڑھے لکھے آدمیوں کو یہ کہتے بھی اپنے

की मदद देकर सीरिया पर हमला करने के लिए उकसाया गया, रूस ने इजरेल को आगाह कर दिया, उधर से भी मामला रुक गया फिर टरकी को मदद देकर सीरिया पर हमला करने के लिये तैयार किया गया, टरकी में रूस विरोधी अमरीकी प्रोपैगैन्डा इस समय पूरे ज़ोर पर है, रूस ने फिर टरकी को भी चेतावनी दी. मामला इस समय यहीं पर अटका हुआ है. दुनिया भर के लिये जिस तरह के ख़तरे का मुक़ाम आज सीरिया बना हुआ है उसी तरह के ख़तरे के मुक़ाम एक दरजन और चारों तरफ़, ख़ासकर भारत के चारों तरफ़, फैले हुए हैं. इन्हीं में से एक मुक़ाम हमारी ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद पर भी है. इन हालतों में आजकल की कोई लड़ाई सारी दुनिया को अपने घेरे में लपेटे बिना नहीं रह सकती. किसी की भी भूल, ग़लती या बेपरवाही से कल कहां क्या होजावे कोई नहीं कह सकता. हमें अपने देश की हालत और अपने सम्बन्धों का भी पता है. ऐसी परिस्थिति में पंजाब जैसी सरहद के ऊपर देशवासियों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के विरुद्ध भड़का देने से बढ़कर देश की नई आज़ादी को ख़तरे में डाल देने का दूसरा काम नहीं हो सकता, और वह इसलिये कि देश की दो प्यारी भाषाओं, पंजाबी और हिन्दी में से सरकारी काग़ज़ एक में लिखे जावें या दूसरी में या दोनों में, या इसलिये कि बारह-खड़ी के अक्षर एक तरह लिखे जावें या दूसरी तरह.

हम अपने हिन्दी रक्षा समिति के भाइयों से यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि अपने इस ग़लत और कुसमय के आन्दोलन से उन्होंने सबसे अधिक नुक़सान राष्ट्र भाषा हिन्दी को पहुँचाया है. हमने पचास बरस हिन्दी की सेवा की है. हमें यह देखकर दुख होता है कि बंगाल के और ख़ासकर दक्षिण के वह भाई जो पहले भी हमारे इसी अंधे-पन और हमारी कट्टरता के कारण हिन्दी से कुछ बिदके बिदके रहते थे और अंगरेज़ी को उसकी आजकल की जगह से हटाना नहीं चाहते थे उनकी आशंकाएं पंजाब के इस हिन्दी रक्षा आन्दोलन से बेहद बढ़ गई हैं. पूरब और दक्खिन के हिन्दी विरोधी आन्दोलन को बेहद बल मिल गया है. हिन्दी रक्षा समिति के नेताओं के बयान दक्षिण में ख़ूब छापे जा रहे हैं. उनका कहना है कि अगर पंजाब के पंजाबी बोलने वाले हिन्दी-प्रेमी पंजाबी को नहीं सह सकते तो इस तरह हिन्दी प्रेमियों से तमिल और तेलगू के भले की क्या आशा हो सकती है! उनके कहने में बहुत कुछ सच्चाई भी दिखाई देती है. इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि यदि यह हिन्दी रक्षा आन्दोलन उसी तरह कुछ दिनों और चलता रहा तो भारत की पार्लिमेन्ट के अन्दर राष्ट्र भाषा हिन्दी को अंगरेज़ी का स्थान दिया जा सकना पीढ़ियों दूर चला जावेगा. देश के कई कई टुकड़ों

کی مدد دے کر سیریا پر حملہ کرنے کے لئے اکسایا گیا، روس نے اسرائیل کو آگاہ کر دیا، اُدھر سے بھی معاملہ رک گیا، پھر ترکی کو مدد دے کر سیریا پر حملہ کرنے کے لئے تیار کیا گیا، ترکی میں ودھروھی امریکی پروپیگنڈا اِس سمے زور پر ہے، روس نے پھر ترکی کو بھی چتاونی دی۔ معاملہ اِس سمے یہیں پر اٹکا ہوا ہے۔ دنیا بھر کے لئے جس طرح کے خطرے کا مقام آج سیریا بنا ہوا ہے اُسی طرح کے خطرے کے مقام ایک درجن اور چاروں طرف، خاص کر بھارت کے چاروں طرف، پھیلے ہوئے ہیں۔ انہیں میں سے ایک مقام ہمارے ٹھیک اتر پچھمی سرحد پر بھی ہے۔ اِن حالتوں میں آجکل کی کوئی لڑائی ساری دنیا کو اپنے گھیرے میں لپیٹے بنا نہیں رہ سکتی۔ کسی کی بھی بھول، غلطی یا بےپرواہی سے کل کہاں کیا ہو جاوے کوئی نہیں کہہ سکتا۔ ہمیں اپنے دیش کی حالت اور سمبندھوں کا بھی پتہ ہے۔ ایسی پرستھتی میں پنجاب جیسی سرحد کے اوپر دیش واسیوں کے ایک گروہ کو دوسرے گروہ کے ورُدھ بھڑکا دینے سے بڑھ کر دیش کی نئی آزادی کو خطرے میں ڈال دینے کا دوسرا کام نہیں ہو سکتا اور وہ اِس لئے کہ دیش کی دو پیاری بھاشاؤں، پنجابی اور ہندی، میں سے سرکاری کاغذ ایک میں لکھے جاویں یا دوسری میں یا دونوں میں، یا اِس لئے کہ بارہ‌کھڑی کے اکشھر ایک طرح لکھے جاویں یا دوسری طرح۔

ہم اپنے ہندی رکشا سمتی کے بھائیوں سے یہ کہے بنا بھی نہیں رہ سکتے کہ اپنے اِس غلط اور سمے کے آندولن سے انہوں نے سب سے ادھک نقصان راشٹر بھاشا ہندی کو پہنچایا ہے۔ ہم نے پچاس برس ہندی کی سیوا کی ہے۔ ہمیں یہ دیکھ کر دکھ ہوتا ہے کہ بنگال کے اور خاص کر دکھن کے وہ بھائی جو پہلے بھی ہمارے اِس اندھے پن اور ہماری کٹرتا کے کارن ہندی سے کچھ بدکے بدکے رہتے تھے اور انگریزی کو اُس کی آجکل کی جگہ سے ہٹانا نہیں چاہتے تھے اُن کی شنکائیں پنجاب کے اِس ہندی رکشا آندولن سے بےحد بڑھ گئی ہیں۔ پورب اور دکھن کے ہندی ورودھی آندولن کو بےحد بل مل گیا ہے۔ ہندی رکشا سمیتی کے نیتاؤں کے بیان بھی خوب چھاپے جا رہے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ اگر پنجاب کے پنجابی بولنے والے ہندی پریمی پنجابی کو نہیں سہہ سکتے تو اِس طرح کے ہندی پریمیوں سے تمل اور تیلگو کے بھلے کی کیا آشا ہو سکتی ہے! اِن کے کہنے میں بہت کچھ سچائی بھی دکھائی دیتی ہے۔ اِس میں ذرا بھی سندیہہ نہیں کہ یدی یہ ہندی رکشا آندولن اسی طرح کچھ دنوں اور چلتا رہا تو بھارت کی پارلیمنٹ کے اندر راشٹر بھاشا ہندی کو انگریزی کا استھان دیا جاسکنا پیڑھیوں دور چلا جاوے گا۔ دیش کے کئی کئی ٹکڑوں

और क़ीमती उपदेश दिये. साथ ही पंजाबी में गंदे-से-गंदे गाने भी सैकड़ों बरस से लाहौर और अमृतसर की गलियों में गाए जाते रहे हैं. और आज तक गाए जाते हैं. सच यह है कि दुनिया की कोई भाषा न पाक है और न नापाक. न संस्कृत अरबी से जियादह पाक और न अरबी संस्कृत से जियादह पाक, और न इन दोनों में से कोई चीनी, जापानी, रूसी, लातीनी फ्रांसीसी या दुनिया की किसी और भाषा से जियादह पाक है. या यूँ कहिये कि दुनिया की सब भाषाएँ एक बराबर पाक और एक बराबर नापाक हैं. न कोई भाषा देवताओं की भाषा है और न कोई बोली फ़रिश्तों की बोली है. भाषाएँ और बोलियाँ सब आदमियों की बोलियाँ हैं. कम या अधिक सब में अच्छी चीजें भी मिलेंगी और बुरी चीजें भी. भाषा केवल एक साधन है विचारों के आदान प्रदान का. भाषा कोई देवी या देवता नहीं. जो भाषा जिस समय जहाँ जिन हालात में हमें सब से अच्छा काम दे वही उस समय के लिये सब से अधिक उचित है. इस तरह के अंधविश्वास, या मूढ़ग्राह किसी भी देश या क़ौम को मिटा सकते हैं, उनमें फूट डाल सकते हैं, उन्हें बरबाद कर सकते हैं, पर उनकी उन्नति या विकास में सहायक नहीं हो सकते. यह अलग बात है कि किसी को किसी भाषा में अपने धर्म ग्रंथ होने के कारण या उसके अपनी मातृ भाषा होने के कारण उससे विशेष प्रेम या दिलचस्पी हो. पर यह दिलचस्पी किसी दूसरी भाषा से द्वेष का कारण नहीं होनी चाहिये. हमें इस तरह की सब बातों में यह अपने दिलपर जमा लेना चाहिये कि सब की उन्नति में ही हर एक की उन्नति और सब के भले में ही हर एक का भला है.

दुनिया की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति से जो आदमी कुछ भी परिचित है वह देख सकता है कि दुनिया इस वक्त एक बहुत बड़े संकट में से निकल रही है. जगह जगह वह खतरनाक मसाले जमा हो रहे हैं और भयंकर स्थितियाँ पैदा हो रही हैं जो किसी समय भी कहीं भी भड़क कर सारी दुनिया की आज़ादी, ख़ुशहाली और उसके वजूद तक को ख़तरे में डाल सकती हैं. केवल एक मिसाल काफ़ी होगी. हाल में सीरिया यानी शाम की सरकार को हथियारों की जरूरत पड़ी, उन्होंने अमरीका से हथियार ख़रीदना चाहा, अमरीका ने बेतुकी शरतें पेश करदीं. सीरिया ने रूस से बात की, रूस ने बिना शर्त सीरिया के हाथ हथियार बेचना मंजूर कर लिया, हथियार ख़रीद लिये गए, अमरीका ने सीरिया को धमकी दी, अमरीकी जहाज़ी बेड़ा सीरिया के किनरे पर आ धमका, सीरिया घबराया. कि इतने में रूसी जहाज़ी बेड़ा भी वहीं आ पहुँचा, अमरीकी मंसूबे कुछ देर के लिये ठंडे होगए. अब इज़रेल को हथियारों

اور قیمتی اُپدیش دئے . ساتھ ہی پنجابی میں گندے سے گندے گانے بھی سیکڑوں برس سے لاہور اور امرتسر کی گلیوں میں گائے جا رہے ہیں اور آج تک گائے جاتے ہیں . سچ یہ ہے کہ دنیا کی کوئی بھاشا پاک ہے نہ ناپاک . نہ سنسکرت عربی سے زیادہ پاک اور نہ عربی سنسکرت سے زیادہ پاک' اور نہ اِن دونوں میں سے کوئی چینی' جاپانی' روسی' لاطینی' فرانسیسی یا دنیا کی کسی اور بھاشا سے پاک ہے . یا یوں کہئے کہ دنیا کی سب بھاشائیں ایک برابر پاک اور ایک برابر ناپاک ہیں . نہ کوئی بھاشا دیوتاؤں کی بھاشا ہے اور نہ کوئی بولی فرشتوں کی بولی ہے . بھاشائیں اور بولیاں سب آدمیوں کی بولیاں ہیں . کم یا ادھک سب میں اچھی چیزیں بھی ملیں گی اور بری چیزیں بھی . بھاشا کیول ایک سادھن ہے وچاروں کے آدان پردان کا . بھاشا کوئی دیوی یا دیوتا نہیں . جو بھاشا جس سمے جہاں جس حالت میں ہمیں سب سے اچھا کام دے وہی اُس سمے کے لئے سب سے ادھک اُچت ہے . اِس طرح کے اندھ وشواس' یا مڑ گراہ کسی بھی دیش یا قوم کو مٹا سکتے ہیں' اُن میں پھوٹ ڈال سکتے ہیں' اُنہیں برباد کر سکتے ہیں' پر اُن کی اُنتی یا وکاس میں سہایک نہیں ہو سکتے . یہ الگ بات ہے کہ کسی کو کسی بھاشا میں اپنے دھرم گرنتھ ہونے کے کارن یا اُس کے اپنی ماتر بھاشا ہونے کے کارن اُس سے وشیش پریم یا دلچسپی ہو' پر یہ دلچسپی کسی دوسری بھاشا سے دویش کا کارن نہیں ہونی چاہئے . اِس طرح کی سب باتوں میں یہ اپنے دل پر جما لینا چاہئے کہ سب کی اُنتی اور سب کے بھلے میں ہی ہر ایک کا بھلا ہے .

دنیا کی انتر راشٹری اِستھتی سے جو آدمی کچھ بھی پریچت ہے وہ دیکھ سکتا ہے کہ دنیا اِس وقت ایک بہت بڑے سنکٹ میں سے نکل رہی ہے . جگہہ جگہہ وہ خطرناک مسالے جما ہو رہے ہیں . اور بھینکر استھتیاں پیدا ہو رہی ہیں جو کسی سمے بھی کہیں بھی بھڑک کر ساری دنیا کی آزادی' خوشحالی اور اُس کے وجود تک کو خطرے میں ڈال سکتی ہے . کیول ایک مثال کافی ہوگی . حال میں سیریا یعنی شام کی سرکار کو ہتھیاروں کی ضرورت پڑی' اُنہوں نے امریکہ سے ہتھیار خریدنا چاہا' امریکہ نے بےتکی شرطیں پیش کر دیں . سیریا نے روس سے بات کی' روس نے بنا شرط سیریا کے ہاتھ ہتھیار بیچنا منظور کر لیا' ہتھیار خرید لئے گئے' امریکہ نے سیریا کو دھمکی دی' امریکی جہازی بیڑا سیریا کے کنارے پر آدھمکا' سیریا گھبرایا' اتنے میں روسی جہازی بیڑا بھی وہاں آ پہنچا' امریکی منصوبے کچھ دیر کے لئے ٹھنڈے ہوگئے . اب اسرائیل کو ہتھیاروں

बार दुहराना पड़ता था और सुनने वालों के आनन्द प्रदर्शन से हाल बार बार गूँज उठता था, इसी तरह का तजरबा हमें और भी अनेक बार हुआ है और हमें विश्वास है कि पंजाब के अन्दर और भी हजार और लाखों को हुआ होगा. पंजाबी एक जीवित भाषा है और बड़ी सुन्दर, प्यारी और धनाढ्य भाषा है.

पंजाब में आजकल एक "हिन्दी रक्षा समिति" है. सुना है उसकी ओर से कहा जाता है और प्रचार किया जाता है कि हिन्दुओं की भाषा हिन्दी है. यह कहना भी बहुत ही ग़लत और खतरनाक है. अगर हिन्दुओं की भाषा हिन्दी है तो यह तय करना पड़ेगा कि श्री राजगोपालाचारी हिन्दू कहे जा सकते हैं या नहीं. और स्वयं हिन्दू सभा के पिछले सद्र श्री एन० सी० चैटरजी हिन्दू हैं या नहीं. कोई बड़े से बड़ा हिन्दुत्व-प्रेमी मदरासी या बंगाली या गुजराती या महाराष्ट्रीय हिन्दी को अपनी मातृ भाषा मानने को तैयार नहीं होगा. वह हिन्दी को भारत की राजभाषा या राष्ट्र भाषा मानने को तैयार हो सकता है पर अपनी मातृ भाषा पूरे गर्व के साथ उसी भाषा को कहेगा जो वह अपनी मां बहनों के साथ घर में बोलता है. भाषाएँ धर्मों की नहीं हुआ करतीं. भाषाएं इलाक़ों और देशों की होती हैं.

इस तरह की ग़लत फ़हमियों की जड़ में एक खास विचार यह काम करता हुआ मालूम होता है कि कोई भाषा पाक है और कोई नापाक. यह विचार भी बहुत ही ग़लत विचार है. हमारे एक मित्र जिन्हें उर्दू से कुछ नाराज़गी है और जो संस्कृत के बड़े भक्त हैं एक बार हमसे कहने लगे कि उर्दू साहित्य और खास कर उरदू शायरी में अशलीलता बहुत होती है. पर जब हमने इस विषय में संस्कृत साहित्य का उन्हें हाल बताया तो वह कुछ सोचने लगे. आज से चव्वन बरस पहले हम बी० ए० में संस्कृत पढ़ते थे. महाकवि कालिदास रचित कुमार-सम्भव पढ़ाते पढ़ाते जगह जगह वह प्रसंग आ जाते थे. जहाँ हमारे महाराष्ट्र प्रोफ़ेसर श्री रामचन्द्र हरि हरलिकर कुछ झेंपते हुए और कुछ मुसकराते हुए विद्यार्थियों से कह देते थे:—'इसे आप अपने मन ही मन में पढ़ लीजिये.' शायद कोई पिता अपनी पुत्री के सामने उन श्लोकों को पढ़कर उनका अर्थ नहीं कर सकता. हम नाम लेना नहीं चाहते, पर इससे भी कहीं अधिक अशलील साहित्य भी संस्कृत में भरा पड़ा है. इसी के साथ-साथ संस्कृत में वह साहित्य भी है जो दुनिया के ऊँचे-से-ऊँचे साहित्य में स्थान पा सकता है और पाता है. अरबी क़ुरान की भाषा है साथ ही अरबी के अंदर मुहम्मद साहब से पहले की और उनके बाद की अशलील से अशलील कविताएँ भी मिलेंगी. पंजाबी वह भाषा है जिसमें गुरू नानक ने अपने प्रेम भरे

بار دوہرانا پڑتا تھا اور سننے والوں کے آنند پردرشن سے ہال بار بار گونج اُٹھتا تھا ۔ اسی طرح کا تجربہ ہمیں اور بھی انیک بار ہوا ہے اور ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کے اور بھی ہزاروں اور لاکھوں کو ہوا ہو گا ۔ پنجابی ایک جیوت بھاشا ہے اور بڑی سندر، پیاری اور دھنادھیہ بھاشا ہے ۔

پنجاب میں آجکل ایک "ہندی رکشا سمیتی" ہے ۔ سنا ہے اُس کی اور سے کہا جاتا ہے اور پرچار کیا جاتا ہے کہ ہندوؤں کی بھاشا ہندی ہے ۔ یہ کہنا بھی بہت غلط اور خطرناک ہے ۔ اگر ہندوؤں کی بھاشا ہے تو یہ طے کرنا پڑے گا کہ شری راج گوپالا آچاریہ ہندو کہے جا سکتے ہیں یا نہیں' اور سویم ہندو سبھا کے پچھلے صدر شری این ۔ سی ۔ چٹر جی ہندو ہیں یا نہیں ۔ کوئی بڑے سے بڑا ہندتو پریمی مدراسی یا بنگالی یا گجراتی یا مہاراشٹری ہندی کو اپنی ماترا بھاشا ماننے کو تیار نہیں ہوگا ۔ وہ ہندی کو بھارت کی راج بھاشا یا راشٹر بھاشا ماننے کو تیار ہو سکتا ہے پر اپنی ماتر بھاشا پورے گرو کے ساتھ اُسی بھاشا کو کہے گا جو وہ اپنی ماں بہنوں کے ساتھ گھر میں بولتا ہے ۔ بھاشائیں دھرموں کی نہیں ہوا کرتیں ۔ بھاشائیں علاقوں اور دیشوں کی ہوتی ہیں ۔

اس طرح کی غلط فہمیوں کی جڑ میں ایک خاص وچار یہ کام کرتا ہوا معلوم ہوتا ہے کہ کوئی بھاشا پاک ہے اور کوئی ناپاک ۔ یہ وچار بھی بہت غلط وچار ہے ۔ ہمارے ایک متر جنہیں اردو سے کچھ ناراضگی ہے اور جو سنسکرت کے بڑے بھگت ہیں ایک بار ہم سے کہنے لگے کہ اردو ساہت اور خاص کر اردو شاعری میں اشلیلتا بہت ہوتی ہے ۔ پر جب ہم نے اس وشے میں سنسکرت ساہتیہ کا انہیں حال بتایا تو وہ کچھ سوچنے لگے ۔ آج سے چون برس پہلے ہم بی ۔ اے میں سنسکرت پڑھتے تھے ۔ مہاکوی کالیداس رچت کمار سمبھو پڑھاتے پڑھاتے جگہہ جگہہ وہ پرسنگ آ جاتے تھے جہاں ہمارے مہاراشٹر پروفیسر شری رام چندر ہری ہرلیکر کچھ جھینپتے ہوئے اور کچھ مسکراتے ہوئے ودیارتھیوں سے کہہ دیتے تھے:—"اسے آپ اپنے من ہی من میں پڑھ لیجئے" شاید کوئی پتا اپنی پتری کے سامنے اُن شلوکوں کو پڑھ کر اُن کا ارتھ نہیں کر سکتا ۔ ہم نام لینا نہیں چاہتے' پر اس سے بھی کہیں ادھک اشلیل ساہتیہ سنسکرت میں بھرا پڑا ہے ۔ اسی کے ساتھ ساتھ سنسکرت میں وہ ساہتیہ بھی ہے جو دنیا کے اونچے سے اونچے ساہتیہ میں استھان پا سکتا ہے ۔ عربی قرآن کی بھاشا ہے ۔ ساتھ ہی عربی کے اندر محمد صاحب سے پہلے کی اور اُن کے بعد کی اشلیل سے اشلیل کویتائیں بھی ملیں گی ۔ پنجابی وہ بھاشا ہے جس میں گرونانک نے اپنے پریم بھرے

उसके यहाँ के सरकारी दफ़्तरों का काम हो. पर हम उस हिन्दू को नहीं समझ सकते जो अमृतसर या जालन्धर में जन्म लेकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बोलता है और अपनी मातृभाषा हिन्दी बताता है. मातृभाषा उस और केवल उस भाषा को कहते हैं जिसमें हमारी मां सब से पहले प्यार के साथ हमें तुतलाना सिखाती है. हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि जो अपनी मातृ भाषा से प्रेम नहीं रखता उसका किसी भी दूसरी भाषा के साथ प्रेम टिकाऊ या विश्वास की चीज़ नहीं हो सकता. हरियाना जैसे इलाके के लोग जो सचमुच हिन्दी बोलते हैं अगर हिन्दी में ही अपनी तालीम और अपना दफ़्तरी कारबर चाहते हैं तो उनकी बात समझ में आ सकतीहै.

यह कहना भी कि पंजाबी कोई भाषा नहीं, बल्कि केवल खड़ी बोली हिन्दी की ही एक डाइलेक्ट यानी 'उप भाषा, है, बिलकुल ग़लत और बेमानी है. डाइलेक्ट या उपभाषा की परिभाषा हम किसी भी कोष या भाषा विज्ञान की किसी भी प्रमाणिक पुस्तक में देख सकते हैं. भारत के विधान में देश की चौदह मुख्य भाषाएँ गिनाई गई हैं जिनमें से एक पंजाबी है. उप भाषाएँ भारत भर में ढाई सौ के लगभग हैं. जो आदमी पंजाब से कुछ भी परिचित हो वह जानता है कि पंजाबी की अपनी अनेक उपभाषाएँ हैं जो सब साफ़ साफ़ एक ही भाषा की अलग अलग शैलियाँ दिखाई देती हैं.

यह दलील कि पंजाबी का अपना कोई साहित्य नहीं और भी अधिक लचर दलील है, ग्रंथ साहब से बढ़कर ऊँचा और उपयोगी साहित्य और क्या हो सकता है? और अगर श्रृंगार रस की चीजें ही साहित्य मानी जाती हों तो "हीर रांझा" दुनिया के साहित्य में कम क़ीमत की चीज़ नहीं है. हमें मालूम है कि जरमनी के कई विश्व विद्यालयों में "हीर रांझा" ऊँची से ऊँची डिगरी के कोर्सों में पढ़ाया जाता था, और दुनिया के विश्वविद्यालयों में उसे आदर का स्थान मिला हुआ है.

आज़ादी से कुछ बरस पहले की बात है कि लाहौर के ब्रेडला हाल में एक बहुत बड़ा कवि सम्मेलन और मुशायरा हो रहा था. हम भी मौजूद थे. अनेक कवियों ने हिन्दी में अपनी रचनाएँ पढ़कर सुनाईं और अनेक शायरों ने उर्दू में अपनी नज़्में सुनाईं. ब्रेडला हाल श्रोताओं से ठसाठस भरा हुआ था. उर्दू और हिन्दी दोनों तरह की कविताएँ फीकी पड़ रहीं थीं, उनमें से कोई भी सुनने वालों के दिलों को चुभती हुई मालूम नहीं होती थीं. इतने में अधेड़ उमर के एक मुसलमान कवि ने, जिनका तख़ल्लुस हमें आज तक याद है 'इश्क़ इलाही' था, पंजाबी में अपनी कविता पढ़ी और सारा हाल फड़क उठा. एक एक शेर को उन्हें बार

ہو اُس کے یہاں کے سرکاری دفتروں کا کام ہو. پر ہم اُس ہندو کو نہیں سمجھ سکتے جو امرتسر یا جالندھر میں جنم لے کر اپنی ماں بہنوں کے ساتھ پنجابی بولتا ہے اور اپنی ماتر بھاشا ہندی بتاتا ہے . ماتر بھاشا اُس اور کیول اُس بھاشا کو کہتے ہیں جس میں ہماری ماں سب سے پہلے پیار کے ساتھ ہمیں تتلانا سکھاتی ہے . ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ جو اپنی ماتر بھاشا سے پریم نہیں رکھتا اُس کا کسی بھی دوسری بھاشا کے ساتھ پریم ٹکاؤ یا وشواس کی چیز نہیں ہو سکتا . ہریانا جیسے علاقے کے لوگ جو سچ مچ ہندی بولتے ہیں اگر ہندی میں ہی اپنی تعلیم اور اپنا دفتری کاربار چاہتے ہیں تو اُن کی بات سمجھ میں آسکتی ہے .

یہ کہنا بھی کہ پنجابی کوئی بھاشا نہیں' بلکہ کیول کھڑی بولی ہندی کی ہی ایک ڈائی لیکٹ یعنی 'اُپ بھاشا' ہے' بالکل غلط اور بے ایمانی ہے . ڈائی لیکٹ یا اُپ بھاشا کی کسی بھی پرماڑک پستک میں دیکھ سکتے ہیں . بھارت کے ودھان میں دیش کی چودہ مکھیہ بھاشا گنائی گئیں ہیں' جن میں سے ایک پنجابی ہے . اُپ بھاشائیں بھارت بھر میں ڈھائی سو کے لگ بھگ ہیں . جو آدمی پنجاب سے کچھ بھی پرچت ہو وہ جانتا ہے کہ پنجابی کی اپنی انیک اپ بھاشائیں ہیں جو سب صاف صاف ایک ہی بھاشا کی الگ الگ شیلیاں دکھائی دیتی ہیں .

یہ دلیل کہ پنجابی کا کوئی اپنا ساہتیہ نہیں اور بھی ادھک لچر دلیل ہے . گرنتھ صاحب سے بڑھ کر اونچا اور اُپیوگی ساہتیہ اور کیا ہو سکتا ہے ؟ اور اگر شرنگار رس کی چیزیں ہی ساہتیہ مانی جاتی ہوں تو "ہیر رانجھا" دنیا کے ساہتیہ میں کم قیمت کی چیز نہیں ہے . ہمیں معلوم ہے کہ جرمنی کے کئی وشودیالوں میں "ہیررانجھا" اونچی سے اونچی ڈگری کے کورسوں میں پڑھایا جاتا تھا' اور آج بھی دنیا کے وشودیالوں میں اُسے آدر کا استھان ملا ہوا ہے .

آزادی سے کچھ برس پہلے کی بات ہے کہ لاہور کے بریڈلا ہال میں ایک بہت بڑا کوی سمیلن اور مشاعرہ ہو رہا تھا . ہم بھی موجود تھے. انیک کویوں نے ہندی میں اپنی رچنائیں پڑھ کر سنائیں اور انیک شاعروں نے اردو میں اپنی نظمیں سنائیں . بریڈلا ہال شروتاؤں سے ٹھساٹھس بھرا ہوا تھا . اردو اور ہندی دونوں طرح کی کویتائیں پھیکی پڑ رہی تھیں . اُن میں سے کوئی بھی سننے والوں کے دلوں کو چبھتی ہوئی معلوم نہیں دیتی تھی . اِتنے میں ادھیڑ عمر کے ایک مسلمان کوی نے' جن کا تخلص ہمیں آج تک یاد ہے 'عشق الٰہی' تھا' پنجابی میں اپنی کویتائیں پڑھیں اور سارا ہال پھڑک اُٹھا . ایک ایک شعر کو اُنہیں بار

और अनिवार्य है. भलाई और बुराई भी सब में होती है. पर कोई इन्कार नहीं कर सकता कि आर्य समाज का इस देश के ऊपर बहुत बड़ा एहसान है. अनेक क्षेत्रों में उसके प्रचार और काम की देश को अब भी बड़ी जरूरत है. भाई घनश्याम सिंह गुप्त, जो आर्य सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष की हैसियत से पंजाब के इस हिन्दी आन्दोलन को चला रहे हैं, हमारे पचास बरस से ऊपर के घनिष्ट मित्रों में से हैं. उनकी नेकी और सचाई का हमारे दिल में बहुत बड़ा मान है.

हिन्दू सभा के नेता भाई परमानन्द के साथ बरसों हमारा गहरा सम्बन्ध रहा है. भाई सावरकर के साथ हमारा पत्र व्यवहार लोकमान्यतिलक की माफ़त सन् 1907 में उस समय हुआ था जब वह इंगलैन्ड में पढ़ रहे थे और वहीं बैठे बैठे देश की आजादी के सपने देख रहे थे. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक, गुरू गोलवलकर के गुरु, डक्टर हिडगेवार के साथ नागपुर में हमने बरसों गांधी जी के आन्दोलन में मिलकर काम किया है. उन दिनों के असहयोग आन्दोलन में डाक्टर हिडगेवार के शरीर का पुलिस की लाठियों से चूर चूर किया जाना हमें आज तक प्रेम और दर्द के साथ याद है.

जहाँ तक सिख धर्म का सम्बन्ध है हमने ग्रन्थ साहब को ध्यान और श्रद्धा के साथ पढ़ा है. हम अनेक बार कह चुके हैं और हमारे दिल में यह विश्वास जमा हुआ है कि यदि पंजाब ने गुरु नानक जी की शिक्षा पर अमल किया होता तो पंजाब में हिन्दू, मुसलिम, हिन्दू-सिख या किसी तरह के भी साम्प्रदायिक झगड़ों का हो सकना असम्भव होता और पंजाब आज साम्प्रदायिक मेल मिलाप की निगाह से सारे भारत का सरताज दिखाई देता.

हमारा दिल हरगिज यह मानने को तयार नहीं है कि किसी भी धर्म, दल या सम्प्रदाय का कोई भी भारतवासी जान बूझकर देश में फूट डालना चाहता है या देश के टुकड़े करना चाहता है. दोष दिलों का नहीं है. दोष केवल समझ का या देश की समस्याओं पर सोचने और उन्हें समझने के उन तरीक़ों का है जो आज़ादी से पहले के दो सौ बरस तक विदेशी शासक अपने तुच्छ स्वार्थ के लिये हमें सिखा ते पढ़ाते रहे.

इस तरह के झगड़ों में आम तौर पर कुछ न कुछ जिम्मेदारी दोनों तरफ़ की होती है. कुछ न कुछ सत्य भी दोनों तरफ़ होता ही है फिर भी मोटे तौर पर हम उस सिख को समझ सकते हैं जो अमृतसर या जालन्धर में रहकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बोलता है, पंजाबी को अपनी मातृभाषा, कहता है और चाहता है कि पंजाबी में ही उसके बच्चों की तालीम हो और पंजाबी में

مہت اتیوار ہے ۔ بھلائی اور برائی بھی سب میں ہوتی ہے پر انکار کوئی نہیں کر سکتا کہ آریہ سماج کا اِس دیش کے اوپر بہت بڑا احسان ہے ۔ انیک چھیتروں میں اِس کے پرچار اور کام کی دیش کو اب بھی بڑی ضرورت ہے ۔ بھائی گھنشیام سنگھ گپت، جو آریہ سرودیشک سبھا کے ادھیکش کی حیثیت سے پنجاب کے اِس ہندی آندولن کو چلا رہے ہیں، ہمارے پچاس برس سے اوپر کے گھنشٹم متروں میں سے ہیں ۔ اُن کی نیکی اور سچائی کا ہمارے دل میں بہت بڑا مان ہے ۔

ہندو سبھا کے نیتا بھائی پرمانند کے ساتھ برسوں ہمارا گہرا سمبندھ رہا ہے ۔ بھائی ساورکر کے ساتھ ہمارا پتر ویوہار لوکمانیہ تلک کی معرفت سن 1907 میں اُس سمے ہوا تھا جب وہ انگلینڈ میں پڑھ رہے تھے اور وہیں بیٹھے بیٹھے دیش کی آزادی کے سپنے دیکھ رہے تھے ۔ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے سنستھاپک، گرو گول ولکر کے گرو، ڈاکٹر ہڈگوار کے ساتھ ناگپور میں ہم نے برسوں گاندھی جی کے آندولن میں مل کر کام کیا ہے ۔ اُن دنوں کے اسہیوگ آندولن میں ڈاکٹر ہڈگوار کے شریر کا پولیس کی لاٹھیوں سے چور چور کیا جانا ہمیں آج تک پریم اور درد کے ساتھ یاد ہے ۔

جہاں تک سکھ دھرم کا سمبندھ ہے ہم نے گرنتھ صاحب کو دھیان اور شردھا کے ساتھ پڑھا ہے ۔ ہم انیک بار کہہ چکے ہیں اور ہمارے دل میں یہ وشواس جما ہوا ہے کہ یدی پنجاب نے گرونانک جی کی شکشا پر عمل کیا ہوتا تو پنجاب میں ہندو مسلم، ہندو سکھ یا کسی طرح کے بھی سامپردائک جھگڑوں کا ہو سکنا اسمبھو ہوتا اور پنجاب آج سامپردائک میل ملاپ کی نگاہ سے سارے بھارت کا سرتاج دکھائی دیتا ۔

ہمارا دل ہرگز یہ ماننے کو تیار نہیں ہے کہ کسی بھی دھرم، دل یا سامپردائے کا کوئی بھی بھارت واسی جان بوجھ کر دیش میں پھوٹ ڈالنا چاہتا ہے یا دیش کے ٹکڑے کرنا چاہتا ہے ۔ دوش دلوں کا نہیں ہے دوش کیول سمجھ کا یا دیش کی سمسیاؤں پر سوچنے اور انہیں سمجھنے کے اُن طریقوں کا ہے جو آزادی سے پہلے کے دو سو برس تک ودیشی شاسک اپنے تچھ سوارتھ کے لئے ہمیں سکھاتے پڑھاتے رہے ۔

اِس طرح کے جھگڑوں میں عام طور پر کچھ نہ کچھ ذمہ داری دونوں طرف کی ہوتی ہے ۔ کچھ نہ کچھ ستیہ بھی دونوں طرف ہوتا ہی ہے ۔ پھر بھی موٹے طور پر ہم اُس سکھ کو سمجھ سکتے ہیں جو امرتسر یا جالندھر میں رہ کر اپنی ماں بہنوں کے ساتھ پنجابی بولتا ہے ۔ پنجابی کو اپنی ماتر بھاشا کہتا ہے اور چاہتا ہے کہ پنجابی میں

हिन्दी और पंजाबीका झगड़ा

पंजाब में हिन्दी और पंजाबी का झगड़ा काफ़ी ज़ोरों के साथ चल रहा है. आम तौर पर वहाँ के हिन्दू हिन्दी के तरफ़दार हैं और सिख पंजाबी के. इस तरह इस झगड़े ने हिन्दू सिख वैमनस्य का रूप ले लिया है. मामला यहाँ तक बढ़ चुका है कि कहीं, कहीं शहरों में दोनों दलों के जुलूस निकलते हैं जिनमें सिखों की तरफ़ से "टोपी धोती जमना पार." और हिन्दुओं की तरफ़ से "कैंची उस्तरा है तैयार." के नारे तक बुलन्द किये जाते हैं. कहीं कहीं इससे भी अधिक शर्मनाक और दर्दनाक घटनाएँ हो चुकी हैं. जिन्हें इतिहास जितनी जल्दी जल्दी भूल जावे उतना ही अच्छा है. यदि हालत इसी तरह जारी रहा और वैमनस्य बढ़ता गया तो डर है कि देश के और अधिक टुकड़े करने पड़ जावें और आबादी के तबादले. .खून खराबा और तरह तरह के पापों के वही दृश्य फिर देखने पड़ें जो सन् 47 में देखने पड़े थे. आजकल की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति में देश इज़्ज़त की, स्वाधीनता और सुरक्षा पर इसका कितना बुरा असर पड़ सकता है यह सोचने की चीज़ है. कुछ नेक लोगों की तरफ़ से मेल और समझौते की कोशिशें भी जारी हैं.

इस सारे घरेलू झगड़े में कुछ संस्थाओं और दलों के नाम ख़ास तौर पर सामने आ रहे हैं, जैसे आर्य समाज, हिन्दू महासभा और जनसंघ, राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ, अकाली दल, कुछ असन्तुष्ट अथवा साम्प्रदायिक दृष्टि-कोण वाले कांग्रेसी इत्यादि. ख़बर है कि कुछ विदेशी साम्राज्य प्रेमी भी कुछ देशी पूँजी पतियों की मारफ़त, हमारे इस घरेलू झगड़े में दिलचस्पी ले रहे हैं.

विचारों या आदर्शों का मतभेद एक अलग चीज़ है. ग़लत विचारों या ग़लत आदर्शों पर चलने की कोशिश कर के क़ौमें मिट भी सकती हैं और मिट चुकी हैं पर हम यह नहीं मानते कि देश का कोई भी दल या कोई भी व्यक्ति जान बूझकर देश में फूट डालने और देशवासियों को एक दूसरे से लड़ाने की कोशिश करेगा. आर्य समाज के साथ हमारा साठ बरस का गहरा सम्बन्ध है. बरसों हमने लाहौर के दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालिज में शिक्षा पाई है. वहीं से हमने सन् 1905 में बी० ए० किया था. महात्मा हंसराज के चरणों में बैठकर हम पढ़े हैं. लाला लाजपत राय के साथ हमारा घनिष्ट सम्बन्ध रहा है स्वामी श्रद्धानन्द का भी हमें प्रेम प्राप्त रहा है. देश भक्ति और देश-सेवा के सबसे पहले पाठ हमने आर्य समाज ही की गोद में पढ़े हैं. व्यक्तियों की तरह संस्थाओं और सोसाइटियों की भी उमरें होती हैं, उनका भी जन्म, जवानी, बुढ़ापा और

ھندی اور پنجابی کا جھگڑا

پنجاب میں ھندی اور پنجابی کا جھگڑا کافی زوروں سے چل رہا ھے ۔ عام طور پر وھاں کے ھندو ھندی کے طرفدار ھیں اور سکھ پنجابی کے ۔ اِس طرح اِس جھگڑے نے ھندو سکھ ویمنسیہ کا روپ لے لیا ھے۔ معاملہ یہاں تک بڑھ چکا ھے کہ کہیں کہیں شہروں میں دونوں دلوں کے جلوس نکلتے ھیں جن میں سکھوں کی طرف سے "ٹوپی دھوتی جمنا پار" اور ھندوؤں کی طرف سے "قینچی اُسترا ھے تیار !" کے نارے تک بلند کئے جاتے ھیں ۔ کہیں کہیں اِس سے بھی ادھک شرمناک اور دردناک گھٹنائیں ھو چکی ھیں' جنھیں اتہاس جتنی جلد بھول جاوے اتنا ھی اچھا ھے ۔ یدی یہ حالت اِسی طرح جاری رھی اور ویمنسیہ بڑھتا گیا تو ڈر ھے کہ دیش کے اور ادھک ٹکڑے کرنے پڑ جاویں اور آبادی کے تبادلے' خون خراب اور طرح طرح کے پاپوں کے وھی درش پھر دیکھنے پڑیں جو سن '47 میں دیکھنے پڑے تھے ۔ آج کل کی انترراشٹریہ استھتی میں دیش کی عزت' سوادھینتا اور سورکشا اس کا کتنا برا اثر پڑ سکتا ھے یہ سوچنے کی چیز ھے ۔ کچھ نیک لوگوں کی طرف سے میل اور سمجھوتے کی کوشش بھی جاری ھیں ۔

اِس سارے گھریلو جھگڑے میں کچھ سنستھاؤں اور دلوں کے نام خاص طور پر سامنے آ رھے ھیں' جیسے آریہ سماج' ھندو مہاسبھا اور جن سنگھ' راشٹریہ سیوک سنگھ' اکالی دل' کچھ اسنتشٹ اتھوا سامپردائک درشٹی کون والے کانگریسی' اِتیادی ۔ خبر ھے کہ کچھ ودیشی سامراج پریمی بھی' کچھ دیشی پونجی پتیوں کے معرفت' ھمارے اِس گھریلو جھگڑے میں دلچسپی لے رھے ھیں ۔

وچاروں یا آدرشوں کا مت بھید ایک الگ چیز ھے ۔ غلط وچاروں یا غلط آدرشوں پر چلنے کی کوشش کر کے قومیں مٹ بھی سکتیں ھیں اور مٹ چکی ھیں ۔ پر ھم یہ نہیں مانتے کہ دیش کا کوئی بھی دل یا کوئی بھی ویکتی جان بوجھ کر دیش میں پھوٹ ڈالنے اور دیش واسیوں کو ایک دوسرے سے لڑانے کی کوشش کرے گا ۔ آریہ سماج کے ساتھ ھمارا ساٹھ برس کا گہرا سمبندھ ھے ۔ برسوں ھم نے لاھور کے دیانند اینگلو ویدک کالج میں شکشا پائی ھے ۔ وھیں سے ھم نے سن 1905 میں بی۔ اے۔ کیا ھے ۔ مہاتما ھنسراج کے چرنوں میں بیٹھ کر ھم پڑھے ھیں ۔ لالہ لاجپت رائے کے ساتھ ھمارا گھنشٹ سمبندھ رھا ھے ۔ سوامی شردھا نند کا بھی ھمیں پریم پراپت رھا ھے ۔ دیش بھکتی اور دیش سیوا کے سب سے پہلے پاٹھ ھم نے آریہ سماج ھی کی گود میں پڑھے ھیں ۔ ویکتیوں کی طرح سنستھاؤں اور سوسائٹیوں کی بھی عمریں ھوتی ھیں' اُن کا بھی جنم' جوانی' بڑھاپا اور

रूस सीरिया के हाथ बिना शर्त हथियार बेचने को तैयार हो गया. हथियार रूस से खरीद लिये गए. इस पर अमरीका ने तरह तरह से एतराज़ किया. सीरिया एक आज़ाद देश है. उसने जो कुछ किया उसका उसे पूरा अधिकार था. किसी बाहर की ताक़त को उसमें दख़ल देने का हक़ नहीं पहुँचता. फिर भी अमरीका का छै नम्बर फ़ौजी जहाज़ी बेड़ा सीरिया के किनारे पर आ धमका. सीरिया को ख़तरा हुआ. बेजा शर्तें सीरिया की सरकार के सामने पेश की जाने लगीं जिन्हें मानने से सीरिया ने फिर इनकार कर दिया. रूस को ख़बर लगी. सीरिया की इजाज़त से एक रूसी बेड़ा भी उसी जगह पहुँच गया. इन पंक्तियों को लिखते समय मामला शायद यहीं पर अटका हुआ है. यू. एन. ओ. में भी सीरिया के मामले पर बहस हो रही है. सीरिया इस समय दुनिया के नाज़ुक से नाज़ुक स्थानों में से है. पर सीरिया के लोग बहादुर हैं, देश-भक्त हैं और सचाई और इनसाफ़ उनकी तरफ़ है. सारे अरब देशों और अरब क़ौम की उनके साथ हमदर्दी है. अन्त में इस मामले में सीरिया का सर ऊँचा रहेगा, इसमें हमें कोई शक नहीं हो सकता.

हमारा अनुभव यह है कि दुनिया के सब देश अन्त में समझदारी से काम लेंगे और दुनिया बरबादी से बची रहेगी. यह हमारी और दुनिया की जनता की हार्दिक इच्छा भी है. किन्तु हमारे अनुमानों के विरुद्ध कब कहाँ क्या हो जावे यह शायद कोई नहीं कह सकता. अच्छी से-अच्छी आशा करते हुए भी और दिल से सब का भला चाहते हुए भी हमें हर आज़मायश के लिये तैयार रहना चाहिये.

हमें पूरा विश्वास है कि यदि रूस के बाईस करोड़ लोग, चीन की साठ करोड़ जनता, भारत की चालीस करोड़ जनसंख्या और एशिया और अफ़्रीका के और दूसरे देश, जिनकी सब आबाद पृथ्वी की कुल आबादी के आधे से कहीं अधिक होती है, एकता, प्रेम और सचाई के साथ मिलकर खड़े हों और मिलकर खड़े रहें तो साम्राज-वाद, युद्धवाद और पूँजीवाद के यह काले काले बादल छटे बग़ैर नहीं रह सकते. हमारे इस एके के सामने ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के अम्बार पानी होते हुए दिखाई देंगे. दुनिया का भविष्य हमारे इसी एके पर निर्भर है. यही आज समय की सब से बड़ी माँग है.

3-10-57 —सुन्दरलाल

روس سیریا کے ہاتھ بنا شرط ہتھیار بیچنے کے لئے تیار ہوگیا۔ ہتھیار روس سے خرید لئے گئے۔ اِس پر امریکہ نے طرح طرح سے اعتراض کیا۔ سیریا ایک آزاد دیش ہے۔ اُس نے جو کچھ کیا اُس کا اُسے پورا ادھیکار تھا۔ کسی باہر کی طاقت کو اُس میں دخل دینے کا حق نہیں پہنچتا۔ پھر بھی امریکہ کا چھ نمبر فوجی جہازی بیڑا سیریا کے کنارے پر آدھمکا۔ سیریا کو خطرہ ہوا۔ بیجا شرطیں سیریا کی سرکار کے سامنے پیش کی جانے لگیں جنہیں ماننے سے سیریا نے پھر انکار کردیا۔ روس کو خبر لگی۔ سیریا کی اجازت سے ایک روسی بیڑا بھی اُسی جگہ پہنچ گیا۔ اِن پنکتیوں کو لکھتے سمے معاملہ شاید یہیں پر اٹکا ہوا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ میں بھی سیریا کے معاملہ پر بحث ہو رہی ہے۔ سیریا اِس سمے دنیا کے نازک استھانوں میں سے ہے۔ پر سیریا کے لوگ بہادر ہیں، دیش بھکت ہیں اور سچائی اور انصاف اُن کی طرف ہے۔ سارے عرب دیشوں اور عرب قوم کی اُن کے ساتھ ہمدردی ہے۔ انت میں اِس معاملے میں سیریا کا سر اونچا رہے گا۔ اِس میں ہمیں کوئی شک نہیں ہوسکتا۔

ہمارا انوبھو یہ ہے کہ دنیا کے سب دیش انت میں سمجھداری سے کام لیں گے اور دنیا بربادی سے بچی رہے گی۔ یہ ہماری اور دنیا کی جنتا کی ہاردک اچھا بھی ہے۔ کنتو ہمارے انومانوں کے ورودھ کب کہاں کیا ہو جاوے یہ شاید کوئی نہیں کہہ سکتا۔ اچھی سے اچھی آشا کرتے ہوئے بھی اور دل سے سب کا بھلا چاہتے ہوئے بھی ہمیں ہر آزمائش کے لئے تیار رہنا چاہئے۔

ہمیں پورا وشواس ہے کہ یدی روس کے بائیس کروڑ لوگ چین کی ساٹھ کروڑ جنتا، بھارت کی چالیس کروڑ جن سنکھیا اور ایشیا اور افریکہ کے اور دوسرے دیش، جن سب کی آبادی پرتھوی کی کل آبادی کے آدھے سے کہیں ادھک ہوتی ہے، ایکتا، پریم اور سچائی کے ساتھ مل کر کھڑے ہوں اور مل کر کھڑے رہیں تو سامراج واد، یدھ واد اور پونجی واد کے یہ کالے کالے بادل چھٹے بغیر نہیں رہ سکتے۔ ہمارے اِس ایکتا کے سامنے ایٹم اور ہائیڈروجن بموں کے انبار پانی ہوتے ہوئے دکھائی دیں گے۔ دنیا کا بھوشیہ ہمارے اِس ایکے پر نربھر ہے۔ یہی آج سمے کی سب سے بڑی مانگ ہے۔

—سندر لال۔ 3. .10 57

हमारा ध्यान इस तरफ़ भी जाए बिना नहीं रह सकता कि एशिया के सब से ऊपर रूस, उसके नीचे और उससे मिला हुआ चीन, उसके नीचे और उससे मिला हुआ भारत, और इनके इधर-उधर और सब छोटे बड़े देश हैं. यह सब ख़तरनाक अम्बार अधिकतर कहा जाता है कि रूस के ख़िलाफ़ जमा किये जा रहे हैं. पर यदि कभी यह आग भड़की, या कभी यह फन्दा कसा, तो भारत इसका सहज शिकार हो सकता है. यह भी मानी हुई बात है कि इन घातक हथियारों का असर बहुत दूर-दूर तक जाता है और प्रायः कोई भी देश इनके ख़तरे से नहीं बच सकता. जो तजरबे आजकल किये जा रहे हैं उनकी बाबत भी कहा जाता है कि उनका ज़हरीला माद्दा दो घंटे के अंदर सारी धरती का चक्कर लगा जाता है.

भारत न रूसी गुट में है और न अमरीकी में. वह ईमानदारी के साथ इस गुटबन्दी से अलग, तटस्थ और ग़ैर जानिबदार है और ग़ैर जानिबदार ही रहना चाहता है. वह अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, रूस, चीन, जॉपान और दुनिया के सब देशों के साथ दोस्ती निबाहना चाहता है. पर ऊपर का चित्र यह साफ़ दरशा देता है कि रूस, चीन, भारत और एशिया के लगभग सब देश, यहाँ तक कि पूरब और उत्तर अफ़रीक़ा के देश भी एक कशती के अन्दर हैं. मालूम होता है कि ये सब तरेंगे तो साथ और डूबेंगे तो साथ.

हम यह भी नहीं भूल सकते कि स्वेज़ नहर के ऊपर से इंगलैंड और फ्रांस की फ़ौजें उस समय हटीं जब रूसी सरकार ने हमला करने वालों को यह साफ़-साफ़ आगाह कर दिया कि यदि और अधिक देर तक हमला करने वाले पीछे न हटे तो रूस मिस्र की रक्षा के लिये क़दम बढ़ाने पर मजबूर हो जायगा. बहादुर प्रेज़ीडेन्ट नासिर को एन संकट के समय सबसे बड़ा सहारा रूस ही का मिला. कशमीर के ऊपर अगर अभी तक आग भड़कने से रुकी हुई है तो इसका कम-से-कम एक कारण यह भी ज़रूर है कि रूसी नेता ख़ुरुशचेव जब कशमीर गये थे तो उन्होंने कशमीरियों से कहा था कि यदि कोई अचानक आपत्ति आ जावे तो पास की पहाड़ी पर से खड़े होकर हमें आवाज़ दे देना हम आ जाएँगे. रूस के लिये यह क़ुदरती और लाज़मी भी है. रूस के कुछ बड़े-से-बड़े कारख़ाने कशमीर की सरहद से थोड़ी ही दूर पर हैं.

हाल में अरब देश सीरिया ने जिसे 'शाम' भी कहते हैं, कुछ हथियार ख़रीदना चाहा. सीरिया की सरकार ने अमरीका से बात की. अमरीकी सरकार ने हथियार बेचने के लिये बेजा और शरारत भरी शरतें लगाईं. सीरिया की सरकार ने मानने से इंकार किया. उन्होंने रूस से बात की.

ہمارا دھیان اِس طرف بھی جائے بنا نہیں رہ سکتا کہ ایشیا کے سب سے اُوپر روس، اِس کے نیچے اور اُس سے ملا ہوا چین، اُس کے نیچے اور اُس سے ملا ہوا بھارت، اور اِن کے اِدھر اُدھر اور سب چھوٹے بڑے دیش ہیں۔ یہ سب خطرناک امبار ادھکتر کہا جاتا ہے کہ روس کے خلاف جمع کئے جا رہے ہیں۔ پر یدی کبھی آگ بھڑکی، یا کبھی یہ پھندا کسا، تو بھارت اِس کا سہج شکار ہو سکتا ہے۔ یہ بھی مانی ہوئی بات ہے کہ اِن گھاتک ہتھیاروں کا اثر بہت دور دور تک جاتا ہے اور پرائے کوئی بھی دیش اِن کے خطرے سے نہیں بچ سکتا۔ جو تجربے آجکل کئے جا رہے ہیں اُن کی بابت بھی کہا جاتا ہے کہ اُن کا زہریلا مادہ دو گھنٹے کے اندر ساری دھرتی کا چکر لگا جاتا ہے۔

بھارت نہ روسی گٹ میں ہے اور نہ امریکی میں۔ وہ ایمانداری کے ساتھ اِس گٹ بندی سے الگ تٹستھ اور غیر جانب دار ہے اور غیر جانبدار ہی رہنا چاہتا ہے۔ وہ امریکہ، انگلینڈ، فرانس، روس، چین، جاپان اور دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ دوستی نبھانا چاہتا ہے۔ پر اوپر کا چتر یہ صاف درشا دیتا ہے کہ روس، چین، بھارت اور ایشیا کے لگ بھگ سب دیش، یہاں تک کہ پورب اور اتر افریقہ کے دیش بھی ایک کشتی کے اندر ہیں۔ معلوم ہوتا ہے کہ سب تیرینگے تو ساتھ اور ڈوبیں گے تو ساتھ۔

ہم یہ بھی نہیں بھول سکتے کہ سویز نہر کے اوپر سے انگلینڈ اور فرانس کی فوجیں اُس سمے ہٹیں جب روسی سرکار نے حملہ کرنے والوں کو یہ صاف صاف آگاہ کر دیا کہ یدی اور ادھک دیر تک حملہ کرنے والے پیچھے نہ ہٹے تو روس مصر کی رکشا کے لیئے قدم بڑھانے پر مجبور ہو جائیگا۔ بہادر پریزیڈنٹ ناصر کو عین سنکٹ کے سمے سب سے بڑا سہارا روس ہی کا ملا۔ کشمیر کے اوپر اگر ابھی تک آگ بھڑکنے سے رکی ہوئی ہے تو اِس کا کم سے کم ایک کارن یہ بھی ضرور ہے کہ روسی نیتا خرشچیو جب کشمیر گئے تھے تو انہوں نے کشمیریوں سے کہا تھا کہ یدی کوئی اچانک آپتی آجاوے تو پاس کی پہاڑی پر کھڑے ہو کر ہمیں آواز دے دینا ہم آجائیں گے۔ روس کے لیئے یہ قدرتی اور لازمی بھی ہے۔ روس کے کچھ بڑے سے بڑے کارخانے کشمیر کی سرحد سے تھوڑی ہی دور پر ہیں۔

حال میں عرب دیش سیریا نے جسے 'شام' بھی کہتے ہیں، کچھ ہتھیار خریدنا چاہا۔ سیریا کی سرکار نے امریکہ سے بات کی۔ امریکی سرکار نے ہتھیار بیچنے کے لئیے بیجا اور شرارت بھری شرطیں لگائیں۔ سیریا کی سرکار نے ماننے سے انکار کیا۔ انہوں نے روس سے بات کی۔

इस मौक़े पर हम अमरीका के उन बहादुर सत्याग्रहियों की ओर अपनी श्रद्धा और अपना प्रेम फिर से प्रगट किये बिना नहीं रह सकते जो अपनी ही सरकार के इस तरह के तजरबों के विरुद्ध सत्याग्रह करके आए दिन गिरफ़्तार किये जा रहे हैं और अपनी जानें तक जोखम में डाल रहे हैं. इंगलैन्ड के अन्दर भी बहुत से लोग अपनी सरकार के इस तरह के तजरबों के ख़िलाफ़ तरह तरह से आन्दोलन कर के सच्ची बहादुरी, सत्य निष्ठा और मानव प्रेम का सबूत दे रहे हैं.

एशिया महाद्वीप के उत्तर में अनन्त और अगम्य बरफ़ के पहाड़ हैं. बाक़ी तीन तरफ़ समन्दर है या योरप की सरहद. इन तीनों तरफ़ अमरीका की तरफ़ से जगह जगह ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के अम्बार लगाए जा रहे हैं. ओकीनावा जापान का एक बड़ा टापू है जिसके आस पास उसी सिलसिले के कुछ और छोटे छोटे टापू हैं. ओकीनावा पर शुद्ध अमरीकी क़ब्ज़ा और अमरीकी हकूमत है. ओकीनावा में अमरीका की तरफ़ से ऐटम और हाइड्रोजिन बमों का अम्बार जमा है और बढ़ाया जारहा है. ओकीनावा से ज़रा हटकर दक्खिन कोरिया में अमरीका की तरफ़ से इसी तरह के हिंसक हथियारों का दूसरा अम्बार जमा है. कुछ और नीचे उतर कर ताइवान यानी फ़ारमोसा के टापू में भी — जहाँ देश घातक च्याँग-काई-शेक अमरीकी संगीनों के बल अभी तक नए जनवादी चीन की छाती पर तीर की तरह डटा हुआ है — अमरीका की तरफ़ से ऐटम और हाइड्रोजिन बमों का एक बहुत बड़ा अम्बार जमा है. और नीचे उतर कर इसी तरह का एक अमरीकी अम्बार दक्खिन वीतनाम में जमा है. और अधिक दक्खिन के उन अम्बारों को छोड़ कर जो उन देशों में हैं जो अमरीका और इंगलैन्ड के साथियों में गिने जाते हैं, पाकिस्तान में भी, भारत की ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद पर अमरीका के टैकनिकल न्युक्लीयर हथियारों का अम्बार जमा है. और अधिक पच्छिम और फिर उत्तर की तरफ़ चलते हुए इसी तरह के अम्बार इसराइल, पच्छिम-जरमनी वग़ैरह में जमा किये जा रहे हैं.

यदि हम दुनिया के नक़शे की तरफ़ निगाह डालें तो यह सब अम्बार एशिया के तीनों तरफ़ एशिया के गले में एक ज़बरदस्त और घातक फंदे की तरह हैं. हो सकता है और आशा की जाती है कि दुनिया के साम्राज्य प्रेमी देशों की सरकारों को अब भी होश आ जावे और वे दुनिया का सर्वनाश करने से बचे रहें. पर हद दरजे ख़तरनाक मसाला सब तरफ़ जमा है. कौन कह सकता है कि कब कहाँ किसी एक की छोटी सी भूल या शरारत से इस मसाले में किसी तरह चिंगारी न पड़ जावे जो सारी दुनिया को और ख़ासकर सारे एशिया को अपने लपेटे में ले ले ?

اِس موقع پر ہم امریکہ کے اُن بہادر ستیاہ گرھیوں کی اور اپنی شردھا اور اپنا پریم پھر سے پرگٹ کئے بنا نہیں رہ سکتے جو اپنی ہی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے ورُدھ ستیاگرہ کر کے آئے دن گرفتار کئے جا رہے ہیں اور اپنی جانیں تک جوکھم میں ڈال رہے ہیں . انگلینڈ کے اندر بھی بہت سے لوگ اپنی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے خلاف طرح طرح سے آندولن کر کے سچی بہادری، ستیہ نشٹھ اور مانو پریم کا ثبوت دے رہے ہیں .

ایشیا مہادیپ کے اُتر میں اننت اور اگمیہ برف کے پہاڑ ہیں . باقی تین طرف سمندر ہے یا یورپ کی سرحد . اِن تینوں طرف امریکہ کی طرف سے جگہہ جگہہ ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے امبار لگائے جارہے ہیں. اوکی ناوا جاپان کا ایک بڑا ٹاپو ہے جس کے آس پاس اُسی سلسلے کے کچھ اور چھوٹے چھوٹے ٹاپو ہیں . اوکی ناوا پر شدھ امریکی قبضہ اور امریکی حکومت ہے . اوکی ناوا میں امریکہ کی طرف سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کا امبار جمع ہے اور بڑھایا جا رہا ہے . اوکی ناوا سے ذرا ہٹ کر دکھن کوریا میں امریکہ کی طرف سے اِسی طرح کے ہنسک ہتھیار کا دوسرا امبار جمع ہے . کچھ اور نیچے اتر کر تائیوان یعنی فارموسا کے ٹاپو میں بھی — جہاں دیش گھاتک چیانگ کائی شیک امریکی سنگینوں کے بل ابھی تک نئے جن وادی چین کی چھاتی پر تیر کی طرح اَڑا ہوا ہے — امریکہ کی طرف سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کا ایک بہت بڑا امبار جمع ہے . اور نیچے اتر کر اِسی طرح کا ایک امریکی امبار دکھن ویتنام میں جمع ہے . اور ادھک دکھن کے اُن امباروں کو چھوڑ کر جو اُن دیشوں میں ہیں جو امریکہ اور انگلینڈ کے ساتھیوں میں گنے جاتے ہیں، پاکستان میں بھی، بھارت کی ٹھیک اتر پچھم سرحد پر امریکہ کے ٹیکنیکل نیوکلیر ہتھیاروں کا امبار جمع ہے . اور ادھک پچھم اور پھر اُتر کی طرف چلتے ہوئے اِسی طرح کے امبار اسرائل، پچھمی جرمنی وغیرہ میں جمع کئے جا رہے ہیں .

یدی ہم دنیا کے نقشہ کی طرف نگاہ ڈالیں تو یہ سب امبار ایشیا کے تینوں طرف ایشیا کے گلے میں ایک زبردست اور گھاتک پھندے کی طرح ہے . ہو سکتا ہے اور آشا کی جاتی ہے کہ دنیا کے سامراج پریمی دیشوں کی سرکاروں کو اب بھی ہوش آجاوے اور وے دنیا کا سروناش کرنے سے بچے رہیں . پر حد درجے خطرناک مصالحہ سب طرف جمع ہے. کون کہہ سکتا ہے کہ کب کہاں کسی ایک کی چھوٹی سی بھول یا شرارت سے اِس مصالحہ میں کسی طرح چنگاری نہ پڑ جاوے جو ساری دنیا کو اور خاص کر سارے ایشیا کو اپنے لپیٹ میں لے لے ؟

एशिया के गले में फंदा

लगभग सारे संसार की जनता, जिसमें पाँचों महाद्वीपों और सब देशों के लोग शामिल हैं, एक आवाज से यह मांग कर चुकी है, करती रही है और कर रही है कि न्युक्लीयर और थर्मो न्युक्लीयर हथियारों यानी ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे बन्द किये जावें. दुनिया के सैकड़ों बड़े से बड़े साइन्सदाँ, जिनमें अमरीका के बड़े से बड़े साइन्सदाँ शामिल हैं, साफ़ साफ कह रहे हैं कि इन तजरबों से मानव जाति की तन्दुरुस्ती को बहुत सख्त नुक़सान पहुँच रहा है, इनफ़्लुएंजा और दूसरी इसी तरह की महामारियां जो आजकल जगह जगह फैल रही हैं इन तजरबों ही का नतीजा हैं, और अगर यह तजरबे कुछ दिनों और जारी रह गए तो इनका सबसे खतरनाक प्रभाव सारी मानवजाति की जननेन्द्रियों पर पड़ेगा, जिसके नतीजे की शकल में हो सकता है कि सैकड़ों बरस तक बहुत से इनसानी बच्चे अजीब अजीब शकलों के अजीब-अजीब और तरह-तरह के अंगों वाले, यहाँ तक कि आधे इनसान और आधे जानवर पैदा हों. फिर भी अमरीका, रूस और इंगलैन्ड तीनों की तरफ़ से हाइड्रोजिन बमों के नित नए तजरबे आए दिन होते रहते हैं, जिनकी ख़बरें दुनिया भर के अख़बारों में छपती रहती हैं.

रूस के शासक बार बार यह कह चुके हैं कि अगर अमरीका और इंगलैंड इस तरह के तजरबे बन्द करदें तो रूस भी इन्हें फौरन बन्द करने को तैयार है. रूस सरकार की तरफ़ से यह प्रस्ताव भी यू० एन० ओ० के सामने पेश है, पर अमरीका किसी तरह हामी भरने को तैयार नहीं. यू० एन० ओ० या उसकी कमेटियों के सामने जब कभी इस तरह के प्रस्ताव आते हैं अमरीका और इंगलैण्ड हजार तरह से अड़ंगे लगाकर उन्हें टालते रहते हैं, इस तरह के प्रस्ताव इस समय भी यू० एन० ओ० के सामने पेश हैं.

ایشیا کے گلے میں پھندا

لگ بھگ سارے سنسار کی جنتا، جس میں پانچوں مہادیپوں اور سب دیشوں کے لوگ شامل ہیں، ایک آواز سے یہ مانگ کر چکی ہے، کرتی رہی ہے اور کر رہی ہے کہ نیوکلیر اور تھرمونیوکلیر ہتھیار یعنی ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے بند کئے جاویں۔ دنیا کے سیکڑوں بڑے سے بڑے سائنسدانوں، جن میں امریکہ کے بڑے سے بڑے سائنسداں شامل ہیں، صاف صاف کہہ رہے ہیں کہ اِن تجربوں سے مانو جاتی کی تندرستی کو سخت نقصان پہنچ رہا ہے، انفلوئنزا اور دوسری اِسی طرح کی مہاماریاں جو آجکل جگہہ جگہہ پھیل رہی ہیں اِن تجربوں ہی کا نتیجہ ہے، اور اگر یہ تجربے کچھ دنوں اور جاری رہ گئے تو اِن کا سب سے خطرناک پربھاؤ ساری مانو جاتی کی جننیندریوں پر پڑے گا، جس کے نتیجے کی شکل میں ہو سکتا ہے کہ سیکڑوں برس تک بہت سے اِنسانی بچے عجیب عجیب شکلوں کے، عجیب عجیب اور طرح طرح کے انگوں والے، یہاں تک کہ آدھے اِنسان اور آدھے جانور، پیدا ہوں۔ پھر بھی امریکہ، روس اور انگلینڈ تینوں کی طرف سے ہائڈروجن بموں کے نت نئے تجربے آئے دن ہوتے رہتے ہیں۔

روس کے شاسک بار بار یہ کہہ چکے ہیں کہ اگر امریکہ اور انگلینڈ اِس طرح کے تجربے بند کر دیں تو روس بھی اِنہیں فوراً بند کرنے کو تیار ہے۔ روسی سرکار کی طرف سے یہ پرستاؤ بھی یو. این. او. کے سامنے پیش ہے۔ پر امریکہ کسی طرح حامی کرنے کو تیار نہیں۔ یو. این. او. یا اُس کی کمیٹیوں کے سامنے جب کبھی اِس طرح کے پرستاؤ آتے ہیں امریکہ اور انگلینڈ ہزار طرح سے اڑنگے لگا کر اُنہیں ٹالتے ہیں۔ اِسی طرح کے پرستاؤ اِس سمے بھی یو. این. او. کے سامنے پیش ہیں۔

नाक और दर्दनाक इज़हार नोआखाली और बिहार के क़त्ले आम में दिखाई दिये . गान्धी जी ने अकेले पैदल नोआखाली की जात्रा शुरू की . डरे और सहमे हुये हिन्दुओं को दिलासा और तसल्ली दी. राजनीति में जिससे 'करो या मरो' के उसूल को उन्होंने चालू किया था उस का फ़िरक़े-वाराना जंग का ख़त्म करने में भी अमल शुरू किया. उन्होंने मुसलमानों के दिल को जीता और नफ़रत का बुझाने में कामयाब हुए. फिर वह बिहार आये वहाँ मज़लूम मुसलमानों के आँसू पोंछे और हिन्दुओं के दिलों में अपनी वहशियाना हरकतों के लिये शर्म पैदा की . सारी किताब में सैकड़ों घटनायें दर्ज हैं जिनसे गान्धी जी की उस वक़्त की दिमाग़ी कैफ़ियत का पता चलता है . किताब क्या है एक अनमोल ग्रन्थ है . मुल्क की राजनीति, इतिहास, समाज शास्त्र और जन आन्दोलन के विद्यार्थियों को न सिर्फ़ इस किताब को पढ़ना ज़रूरी है बल्कि इसका अध्ययन करना ज़रूरी है. आज भी हमारे दिलों से वह फ़िरक़े-वाराना ज़हर ख़त्म नहीं हुआ है बल्कि तरह-तरह की शक्लों में वह मुल्क की आबो हवा को ज़हरीला बना रहा है. यह किताब हमें उस ज़हर को अपने दिलों से निकाल फेंकने में मदद देगी.

—वि० ना० पांडे

सरदार वल्लभ भाई पटेल (जिल्द दूसरी अंगरेज़ी)—मूल गुजराती के लेखक नरहरि डी० परीख; प्रकाशक ऊपर के; सफ़े 492; क़ीमत 5 रुपया.

इस किताब के हिन्दी एडीशन की आलोचना हम अक्तूबर' 57 के नया हिन्द में कर चुके हैं. किताब की छपाई सफ़ाई बहुत उम्दा है. हिन्दी और गुजराती न जानने वालों के लिए सरदार पटेल की ज़िन्दगी और उनके महान् कामों के समझने में यह अंगरेज़ी एडीशन मदद देगा.

वि० ना० पांडे.

शाहकार; माहाना रिसाला; क़ीमत १); निकालने वाले मकतबा-शाहकार-इलाहाबाद.

इलाहाबाद की अदबी फ़िज़ा में कितने ही रिसालों ने जन्म लिया और मीठी नींद सो गये . इस वक़्त कोई रोज़-नामा यहाँ से नहीं निकल रहा है. रिसालों में किसी को मयारी नहीं कहा जा सकता.

शाहकार का पहला नम्बर मेज़ पर है. पढ़ने के बाद यक गूना आसूदगी हुई. हुनर साहब की मेहनत और तजस्सुस की दाद देनी ही पड़ेगी. वाक़ई इसके देखने के बाद साबित होता है कि इस रिसाले में अदब बराये अदब से लेकर अदब बराये ज़िन्दगी सभी कुछ, बिला तख़सीस मौजूद है. यानी मुमताज़ शीरीं के 'नया जहन्नुम' से लेकर

[बाक़ी सफ़ा 236 पर]

اور دردناک اظہار نواکھالی اور بہار کے قتل عام دکھائی دیئے ۔ گاندھی جی نے اکیلے پیدل نواکھالی کی یاترا شروع کی ۔ ڈرے اور سہمے ہوئے ہندوؤں کو دلاشا اور تسلی دی ۔ راج نیتی میں جس 'ڈرو یا مرو' کے اصول کو انہوں نے چالو کیا تھا اس پر فرقہ وارانہ جنگ کو ختم کرنے میں بھی عمل شروع کیا ۔ انہوں نے مسلمانوں کے دل کو جیتا اور نفرت کو بجھانے میں کامیاب ہوئے ۔ پھر وہ بہار آئے وہاں مظلوم مسلمانوں کے آنسو پونچھے اور ہندوؤں کے دلوں میں اپنی وحشیانہ حرکتوں کے لئے شرم پیدا کی ۔ ساری کتاب میں سیکڑوں گھٹنائیں درج ہیں جن سے گاندھی جی کی اس وقت کی دماغی کیفیت کا پتہ چلتا ہے ۔ کتاب کیا ہے انمول گرنتھ ہے ۔ ملک کی راج نیتی' اتہاس' سماج شاستر اور جن آندولن کے ودیارتھیوں کو نہ صرف اس کتاب کو پڑھنا ضروری ہے ۔ آج بھی ہمارے دلوں سے وہ فرقہ وارانہ زہر ختم نہیں ہوا ہے بلکہ طرح طرح کی شکلوں میں وہ ملک کی آب وہوا کو زہریلا بنا رہا ہے ۔ یہ کتاب ہمیں اس زہر کو اپنے دلوں سے نکال پھینکنے میں مدد دیگی ۔

—وی۔ نا۔ پانڈے ۔

سردار ولبھ بھائی پٹیل (جلد دوسری انگریزی) مول گجراتی لیکھک نرہری ڈی ۔ پاریکھ' پرکاشک اوپر والے؛ صفحے 492؛ قیمت 5 روپیہ ۔

اس کتاب کے ہندی ایڈیشن کی آلوچنا ہم اکتوبر 57 کے نیا ہند میں کر چکے ہیں۔ کتاب کی چھپائی صفائی بہت عمدہ ہے۔ ہندی اور گجراتی نہ جاننے والوں کے لئے سردار پٹیل کی زندگی اور اُن کے مہان کاموں کے سمجھنے میں یہ انگریزی ایڈیشن مدد دے گا ۔

—وی۔ نا۔ پانڈے ۔

شاہکار؛ ماہانہ رسالہ' قیمت ایک روپیہ؛ نکالنے والے قیمت ایک روپیہ مکتبہ شاہکار الہ آباد ۔

الہ آباد کی فضا میں کتنے ہی رسالے اور اخبارات نے جنم لیا اور میٹھی نیند سو گئے ۔ اس وقت کوئی روزنامہ یہاں سے نہیں نکل رہا ہے ۔ رسالوں میں کسی کو معیاری نہیں کہا جا سکتا ۔

شاہکار کا پہلا نمبر میز پر ہے ۔ پڑھنے کے بعد ایک گونہ آسودگی ہوئی ۔ ہنر صاحب کی محنت اور تجسس کی داد دینی پڑے گی ۔ واقعی اس کے دیکھنے کے بعد ثابت ہوتا ہے کہ اس رسالے میں' اور پرانے ادب سے لیکر ادب برائے زندگی سبھی کچھ بلا تخصیص موجود ہیں ۔ یعنی ممتاز شیریں کے 'نیا جہنم' کے لےکر

[باقی صفحہ 236 پر]

MAHATMA GANDHI, The Last Phase; लेखक प्यारेलाल; जिल्द पहली; प्रकाशक-नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद-14; सफ़े 750, क़ीमत 20 रुपया; चवालीस सफ़ों में सौ से ज़्यादा तसवीरें; काग़ज़ मोटा और उम्दा, छपाई सुन्दर और साफ़; खादी की जिल्द और ख़ूबसूरत डस्ट कवर.

किताब, जैसा कि बहुत मुनासिब था, श्री महादेव देसाई को समर्पित है. शुरू की योजना यही थी कि गान्धी जी की आटोबायोग्राफ़ी के सिलसिले को महादेव भाई पूरा करेंगे. इसके लिये उनके पास बेहद सामग्री थी लेकिन मौत ने उन्हें छीन लिया और वह ज़िम्मेवारी प्यारेलालजी के कन्धों पर पड़ी. पुस्तक की भूमिका 10 सफ़ों में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने लिखी है.

जैसा कि पुस्तक के नाम से साफ़ है इसमें गान्धी जी की ज़िन्दगी के आख़री पहलू को दर्ज किया गया है. पुस्तक उस दिन के बयान से शुरू होती है जब भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद आग़ा ख़ाँ के महल से गान्धी जी की नज़रबन्दी की क़ैद से रिहाई होती है. और ख़त्म होती है उस वक़्त जब गान्धी जी फ़रवरी 1947 में नोआखाली से लौटकर बिहार आते हैं. पुस्तक को पाँच हिस्सों में बाँटा गया है। पहले हिसे में छै, दूसरे में छै, तीसरे में छै, चौथे में पाँच और पाँचवें में पाँच अध्याय हैं. आख़री हिस्से में गान्धी जी के ख़ास लेखों का संग्रह है. पुस्तक के आख़ीर में नोट, ग्लासरी और इन्डेक्स जोड़कर पुस्तक को बहुत ही काम की चीज़ बना दिया गया है.

किताब की इस पहली जिल्द में गान्धी जी की उन अज़ीमुश्शान कोशिशों का ज़िक्र है जिस में उन्होंने फ़िरक़ेवाराना तहरीक के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी. यह वह ज़माना था जब ब्रिटिश कूटनीति ने हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को कामयाबी के साथ फाड़ दिया था और मुल्क के बटवारे की दाग़बेल डाल दी थी. चारों तरफ़ हिन्दू मुसलमानों के ख़ूनी दंगे हो रहे थे जिनके ख़ौफ़

MAHATMA GANDHI, The Last Phase;

جلد پہلی؛ پرکاشک نوجیون پریس، احمدآباد—14؛ صفحے 750؛ قیمت 20 روپئے؛ چوالیس صفحوں میں سو سے زیادہ تصویریں، کاغذ موٹا اور عمدہ، چھپائی سندر اور صاف؛ کھادی کی جلد اور خوبصورت ڈسٹ کور.

کتاب جیسا کہ بہت مناسب تھا، شری مہادیو دیسائی کو سمرپت ہے. شروع کی یوجنا یہی تھی کہ گاندھی جی کی آٹو بایو گرافی کے سلسلے کو مہادیو بھائی پورا کریں گے. اِس کے لئے اُن کے پاس بےحد سامگری تھی لیکن موت نے اُنہیں چھین لیا اور ذمہ داری پیارے لال جی کے کندھوں پر پڑی. پستک کی بھومکا 10 صفحوں میں ڈاکٹر راجیندر پرساد نے لکھی ہے.

جیسا کہ پستک کے نام سے صاف ہے کہ اِس میں گاندھی جی کی زندگی کے آخری پہلو کو درج کیا گیا ہے. پستک اُس دن کے بیان سے شروع ہوتی ہے جب بھارت چھوڑو آندولن کے بعد آغا خاں کے محل سے گاندھی جی کو نظربندی کی قید سے رہائی ہوتی ہے. اور ختم ہوتی ہے اُس وقت جب گاندھی جی فروری 1947 میں نوآکھالی سے لوٹ کر بہار آتے ہیں. پستک کو پانچ حصوں میں بانٹا گیا ہے. پہلے حصے میں چھ، دوسرے میں چھ، تیسرے میں چھ، چوتھے میں پانچ اور پانچویں میں پانچ ادھیائے ہیں. آخری حصے میں گاندھی جی کے خاص لیکھوں کا سنگرہ ہے. پستک کے آخیر میں نوٹ، گلاسری اور انڈیکس جوڑ کر پستک کو بہت ہی کام کی چیز بنا دیا گیا ہے.

کتاب کی اِس پہلی جلد میں گاندھی جی کی عظیم الشان اُن کوششوں کا ذکر ہے جس میں انہوں نے فرقہ وارانہ تحریک کے خلاف زبردست لڑائی لڑی. یہ وہ زمانہ تھا جب برٹش کوٹ نیتی نے ہندستان کے ہندو اور مسلمانوں کے دلوں کو کامیابی کے ساتھ پھاڑ دیا تھا اور ملک کے بٹوارے کی داغ بیل ڈال دی تھی. چاروں طرف ہندو مسلمانوں کے خونی دنگے ہو رہے تھے جن کے خوفناک

"आदमी को चाहिए कि अपने मन पर सख्ती करे और उसे संयम से रखे. अपने दिल की आँख खोलना जरूरी है. अगर बाहरी आँखों में ईश्वर को देखने की ताक़त होती तो जानवर भी ईश्वर को देख लेते."

[16]

चौंकें तो 'मुहिब' ख़्वाबे परीशाँ से कभी,
बाज़ आएँ तो ख़ूँरेज़ी-ए-इन्साँ से कभी,
सूफ़ी की मए साफ़ जो चक्खे योरोप,
हो बादा-परस्ती भी न शैताँ से कभी!

ख़्वाबे परीशाँ—दुःस्वप्न, ख़ूँरेज़ी—ख़ून बहाना, सूफ़ी—वेदांती, मए साफ़—साफ़ शराब (यहाँ तात्पर्य प्रेम से है), बादा परस्ती—शराब पीना (जो इस्लाम में पाप है), शैतान—ईश्वर का विरोधी फ़रिश्ता,

"ऐ 'मुहिब,' काश दुनिया के लोग इस (लड़ाई के) दुःस्वप्न से चौंकते और आदमी का ख़ून न बहाते. अगर योरोप वाले सूफ़ी के प्रेम का अनुभव करें तो उनकी कौन कहे शैतान तक से पाप न हो सके."

"آدمی کو چاہئے کہ اپنے من پر سختی کرے اور اُسے سنیم سے رکھے. اپنے دل کی آنکھ کھلنا ضروری ہے. اگر باہری آنکھوں میں ایشور کی دیکھنے کی طاقت ہوتی تو جانور بھی ایشور کو دیکھ لیتے."

(16)

چونکیں تو 'محب' خوابِ پریشاں سے کبھی،
باز آئیں تو خونریزئی اِنساں سے کبھی،
صوفی کی مئے صاف جو چکھے یورپ
ہو بادہ پرستی بھی نہ شیطاں سے کبھی!

خوابِ پریشاں—دکھی سوپن، خوں ریزی—خون بہانا، صوفی—ویدانتی، مئے صاف—صاف شراب (یہاں تاپ پر پریم سے ہے) بادہ پرستی—شراب پینا (جو اِسلام میں پاپ ہے)، شیطان—ایشور کا وِرودھی فرشتہ.

"اے 'محب' کاش دنیا کے لوگ اِس (لڑائی کے) دکھی سوپن سے چونکتے اور آدمی کا خون نہ بہاتے. اگر یورپ والے صوفی کے پریم کا انوبھو کریں تو اُن کی کون کہے شیطان تک سے پاپ نہ ہو سکے."

[सफ़ा 238 से आगे]

ख़ुदैजा मस्तूर के 'डोली' तक इस रिसाले में शफ़िक़ु रहमान और कशमीरी लाल ज़ाकिर भी दोश-बदोश हैं लेकिन मंज़िलें अलग-अलग.

यह रिसाला उन लोगों के लिये तो एक नेमत साबित होगा जिनके पास न इतने पैसे हैं कि सारे रिसालों को ख़रीद कर पढ़ सकें और न इतना वक़्त जो इनके तलाश करने में सर्फ़ हो.

ग़ज़लों का इन्तख़ाब अच्छा और नज़्मों का ग़नीमत है. बेहतर होता कि शाहकार में इलमी और तन्क़ीदी मज़ामीन भी शामिल किये जायें. फ़िराक़ साहब का आर्टिकिल अलबत्ता कुछ इस क़िस्म का है. रिसाले की छपाई और साइज़ का हमारे एडिटर साहब ने ख़ास ख़याल रखा है. और क़ीमत के लिहाज़ से 144 सफ़्हों का रिसाला सस्ता ही कहा जायेगा.

—मुन्ने भाई.

[صفحہ 238 سے آگے]

خدیجہ مستور کے ڈولی تک. اِس رسالے میں شفیق الرحمان اور کشمیری لال ذاکر بھی دوش بدوش ہیں. لیکن منزلیں الگ الگ.

یہ رسالہ اُن لوگوں کے لئے تو ایک نعمت ثابت ہوگا جن کے پاس نہ اِتنے پیسے ہیں کہ سارے رسالوں کو خرید کر پڑھ سکیں اور نہ اتنا وقت جو اِن کے تلاش کرنے میں صرف ہو.

غزلوں کا انتخاب اچھا اور نظموں کا غنیمت ہے. بہتر ہوتا کہ شاہکار میں علمی اور تنقیدی مضامین بھی شامل کئے جاتے. فراق صاحب کا آرٹکل البتہ کچھ اِس قسم کا ہے. رسالہ کی چھپائی اور سائز کا ہمارے ایڈیٹر صاحب نے خاص خیال رکھا ہے. اور قیمت کی لحاظ سے 144 صفحوں کا رسالہ سستا ہی کہا جائیگا.

—منے بھائی.

"कोई देश सिर्फ़ इसलिए हानि नहीं उठाता कि उसमें कई धर्म हैं. न धार्मिक भेदभाव की आग किसी को जला सकती है. कोई चाहे हिन्दू हो जाए चाहे मुसलमान, धर्म के बदलने से देश नहीं बदलता."

[13]

हिन्दुओ-मुसलमाँ में तअस्सुब जो नहीं,
तो कसरते मज़हब से नहीं हर्ज कहीं,
है नाम मुसलमाँ का 'मुहिब' सय्यदलाल
और नाम है हिन्दू का यहाँ गंगादीन !

तअस्सुब—धार्मिक भेदभाव, कसरत—अधिक होना,

"अगर हिन्दुओं और मुसलमानों में भेदभाव न हो तो धर्मों की संख्या में अधिकता होने से कोई हर्ज नहीं है.हमारे यहाँ तो मुसलमान का नाम सैय्यदलाल होता है और हिन्दू का गंगादीन

[14]

इनसान में कमाल है दुई से बचना,
हैवां को नहीं दानिशे तौहीदे ख़ुदा,
हैवाँ से भी अरज़ल है 'मुहिब' वह इनसान,
जो ख़ल्क़ को और हक़ को समझता है जुदा !

कमाल—पूर्णता, दुई—दो होने की भावना,
हैवाँ (हैवान)—पशु, दानिश—समझ,
तौहीद—एक होना, अरज़ल—पतित,गिरा हुआ,
ख़ल्क़—दुनियाँ, हक़—ईश्वर,

"आदमी की पूर्णता इसी बात में है कि वह ईश्वर और उसकी सृष्टि को अलग-अलग न समझे. जानवर को भगवान के एक होने की समझ नहीं है. लेकिन ऐ 'मुहिब' वह आदमी तो जानवरों से भी बुरा है जो ईश्वर और उसकी दुनिया को एक दूसरे से अलग समझता है.

[15]

कुछ नफ़्स पे अपने तो जफ़ा की होती,
कुछ चश्मे बसीरत भी तो वा की होती,
इन आँखों में गर नूरे ख़ुदा-बीं होता !
हैवाँ को भी मारिफ़त ख़ुदा की होती !

नफ़्स—मन, जफ़ा—सख़्ती
चश्मे बसीरत—दिल की आँख, वा—खुली,
नूर—रोशनी, ख़ुदाबीं-ख़ुदा को देखने वाला
हैवाँ—जानवर, मारिफ़त—ईश्वर के पास होना,

"کوئی دیش صرف اس لئے ہانی نہیں اٹھاتا کہ اس میں کئی دھرم ہیں۔ نہ دھارمک بھید بھاؤ کی آگ کسی کو جلا سکتی ہے۔ کوئی چاہے ہندو ہو جائے چاہے مسلمان۔ دھرم کے بدلنے سے دیش نہیں بدلتا۔"

(13)

ہندو مسلماں میں تعصب جو نہیں،
تو کثرت مذہب سے نہیں حرج کہیں،
ہے نام مسلم کا 'محب' سید لال
اور نام ہے ہندو کا یہاں گنگا دین!

تعصب—دھارمک بھید بھاؤ، کثرت—ادھک ہونا۔

"اگر ہندو اور مسلمان میں بھید بھاؤ نہ تو دھرموں کی سنکھیا میں ادھک ہونے سے کوئی حرج نہیں ہے۔ ہمارے یہاں تو مسلمان کا نام سید لال ہوتا ہے اور ہندو کا گنگا دین۔"

(14)

انساں میں کمال ہے دوئی سے بچنا،
حیواں کو نہیں دانش توحید خدا،
حیواں سے بھی ارزل ہے 'محب' وہ انساں
جو خلق کو اور حق کو سمجھتا ہے جدا!

کمال—پورنتا، دوئی—دو ہونے کی بھاونا، حیواں—(حیوان) پشو، دانش—سمجھ، توحید—ایک ہونا، ارزل—پست، گرا ہوا، خلق—دنیا، حق—ایشور۔

"آدمی کی پورنتا اسی بات میں ہے کہ وہ ایشور اور اس کی سرشٹی کو الگ الگ نہ سمجھے۔ جانور کو بھگوان کے ایک ہونے کی سمجھ نہیں ہے۔ لیکن اے 'محب' وہ آدمی تو جانوروں سے بھی برا ہے جو ایشور اور اس کی دنیا کو ایک دوسرے سے الگ سمجھتا ہے۔"

(15)

کچھ نفس پہ اپنے تو جفا کی ہوتی،
کچھ چشم بصیرت بھی تو وا کی ہوتی،
ان آنکھوں میں گر نور خدابیں ہوتا
حیواں کو بھی معرفت خدا کا ہوتا!

نفس—من، جفا—سختی، چشم بصیرت—دل کی آنکھ، وا—کھلی، نور—روشنی، خدابیں—خدا کو دیکھنے والا، حیواں—جانور، معرفت—ایشور کے پاس ہونا۔

लड़ते हैं यह किस बात पे हिन्दू मुस्लिम
क्या इनका .खुदा और है और उनका और !

तक़लीद-अंधानुकरण, भेड़िया धसान

"दुनिया में भेड़िया धसान का बोलबाला है. ऐ मुहिब हम लोग मज़हब पर कुछ भी ग़ौर नहीं करते. आख़िर यह हिन्दू मुसलमान किस बात पर लड़ते हैं ? क्या दोनों के ईश्वर अलग अलग हैं."

(10)

हिन्दू ओ- मुसलमाँ के नहीं दो हैं .खुदा,
दोनों में हैं इक शान खुदावन्दे उला,
जब इनका वतन एक है और शक्लें एक
क्यों त.फरिक़ा-ए-दीं से हैं दोनों यह जुदा !

.खुदावंदे उला—महान ईश्वर, वतन—देश त फ़रिक़ा—भेद भाव, दीं (दीन)—धर्म

'हिन्दू और मुसलमान के खुदा अलग-अलग नहीं हैं दोनों में एक ही भगवान की महानता के दर्शन होते हैं. जब हिन्दू मुसलमान दोनों का देश और उनकी शक्लें एक ही हैं तो केवल धर्म अलग होने से यह दोनों अलग-अलग क्यों हैं ?"

(11)

कहने से रक़ीबों के 'मुहिब' हैं भड़के,
मिल जायेंगे फिर इल्मो हुनर में पड़के,
हिन्दू-ओ-मुसलमां में तनाफ़ुर क्यों है ,
हैं मादरे हिंद के यह दोनों लड़के !

रक़ीब—दुश्मन, इल्मो हुनर—विद्या
तनाफ़ुर—नफ़रत, मादरे हिंद—भारत माता

"ऐ 'मुहिब' यह (हिन्दू और मुसलमान) दुश्मनों के कहने पर भड़के हुए हैं (और आपस में लड़ते हैं) विद्या और समझ आने पर यह एक हो जायेंगे. इन दोनों को एक दूसरे से नफ़रत क्यों है ? दोनों ही भारत माता के पुत्र हैं."

(12)

कसरत से मज़ाहिब के पिघलता नहीं मुल्क,
आतिश से तअस्सुब के भी जलता नहीं मुल्क,
हिन्दू हो जाय या मुसलमान हो जाए
मज़हब के बदलने से बदलता नहीं मुल्क.

कसरत—अधिक होना, मज़ाहिब-धर्म (मज़हब का बहुवचन), आतिश—आग, तअस्सुब—धार्मिक भेदभाव,

لڑتے ہیں یہ کس بات سے ہندو مسلم
کیا اِن کا خدا ہے اور ہے اور اُن کا اور !

تقلید—اندھا نوکرن، بھیڑیا دھسان ۔

"دنیا میں بھیڑیا دھسان کا بول بالا ہے ۔ اے محب ہم لوگ مذہب پر کچھ بھی غور نہیں کرتے ۔ آخر یہ ہندو مسلمان کس بات پر لڑتے ہیں ؟ کیا دونوں کے ایشور الگ الگ ہیں ؟"

(10)

ہندو و مسلمان کے نہیں ہیں دو خدا،
دونوں میں ہے ایک شان خداوند علا،
جب اُن کا وطن ایک ہے اور شکلیں ایک
کیوں تفریقۂ دیں سے ہیں دونوں یہ جدا !

خداوند علا—مہان ایشور، وطن—دیش، تفریقہ—بھید بھاؤ، دیں—(دین) دھرم ۔

"ہندو اور مسلمانوں کے خدا الگ الگ نہیں ہیں ۔ دونوں میں ایک ہی بھگوان کی مہانتا کے درشن ہوتے ہیں ۔ جب ہندو مسلمان دونوں کا دیش اور اُن کی شکلیں ایک ہی ہیں تو کیول دھرم الگ ہونے سے یہ دونوں الگ الگ کیوں ہیں ؟"

(11)

کہنے سے رقیبوں کے 'محب' ہیں بھڑکے،
مل جائیں گے پھر علم و ہنر میں پڑ کے،
ہندوؤ مسلماں میں تنافر کیوں ہے،
ہیں مادر ہند کے یہ دونوں لڑکے !

رقیب—دشمن، علم و ہنر—ودیا، تنافر—نفرت، مادر ہند—بھارت ماتا ۔

"اے 'محب' یہ (ہندو اور مسلمان) دشمنوں کے کہنے پر بھڑکے ہوئے ہیں (اور آپس میں لڑتے ہیں) ودیا اور سمجھ پانے پر یہ ایک ہو جائیں گے ۔ اِن دونوں کو ایک دوسرے سے نفرت کیوں ہے ؟ دونوں ہی بھارت ماتا کے پتر ہیں ۔"

(12)

کثرت سے مذاہب کے پگھلتا نہیں ملک،
آتش سے تعصب کے بھی جلتا نہیں ملک،
ہندو ہوجائے یا مسلمان ہو جائے
مذہب کے بدلنے سے بدلتا نہیں ملک !

کثرت—ادھک ہونا، مذاہب—دھرم (مذہب کا بہو وچن) آتش—آگ، تعصب—دھارمک مت بھید ۔

वह तेरी समझ और है. आँखों का क़सूर
बुत भी है वही और ख़ुदा भी है वही !

जुदा—अलग, गुल—फूल, बुत—मूर्ति

"वह (ईश्वर) मुझसे मिला भी है और अलग भी. वही बुलबुल है, वही फूल और हवा भी वही है। मूर्ति और ख़ुदा एक ही हैं. अगर तू इसे न समझ पाए तो यह तेरी समझ और आँखों का क़सूर है।"

(7)

दिल बोलता हर दम है 'मुहिब' अल्लाहू,
दो देखने की एक को मुतलक़ नहीं .ख़ू,
वह सबको समझता है वही ज़ाते अहद
सूफ़ी को बराबर है मुसलमाँ हिन्दू!

अल्लाहू—ईश्वर का नाम, मुतलक़—बिलकुल
ख़ू—आदत, ज़ाते अहद—एक ईश्वर,
सू.फ़ी—मुसलमानों में वेदांत जैसा एक मार्ग.

ऐ 'मुहिब' हमारा दिल तो हर समय ईश्वर का नाम लिया करता है. हम जिसे (ईश्वर और सृष्टि को) एक समझते हैं उसे दो समझने की हमें बिलकुल आदत नहीं है. सू.फ़ी के लिए हिन्दू मुसलमान बराबर हैं क्योंकि उसे तो सभी लोग उसी ईश्वर के रूप दिखाई देते हैं."

(8)

है तफ़ारिक़ा-ए ज़ातो सि.फ़त वहशत में,
अशिया-ए-जहाँ एक है सब वहदत में,
ज़र में है, न तोपों में, न वह लश्कर में,
जो ज़ोरे .ख़ुदाई है 'मुहिब' उलफ़त में !

तफ़िरक़ा—भेद, लड़ाई, ज़ातो सिफ़.त—व्यक्तित्व और गुण
वहशत—जंगलीपन अशिया-चीज़ें (शै का बहुवचन)
ज़र—धन, वहदत—ईश्वर का एक होना
ज़ोरे ख़ुदाई—ईश्वरीय ताक़त, उलफ़.त—प्रेम

"(ईश्वर के) व्यक्तित्व और गुणों पर झगड़ा जंगलीपन के कारण उठता है. सारी चीज़ें उसी एक भगवान का रूप हैं इसलिए एक हैं. ऐ 'मु हिब' जो ईश्वरीय ताक़त प्रेम में पाई जाती है वह धन दौलत, तोप, लश्कर किसी में नहीं."

(9)

तक़लीद का दुनिया में मचा है क्या शोर,
करते नहीं मज़हब पे 'मुहिब' हम कुछ ग़ौर,

یہ تیری سمجھ اور ہے آنکھوں کا قصور
بت بھی ہے وہی اور خدا بھی ہے وہی!

جدا—الگ، گل—پھول، بت—مورتی۔

"وہ (ایشور) مجھ سے ملا بھی ہے اور الگ بھی۔ وہی بلبل ہے۔ وہی پھول اور ہوا بھی وہی ہے، مورتی اور خدا ایک ہی ہے اگر تو اسے نہ سمجھ پائے تو یہ تیری سمجھ اور آنکھوں کا قصور ہے۔"

(7)

دل بولتا ہر دم ہے 'محب' اللہ ہو،
دو دیکھنے کی ایک کو مطلق نہیں خو،
وہ سب کو سمجھتا ہے وہی ذات احد
صوفی کو برابر ہے مسلماں ہندو!

اللہ ہو—ایشور کا نام، مطلق—بالکل، خو—عادت، ذات احد—ایشور، صوفی—مسلمانوں میں ویدانت جیسا ایک مارگ۔

"اے 'محب' ہمارا دل تو ہر سمے ایشور کا نام لیا کرتا ہے۔ ہم جسے (ایشور اور سوشٹی کو) ایک سمجھتے ہیں اسے دو سمجھنے کی ہمیں بالکل عادت نہیں ہے۔ صوفی کے لئے ہندو مسلمان دونوں برابر ہیں کیونکہ اسے تو سبھی لوگ اسی ایشور کے روپ دکھائی دیتے ہیں۔"

(8)

ہے تفریقہ ذات صفت وحشت میں،
اشیاء جہاں ایک ہیں سب وحدت میں،
زر میں ہے، نہ توپوں میں نہ وہ لشکر میں
جو زور خدائی ہے 'محب' الفت میں!

تفریقہ—بھید، لڑائی، ذات و صفات—ویکتتو اور گن، وحشت—جنگلی پن، اشیاء—چیزیں (شے کا بہو وچن) زر—دھن، وحدت—ایشور کا ایک ہونا، زور خدائی—ایشوری طاقت، الفت—پریم۔

"(ایشور کے) ویکتتو اور گنوں پر جھگڑا جنگلی پن کے کارن اٹھتا ہے۔ ساری چیزیں اسی ایک بھگوان کا روپ ہیں۔ اے 'محب' جو ایشوری طاقت پریم میں پائی جاتی ہے وہ دھن دولت، توپ، لشکر کسی میں نہیں۔"

(9)

تقلید کا دنیا میں مچا ہے کیا شور،
کرتے نہیں مذہب پہ 'محب' ہم کچھ غور،

"संसार की प्रत्येक विद्या ईश्वर को हमसे छिपाती है. हम किताबों को पढ़ कर के (ईश्वर के बारे में) शंकाएँ करने लगते हैं. यह (किताबी) योग्यता तो दर अस्ल अंधापन है. ऐ 'मुहिब' दुनिया के लिए जो होशियारी है वह सबसे बड़ी नींद है।"

(4)

है कुफ़्र 'मुहिब' ग़ैर गर उसको माना,
हमने तो बुतों को भी ख़ुदा ही जाना,
तश्बीह से ग़फ़लत का नतीजा यह हुआ,
मूसा ने जो देखा भी तो क्या पहचाना !

कुफ़्र—अधार्मिकता, तश्बीह—उपमा,
ग़फ़लत—बेपरवाही, बुत—मूर्ति.

"मूसा—एक नबी. हजरत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना कीथी कि तू मुझे अपना मुख दिखा. ईश्वर ने उनके बहुत कहने सुनने पर अपना चेहरा तो नहीं सिर्फ़ जल्वा (दीप्ति) दिखाया. लेकिन हजरत मूसा इसे भी देखने की ताब न ला सके. वे बेहोश हो गए और जिस तूर पहाड़ पर वे खड़े थे वह जल गया)."

"ऐ 'मुहिब' ईश्वर से किसी को अलग समझना अधार्मिकता है. हम तो मूर्तियों में भी ईश्वर को देखते हैं. ईश्वर के उपनामों पर ध्यान न देने का फल यह हुआ कि मूसा ईश्वर को देखकर भी न पहचान सके."

(5)

पर्दे में हैं मख़लूक़ के वह ज़ाते ख़ुदा,
बेपर्दा नज़र आए यह इमकान है क्या,
तश्बीह का होता जो 'मुहिब' कुछ भी मज़ाक़
सुनते न शजर से लनतरानी मूसा !

मख़लूक़—दुनिया, इमकान—संभावना,
तश्बीह—उपमा, मज़ाक़—रुचि,

शजर—पेड़, लनतरानी—ईश्वर का रहस्य (हजरत मूसा को एक पेड़ ने ईश्वर का रहस्य बताया था).

"ईश्वर संसार के ही पर्दे में छिपा है. वह बेपर्दा (यानी दुनिया से अलग) नहीं दिखाई दे सकता. ऐ 'मुहिब' मूसा में अगर ईश्वर को उपनामों के लिए कुछ रुचि होती तो (हर एक चीज में ईश्वर को न देखकर) वे पेड़ से क्यों उपदेश लेते।"

(6)

वह मुझसे मिला और जुदा भी है वही,
बुलबुल भी है गुल भी है, हवा भी है वही,

"سنسار کی پرتیک ودیا ایشور کو ھم سے چھپاتی ھے . ھم کتابوں کتابوں پڑھ کر کے (ایشور کے بارے میں) شنکائیں کرنے لگتے ھیں . یہ (کتابی) یوگتا تو در اصل اندھاپن ھے . اے "محب" دنیا کے لئے جو ھوشیاری ھے وہ سب سے بڑی نیند ھے ."

(4)

ھے کفر "محب" غیر گر اُس کو مانا،
ھم نے تو بتوں کو بھی خدا ھی جانا،
تشبیہ سے غفلت کا نتیجہ یہ ھوا
موسیٰ نے جو دیکھا بھی توکیا پہچانا !

کفر—ادھارمکتا، تشبیہ—اپما،
غفلت—بےپروائی، بت—مورتی

موسیٰ ایک نبی (حضرت موسیٰ نے ایشور سے پرارتھنا کی تھی کہ تو مجھے اپنا مکھ دکھا . ایشور نے اُن کے بہت کہنے سننے پر اپنا چہرہ تو نہیں جلوہ (دیپتی) دکھایا . لیکن حضرت موسیٰ اُسے بھی دیکھنے کی تاب نہ لاسکے . وے بےھوش ھو گئے اور اور جس طور پہاڑ پر وے کھڑے تھے وہ جل گیا)."

"اے "محب" ایشور سے کسی کو الگ سمجھنا ادھارمکتا ھے . ھم تو مورتیوں میں بھی ایشور کو دیکھتے ھیں . ایشور کے اپ ناموں پر دھیان نہ دینے کا پھل یہ ھوا کہ موسیٰ ایشور کو دیکھ کر بھی نہ پہچان سکے ."

(5)

پردے میں ھے مخلوق کے وہ ذات خدا،
بےپردہ نظر آئے یہ امکان ھے کیا،
تشبیہ کا ھوتا جو 'محب' کچھ بھی مذاق
سنتے نہ شجر سے لنترانی موسیٰ !

مخلوق—دنیا، امکان—سمبھاونا، تشبیہ—اپما، مذاق—روچی، شجر—پیڑ.

لنترانی-ایشور کا رھسیہ (حضرت کو ایک پیڑ نے ایشور کا رھسیہ بتایا تھا).

"ایشور سنسار کے ھی پردے میں چھپا ھے . وہ بےپردہ (یعنی دنیا سے الگ) نہیں دکھائی دے سکتا . اے 'محب' موسیٰ میں اگر ایشور کی اپ ناموں کے لئے کچھ روچی ھوتی تو (ھر ایک چیز میں ایشور کو نہ دیکھ کر) وے پیڑ کیوں اپدیش لیتے ."

(6)

وہ مجھ سے ملا اور جدا بھی ھے وھی،
بلبل بھی ھے، گل بھی ھے، ھوا بھی ھے وھی،

रुबाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(1)

अल्लाह कहो, राम कहो, गाड कि रब,
हर नाम उसी का है "मुहिब" कर न अजब'
हिन्दू—ओ—मुसलमाँ—ओ—नसारा—ओ—यहूद
सबका है वही एक उसूले मजहब !

गाड—ईश्वर ( ), रब—भगवान, अजब—आश्चर्य, नसारा—ईसाई, उसूल—सिद्धांत,

"चाहे उसे अल्लाह कहो, चाहे राम कहो, चाहे गाड कहो चाहे रब— यह सब उसी एक ईश्वर के नाम हैं। ऐ "मुहिब" तू इस बात पर आश्चर्य न करें. हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहुदी सब के धर्मों के सिद्धांत एक ही हैं।"

(2)

अल्फ़ाज़ पे लड़ते हैं, अजब है इद्‌बार,
मानी को जो समझें तो नहीं कुछ तकरार,
जो देखते हैं हक़ को "मुहिब" आँखों से
तुम उनको पयम्बर कहो चाहे अवतार.

अल्फ़ाज़—शब्द (लफ़्ज़ का बहुवचन), इद्‌बार—दुर्भाग्य हक़—परमात्मा. पयम्बर—ईश्वरीय संदेश लाने वाला,

"यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम शब्दों पर ही झगड़ने लगते हैं. यदि शब्दों के अर्थ पर गौर करें तो झगड़ा ही न रहे. 'ऐ' 'मुहिब' जो लोग ईश्वर को अपनी आंखों से देखते हैं चाहे उन्हें पयम्बर कह लो चाहे अवतार कहो।"

(3)

पर्दा है रुख़े ज़ात पे हर इल्मे जहाँ,
पढ़ पढ़ के किताबों को बढ़ा वहमो गुमाँ,
यह दानिशो बीनश भी तो है कोरिचश्म,
बेदारीए दुनिया है 'मुहिब' ख़्वाबेगराँ.

रुख़ेज़ात—ईश्वर का चेहरा, वहमो गुमाँ—शंकाएं दानिश—योग्यता, विद्वत्ता, बीनश—देखने की ताक़त कोर—अंधापन, चश्म—आँख, बेदारी—जागना, होशियारी ख़्वाबे गराँ—गहरी नींद

رباعیات محب

شری 'محب'

(1)

1957

اللہ کہو' رام کہو' گاڈ کہ رب'
ہر نام اُسی کا "محب" کرنہ عجیب
ھندوو مسلماں و نصارا و یہود'
سب کا ھے وھی ایک اُصول مذھب !

گاڈ—ایشور (God)' رب—بھگوان' عجب—اشچریہ' نصارا—عیسائی' اصول—سدھانت .

"چاھے اُسے اللہ کہو' چاھے رام کہو' چاھے گاڈ کہو چاھے رب—، یہ سب اُسی ایک ایشور کے نام ھیں . اے "محب" تو اِس بات میں آشچریہ نہ کر . ھندو' مسلمان' عیسائی' یہودی سب کے دھرموں کے سدھانت ایک ہی ھیں ."

(2)

الفاظ پہ لڑتے ھیں عجب ھے اِدبار'
معنی کو جو سمجھیں تو نہیں ھے کچھ تکرار'
جو دیکھتے ھیں حق کو "محب" آنکھوں سے
تم اُن کو پیمبر کہو چاھے اوتار !

الفاظ—شبد (لفظ کا بہو بچن) ادبار—دربھاگیہ' حق—پرماتما' پیمبر—ایشوری سندیش لانے والا

' یہ ھمارا دربھاگیہ ھے نہ شبدوں پر ھی جھگڑنے لگتے ھیں . یدی شبدوں کے ارتھ پر غور کریں تو جھگڑا ھی نہ رھے . اے 'محب' جو لوگ ایشور کو اپنی آنکھوں سے دیکھتے ھیں چاھے اُنھیں پیمبر کہہ لو چاھے اوتار کہو ."

(3)

پردہ ھے رخ ذات پہ ہر علم جہاں'
پڑھ پڑھ کے کتابوں کو بڑھا وھم وگماں'
یہ دانش بینش بھی تو ھے کوری چشم
بیداری دنیا ھے "محب" خواب گراں'

رخ ذات—ایشور کا چہرہ' وھم گماں—شنکائیں دانش—یوگتا' ودتا' بینش دیکھنے کی طاقت ,کوری—اندھاپن' چشم—آنکھ بیداری—جاگنا' ھوشیاری' خواب گراں—گہری نیند

छा गई. हारकर मैं अपने एक रिश्तेदार श्री गोविन्द प्रसाद के पास पहुँचा । वे हाइकोर्ट के एक अच्छे एडवोकेट थे और आज जहां एंग्लोबंगाली इंटरमिजिएट कालेज है, वहीं उनका बंगला था. हमने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने बंगले के टेनिस लान पर लोकमान्य की सभा करने की इजाज़त दे दें. गोविन्द प्रसाद जी तुरंत राज़ी हो गए। अब हमारे उत्साह का ठिकाना न रहा. हमने जलसे का नोटिस निकाला जिस पर मेरे, एन० एम० घरमा के और के० पी० मिश्र के दस्तखत थे. सारा इंतज़ाम हमें तीन चार घंटे के अंदर करना पड़ा. शाम को छै बजे लोक मान्य तिलक का उसी लान के ऊपर व्याख्यान हुआ. विषय था वर्तमान राजनैनिक स्थिति . सवाल था, सभा का सभापति किसे बनाया जाय ? बड़े बड़े लोगों में सब इन्कार कर चुके थे. तब हमने एंग्लो बंगाली हाई स्कूल के हेडमास्टर बाबू नैपाल चन्द्र राय को पकड़ा. नैपाल बाबू बड़ी ही नेक तबियत और प्रगतिशील विचारों के आदमी थे. सभा में क़रीब दो हज़ार आदमी इकट्ठा हुए, लोकमान्य जोशीले वक्ता नहीं थे लेकिन उनका एक एक शब्द दिल का गहराई से निकलता मालूम होता था। जलसे में एक समा सा बँधा हुआ था. इलाहाबाद में लोकमान्य का वह पहला राजनैतिक व्याख्यान था। उसने सिर्फ़ इलाहाबाद के शहर में ही नहीं बल्कि सारे सूबे में एक नए राजनैतिक जीवन की बुनियादें डाल दीं. अगले दिन पूरे पेज का हैडिंग देकर अख़बारों ने छापा—"इलाहाबाद में नए विचारों का पैग़म्बर ।" 'इंडियन पीपुल ने जो 'लीडर' से पहले उस वक़्त इलाहाबाद से निकलता था, लिखा—"बड़ा ही उत्साह-पूर्ण व्याख्यान"

इसके बाद तो व्याख्यानों का सिलसिला ही शुरू हो गया. मार्च 1907 में बाबू विपिन चन्द्र पाल इलाहाबाद आए. इलाहाबाद में उनके तीन व्याख्यान हुए. उनके व्याख्यानों के लिये स्टेनली रोड पर सत्याचरण बाबू वकील के बंगले का आहाता ठीक किया. हर व्याख्यान में क़रीब तीन-चार हज़ार लोगों की भीड़ होती थी. अप्रैल सन् 1907 में लाला लाजपत राय इलाहाबाद आए. लोकमान्य तिलक की मीटिंग रामलीला ग्राउंड में न हो सकी थी इसके लिए रामलीला कमेटी के मेम्बर बहुत शरमिन्दा थे. सेक्रेटरी से उन्होंने स्तीफ़ा ले लिया था और लाला जी की मीटिंग रामलीला ग्राउंड में करने का वादा कर दिया था. वहीं लाला जी का व्याख्यान हुआ. दस हज़ार से ज़्यादा आदमी उन्हें सुनने के लिए इकट्ठा हुए। जनता के जोश और उत्साह का कोई ठिकाना न था.

(बाक़ी अगले नम्बर में)

چھاگئی ۔ ہار کر میں اپنے ایک رشتےدار شری گووند پرساد کے پاس پہنچا ۔ وے ہائی کورٹ کے ایک اچھے ایڈوکیٹ تھے اور آج جہاں انیگلو بنگالی انٹرمیڈیٹ کالج ہے' وہیں اُن کا بنگلہ تھا ۔ ہم نے ان سے پرارتھنا کی کہ وے اپنے بنگلے کے ٹینس لان پر لوکمانیہ کی سبھا کرنے کی اجازت دے دیں ۔ گووند پرساد جی ترنت راضی ہوگئے ۔ اب ہمارے اُتساہ کا ٹھکانہ نہ رہا ۔ ہم نے جلسے کا نوٹس نکالا جس پر میرے ' ایم.این دھرما کے اور کے.پی مشرا کے دستخط تھے ۔ سارا انتظام تین چار گھنٹوں کے اندر کرنا پڑا ۔ شام کو چھ بجے لوکمانیہ تلک کا اُسی لان کے اوپر ویاکھیان ہوا ۔ وشے تھا ورتمان راج نیتک استھتی ۔ سوال تھا' سبھا کا سبھاپتی کیسے بنایا جائے ؟ بڑے بڑے لوگوں میں سب انکار کرچکے تھے ۔ تب ہم نے انیگلوبنگالی ہائی اسکول کے ہیڈ ماسٹر بابو نیپال چندر رام کو پکڑا ۔ نیپال بابو بڑے ہی نیک طبیعت اور پرگتی شیل وچاروں کے آدمی تھے ۔ سبھا میں قریب دو ہزار آدمی اکٹھا ہوئے ۔ لوکمانیہ جوشیلے وکتا نہیں تھے ۔ لیکن اُن کا ایک ایک شبد دل کی گہرائی سے نکلتا معلوم ہوتا تھا ۔ جلسے میں ایک سماں سا بندھا ہوا تھا ۔ الہ‌آباد میں لوکمانیہ کا وہ پہلا راج نیتک ویاکھیان تھا ۔ اُس نے نہ صرف الہ‌آباد کے شہر میں ہی نہیں بلکہ سارے صوبے میں ایک نئے راج نیتک جیون کی بنیادیں ڈال دیں ۔ اگلے دن پورے پیج کا ہیڈنگ دے کر اخباروں نے چھاپا—" "الہ‌آباد میں نئے وچاروں کا پیغمبر" ۔ "انڈین پیوپل' نے جو لیڈر' سے پہلے اُس وقت الہ‌آباد سے نکلتا تھا' لکھا—" بڑا ہی اتساہ پورن ویاکھیان ۔"

اِس کے بعد تو ویاکھیانوں کا سلسلہ ہی شروع ہوگیا ۔ مارچ 1907 میں بابو وپن چندر پال الہ‌آباد آئے ۔ الہ‌آباد میں اُن کے تین ویاکھیان ہوئے ۔ اُن کے ویاکھیانوں کے لئے اسٹینلی روڈ پر ستیاچرن بابو وکیل کے بنگلے کا احاطہ ٹھیک کیا ۔ ہر ویاکھیان میں قریب تین چار ہزار لوگوں کی بھیڑ ہوتی تھی ۔ اپریل سن 1907 میں لالہ لاجپت رائے الہ‌آباد آئے ۔ لوکمانیہ تلک کی میٹنگ رام لیلا گراؤنڈ میں نہ ہو سکی تھی اس کے لئے رام لیلا کمیٹی کے ممبر بہت شرمندہ تھے ۔ سکریٹری سے اُنہوں نے استعفیٰ لے لیا تھا اور لالہ جی کی میٹنگ رام لیلا گراؤنڈ میں کرنے کا وعدہ کر لیا تھا ۔ وہیں لالہ جی کا ویاکھیان ہوا ۔ دس ہزار سے زیادہ آدمی انہیں سننے کے لئے اکٹھا ہوئے ۔ جنتا کے ادیش اور اتساہ کا کوئی ٹھکانہ نہ تھا ۔

[باقی اگلے نمبر میں]

सन 1905 का सुदेशी आंदोलन......

कलकत्ता कांग्रेस के समय पहली बार हमें तिलक महाराज से देर तक रू बरू बैठकर बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वे उस समय श्री पद्मराज जैन के यहाँ ठहरे हुये थे. हमने तिलक महराज से कहा कि यू० पी० और खासकर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान होने चाहिएँ. उन्होंने हमारी बात का समर्थन किया. वे चाहते थे कि यू० पी० के कोई नेता उन्हें बुलावें. बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में उन दिनों गरम दल का ज़ोर था. यू० पी०, बम्बई और मद्रास नरम दल के गढ़ थे. तिलक महराज ने हमसे वादा किया कि कांग्रेस के दो तीन दिन बाद वे कलकत्ते से इलाहाबाद होते हुए पूना जायेंगे और अगर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान का प्रबन्ध हो सका तो वे उसके लिये भी तैयार रहेंगे. उन्होंने यह भी वादा किया कि अपने इलाहाबाद पहुँचने की वे हमें पहले से सूचना दे देंगे.

जहाँ तक मुझे याद है जनवरी सन् 1907 की 6 तारीख थी. सुबह की किसी गाड़ी से तिलक महाराज इलाहाबाद पहुँचे. बहुत से विद्यार्थी और शहर के लोग उनके स्वागत के लिए स्टेशन पहुँचे. वे दारागंज में अपने दामाद श्री साने के यहाँ ठहरे. स्टेशन पर ही हमने उनसे उनके व्याख्यान की बातें छेड़ीं. उन्होंने कहा कि वे दो एक घंटे के बाद पंडित मदन मोहन मालवीय से मिलने के लिये उनके मकान पर पहुँचेंगे और वहाँ अगर तय हुआ तो व्याख्यान देंगे.

हम भी भारती भवन मालवीय जी के मकान पर पहुँच गए. वहाँ उस समय पंडित मदन मोहन मालवीय के अलावा कांग्रेस के कई बड़े बड़े नेता तिलक महराज से मिलने के लिए जमा थे. हमने तिलक महराज से उनके व्याख्यान की चर्चा की. वे ख़ुशी से राज़ी थे. पर वहाँ बैठे हुए अधिकतर नेता उनके व्याख्यान के ख़िलाफ़ थे और चाहते थे कि अगर तिलक महाराज इलाहाबाद में बोलें ही तो "वैदिक साहित्य" पर बोलें, "राजनीति" पर नहीं. मैंने तिलक महराज से पूछा कि अगर मैं और मेरे साथी विद्यार्थी उनके व्याख्यान का प्रबन्ध कर सकें तो वे व्याख्यान देंगे या नहीं. वे राज़ी हो गए. मैंने यह भी कहा कि इलाहाबाद की जनता आपको वैदिक साहित्य पर सुनना नहीं चहती, 'राजनीतिक स्थिति' पर सुनना चाहती है. तिलक महराज ने स्वीकार कर लिया.

व्याख्यान कराने की ज़िम्मेदारी तो हमने अपने ऊपर ले ली, लेकिन सबसे बड़ी दिक्क़त हमें जगह की पड़ी. जहाँ जाते नरम दल के नेताओं के दूत हमसे पहले पहुँच जाते और वहीं से हमें इन्कार, हो जाता. हमने सोचा था कि रामलीला ग्राउंड में सभा कर लें मगर उसके मंत्री को ऐसा सबक़ पढ़ा दिया गया कि उसने साफ़ इन्कार कर दिया। हम सब की तबियतों में बेहद मायूसी

سن 1905 کا سودیشی اندولن......

کلکتہ کانگریس کے سمے پہلی بار ہمیں تلک مہاراج سے دیر تک روبرو بیٹھ کر باتیں کرنے کا سوبھاگیہ پراپت ہوا۔ وہ اُس سمے شری پدم راج جین کے یہاں ٹھہرے ہوئے تھے۔ ہم نے تلک مہاراج سے کہا کہ یوپی اور خاص کر الہ آباد میں اُن کے ویاکھیان ہونے چاہئے۔ اُنہوں نے ہماری بات کا سمرتھن کیا۔ وے چاہتے تھے کہ یو پی کے کوئی نیتا انہیں بلاویں۔ بنگال؛ پنجاب اور مہاراشٹر میں اُن دنوں گرم دل کا زور تھا۔ یو. پی' بمبئی اور مدراس نرم دل کے گڑھ تھے۔ تلک مہاراج نے ہم سے وعدہ کیا کہ کانگریس کے دو تین دن بعد وے کلکتے سے الہ آباد ہوتے ہوئے پونا جائیں گے۔ اگر الہ آباد میں اُن کے وکھیان کا پربندھ ہو سکا تو وے اُس کے لئے بھی تیار رہیں گے۔ انہوں نے یہ بھی وعدہ کیا کہ اپنے الہ آباد پہنچنے کی وے ہمیں پہلے سے سوچنا دے دیں گے۔

جہاں تک مجھے یاد ہے جنوری سن 1907 کی 6 تاریخ تھی۔ صبح کی کسی گاڑی سے تلک مہراج الہ آباد پہنچے۔ بہت سے ودیارتھی اور شہر کے لوگ اُن کے سواگت کے لئے اسٹیشن پہنچے۔ وے داراگنج میں اپنے داماد شری سانے کے یہاں ٹھہرے۔ اسٹیشن پر ہی ہم نے اُن سے اُن کے وکھیان کی باتیں چھیڑیں۔ اُنہوں نے کہا کہ وے دو ایک گھنٹے کے بعد پنڈت مدن موہن مالویہ سے ملنے کے لئے وہ اُن کے مکان پر پہنچیں گے اور وہاں اگر طے ہوا تو وکھیان دیں گے۔

ہم بھی بھارتی بھون مالویہ جی کے مکان پر پہنچ گئے وہاں اسی سمئے پنڈت مدن موہن مالویہ کے علاوہ کانگریس کے کئی بڑے بڑے نیتا تلک مہراج سے ملنے کے لئے جمع تھے۔ ہم نے تلک مہراج سے اُن کے وکھیان کی چرچا کی وے خوشی سے راضی تھے۔ پر وہاں بیٹھے ہوئے ادھک تر نیتا اُن کے وکھیان کے خلاف تھے اور چاہتے تھے کہ اگر تلک مہراج الہ آباد میں بولیں ہی تو" ویدک ساہتیہ "پر بولیں" راج نیتی" پر نہیں۔ میں نے تلک مہراج سے پوچھا کہ اگر میں اور میرے ساتھی ودیارتھی اُن کے وکھیان کا پربندھ یا کرسکیں تو وکھیان دیں گے یا نہیں۔ وے راضی ہوگئے۔ میں نے یہ بھی کہا الہ آباد کی جنتا آپ کو ویدک ساہتیہ پر سننا نہیں چاہتی' 'راج نیتک استھتی' پر سننا چاہتی ہے۔ تلک مہراج نے سویکار کر لیا۔

یا وکھیان کرانے کی ذمہ داری تو ہم نے اپنے اوپر لے لی' لیکن سب سے بڑی دقت ہمیں جگہ کی پڑی۔ جہاں جاتے نرم دل کے نیتاؤں کے دوت ہم سے پہلے پہنچ جاتے اور وہاں سے ہمیں انکار ہوجاتا۔ ہم نے سوچا تھا کہ رام لیلا گراونڈ میں سبھا کرلیں مگر اُس کے منتری کو ایسا سبق پڑھا دیا گیا کہ اُس نے صاف انکار کر دیا۔ ہم سب کی طبیعتوں میں بےحد مایوسی

था जिसमें 60 करोड़ रुपया सालाना का सिर्फ़ कपड़ा था. देश के कारीगर भूखे मर रहे थे, देश ग़रीब होता जा रहा था, 'स्वदेशी' का मतलब था कि हम अपने देश के उद्योग-धंधों को फ़िर से चमकाएँ और अपने रोजमर्रा के इस्तेमाल में जहाँ तक हो सके, देश की बनी हुई चीज़ें ही काम में लाएँ. दूसरा था 'बायकाट' यानी यह कि हम अंग्रेज़ों के अन्याय के जवाब में इंगलैण्ड के बने हुये हर तरह के माल का ख़ास तौर से बहिष्कार करें. इस 'बायकाट' में सरकारी नौकरियाँ और ख़िताब भी शामिल थे. तीसरा था 'राष्ट्रीय शिक्षा' यानी अंग्रेज़ों के बनाये स्कूलों और कालेजों को छोड़कर राष्ट्रीय ढंग की शिक्षा हासिल करें. इस सिलसिले में मुल्क भर में जगह-जगह नेशनल कालेज और स्कूल क़ायम किये गये. चौथा था 'स्वराज' यानी देश को आज़ाद करना. हमारी टोली के प्रसिद्ध राष्ट्र कवि पंडित माधव शुक्ल ने इस चौमुखी कार्यक्रम पर नीचे लिखी कविता लिखी:—

"जय-जय श्री तिलक देव! भारत हितकारी!
स्वदेशी अरु बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार,
हिन्द में स्वराज—चारि पन्थ के पुजारी!"

नरम दल के नेता लोकमान्य तिलक के नये चतुर्मुखी कार्य-क्रम के ख़िलाफ़ थे. कांग्रेस के ज़्यादातर पुराने नेता इसी नरम दल में थे. लेकिन देश भर में जनता के अन्दर गरम दल का असर तेज़ी के साथ बढ़ता जा रहा था.

अंग्रेज़ शासकों ने नये दल को दबाने और बंग भंग के मक़सद को पूरा करने के लिये ज़ोरदार कोशिश की. ढाका के नवाब सलीमुल्ला ख़ाँ को चौदह लाख रिश्वत देकर मुसलिम लीग क़ायम कराई गई और उसी साल लाहौर में हिन्दू सभा की स्थापना हुई. लाहौर के जिस जल्से में हिंदू सभा क़ायम हुई उसमें मैं भी इत्तफ़ाक़ से मौजूद था. मैं पंजाब यूनिवर्सिटी के कानवोकेशन में अपनी डिगरी लेने गया था.

दिसम्बर सन् 1906 में कलकत्ते में कांग्रेस का बाईसवाँ इजलास हुआ. मैं, धर्मा और दूसरे साथी कलकत्ते की कांग्रेस में भी वालंटियरों की हैसियत से शामिल हुए. जनता का जोश हद को पहुँच चुका था. सरकार की चालों का उल्टा असर हो रहा था. सलीमुल्ला ख़ाँ और उनकी मुसलिम लीग के जवाब में उनके भाई अतीक़उल्ला ख़ाँ ने कांग्रेस में खूब खुलकर हिस्सा लिया. गरम दल के सौभाग्य से दादा भाई नौरोजी, जो तीस साल के राजनीतिक तजरबे के बाद उसी साल इंगलैंड से भारत आये थे, कांग्रेस के सभापति थे. दादा भाई नौरोजी ने सभापति के आसन से गरम दल वालों का खुलकर साथ दिया और कांग्रेस के मंच से इतिहास में पहली बार 'स्वराज' शब्द का उपयोग किया. गरम दल के सब प्रस्ताव थोड़े बहुत अदल बदल के साथ पास हो गये. देश में जोश बढ़ता चला गया.

تھا ۔ جس میں 60 کروڑ روپیہ سالانہ کا صرف کپڑا تھا ۔ دیش کے کاریگر بھوکے مر رھے تھے' دیش غریب ھوتا جا رھا تھا' شودیشی کا مطلب تھا کہ ھم اپنے دیش کے اُدیوگ دھندوں کو پھر سے چمکائیں اور اپنے روزمرہ کے استعمال میں جہاں تک ھو سکے' دیش کی بنی ھوئی چیزیں کام میں لائیں ۔ دوسرا تھا بائیکاٹ' یعنی یہ کہ ھم انگریزوں کے انیائے کے جواب میں انگلینڈ کے بنے ھوئے ھر طرح کے مال کا خاص طور سے بہشکار کریں گے' اِس بائیکاٹ میں سرکاری نوکریاں اور خطابات بھی شامل تھے ۔ تیسرا تھا' 'راشٹری شکشا' انگریزوں کے بنائے اسکولوں اور کالجوں کو چھوڑ کر راشٹری ڈھنگ کی شکشا حاصل کریں ۔ اِس سلسلے میں ملک بھر میں جگہہ جگہہ نیشنل کالج اور اسکول قایم کئے گئے ۔ کا 'سوراج' یعنی دیش کو آزاد کرنا ۔ ھمارے ٹولی کے پرسدھ راشٹر کوی پنڈت مادھو شکل نے اُس چومکھی کاریہ کرم پر نیچے لکھی کویتا لکھی ۔

"جے جے شری تلک دیو! بھارت ھت کاری!
سودیشی اور بہشکار' راشٹری شکشا پر سار
ھند میں سوراج چاری پنتھ کے پجاری!"

نرم دل کے نیتا لوکمانیہ تلک کے نئے چترمکھی کاریہ کرم کے خلاف تھے ۔ کانگریس کے زیادہ تر پرانے نیتا اِسی نرم دل میں تھے ۔ لیکن دیش بھر میں جنتا کے اندر گرم دل کا اثر تیزی کے ساتھ بڑھتا جا رھا تھا ۔

انگریزی شاسکوں نے نئے دل کو دبانے اور بنگ بھنگ کے مقصد کو پورا کرنے کے لئے زوردار کوشش کی ۔ ڈھاکا کے نواب سلیم‌اللہ خاں کو چودہ لاکھ رشوت دے کر مسلم لیگ قایم کرائی گئی اور اُسی سال لاھور میں ھندو سبھا کی استھاپنا ھوئی ۔ لاھور کے جس جلسے میں ھندو سبھا قایم ھوئی اُس میں میں بھی اتفاق سے موجود تھا ۔ میں پنجاب یونیورسٹی کے کانووکیشن میں یہ ڈگری لینے گیا تھا ۔

دسمبر سن 1906 میں کلکتے میں کانگریس کا بائیسواں اجلاس ھوا ۔ میں' دھرما اور دوسرے ساتھی کلکتہ کی کانگریس میں بھی والنٹیروں کی حیثیت سے شامل ھوئے ۔ جنتا کا جوش حد کو پہنچ چکا تھا ۔ سرکار کی چالوں کا الٹا اثر ھو رھا تھا ۔ سلیم‌اللہ خاں اور اُن کی مسلم لیگ کے جواب میں اُن کے بھائی عتیق اللہ خاں نے کانگریس میں خوب کھل کر حصہ لیا ۔ گرم دل کے سوبھاگیہ سے دادا بھائی نورو جی' جو تیس سال کے راجنیتک تجربے کے بعد اُس سال انگلینڈ سے بھارت آئے تھے' کانگریس کے سبھاپتی تھے ۔ دادا بھائی نوروجی نے سبھا پتی کے آسن سے گرم دل والوں کا کھل کر ساتھ دیا اور کانگریس کے منچ سے اِتہاس میں پہلی بار 'سوراج' شبد کا اُپیوگ کیا ۔ گرم دل کے سب پرستاؤ تھوڑے بہت ادل بدل کے ساتھ پاس ھو گئے' دیش میں جوش بڑھتا گیا ۔

हम चाहते हैं कि इलाहाबाद की टोली भी हमारे साथ मिलकर काम करे. मैं सबसे नहीं मिलूँगा. गुप्त रहकर ही अरविन्द बाबू और तुम्हारे बीच मे सन्देश वाहक (क़ासिद) का काम करूँगा." उसके बाद से ज्योतिन बोस हमारे और अरविन्द बाबू के बीच में कई बरस तक पोस्ट आफ़िस का काम करते रहे.

इस हालत में दिसम्बर सन् 1905 में बनारस में कांग्रेस का इक्कीसवाँ अधिवेशन हुआ. श्री गोपाल कृष्ण गोखले सभापति थे. देश में काफ़ी जोश था. इलाहाबाद से साथियों को लेकर मैं बनारस पहुँचा. हम लोग स्वयं सेवक की हैसियत से क्रांग्रेस में शामिल हुए थे. उस समय कांग्रेस की अजब कैफ़ियत थी. उसके हर इजलास में सबसे पहला प्रस्ताव इंगलैंड के बादशाह की तरफ़ वफ़ादारी का होता था. उस साल भी सबसे पहले यही प्रस्ताव आया. पहली बार देश के कुछ नेताओं ने उसका विरोध किया. उनके अगुआ थे लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय. मुझे लोकमान्य के यह लफ़्ज़ आज तक याद हैं:—

"We have been over loyal up to this time let us decrease our loyalty."

लोकमान्य का समर्थन करते हुए लाला लाजपत राय ने कहा:—

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

मैं नाम भूल गया लेकिन एक वक्ता के मुझे ये शब्द अब तक याद हैं:—

"कांग्रेस अभी तक नाबालिग़ थी. उसे शासकों की देख-रेख की ज़रूरत थी, अब वह 21 साल की यानी बालिग़ हो चुकी. अब उसे अपना काम ख़ुद सँभालना चाहिए."

मगर फिर भी कांग्रेस में पुराने नेताओं का ज़ोर था और वफ़ादारी का प्रस्ताव किसी तरह पास हो ही गया.

उस समय देश में दो राजनीतिक दल साफ़ दिखाई देने लगे. एक जिसे एक्सट्रीमिस्ट, राष्ट्रीय, या गरम दल कहा जाता था, जिसके ख़ास नेता तिलक महाराज, लाला लाजपत राय, श्री विपिन चन्द्र पाल और श्री अरविन्द घोष थे. और दूसरा जो माडरेट, लिबरल या नरम दल कहलाता था, जिसके मुख्य नेता सर फ़ीरोज़शाह मेहता, श्री दिनशा ईदुलजी वाचा, पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री गोपाल कृष्ण गोखले थे. बनारस कांग्रेस के बाद भी बंग भंग के जवाब में तिलक महाराज ने चौमुखी प्रोग्राम देश के सामने रखा. इनमें पहला स्वदेशी है. देश के उद्योग धन्धे उस समय बेहद दबे हुये थे. अरबों रुपयों का माल योरोप से आता

چاہتے ہیں الہ آباد کی ٹولی بھی ہمارے ساتھ مل کر کام کرے۔ میں سب سے نہیں ملونگا۔ گپت رہ کر ہی اروند بابو اور تمہارے بیچ میں سندیش واہک (قاصد) کا کام کرونگا۔" اس کے بعد جیوتن بوس ہمارے اور اروند بابو کے بیچ میں کئی برس تک پوسٹ آفس کا کام کرتے رہے۔

اس حالت میں دسمبر سن 1905 میں بنارس میں کانگریس کا اکیسواں ادھیویشن ہوا۔ شری گوپال کرشن گوکھلے سبھاپتی تھے۔ دیش میں کافی جوش تھا۔ الہ آباد سے ساتھیوں کو لے کر میں بنارس پہنچا۔ ہم لوگ سویم سیوک کی حیثیت سے کانگریس میں شامل ہوئے تھے۔ اس سمے کانگریس کی عجیب کیفیت تھی۔ اس کے ہر اجلاس میں سب سے پہلا پرستاؤ انگلینڈ کے بادشاہ کی طرف وفاداری کا ہوتا تھا۔ اس سال بھی سب سے پہلے یہی پرستاؤ آیا۔ پہلی بار دیش کے کچھ نیتاؤں نے اس کا ورودھ کیا۔ ان کے اگوا تھے لوکمانیہ تلک اور لالہ لاجپت رائے مجھے لوکمانیہ کے یہ لفظ آج تک یاد ہیں:—

"We have been over loyal up to this time, let us decrease our loyalty."

لوکمانیہ کا سمرتھن کرتے ہوئے لالہ لاجپت رائے نے کہا:—

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

میں نام بھول گیا لیکن ایک وکتا کے یہ شبد اب تک یاد ہیں:—

"کانگریس ابھی تک نابالغ تھی۔ اسے شاسکوں کی دیکھ ریکھ کی ضرورت تھی، اب وہ 21 سال کی یعنی بالغ ہو چکی۔ اب اسے اپنا کام خود سنبھالنا چاہئیے۔"

مگر پھر بھی کانگریس میں پرانے نیتاؤں کا زور تھا اور وفاداری کا پرستاؤ کسی طرح پاس ہو ہی گیا۔

اس سمے دیش میں دو راج نیتک دل صاف دکھائی دینے لگے۔ ایک جسے ایکسٹریمسٹ، راشٹری گرم دل کہا جاتا تھا، جس کے خاص نیتا تلک مہاراج، پت رائے، لالہ لاجپت رائے، شری وپن چندر پال، اور شری اروند گھوش تھے، اور دوسرے جو ماڈریٹ لبرل یا نرم دل کہلاتا تھا، جس کے مکھیہ نیتا سر فیروز شاہ مہتا، شری دنشا ایدولجی واچا، پنڈت مدن موہن مالویہ اور شری گوپال کرشن گوکھلے تھے۔ بنارس کانگریس کے بعد بھی بنگ بھنگ کے جواب میں تلک مہاراج نے چومکھی پروگرام دیش کے سامنے رکھا ان میں پہلا سودیشی ہے۔ دیش کے ادیوگ دھندے اس سمے بےحد دبے ہوئے تھے۔ اربوں روپئے کا مال یورپ سے آتا

सदारत में यह जलसा हुआ. जलसे में गिने चुने क़रीब दो सौ आदमी थे, जिसमें ख़ुफ़िया पुलिस के आदमियों का भी एक जत्था था. आज तो जलसों में लाखों की भीड़ होती है मगर उस समय जलसे में जाना भी बड़ी हिम्मत का काम समझा जाता था. बहुत धुंधली सी याद रह गई है उस जलसे की, क्योंकि उसे बीते ठीक ५१ बरस हो चुके हैं. लेकिन इतना मुझे साफ़ साफ़ याद है कि जब पंडित बालकृष्ण भट्ट बहुत गरमा गरम तक़रीर कर रहे थे तो किसी ने पीछे से उनके अँगरखे का पल्ला खींचा. भट्ट जी इस पर बिगड़ पड़े. कहने लगे—

"हमारे अंगरखे का पल्ला खींचत है, चाहत है हम बोली न. हिए में तो लागी है आग, कही काहे न."

हम नौजवान शहर में घूमते और लोगों से स्वदेशी व्रत की प्रतिज्ञा लेने को कहते. बंगाल का उस समय का नारा था—

'भाई भाई एक ठाँई'
भेद नाईं भेद नाईं !

लोगों से वादा लेते कि जब तक हमारा मुल्क आज़ाद न हो जाए हम आपस के सब भेद भाव भुला देंगे.

रोज़ रोज़ तो आम जलसे हो नहीं सकते थे लिहाज़ा हम नौजवान बोर्डिंग हाउस से एक स्टूल लेकर शाम को घंटाघर पहुँचते थे और बारी बारी से स्टूल पर खड़े होकर व्याख्यान देते थे. हममें से जो कवि या शायर थे, वह कविताएँ या नज़्में पढ़ते. रोज़ रोज़ की मीटिंगों का यह अखंड सिलसिला उसी वक़्त टूटता जबकि कोई दूसरी बड़ी आम सभा होती या हम सब के सब शहर के बाहर होते. एक मुसलमान नौजवान दोस्त की तक़रीर का एक फ़िक़रा अब तक मुझे याद रह गया है, हालांकि ख़ुद उनका नाम मुझे याद नहीं रहा, वह कहा करते—"हिन्दू और मुसलमानो ! तुम दोनों चने की दाल की तरह हो ? जब तक इत्तफ़ाक़ यानी एकता का छिलका तुम दोनों के ऊपर रहेगा तब तक तुम सलामत रहोगे, वरना मिट जाओगे."

दिसम्बर १९०५ की बात है, एक दिन मैं बोर्डिंग हाउस में अपने कमरे में बैठा हुआ था कि एक नौजवान दस्तक देकर भीतर आया. २६-२७ बरस की उम्र होगी, गठीला बदन, चेहरे से क़ूवत और हिम्मत प्रगट होती थी, आकर पूछा—"तुम्हीं सुन्दरलाल हो ?"

मैंने कहा—"हाँ"

"मेरा नाम ज्योतिन बोस है, यहाँ मैं कीडगंज में ठहरा हूँ. अरविन्द बाबू ने मुझे तुमसे मिलने भेजा है.

صدارت میں یہ جلسہ ہوا ۔ جلسے میں گنے چنے قریب دو سو آدمی تھے، جس میں خفیہ پولیس کے آدمیوں کا بھی ایک جتھا تھا ۔ آج تو جلسوں میں لاکھوں کی بھیڑ ہوتی ہے مگر اُس سمے جلسے میں جانا بھی بڑی ہمت کا کام سمجھا جاتا تھا ۔ بہت دھندلی سی یاد رہ گئی ہے اُس جلسے کی، کیونکہ اُسے بیتے ٹھیک 51 برس ہو چکے ہیں ۔ لیکن مجھے صاف صاف یاد ہے کہ جب پنڈت بال کرشن بھٹ بہت گرم گرم تقریر کر رہے تھے تو کسی نے پیچھے سے اُن کے انگرکھے کا پلہ کھینچا ۔ بھٹ جی اُس پر بگڑ پڑے ۔ کہنے لگے—

"ہمارے انگرکھے کا پلہ کھینچت ہیں، چاہت ہیں ہم بولی نا ۔ ہئے میں تو لاگی ہے آگ، کہی کاہے نا ۔"

ہم نوجوان شہر میں گھومتے اور لوگوں سے سودیشی ورت کی پرتگیاں لینے کو کہتے ۔ بنگال کا اُس سمے کا نعرہ تھا—

"بھائی بھائی ایک ٹھائیں
بھید نائیں بھید نائیں !"

لوگوں سے وعدہ لیتے کہ جب تک ہمارا ملک آزاد نہ ہو جائیگا ہم آپس کے سب بھید بھاؤ بھلا دیں گے ۔

روز روز تو عام جلسے ہو نہیں سکتے تھے لہذا ہم نوجوان بورڈنگ ہاؤس سے ایک اسٹول لے کر شام کو گھنٹہ گھر پہنچتے تھے اور باری باری سے اسٹول پر کھڑے ہو کر ویاکھیان دیتے تھے۔ ہم میں سے جو کوی یا شاعر تھے، وہ کویتا یا نظم پڑھتے ۔ روز روز کی میٹنگوں کا یہ اکھنڈ سلسلہ اُسی وقت ٹوٹتا جب کہ کوئی دوسری بڑی عام سبھا ہوتی یا ہم سب کے سب شہر باہر ہوتے ۔ ایک مسلمان نوجوان دوست کی تقریر کا ایک ٹکڑا اب تک مجھے یاد رہ گیا ہے، حالانکہ خود مجھے اُن کا نام یاد نہیں رہا ، وہ کہا کرتے—"ہندو اور مسلمانو ! تم دونوں چنے کی دال کی طرح ہو ۔ جب تک اتفاق کی یکتا کا چھلکا تم دونوں کے اوپر رہے گا تب تک تم دونوں سلامت رہو گے ۔ ورنہ مٹ جاؤ گے ۔"

دسمبر 1905 کی بات ہے، ایک دن میں بورڈنگ ہاؤس میں اپنے کمرے میں بیٹھا ہوا تھا کہ ایک نوجوان دستک دے کر بھیتر آ گیا ۔ 26-27 برس کی عمر ہوگی، گٹھیلا بدن، چہرے سے قوت اور ہمت پرگٹ ہوتی تھی ۔ آخر پوچھا—"تم ہی سندر لال ہو ؟"

میں نے کہا ۔ "ہاں ۔"

"میرا نام جیوتن بوس ہے، یہاں میں کیڈ گنج میں ٹھہرا ہوں ۔ اروند بابو نے مجھے تم سے ملنے بھیجا ہے ۔

यह नहीं कि इस गरम मंडली में खाली नौजवान ही थे, बल्कि कुछ बुजुर्ग भी अंदर ही अंदर हमारी मदद करते और हमारे साथ पूरी हमदर्दी रखते थे. इन बुजुर्गों में 'माडर्न रिव्यू' और 'प्रवासी' के मशहूर संपादक बाबू रामानन्द चटर्जी, हिन्दी के मशहूर लेखक पंडित बालकृष्ण भट्ट, डिप्टी कलक्टर और मशहूर विद्वान पंडित श्रीकृष्ण जोशी और इनके अलावा गवर्नमेंट कालेज के साइन्स के अध्यापक बाबू शशि भूषण चटर्जी थे. रामानन्द बाबू कायस्थ पाठशाला कालेज के प्रिंसिपल थे. पंडित बालकृष्ण भट्ट उसी कालेज में संस्कृत और हिन्दी के प्रोफ़ेसर थे. पंडित श्री कृष्ण जोशी थे तो डिप्टी कलक्टर और सरकारी अफ़सर लेकिन उनके दिल में अपने मुल्क की आज़ादी के लिए एक तड़प थी. शशि बाबू उन बुजुर्गों में थे जिनकी क़ाबलियत और चरित्र ने उन्हें लोगों की नज़रों में बहुत ऊँचा उठा दिया था. शशि बाबू को संगीत और ज्ञान चरचा का बेहद शौक़ था. यह बुजुर्ग मंडली अक्सर उनके यहाँ इकट्ठा होती थी. कभी कभी इस मंडली में उर्दू के मशहूर शायर अकबर हुसेन और पंडित मदन मोहन मालवीय भी शामिल हो जाते थे.

नौजवान दोस्तों में पंडित बाल कृष्ण भट्ट के पुत्र महादेव भट्ट, और शशि बाबू के सबसे बड़े बेटे नित्यानन्द चटरजी थे. रास बिहारी शुक्ल को हम सब लोग प्रेम से 'राशी' कहकर पुकारते थे. बाद में जमाने ने पलटा खाया, राशी को मजबूर होकर सरकारी नौकरी करनी पड़ी. अपनी क़ाबलियत के लिए वह रायसाहब भी बने और सेक्रेटेरियट में हेल्थ डिपार्टमेंट के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद से रिटायर हुए. टीकाराम त्रिपाठी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूल के अध्यापक थे लेकिन बाद में उन्हें अपनी अध्यापकी से स्तीफ़ा देना पड़ा. टीकाराम को छोड़कर और सभी साथियों को मौत ने अपनी गोद में समेट लिया है, और जब मैं यह लाइनें लिख रहा हूँ, मेरी आँखों के सामने इन देश प्रेमी साथियों के चेहरे घूम रहे हैं.

इलाहाबाद में अभी हमारी टोली को संगठित हुए दो महीने भी न बीत पाए थे कि बंगाल में एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे मुल्क की निगाहें अपनी तरफ़ कर लीं. 16 अक्टूबर सन् 1905 को बंगाल के दो टुकड़े कर दिए गये. बंग-भंग ने एक आन्दोलन की शकल ले ली. बंगाल के दो टुकड़े तो हुए मगर बंग-भंग के आन्दोलन ने बिछड़े हुए दिलों को मिला दिया.

इलाहाबाद में हम नौजवानों की टोली अगला क़दम उठाने की तजवीजें करने लगी. हम लोगों ने फ़ैसला किया १६ अक्तूबर को जमना के किनारे बलुआघाट पर पहला आम जलसा किया जाए. पंडित बालकृष्ण भट्ट की

یہ نہیں کہ اس گرم منڈلی میں خالی نوجوان ہی تھے بلکہ کچھ بزرگ بھی اندر ہی اندر ہماری مدد کرتے اور ہمارے ساتھ پوری ہمدردی رکھتے تھے۔ ان بزرگوں میں ماڈرن ریویو اور پرواسی' کے مشہور سمپادک بابو رامانند چٹر جی' ہندی کے مشہور لیکھک پنڈت بال کرشن بھٹ' ڈپٹی کلکٹر اور مشہور ودوان پنڈت شری کرشن جوشی اور ان کے علاوہ گورنمنٹ کالج کے سائنس کے ادھیاپک بابو ششی بھوشن چٹر جی تھے۔ رامانند بابو کائستھ پاٹھ شالا کالج کے پرنسپل تھے۔ پنڈت بال کرشن بھٹ اسی کالج میں سنسکرت اور ہندی کے پروفیسر تھے۔ پنڈت شری کرشن جوشی تھے تو ڈپٹی کلکٹر اور سرکاری افسر لیکن ان کے دل میں اپنے ملک کی آزادی کے لئے ایک تڑپ تھی۔ ششی بابو ان بزرگوں میں سے تھے جن کی قابلیت اور چرتر نے انہیں لوگوں کی نظروں میں بہت اونچا اٹھا دیا تھا۔ ششی بابو کو سنگیت اور گیان چرچا کا بےحد شوق تھا۔ یہ بزرگ منڈلی اکثر ان کے یہاں اکٹھا ہوتی تھی۔ کبھی کبھی اس منڈلی میں اردو کے مشہور شاعر اکبر حسین اور پنڈت مدن موہن مالویہ بھی شامل ہوجاتے تھے۔

نوجوان دوستوں میں پنڈت بال کرشن بھٹ کے پتر مہادیو بھٹ اور ششی بابو کے سب سے بڑے بیٹے نتیا نند چٹر جی تھے۔ راس بہاری شکل کو ہم سب پریم سے 'راشی' کہہ کر پکارتے تھے۔ بعد میں زمانہ نے پلٹا کھایا' راشی کو مجبور ہو کر سرکاری نوکری کرنی پڑی۔ اپنی قابلیت کے لئے وہ رائے صاحب بھی بنے اور سکریٹریٹ میں ہیلتھ ڈیپارٹمنٹ کے سپرنٹنڈنٹ کے پد سے ریٹائر ہوئے۔ ٹیکا رام ترپاٹھی ڈسٹرکٹ بورڈ کے اسکول کے ادھیاپک تھے لیکن بعد میں انہیں اپنی ادھیاپکی سے استعفیٰ دینا پڑا۔ ٹیکا رام کو چھوڑ کر اور سبھی ساتھیوں کو موت نے اپنی گود میں سمیٹ لیا ہے اور جب میں یہ لائنیں لکھ رہا ہوں' میری آنکھوں کے سامنے ان دیش پریمی ساتھیوں کے چہرے گھوم رہے ہیں۔

الہ آباد میں ابھی ہماری ٹولی کو سنگٹھت ہوئے دو مہینے بھی نہ بیت پائے تھے کہ بنگال میں ایک ایسی گھٹنا گھٹی جس نے سارے ملک کی نگاہیں اپنی طرف کر لیں۔ 17 اکتوبر سن 1905 کو بنگال کے دو ٹکڑے کر دیئے گئے۔ بنگ بھنگ نے ایک آندولن کی شکل لے لی۔ بنگال کے دو ٹکڑے تو ہوئے مگر بنگ بھنگ کے آندولن نے بچھڑے ہوئے دلوں کو ملا دیا۔

الہ آباد میں ہم نوجوانوں کی ٹولی اگلا قدم اٹھانے کی تجویزیں کرنے لگی۔ ہم لوگوں نے فیصلہ کیا کہ 31 اکتوبر کو جمنا کے کنارے بلوا گھاٹ پر پہلا عام جلسہ کیا جائے۔ پنڈت بال کرشن بھٹ کی

वह ज़माना ही ऐसा था जब सियासत और वकालत एक ही तसवीर के दो पहलू थे. उन्ही की सलाह से मैंने इलाहाबाद पहुँचकर ला कालेज में नाम लिखाने का फ़ैसला किया. इत्तफ़ाक़ से मेरे पिता जी को भी यही मशविरा पसंद आया. मगर एक दूसरे नुक़्तेनज़र से. वह चाहते थे कि मैं मुंसिफ़ बनूँ क्योंकि उस ज़माने में मुंसिफ़ी से हाईकोर्ट का जजी तक एक खुला सीधा रास्ता था और मुंसिफ़ी के लिये वकालत पढ़ना ज़रूरी था. नतीजा यह हुआ कि सन् 1905 में यूनिवर्सिटी खुलने पर मैं इलाहाबाद पहुंच गया और हिन्दू बोर्डिंग हाउस में दाख़िल हो गया.

सर सुन्दरलाल और उनके भाई पंडित कन्हैयालाल, जो बाद में हाईकोर्ट के जज बने, मेरे पिता जी के दोस्तों में से थे. पिता जी के हुक्म के मुताबिक़ इलाहाबाद पहुँचते ही मैं उनसे भी मिलने गया. उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं एम० ए० और लॉ दोनों में ही अपना नाम लिखा लूँ. चुनांचे एम० ए० में फ़िलासफ़ी और एल-एल० बी० में मैंने अपना नाम लिखा लिया.

पंजाब में उस ज़माने में कालेजों और यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी आम तौर पर पगड़ी बाँधा करते थे. बाद में पगड़ी की जगह टोपी ने ले ली और अब तो टोपी की जगह नंगा सर ही लोग पसंद करने लगे. मगर उस ज़माने में सर खुला रखना तहज़ीब के ख़िलाफ़ बात समझी जाती थी. मालवीय जी एक निराली क़िस्म की पगड़ी बाँधते थे. वह तरीक़ा मुझे इतना पसंद आया कि लाहौर ही से मैंने मालवीय जी की तरह पगड़ी बाँधनी शुरू कर दी. इतनी अच्छी पगड़ी मैं बाँध लेता था कि मेरे साथी, मालवीय जी के बड़े पुत्र पंडित रमाकान्त मालवीय को भी मुझसे ईर्षा होती थी. किन्तु इस पगड़ी का यह असर पड़ा कि लोग मुझे निहायत नरम विचारों का समझने लगे, लेकिन धीरे-धीरे लोगों की यह ग़लतफ़हमी दूर हो गई, और लोग यह जान गये कि मालवीय छाप पगड़ी के नीचे एक गरम सिर है.

यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों में गरम ख़याल के दो विद्यार्थियों की तरफ़ मेरी नज़र गई, एक बुरहानपुर के के० पी० मिश्र थे और दूसरे नागपुर निवासी एन० एम० धरमा. दोनों ही मेरे साथ एल-एल० बी० में पढ़ते थे. कुछ महीनों के बाद ही गरम विचार के नौजवानों की मंडली काफ़ी ताक़त पकड़ने लगी और धीरे धीरे इलाहाबाद गरम दल का एक ख़ास अड्डा बन गया. नए साथियों में बाबू नित्यानन्द चटर्जी, महादेव भट्ट, रास बिहारी शुक्ल, टीकाराम त्रिपाठी और माधो शुक्ल थे. माधो शुक्ल बड़ी लय के साथ अपनी देश-प्रेम से भरी कविताएं पढ़ते और नौजवानों के दिलों को अपनी ओर कर लेते थे.

وہ زمانہ ہی ایسا تھا جب سیاست اور وکالت ایک ہی تصویر کے دو پہلو تھے۔ انہیں کی صلاح سے میں نے الہ‌آباد پہنچ کر لا کالج میں نام لکھانے کا فیصلہ کیا۔ اتفاق سے میرے پتا جی کو بھی یہی مشورہ پسند آیا۔ مگر ایک دوسرے نقطے نظر سے۔ وہ چاہتے تھے کہ میں منصف بنوں کیونکہ اس زمانہ میں منصفی سے ہائی کورٹ کی ججی تک ایک کھلا سیدھا راستہ تھا اور منصفی کے لئے وکالت پڑھنا ضروری تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سن 1905 میں یونیورسٹی کھلنے پر میں الہ‌آباد پہنچ گیا اور ہندو بورڈنگ ہاؤس میں داخل ہوگیا۔

سر سندر لال اور ان کے بھائی پنڈت کنہیا لال، جو بعد ہی ہائی کورٹ کے جج بنے، میرے پتا جی کے دوستوں میں سے تھے۔ پتا جی کے حکم کے مطابق الہ‌آباد پہنچتے ہی میں ان سے ملنے گیا۔ انہوں نے مجھے صلاح دی کہ ایم۔اے اور لا دونوں ہی میں اپنا نام لکھالوں۔ چنانچہ ایم۔اے میں فلاسفی، اور ایل۔ایل۔بی میں میں نے اپنا نام لکھا لیا۔

پنجاب میں اس زمانے میں کالجوں اور یونیورسٹی کے ودیارتھی عام طور پر پگڑی باندھا کرتے تھے۔ بعد میں پگڑی کی جگہ ٹوپی نے لے لی اور اب تو ٹوپی کی جگہ ننگا سر ہی لوگ پسند کرنے لگے۔ مگر اس زمانے میں سر کھلا رکھنا تہذیب کے خلاف بات سمجھی جاتی تھی۔ مالویہ جی ایک نرالی قسم کی پگڑی باندھتے تھے۔ اور وہ طریقہ مجھے اتنا پسند آگیا کہ لاہور ہی سے میں نے مالویہ جی کی طرح پگڑی باندھنی شروع کردی۔ اتنی اچھی پگڑی میں باندھ لیتا تھا کہ میرے ساتھی مالویہ جی کے بڑے پتر پنڈت رماکانت مالویہ کو بھی مجھ سے ایرشا ہوتی تھی۔ کنتو اس پگڑی کا یہ اثر پڑا کہ لوگ مجھے نہایت نرم وچاروں کا سمجھنے لگے۔ لیکن دھیرے دھیرے لوگوں کی یہ غلط فہمی دور ہوئی اور لوگ یہ جان گئے کہ مالویہ چھاپ پگڑی کے نیچے ایک گرم سر ہے۔

یونیورسٹی کے ودیارتھیوں میں گرم خیال کے دو ودیارتھیوں کی طرف میری نظر گئی۔ ایک برہان پور کے کے۔پی۔ مشر تھے اور دوسرے ناگپور نواسی ایل۔ایم۔ دھرما۔ دونوں ہی میرے ساتھ ایل۔ایل۔بی میں پڑھتے تھے۔ کچھ مہینوں کے بعد ہی گرم وچار کے نوجوانوں کی منڈلی کافی طاقت پکڑنے لگی اور دھیرے دھیرے الہ‌آباد گرم دل کا ایک خاص اڈا بن گیا۔ نئے ساتھیوں میں بابو نیتانند چٹرجی، مہادیو بھٹ، راس بہاری شکل اور ٹیکا رام ترپاٹھی اور مادھو شکل تھے۔ مادھو شکل بڑی لے کے ساتھ اپنی دیش پریم سے بھری اپنی کویتائیں پڑھتے اور نوجوانوں کے دلوں کو اپنی اور کرلیتے تھے۔

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

पण्डित सुन्दरलाल

सन् 1905 की बात है !

डी० ए० वी० कालेज लाहौर से बी० ए० पास करने के बाद मेरे सामने आगे की पढ़ाई का सवाल था.

लाहौर में लाला लाजपतराय के साथ बहुत नज़दीकी ताल्लुकात पैदा हो चुके थे. उनके क़दमों के पास बैठकर मैंने राजनीति के पहले पाठ पढ़े थे. मैं उन्हें अपने पिता की तरह पूज्य मानता था और उन्हें मुझसे सगे बेटे से भी ज़्यादा मुहब्बत थी. उन्हीं की हिदायत के मुताबिक़ सन् 1904 में यू० पी० के पूर्वी ज़िलों में अकाल पीड़ितों की सेवा सार्वजनिक जीवन में मेरा पहला क़दम था.

मेरे सामने सवाल था कि मैं एम० ए० पास करके शिक्षक बनूँ या वकालत पास करके राजनीति में गहराई से हिस्सा लूँ. लाला जी से मैंने मशविरा किया. उनकी राय थी कि सियासी ज़िन्दगी के लिए वकालत पढ़ना ही ठीक है.

سن 1905 کا سودیشی اندولن اور میرا راج نیتک جیون

پنڈت سندر لال

سن 1905 کی بات ہے !

ڈی۔ اے۔ وی۔ کالج لاہور سے بی۔ اے۔ پاس کرنے کے بعد میرے سامنے آگے کی پڑھائی کا سوال تھا۔

لاہور میں لالہ لاجپت رائے کے ساتھ بہت ہی نزدیکی تعلقات پیدا ہوچکے تھے۔ اُن کے قدموں کے پاس بیٹھ کر میں نے راج نیتی کے پہلے پاٹھ پڑھے تھے۔ میں اُنہیں اپنے پتا کی طرح پوجیہ مانتا تھا اور اُنہیں مجھ سگے سے بیٹے سے بھی زیادہ محبت تھی۔ اُنہیں کی ہدایت کے مطابق سن 1904 میں یو۔پی۔ کے پوروی ضلعوں میں اکال پیڑتوں کی سیوا سارو جنک جیون میں میرا پہلا قدم تھا۔

میرے سامنے سوال تھا کہ میں ایم۔ اے۔ پاس کر کے شکشک بنوں یا وکالت پاس کر کے راج نیتی میں گہرائی سے حصہ لوں۔ لالہ جی سے میں نے مشورہ کیا۔ اُن کی رائے تھی کہ سیاسی زندگی کے لئے وکالت پڑھنا ہی ٹھیک ہے۔

[पिछले सफ़े से आगे]

अफ़लातून ने ईश्वर को एक बड़े गणितज्ञ के रूप में ही देखा था. यही बात वेदान्त और वेदांगों में कही गई है. उक्लैदस के सूत्रों की पहली शकल बिलकुल भारत के 'श्री यन्त्र' से मिलती है जिसमें एक अनन्त अनादि ब्रह्म चक्र के रूप में दिखाया जाता है और उसके अन्दर जड़ और चेतन सृष्टि दो एक दूसरे को काटते हुये त्रिकोणों के रूप में. यह चक्र कभी-कभी एक साँप की शकल में भी दिखाया जाता है जिसका मुँह ख़ुद अपनी दुम को खाने की कोशिश कर रहा है.

यही संसार यानी जगत है. यही माया यानी भ्रम है.

इस तरह यूनानी गणितज्ञ उक्लैदस विश्वात्मा, प्रकृति और उन दोनों के मेल से पैदा होने वाली सारी सृष्टि को नमस्कार करता हुआ अपनी पुस्तक को प्रारम्भ करता है.

दुनिया की सारी साइन्सें इन्हीं दोनों के सहारे क़ायम हैं.

[پچھلے صفحے سے آگے]

افلاطون نے ایشور کو ایک بڑے گنتگیہ کے روپ میں ہی دیکھا تھا۔ یہی بات ویدانت اور ویدانگوں میں کہی گئی ہیں۔ اقلیدس کے سوتروں کی پہلی شکل بالکل بھارت کے 'شری ینتر' سے ملتی ہے جس میں ایک اننت انادی برہم چکر کے روپ میں دکھایا جاتا ہے اور اُس کے اندر جڑ اور چیتن سرشٹی دو ایک دوسرے کو کاٹتے ہوئے تریکون کے روپ میں۔ یہ چکر کبھی کبھی ایک سانپ کی شکل میں بھی دکھایا جاتا ہے جس کا منہ خود اپنی دم کو کھانے کی کوشش کر رہا ہے۔

یہی سنسار یعنی جگت ہے۔ یہی مایا یعنی بھرم ہے۔

اِسی طرح یونانی گنتگیہ اقلیدس وشو آتما، پرکرتی اور اُن دونوں کے میل سے پیدا ہونے والی ساری سرشٹی کو نمسکار کرتا ہوا اپنی پستک کو پرارمبھ کرتا ہے۔

دنیا کی ساری سائنس انہیں دونوں کے سہارے قایم ہیں۔

देश, काल और हरकत इन्हीं तीन से सारी दुनिया समझी जा सकती है. इसीलिये गणित सब साइन्सों की जड़ है. इसीलिये असल ज्ञान को संस्कृत में 'सम्यक-ख्यानम्' कहा गया है. इसी से 'संख्या' बना है जिसका अर्थ गिनती है. इसी से सांख्य शास्त्र का नाम 'सांख्य' पड़ा. जब गीता लिखी गई थी उस समय वेदान्त सांख्य में शामिल था.

सर जे० जीन्स अपनी पुस्तक 'दि मिस्टिीरियस यूनीवर्स' के आखीर में लिखता है:—

"चेतन और जड़ यानी रूह और माद्दा के बीच की पुरानी दुई (द्वैत) अब मिटती हुई मालूम होती है......क्योंकि जिसे हम ठोस माद्दा कहते हैं वह अब चेतन की ही रचना और उसका ही एक जहूर मालूम होने लगा है. यह चेतन एक ऐसी कल्पना शक्ति और नियन्त्रण शक्ति है जो उसी तरीक़े से सोचने की आदी है जिस तरीक़े को हम गणित का तरीका कहते हैं."

जोड अपनी पुस्तक 'गाइड टु मार्डन थाट' में लिखता है:—

"यदि हम यह प्रश्न करें कि इस सारे वजूद की असल हक़ीक़त क्या हो सकती है तो इसके जवाब में सर जे० जीन्स की राय है, कि वह असल हक़ीक़त एक बहुत बड़े गणितज्ञ (ईश्वर) का मस्तिष्क है, प्रोफ़ेसर एडिंगटन के अनुसार असल हक़ीक़त एक सर्वव्यापक मस्तिष्क है, प्रोफ़ेसर वाइटहेड के अनुसार अस्ल हक़ीक़त एक तरह की शारीरिक इकाई है जो एक व्यक्ति या मनुष्य सी है, और बर्गसन के अनुसार अस्ल हक़ीक़त जीवन की धारा या शक्ति है."

वेदान्त के अद्वैतवाद यानी 'सोऽहम्' में यह सब सिद्धान्त समा जाते हैं. योरप का वैज्ञानिक विचार तरह-तरह से घूम फिर कर वेदान्त के ठीक दरवाजे तक पहुँच जाता है, लेकिन वहां जाकर रुक जाता है, अन्दर जाने की उसे अभी हिम्मत नहीं हो रही है जहाँ जाकर वह यह देख सके कि एक ही आत्मा विश्वात्मा यानी रूहेकुल सबमें रमी हुई है और वही सब है.

मशहूर यूनानी गणितज्ञ उकलैदस ने अपनी रेखा गणित के सूत्रों में पहली शकल त्रिकोण को ही क्यों रखा इसकी कोई ख़ास वजह नहीं बताई जाती. इतिहासकारों का कहना है कि रेखागणित की विद्या मिस्र से यूनान गई थी जहाँ उकलैदस ने अपनी किताब ईसा से तीन सौ बरस पहले लिखी. इतिहासकारों की यह भी राय है कि यह रेखागणित मिस्र में भारत से गया था. कुछ की यह भी राय है कि मिस्र के पहले राजकुल का क़ायम करने वाला 'मैनी' आर्य जात के आदि-मनुओं में से था. इससे मालूम होता है कि उकलैदस के दिमाग़ में गणित और दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़े) में गहरा सम्बन्ध था. पाइथागोरस और प्लेटो (अफ़लातून) भी गणित और दर्शन शास्त्र को एक ही मानते थे.

دیش، کال اور حرکت انھیں تین سے ساری دنیا سمجھی جا سکتی ہے۔ اسی لئے گنت سب سائنسوں کی جڑ ہے۔ اسی لئے اصلی گیان کو سنسکرت میں 'سمیک—کھیانم' کہا گیا ہے۔ اسی سے 'سنکھیا' بنا ہے جس کا ارتھ گنتی ہے۔ اسی سے سانکھیہ شاستر کا نام 'سانکھیہ' پڑا۔ جب گیتا لکھی گئی تھی اس سمے ویدانت سانکھیہ میں شامل تھا۔

سر جے جینس اپنی پستک 'دی مسٹیریس یونیورس' کے آخیر میں لکھتا ہے:—

"چیتن اور جڑ یعنی روح اور مادہ کے بیچ کی پرانی دوئی (دویت) اب مٹتی ہوئی معلوم ہوتی ہے...کیونکہ جسے ہم ٹھوس مادہ کہتے ہیں وہ اب چیتن کی ہی رچنا اور اس کا ہی ایک ظہور معلوم ہونے لگا ہے۔ یہ چیتن ایک ایسی کلپنا شکتی اور نینترن شکتی ہے جو اسی طریقے سے سوچنے کی عادی ہے جس طریقے کو ہم گنت کا طریقہ کہتے ہیں۔"

جوڈ اپنی پستک 'گائڈ ٹو ماڈرن تھاٹ' میں لکھتا ہے:—

"یدی ہم یہ پرشن کریں کہ اس سارے وجود کی اصل حقیقت کیا ہوسکتی ہے تو اس کے جواب میں سر جے جینس کی رائے ہے کہ وہ اصل حقیقت ایک بہت بڑے گنتگیہ (ایشور) کا مستشک ہے، پروفیسر ایڈنگٹن کے انوسار اصل حقیقت ایک سرو ویاپک مستشک ہے، پروفیسر وائٹ ہیڈ کے انوسار اصل حقیقت ایک طرح کی شاریرک اکائی ہے جو ایک ویکتی یا منشیہ سی ہے، اور برگسن کے انوسار اصل حقیقت جیون کی دھارا یا شکتی ہے۔"

ویدانت کے ادویت واد یعنی 'سوہم' میں یہ سب سدھانت سما جاتے ہیں۔ یورپ کا وگیانک وچار طرح طرح سے گھوم پھر کر ویدانت کے ٹھیک دروازے تک پہنچ جاتا ہے۔ لیکن وہاں جا کر رک جاتا ہے، اندر جانے کی اسے ابھی ہمت نہیں ہو رہی ہے جہاں جاکر وہ یہ دیکھ سکے کہ ایک ہی آتما وشو آتما یعنی روح کل سب میں رمی ہوئی ہے اور وہی سب ہے۔

مشہور یونانی گنتگیہ اقلیدس نے اپنی ریکھا گنت کے سوتروں میں پہلی شکل تریکون کو ہی کیوں رکھا اس کی کوئی خاص وجہ نہیں بتائی جاتی۔ اتہاسکاروں کا کہنا ہے کہ ریکھا گنت کی ودیا مصر سے یونان گئی تھی جہاں اقلیدس نے اپنی کتاب عیسیٰ سے تین سو برس پہلے لکھی۔ اتہاسکاروں کی یہ بھی رائے ہے کہ یہ ریکھا گنت مصر میں بھارت سے گیا تھا۔ کچھ کی یہ بھی رائے ہے کہ مصر کے پہلے راج کل کا قایم کرنے والا 'مینی' آریہ جاتی کے آدی منوؤں میں سے تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اقلیدس کے دماغ میں گنت اور درشن شاستر (فلسفہ) میں گہرا سمبندھ تھا۔ پائتھاگورس اور پلیٹو (افلاطون) بھی گنت اور درشن شاستر کو ایک ہی مانتے تھے۔

असल हक़ीक़त केवल एक है और वह 'निर्विकार' है 'निर्विशेष' है, 'प्रशान्त' है, 'पूर्ण' है वही 'आत्मा' है, वही 'स्वयं-सिद्ध' यानी खुद अपना प्रमाण है, सारी दुनिया उसके अन्दर है, वही 'निरपेक्ष' यानी ऐबसोलूट है, और सब 'सापेक्ष' यानी 'रैलेटिव' है. फिर फिर कर यही आइन्स्टाइन का सिद्धान्त है और यही वेदान्त का उसूल. यही असली 'विज्ञान' है, यही प्राचीन 'प्रज्ञान' है, मुसलिम सूफ़ियों के अनुसार यही वहदतुलवजूद है.

आजकल के बड़े-बड़े साइन्सदानों का बयान वेदान्त के असूलों से बेहद मिल जाता है. मिसाल के लिये सर जे. जीन्स की 'दि मिस्टीरियस यूनीवर्स', और डाक्टर एलैक्सिस कैरल की 'मैन दि अन्नोन' पढ़ने योग्य किताबें हैं. सर जे०जीन्स लिखता है कि:—"आजकल की साइन्स इसी नतीजे पर पहुँच रही है कि दुनिया की सब चीज़ों का वजूद एक अनादि और अनन्त आत्मा के मन के अन्दर है." "दुनिया की घटनाएँ घटित नहीं होतीं, केवल हम उन्हें घटित होते हुए देखते हैं. प्लैटो (अफ़लातून) कहता था कि:—"हम 'था' 'हैं', और 'होगा' कहते हैं लेकिन सचाई यह है कि हमें केवल 'है' ही कहना चाहिये." ऊपर के सब वाक्य सर जे० जीन्स की किताब से लिये गये हैं.

डाक्टर एलैक्सिस कैरल ने लिखा है कि:—"हम अभी तक ऐसे संसार में डूबे हुये हैं जिसे बेजान माद्दे की साइन्सों ने पैदा किया है. यह संसार हमारी समझ की ग़लती से पैदा हुआ है. हम अपनी असली आत्मा को नहीं जान पाये इसीलिये यह दुनिया पैदा हुई. आजकल के शहरों के शोर शर के अन्दर भी जो अपनी अन्तरात्मा की शान्ति को क़ायम रखते हैं वह तरह-तरह की दिमाग़ी और दूसरी बीमारियों से बचे रहते हैं. जो आत्मा ईश्वर के अन्दर डूब जाती है उसकी रोशनी के सामने मौत भी मुसकराकर रह जाती है."

लेकिन आजकल की साइन्स अभी यह कहने को तैयार नहीं है कि वह अनादि और अनन्त आत्मा, वह हमारी सच्ची आत्मा, हमारी अन्तरात्मा, ईश्वर, वही एक आत्मा सब के अन्दर है. और वही सब है. तत्त्वमसि, अहम ब्रह्मास्मि, अनलहक़ जैसी सचाइयाँ अभी तक साइन्स की समझ के दायरे से दूर हैं. इसीलिये अभी साइन्स को असलियत तक पहुँचने में दिक़्क़त पड़ रही है.

समय का गणित अंकगणित है जिसमें जोड़, बाक़ी और शून्य (सिफ़र) सब हमारी कल्पनाएँ हैं. देश का गणित रेखागणित है, जिसमें पांइट यानी नुक़्ता, लाइन, सतह, कोण, त्रिकोण, दायरा, समानान्तर सब दार्शनिक कल्पनाएँ हैं. इनमें से कोई कहीं असली शकल में देखी नहीं जा सकती.

اصل حقیقت کیول ایک ہے اور وہ نروکار، ہے' 'نروشیش' ہے' پرشانت ہے' پورن، ہے. وہی 'آتما' ہے. وہی 'سویم سدھ' یعنی خود اپنا پرمان ہے. ساری دنیا اُس کے اندر ہے. وہی 'نرپیکش' یعنی ایبسولوٹ ہے. اور سب 'ساپیکش' یعنی 'ریلیٹو' ہے. ہر پھر کر یہی آئنسٹائن کا سدھانت ہے اور یہی ویدانت کا اصول. یہی اصلی' وگیان ہے' یہی پراچین' پرگیان' ہے. مسلم صوفیوں کے انوسار یہی وحدۃ الوجود ہے.

آجکل کے بڑے بڑے سائنسدانوں کا بیان ویدانت کے اصولوں سے بہت جاتا ہے. مثال کے لئے سرجے. جینس کی' دی مسٹریس یونی ورس' اور ڈاکٹر الیکسس کیرل کی' مین دی ان نون' پڑھنے یوگ کتابیں ہیں. سرجے. جینس لکھتا ہے کہ:—" آجکل کی سائنس اِسی نتیجے پر پہنچ رہی ہے کہ دنیا کی سب چیزوں کا وجود ایک انادی اور اننت آتما کے من کے اندر ہے" "دنیا کی گھٹنائیں گھٹت نہیں ہوتیں؛ کیول ہم انہیں گھٹت ہوتے ہوئے دیکھتے ہیں. پلیٹو (افلاطون) کہتا ہے کہ:—ہم 'تھا' کہتے ہیں. اور 'ہوگا' کہتے ہیں کہ لیکن سچائی یہ ہے کہ ہمیں کیول' ہے' ہی کہنا چاہیے." اوپر کے سب واکیہ سر جے. جینس کی کتاب سے لئے گئے ہیں.

ڈاکٹر الیکسس کیرل نے لکھا ہے کہ:—"ہم ابھی تک ایک ایسے سنسار میں ڈوبے ہوئے ہیں جسے بےجان مادے کی سائنسوں نے پیدا کیا ہے. یہ سنسار ہماری سمجھ کی غلطی سے پیدا ہوا ہے. ہم اپنی اصلی آتما کو نہیں جان پائے اِس لئے یہ دنیا پیدا ہوئی. آجکل کے شہروں کے شور و شر کے اندر بھی جو اپنی انتر آتما کی شانتی کو قایم رکھتے ہیں' وہ طرح طرح کی دماغی اور دوسری بیماریوں سے بچے رہتے ہیں. جو آتما ایشور کے اندر ڈوب جاتی ہے اُس کی روشنی کے سامنے موت بھی مسکرا کر رہ جاتی ہے."

لیکن آجکل کی سائنس ابھی یہ کہنے کو تیار نہیں ہے کہ وہ انادی اور اننت آتما' وہ ہماری سچی آتما' ہماری انتر آتما' ایشور' وہی ایک آتما سب کے اندر ہے. اور وہی سب ہے. تتوسمی' اہم برہماسمی' اناالحق جیسی سچائیاں ابھی تک سائنس کے سمجھ کے دائرے سے دور ہیں. اِسی لئے ابھی سائنس کو اصلیت تک پہنچنے میں دقت پڑ رہی ہے.

سمے کا گنت انک گنت ہے جس میں جوڑ' باقی اور شونیہ (صفر) سب ہماری کلپنائیں ہیں. دیش کا گنت ریکھا گنت ہے' جس میں پائنٹ یعنی نقطہ' لائن' سطح' کونڑ تریکونڑ' دائرہ' سمانانتر سب دارشنک کلپنائیں ہیں. اِن میں سے کوئی کہیں اصلی شکل میں دیکھی نہیں جا سکتی.

अपनी उम्र है . हर एक का जन्म है , हर एक की मौत है और हर एक का बीच का ज़माना है , और यह सब भी दिखावा ही दिखावा है क्योंकि एक दूसरे से अलहदगी और परिवर्तन की कल्पना ही अन्त में धोखा है, सपना है, माया है .

प्रकृति यानी क़ुदरत के दो पहलू हैं . मूल प्रकृति और दैवी प्रकृति. मूल प्रकृति माद्दा है और दैवी प्रकृति शक्ति है, यह शक्ति बराबर जन्म , मरण , अमल , रद्दे अमल के रूप में काम करती रहती है . इसका चलाने वाला ब्रह्मा कहा जाता है. वही विश्व की आत्मा है . जब एक रचना ख़िलक़त ख़त्म हो जाती है तो उसकी जगह दूसरी जन्म ले लेती है . ठीक जिस तरह कुछ आदमी मरते हैं तो दूसरे पैदा होते रहते हैं . जो हालत छोटे से छोटे की है वही हालत बड़े से बड़े की भी है . जो छोटे से छोटे पिन्ड में है वही बड़े से बड़े ब्रह्मान्ड में भी है. यह सब सदा बदलती हुई सूरतें आत्मा यानी असल वजूद का केवल एक सपना है.

आशा है कि आइन्स्टाइन की थ्योरी आफ़ रैलेटिविटि और वेदान्त अन्त में एक दूसरे के बहुत निकट दिखाई देंगे. आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के ऊपर नए-नए विचारकों की जो किताबें निकल रही हैं उनसे यह बात और भी साफ़ दिखाई दे जाती है.

वास्तव में कोई दो समानान्तर रेखाएं हो ही नहीं सकती, हैं ही नहीं, सब चीजें चक्कर काट रही हैं या पेच की चूड़ियों की तरह हरकत कर रही हैं. देश, काल और संसार सब नाशमान हैं, सुषुप्ति या प्रलय में जाकर इन सब का अन्त हो जाता है, पाश्चात्य गणित जो सब से पकी साइन्स गिनी जाती है, सब से ज़्यादा अधिक कल्पनाओं के आधार पर चल रहा है. बड़े से बड़े साइन्सदानों में मतभेद हैं, बहसें हैं. एडिंगटन कहता है कि आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि 'ईश्वर' नाम की चीज़ का वजूद है, और बाक़ी आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि 'ईश्वर' का कोई वजूद ही नहीं. इसपर एक और विद्वान जोड़ लिखता है कि इन दोनों का मतलब एक ही है केवल शब्दों का झगड़ा है. सर विलियम ब्रेग कहता है कि:—
"हम हर सोमवार; बुधवार और शुक्रवार को एक सिद्धान्त से काम लेते हैं और हर मंगलवार, वीरवार और शनिवार को दूसरे सिद्धान्त से काम लेते हैं."

आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के वैज्ञानिक नतीजे कुछ भी निकलें वह सिद्धान्त वेदान्त के बिलकुल निकट और उसके अन्दर शामिल हैं. यह सब जो कुछ हम देखते हैं सापेक्ष है यानी केवल एक दूसरे की मुनासिबत से वजूद रखता है.

اپنی عمر ھے . ھر ایک کا جنم ھے' ھر ایک کی موت ھے اور ھر ایک کا بیچ کا زمانہ ھے اور یہ سب بھی دکھاوا ھی دکھاوا ھے کیونکہ ایک دوسرے سے علیحدگی اور پریورتن کی کلپنا ھی انت میں دھوکا ھے' سپنا ھے' مایا ھے .

پرکرتی یعنی قدرت کے دو پہلو ھیں . مول پرکرتی اور اور دیوی پرکرتی . مول پرکرتی مادہ ھے اور دیوی پرکرتی شکتی ھے . یہ شکتی برابر جنم' مرن عمل' ردعمل کے روپ میں کام کرتی رھتی ھے . اِس کا چلانے والا برھما کہا جاتا ھے . وھی وشو کی آتما ھے . جب ایک رچنا (خلقت) ختم ھو جاتی ھے تو اُس کی جگہ دوسری جنم لے لیتی ھے . ٹھیک جس طرح کچھ آدمی مرتے ھیں تو دوسرے پیدا ھوتے رھتے ھیں . جو حالت چھوٹے سے چھوٹے کی ھے وھی حالت بڑے سے بڑے کی بھی ھے . جو چھوٹے سے چھوٹے پنڈ میں ھے وھی بڑے سے بڑے برھمانڈ میں بھی ھے . یہ سب سدا بدلتی ھوئی صورتیں آتما یعنی اصل وجود کا کیول ایک سپنا ھے .

آشا ھے کہ آئنسٹائن کی تھیوری آف ریلیٹیوٹی اور ویدانت انت میں ایک دوسرے کے بہت نکٹ دکھائی دیں گے . آئنسٹائن کے سدھانت کے اوپر نئے نئے وچارکوں کی جو کتابیں نکل رھی ھیں اُن سے یہ بات اور بھی صاف دکھائی دے جاتی ھے .

واستو میں کوئی دو سمانانتر ریکھائیں ھو ھی نہیں سکتیں' ھیں ھی نہیں . سب چیزیں چکر کاٹ رھی ھیں یا پیچ کی چوڑیوں کی طرح حرکت کر رھی ھیں . دیش کال اور سنسار سب ناشمان ھیں . سوشوپتی یا پرلے میں جاکر اِن سب کا انت ھوجاتا ھے . پاشچتیہ گنت جو سب سے پکی سائنس گنی جاتی ھے' سب سے ادھک کلپناؤں کے آدھار پر چل رھی ھے . بڑے سے بڑے سائنسدانوں میں مت بھید ھیں' بحثیں ھیں . ایڈنگٹن کہتا ھے کہ آدھے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کا کہنا ھے کہ' ایشور' نام کی چیز کا وجود ھے' اور باقی آدھے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کا کہنا ھے کہ' ایشور' کا کوئی وجود ھی نہیں . اِس پر ایک اور ودوان جوڑ لکھتا ھے کہ' اِن دونوں کا مطلب ایک ھی ھے کیول شبدوں کا جھگڑا ھے . سر ولیم بریگ کہتا ھے کہ:—" ھم ھر سوموار' بدھ وار اور شکروار کو ایک سدھانت سے کام لیتے ھیں اور ھر منگل وار' ویر وار اور شنیوار کو دوسرے سدھانت سے کام لیتے ھیں ".

آئنسٹائن کے سدھانت کے ویگیانک نتیجے کچھ بھی نکلیں' وہ سدھانت ویدانت کے بالکل نکٹ اور اُسی کے اندر شامل ھے . یہ سب جو کچھ ھم دیکھتے ھیں سापیکش ھے یعنی کیول ایک دوسرے کی مناسبت سے وجود رکھتا ھے .

आजकल योरप में आइंस्टाइन की 'थ्योरी आफ़ रैलेटिविटी' की बहुत चरचा है. मोटे तौर पर इसका अर्थ यह लिया जाता है कि दुनिया की सब चीज़ों का वजूद जिनमें देश, काल और क्रिया भी शामिल हैं, केवल सापेक्ष यानी दूसरी चीज़ों की मुनासिबत से ही है इनका अपना असल वजूद कुछ नहीं. आइन्स्टाइन के इस सिद्धान्त को लेकर योरप में तरह-तरह की चरचाएँ हो रही हैं और बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं. कुछ का कहना है कि समय कोई चीज़ नहीं, केवल चौड़ाई, लम्बाई और गहराई की तरह समय भी एक फ़रज़ी दिशा है. कुछ का कहना है कि देश यानी जगह अन्त में जाकर मुड़ जाती है यानी गोल हो जाती है. कुछ का कहना है कि समानान्तर यानी मुतवाज़ी लकीरें अगर काफ़ी दूर तक बढ़ाई जावें तो आख़ीर में मिल जावेंगी. कुछ कहते हैं कि देश, काल और विश्व सब सान्तक यानी फ़ानी और महदूद हैं. कुछ यह भी कहते हैं कि यह विश्व कहीं बढ़ रहा है, कहीं सिकुड़ रहा है और हर सूरत में इसकी शक्ति के क्षीण होने के साथ साथ यह एक दिन नष्ट हो जावेगा, इत्यादि इत्यादि. कुछ का यह भी कहना है कि विश्व की असलीयत को सिवाय बड़े गहरे साइन्सदानों के और कोई समझ ही नहीं सकता.

इस देश का पुराना दर्शन शास्त्र हमेशा से मानता चला आया है कि देश, काल और क्रिया तीनों तीन हैं, फिर भी इनमें से किसी को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और तीनों एक बराबर माया यानी फ़रेब हैं. इनका वजूद आदमी के सपने से ज़्यादा कोई हैसियत नहीं रखता. जो दुनियाएँ, चाँद, सूरज वग़ैरा हमें दिखाई देते हैं इनके बीच बीच में और इनमें को निकलती हुई और भी दुनियाएँ हैं जो बिलकुल दूसरी ही तरह के माद्दे से बनी हैं. उन दुनियाओं में देश, काल और हरकत के भी और ही अर्थ होते हैं. यह दुनियाएँ हमारे जागते समय की दुनियाएँ भी हैं और सपने के समय की दुनियाएँ भी हैं. हमारे नीचे भी हैं और ऊपर भी हैं. यूरोपियन विद्वान फ़ूरनियर डी. एलबे ने इस विषय पर एक बहुत अच्छी किताब 'टू न्यू वर्ल्ड्स' यानी दो नई दुनियाएँ लिखी है. उसके अनुसार इनमें से एक दुनिया वह है जो बिना ख़ुर्दबीन के नहीं देखी जा सकती. वह भी करोड़हा करोड़ संखहा संख जन्तुओं की दुनिया है. और दूसरी वह दुनिया है जो बिना दूरबीनों के नहीं देखी जा सकती जिस में अरबों छोटे, बड़े सितारे, सैयारे, चाँद, सूरज और सूरजों के सूरज शामिल हैं.

योरप का विज्ञान आइन्सटाइन के बाद वेदान्त की इस कल्पना की तरफ़ साफ़ बढ़ रहा है कि अन्त में जाकर सब क्रिया या हरकत गोलाकार चक्कों में रह जाती है. इस संसार चक्र का न कोई आदि है और न कोई अन्त. यूँ हर चीज़ की

آجکل یورپ میں آئنسٹائن کی 'تھیوری آف ریلیٹیوٹی' کی بہت چرچا ہے۔ موٹے طور پر اِس کا ارتھ یہ لیا جاتا ہے کہ دنیا کی سب چیزوں کا وجود، جن میں دیش، کال اور کریا بھی شامل ہیں، کیول ساپیکش یعنی دوسری چیزوں کی مناسبت سے ہی ہے۔ اِن کا اپنا اصل وجود کچھ نہیں۔ آئنسٹائن کے اِس سدھانت کو لے کر یورپ میں طرح طرح کی چرچائیں ہو رہی ہیں اور بہت سی کتابیں لکھی جا چکی ہیں۔ کچھ کا کہنا ہے کہ سمے کوئی چیز نہیں، کیول چوڑائی، لمبائی اور گہرائی کی طرح سمے بھی ایک فرضی دشا ہے۔ کچھ کا کہنا ہے کہ دیش یعنی جگہ انت میں جاکر مڑ جاتی ہے یعنی گول ہو جاتی ہے۔ کچھ کا کہنا ہے کہ سمانانتر یعنی متوازی لکیریں اگر کافی دور تک بڑھائی جاویں تو آخر میں مل جاویں گی۔ کچھ کہتے ہیں کہ دیش، کال اور وشو سب سانتک یعنی فانی اور محدود ہیں۔ کچھ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ وشو کہیں بڑھ رہا ہے، کہیں سکڑ رہا ہے اور ہر صورت میں اِس کی شکتی کے چھین ہونے کے ساتھ ساتھ یہ ایک دن نشٹ ہو جاوے گا، اتیادی اتیادی۔ کچھ کا یہ بھی کہنا ہے کہ وشو کی اصلیت کو سوائے بڑے گہرے سائنسدانوں کے اور کوئی سمجھ ہی نہیں سکتا۔

اِس دیش کا پرانا درشن شاستر ہمیشہ سے مانتا چلا آیا ہے کہ دیش، کال اور کریائیں تینوں تین ہیں، پھر بھی اِن میں سے کسی ایک دوسرے سے الگ نہیں کیا جا سکتا اور تینوں ایک برابر مایا یعنی فریب ہیں۔ اِن کا وجود آدمی کے سپنے سے زیادہ حیثیت نہیں رکھتا۔ جو دنیائیں، چاند، سورج وغیرہ ہمیں دکھائی دیتے ہیں اِن کے بیچ بیچ میں اور اِن میں کو نکلتی ہوئی اور بھی دنیائیں ہیں جو بالکل دوسرے ہی طرح کے مادے سے بنی ہیں۔ اُن دنیاؤں میں دیش، کال اور حرکت کے بھی اور ہی ارتھ ہوتے ہیں۔ یہ دنیائیں ہمارے جاگتے سمے کی دنیائیں بھی ہیں اور سپنے کے سمے کی دنیائیں بھی ہیں۔ ہمارے نیچے بھی ہیں اور اوپر بھی ہیں۔ یوروپین ودوان فورنیئر ڈی۔ البے نے اِس وشے پر ایک بہت اچھی کتاب 'ٹو نیو ورلڈس' یعنی دو نئی دنیائیں لکھی ہے۔ اُس کے انوسار اِن میں سے ایک دنیا وہ ہے جو بنا خوردبین کے نہیں دیکھی جا سکتی۔ وہ بھی کروڑہا کروڑ سنکھ جنتوؤں کی دنیا ہے۔ اور دوسری وہ دنیا ہے جو بنا دوربینوں کے نہیں دیکھی جا سکتی جس میں اربوں چھوٹے بڑے ستارے، سیارے، چاند، سورج اور سورجوں کے سورج شامل ہیں۔

یورپ کا وگیان آئنسٹائن کے بعد ویدانت کی اِس کلپنا کی طرف صاف بڑھ رہا ہے کہ انت میں جا کر سب کریا یا حرکت گول گول چکروں میں رہ جاتی ہیں۔ اِس سنسار چکر کا نہ کوئی آدی اور نہ کوئی انت۔ یوں ہر چیز کی

आईस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त

डाक्टर भगवानदास

यह दुनिया क्या है ?

आत्मा, रूह यानी 'मैं' क्या हूँ और अनात्मा यानी माद्दा यानी यह सब जो दिखाई देता है यह क्या है, और इन दोनों में क्या सम्बन्ध है ? यही सवाल दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़े) का मुख्य सवाल है और यही सवाल तेज़ी के साथ साइन्स का मुख्य सवाल होता जा रहा है.

आत्मा और अनात्मा के मेल के दो पहलू हैं. एक पहलू है जिसे हम देश, काल, और क्रिया, यानी मकान, ज़मान और हरकत कहकर बयान करते हैं, और दूसरा पहलू शक्ति के रूप में दिखाई देता है, जिसे हम क्रिया, प्रतिक्रिया और कार्यकारण सम्बन्ध यानी अमल, रद्दे अमल और इल्लत और मालूल का रिश्ता कह सकते हैं. दुनिया में हमारे सारे अनुभव इन्हीं में आ जाते हैं.

जब हमें चीज़ें एक दूसरे के बाद होती मालूम होती हैं तो काल (समय) की कल्पना पैदा होती है. बहुत सी चीज़ों के एक साथ वजूद से देश (जगह) की कल्पना पैदा होती है. चीज़ों के अदलने बदलने से क्रिया (हरकत) की कल्पना पैदा होती है. इन तीनों काल, देश और क्रिया का एक दूसरे के साथ अटूट सम्बन्ध है.

काल (समय) के तीन क्रम हैं भूत, भविष्य और दोनों को मिलाने वाला वर्तमान. देश (जगह) के तीन पाद (क़दम) हैं. ऊपर, नीचे और दोनों को मिलाने वाला बीच. 'यहाँ' भी कह सकते हैं. इन्हीं के रूप लम्बाई, चौड़ाई और गहराई हैं.

क्रिया (हरकत) की तीन दिशाएँ (तीन सिम्त) हैं. इन्हीं को तीन 'प्रकार' भी कह सकते हैं,—आगे, पीछे और गोल चक्कर, दूसरे शब्दों में बढ़ना, सिकुड़ना और घुरीलापन. या वह शक्ति जो सब चीज़ों को मरकज़ की तरफ़ खींचती है, वह जो सबको मरकज़ से दूर फेंकती है, और वह जो चीज़ों को गोलाकार घुमाती है.

यह सब केवल कल्पनाएँ हैं, तसव्वुर हैं, सब ख़ाम-ख़याली हैं. इनका रूप तब बनता है जब इनके साथ किसी द्रव्य, किसी तत्व, किसी तरह के ठोस माद्दे का सम्बन्ध होता है, तब यह सब कल्पनाएँ हमारी ज़िन्दगी के तजरबे बन जाती हैं.

آئنسٹائن کا سدھانت اور ویدانت

ڈاکٹر بھگوان داس

یہ دنیا کیا ہے ؟

آتما٬ روح یعنی 'میں' کیا ہوں اور ان آتما یعنی مادہ یعنی یہ سب جو دکھائی دیتا ہے یہ کیا ہے٬ اور اِن دونوں میں کیا سمبندھ ہے ؟ یہی سوال درشن شاستر (فلسفے) کا مکھیہ سوال ہے اور یہی سوال تیزی کے ساتھ سائنس کا مکھیہ سوال ہوتا جا رہا ہے ۔

آتما اور ان آتما کے میل کے دو پہلو ہیں ۔ ایک پہلو ہے جسے ہم دیش٬ کال٬ اور کریا٬ یعنی مکان٬ زمان اور حرکت کہہ کر ہم بیان کرتے ہیں٬ اور دوسرا پہلو شکتی کے روپ میں دکھائی دیتا ہے٬ جسے ہم کریا٬ پرتی کریا اور کاریہ کارن سمبندھ یعنی عمل٬ رد عمل اور علت اور معلول کا رشتہ کہہ سکتے ہیں ۔ دنیا میں ہمارے سارے انوبھو اِنھیں میں آجاتے ہیں ۔

جب ہمیں چیزیں ایک دوسرے کے بعد ہوتی معلوم ہوتی ہیں تو کال (سمے) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے ۔ بہت سی چیزوں کے ایک ساتھ وجود سے دیش (جگہ) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے ۔ چیزوں کے ادلنے بدلنے سے کریا (حرکت) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے اِن تینوں کال٬ دیش اور کریا کا ایک دوسرے کے ساتھ اٹوٹ سمبندھ ہے ۔

کال (سمے) کے تین کرم ہیں بھوت٬ بھوشیہ اور دونوں کو ملانے والا ورتمان ۔ دیش (جگہ) کے تین پاد (قدم) ہیں ۔ اوپر٬ نیچے اور دونوں کو ملانے والا بیچ ۔ اِنھیں کو پیچھے٬ آگے اور ملانے والا 'یہاں' بھی کہہ سکتے ہیں ۔ اِنھیں کے روپ لمبائی٬ چوڑائی اور گہرائی ہیں ۔

کریا (حرکت) کی تین دشائیں (تین سمت) ہیں ۔ اِنھیں کو تین 'پرکار' بھی کہہ سکتے ہیں٬— آگے٬ پیچھے اور گول چکر دوسرے شبدوں میں بڑھنا٬ سکڑنا اور سریلا پن ۔ یا وہ شکتی جو سب چیزوں کو مرکز کی طرف کھینچتی ہے٬ وہ جو سب کو مرکز سے دور پھینکتی ہے٬ اور وہ جو چیزوں کو گولا کار گھماتی ہے ۔

یہ سب کیول کلپنائیں ہیں٬ تصور ہیں٬ سب خام خیالی ہیں ۔ ان کا روپ جب بنتا ہے جب اِن کے ساتھ کسی دروبہ٬ کسی تتو٬ کسی طرح کے ٹھوس مادے کا سمبندھ ہوتا ہے ۔ تب یہ سب کلپنائیں ہماری زندگی کے تجربے بن جاتی ہیں ۔

चित्रकला और ईरानी और वस्त एशिया की चित्रकला को मिलाकर एक बहुत ही .खूबसूरत चित्रकला के नये ढंग को जनम दिया गया. ईरानी और मध्य एशिया के चितेरों ने भारतीय चित्रकारों के पास बैठकर भारतीय कला के सुन्दर आदर्शों को अपनी कल्पना की उड़ान से और ज्यादा माँझा और सुन्दर बनाया. दोनों, हिन्दू और मुसलमान, कलाकारों ने इस नई शैली को यकसाँ अपनाया. उस समय के किसी चित्र को देखकर यह कह सकना नामुमकिन है कि अमुक चित्र का बनाने वाला हिन्दू चित्रकार है या मुसलमान चित्रकार. जगह जगह इस नई कला के केन्द्र या मरकज़ क़ायम किये गये. राजपूताना के राजपूत राजाओं, कांगड़ा की रियासतों और मध्य भारत के शासकों ने इस नई चित्रकला को बढ़ावा दिया. इसके अलावा मुख़्तलिफ़ सूबों में जहाँ मुग़ल सूबेदार रहते थे या आज़ाद मुसलमान राजाओं ने अपने अपने दरबारों में इस कला को बेहद बढ़ावा दिया. अलग अलग सूबों में और अलग अलग दरबारों में मुक़ामी हालत की वजह से थोड़ा थोड़ा फ़र्क़ इन चित्रकारों की कला में दिखाई देता है लेकिन असली रूह एक ही है. वही सुन्दरता, वही चमक दमक, वही रूमानी अन्दाज़, वही रहस्यवाद—इस नई कला के विविध रूपों में दिखाई देता है और इस कला की एकता को क़ायम रखता है.

संगीत कला

कला में संगीत की एक ख़ास जगह है. यह हर शख़्स जानता है कि मुसलमान संगीतकार और गवइये जिस संगीत का अभ्यास करते हैं वह बिलकुल हिन्दुओं का ही संगीत है. यूँ उत्तर और भारत की संगीत शैली में ऊपरी .फ़र्क़ है; या एक शैली और दूसरी शैली और थोड़ा बहुत अन्तर है लेकिन यह अन्तर मज़हब की वजह से नहीं है. इसकी वजह सिर्फ़ मुक़ामी है. मुसलमानों ने हिन्दू संगीत की महारत हासिल की और नये नये बाजों, नये नये रागों और नई शैलियों से संगीत के दायरे को बढ़ाया. हिन्दुओं ने भी इन नये बाजों और नई राग-रागनियों को खुले दिल से सीखा. हिन्दू उस्तादों के मुसलिम शागिर्द और मुसलिम उस्तादों के हिन्दू शागिर्द एक आम बात थी. उस्ताद और शागिर्दों में अगर हम कोई .फ़र्क़ ढूँढना चाहें तो ढूँढना नामुमकिन है. संगीत और नाच की कला में बड़ी कामयाबी के साथ दोनों कलाओं का मेल जोल बैठाया गया.

लेकिन कल्चरी मेल जोल का कोई बयान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक हम इस बात को न जान लें कि मज़हबी दायरे में हिन्दू मज़हब ने इसलाम पर क्या क्या असरात डाले. हम आगे कभी इस मज़हबी मेल जोल को और इसलाम पर हिन्दू धर्म के असर को बयान करेंगे.

[अंगरेज़ी से तर्जुमा—विश्वम्भरनाथ पांडे]

چترکلا اور ایرانی اور وسط ایشیا کی چترکلا کو ملا کر ایک بہت ہی خوبصورت چترکلا کے نئے ڈھنگ کو جنم دیا گیا۔ ایرانی اور مدھیہ ایشیا کے چتیروں نے بھارتیہ چترکاروں کے پاس بیٹھ کر بھارتیہ چترکلا کے سندر آدرشوں کو اپنی کلپنا کی اڑان سے اور زیادہ مانجھا اور سندر بنایا۔ دونوں، ہندو اور مسلمان، کلاکاروں نے اس نئی شیلی کو یکساں اپنایا۔ اس سمے کے کسی چتر کو دیکھ کر یہ کہہ سکنا ناممکن ہے کہ امک چتر کا بنانے والا ہندو چترکار ہے یا مسلمان چترکار۔ جگہ جگہ اس نئی کلا کے کیندر یا مرکز قایم کیئے گئے۔ راجپوتانہ کے راجپوت راجاؤں، کانگڑا کی ریاستوں اور مدھیہ بھارت کے شاسکوں نے اس نئی چترکلا کو بڑھاوا دیا۔ اس کے علاوہ مختلف صوبوں میں جہاں مغل صوبیدار رہتے تھے یا آزاد مسلمان راجاؤں نے اپنے اپنے درباروں میں اس کلا کو بےحد بڑھاوا دیا۔ الگ الگ صوبوں میں اور الگ الگ درباروں میں مقامی حالت کی وجہ سے تھوڑا تھوڑا فرق ان چترکاروں کی کلا میں دکھائی دیتا ہے لیکن اصلی روح ایک ہی ہے۔ وہی سندرتا، وہی چمک دمک، وہی رومانی انداز، وہی رہسواد— اس نئی کلا کے وودھ روپوں میں دکھائی دیتا ہے اور اس کلا کی ایکتا کو قایم رکھتا ہے۔

سنگیت کلا

کلا میں سنگیت کی ایک خاص جگہ ہے۔ یہ ہر شخص جانتا ہے کہ مسلمان سنگیت کار اور گویئے جس سنگیت کا ابھیاس کرتے ہیں وہ بالکل ہندوؤں کا ہی سنگیت ہے۔ یوں اتر اور بھارت کی سنگیت میں شیلی اوپری فرق ہے یا ایک شیلی اور دوسری شیلی میں تھوڑا بہت انتر ہے لیکن یہ انتر مذہب کی وجہ سے نہیں ہے۔ اسکی وجہ صرف مقامی ہے۔ مسلمانوں نے ہندو سنگیت کی مہارت حاصل کی اور نئے نئے باجوں، نئے نئے راگوں، نئی شیلیوں سے سنگیت کے دایرے کو بڑھایا۔ ہندوؤں نے بھی ان نئے باجوں اور نئی راگ راگنیوں کو کھلے دل سے سیکھا۔ ہندو استادوں کے مسلم شاگرد اور مسلم استادوں کے ہندو شاگرد ایک عام بات تھی۔ استاد اور شاگردوں میں اگر آج ہم کوئی فرق ڈھونڈھنا چاہیں تو ڈھونڈھنا ناممکن ہے۔ سنگیت اور ناچ کی میں کلا بڑی کامیابی کے ساتھ دونوں کلاؤں کا میل جول بیٹھ گیا۔

لیکن کلچری میل جول کا کوئی بیان اس سمے تک پورا نہیں ہوسکتا جب تک ہم اس بات کو نہ جان لیں نہ مذہبی دائرے میں ہندو مذہب نے اسلام پر کیا کیا اثرات ڈالے۔ ہم آگے کبھی اس مذہبی میل جول کو اور اسلام پر ہندو دھرم کے اثر کو بیان کریں گے۔

[انگریزی سے ترجمہ—وشومبھر ناتھ پانڈے]

हुये थे, यहीं पले थे और यहीं बड़े हुये थे. उनकी रग रग में हिंदुस्तानियत पेवस्त थी फिर उनकी कला पर हिंदुस्तान का असर क्यों न पड़ता. हालाँकि उनके रास्ते में रुकावटें थीं और वे चोटी के कारीगर भी न थे फिर भी उनकी छेनी और हथौड़ी ने उन इमारतों पर हिन्दुस्तान की कला की साफ़ छाप छोड़ी है. इस तरह उस ज़माने की मुसलिम इमारतों पर हिन्दुस्तानी कलचर का गहरा असर दिखाई देता है. हर डिज़ाइन में हिन्दू तर्ज़ ढूँढ लीजिये. यह ज़ोरदार लफ़्ज़ों में कहा जा सकता है कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान में रहते रहते ज्यों-ज्यों ज़्यादा दिन बीतते गये, त्यों त्यों उनकी कला पर हिन्दुस्तानियत का गहरा पुट चढ़ता गया."

मुग़लों की तामीरी कला

मुग़लों की तामीरी कला के मुताल्लिक़ यहाँ कुछ कहने की ज़रूरत नहीं. मुग़ल कला का निखार अकबर के ज़माने में हुआ. अकबर ने ऊँचे दरजे के एक ख़ास हिन्दुस्तानी आर्ट को जनम दिया. शाहजहाँ का झुकाव ईरानी आर्ट की तरफ़ था. लेकिन शाहजहाँ भी अकबर के आर्ट की रूह को न बदल सका. तामीरी कला के जानने वालों का बयान है कि शाहजहाँ की इमारतों का बाहरी हिस्सा ईरानी तर्ज़ का है लेकिन इमारतों के भीतर ख़ालिस हिन्दुस्तानी कला के ठोस नमूने नज़र आते हैं.

अगर हम इस उसूल को मान लें कि कला के ही ज़रिये किसी मुल्क या क़ौम की आत्मा का पता चलता है तो यह एक बेकाट सचाई है कि मँझले ज़माने के भारत की तामीरी कला में एक ही आत्मा और एक ही कलचर के दर्शन मिलते हैं. पन्द्रहवीं सदी के बाद से हिन्दू या मुसलमानों की बनवाई हुई एक भी इमारत ऐसी न मिलेगी, चाहे वह क़िला हो या महल, मन्दिर हो या मसजिद जिस पर मिली जुली हिन्दुस्तानी कला की छाप न पड़ी हो—ऐसी कला जिसे मुसलमान हुक्मरानों के साये में हिन्दू शिल्पी और संगतराशों ने तरक़्क़ी दी. पन्द्रहवीं सदी में ग्वालियर में राजा मानसिंह के बनवाये हुये महल इस भारतीय मुसलिम कला के सबसे पहले नमूने हैं. जिस तरह मुसलमान शासकों के बनवाये हुये मक़बरों, महलों और मसजिदों पर भारतीय हिन्दू कला की छाप है उसी तरह वृन्दावन के वैष्णव मन्दिरों, हिन्दू राजाओं और साधुओं की समाधियों और छतरियों पर और भारत में फैली हुई बेशुमार हिन्दू इमारतों पर भारतीय मुसलिम कला की यानी मिली-जुली भारतीय कला की छाप है.

चित्रकला

चित्रकला यानी तसवीर साज़ी के दायरे में भी इसी मिली जुली कला के हमें दर्शन मिलते हैं. क़दीम भारतीय

ہوئے تھے، یہیں پلے تھے اور یہیں بڑے ہوئے تھے۔ اُن کی رگ رگ میں ہندستانیت پیوست تھی پھر اُن کی کلا پر ہندستان کا اثر کیوں نہ پڑتا۔ حالانکہ اُن کے راستے میں رکاوٹیں تھیں اور وے چوٹی کے کاریگر بھی نہ تھے پھر بھی اُن کی چھینی اور ہتھوڑیوں نے اُن عمارتوں پر ہندستان کی کلا کی صاف چھاپ چھوڑی ہے۔ اِس طرح اُس زمانے کی مسلم عمارتوں پر ہندستانی کلچر کا گہرا اثر دکھائی دیتا ہے۔ ہر ڈزائن میں ہندو طرز ڈھونڈھ لیجئے۔ یہ زوردار لفظوں میں کہا جا سکتا ہے کہ مسلمانوں کو ہندستان میں رہتے رہتے جیوں جیوں دن بیتتے گئے، تیوں تیوں اُن کی کلا پر ہندستانیت کا گہرا پٹ چڑھتا گیا۔"

مغلوں کی تعمیری کلا

مغلوں کی تعمیری کلا کے متعلق یہاں کچھ کہنے کی ضرورت نہیں۔ مغل کلا کا نکھار اکبر کے زمانے میں ہوا۔ اکبر نے اونچے درجے کے ایک خاص ہندستانی آرٹ کو جنم دیا۔ شاہجہاں کا جھکاؤ ایرانی آرٹ کی طرف تھا۔ لیکن شاہجہاں بھی اکبر کے آرٹ کی روح کو نہ بدل سکا۔ تعمیری کلا کے جاننے والوں کا بیان ہے کہ شاہجہاں کی عمارتوں کا باہری حصہ ایرانی طرز کا ہے لیکن عمارتوں کے بھیتر خالص ہندستانی کلا کے ٹھوس نمونے نظر آتے ہیں۔

اگر ہم اِس اصول کو مان لیں کہ کلا کے ہی ذریعہ کسی ملک یا قوم کی آتما کا پتہ چلتا ہے تو یہ ایک بے کاٹ سچائی ہے کہ منجھلے زمانے کے بھارت کی تعمیری کلا میں ایک ہی آتما اور ایک ہی کلچر کے درشن ملتے ہیں۔ پندرھویں صدی کے بعد سے ہندو یا مسلمانوں کی بنوائی ہوئی ایک بھی عمارت ایسی نہ ملیگی، چاہے وہ قلعہ ہو یا محل، مندر ہو یا مسجد جس پر ملی جلی ہندستانی کلا کی چھاپ نہ پڑی ہو— ایسی کلا جسے مسلمان حکمرانوں کے سایہ میں ہندو شلپی اور سنگتراشوں نے ترقی دی۔ پندرھویں صدی میں گوالیر کے راجہ مان سنگھ کے بنوائے ہوئے محل اِس بھارتیہ مسلم کلا کے سب سے پہلے نمونے ہیں۔ جس طرح مسلمان شاسکوں کے بنوائے ہوئے مقبروں، محلوں اور مسجدوں پر بھارتیہ ہندو کلا کی چھاپ ہے اُسی طرح ورندا‌ون کے ویشنو مندروں، ہندو راجاؤں اور سادھوؤں کی سمادھیوں اور چھتریوں پر اور بھارت میں پھیلی ہوئی بے شمار ہندو عمارتوں پر بھارتیہ مسلم کلا کی یعنی ملی جلی بھارتیہ کلا کی چھاپ ہے۔

چتر کلا

چتر کلا یعنی تصویر سازی کے دائرے میں بھی اِسی ملی جلی کلا کے ہمیں درشن ملتے ہیں۔ قدیم بھارتیہ

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

हिन्दुस्तान के पुरातत्त्व यानी आर्कियालाजी डिपार्टमेंट के साबिक डाइरेक्टर जनरल सर जान मार्शल ने 'कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' के भाग तीन के 'मुसलिम जमाने की इमारतें' नामक अध्याय में लिखा है:—

"जब हिन्दू और मुसलिम तामीरी कला यानी इमारत साज़ी का समन्वय (मेल) हुआ तो मुसलिम तामीरी कला ने हिन्दू तामीरी कला से बहुत कुछ सीखा. हिन्दू फ़लसफ़े को ज़ाहिर करने वाली हिन्दू शक्लें, बेल बूटे और नक़्क़ाशी किसी न किसी शक्ल में मुसलिम इमारतों में शामिल कर ली गईं. इस तरह जो हिन्दू चीज़ें मुसलिम इमारतों में ली गईं उनकी तादाद बेशुमार है. मुसलिम आर्ट के ऊपर हिन्दू शैली का यह क़र्ज़ा तो ठोस और ऊपर दिखाई देता है लेकिन हिन्दुस्तानी मुसलिम आर्ट पर हिन्दू कला की दो बातों ने सबसे ज़्यादा असर डाला और वे दो बातें हैं—इमारतों की मज़बूती और मज़बूती के साथ साथ उनका आलीशान होना. दूसरे मुल्कों में मुसलिम तामीरी कला की कुछ दूसरी ख़ुसूसियतें हैं. यरुसलम में हरे और सुनहले पत्थरों के स्लैब (चोके) फ़र्श पर या कमरों की दीवारों पर लगाये जाते हैं. ईरान में मकानों के टाइल बढ़िया से बढ़िया रंगों में रंगे जाते हैं. स्पेन की मुसलिम तामीरी कला ने अजीबो ग़रीब तर्ज़ पैदा किये लेकिन किसी भी मुल्क में मुसलिम तामीरी कला में इमारतों की मज़बूती और ख़ूबसूरती का उससे बेहतर मेल नहीं बैठाया गया जितना हिन्दुस्तान में. ये दोनों ख़ुसूसियतें हिन्दुस्तान की अपनी हैं और ये ऐसी ख़ुसूसियतें हैं जिनकी तामीरी कला में और दूसरी ख़ुसूसियतों से ज़्यादा अहमियत है."

हिन्दुस्तान में पहली मुसलिम इमारत सन 1911 में तामीर हुई. यह 'क़ुव्वतुल इसलाम' नाम की एक मसजिद है जिसे क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने तामीर कराया. इस मसजिद के मुताल्लिक सर जान मार्शल लिखते हैं:—

"इस मसजिद को चाहे भीतर से देखिये चाहे बाहर से, यही मालूम होता है कि यह कोई हिन्दू इमारत है. सिर्फ़ पीछे दीवार के पाँच मेहराबों को छोड़कर इस इमारत में एक भी चिह्न ऐसा नहीं है जिससे इसका मुसलमानी होना ज़ाहिर होता हो."

क़ुतुबुद्दीन के दो सौ बरस बाद फ़ीरोज़शाह तुग़लक को भी इमारतें बनाने का बेहद शौक़ हुआ. इतिहास लेखक उसके बनवाये हुये शहरों, क़िलों, महलों, मसजिदों और मक़बरों आदि की एक लम्बी फ़ेहरिस्त पेश करते हैं. तुग़लक़ ज़माने के फ़ने तामीर के मुताल्लिक कहा जाता है कि उस पर से हिन्दू असर कम हो गया था. ताहम—

"जिन संगतराशों और मेमारों ने इन तुग़लक़ी इमारतों को तामीर किया वे सब के सब हिन्दुस्तान में पैदा

ہندستان کی کلچر اور اسلام

ہندستان کے 'پراتتو یعنی آرکیالاجی ڈیپارٹمنٹ کے سابق ڈائرکٹر سر جان مارشل نے 'کیمبرج ہسٹری آف انڈیا' کے بھاگ تین کے 'مسلم زمانے کی عمارتیں' نامک ادھیائے میں لکھا ہے:—

"جب ہندو اور مسلم تعمیری کلا یعنی عمارت سازی کا سملن (میل) ہوا تو مسلم تعمیری کلا نے ہندو تعمیری کلا سے بہت کچھ سیکھا ۔ ہندو فلسفے کو ظاہر کرنے والی ہندو شکلیں' بیل بوٹے اور نقاشی کسی نہ کسی شکل میں مسلم عمارتوں میں شامل کر لی گئیں ۔ اِس طرح جو ہندو چیزیں مسلم عمارتوں میں لی گئیں اُن کی تعداد بےشمار ہے ۔ مسلم آرٹ کے اوپر ہندو شیلی کا یہ قرضہ تو ٹھوس اور اوپر دکھائی دیتا ہے لیکن ہندستانی مسلم آرٹ پر ہندو کلا کی دو باتوں نے سب میں زیادہ اثر ڈالا اور وے دو باتیں ہیں—عمارتوں کی مضبوطی اور مضبوطی کے ساتھ ساتھ اُن کا عالیشان ہونا ۔ دوسرے ملکوں میں مسلم تعمیری کلا کی کچھ دوسری خصوصیتیں ہیں ۔ یرو شلم میں ہرے اور سنہلے پتھروں کے سلیب (چوکے) فرش پر یا کمروں کی دیواروں پر لگائے جاتے ہیں۔ ایران میں مکانوں کے ٹائل بڑھیا سے بڑھیا رنگوں میں رنگے جاتے ہیں ۔ اسپین کی مسلم تعمیرتی کلا نے عجیب و غریب طرز پیدا کئے لیکن کسی بھی ملک میں مسلم تعمیری کلا میں عمارتوں کی مضبوطی اور خوبصورتی کا اِس سے بہتر میل نہیں بیٹھایا گیا جتنا ہندستان میں ۔ یہ دونوں خاصیتیں ہندستان کی اپنی ہیں اور یہ ایسی خاصیتیں ہیں جن کی تعمیری کلا میں اور دوسری خاصیتوں سے زیادہ اہمیت ہے ۔"

ہندستان میں پہلی مسلم عمارت سن 1191 میں تعمیر ہوئی ۔ یہ 'قوۃ الاسلام' نام کی ایک مسجد ہے جسے قطب الدین ایبک نے تعمیر کرایا ۔ اِس مسجد کے متعلق سر جان مارشل لکھتے ہیں:—

"اِس مسجد کو چاہے بھیتر سے دیکھیئے چاہے باہر سے' یہی معلوم ہوتا ہے کہ یہ کوئی ہندو عمارت ہے ۔ صرف پیچھے دیوار کے پانچ محرابوں کو چھوڑ کر اِس عمارت میں ایک بھی چنہ ایسا نہیں ہے جس سے اِس کا مسلمانی ہونا ظاہر ہوتا ہو ۔"

قطب الدین کے دو سو برس بعد فیروز شاہ تغلق کو بھی عمارتیں بنانے کا بےحد شوق ہوا ۔ اتہاس لیکھک اس کے بنائے ہوئے شہروں' قلعوں' محلوں' مسجدوں اور مقبروں ادی کی ایک لمبی فہرست پیش کرتے ہیں ۔ تغلق زمانے کے فن تعمیر کے متعلق کہا جاتا ہے کہ اُس پر سے ہندو اثر کم ہو گیا تھا ۔ تاہم:—

"جن سنگتراشوں اور معماروں نے ان تغلقی عمارتوں کو تعمیر کیا وے سب کے سب ہندستان میں پیدا

मुसलमान और सूबाई ज़बानें

यहाँ इसका फ़िक्र कर देना ज़रूरी है कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की दूसरी सूबाई ज़बानों को तरक़्क़ी देने में कोई कसर बाक़ी नहीं उठा रखी पंजाबी, हिन्दी और बंगला की तरक़्क़ी का एक बहुत बड़ा सबब यह है कि मुसलमान नवाबों, उमराओं, और मसलमान मुसन्निफ़ों और शायरों ने इन ज़ुबानों को तरक़्क़ी देने और माला-माल करने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया. आज अगर इन ज़ुबानों को अपनी तरक़्क़ी पर नाज़ है तो उसके लिये हिन्दू और मुसलमान दोनों को बधाई देनी चाहिये। यह भी कहने की ज़रूरत नहीं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का तर्ज़े अदब और तर्ज़े सख़ुन यकसाँ था. लोगों के लिये यह बता सकना नामुमकिन है कि अमुक नज़्म किसी मुसलमान की लिखी है या हिन्दू की। पंजाबी और बंगला के हिन्दू और मुसलमान लेखकों का लिखने का तर्ज़ बिल्कुल एक सा है. उसमें किसी तरह का फ़र्क़ नहीं पाया जाता. दोनों में कल्चर की एक ही धारा दिखाई देती है. बल्कि अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान लेखकों और शायरों की रचनाओं और ईरान, तुर्की और मिस्र के शायरों और लेखकों की रचनाओं का मुक़ाबला किया जाय तो साफ़ फ़र्क़ नज़र आयेगा. हिन्दुस्तान के मुसलमानों और बाहर के मुसलमानों की कल्चर, सोचने के तरीक़ों और लिखने के तर्ज़ में बहुत फ़र्क़ है. अंगरेज़ों के आने से पहले मुख़्तलिफ़ सूबों के रहने वाले मुसलमानों ने अपने अपने सूबों की ज़बानें अपना ली थीं. वे उन्हीं में बोलते थे, उन्हीं में लिखते थे और उन्हीं में सोचते थे.

मुसलिम तामीरी कला

कल्चरी या सांस्कृतिक मेल-जोल की यह धारा सिर्फ़ ज़बान और अदब तक ही महदूद नहीं रही. उसका असर फ़लसफ़ा, साइंस, और आर्ट पर भी पड़ा. गणित, ज्योतिष, भूगोल, हिकमत, धर्म शास्त्र वग़ैरह सभी बातों में एक दूसरी की अच्छी बातों का एक दूसरे से सीखा गया. लेकिन दोनों कल्चरों का अज़ीमुश्शान संगम आर्ट के दायरे में हुआ.

मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में आने से पहले कला के दायरे में एक नई तरह की कला यानी आर्ट को जनम दिया था. लेकिन जब वे इस मुल्क में आकर बसे, उन्होंने हिन्दुस्तान की कला का ख़ास ख़ास बातों को अपनी कला में शामिल करना शुरू कर दिया. तेरहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक मुसलमानों ने जो इमारतें, क़िले और मक़बरे बनाये उनमें इसी एकता और मेल-जोल की तसवीर दिखाई देती है. दोनों कलाओं का संगम साफ़ चमकता हुआ नज़र आता है.

مسلمان اور صوبائی زبانیں

یہاں اُس کا ذکر کر دینا ضروری ہے کہ مسلمانوں نے ہندستان کی دوسری صوبائی زبانوں کو ترقی دینے میں کوئی کسر باقی نہیں اٹھا رکھی ۔ پنجابی، ہندی اور بنگلا کی ترقی کا ایک بہت بڑا سبب یہ ہے کہ مسلمان نوابوں، اُمراؤں، اور مسلمان مصنفوں اور شاعروں نے اِن زبانوں کو ترقی دینے اور مالا مال کرنے میں بہت بڑا حصہ لیا ۔ آج اگر اِن زبانوں کو اپنی ترقی پر ناز ہے تو اُس کے لئے ہندؤں اور مسلمانوں دونوں کو بدھائی دینی چاہئے۔ یہ بھی کہنے کی ضرورت نہیں کہ ہندو اور مسلمان دونوں کا طرز ادب اور طرز سخن یکساں تھا۔ لوگوں کے لئے یہ بتا سکنا ناممکن ہے کہ امک نظم کسی مسلمان کی لکھی ہے یا ہندو کی ۔ پنجابی اور بنگلا کے ہندو اور مسلمان لیکھکوں کا لکھنے کا طرز بالکل ایکسا ہے ۔ اُس میں کسی طرح کا فرق نہیں پایا جاتا ۔ دونوں میں کلچر کی ایک ہی دھارا دکھائی دیتی ہے ۔ بلکہ اگر ہندستان کے مسلمان لیکھکوں اور شاعروں کی رچناؤں اور ایران، ترکی اور مصر کے شاعروں اور لیکھکوں کی رچناؤں کا مقابلہ کیا جائے تو صاف فرق نظر آئیگا ۔ ہندستان کے مسلمانوں اور باہر کے مسلمانوں کی کلچر، سوچنے کے طریقوں اور لکھنے کے طرز میں بہت فرق ہے ۔ انگریزوں کے آنے سے پہلے مختلف صوبوں کے رہنے والے مسلمانوں نے اپنے اپنے صوبوں کی زبانیں اپنا لی تھیں ۔ وہ اُنہیں میں بولتے تھے، اُنہیں میں لکھتے تھے اور اُنہیں میں سوچتے تھے ۔

مسلم تعمیری کلا

کلچری یا سانسکرتک میل جول کی یہ دھارا صرف زبان اور ادب تک ہی محدود نہیں رہی ۔ اس کا اثر فلسفہ، سائنس اور آرٹ پر بھی پڑا ۔ گنِت، جیوتش، بھوگول، حکمت، دھرم شاستر وغیرہ سبھی باتوں میں ایک دوسرے کی اچھی باتوں کو ایک دوسرے سے سیکھا گیا ۔ لیکن دونوں کلچروں کا عظیم الشان سنگم آرٹ کے دائرے میں ہوا ۔

مسلمانوں نے ہندستان میں آنے سے پہلے کلا کے دائرے میں ایک نئی طرح کی کلا یعنی آرٹ کو جنم دیا تھا ۔ لیکن جب وہ اس ملک میں آ کر بسے، انہوں نے ہندستان کی کلا کی خاص خاص باتوں کو اپنی کلا میں شامل کرنا شروع کر دیا ۔ تیرھویں صدی سے لے کر اُنیسویں صدی تک مسلمانوں نے جو عمارتیں، قلعے اور مقبرے بنائے اُن میں اِسی ایکتا اور میل جول کی تصویر دکھائی دیتی ہے ۔ دونوں کلاؤں کا سنگم صاف چمکتا ہوا نظر آتا ہے ۔

मुसलमान और हिन्दुस्तान की ज़बानें

अगर हम बाहरी बातों को छोड़कर तहज़ीब, तमद्दुन और कल्चर (संस्कृति) पर ग़ौर करें, तो हम देखेंगे कि यहाँ भी उसी तरह का मेल-मिलाप का संगम हुआ है. ज़रा इस बात पर ग़ौर किया जाय कि सच्ची हिन्दुस्तानी कल्चर की तामीर में मुसलमानों ने कितनी क़ुर्बानी की है. ज़बान (भाषा) की ही मिसाल को लीजिये. किसी क़ौम के जज़बातों और उसके ख़यालों को ज़ाहिर करने का सबसे अहम ज़रिया ज़बान ही है. इसलाम की पाक ज़बान अरबी है। जो हमलावर मुसलमान सबसे पहले सिन्ध में आये अरबी उनकी मादरी और वतनी ज़बान थी। हालाँकि पढ़े लिखे लोग ही अरबी की तालीम लेते थे ताहम अरबी हिन्दुस्तान के हर हिस्से में रायज हो गई. मध्य ऐशिया से जो हमलावर यहाँ आये उनकी मादरी ज़बान तुर्की थी. हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत के आग़ाज़ और ख़ात्मे के वक़्त तक सरकारी ज़बान फ़ारसी थी। आज हिन्दुस्तानी मुसलमान इन तीनों ज़ुबानों में से एक भी ज़ुबान नहीं बोलते और न हमलावरों ने ही हारे हुओं पर इन ज़ुबानों को लादा.

इसके बरअक्स मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की सूबाई ज़ुबानों को अपना लिया और अपनी भाषाओं के शब्दों और मुहाविरों से उन्हें सजाया और सँवारा. पँजाब के मुसलमान पंजाबी बोलते हैं, बंगाल के मुसलमान बंगला बोलते हैं, गुजरात के मुसलमान गुजराती और महाराष्ट्र के मुसलमान मराठी बोलते हैं, ग़रज़ यह कि मुसलमान जिस सूबे में रहते हैं उसी सूबे की ज़ुबान बोलते हैं. उस सूबे के हिन्दू और मुसलमान एक ही ज़ुबान में अपने ख़यालातों का इज़हार करते हैं. सिर्फ़ एक ही ज़ुबान रह जाती है और वह है उर्दू. लेकिन उर्दू मुसलमानों की ज़ुबान है ही नहीं. वह हिन्दुस्तान से बाहर किसी भी मुसलिम मुल्क में नहीं बोली जाती. उसे कोई मुसलिम विजेता बाहर से यहाँ नहीं लाया. उर्दू हिन्दी भाषा का ही एक रूप है. उसके ज़्यादातर अलफ़ाज़, उसका व्याकरण सब यहीं से लिया गया. दर असल उर्दू का मूल रूप वह भाषा है जो दिल्ली के आस-पास बोली जाती है और जिसे खड़ी बोली कहते हैं. जब मुसलमान दिल्ली और उसके आस पास के इलाक़े में बस गये तो वे भी खड़ी बोली ही बोलने लगे. वही बाद में अदबी ज़बान बन गई. हिन्दू और मुसलमान दोनों ने इसके अदब को बढ़ाया और सजाया. सच पूछा जाय तो अंग्रेज़ी के प्रचार के पहले उर्दू हिन्दुस्तान की बोलचाल की ज़बान थी

مسلمان اور ہندستان کی زبانیں

اگر ہم باہری باتوں کو چھوڑ کر تہذیب، تمدن اور کلچر (سنسکرتی) پر غور کریں، تو ہم دیکھیں گے کہ یہاں بھی اُسی طرح کا میل ملاپ کا سنگم ہوا ہے۔ ذرا اِس بات پر غور کیا جائے کہ سچی ہندستانی کلچر کی تعمیر میں مسلمانوں نے کتنی قربانی کی ہے۔ زبان (بھاشا) کی ہی مثال کو لیجئے۔ کسی قوم کے جذباتوں اور اُس کے خیالوں کو ظاہر کرنے کا سب سے اہم ذریعہ زبان ہی ہے۔ اِسلام کی پاک زبان عربی ہے۔ جو حملہ آور مسلمان سب سے پہلے سندھ میں آئے عربی اُن کی مادری اور وطنی زبان تھی۔ حالانکہ پڑھے لکھے لوگ ہی عربی کی تعلیم لیتے تھے تاہم عربی ہندستان کے ہر حصہ میں رائج ہو گئی۔ مدھیہ ایشیا سے جو حملہ آور یہاں آئے اُن کی مادری زبان ترکی تھی۔ ہندستان میں مسلمانوں کی حکومت کے آغاز اور خاتمہ کے وقت تک سرکاری زبان فارسی تھی۔ آج ہندستانی مسلمان اِن تینوں زبانوں میں سے ایک بھی زبان نہیں بولتے اور نہ حملہ آوروں نے ہی ہارے ہوؤں پر اِن زبانوں کو لادا۔

اُس کے برعکس مسلمانوں نے ہندستان کی صوبائی زبانوں کو اپنا لیا اور اپنی بھاشاؤں کے شبدوں اور محاوروں سے انہیں سجایا اور سنوارا۔ پنجاب کے مسلمان پنجابی بولتے ہیں، بنگال کے مسلمان بنگلا بولتے ہیں، گجرات کے مسلمان گجراتی اور مہاراشٹر کے مسلمان مراٹھی بولتے ہیں۔ غرض یہ کہ مسلمان جس صوبے میں رہتے ہیں اُس صوبے کی زبان بولتے ہیں۔ اِس صوبے کے ہندو اور مسلمان ایک ہی زبان میں اپنے خیالاتوں کا اظہار کرتے ہیں۔ صرف ایک ہی زبان رہ جاتی ہے اور وہ ہے اُردو۔ لیکن اردو مسلمانوں کی زبان ہے ہی نہیں۔ وہ ہندستان کے باہر کسی ملک میں نہیں بولی جاتی۔ اُسے کوئی مسلم وجیتا باہر سے یہاں نہیں لایا۔ اُردو ہندی بھاشا کا ہی ایک روپ ہے۔ اُس کے زیادہ تر الفاظ، اُس کا ویاکرن سب یہیں سے لیا گیا۔ در اصل اردو کا مول روپ وہ بھاشا ہے جو دلی کے آس پاس بولی جاتی ہے اور جسے کھڑی بولی کہتے ہیں۔ جب مسلمان دلی اور اُس کے آس پاس کے علاقے میں بس گئے تو وے بھی کھڑی بولی ہی بولنے لگے۔ وہی بعد میں ادبی زبان بن گئی۔ ہندو اور مسلمان دونوں نے اُس کے ادب کو بڑھایا اور سجایا۔ سچ پوچھا جائے تو انگریزی کے پرچار کے پہلے اردو ہندستان کی بول چال کی زبان تھی۔

वेद मंत्रों की धुन के साथ सात भाँवरें डालते हैं, मुसलमानों में काज़ी .क़ुरान की आयत पढ़कर निकाह करा देता है. छोटी उम्र में लड़कियों की शादी, विधवा विवाह की रोक, औरतों के ऊपर मर्दों का क़तई हक़ और परदा ये सब बातें हिन्दू और मुसलमानों दोनों में एक सी हैं.

यह सही है कि मज़हबी त्यौहार, व्रत, उपवास और रोज़े दोनों के अलग-अलग हैं लेकिन उनके मनाने का ढंग बहुत कुछ एक सा है. मोहर्रम और दशहरा एक तरह से मनाया जाने लगा. शबे बरात और शिवरात्रि, रमज़ान और नवरात्रि, दिवाली और ईद के उत्सव एक ही तरह से होने लगे. इसके अलावा और बहुत से मेले, तीज और त्यौहार पड़ते थे जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल जुलकर हिस्सा लेते थे. हज़ारों मुसलमान होली खेलते थे और लाखों हिन्दू मुहर्रम मनाते थे. मुसलमानों ने मरने के बाद के क्रिया-करम में बहुत से हिन्दू रिवाज अपना लिये, जैसे तीजा, दसवाँ वग़ैरह. इसके अलावा हामला औरत का पचमाँसा, सतमासा, और बच्चे की पैदायश की छठ, बच्चे की खीर चटाई, सालगिरह, मुण्डन, कनछेदन, हिन्दू-मुसलमान दोनों एक ही तरह से मनाने लगे. ऐसे रस्म-रिवाज, जो ख़ालिस हिन्दू थे, जैसे सती और जौहर का रिवाज, ये भी मुसलमान औरतें अपने ख़ाविन्द के मरने पर करने लगीं. इब्न बतूता मोहम्मद बिन तुग़लक़ और ऐनुलमुल्क की लड़ाई का हाल लिखता है, जिसमें ऐनुलमुल्क के हारने पर उसकी बेगम ने जौहर व्रत करके अपने को ज़िन्दा जला दिया था. 'जाफ़र नामा' में लिखा है कि भटनैर के सूबेदार कमालुद्दीन की बेगम ने अपने शौहर तैमूर के ख़िलाफ़ लड़ाई में जाते समय जौहर व्रत करके अपने को जला डाला था. अमीर ख़ुसरो ने इस पर लिखा था:—

"चूँ ज़ने हिन्दी कसे दर आशिक़ी दीवाना अस्त,
सोख़्तन बर शमा शौहर कारे ओ परवाना अस्त!"

लिबास और पहनावा

किसी भी समाज के अन्दरूनी जज़बात की सबसे नुमायाँ मिसाल उस समाज के लोगों की पोशाक है. इस नुक़्ते नज़र से अगर हम देखें तो हमें पता चलेगा कि किस तरह हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरब, ईरान और मध्य एशियाई मुल्कों के लिबास और पोशाकों को छोड़कर हिन्दुस्तान के लिबास और पहनावे को .क़ुबूल किया. अरबी अमामा, जुब्बा, रज़ा, तहमद; तस्मा, मध्य एशिया का कुर्ता, निमा, मोज़ा सब यहाँ आकर ग़ायब हो गये और उनकी जगह हिन्दू पगड़ी, चिरा, कुरता, अंगरखा, पटका, दुपट्टा, पाजामा और जूते ने ले ली.

وید منتروں کی دھن کے ساتھ سات بھانوریں ڈالتے ہیں، مسلمانوں میں قاضی قرآن کی آیت پڑھ کر نکاح کرا دیتا ہے۔ چھوٹی عمر میں لڑکیوں کی شادی، ودھوا ویواہ کی روک، عورتوں کے اوپر مردوں کا قطعی حق اور پردہ یہ سب باتیں ہندو اور مسلمانوں دونوں میں ایک سی ہیں۔

یہ صحیح ہے کہ مذہبی تیوہار، ورت، اپواس اور روزے دونوں کے الگ الگ ہیں لیکن ان کے منانے کا ڈھنگ بہت کچھ ایک سا ہے۔ محرم اور دشہرہ ایک طرح سے منایا جانے لگا۔ شب برات اور شوراتری، رمضان اور نوراتری، دیوالی اور عید کے اتسو ایک ہی طرح سے ہونے لگے۔ اس کے علاوہ اور بہت سے میلے، تیج اور تیوہار پڑتے تھے جن میں ہندو اور مسلمان دونوں مل جل کر حصہ لیتے تھے۔ ہزاروں مسلمان ہولی کھیلتے تھے اور لاکھوں ہندو محرم مناتے تھے۔ مسلمانوں نے مرنے کے بعد کے کریا کرم میں بہت سے ہندو رواج اپنا لئے، جیسے تیجا، دسواں وغیرہ۔ اس کے علاوہ حاملہ عورت کا پچ ماسا، ست ماسا، اور بچے کی پیدائش کی چھٹ، بچے کی کھیر چٹائی، سال گرہ، مونڈن، کن چھیدن، ہندو مسلمان دونوں ایک ہی طرح سے منانے لگے۔ ایسے رسم رواج جو خالص ہندو تھے جیسے ستی اور جوہر کا رواج، یہ بھی مسلمان عورتیں اپنے خاوند کے مرنے پر کرنے لگیں۔ ابن بطوطہ محمد بن تغلق اور عین الملک کی لڑائی کا حال لکھتا ہے، جس میں عین الملک کے ہارنے پر اس کی بیگم نے جوہر برت کر کے اپنے کو زندہ جلا دیا تھا۔ 'جعفر نامہ' میں لکھا ہے کہ بھٹنیر کے صوبیدار کمال الدین کی بیگم نے اپنے شوہر تیمور کے خلاف لڑائی میں جاتے سمے جوہر برت کر کے اپنے کو جلا ڈالا تھا۔ امیر خسرو نے اس پر لکھا تھا:—

"چوں زن ہندی کسے در عاشقی دیوانہ است،
سوختن بر شمع شوہر کار او پروانہ است!"

لباس اور پہناوا

کسی بھی سماج کے اندرونی جذبات کی سب سے نمایاں مثال اس سماج کے لوگوں کی پوشاک ہے۔ اس نقطہ نظر سے اگر ہم دیکھیں تو ہمیں پتہ چلیگا کہ کس طرح ہندستان کے مسلمانوں نے عرب، ایران اور مدھیہ ایشیائی ملکوں کے لباس اور پوشاکوں کو چھوڑ کر ہندستان کے لباس اور پہناوے کو قبول کیا۔ عربی عمامہ، جبہ، رضا، تہمد؛ تسمہ، مدھیہ ایشیا کا دلہ، نیما، موزہ سب یہاں آ کر غائب ہو گئے اور اُن کی جگہ ہندو پگڑی، چیرا، کرتا، انگرکھا، پٹکا، دوپٹہ، پاجامہ اور جوتے نے لے لی۔

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

एशिया की जिन और दूसरी मुसलमान क़ौमों ने हिन्दुस्तान पर हमला करके यहाँ राज क़ायम किया और जिनकी औलादों ने क़रीब पाँच सौ बरस यहाँ हुकूमत की उन सबका आज पता तक नहीं चलता. मुसलमान हुकमरानों ने न तो अपने क़ौमी ग़ुरूर की परवाह की और न अपने ख़ून को पाक बनाये रखने की. उन्होंने हिन्दुस्तान के क़ौमी समुन्दर में अपने आप को मिला दिया. मुसलिम हुकूमत के ज़माने में जिन क़ौमों, फ़िरक़ों, क़बीलों और ख़ानदानों की धूम थी आज न उनका चर्चा है और न कोई उन्हें जानता है. वे सब रल-मिलकर एक हो गये. यह काम कोई एक दो दिना में नहीं हुआ, सैकड़ों बरसों तक साथ साथ रहने का यह नतीजा है. इसी मुल्क में हमेशा हमेशा के लिये बस जाने की ख़्वाहिश, आपसी शादी-ब्याह, मज़हब में तब्दीली, अपने वतन से किसी तरह का कोई ताल्लुक़ न रखना, वग़ैरह ऐसी बातें थीं, जिनकी वजह से मुसलमान क़ौमी लिहाज़ से बिलकुल हिन्दुस्तानी बन गये. हिन्दू और मुसलमानों का मज़हब बेशक जुदा जुदा है मगर रङ्ग एक है, रूप एक है, शक्ल एक है और क़ौम एक है.

हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अपने हिन्दू भाइयों ही की तरह अपना समाजी निज़ाम क़ायम किया. बाहर के मुसलमानों में जात-पाँत नहीं मगर यहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओं ही की तरह अपनी अलग-अलग बिरादरियाँ बना ली हैं. सय्यदों का रुतबा बिरहमनों की तरह, मुग़ल और पठानों का क्षत्रियों या राजपूतों की तरह, शेख़ बनियों की तरह और बुनकर और दूसरे पेशे वालों को शूद्रों की तरह समझा जाने लगा. ये फ़र्क़ न सिर्फ़ काम धन्धों और रुपये-पैसे की वजह से हो गये बल्कि हिन्दुओं की तरह मुसलमानों की ये बिरादरियाँ पैदाइशी हो गईं. ऊँची बिरादरी के मुसलमानों में एक ग़ुरूर पैदा हो गया.

कलचरी मेल जोल का संगम

हर समाज के संगठन में औरत की एक ख़ास जगह है. इस मामले में अरबों, तुर्कों और हिन्दुओं में बहुत फ़र्क़ है. लेकिन हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरबों और तुर्कों के तरीक़े को नहीं बरता. मुसलमान औरतों ने अपनी हिन्दू बहिनों का ही चलन अपनाया. साज-सिंगार, पहनावा, गहने और ज़ेवर, मिलने-जुलने और रोज़मर्रा के बरताव की बातों में उन्होंने हिन्दू बहिनों का तरीक़ा बरतना शुरू किया. मुसलमानों के शादी-ब्याह बिल्कुल हिन्दुओं की तरह ही होने लगे. निसबत, हल्दी, मेंहदी, तेल, मँढवा, बरात, जलवा, कंगन वग़ैरह की रस्में मुसलमानों ने ज्यों की त्यों हिन्दुओं से ले लीं. शादी की रस्म में हिन्दुओं और मुसलमानों में सिर्फ़ एक फ़र्क़ रह गया और वह यह कि हिन्दुओं में हवन कुंड के चारों तरफ़ दुल्हा और दुल्हन

ہندستان کی کلچر اور اسلام

ایشیا کی جن اور دوسری مسلمان قوموں نے ہندستان پر حملہ کر کے یہاں راج قایم کیا اور جن کی اولادوں نے قریب پانچ سو برس یہاں حکومت کی اُن سب کا آج پتہ تک نہیں چلتا. مسلمان حکمرانوں نے نہ تو اپنے قومی غرور کی پرواہ کی اور نہ اپنے خون کو پاک بنائے رکھنے کی. انہوں نے ہندستان کے قومی سمندر میں اپنے آپ کو ملا دیا. مسلم حکومت کے زمانے میں جن قوموں، فرقوں، قبیلوں اور خاندانوں کی دھوم تھی آج نہ اُن کا چرچا ہے اور نہ کوئی انہیں جانتا ہے۔ وہ سب رل مل کر ایک ہو گئے. یہ کام کوئی ایک دو دنوں میں نہیں ہوا، سیکڑوں برسوں تک ساتھ ساتھ رہنے کا یہ نتیجہ ہے. اِسی ملک میں ہمیشہ ہمیشہ کے لئے بس جانے کی خواہش، آپسی شادی بیاہ، مذہب میں تبدیلی، اپنے وطن سے کسی طرح کا تعلق نہ رکھنا، وغیرہ ایسی باتیں تھیں، جن کی وجہ سے مسلمان قومی لحاظ سے بالکل ہندستانی بن گئے. ہندو اور مسلمانوں کا مذہب بےشک، جدا جدا ہے مگر رنگ ایک ہے، روپ ایک ہے، شکل ایک ہے اور قوم ایک ہے.

ہندستان کے مسلمانوں نے اپنے ہندو بھائیوں ہی کی طرح اپنا سماجی نظام قایم کیا. باہر کے مسلمانوں میں جات پانت نہیں مگر یہاں کے مسلمانوں نے ہندؤں ہی کی طرح اپنی الگ الگ برادریاں بنا لی ہیں. سیدوں کا رتبہ برہمنوں کی طرح، مغل اور پٹھانوں کا چھتریوں یا راجپوتوں کی طرح، شیخ بنیوں کی طرح اور بنکر اور دیگر پیشہ والوں کو شودروں کی طرح سمجھا جانے لگا. یہ فرق نہ صرف کام دھندوں اور روپے پیسے کی وجہ سے ہو گئے بلکہ ہندؤں کی طرح مسلمانوں کی یہ برادریاں پیدائشی ہو گئیں. اونچی برادری کے مسلمانوں میں ایک غرور پیدا ہو گیا.

کلچری میل جول کا سنگم

ہر سماج کے سنگٹھن میں عورت کی ایک خاص جگہ ہے. اِس معاملے میں عربوں، ترکوں اور ہندؤں میں بہت فرق ہے. لیکن ہندستان کے مسلمانوں نے عربوں اور ترکوں کے طریقے کو نہیں برتا. مسلمان عورتوں نے اپنی ہندو بہنوں کا ہی چلن اپنایا. ساج سنگار، پہناوا، گہنے اور زیور، ملنے جلنے اور روزمرہ کے برتاؤ کی باتوں میں انہوں نے ہندؤں بہنوں کا طریقہ برتنا شروع کیا. مسلمانوں کے شادی بیاہ بالکل ہندوں کی ہی طرح ہونے لگے. نسبت، ہلدی، مہندی، تیل، منڈوا، برات، جلوا، کنگن وغیرہ کی رسموں مسلمانوں نے جیوں کی تیوں ہندؤں سے لے لیں. شادی کی رسم میں ہندؤں اور مسلمانوں میں صرف ایک فرق رہ گیا اور وہ یہ کہ ہندؤں میں ہون کنڈ کے چاروں طرف دولہا اور دلہن

गाड़ी उनके सामने से तेजी के साथ निकल गई और नज़र से गुम हो गई.

बरफ़ अब और ज़्यादह तेजी के साथ गिर रहा था. उस बरफ़ में से ही बच्चों के सवाल का जवाब आता हुआ मालूम पड़ता था. यह बरफ़, यह हवा और यह जवाब पश्चिम की तरफ़ से लड़ाई के उस मैदान से आ रहा था जहाँ पिरट नाम के गाँव के क़रीब, अंगूर की टट्टियों में, यही बरफ़ स्तोयान की क़ब्र के ऊपर जमा होता जा रहा था!

گاڑی اُن کے سامنے سے تیزی کے ساتھ نکل گئی اور نظر سے گم ہو گئی.

برف اب اور زیادہ تیزی کے ساتھ گر رہا تھا. اُس برف میں سے ہی بچوں کے سوال کا جواب آتا ہوا معلوم پڑتا تھا. یہ برف، یہ ہوا اور یہ جواب پچھم کی طرف سے لڑائی کے اُس میدان سے آ رہا تھا جہاں پرٹ نام کے گاؤں کے قریب، انگور کی ٹٹیوں میں، یہی برف استویان کی قبر کے اُوپر جما ہوتا جا رہا تھا!

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

डाक्टर सय्यद महमूद

मुसलमानों पर एक इलज़ाम यह लगाया जाता है कि चूँकि वे हमलावर विदेशियों की हैसियत से इस मुल्क में आये इसलिये वे इस मुल्क के लोगों से बिलकुल अलग-अलग रहे. यह भी इलज़ाम लगाया जाता है कि हिन्दू और मुसलमानों के बीच कोई बात मेल की नहीं है इसलिये इस मुल्क की भलाई बुराई के साथ मुसलमानों का कोई सरोकार नहीं है. यह भी कहा जाता है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों और बाहर के मुसलमानों में सब बातें मिलती जुलती और मेल की हैं इसलिये बाहर के मुसलमानों के साथ यहाँ के मुसलमानों की ख़ूब निभ सकती है. अब हमें देखना चाहिये कि इस मामले में इतिहास क्या रोशनी डालता है ?

क़ौमों की मिलावट

यह बात सभी क़बूल करेंगे कि थोड़े से लोगों को छोड़कर कौम के लिहाज़ से हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई, भेद या फ़र्क़ नहीं है. दोनों की जिस्मानी बनावट, गठन, रंग, रूप, चेहरा-मोहरा बिलकुल यकसाँ है. पुराने हमलावार अरबों तुर्कों, और ईरानियों का आज हिन्दुस्तान में कहीं पता तक नहीं चलता जिन अरब फ़ौजियों ने मोहम्मद बिन क़ासिम की जनरैली में सिन्ध के सूबे पर हमला किया था या जिन अरब ख़ानदानों ने सिन्ध पर सैकड़ों बरसों तक हुकूमत की थी, उनका आज नामोनिशान तक नहीं मिलता. ग़ज़नवी, ग़ोरी, मुग़ल, तुर्क और अफ़ग़ानों के अलावा वस्त (मध्य)

ھندستان کی کلچر اور اِسلام

ڈاکٹر سید محمود

مسلمانوں پر ایک الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ چونکہ وے حملہ آور ودیشیوں کی حیثیت سے اِس ملک میں آئے اِس لئے وے ملک کے لوگوں سے بالکل الگ تھلگ رہے. یہ بھی الزام لگایا جاتا ہے کہ ہندو اور مسلمانوں کے بیچ کوئی بات میل کی نہیں ہے اِس لئے ملک کی بھلائی برائی کے ساتھ مسلمانوں کا کوئی سروکار نہیں ہے. یہ بھی کہا جاتا ہے کہ ہندستان کے مسلمانوں اور باہر کے مسلمانوں میں سب باتیں ملتی جلتی اور میل کی ہیں اِس لئے باہر کے مسلمانوں کے ساتھ یہاں کے مسلمانوں کی خوب نبھ سکتی ہے. اب ہمیں دیکھنا چاہئے کہ اس معاملے میں اِتہاس کیا روشنی ڈالتا ہے ؟

قوموں کی ملاوٹ

یہ بات سبھی قبول کریں گے کہ تھوڑے سے لوگوں کو چھوڑ کر قوم کے لحاظ سے ہندوؤں اورمسلمانوں میں کوئی بھید یا فرق نہیں ہے. دونوں کی جسمانی بناوٹ، گٹھن، رنگ، روپ، چہرہ مہرہ بالکل یکساں ہے. پرانے حملہ آور عربوں، ترکوں، اور ایرانیوں کا آج ہندستان میں پتہ تک نہیں چلتا. جن عرب فوجیوں نے محمد بن قاسم کی جنریلی میں سندھ کے صوبے پر حملہ کیا تھا یا جن عرب خاندانوں نے سندھ پر سیکڑوں برسوں تک حکومت کی تھی، اُن کا آج نام و نشان تک نہیں ملتا. غزنوی، غوری، مغل، ترک اور افغانستان کے علاوہ وسط (مدھیہ)

अफ़सर रुक गये और हैरान होकर लड़की की तरफ़ देखने लगे.

उनमें से एक अफ़सर ने पूछा:—"तुम्हारा भाई कौन है ?"

रादुलचो ने घबराये हुये जवाब दिया—"स्तोयान भैया ! हमारा भाई स्तोयान !" रादुलचो को इस बात पर अचरज मालूम होता था कि फ़ौजी वर्दी पहने हुये कप्तान यह न जानता हो कि स्तोयान उनका भाई है.

अफ़सर ने फिर हैरान होकर पूछा:—"कौन स्तोयान ?"

कीना ने बड़ी दृढ़ता के साथ जवाब दिया:—"वेतरेन गाँव का रहने वाला स्तोयान !"

अफ़सर ने अपने साथी से कुछ कहा और फिर बड़े प्यार के साथ कीना से पूछा:—

"क्या तुम्हारा भाई घुड़सवार फ़ौज में है ?"

बेचारी कीना ने बिना कुछ समझे जवाब दे दिया:—"हाँ, हाँ."

अफ़सर ने कहा:—"बेटी ! वह हमारे साथ नहीं है."

दूसरे अफ़सर ने बच्चों से कहा:—"गाँव को लौट जाओ, नहीं तो तुम यहीं सरदी में जम जाओगे."

यह कहकर दोनों अफ़सर अपने घोड़े को हण्टर लगाते हुये बाक़ी सवारों के पीछे-पीछे चल दिये.

कीना अब चिल्ला रही थी. रादुलचो के टपाटप आंसू गिर रहे थे. दोनों के हाथ और पैर सरदी से ठिठुर रहे थे. उनके गाल नीले पड़ गये थे. सामने गाँव का रास्ता साफ़ दिखाई दे रहा था. पर उस पर अब कोई आदमी या आदमज़ाद न था. सब अपने-अपने घर चले गये थे. शाम हो गई थी. अँधेरा बढ़ रहा था. ठन्डी हवा और ज़्यादह काटती हुई मालूम होती थी. केवल दूर फ़ासले पर घुड़सवारों का वह गिरोह एक काले बादल की तरह चला जाता हुआ और गुम होता हुआ नज़र आता था. ठन्डी हवा के साथ सवारों के गाने की आवाज़ भी बच्चों के कानों में पड़ रही थी. कीना और रादुलचो ने अब अपने गाँव की तरफ़ लौटना शुरू किया.

रात होती जा रही थी. दोनों ने अपने-अपने हाथ अपने कपड़ों में छिपा रखे थे. दोनों धीरे-धीरे रोते हुये चले जा रहे थे. उन्हें बार-बार यह ख़याल आ रहा था कि माँ दरवाज़े पर खड़ी हुई भैया की बाट जोह रही होगी.

पहाड़ी के पीछे की तरफ़ से एक और गाड़ी आती हुई दिखाई दी जिसमें तीन घोड़े जुते हुये थे.

कीना ने फिर चिल्लाकर पूछा:—"जनाब ! क्या फ़ौज के कुछ और सिपाही अभी पीछे आ रहे हैं ?"

افسر رک گئے اور حیران ہو کر لڑکی کی طرف دیکھنے لگے .

اُن میں سے ایک افسر نے پوچھا :—"تمہارا بھائی کون ہے ؟"

رادل‌چو نے گھبرائے ہوئے جواب دیا:—"استویان بھیا ! ہمارا بھائی استویان !" رادل چو کو اِس بات پر اچرج معلوم ہوتا تھا کہ فوجی وردی پہنے ہوئے کپتان یہ نہ جانتا ہو کہ استویان اُن کا بھائی ہے .

افسر نے پھر حیران ہو کر پوچھا—"کون استویان ؟"

کینا نے بڑی دردھتا کے ساتھ جواب دیا—"ویترین گاؤں کا رہنے والا استویان !"

افسر نے اپنے ساتھی سے کچھ کہا اور پھر بڑے پیار کے ساتھ کینا سے پوچھا:—

"کیا تمہارا بھائی گھڑسوار فوج میں ہے ؟"

بیچاری کینا نے بنا کچھ سمجھے جواب دے دیا:—"ہاں ہاں ."

افسر نے کہا:—"بیٹی ! وہ ہمارے ساتھ نہیں ہے ."

دوسرے افسر نے بچوں سے کہا:—"گاؤں کو لوٹ جاؤ نہیں تو تم یہاں سردی میں جم جاؤ گے ."

یہ کہہ کر دونوں افسر اپنے گھوڑوں کو ہنٹر لگاتے ہوئے باقی سواروں کے پیچھے پیچھے چل دیئے .

کینا اب چلا رہی تھی . رادل چو کے ٹپاٹپ آنسو گر رہے تھے . دونوں کے ہاتھ اور پیر سردی سے ٹھٹھر رہے تھے . اُن کے گال نیلے پڑ گئے تھے . سامنے گاؤں کا راستہ صاف دکھائی دے رہا تھا . پر اُس پر اب کوئی آدمی یا آدم زاد نہ تھا . سب اپنے اپنے گھر چلے گئے تھے . شام ہو گئی تھی . اندھیرا بڑھ رہا تھا. ٹھنڈی ہوا اور زیادہ کاٹتی ہوئی معلوم ہوتی تھی . کیول دور فاصلے پر گھڑ سواروں کا وہ گروہ ایک کالے بادل کی طرح چلا جاتا ہوا اور گم ہوتا ہوا نظر آتا تھا . ٹھنڈی ہوا کے ساتھ سواروں کے گانے کی آواز بھی بچوں کے کانوں میں پڑ رہی تھی . کینا اور رادل‌چو نے اب اپنے گاؤں کی طرف لوٹنا شروع کیا .

رات ہوتی جا رہی تھی . دونوں نے اپنے اپنے ہاتھ اپنے کپڑوں میں چھپا رکھے تھے . دونوں دھیرے دھیرے روتے ہوئے چلے جا رہے تھے . اُنہیں بار بار یہ خیال آ رہا تھا کہ ماں دروازے پر کھڑی ہوئی بھیا کی باٹ جوہ رہی ہوگی .

پہاڑی کے پیچھے کی طرف سے ایک اور گاڑی آتی ہوئی دکھائی دی جس میں تین گھوڑے جتے ہوئے تھے .

کینا نے پھر چلا کر پوچھا:—"جناب ! کیا فوج کے کچھ اور سپاہی ابھی پیچھے آ رہے ہیں ؟"

हुई थी. दो सिपाही उन्हें मोड़ पर आते दिखाई दिये. दोनों के ऊपर काफ़ी बरफ़ जमा हुआ था. बच्चों ने उन्हें देखा. स्तोयान उनमें नहीं था.

कीना ने उन सिपाहियों से पूछाः—"क्यों जी ! क्या फ़ौज इधर को आ रही है ?"

उनमें से एक ने जवाब दिया—"ऐ लड़की, हमें नहीं मालूम. तुम किसके इन्तज़ार में खड़ी हो ?"

रादुलचो ने जवाब दिया—"अपने भाई के इन्तज़ार में !"

सिपाही थके हुये थे. वे आगे बढ़ गये.

कीना ने फिर दूर तक देखने की कोशिश की. दोनों को सरदी लगने लगी. कीना लड़खड़ाने लगी. रादुलचो को कपकपी लग गई. पर उनके स्तोयान भैया आने वाले थे, इसलिये वह दोनों भैया का इन्तज़ार करते रहे. उन्हें यह भी ख़्याल था कि अगर वह भैया को अपने साथ घर न ले गये तो माँ उन्हें डाँटेगी और रोवेगी.

सामने से एक गाड़ी आई. उसमें दो मुसाफ़िर बैठे हुये थे. दोनों भेड़ की खाल के लम्बे गरम कोट पहने हुये थे. उनके सरों पर ऊँची गरम टोपियाँ थीं. गाड़ी जब दोनों बच्चों के बराबर में आई तो कीना घोड़ों के सामने आकर खड़ी हो गई.

उसने गाड़ी में बैठे हुये मुसाफ़िरों से पूछाः—"जनाब ! क्या उधर से कोई फ़ौज आ रही है ?"

मुसाफ़िरों में से एक ने जवाब दियाः—"प्यारी लड़की ! हमें नहीं मालूम" मुसाफ़िर ने अपनी टोपी को कुछ ऊँचा करके हैरानी के साथ लड़की को देखा. लड़की सरदी से लाल और नीली हो रही थी.

गाड़ी आगे बढ़ी चली गई.

दोनों बच्चे उसी जगह डटे खड़े रहे. घंटों बीत गये. ठंडी पहाड़ी हवा और ज़ियादह तेज़ हो गयी और उनके चेहरों पर थपेड़े देने लगी. उनके कपड़े हवा में उड़ने लगे. बरफ़ भी तेज़ी के साथ गिरता रहा. लेकिन दोनों बच्चे वहाँ से न हटे. उनकी आँखें सड़क के मोड़ पर लगी हुई थीं. वह इन्तज़ार में थे कि कोई और आदमी उधर से आता हुआ दिखाई दे.

यकायक कीना का दिल आशा से उछलने लगा. कुछ घुड़सवार मोड़ पर दिखाई दिये जो उन्हीं की तरफ़ आ रहे थे. सवार बहुत से थे. कीना ने सोचा हो सकता है भैया भी इन्हीं में हो. वह टकटकी लगाये उनकी तरफ़ देखती रही. सवार आगे बढ़ते गए और दोनों बच्चों के सामने से जाने लगे. उनके पीछे-पीछे दो अफ़सर मालूम होते थे. कीना ने हाथ उठाकर उन अफ़सरों की तरफ़ इशारा करके रोते हुये कहाः—"कप्तान साहब ! क्या मेरा भैया आ रहा है ?"

ہوئی تھی. دو سپاہی انہیں موڑ پر آتے دکھائی دیئے ۔ دونوں کے اوپر کافی برف جمع ہوا تھا ۔ بچوں نے انہیں دیکھا ۔ استویان اُن میں نہیں تھا ۔

کینا نے اُن سپاہیوں سے پوچھا:—"کیوں جی ! کیا فوج اِدھر کو آرہی ہے ؟"

اُن میں سے ایک نے جواب دیا—"اے لڑکی ہمیں نہیں معلوم۔ تم کس کے انتظار میں کھڑی ہو ؟"

رادلچو نے جواب دیا: —"اپنے بھائی کے انتظار میں !"

سپاہی تھکے ہوئے تھے ۔ وہ آگے بڑھ گئے ۔

کینا نے پھر دور تک دیکھنے کی کوشش کی ۔ دونوں کو سردی لگنے لگی ۔ کینا لڑکھڑانے لگی ۔ رادلچو کو کپکپی لگ گئی ۔ پر اُن کے استویان بھیا آنے والے تھے' اِس لئے وہ دونوں بھیا کا انتظار کرتے رہے ۔ اُنہیں یہ بھی خیال تھا کہ اگر وہ بھیا کو اپنے ساتھ گھر نہ لے گئے تو ماں انہیں ڈانٹیگی اور روئے گی ۔

سامنے سے ایک گاڑی آئی ۔ اُس میں دو مسافر بیٹھے ہوئے تھے ۔ دونوں بھیڑ کی کھال کے لمبے گرم کوٹ پہنے ہوئے تھے ۔ اُن کے سروں پر اونچی گرم ٹوپیاں تھیں ۔ گاڑی جب دونوں بچوں کے برابر میں آئی تو کینا گھوڑوں کے سامنے آ کر کھڑی ہو گئی ۔

اُس نے گاڑی میں بیٹھے ہوئے مسافروں سے پوچھا:—"جناب ! کیا اِدھر سے کوئی فوج آرہی ہے ؟"

مسافروں میں سے ایک نے جواب دیا:—"پیاری لڑکی ! ہمیں نہیں معلوم ۔" مسافر نے اپنی ٹوپی کو کچھ اونچا کر کے حیرانی کے ساتھ لڑکی کو دیکھا ۔ لڑکی سردی سے لال اور نیلی ہو رہی تھی ۔

گاڑی آگے بڑھی چلی گئی ۔

دونوں بچے اُسی جگہ ڈٹے کھڑے رہے ۔ گھنٹوں بیت گئے ۔ ٹھنڈی پہاڑی ہوا اور زیادہ تیز ہو گئی اور اُن کے چہروں پر تھپیڑے دینے لگی ۔ اُن کے کپڑے ہوا میں اڑنے لگے ۔ برف بھی تیزی کے ساتھ گرتا رہا ۔ لیکن دونوں بچے وہاں سے نہ ہٹے ۔ اُن کی آنکھیں سڑک کے موڑ پر لگی ہوئی تھیں ۔ وہ انتظار میں تھے کہ کوئی اور آدمی اُدھر سے آتا ہوا دکھائی دے ۔

یکایک کینا کا دل آشا سے اچھلنے لگا ۔ کچھ گھوڑسوار موڑ پر دکھائی دیئے جو انہیں کی طرف آ رہے تھے ۔ سوار بہت سے تھے ۔ کینا نے سوچا ہو سکتا ہے بھیا بھی انہیں میں ہوں ۔ وہ ٹکٹکی لگائے اُن کی طرف دیکھتی رہی ۔ سوار آگے بڑھتے گئے اور دونوں بچوں کے سامنے سے جانے لگے ۔ اُن کے پیچھے پیچھے دو افسر معلوم ہوتے تھے ۔ کینا نے ہاتھ اٹھا کر اُن افسروں کی طرف اشارہ کر کے روتے ہوئے کہا:—"کپتان صاحب ! کیا میرا بھیا آ رہا ہے ؟"

उससे उसने मोम बत्तियाँ खरीदीं और उन्हें गिरजे में सब मूर्तियों के सामने जला-जला कर रख दीं. खुशी-खुशी वह घर लौटी.

रास्ते में वह अपने मन ही मन में बड़बड़ाती जाती थी;—"अच्छा, अच्छा, आज का दिन यह है, कल बड़ा दिन है......अभी भी वक्त है. ऐ प्रभु ईसा की माँ ! मेरा फ़रिश्ते जैसा लाल मुझ तक पहुँचा दो......ऐ प्रभु ईसा मसीह ! मेरे मुरझाए हुए दिल को खुशी अता करो."

कीना दौड़ती हुई घर में आई और माँ से कहने लगी:— "माँ ! गाँव के कुछ और नौजवान लड़ाई के मैदान से लौट आए हैं."

बूढ़ी तसेना को कुछ गुस्सा सा आ गया. उसने अनमने दिल से जवाब दिया:—"मुझे दूसरों के संदेशे ही ला ला कर मत दो, बल्कि जिस तरह और दूसरी लड़कियाँ अपने भाइयों से मिलने जा रही हैं तुम भी जाकर अपने भैया का स्वागत करो."

बालक रादुलचो ने बीच में दखल देकर कहा.—"माँ ! मैं भी कीना बहन के साथ जाऊँगा."

दोनों बच्चे दौड़ते हुए बरफ़ से ढकी हुई गली को पार कर गये. वह गाँव के बाहर की बड़ी सड़क तक पहुँच गये और सड़क के उस पार खेतों में जाकर खड़े हो गए.

बूढ़ी तसेना अपने दरवाजे के बाहर खड़ी हुई बेटे का इन्तजार करने लगी.

पहाड़ की तरफ़ से ठन्डी सनसनाती हुई हवा चली आ रही थी. पहाड़ों की चोटियाँ, घाटियाँ और मैदान सब बरफ़ से सफ़ेद हो रहे थे. बादल घिरे चले आ रहे थे. काले कौवे सड़क के ऊपर पर फड़फड़ा रहे थे या दरख़्तों की नंगी शाखों पर बैठे हुए थे. वह सड़क इख़्तिमान घाटी तक जाती थी. सड़क पर जगह-जगह नौजवान लड़कियों, बच्चों और बूढ़ी औरतों के झुन्ड जमा थे. हर झुन्ड किसी न किसी के इन्तजार में था......सिपाही अभी तक घर लौट रहे थे. कोई अकेले-अकेले आ रहे थे और कोई कई-कई के गिरोह में. कीना और रादुलचो पहले एक गिरोह की तरफ़ गए, फिर दूसरे की तरफ़, और फिर तीसरे की तरफ़ और फिर और आगे बढ़ गये. वे चाहते थे कि वे ही स्तोयान को सबसे पहले देखें और उससे मिलें. उन्हें विश्वास था कि वे उसे तुरन्त ही पहचान लेंगे. बरफ़ पड़ना शुरू हो गया था और बरफ़ के गिरते हुए गाले उनकी आँखों के सामने बार-बार परदा सा डाल देते थे.

सड़क पहले ऊपर को जाती थी और फिर पहाड़ी के पीछे गुम हो जाती थी. कीना और रादुलचो उस पहाड़ी चोटी के ऊपर पहुंच गए. हवा वहाँ और भी ज़ियादह तेज़ और काटती

اس سے اس نے موم بتیاں خریدیں اور انہیں گرجے میں سب مورتیوں کے سامنے جلا جلا کر رکھ دیں ۔ خوشی خوشی وہ گھر لوٹی ۔

راستے میں وہ اپنے من ہی من میں بڑبڑاتی جاتی تھی:—"اچھا، اچھا، آج کا دن یہ ہے، کل بڑا دن ہے...ابھی بھی وقت ہے ۔ اے پربھو عیسیٰ کی ماں ! میرا فرشتہ جیسا لال مجھ تک پہنچا دو...اے پربھو عیسیٰ مسیح ! میرے مرجھائے ہوئے دل کو خوشی عطا کرو ۔"

کینا دوڑتی ہوئی گھر میں آئی اور ماں سے کہنے لگی:— "ماں ! گاؤں کے کچھ اور نوجوان لڑائی کے میدان سے لوٹ آئے ہیں ۔"

بوڑھی تسینا کو کچھ غصہ سا آ گیا ۔ اس نے ان‌منے دل سے جواب دیا:—"مجھے دوسروں کے سندیشے ہی لا لا کر مت دو، بلکہ جس طرح اور دوسری لڑکیاں اپنے بھائیوں سے ملنے جا رہی ہیں تم بھی جا کر اپنے بھیا کا سواگت کرو ۔"

بالک رادل‌چو نے بیچ میں دخل دے کر کہا:—"ماں ! میں بھی کینا بہن کے ساتھ جاؤنگا ۔"

دونوں بچے دوڑتے ہوئے برف سے ڈھکی ہوئی گلی کو پار کر گئے ۔ وہ گاؤں کے باہر کی بڑی سڑک تک پہنچ گئے اور سڑک کے اس پار کھیتوں میں جا کر کھڑے ہو گئے ۔

بوڑھی تسینا اپنے دروازے کے باہر کھڑی ہوئی بیٹے کا انتظار کرنے لگی ۔

پہاڑ کی طرف سے ٹھنڈی سنسناتی ہوا چلی آ رہی تھی ۔ پہاڑوں کی چوٹیاں، گھاٹیاں اور میدان سب برف سے سفید ہو رہے تھے ۔ بادل گھرے چلے آ رہے تھے ۔ کالے کوئے سڑک کے اوپر پر پھڑ پھڑا رہے تھے یا درختوں کی ننگی شاخوں پر بیٹھے ہوئے تھے ۔ وہ سڑک اختیمان گھاٹی تک جاتی تھی ۔ سڑک پر جگہ جگہ نوجوان لڑکیوں، بچوں اور بوڑھی عورتوں کے جھنڈ جمع تھے ۔ ہر جھنڈ کسی نہ کسی کے انتظار میں تھا...سپاہی ابھی تک گھر لوٹ رہے تھے ۔ کوئی اکیلے اکیلے آ رہے تھے اور کوئی کئی کئی کے گروہ میں ۔ کینا اور رادل‌چو پہلے ایک گروہ کی طرف گئے، پھر دوسرے کی طرف، اور پھر تیسرے کی طرف اور پھر اور آگے بڑھ گئے ۔ وے چاہتے تھے کہ وے ہی استویان کو سب سے پہلے دیکھیں اور اس سے ملیں ۔ انہیں وشواس تھا کہ وے اسے ترنت ہی پہچان لیں گے ۔ برف پڑنا شروع ہو گیا تھا اور برف کے گرتے ہوئے گالے ان کی آنکھوں کے سامنے بار بار پردہ سا ڈال دیتے تھے ۔

سڑک پہلے اوپر کو جاتی تھی اور پھر پہاڑی کے پیچھے گم ہو جاتی تھی ۔ کینا اور رادل‌چو اس پہاڑی کی چوٹی پر پہنچ گئے ۔ ہوا وہاں اور بھی زیادہ تیز اور کاٹتی

पर दिमितर को भी स्तोयान की कोई खबर नहीं थी. उसने जवाब दियाः—"शायद उसे विदिन की तरफ़ भेजा गया है." माँ की चिन्ता देखकर दिमितर को भी दुख हुआ. उसने फिर कहाः—"शायद वह कहीं से किसी दूसरे रास्ते से आता होगा." यह कहकर दिमितर कुछ सोचने सा लगा.

तसेना ने ठन्डी साँस भरकर कहाः—"हे ईश्वर ! हे प्रभू ! मेरा लाल इस समय कहाँ होगा !"

वहाँ से वह स्तोयानका के घर गई. दरवाज़े पर पहुँचते ही उसका दिल काँपने लगा. वह सोचने लगी कि शायद स्तोयानका से उसे अपने बेटे का कुछ समाचार मिल सके और यह मालूम हो जाय कि स्तोयानका बड़े दिन के त्योहार तक घर आ जायगा या नहीं. वह स्तोयानका से कुछ खुशखबरी सुनना चाहती थी. पर स्तोयानका चुप रही. कवल उसकी आँखें लाल दिखाई दीं.

[4]

आज सारे गाँव में चहल-पहल है. लड़ाई के मैदान से पहली पलटन वापिस आ रही है. गाँव वाले उसके स्वागत की तैयारियाँ कर रहे हैं. गली के बीच में तसेना के घर के पास एक दूसरे के आमने सामने दो बल्लियाँ गाड़ी गईं. उन दोनों के ऊपर मेहराब के तौर पर एक हरी शाख़ मोड़कर बाँध दी गई. इस तरह पलटन के स्वागत के लिए एक फाटक बना दिया गया. लोगों ने चीड़ के दरख़्तों की .ख़ुशबूदार टहनियाँ पहाड़ों पर से लाकर दोनों बल्लियों और मेहराब के ऊपर लपेट दीं. पास के शहर पाज़ारजिक से एक तख़्ता लाकर उस महराब पर लटका दिया गया. तख़्ते पर लिखा हुआ थाः— बहादुर सिपाहियो ! स्वागत ! चारों तरफ़ तिरंगे राष्ट्रीय झन्डे लगा दिए गए.

विजयी पलटन आई और चली गई.

बेचारी माँ सोचने लगीः—

"हो सकता है कि मेरा बेटा पीछे आ रहा हो. शायद वह त्यौहार से ठीक एक दिन पहले पहुँचना चाहता है. उसे परदेस में बड़ा दिन बिताने की क्या ज़रूरत ! अभी तो सिपाही आ ही रहे हैं. एक-एक कर चले आ रहे हैं. शाम तक उसके आने के लिए काफ़ी समय है. उसे मालूम है कि यहाँ घर पर इतने आदमी बेचैनी के साथ उसकी तरफ़ आँख लगाए बैठे हैं."

[5]

सुबह के वक़्त बूढ़ी तसेना बहुत जल्दी गिरजा गई. स्तोयान ने जो लेख उसके पास भेजा था उसे उसने सुना डाला.

پر دیمیتر کو بھی استویان کی کوئی خبر نہیں تھی ۔ اُس نے جواب دیا:—"شاید اُسے ودن کی طرف بھیجا گیا ھے ۔" ماں کی چنتا دیکھ کر دیمیتر کو بھی دکھ ھوا ۔ اس نے پھر کہا —"شاید وہ کہیں سے کسی دوسرے راستے سے آتا ھوگا ۔" یہ کہہ کر دیمیتر کچھ سوچنے سا لگا ۔

تسینا نے ٹھنڈی سانس بھرکر کہا:—"ھے ایشور ! ھے پربھو ! میرا لال اِس سمے کہاں ھوگا !"

وھاں سے وہ استویانکا کے گھر گئی ۔ دروازے پر پہنچتے ھی اُس کا دل کانپنے لگا ۔ وہ سوچنے لگی شاید استویانکا سے اُسے اپنے بیٹے کا کچھ سماچار مل سکے اور یہ معلوم ھو جائے کہ استویانکا بڑے دن کے تیوہار تک گھر آ جائے گا یا نہیں ۔ وہ استویانکا سے کچھ خوش خبری سننا چاھتی تھی ۔ پر استویانکا چپ رھی ۔ کیول اُس کی آنکھیں لال دکھائی دیں ۔

[4]

آج سارے گاؤں میں چہل پہل ھے ۔ لڑائی کے میدان سے پہلی پلٹن واپس آرھی ھے ۔ گاؤں والے اُس کے سواگت کی تیاریاں کر رھے ھیں ۔ گلی کے بیچ میں تسینا کے گھر کے پاس ایک دوسرے کے آمنے سامنے دو بلیاں گاڑی گئیں ۔ اُن دونوں کے اوپر محراب کے طور پر ایک ھری شاخ موڑکر باندھ دی گئی ۔ اِس طرح پلٹن کے سواگت کے لئے ایک پھاٹک بنا دیا گیا ۔ لوگوں نے چیڑ کے درختوں کی خوشبودار ٹہنیاں پہاڑوں پر سے لا کر دونوں بلیوں اور محراب کے اوپر لپیٹ دیں ۔ پاس کے شہر پازارجک سے ایک تختہ لاکر اُس محراب پر لٹکا دیا گیا ۔ تختے پر لکھا ھوا تھا:— بہادر سپاھیو ! سواگت ! چاروں طرف ترنگے راشٹریہ جھنڈے لگا دیئے گئے ۔

وجئی پلٹن آئی اور چلی گئی ۔

بیچاری ماں سوچنے لگی:—

"ھو سکتا ھے کہ میرا بیٹا پیچھے آرھا ھو ۔ شاید وہ تیوہار سے ٹھیک ایک دن پہلے پہنچنا چاھتا ھے ۔ اُسے پردیس میں بڑا دن بتانے کی کیا ضرورت ! ابھی تو سپاھی آ ھی رھے ھیں ۔ ایک ایک کر چلے آ رھے ھیں ۔ شام تک اس کے آنے کے لئے کافی سمے ھے ۔ اُسے معلوم ھے کہ یہاں گھر پر اتنے آدمی بےچینی کے ساتھ اُس کی طرف آنکھ لگائے بیٹھے ھیں ۔"

[5]

صبح کے وقت بوڑھی تسینا بہت جلدی گرجا گئی ۔ استویان نے جو لیکھ اس کے پاس بھیجا تھا اسے اُس نے سنا ڈالا ۔

फिर उसने उन क़ैदियों को मुख़ातिब करके कहा :— "बेटो ! एक मिनट ठहरो."

यह कहकर वह अपने घर दौड़ी हुई गई और एक मिनट के अन्दर एक पीपा राकिया हाथ में लिए हुए लौट आई. उसने सरबिया के उन क़ैदी सिपाहियों से कहाः—"ज़रा ठहरो, थोड़ा थोड़ा राकिया पी लो." उसने उन्हें राकिया पीने को दी. बुलग़ारिया का जो सिपाही उन क़ैदियों को लिये जा रहा था उसने मुसकरा कर सबको रुकने की इजाज़त दे दी. थके हुये क़ैदी सिपाहियों ने राकिया पी और तसेना का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया. राकिया पीकर उनकी सरदी कुछ कम हुई.

बुलग़ारिया के सिपाही ने यह देखकर कि पीपे में कुछ राकिया बच गई है बड़ी ख़ुशी के साथ उसे अपने मुँह में डाल लिया और बूढ़ी माँ को बहुत-बहुत सलाम किया.

तसेना ने फिर हैरान होकर कहाः—"यह सब ईसाई हैं. सब एक ही ईश्वर के बन्दे हैं......यह एक दूसरे से लड़ते क्यों हैं ?......"

उसके देखते-देखते वह लोग चले गए.

[3]

जंग रुक गई. सुलह की बात चीत शुरू हो गई.

बड़े दिन का त्योहार नज़दीक आने लगा. सिपाही लोग छुट्टी ले लेकर घर आने लगे. वेतरेन से गए हुये बहुत से सिपाही भी लौट आये. पर स्तोयान अभी नहीं आया. न उसका कोई सन्देश आया. बूढ़ी तसेना को चिन्ता होने लगी. वह घबराने लगी. उसके दिल में बुरे-बुरे ख़याल आने लगे......दिन गुज़रते चले गए. तसेना की आँख बराबर दरवाज़े की तरफ़ लगी रहती. न जाने कब स्तोयान आवे और दरवाज़ा खोले.

रंगल स्तोयानोव लड़ाई से लौटकर उससे मिलने आया. दिनको का बेटा पीटर भी उससे मिलने आया. दोनों भाई स्तामेतलो उससे मिलने आये. वह उठकर बाहर जाकर लोगों से पूछती. पर स्तोयान की किसी से कोई ख़बर न मिलती. उन सब ने कुछ दिन पहले स्तोयान को देखा था. लेकिन उसके बाद की उन्हें ख़बर न थी.

बूढ़ी माँ का दिल घबराने लगा. उसकी आँखों के सामने बार-बार अँधेरा आ जाता. वह घर के आस-पास चक्कर काटती और बार-बार स्तोयान को याद करती.

उसकी बेटी कीना दरवाज़े से दौड़ती हुई आई और चिल्ला कर कहने लगीः—"माँ ! दिमितर चाचा लड़ाई से आ गए !"

माँ तुरन्त उठी और दिमितर के यहाँ गई. दिमितर के यहाँ पहुँचकर उसने कहा:— "दिमितर ! स्वागत ! स्तोयान को तुमने कहाँ छोड़ा ?"

پھر اس نے ان قیدیوں کو مخاطب کر کے کہا:—"بیٹو ! ایک منٹ ٹھہرو ."

یہ کہہ کر وہ اپنے گھر دوڑی ہوئی گئی اور ایک منٹ کے اندر ایک پیپا راکیا ہاتھ میں لئے ہوئے لوٹ آئی . اس نے سربیا کے ان قیدی سپاہیوں سے کہا:—"ذرا ٹھہرو، تھوڑا تھوڑا راکیا پی لو." اس نے انہیں راکیا پینے کو دی . بلغاریہ کا جو سپاہی ان قیدیوں کو لئے جا رہا تھا اس نے مسکرا کر سب کو رکنے کی اجازت دے دی . تھکے ہوئے قیدی سپاہیوں نے راکیا پی اور تسینا کا بہت بہت شکریہ ادا کیا . راکیا پی کر ان کی سردی کچھ کم ہوئی .

بلغاریہ کے سپاہی نے یہ دیکھ کر کہ پیپے میں کچھ راکیا بچ گئی ہے بڑی خوشی کے ساتھ اس نے اپنے منھ میں ڈال لیا اور بوڑھی ماں کو بہت بہت سلام کیا .

تسینا نے پھر حیران ہو کر کہا:—"یہ سب عیسائی ہیں، سب ایک ہی ایشور کے بندے ہیں......یہ ایک دوسرے سے لڑتے کیوں ہیں ؟......"

اس کے دیکھتے دیکھتے وہ لوگ چلے گئے .

[3]

جنگ رک گئی . صلح کی بات چیت شروع ہو گئی .

بڑے دن کا تیوہار نزدیک آنے لگا . سپاہی لوگ چھٹی لے لے کر گھر آنے لگے . ویترین سے گئے ہوئے بہت سے سپاہی بھی لوٹ آئے . پر ستویان ابھی نہیں آیا . نہ اس کا کوئی سندیش آیا . بوڑھی تسینا کو چنتا ہونے لگی . وہ گھبرانے لگی . اس کے دل میں برے برے خیال آنے لگے......دن گزرتے چلے گئے . تسینا کی آنکھیں برابر دروازے کی طرف لگی رہتیں . نہ جانے کب استویان آوے اور دروازہ کھولے .

رنگل استویانوو لڑائی سے لوٹ کر اس سے ملنے آیا . دنکو کا بیٹا پیٹر بھی اس سے ملنے آیا . دونوں بھائی استامیتلی اس سے ملنے آئے . وہ اٹھ کر باہر جا کر لوگوں سے پوچھتی . پر استویان کی کسی سے کوئی خبر نہ ملتی . ان سب نے کچھ دن پہلے استویان کو دیکھا تھا . لیکن اس کے بعد کی انہیں خبر نہ تھی .

بوڑھی ماں کا دل گھبرانے لگا . اس کی آنکھوں کے سامنے بار بار اندھیرا آجاتا . وہ گھر کے آس پاس چکر کاٹتی اور بار بار استویان کو یاد کرتی .

اس کی بیٹی کینا دروازے سے دوڑتی ہوئی آئی اور چلا کر کہنے لگی:—"ماں ! دیمیتر چاچا لڑائی سے آگئے !"

ماں فورًا اٹھی اور دیمیتر کے یہاں گئی . دیمیتر کے یہاں پہنچ کر اس نے کہا:—"دیمیتر ! سواگت ! استویان کو تم نے کہاں چھوڑا ؟"

ले जा रहा था. तसेना उस ख़त को पढ़वाने के लिये दौड़कर उसे अपने पुरोहित के पास ले गई.

चिट्ठी यह थी:—

"माँ! मैं यह चिट्ठी तुम्हें यह बताने के लिये लिख रहा हूँ कि मैं ज़िन्दा और ख़ैरियत से हूँ. हमने सरबिया के लोगों को हरा दिया है. बुलग़ारिया ज़िन्दाबाद! मैं अच्छी तरह हूँ. रंगल स्तोयानोव भी अच्छी तरह से है. चचा डिमितर भी अच्छी तरह से हैं और अपनी माँ को सलाम भेजते हैं. सरबिया के लोग हमेशा एक साथ अपनी बन्दूकें छोड़ते हैं. पर जब हम जवाब में 'हुर्रा!' कहकर बढ़ते हैं तो वे डर जाते हैं. मैं अपना नया बिस्तरबन्द त्सवेताम के यहाँ भूल आया था, वह वहाँ से मंगा लेना. बच्चे उसे कहीं ख़राब न कर दें. कल हम ड्रागोमान की घाटियों में से तेज़ी के साथ निकल जाएँगे. मैं जब घर लौटूँगा तो कीना के लिये निश शहर से कोई अच्छी सी चीज़ लेता आऊँगा. तुम्हारे ख़र्च के लिये मैं एक लेव (बुलग़ारिया का एक सिक्का) भेज रहा हूँ. जब घर आऊँगा तो रादुलचो को बताऊँगा कि तोप के गोले किस तरह आवाज़ करते हैं.

स्तोयान दोब्रेव

"बूढ़े पीटर को मेरा बहुत बहुत सलाम कहना. मैं उन्हें सरबिया की एक बन्दूक़ भेजना चाहता था पर इन्तज़ाम नहीं कर सका. वह लोग बन्दूक़ तो बहुत दूर से चलाते हैं पर उनका निशाना ठीक नहीं बैठता. माँ! स्तोयानका को भी मेरा सलाम कहना."

तसेना का दुखी हृदय खिल उठा. अपने बूढ़े हाथों में चिट्ठी लिये वह स्तोयानका के घर गई. सब को बड़ी ख़ुशी हुई. पर सबसे ज़ियादह ख़ुशी रादुलचो को हुई. वह ख़ुश होकर यह सोचने लगा कि मेरा बड़ा भैया जब घर लौटेगा तो मुझे एक नया गाना सिखाएगा.

गली में पहुँचते ही तसेना को लड़ाई के क़ैदियों का एक नया गिरोह मिल गया. बुलग़ारिया का एक सिपाही उनके पीछे-पीछे था. उस सिपाही की शकल स्तोयान से इतनी मिलती हुई थी कि बार-बार तसेना को शक हुआ कि वह स्तोयान ही है. पर वह कोई और निकला. तसेना ने झट से बढ़कर उससे पूछना चाहा कि उसे स्तोयान की भी कुछ ख़बर है या नहीं. पर मुँह खोलने से पहले उसका ध्यान सरबिया के क़ैदियों की तरफ़ गया. जंग के क़ैदी उसने जीवन में पहली बार देखे थे.

तसेना ने उन क़ैदियों की तरफ़ देखकर कहा:—"ऐ ईश्वर! क्या यही सरबिया के लोग हैं? ख़ासे अच्छे आदमी हैं......इन बेचारों की माएँ कहाँ होंगी, क्या कहती होंगी? ...उन्हें क्या पता उनके बेटे कहाँ हैं?"

لے جا رہا تھا ۔ تسینا اُس خط کو پڑھوانے کے لئے دوڑ کر اسے اپنے پروہت کے پاس لے گئی ۔

چٹھی یہ تھی:—

"ماں! میں یہ چٹھی تمہیں یہ بتانے کے لئے لکھ رہا ہوں کہ میں زندہ اور خیریت سے ہوں ۔ ہم نے سرویا کے لوگوں کو ہرا دیا ہے۔ بلغاریہ زندہ باد! میں اچھی طرح ہوں ۔ رنگل استویانوو بھی اچھی طرح سے ہے ۔ چچا دیمیتر بھی اچھی طرح سے ہیں اور اپنی ماں کو سلام بھیجتے ہیں ۔ سرویا کے لوگ ہمیشہ ایک ساتھ اپنی بندوقیں چھوڑتے ہیں ۔ پر جب ہم جواب میں 'ہرا!' کہہ کر بڑھتے ہیں تو وے ڈر جاتے ہیں ۔ میں اپنا بستر بند تسویتان کے یہاں بھول آیا تھا' وہ وہاں سے منگا لینا ۔ بچے اسے کہیں خراب نہ کر دیں ۔ کل ہم دراگومان کی گھاٹیوں میں سے تیزی کے ساتھ نکل جائیں گے ۔ میں جب گھر لوٹونگا تو کینا کے لئے نش شہر سے کوئی اچھی سی چیز لیتا آؤنگا۔ تمہارے خرچ کے لئے میں ایک لیو (بلغاریہ کا ایک سکہ) بھیج رہا ہوں ۔ جب گھر آؤنگا تو رادل چو کو بتاؤنگا کہ توپ کے گولے کس طرح آواز کرتے ہیں ۔

استویان دوبریو ۔

"بوڑھے پیٹر کو میرا بہت بہت سلام کہنا۔ میں انہیں سرویا کی ایک بندوق بھیجنا چاہتا تھا پر انتظام نہیں کر سکا ۔ وہ لوگ بندوق تو بہت دور سے چلاتے ہیں پر اُن کا نشانہ ٹھیک نہیں بیٹھتا ۔ ماں! استویانکا کو بھی میرا سلام کہنا ۔"

تسینا کا دکھی ہردئے کھل اٹھا ۔ اپنے بوڑھے ہاتھوں میں چٹھی لئے وہ استویانکا کے گھر گئی ۔ سب کو بڑی خوشی ہوئی ۔ پر سب سے زیادہ خوشی رادل چو کو ہوئی ۔ وہ خوش ہو کر یہ سوچنے لگا کہ میرا بڑا بھیا جب گھر لوٹے گا تو مجھے ایک نیا گانا سکھائیگا ۔

گلی میں پہونچتے ہی تسینا کو لڑائی کے قیدیوں کا ایک نیا گروہ مل گیا ۔ بلغاریہ کا ایک سپاہی اُن کے پیچھے پیچھے تھا ۔ اُس سپاہی کی شکل استویان سے اتنی ملتی ہوئی تھی کہ بار بار تسینا کو شک ہوا کہ وہ استویان ہی ہے ۔ پر وہ کوئی اور نکلا ۔ تسینا نے جھٹ سے بڑھ کر اُس سے پوچھنا چاہا کہ اُسے استویان کی بھی کچھ خبر ہے یا نہیں ۔ پر منھ کھولنے سے پہلے اُس کا دھیان سرویا کے قیدیوں کی طرف گیا ۔ جنگ کے قیدی اُس نے جیون میں پہلی بار دیکھے تھے ۔

تسینا نے ان قیدیوں کی طرف دیکھ کر کہا:—"اے ایشور! کیا یہی سرویا کے لوگ ہیں؟ خاصے اچھے آدمی ہیں...... ان بیچاروں کی مائیں کہاں ہونگی، کیا کہتی ہونگی؟ ...... انہیں کیا پتہ ان کے بیٹے کہاں ہیں؟"

कपड़े उठाए. उनके नीचे से उसने एक मोमबत्ती निकाली और घर के छोटे से उपासनाघर के सामने उस बत्ती को जलाकर दुआ माँगनी शुरू की.

ठीक उस समय ड्रागमान के मैदान में तोपें गोले उगल रही थीं. नवम्बर 1885 की चौथी तारीख़ थी.

[2]

बुढ़िया तसेना ने उस रात को एक सपना देखा:—

एक बहुत बड़ा बादल है, और एक फ़ौज उस बादल के अन्दर घुसी चली जा रही है. स्तोयान भी उसी फ़ौज में है.

तसेना ने सपने ही के अन्दर डरकर कहा:—"ऐ माता मेरी ! ऐ प्रभु ईसा की माँ ! मेरा जी डरता है !"

बादल गरजा, आसमान में बिजली कड़की, धरती हिल गई—जंग की सी हालत मालूम हुई. उसी बादल में स्तोयान गुम हो गया. कहाँ चला गया ! अब क्या होगा !

माँ काँपकर जाग उठी. कोठरी में घुप अँधेरा था. बाहर ठन्डी हवा सन-सन कर रही थी. लड़ाई का नक़शा माँ की आँखों के सामने से फिर रहा था.

माँ ने कहा:—"ऐ ईश्वर ! ऐ प्रभु ! ऐ ईसा मसीह ! उसकी रक्षा करना......प्रभु ईसा की माँ मेरी ! स्तोयान पर दया करना !"

उसके बाद सुबह तक बुढ़िया तसेना को नींद न आई.

सुबह होते ही वह गाँव के सयाने बूढ़े पीटर के पास गई. उसने पीटर से पूछा — "चचा पीटर ! सपने में बादल दिखाई देने का क्या मतलब होता है ?"

पीटर ने जवाब दिया:—"बादल दो तरह के होते हैं. कुछ बादल वह होते हैं जो बरसते हैं और कुछ बादल वह होते हैं जो बारिश को इधर-उधर छिटका देते हैं. तसेना ! तुमने सपने में किस तरह का बादल देखा था ?"

तसेना ने अपना सपना बयान कर दिया. बूढ़ा पीटर कुछ देर सोचता रहा. उसे याद नहीं आ रहा था कि उसकी पोथो में उस तरह के बादल का ज़िक्र है या नहीं. पर जब उसने तसेना के चेहरे पर डर और घबराहट देखी और यह देखा कि तसेना टिकटिका लगाए उसकी ओर देख रही है, तो उसने तसेना पर दया करके कहा:—"तसेना ! फ़िक्र मत करो, तुम्हारा सपना अच्छा सपना है. बादल का मतलब यहाँ सन्देसा है. तुम्हें स्तोयान की चिट्ठी मिलेगी."

बुढ़िया का चेहरा चमक उठा.

छै दिन के बाद एक वालन्टियर ने जो स्तोयान का दोस्त था, स्तोयान की माँ को स्तोयान की एक चिट्ठी लाकर दी. स्तोयान उस समय सराबया के कुछ युद्ध के क़ैदियों को

کپڑے اٹھائے ۔ ان کے نیچے سے اس نے ایک موم بتی نکالی اور گھر کے چھوٹے سے اپاسناگھر کے سامنے اس بتی کو جلا کر دعا مانگنی شروع کی ۔

ٹھیک اس سمے ڈراگومان کے میدان میں توپیں گولے اگل رہی تھیں ۔ نومبر 1885 کی چوتھی تاریخ تھی ۔

[2]

بوڑھیا تسینا نے اس رات کو ایک سپنا دیکھا:—

ایک بہت بڑا بادل ہے، اور ایک فوج اس بادل کے اندر گھسی چلی جا رہی ہے ۔ استویان بھی اسی فوج میں ہے ۔

تسینا نے سپنے ہی کے اندر ڈر کر کہا:—اے ماتا میری ! اے پربھو عیسیٰ کی ماں ! میرا جی ڈرتا ہے !"

بادل گرجا، آسمان میں بجلی کڑکی، دھرتی ہل گئی—جنگ کی سی حالت معلوم ہوئی ۔ اسی بادل میں استویان گم ہو گیا ۔ کہیں چلا گیا ! اب کیا ہو گا !

ماں کانپ کر جاگ اٹھی ۔ کوٹھری میں گھپ اندھیرا تھا ۔ باہر ٹھنڈی ہوا سن سن کر رہی تھی ۔ لڑائی کا نقشہ ماں کی آنکھوں کے سامنے سے پھر رہا تھا ۔

ماں نے کہا:—"اے ایشور ! اے پربھو ! اے عیسیٰ مسیح ! اس کی رکشا کرنا...... پربھو عیسیٰ کی ماں میری ! استویان پر دیا کرنا !"

اس کے بعد صبح تک بوڑھیا تسینا کو نیند نہ آئی ۔

صبح ہوتے ہی وہ گاؤں کے سیانے بوڑھے پیٹر کے پاس گئی ۔ اس نے پیٹر سے پوچھا:—"چچا پیٹر ! سپنے میں بادل دکھائی دینے کا کیا مطلب ہوتا ہے ؟"

پیٹر نے جواب دیا:—"بادل دو طرح کے ہوتے ہیں ۔ کچھ بادل وہ ہوتے ہیں جو برستے ہیں اور کچھ بادل وہ ہوتے ہیں جو بارش کو ادھر ادھر چھٹکا دیتے ہیں ! تسینا ! تم نے سپنے میں کس طرح کا بادل دیکھا تھا ؟"

تسینا نے اپنا سپنا بیان کر دیا ۔ بوڑھا پیٹر کچھ دیر تک سوچتا رہا اسے یاد نہیں آ رہا تھا کہ اس کی پوتھی میں اس طرح کے بادل کا ذکر ہے یا نہیں ۔ پر جب اس نے تسینا کے چہرے پر ڈر اور گھبراہٹ دیکھی اور یہ دیکھا کہ تسینا ٹکٹکی لگائے اس کی اور دیکھ رہی ہے، تو اس نے تسینا پر دیا کر کے کہا:—

"تسینا فکر مت کرو، تمہارا سپنا اچھا سپنا ہے ۔ بادل کا مطلب یہاں سندیش سے ہے ۔ تمہیں استویان کی چٹھی ملے گی ۔"

بوڑھیا کا چہرا چمک اٹھا ۔

چھ دن کے بعد ایک والنٹیئر نے، جو استویان کا دوست تھا، استویان کی ماں کو استویان کی ایک چٹھی لا کر دی ۔ استویان اس سمے سرویا کے کچھ یدھ کے قیدیوں کو

इसके साथ एक पलटन थी जो हरमानली से आ रही थी. हरमानली में वह तुरकों से लड़ने गई थी. अब वह सोफिया के मैदान पर जा रही थी जहाँ उसे सरबिया वालों से लड़ना था.

रँगरूटों को देखकर गाँव वालों की भीड़ में से एक ने कहा :—"वह देखो, जारजी का बेटा स्वेतको जा रहा है ! स्वेतको ! ख़ुदा हाफ़िज़ !"

दूसरे ने कहा :—"वह देखो, रंगल जा रहा है !'

तीसरे ने कहा :—"और वह नद्लका का बेटा आइवन आ रहा है. आइवन ! देखो तुम्हारी माँ खड़ी है !"

जल्दी जल्दी में भीड़ में से कुछ ने कुछ रंगरूटों को फूल दिये. गालों के ऊपर से आँसू टपकते जाते थे. शब्द आधे मुँह से निकलते थे और आधे अन्दर ही अन्दर घुटकर रह जाते थे. रंगरूट फौज के साथ आगे बढ़ते जाते थे.

इतने में एक लड़की ने चिल्लाकर कहा :—"माँ ! यह देखो, भाई जा रहा है !"

आठ बरस के एक लड़के ने जो उसी लड़की के पास खड़ा था अपने हाथ रंगरूटों की तरफ़ बढ़ा कर चिल्लाकर कहा :—"स्तोयान भैया !"

माँ ने रोते रोते कहा :—"मेरे बेटे ! मेरे लाल !"

काली आँखों वाला एक सुन्दर तन्दुरुस्त नौजवान क़तार में से बाहर निकल पड़ा. उसने अपनी माँ का हाथ चूमा, अपनी बहन और अपने भाई का माथा चूमा, उनसे लेकर कुछ फूल उसने अपनी छाती में लगा लिये एक और नौजवान लड़की ने भी उसे कुछ फूल दिये. उन्हें उसने अपने कानों पर रख लिया. फिर जल्दी से दौड़कर वह क़तार में जा मिला और सब के साथ गाता हुआ चला गया.

माँ ने दूर से चिल्लाकर कहा:—'मेरे लाल ! ख़ुदा हाफ़िज़ !"

बहन ने क़रीब-क़रीब बेहोश होते हुये चीख़कर कहा:—"स्तोयान !"

उन सब की आवाज़ें गूँज कर रह गईं. स्तोयान बाक़ी सिपाहियों के अंदर नज़र से ओझल हो गया., रँगरूट गहरे कुहरे में दिखाई देने बन्द हो गए.

माँ कुछ देर तक आँखें फाड़ फाड़कर उसी तरफ़ देखती रही पर अब देखने को कुछ न था.

नौजवान लड़की ने अपनी चुंदरी का धारीदार पल्ला अपने सर पर डाल लिया.

घर लौटकर स्तोयान की माँ बैठी रोती रही. उसने एक पुराना टूटा हुआ सन्दूक़ खोला. उसमें से कुछ क़मीज़ें और

اُن کے ساتھ ایک پلٹن تھی جو ہرمانلی سے آرہی تھی ۔ ہرمانلی میں وہ ترکوں سے لڑنے گئی تھی ۔ اب وہ صوفیا کے میدان پر جا رہی تھی جہاں اسے سربیا والوں سے لڑنا تھا ۔

رنگروٹوں کو دیکھ کر گاؤں والوں کی بھیڑ میں سے ایک نے کہا:—"وہ دیکھو' جارجی کا بیٹا سویتکو جا رہا ہے ! سویتکو ! خدا حافظ !"

دوسرے نے کہا:—"وہ دیکھو' رنگل جا رہا ہے !"

تیسرے نے کہا:—"اور وہ ندلکا کا بیٹا آئیون جا رہا ہے ۔ آئیون ! دیکھو تمہاری ماں کھڑی ہے !"

جلدی جلدی میں بھیڑ میں سے کچھ نے کچھ رنگروٹوں کو پھول دیئے ۔ گالوں کے اوپر سے آنسو ٹپکتے جاتے تھے ۔ شبد آدھے منہ سے نکلتے تھے اور آدھے اندر ہی اندر گھٹ کر رہ جاتے تھے ۔ رنگروٹ فوج کے ساتھ آگے بڑھتے جاتے تھے ۔

اتنے میں ایک لڑکی نے چلاکر کہا:—"ماں ! یہ دیکھو' بھائی جا رہا ہے !"

آٹھ برس کے ایک لڑکے نے جو اسی لڑکی کے پاس کھڑا تھا اپنے ہاتھ رنگروٹوں کی طرف بڑھا کر چلا کر کہا:—"استویان بھیا !"

ماں نے روتے روتے کہا:—"میرے بیٹے ! میرے لال !"

کالی آنکھوں والا ایک سندر تندرست نوجوان قطار میں سے باہر نکل پڑا. اس نے اپنی ماں کا ہاتھ چوما' اپنی بہن اور اپنے بھائی کا ماتھا چوما' ان سے لے کر کچھ پھول اس نے اپنی چھاتی میں لگائے ۔ ایک اور نوجوان لڑکی نے بھی اسے کچھ پھول دیئے ۔ انہیں اس نے اپنے کانوں پر رکھ لیا ۔ پھر جلدی سے دوڑ کر وہ قطار میں جا ملا اور سب کے ساتھ گاتا ہوا چلا گیا ۔

ماں نے دور سے چلا کر کہا—:"میرے لال ! خدا حافظ !"

بہن نے قریب قریب بیہوش ہوتے ہوئے چیخ کر کہا:—"استویان !"

ان سب کی آوازیں گونج کر رہ گئیں ۔ استویان باقی سپاہیوں کے اندر نظر سے اوجھل ہو گیا ۔ رنگروٹ گہرے کہرے میں دکھائی دینے بند ہو گئے ۔

ماں کچھ دیر تک آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر اسی طرف دیکھتی رہی پر اب دیکھنے کو کچھ نہ تھا ۔

نوجوان لڑکی نے اپنی چندری کا دھاریدار پلہ اپنے سر پر ڈال لیا ۔

گھر لوٹ کر استویان کی ماں بیٹھی روتی رہی۔ اس نے ایک پرانا ٹوٹا ہوا صندوق کھولا ۔ اس میں سے کچھ قمیضیں اور

बुल्गारिया की एक मशहूर कहानी

क्या वह घर आ रहा है ?

श्री आइवन वाज़ोव

[1]

सन् 1885 की बात है. नवम्बर की चौथी तारीख़ थी. जंग जारी थी. ड्रागोमान के मैदान में तोपें गोले उगल रही थीं.

बल्गारिया के वेतरेन गाँव में कुहरा छाया हुआ था. चारों तरफ़ नमी थी, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी. गाँव के झोपड़े, मालूम होता था, दबे जा रहे हैं. गलियों में कीचड़ थी. फिर भी लोग जगह-जगह जमा थे और कुछ चिन्ता के साथ बातें कर रहे थे.

गाँव के अन्दर दो छोटी छोटी सराएँ एक दूसरे के आमने सामने थीं. दोनों के बीच की सड़क पर से बैलों के छकड़े और देहाती घोड़ेगाड़ियाँ फ़ौजी रसद के सामान से लदी हुई चूँ चूँ करती चली जा रही थीं.

उन्हीं छकड़ों और गाड़ियों के बीच बीच से नए फ़ौजी रंगरूट जा रहे थे. उनमें से कुछ लम्बे-लम्बे फ़ौजी ओवरकोट पहने हुए थे. कुछ भेड़ की खाल के कोट पहने हुए थे. बहुत से अपने मोटे मोटे कम्बलों की पिछौरियाँ बनाकर उनसे अपनी सरदी दूर कर रहे थे. पैरों में ऊँचे ऊँचे जूते थे. कन्धों पर बन्दूकें रखी थीं, जिनके नीचे कारतूसें लटक रही थीं. बन्दूकों के पीछे वाले सिरे से थैले लटक रहे थे. थैलों में काफ़ी सामान था. सड़क पर घुटनों घुटनों कीचड़ थी. सरदी काफ़ी थी. बीच बीच में ओले भी पड़ रहे थे. फिर भी यह सब रंगरूट हँसते गाते चले जा रहे थे.

एक सराय के दरवाज़े पर कुछ किसान, कुछ मुसाफ़िर और कुछ फ़ौजी अफ़सर खड़े हुए इन नौजवान रंगरूटों को ध्यान से देख रहे थे.

एक तरफ़ गाँव की कुछ औरतें, कुछ लड़कियां और कुछ बच्चे भी खड़े थे. इनमें से अधिकतर चीथड़े लपेटे हुए सरदी से ठिठुर रहे थे. उनके चेहरों पर ख़ून की लाली झलक रही थी.

यह लोग इसलिये खड़े थे कि जो नौजवान रंगरूट उनके गाँव से भरती होकर जा रहे थे उन्हें आख़री बिदाई दें.

यह सब रँगरूट सोफ़िया जा रहे थे.

بلغاریہ کی ایک مشہور کہانی

کیا وہ گھر آ رہا ہے ؟

شری آئیون وازوو

[1]

سن 1885 کی بات ہے ۔ نومبر کی چوتھی تاریخ تھی ۔ جنگ جاری تھی ۔ ڈراگومان کے میدان میں توپیں گولے اگل رہی تھیں ۔

بلغاریہ کے ویتریرن گاؤں میں کہرا چھایا ہوا تھا ۔ چاروں طرف نمی تھی، ہلکی ہلکی بارش ہو رہی تھی ۔ گاؤں کے جھونپڑے، معلوم ہوتا تھا، دبے جا رہے ہیں ۔ گلیوں میں کیچڑ تھی ۔ پھر بھی لوگ جگہہ جگہہ جمع تھے اور کچھ چنتا کے ساتھ باتیں کر رہے تھے ۔

گاؤں کے اندر دو چھوٹی چھوٹی سرائیں ایک دوسرے کے آمنے سامنے تھیں ۔ دونوں کے بیچ کی سڑک پر سے بیلوں کے چھکڑے اور دیہاتی گھوڑے گاڑیاں فوجی رسد کے سامان سے لدی ہوئی چوں چوں کرتی چلی جا رہی تھیں ۔

اُنہیں چھکڑوں اور گاڑیوں کے بیچ بیچ سے نئے فوجی رنگروٹ جا رہے تھے ۔ اُن میں سے کچھ لمبے لمبے فوجی اوورکوٹ پہنے ہوئے تھے ۔ کچھ بھیڑ کی کھال کے کوٹ پہنے ہوئے تھے ۔ بہت سے اپنے موٹے موٹے کمبلوں کی پچھوریاں بنا کر ان سے اپنی سردی دور کر رہے تھے ۔ پیروں میں اونچے اونچے جوتے تھے ۔ کندھوں پر بندوقیں رکھی تھیں، جن کے نیچے کارتوسیں لٹک رہی تھیں ۔ بندوقوں کے پیچھے والے سرے سے تھیلے لٹک رہے تھے ۔ تھیلوں میں کافی سامان تھا ۔ سڑک پر گھٹنوں گھٹنوں کیچڑ تھی ۔ سردی کافی تھی ۔ بیچ بیچ میں اولے بھی پڑ رہے تھے ۔ پھر بھی یہ سب رنگروٹ ھنستے گاتے چلے جا رہے تھے ۔

ایک سرائے کے دروازے پر کچھ کسان، کچھ مسافر اور کچھ فوجی افسر کھڑے ہوئے اِن نوجوان رنگروٹوں کو دھیان سے دیکھ رہے تھے ۔

ایک طرف گاؤں کی کچھ عورتیں، کچھ لڑکیاں اور کچھ بچے بھی کھڑے تھے ۔ اِن میں سے ادھک تر چیتھڑے لپیٹے ہوئے سردی سے ٹھٹھر رہے تھے ۔ اُن کے چہروں پر خون کی لالی جھلک رہی تھی ۔

یہ لوگ اِس لئے کھڑے تھے کہ جو نوجوان رنگروٹ اُن کے گاؤں سے بھرتی ہو کر جا رہے تھے انہیں آخری بدائی دیں ۔

یہ سب رنگروٹ صوفیا جا رہے تھے ۔

क़ौमी एकता को क़ायम किया था उसकी बुनियादें अभी काफी मज़बूत न हो पाई थीं. सदियों की कमज़ोरियाँ एक पीढ़ी के अन्दर इतनी आसानी से नहीं मिट सकतीं. सदियों की पुरानी दुश्मनियाँ भी अभी कहीं कहीं दिलों में पड़ी सुलग रही थीं. जिन बद्दू क़बीलों को सदियों से एक तरह की मनमानी करने की आदत पड़ गई थी, जो किसी मरकज़ी ताक़त (केन्द्रीय शक्ति) के अधीन होकर रहना, या किसी को टैक्स देना जानते ही न थे, इन सब के दिलों में फ़ायदेमन्द सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों की क़द्र अभी पूरी तरह न जमी थी. इसके अलावा इस तरह के ख़ुदग़रज़ और मौक़ापरस्त लोगों की भी किसी देश या किसी ज़माने में पूरी तरह कमी नहीं होती जो अपने चन्द-रोज़ा फ़ायदों के लिए अपने देश के हितों के ख़िलाफ़ ग़ैरों की साज़िशों में मददगार हो सकें।

[बाक़ी अगले नम्बर में]

ومی ایکتا کو قایم کیا تھا اس کی بنیادیں ابھی کافی مضبوط نہ ہو
ائیں تھیں ۔ صدیوں کی کمزوریاں ایک پیڑھی کے اندر اتنی آسانی
ے نہیں مٹ سکتیں ۔ صدیوں کی پرانی دشمنیاں بھی ابھی
ہیں کہیں دلوں میں پڑی سلگ رہیں تھیں ۔ جن بدو
بیلوں کو صدیوں سے ایک طرح کی من مانی کرنے کی عادت
ڑ گئی تھی، جو کسی مرکزی طاقت (کیندریہ شکتی) کے
دھین ہو کر رہنا، یا کسی کو ٹیکس دینا جانتے ہی نہ تھے،
ن سب کے دلوں میں فائدہ مند سماجک اور راشٹری بندھنوں
ی قدر ابھی پوری طرح نہ جمی تھی ۔ اس کے علاوہ اس
طرح کے خودغرض اور موقع پرست لوگوں کی بھی کسی دیش
ا کسی زمانے میں پوری طرح کمی نہیں ہوتی جو اپنے چند روزہ
ائدوں کے لئے اپنے دیش کے ہتوں کے خلاف غیروں کی سازشوں
یں مددگار ہو سکیں ۔

[باقی اگلے نمبر میں] .

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

[३]

उत्तर के बहुत से अरब सूबे अभी तक रोमी सल्तनत के हिस्से बने हुये थे. इन सूबों के अरबों में इसलाम का प्रचार करने के लिये मोहम्मद साहब सैकड़ों प्रचारक भेज चुके थे. रोम के ईसाई बादशाहों की नीति में उस समय मजहबी आजादी की गुंजाइश न थी. रोम के उस समय के अत्याचारों और वहाँ की प्रजा की हालत का जिक्र हम एक दूसरी जगह करेंगे. वहाँ के जिन अरबों ने नया धर्म क़ुबूल किया उन्हें रोमी शासकों ने मौत की सजा देनी शुरू की. मोहम्मद साहब के भेजे हुये पचासों प्रचारकों को उन्होंने क़त्ल करवा दिया. वहाँ के ज्यादातर अरबों में इससे नए राष्ट्रीय धर्म के साथ प्रेम और ज्यादा बढ़ा. बहुतसे अरब क़बीलों ने, जो पहले ईसाई इत्यादि थे, बखुशी इसलाम क़ुबूल कर लिया और रोमी साम्राज्य की अधीनता छोड़कर मदीने की नई राष्ट्रीय सरकार के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लिया. इसी प्रकार अनेक ईसाई अरब क़बीलों ने भी रोम से अपना ताल्लुक तोड़कर मदीने की अरब सरकार के साथ जोड़ना चाहा. मदीने की क़ौमी सरकार और रोमी शहन्शाहियत के बीच युद्ध अनिवार्य (लाजमी) था. मुहम्मद साहब ही के समय में युद्ध छिड़ चुका था. वास्तव में यह युद्ध अरबों की धार्मिक और राजनैतिक स्वाधीनता का युद्ध था और उसे जीवित रखने के लिए अरबों में राष्ट्रीय एकता की भावना भी काफ़ी पैदा हो चुकी थी.

मौत से कुछ दिन पहले मोहम्मद साहब ने रोमी साम्राज्य के मुक़ाबले के लिये शाम की सरहद पर नई फ़ौज भेजने का फ़ैसला कर लिया था. फ़ौज मदीने से बाहर मैदान में पहुँच चुकी थी. मोहम्मद साहब अपने हाथों से फ़ौज की कमाण्डरी का झण्डा नौजवान ओसामा के हाथों में सौंप चुके थे. किन्तु मोहम्मद साहब की मौत के कारण इस फ़ौज का जाना रुक गया था.

खलीफ़ा होने के दूसरे ही दिन अबुबक्र ने फिर से फ़ौज की कमानदारी का झण्डा ओसामा के हाथों में देकर उसे फ़ौरन उत्तर की ओर बढ़ने का हुक्म दिया.

उधर रोम के चालाक हाकिमों ने भी मोहम्मद साहब की मौत से पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश की. पूरे अरब में, और खासकर उन सूबों में जो इससे पहले रोम या ईरान के मातहत रह चुके थे, मदीने की नई सरकार के खिलाफ़ साजिशों का एक जाल बिछा दिया गया. चारों ओर से बग़ावतों की खबरें आने लगीं, यहाँ तक कि पैग़म्बरी के कई नए दावेदार खड़े हो गए।

32 बरस की कठिन तपस्या और क़ुर्बानियों के जरिये मोहम्मद साहब ने अलग अलग क़बीलों की जगह जिस

عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام

[3]

اتر کے بہت سے عرب صوبے ابھی تک رومی سلطنت کے حصے بنے ہوئے تھے۔ ان صوبوں کے عربوں میں اسلام کا پرچار کرنے کے لئے محمد صاحب سیکڑوں پرچارک بھیج چکے تھے۔ روم کے عیسائی بادشاہوں کی نیتی میں اس سمے مذہبی آزادی کی گنجائش نہ تھی۔ روم کے اس سمے کے اتیاچاروں اور وہاں کی پرجا کی حالت کا ذکر ہم ایک دوسری جگہ کریں گے۔ وہاں کے جن عربوں نے نیا دھرم قبول کیا انہیں رومی شاسکوں نے موت کی سزا دینی شروع کی۔ محمد صاحب کے بھیجے ہوئے پچاسوں پرچارکوں کو انہوں نے قتل کروا دیا۔ وہاں کے زیادہ تر عربوں میں اس سے نئے راشٹری دھرم کے ساتھ پریم اور زیادہ بڑھا۔ بہت سے عرب قبیلوں نے جو عیسائی اتیادی تھے، بخوشی اسلام قبول کر لیا اور رومی سامراج کی ادھینتا چھوڑ کر مدینے کی نئی راشٹریہ سرکار کے ساتھ اپنا سمبندھ جوڑ لیا۔ اس پرکار انیک عیسائی عرب قبیلوں نے بھی روم سے اپنا تعلق توڑ کر مدینے کی عرب سرکار کے ساتھ جوڑنا چاہا۔ مدینے کی قومی سرکار رومی شہنشاہیت کے بیچ یدھ انیواریہ (لازمی) تھا۔ محمد صاحب ہی کے سمے میں یدھ چھڑ چکا تھا۔ واستو میں یہ یدھ عربوں کی دھارمک اور راجنیتک سوادھینتا کا یدھ تھا اور اسے جیوت رکھنے کے لئے عربوں میں راشٹریہ ایکتا کی بھاونا بھی کافی پیدا ہو چکی تھی۔

موت سے کچھ دن پہلے محمد صاحب نے رومی سامراجیہ کے مقابلے کے لئے شام کی سرحد پر نئی فوج بھیجنے کا فیصلہ کر لیا تھا۔ فوج مدینے سے باہر میدان میں پہنچ چکی تھی۔ محمد صاحب اپنے ہاتھوں سے فوج کی کمانڈری کا جھنڈا نوجوان اوسامہ کے ہاتھوں میں سونپ چکے تھے۔ کنتو محمد صاحب کی موت کے کارن اس فوج کا جانا رک گیا تھا۔

خلیفہ ہونے کے دوسرے ہی دن ابوبکر نے پھر سے فوج کی کمانداری کا جھنڈا اوسامہ کے ہاتھوں میں دے کر اسے فوراً اتر کی اور بڑھنے کا حکم دیا۔

ادھر روم کے چالاک حاکموں نے بھی محمد صاحب کی موت سے پورا فائدہ اٹھانے کی کوشش کی۔ پورے عرب میں، اور خاص کر ان صوبوں میں، جو اس سے پہلے روم یا ایران کے ماتحت رہ چکے تھے، مدینے کی نئی سرکار کے خلاف سازشوں کا ایک جال بچھا دیا گیا۔ چاروں اور سے بغاوتوں کی خبریں آنے لگیں، یہاں تک کہ پیغمبری کے کئی نئے دعویدار کھڑے ہو گئے۔

23 برس کی کٹھن تپسیا اور قربانیوں کے ذریعے محمد صاحب نے الگ الگ قبیلوں کی جگہ جس

अबूबक्र मोहम्मद साहब के सबसे शुरू के अनुयाइयों और बहुत बड़े भक्तों में से थे. मोहम्मद साहब की प्यारी बीबी आयशा के वह पिता थे. इसलाम क़ुबूल करने के पहले वह अरब के एक बहुत बड़े धनी सौदागर थे. इसलाम क़ुबूल करने के बाद उन्होंने अपनी सारी जायदाद इसलाम के प्रचार, मुसलमानों की ख़िदमत और उन मुसलमान ग़ुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद कर देने में ख़र्च कर दी थी जिन्हें उनके, पुराना मज़हब मानने वाले आक़ा उनके मुसलमान हो जाने के सबब तकलीफ़ें पहुँचाया करते थे.15 अपने त्याग, अपनी ईश्वर भक्ति, अपनी दूरन्देशी, अपनी क़ाबलीयत और अपने चलन की पाकीज़गी के सबब अबूबक्र अपने सब साथियों के आदर के पात्र थे. कुछ इतिहासकारों के मुताबिक़ मोहम्मद साहब के बाद अरब और इसलाम के हक़ में इससे बेहतर चुनाव न हो सकता था.

जिस दिन मोहम्मद साहब का शरीर धरती को सौंपा गया उसी दिन मदीने की आलीशान मसजिद में जो मुसलमान जमा हुए उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिये अबूबक्र मिम्बर पर पहुंचे. मुसलमानों की जमाअत को नमाज़ पढ़ाना इसलाम के इतिहास में हमेशा रहनुमाई की निशानी समझी गई है. नमाज़ से पहले मौजूद लोगों ने एक आवाज़ से अबूबक्र को 'ख़लीफ़ा' मानना मंज़ूर किया. अबूबक्र ने खड़े होकर यह सीधी सादी तक़रीर की—

"ऐ लोगो ! मैं तुम सबसे बेहतर आदमी नहीं हूँ, फिर भी अब मैं तुम्हारे ऊपर हाकिम हूँ. अगर मैं भलाई करूँ तो मेरी मदद करना और अगर बुराई करूँ तो मेरी बुराई बता देना. हमेशा सच के पीछे चलना. यही वफ़ादारी है. झूठ से बचना क्योंकि उसमें दग़ा है. तुममें से जो कमज़ोर और दुखी है वह उस वक़्त तक मेरे लिये ताक़तवर होगा जब तक कि मैं उसके दुखों को दूर न कर सकूँ; और तुममें जो बलवान और ज़ालिम है वह उस वक़्त तक मेरे लिए कमज़ोर होगा जब तक कि, यदि अल्लाह ने चाहा तो, मैं उससे वह सब न ले लूँ जो उसने अत्याचार द्वारा दूसरे से लिया है. अल्लाह की राह में कोशिश करना न छोड़ना. जो ज़ुल्म करेगा उसे बेशक अल्लाह नीचा दिखायेगा. जब तक मैं अल्लाह और उसके रसूल की हिदायतों के मुताबिक़ चलूँ तुम भी मेरा हुक्म मानना और जहाँ कहीं मैं उनकी हिदायतों पर अमल न करूँ तुम मेरा हुक्म न मानना. अब नमाज़ के लिये उठ खड़े हो. अल्लाह तुम्हारे साथ है."

अबूबक्र की उम्र इस वक़्त साठ बरस की थी.

ابوبکر محمد صاحب کے سب سے شروع کے انویائیوں اور بہت بڑے بھکتوں میں سے تھے۔ محمد صاحب کی پیاری بیوی عائشہ کے وہ پتا تھے۔ اسلام قبول کرنے کے پہلے وہ عرب کے ایک بہت بڑے دھنی سوداگر تھے۔ اسلام قبول کرنے کے بعد انہوں نے اپنی ساری جائداد اسلام کے پرچار، مسلمانوں کی خدمت اور اُن مسلمان غلاموں کو خرید خرید کر آزاد کر دینے میں خرچ کر دی تھی جنھیں اُن کے پرانا مذہب ماننے والے آقا ان کے مسلمان ہو جانے کے سبب سے تکلیفیں پہنچایا کرتے تھے۔15 اپنے تیاگ، اپنی ایشور بھکتی، اپنی دوراندیشی، اپنی قابلیت اور اپنے چلن کی پاکیزگی کے سبب ابوبکر اپنے سب ساتھیوں کے آدر کے پاتر تھے۔ کچھ اتہاسکاروں کے مطابق محمد صاحب کے بعد عرب اور اسلام کے حق میں اس سے بہتر چناؤ نہ ہو سکتا تھا۔

جس دن محمد صاحب کا شریر دھرتی کو سونپا گیا اُسی دن مدینے کی عالیشان مسجد میں جو مسلمان جمع ہوئے انہیں نماز پڑھانے کے لئے ابوبکر ممبر پر پہنچے۔ مسلمانوں کی جماعت کو نماز پڑھانا اسلام کے اتہاس میں ہمیشہ رہنمائی کی نشانی سمجھی گئی ہے۔ نماز سے پہلے موجود لوگوں نے ایک آواز سے ابوبکر کو 'خلیفہ' ماننا منظور کیا۔ ابوبکر نے کھڑے ہو کر یہ سیدھی سادی تقریر کی—

"اے لوگو! میں تم سب سے بہتر آدمی نہیں ہوں، پھر بھی اب میں تمہارے اوپر حاکم ہوں۔ اگر میں بھلائی کروں تو میری مدد کرنا اور اگر برائی کروں تو میری برائی بتا دینا۔ ہمیشہ سچ کے پیچھے چلنا۔ یہی وفاداری ہے۔ جھوٹ سے بچنا کیونکہ اُس میں دغا ہے۔ تم میں سے جو کمزور اور دکھی ہے وہ اس وقت تک میرے لئے طاقتور ہوگا جب تک کہ میں اُس کے دکھوں کو دور نہ کر سکوں؛ اور تم میں جو بلوان اور ظالم ہے وہ اُس وقت تک میرے لئے کمزور ہوگا جب تک کہ، یدی اللہ نے چاہا تو، میں اُس سے وہ سب نہ لے لوں جو اُس نے اتیاچار دوارا دوسرے سے لیا ہے۔ اللہ کی راہ میں کوشش کرنا نہ چھوڑنا۔ جو ظلم کرے گا اُسے اللہ بیشک نیچا دکھائے گا۔ جب تک میں اللہ اور اُس کے رسول کی ہدایتوں کے مطابق چلوں تم بھی میرا حکم ماننا اور جہاں کہیں میں اُن کی ہدایتوں پر عمل نہ کروں تم میرا حکم نہ ماننا۔ اب نماز کے لئے اٹھ کھڑے ہو۔ اللہ تمہارے ساتھ ہے۔"

ابوبکر کی عمر اُس وقت ساٹھ برس کی تھی۔

15, Preaching of Islam, T. W. Arnold, p. 10.

के पास हम सब को लौटकर जाना है.' अगर वे सब लोग इसलाम क़ुबूल कर लें तब उनसे वे तीनों छड़ियां मांगना जिनकी वे पूजा करते हैं. इनमें एक तमरिश्क की है जिस पर सफ़ेद और पीली चित्तियां हैं. दूसरी बेत की तरह गिरहदार है और तीसरी आबनूस की तरह काली है. इन तीनों छड़ियों को बाहर मैदान में लाकर जला डालना."

अयाश लिखता है कि उसने पैग़म्बर की आज्ञा का ठीक ठीक पालन किया. शान्ति और विनय के साथ अपने धर्म का प्रचार किया और कुछ दिनों में ही यमन के सब लोगों ने नया मज़हब क़ुबूल कर लिया.

शुरू के दिनों में अनेक प्रचारकों के नाकामयाब रहने, मुसीबतें झेलने और मारे जाने का भी ज़िक्र आता है, लेकिन जिस अधिक पाक और अधिक सरल धार्मिक विश्वास को और जिस ऊंचे सामाजिक संगठन को इसलाम ने अरबों में पैदा किया उसकी क़द्र लोगों के दिलों में बढ़ती चली गई. धीरे धीरे मोहम्मद साहब की ज़िन्दगी में ही क़रीब क़रीब सब अरब क़बीलों ने नए मज़हब को क़ुबूल कर लिया. मदीने की बढ़ती हुई क़ौमी ताक़त और उसी के साथ साथ अलग अलग क़बीलों की धीरे धीरे टूटती हुई संहति ने भी इसलाम के प्रचार में बहुत बड़ी मदद दी.

[२]

मोहम्मद साहब एक मामूली ग़रीब घर में पैदा हुए थे. अपनी मौत से पहले वे समूचे अरब के बादशाह थे. उनकी बादशाहत संसार में एक अनोखी और नए ढङ्ग की बादशाहत थी. अरब में नए मज़हब की उन्होंने बुनियाद डाली और अल्लाह के रसूल की उन्हें पदवी मिली. इस बादशाहत को न उन्होंने अपने पूर्वजों या बुज़ुर्गों से हासिल किया था और न इसे अपने ख़ानदान में जारी रखने का ही उनका विचार था. उनका देहान्त होते ही लोगों को इस बात की फ़िक्र हुई कि मुसलमानों की रहनुमाई और अरब की नई क़ौमी सरकार को चलाने के लिये अब क्या इन्तज़ाम किया जाय? दूसरा रसूले ख़ुदा तो कोई हो न सकता था लेकिन मदीने की गद्दी के लिये मोहम्मद साहब का वारिस चुना जाना भी ज़रूरी था. कुछ सलाह-मशविरे के बाद, जिसकी तफ़सील में जाना हमारे लिये ज़रूरी नहीं है, मदीने के ख़ास ख़ास लोगों ने जमा होकर, जिनमें अनसार और मुहाजिर दोनों शामिल थे, एक राय से अबूबक्र को मोहम्मद साहब का वारिस चुना और 'ख़लीफ़तुर रसूल' यानी रसूल के ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) की हैसियत से अबूबक्र ने अरबों की इस नई क़ौमी ताक़त की बाग डोर अपने हाथों में ली.

کے پاس ہم سب کو لوٹکر جانا ہے! اگر وے سب لوگ اسلام قبول کر لیں تو ان سے وے تینوں چھڑیاں مانگنا جن کی وے پوجا کرتے ہیں ۔ ان میں سے ایک تمرشک کی ہے جس پر سفید اور پیلی چتیاں ہیں ۔ دوسری بیت کی طرح گرہدار ہے اور تیسری آبنوس کی طرح کالی ہے ۔ ان تینوں چھڑیوں کو باہر میدان میں لاکر جلا ڈالنا ۔"

عیاش لکھتا ہے کہ اس نے پیغمبر کی آگیاں کا ٹھیک ٹھیک پالن کیا ۔ شانتی اور ونئے کے ساتھ اپنے دھرم کا پرچار کیا اور کچھ دنوں میں ہی یمن کے سب لوگوں نے نیا مذہب قبول کر لیا ۔

شروع کے دنوں میں انیک پرچارکوں کے ناکامیاب رہنے' مصیبتیں جھیلنے اور مارے جانے کا بھی ذکر آتا ہے' لیکن جس ادھک پاک اور ادھک سرل دھارمک وشواس کو اور جس اونچے سماجک سنگٹھن کو اسلام نے عربوں میں پیدا کیا اس کی قدر لوگوں کے دلوں میں بڑھتی چلی گئی ۔ دھیرے دھیرے محمد صاحب کی زندگی میں ہی قریب قریب سب عرب قبیلوں نے نئے مذہب کو قبول کر لیا ۔ مدینے کی بڑھتی ہوئی قومی طاقت اور اسی کے ساتھ ساتھ الگ الگ قبیلوں کی دھیرے دھیرے ٹوٹتی ہوئی سنگھتی نے بھی اسلام کے پرچار میں بہت بڑی مدد دی ۔

[2]

محمد صاحب ایک معمولی غریب گھر میں پیدا ہوئے تھے ۔ اپنی موت سے پہلے وے سموچے عرب کے بادشاہ تھے ۔ ان کی بادشاہت سنسار میں ایک انوکھی اور نئے ڈھنگ کی بادشاہت تھی ۔ عرب میں نئے مذہب کی انہوں نے بنیاد رکھی اور اللہ کے رسول کی انہیں پدوی ملی ۔ اس بادشاہت کو نہ انہوں نے اپنے پورّوجوں یا بزرگوں سے حاصل کیا تھا اور نہ اسے اپنے خاندان میں جاری رکھنے کا ہی ان کا وچار تھا ۔ ان کا دیہانت ہوتے ہی لوگوں کو اس بات کی فکر ہوئی کہ مسلمانوں کی رہنمائی اور عرب کی نئی قومی سرکار کو چلانے کے لئے اب کیا انتظام کیا جائے ؟ دوسرا رسول خدا تو کوئی نہ ہو سکتا تھا لیکن مدینے کی گدی کے لئے محمد صاحب کا وارث چنا جانا بھی ضروری تھا ۔ کچھ صلاح مشورے کے بعد' جس کی تفصیل میں جانا ہمارے لئے ضروری نہیں ہے' مدینے کے خاص خاص لوگوں نے جمع ہوکر' جن میں انصار اور مہاجر دونوں شامل تھے' ایک رائے سے ابوبکر کو محمد صاحب کا وارث چنا اور 'خلیفۃالرسول' یعنی رسول کے خلیفہ (پرتی ندھی) کی حیثیت سے ابوبکر نے عربوں کی اس نئی قومی طاقت کی باگ ڈور اپنے ہاتھوں میں لی ۔

कर लिया. मोहम्मद साहब ने उसे अपने क़बीले में जाकर प्रचार करने की हिदायत दी. तुफ़ैल को शुरू में कुछ नाउम्मीदी हुई. उसने मदीने वापस आकर मोहम्मद साहब से कहा—"बनूदास हठी हैं, आप उन्हें बददुआ दीजिये." मोहम्मद साहब ने ईश्वर से दुआ की—'ऐ अल्लाह! बनूदास को सच्चा रास्ता दिखा.' उन्हों ने तुफ़ैल को दिलासा और हिम्मत दिलाकर धीरज और शान्ति से अपना काम जारी रखने की सलाह दी। इस बार एक और मित्र तुफ़ैल के साथ था। इन लोगों ने एक एक घर जाकर शान्ति के साथ नए मजहब का प्रचार किया. सन छै हिजरी तक बनूदास क़बीले के ज्यादातर लोगों ने नए मत को मान लिया. इसके और दो बरस बाद पूरे क़बीले ने अपने पुराने बुतों की पूजा को छोड़कर इसलाम क़ुबूल कर लिया. तुफ़ैल ने अब लकड़ी के उस लट्ठे को, जिसकी उस क़बीले के लोग देवता समझकर पूजा करते थे, सबकी रजामन्दी से आग लगा दी." 14

यमन सूबे के इसलाम क़ुबूल करने की कहानी और भी दिलचस्प है. इब्न साद लिखता है कि मोहम्मद साहब ने अयाश इब्न अबी रबी अतिल् मख़ज़ूमी नाम के एक शख्स के हाथ वहां के हिमयार क़बीले के कुछ लोगों के पास एक ख़त भेजा जिसमें इसलाम के ख़ास ख़ास उसूलों की तरफ़ उनकी तवज्जह दिलाई और उन्हें नया मजहब क़ुबूल करने की दावत दी. चलते समय मोहम्मद साहब ने अयाश से कहा—

"जब तुम पहुंचो तो रात को उनके शहर में दाखिल न होना। सुबह होने तक शहर के बाहर ही ठहरना. सुबह अच्छी तरह नहा धोकर दो रकअत नमाज पढ़ना और अल्लाह से दुआ माँगना कि वह तुम्हें अपने मिशन में कामयाबी दे और तुम्हारी हिफ़ाजत करे। फिर अपने दाहिने हाथ से मेरा ख़त उनके दाहिने हाथ में देना. वे उसे ले लेंगे. फिर क़ुरान की अट्ठानवीं सूरत की आयतें उन्हें पढ़कर सुनाना. जब ख़त्म कर चुको तो कहना—'मोहम्मद ने इसपर विश्वास किया है और मैंने भी विश्वास किया है.' अल्लाह चाहेगा तो तुम उनकी हरशङ्का का समाधान कर सकोगे. अगर वे कोई बात किसी ग़ैर ज़बान में पूछें तो उनसे तरजुमा करा लेना और उनसे कहना 'मेरे लिये एक अल्लाह बस है. मैं उसी की भेजी हुई किताब में विश्वास करता हूँ. मुझे इन्साफ़ करने का हुक्म दिया गया है. अल्लाह ही हमारा और तुम्हारा रब्ब है. हमारे कर्मों का फल हमें मिलेगा और तुम्हारे कर्मों का तुम्हें. हममें और तुम में कोई झगड़ा नहीं है. अल्लाह हम सबको मिला देगा और उसी

14. Sprenger, vol. iii, pp. 255-56.

کر لیا ۔ محمد صاحب نے اُسے اپنے قبیلے میں جا کر پرچار کرنے کی هدایت دی ۔ طفیل کو شروع میں کچھ ناامیدی هوئی ۔ اُس نے مدینے واپس آ کر محمد صاحب سے کہا—"بنوداس هٹھی هیں' آپ انهیں بددعا دیجئے ۔" محمد صاحب نے ایشور سے دعا کی—"اے الله! بنوداس کو سچا راستہ دکھا ۔" اُنہوں نے طفیل کو دلاسا اور همت دلا کر دهیرج اور شانتی سے اپنا کام جاری رکھنے کی صلاح دی ۔ اِس بار ایک اور متر طفیل کے ساتھ تھا ۔ اُن لوگوں نے ایک ایک گھر جاکر شانتی کے ساتھ نئے مذهب کا پرچار کیا ۔ سن چھ هجری تک بنوداس قبیلے کے زیادہ تر لوگوں نے نئے مت کو مان لیا' اس کے اور دو برس بعد پورے قبیلے نے اپنے پرانے بتوں کی پوجا کو چھوڑ کر اِسلام قبول کر لیا ۔ طفیل نے اب لکڑی کے اِس لٹھے کو جس کو اُس قبیلے کے لوگ دیوتا سمجھ کر پوجا کرتے تھے' سب کی رضامندی سے آگ لگا دی ۔ 14

یمن صوبے کے اسلام قبول کرنے کی کہانی اور بھی دلچسپ ہے ۔ ابن سعد لکھتا هے کہ محمد صاحب نے عیاش ابن ابی ربیع اتل مخزومی نام کے ایک شخص کے هاتھ وهاں کے همیار قبیلے کے کچھ لوگوں کے پاس ایک خط بھیجا جس میں اِسلام کے خاص خاص اُصولوں کی طرف اُن کی توجہ دلائی اور انهیں نیا مذهب قبول کرنے کی دعوت دی ۔ چلتے سمے محمد صاحب نے عیاش سے کہا—

"جب تم پہنچو تو رات میں اُن کے شہر میں داخل نہ هونا ۔ صبح هونے تک شہر کے باهر هی ٹھہرنا ۔ صبح اچھی طرح نہا دھو کر دو رکعت نماز پڑھنا اور الله سے دعا مانگنا کہ وہ تمهیں اپنے مشن میں کامیابی دے اور تمهاری حفاظت کرے ۔ پھر اپنے داهنے هاتھ سے میرا خط اُن کے داهنے هاتھ میں دینا ۔ وے اِسے لینگے ۔ پھر قرآن کی اٹھانویں صورت کی آئتیں اُنهیں پڑھ کر سنانا ۔ جب ختم کر چکو تو کہنا—'محمد نے اِس پر وشواس کیا هے اور میں نے بھی وشواس کیا هے' الله چاهے گا تو تم اُن کی هر شنکا کا سمادهان کر سکو گے ۔ اگر وے کوئی بات کسی غیر زبان میں پوچھیں تو ان سے ترجمہ کرا لینا اور ان سے کہنا میرے لئے ایک الله بس هے ۔ میں اُسی کی بھیجی هوئی کتاب میں وشواس کرتا هوں ۔ مجھے اِنصاف کرنے کا حکم دیا گیا هے ۔ الله هی همارا اور تمهارا رب هے ۔ همارے کرموں کا پھل همیں ملیگا اور تمهارے کرموں کا تمهیں ۔ هم میں اور تم میں کوئی جھگڑا نہیں هے ۔ الله هم سب کو ملا دیگا اور اُسی

उसी तरह की कोशिशें की जाती रहीं जिस तरह कि उससे पहले मोहम्मद साहब की राजनैतिक निबलता के दिनों में की जाती थीं.11 टी. डब्लू. आरनल्ड ने अपने इस दावे के सबूत में अनेक घटनाओं का ज़िक्र किया है जिनमें से एक हम नीचे नक़ल करते हैं :—

जिस तरह मक्के में हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब ने इसलाम धर्म को .क़ुबूल किया था उसी तरह की कहानी मदीने में उमैर इब्न वहब की है. क़ुरैश ने मोहम्मद साहब की गुप्त हत्या के इरादे से उमैर को बद्र की लड़ाई के बाद मक्के से मदीने भेजा. इसलाम धर्म के उसूलों के बारे में उमैर की मोहम्मद साहब से देर तक तफ़सील में बातचीत हुई. षड्यन्त्रकारी उमैर, जो क़ुरैशों की साजिश से मोहम्मद साहब को क़त्ल करने गया था इस बातचीत के बाद इसलाम का क़ायल हो गया और उनका भक्त बनकर मदीने से लौटा.

अरब के मुख़्तलिफ़ क़बीलों के जो नुमाइन्दे दूसरे कामों के लिये मोहम्मद साहब से मिलने मदीने आते थे उनके साथ मोहम्मद साहब का बरताव इतना अच्छा होता था, उनकी शिकायतों को वह इतने ग़ौर से सुनते थे और इस तरह इन्साफ़ और ख़ूबसूरती के साथ उनके आपसी झगड़ों का निपटारा कर देते थे कि मोहम्मद साहब का नाम जल्दी ही सारे अरब में मशहूर और सर्वप्रिय हो गया और एक महान और उदार शासक की हैसियत से उनका यश चारों ओर फैल गया. 12

क़बीलों के जो नुमाइन्दे मोहम्मद साहब से मिलने आते थे उनके हाथ के लिखे हुए या जो लोग मौक़े पर मौजूद होते थे उनके लिखे अनेक ऐसे बयान अरब के इतिहास में मौजूद हैं जिनसे पता चलता है कि जो लोग किसी दूसरे काम के लिये आते थे उनपर मोहम्मद साहब की बातचीत का इतना अच्छा असर पड़ता था कि वे मुसलमान होकर लौटते और फिर .ख़ुद अपने क़बीलों में जाकर इसलाम का प्रचार करते थे. 13

हुदैबिया की जंग के बाद जब अरब के दक्खिनी सूबों के लोग मदीने आने जाने लगे यमन के उत्तर से बनूदास क़बीले के कुछ लोग मोहम्मद साहब से मिलने के लिये आए. मोहम्मद साहब से पहले भी इस क़बीले के कुछ लोगों में अपनी पुरानी बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ असन्तोष और किसी अधिक सच्चे धर्म की खोज पैदा हो चुकी थी. इनमें से अब एक तुफ़ैल नाम के आदमी ने इसलाम .क़ुबूल

اسی طرح کی کوشش کی جاتی رہیں جس طرح کہ اس سے پہلے محمد صاحب کی راج نیتک نربلتا کے دنوں میں کی جاتی تھیں۔" 11 ٹی. ڈبلو. آرنلڈ نے اپنے اس دعوے کے ثبوت میں انیک گھٹناؤں کا ذکر کیا ہے جن میں سے ایک ہم نیچے نقل کرتے ہیں :—

جس طرح مکے میں حضرت عمر ابن خطاب نے اسلام دھرم کو قبول کیا تھا اسی طرح کی کہانی مدینے میں امر ابن وحب کی ہے. قریش نے محمد صاحب کی گپت ہتیا کے ارادے سے عمیر کو بدر کی لڑائی کے بعد مکے سے مدینے بھیجا. اسلام دھرم کے اصولوں کے بارے میں عمیر کی محمد صاحب سے دیر تک تفصیل میں بات چیت ہوئی. شڑینترکاری عمیر جو قریشوں کی سازش سے محمد صاحب کو قتل کرنے گیا تھا اس بات چیت کے بعد اسلام کا قائل ہو گیا اور اُن کا بھگت بن کر مدینے سے لوٹا.

عرب کے مختلف قبیلوں کے جو نمائندے دوسرے کاموں کے لئے محمد صاحب سے ملنے مدینے آتے تھے اُن کے ساتھ محمد صاحب کا برتاؤ اتنا اچھا ہوتا تھا، اُن کی شکایتوں کو وہ اتنے غور سے سنتے تھے اور اس طرح انصاف اور خوبصورتی کے ساتھ ان کے آپسی جھگڑوں کا نپٹارا کر دیتے تھے کہ محمد صاحب کا نام جلدی ہی سارے عرب میں مشہور اور سرو پریے ہو گیا اور ایک مہان اور ادار شاسک کی حیثیت سے اُن کا یش چاروں اور پھیل گیا. 12

قبیلوں کے جو نمائندے محمد صاحب سے ملنے آتے تھے ان کے ہاتھ کے لکھے ہوئے یا جو لوگ موقع پر موجود ہوتے تھے اُن کے لکھے انیک ایسے بیان عرب کے اتہاس میں موجود ہیں، جن سے پتہ چلتا ہے کہ جو لوگ کسی دوسرے کام کے لئے آتے تھے اُن پر محمد صاحب کی بات چیت کا اتنا اچھا اثر پڑتا تھا کہ وے مسلمان ہو کر لوٹتے اور پھر خود اپنے قبیلوں میں جا کر اسلام کا پرچار کرتے تھے. 13

حدیبیا کی جنگ کے بعد جب عرب کے دکھنی صوبوں کے لوگ مدینے آنے جانے لگے یمن کے اُتر سے بنوداس قبیلے کے کچھ لوگ محمد صاحب سے ملنے کے لئے آئے. محمد صاحب سے پہلے ہی اس قبیلے کے کچھ لوگوں میں اپنی پرانی بت پرستی کے خلاف اسنتوش اور کسی ادھک سچے دھرم کی کھوج پیدا ہوچکی تھی. ان میں سے اب ایک طفیل نام کے آدمی نے اسلام قبول

11. The Preaching of Islam by T. W. Arnold, P. 33.
12. Life of Mohammet by sir William Muir, vol iv, pp. 107-8.
13. Sprenger, vol iii and Ibn Sad Section 118.

लोगों दोनों से कहदो कि क्या तुम भी इस इसलाम को .क़ुबूल करते हो ? अगर वे .क़ुबूल कर लें तो वे सच्चे रास्ते पर हैं और अगर वे न मानें तो उनकी मर्ज़ी ! तुम्हारा काम सिर्फ़ समझा देना है और बस. अल्लाह अपने सब बन्दों के हाल को देखता है."5

"हमने हर क़ौम के लिये उपासना की अलग अलग विधियां नियत कर दी हैं जिनपर उस क़ौम के लोग चलते हैं. इसलिये लोगों को चाहिये कि इस बारे में झगड़ा न करें. तुम केवल उन्हें अपने रब्ब की ओर बुलाओ, निस्सन्देह तुम्हारा रास्ता सीधा है किन्तु फिर भी अगर वे तुम से झगड़ा करें तो कह दो—'जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है.' "6

"धर्म के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये."7

"निस्सन्देह हमने तुम्हें गवाह के तौर पर भेजा है ताकि तुम लोगों को .ख़ुशख़बरी दो 'और आगाह करदो, ताकि लोग अल्लाह में और उसके रसूल में विश्वास करें, अल्लाह के काम में सहायता दें, अल्लाह की इज्जत करें और सुबह शाम उसकी उपासना करें."8

जो लोग एक बार इसलाम .क़ुबूल करके उससे फिर जावें उनके लिये .क़ुरान का साफ़ हुक्म है—

"ऐ मोहम्मद थोड़े सों को छोड़कर बाक़ी लोगों में तुम्हें सदा विश्वासघातक भी मिलेंगे. उन्हें क्षमा करके उनसे हट जाओ. निस्सन्देह अल्लाह दूसरों पर अहसान करने वालों को प्यार करता है."9

.क़ुरान की जो सूरत सबसे आख़ीर में आई उसमें कहा गया है—

"यदि मुशरिकों में से कोई तुम्हारी शरण में आना चाहे तो उसे अपनी शरण में ले लो ताकि वह अल्लाह के कलाम को सुन सके. इसके बाद भी यदि वह इसलाम .क़ुबूल करना मुनासिब न समझे तो उसे उसके स्थान तक सुराक्षत पहुँचा दो क्योंकि ये लोग बेचारे अज्ञानी हैं." 10

इसी तरह की और बहुत-सी आयतें नक़ल की जा सकती हैं. "इसलाम का प्रचार करने और अविश्वासी अरबों को अपने धर्म में लाने के लिये हिजरत के बाद ठीक

5 .क़ुरान 3-19.
6 .क़ुरान 22-66,67.
7 .क़ुरान 2-256.
8 .क़ुरान 48-8, 9.
9 .क़ुरान 5-13
10 .क़ुरान 8-6.

لوگوں دونوں سے کہہ دو کہ کیا تم بھی اس اسلام کو قبول کرتے ھو؟ اگر وے قبول کر لیں تو وے سچے راستے پر ھیں اور اگر وے نہ مانیں تو اُن کی مرضی ! تمھارا کام صرف سمجھا دینا ھے اور بس ۔ اللہ اپنے سب بندوں کے حال کو دیکھتا ھے ۔" 5

"ھم نے ھر قوم کے لئے اُپاسنا کی الگ الگ ودھیاں نیت کر دی ھیں جن پر اس قوم کے لوگ چلتے ھیں ۔ اس لئے لوگوں کو چاھئے کہ اس بارے میں جھگڑا نہ کریں ۔ تم کیول انھیں اپنے رب کی اور بلاؤ' نیسندیہہ تمھارا راستہ سیدھا ھے کنتو پھر بھی اگر وے تم سے جھگڑا کریں تو کہہ دو—"جو کچھ تم کرتے ھو اُسے اللہ اچھی طرح جانتا ھے' ۔" 6

"دھرم کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی نہیں ھونی چاھئے ۔' 7

"نسندیہہ ھم نے تمھیں گواہ کی طور پر بھیجا ھے تاکہ تم لوگوں کو خوشخبری دو اور آگاہ کرو' تاکہ لوگ اللہ میں اور اس کے رسول میں وشواس کریں' اللہ کے کام میں سہائتا دیں' اللہ کی عزت کریں اور صبح شام اُس کی اُپاسنا کریں ۔" 8

جو لوگ ایک بار اسلام قبول کر کے اُس سے پھر جاویں اُن کے لئے قرآن کا صاف حکم ھے—

"اے محمد تھوڑے سوں کو چھوڑ کر باقی لوگوں میں تمھیں سدا وشواس گھاتک بھی ملیں گے ۔ انھیں چھما کر کے ان سے ھٹ جاؤ ۔ نسندیہہ اللہ دوسروں پر احسان کرنے والوں کو پیار کرتا ھے ۔" 6

قرآن کی جو صورت سب سے آخیر میں آئی اُس میں کہا گیا ھے—

"یدی مشرکوں میں سے کوئی تمھاری شرن میں آنا چاھے تو اسے اپنی شرن میں لے لو تاکہ وہ اللہ کے کلام کو سن سکے ۔ اُس کے بعد بھی یدی وہ اسلام قبول کرنا نامناسب نہ سمجھے تو اسے اس کے استھان تک سورکشت پہنچا دو کیونکہ یہ لوگ بیچارے اگیانی ھیں ۔" 10

اسی طرح کی اور بہت سی آئتیں نقل کی جا سکتی ھیں ۔ "اسلام کا پرچار کرنے اور وشواسی عربوں کو اپنے دھرم میں لانے کے لئے ھجرت کے بعد ٹھیک

5 قرآن 3-19.
6 قرآن 22-66. 67.
7 قرآن 2-256.
8 قرآن 48-8, 9.
قرآن 5-13.
10 قرآن 8-6.

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वम्भरनाथ पांडे

[1]

इसलाम के पैग़म्बर मोहम्मद साहब ने इसलाम के प्रचार में कौन से तरीक़े इस्तेमाल किये और दूसरों को इसके मुताल्लिक क्या हिदायतें दीं इस सिलसिले में क़ुरान की कुछ आयतें ग़ौर करने के क़ाबिल हैं—

"ऐ पैग़म्बर लोगों को अपने रब्ब की राह में बुलाओ तो अक़्लमन्दी की बातों और अच्छी अच्छी नसीहतों से बुलाओ और जब उनके साथ बहस करो तो इस तरह करो कि उनके जी को भाए.' 1

"अगर वे कुछ बेजा बात तुमसे कहें तो उसे सब्र के साथ बर्दाश्त करो और सौजन्य के साथ अलग हट जाओ."2

"फिर अगर लोग तुम्हारे समझाने पर भी तुमसे मुँह मोड़ लें तो उनको तुम्हारा काम केवल साफ़ साफ़ समझा देना है इससे ज़्यादा कुछ नहीं."3

"लेकिन अगर तुम्हारे समझाने पर भी लोग न मानें तो हमने तुम्हें उनका संरक्षक बनाकर नहीं भेजा है, तुम्हारा काम तो केवल इतना ही है कि तुम उन तक हमारा सन्देश पहुँचा दो और बस." 4

ऊपर की आयतें उस समय की हैं जबकि मोहम्मद साहब मक्के में थे और उन्हें और उनके अनुयाइयों को अपने धार्मिक विचारों के सबब बेहद यातनाएँ भोगनी पड़ी थीं. जिस समय मदीने में पूरे अरब के अनन्य शासक की हैसियत से मोहम्मद साहब की ताक़त अपनी चोटी पर थी उस समय भी क़ुरान की इस नीति में कोई तब्दीली नहीं हुई.

"अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो उनसे कहदो कि मैंने और जो भी मेरा अनुयायी है उसने एक अल्लाह के सामने मस्तक झुका दिया है. यही इसलाम शब्द का अर्थ है. जिन लोगों के पास इससे पहले के ईश्वरीय ग्रंथ या इलहामी किताबें मौजूद हैं उनसे और अरब के अनपढ़

1 क़ुरान 16-125.
2 क़ुरान 10-73.
3 क़ुरान 16-28.
4 क़ुरान 42-48.

عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام

وشومبھر ناتھ پانڈے

[1]

اسلام کے پیغمبر محمد صاحب نے اسلام کے پرچار میں کون سے طریقے استعمال کئے اور دوسروں کو اس کے متعلق کیا ہدایتیں دیں اس سلسلے میں قرآن کی کچھ آیتیں غور کرنے کے قابل ہیں—

"اے پیغمبر لوگوں کو اپنے رب کی راہ میں بلاؤ تو عقلمندی کی باتوں اور اچھی اچھی نصیحتوں سے بلاؤ اور جب ان کے ساتھ بحث کرو تو اس طرح کرو کہ ان کے جی کو بھائے." 1

"اگر وے کچھ بیجا بات تم سے کہیں تو اسے صبر کے ساتھ برداشت کرو اور سوجنیہ کے ساتھ الگ ہٹ جاؤ. 2

"پھر اگر لوگ تمہارے سمجھانے پر بھی تم سے منھ موڑ لیں تو ان کو تمہارا کام کیول صاف صاف سمجھا دینا ہے. اس سے زیادہ کچھ نہیں." 3

"لیکن اگر تمہارے سمجھانے پر بھی لوگ نہ مانیں تو ہم نے تمہیں ان کا سنرکشک بنا کر نہیں بھیجا ہے تمہارا کام کیول اتنا ہی ہے کہ تم ان تک ہمارا سندیش پہنچا دو اور بس." 4

اوپر کی آیتیں اس سمے کی ہیں جب کہ محمد صاحب مکے میں تھے اور انہیں اور ان کے انویائیوں کو اپنے دھارمک وچاروں کے سبب بےحد یاتنائیں بھوگنی پڑیں تھیں۔ جس سمے مدینے میں پورے عرب کے اننیہ شاشک کی حیثیت سے محمد صاحب کی طاقت اپنی چوٹی پر تھی اس سمے بھی قرآن کی اس نیتی میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی۔

"اگر وے تم سے جھگڑا کریں تو ان سے کہہ دو کہ میں نے اور جو بھی میرا انویائی ہے اس نے ایک اللہ کے سامنے مستک جھکا دیا ہے. یہی اسلام شبد کا ارتھ ہے. جن لوگوں کے پاس اس سے پہلے کے ایشوری گرنتھ یا الہامی کتابیں موجود ہیں ان سے اور عرب کے انپڑھ

1 قرآن 16-125.
2 قرآن 10-73.
3 قرآن 16-28.
4 قرآن 42-48.

नवम्बर 1957 نومبر

नया हिन्द

जिल्द 24 جلد   नम्बर 5 نمبر

नवम्बर 1957 نومبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी   ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145 مٹھی گنج، الٰہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

[illegible]-MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख

अरब की कल्चर सभ्यता और इसलाम

—विश्वम्भरनाथ पांडे

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

—डाक्टर सैयद महमूद

आइंस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त

—डाक्टर भगवानदास

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन

—पंडित सुन्दरलाल

اس نمبر کے خاص لیکھ

عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام

—وشومبھر ناتھ پانڈے

ہندستان کی کلچر اور اسلام

—ڈاکٹر سید محمود

آئنسٹائن کا سدھانت اور ویدانت

—ڈاکٹر بھگوان داس

سن 1905 کا سودیشی آندولن

—پنڈت سندر لال

हिन्दी घर

ھندی گھر

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ھندی' اُردو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

हमारी नई किताबें

ھماری نئی کتابیں

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)

लेखक—गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : स्व० श्री मंज़र अली सोख्ता

सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ھندی اور اُردو میں)

لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے ودوان: سورگیہ شری منظار علی سوختہ

صفحے 225' قیمت دو روپیہ

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)

लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी

भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू

मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें

दाम दो रुपया

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لیکھکا—قدسیہ زیدی

بھومکا—پنڈت جواھر لال نہرو

موٹا کاغذ' موٹا ٹائپ' بہت سی رنگین تصویریں

دام دو روپیہ

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

گیتا اور قران

275 صفحے' دام ڈھائی روپیہ

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

ھندو مسلم ایکتا

100 صفحے۔ دام بارہ آنے

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

قیمت چار آنے

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ھندستانی کلچر سوسائٹی

145 مٹھی گنج الہ آباد

[illegible]

"आज इतना तो सभी .कुबूल करते हैं कि इन पार्लिमेंटों के मेम्बर खुदग़रज़ और ढोंगी होते हैं. जिस दल का जो मेम्बर होता है वह आंख बन्द करके उसी दल को वोट देता है क्योंकि डिसिप्लिन के ख़याल से वह ऐसा करने के लिये मजबूर है."

पार्लिमेंटी हुकूमत के तरीके के लिये मरते दम तक गांधी जी की यह राय रही और उन्होंने पेशीनगोई की कि अगर हिन्दुस्तान में पार्लिमेंटी राज क़ायम हो गया तो इस मुल्क को बरबादी से कोई नहीं बचा सकता.

गाँधी जी का दिल और दिमाग़ दोनों ग़ैर मामूली थे. उनके सोचने और महसूस करने के तरीक़े बेशुमार और बेअन्त थे। दर असल वे एक शायर या कवि थे लेकिन ऐसे कवि जिनकी कल्पना शक्ति की उड़ान छपे हुये हरफ़ों में नहीं दिखाई देती बल्कि लाखों और करोड़ों मेहनत करने वाले इनसानों की जिन्दगी में झलकती है। गाँधी जी एक सच्चे फ़िलासफ़र थे लेकिन उनका दिमाग़ ख़याली दुनिया की फ़र्ज़ी तसवीरें नहीं गढ़ता था. उनका दिमाग़ इनसानों के आदर्शों और उनकी ख़ाहिशों को एक साँचे में ढालता था. वे एक बहुत बड़े कलाकार थे लेकिन रंग या स्वर के कलाकार नहीं. वे नाउम्मीदी से भरे चेहरों को आशा और उमंगों के रंग से चमका देते थे और उनके सीनों और दिलों में मीठे और सुरीले गीत भर देते थे. यही वजह है कि सारा हिन्दुस्तान फ़ख़्र के साथ कहता था कि गाँधी जी का बड़ापन सारे मुल्क का बड़ापन है और उनका यश सारे हिन्दुस्तान का यश है.

आयें आज इस मौक़े पर हम अपने-अपने गिरेबानों में मुँह डालकर यह छान-बीन करें कि कहाँ तक गाँधी जी की तालीम पर हमने अमल किया है या कर रहे हैं या करने वाले हैं. इस जवाब पर ही हिन्दुस्तान की क़िस्मत का दारो मदार है.

गान्धी जयन्ती,

2-10-57.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

"آج اِتنا تو سبھی قبول کرتے ہیں کہ اِن پارلیمنٹوں کے ممبر خود غرض اور ڈھونگی ہوتے ہیں۔ جس دل کا جو ممبر ہوتا ہے وہ آنکھ بند کر کے اُسی دل کو ووٹ دیتا ہے کیونکہ ڈسپلن کے خیال سے وہ ایسا کرنے کے لئے مجبور ہے۔"

پارلیمنٹری حکومت کے طریقے کے لئے مرتے دم تک گاندھی جی کی یہ رائے رہی اور اُنہوں نے پیشین گوئی کی کہ اگر ہندستان میں پارلیمنٹری راج قائم ہوگیا تو اس ملک کو بربادی سے کوئی نہیں بچا سکتا۔

گاندھی جی کا دل اور دماغ دونوں غیر معمولی تھے۔ اُن کے سوچنے اور محسوس کرنے کے طریقے بےشمار اور بے انت تھے۔ دراصل وے ایک شاعر یا کوی تھے لیکن ایسے کوی جن کی کلپنا شکتی کی اُڑان چھپے ہوئے حرفوں میں نہیں دکھائی دیتی بلکہ لاکھوں اور کروڑوں محنت کرنے والے انسانوں کی زندگی میں جھلکتی ہے۔ گاندھی جی ایک سچے فلسفر تھے لیکن اِن کا دماغ خیالی دنیا کی فرضی تصویریں نہیں گڑھتا۔ ان کا دماغ اِنسانوں آدرشوں اور اُن کی خواہشوں کو ایک سانچے میں ڈھالتا ہے۔ وے ایک بہت بڑے کلاکار تھے لیکن رنگ یا سور کے کلاکار نہیں۔ وے نااُمیدوں کے چہروں کو آشا اور امنگوں کے رنگ سے چمکا دیتے تھے اور اُن کے سینوں اور دلوں میں میٹھے اور سریلے گیت بھر دیتے تھے۔ یہی وجہ ہے کہ سارا ہندستان فخر کے ساتھ کہتا تھا کہ گاندھی جی کا بڑاپن سارے ملک کا بڑاپن ہے اور اُن کا یش سارے ہندستان کا یش ہے۔

آئیے آج اِس موقع پر ہم اپنے اپنے گریبانوں میں منھ ڈال کر یہ چھان بین کریں کہ کہاں تک گاندھی جی کی تعلیم پر ہم نے عمل کیا ہے یا کر رہے ہیں یا کرنے والے ہیں۔ اِس جواب پر ہی ہندستان کی قسمت کا دارومدار ہے۔

گاندھی جینتی۔

2. 10. 57

—وشمبھر ناتھ پانڈے۔

कारबार खुद करे. इसके लिये वह चाहते थे कि हुकूमत की ताक़त एक जगह जमा न होकर चारों तरफ़ दूर दूर तक बँट जावे. देश को इतने छोटे-छोटे हल्कों में बांटा दिया जावे कि जनता अपने जाने बूझे आदमी को प्रतिनिधि चुन सके.

पार्लिमेंटी हुकूमत में नुमाइन्दगी का ढोंग तो है ही इससे भी बढ़कर चुनाव का ढोंग है. चुनाव का आजकल का ढंग जनता को बरबाद करने वाला है. इसमें हर तरह की बेईमानी, धोखा, फ़रेब, ज़्यादती, अन्याय, फ़िज़ूल ख़र्ची और दुश्मनी का एक सोता खुल जाता है, इन चुनावों ने देश के देश बरबाद कर दिये. इनकी बुराइयाँ दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं. गाँधी जी इसके सुधार का नीचे लिखा ढङ्ग बताते थे :—

(1) वोटरों की जानकारी को और उनके चलन को, उनमें नेकी-बदी और भले-बुरे के विचार को इतना ऊँचा कर दिया जाय कि वह हमेशा ऐसे लोगों को ही वोट दें जो नेक हों, त्यागी हों, दूसरों की सेवा और भलाई करने वाले हों और जिनमें ईमानदारी, सादगी और नम्रता हो.

(2) जनता में इतनी ताक़त हो कि वह अपने इन नुमाइन्दों से सच्ची सेवा ले सके और.

(3) जब चाहे इन्हें बदल सकने का भी जनता को हक़ हो.

पार्लिमेंटी तरीक़े में चुनाव से भी बुरी इसकी दलबन्दी है जिसे पार्टी सिस्टम कहा जाता है. दो पार्टियों का होना पार्लिमेंटी हुकूमत में ज़रूरी समझा जाता है. इसके बिना यह तरीक़ा चल नहीं सकता. इन पार्टियों का यह बुनियादी हक़ होता है कि वे एक दूसरे को गिराती मिटाती रहें. इस पार्टी बाज़ी से देश को जो धक्का पहुँचता है उसका कोई अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। पार्टीबाज़ी देश भर में फल-फूलकर गांव-गांव और कोने-कोने में फैल जाती है. हर शख़्स का यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वह इन्साफ़ ग़ैर इन्साफ़, सच-झूठ, ईमानदारी-बेईमानी का ख़याल न करते हुये अपनी पार्टी वाले को जिताये. इसीलिये गांधी जी को पश्चिमी तरीक़े की इस पार्लिमेंटी हुकूमत से सख़्त नफ़रत थी. 'हिन्द स्वराज़' में वह लिखते हैं :—

"इंगलैण्ड की इस समय जो हालत है उसे देखकर तो सचमुच दया आती है और मैं तो ईश्वर से मनाता हूँ कि भारत की ऐसी हालत कभी न हो. जिसे आप पालिमेंटों की मां कहते हैं वह इंगलैंड की पार्लिमेंट तो एक बांझ और वेश्या है. ये दोनों लफ़्ज़ कड़े हैं पर उस पर पूरी तरह लागू होते हैं.

اِس کے لئے وہ چاہتے تھے کہ حکومت کی طاقت ایک جگہ جمع نہ ہو کر چاروں طرف دور دور تک بٹ جاوے۔ دیش کو اِتنے چھوٹے چھوٹے حلقوں میں بانٹ دیا جاوے کہ جنتا اپنے جانے بوجھے آدمی کو پرتی ندھی چن سکے۔

پارلیمنٹری حکومت میں نمائندگی کا ڈھونگ تو ہے ہی اِس سے بھی بڑھ کر چناؤ کا ڈھونگ ہے۔ چناؤ کا آجکل کا ڈھنگ جنتا کو برباد کرنے والا ہے۔ اِس میں ہر طرح کی بےایمانی، دھوکا، فریب، جرم، زیادتی، انیائے فضول خرچی اور دشمنی کا ایک سوتا کھل جاتا ہے۔ اِن چناؤ نے دیش کے دیش برباد کر دئے۔ اُن کی برائیاں دنوں دن بڑھتی جا رہی ہیں۔ گاندھی جی اس کے سدھار کا نیچے لکھا ڈھنگ بتاتے تھے:—

(1) ووٹروں کی جانکاری کو اور اُن کے چلن کو، اُن میں نیکی بدی اور بھلے برے کے وچار کو اِتنا اونچا کر دیا جائے کہ وہ ہمیشہ ایسے لوگوں کو ووٹ دیں جو نیک ہوں، تیاگی ہوں، دوسروں کی سیوا اور بھلائی کرنے والے ہوں اور جن میں ایمانداری سادگی اور نمرتا ہو۔

(2) جنتا میں اِتنی طاقت ہو کہ وہ اپنے اِن نمائندوں سے سچی سیوا لے سکے اور۔

(3) جب چاہے انہیں بدل سکنے کا بھی جنتا کو حق ہو۔

پارلیمنٹری طریقے میں چناؤ سے بھی بری اِس کی دل بندی ہے جسے پارٹی سسٹم کہا جاتا ہے۔ دو پارٹیوں کا ہونا پارلیمنٹری حکومت میں ضروری سمجھا جاتا ہے۔ اِس کے بنا یہ طریقہ چل نہیں سکتا۔ اِن پارٹیوں کا یہ بنیادی حق ہوتا ہے کہ وہ ایک دوسرے کو گراتی مٹاتی رہیں۔ اِس پارٹی بازی سے دیش کو جو دھکا پہونچتا ہے اُس کا کوئی اندازہ نہیں کیا جا سکتا۔ پارٹی بازی دیش بھر میں پھل پھول کر گاؤں گاؤں اور کونے کونے پھیل جاتی ہے۔ ہر شخص کا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ وہ انصاف غیر انصاف سچ جھوٹ، ایمانداری بےایمانی کا خیال نہ کرتے ہوئے اپنی پارٹی والے کو جتائے۔ اِس لئے گاندھی جی کو پچھمی طریقہ کی اِس پارلیمنٹری حکومت سے سخت نفرت تھی۔ 'ہندو سوراج' میں وہ لکھتے ہیں:—

"انگلینڈ کی اِس سمے جو حالت ہے اُسے دیکھ کر تو سچ مچ دیا آتی ہے اور میں تو ایشور سے مناتا ہوں کہ بھارت کی ایسی حالت کبھی نہ ہو۔ جسے آپ پارلیمنٹ کی ماں کہتے ہیں وہ انگلینڈ کی پارلیمنٹ تو ایک بانجھ اور ویشیا ہے۔ یہ دونوں لفظ کڑے ہیں پر اِس پر پوری طرح لاگو ہوتے ہیں۔

चिह्न मशीनें हैं. मशीनें एक बहुत बड़े पाप का चिह्न हैं. मिलों में काम करने वाली औरतों की हालत और भी दर्दनाक है. अगर मशीनों का खब्त हमारे देश में बढ़ता गया तो यह देश बड़ा दुखी देश हो जायगा. मुमकिन है मेरे इस कहने को लोग कुफ़्र समझें लेकिन मैं यह कहने पर मजबूर हूँ कि हमारे लिये हिन्दुस्तान के अन्दर मिलों की तादाद बढ़ाने के बजाय यह ज्यादा अच्छा है कि हम मैनचेस्टर का निकम्मा कपड़ा इस्तेमाल करें और अपना रुपया मैनचेस्टर भेजें. मैनचेस्टर का कपड़ा इस्तेमाल करने से हम अपना धन नष्ट करते हैं लेकिन हिन्दुस्तान को मैनचेस्टर बनाने से हमारा ईमान और इन्सानियत नष्ट हो जायगी।"

यूरोप के इक़्तसादी या आर्थिक संगठन का ढाँचा बड़े शहरों की बुनियाद पर क़ायम हुआ है इसके ख़िलाफ़ हिन्दुस्तानी सभ्यता का केन्द्र (मरकज़) गाँव है। गाँधी जी कहते थे कि हमें अपनी आर्थिक और तामीरी योजना ग्रामों के उद्योग-धन्धों पर ही क़ायम करनी होगी वरना गाँव शहरों के चंगुल में फँसकर बरबाद होते रहेंगे और हिन्दुस्तान माली नुक़्ते नज़र से कभी पनप न सकेगा.

गांधी जी और पार्लिमेण्टी राज

दुनिया के आम लोगों में पार्लिमेंटी राज की इतनी चाह क्यों है इसका सबब यह है कि यह राज आम जनता का राज समझा जाता है. इसमें जनता इस तरह राजा बनाई जाती है कि लाखों आदमी अपना एक नुमाइन्दा चुनते हैं. सौ पीछे पचानवे न उसे जानते हैं और न पहचानते हैं फिर भी वह उनका नुमाइन्दा माना जाता है. चुने जाने के बाद यह नुमाइन्दा उनकी बात भी नहीं पूछता। वह उन्हें असली फ़ायदा भी नहीं पहुंचा सकता क्योंकि वह तो सैकड़ों नुमाइन्दों में से एक होता है. इस तरह एक राजा हटाकर सैकड़ों राजा बन जाते हैं और मिनिस्टरों की शक्ल में दस-बीस बादशाह बन जाते हैं। जनता बेचारी वही लौंडी और दासी बनी रहती है. राजकाज चलाने का ख़र्चा पहले से सैकड़ों गुना बढ़ जाता है. सरकारी नौकरों की गिनती, तनख़ाहें और भत्ते अनाप शनाप बढ़ जाते हैं. अफसरों मिनिस्टरों और राष्ट्रपति की शान शौकत के आडम्बर पुराने बादशाहों को भी शरमाते हैं और यह कहलाता है 'जनता का राज'।

गाँधी जी भोली जनता को ठगने वाले इस पार्लिमेंटी हुकूमत के मायाजाल को जड़ से बदल देना चाहते थे. वे अपने को सच्चा डेमोक्रेट यानी सच्चा लोकतंत्री कहते थे. वह चाहते थे कि जनता सचमुच राजा बने और अपना

چنھ مشینیں ہیں ۔ مشینیں ایک بہت بڑے پاپ کا چنھ ہیں ۔ بمبئی کی ملوں کے مزدور دوسروں کے غلام ہیں ۔ ملوں میں کام کرنے والی عورتوں کی حالت اور بھی دردناک ہے ۔ اگر مشینوں کا خبط ہمارے دیش میں بڑھتا گیا تو یہ دیش بڑا دکھی دیش ہو جائیگا ۔ ممکن ہے میرے اِس کہنے کو لوگ کفر سمجھیں لیکن میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ ہمارے لئے ہندستان کے اندر ملوں کی تعداد بڑھانے کے بجائے یہ زیادہ اچھا ہے کہ ہم مانچسٹر کا نکما کپڑا استعمال کریں اور اپنا روپیہ مانچسٹر بھیجیں ۔ مانچسٹر کا کپڑا استعمال کرنے سے ہم اپنا دھن نشٹ کرتے ہیں لیکن ہندستان کو مانچسٹر بنانے سے ہمارا ایمان اور انسانیت نشٹ ہو جائیگی ۔"

یورپ کے اقتصادی یا آرتھک سنگٹھن کا ڈھانچہ بڑے شہروں کی بنیاد پر قایم ہوا ہے اِس کے خلاف ہندستانی سبھتا کا کیندر (مرکز) گاؤں ہے ۔ گاندھی جی کہتے ہیں کہ ہمیں اپنی آرتھک اور تعمیری یوجنا گراموں کے اُدیوگ دھندوں پر ہی قایم کرنی ہوگی ورنہ گاؤں شہروں کے چنگل میں پھنس کر برباد ہوتے رہیں گے اور ہندستان مالی نقطہ نظر سے کبھی پنپ نہ سکیگا ۔

گاندھی جی اور پارلیمنٹری راج

دنیا کے عام لوگوں میں پارلیمنٹری راج کی اِتنی چاہ کیوں ہے اِس کا سبب یہ ہے کہ یہ راج عام جنتا کا راج سمجھا جاتا ہے ۔ اس میں جنتا اِس طرح راجا بنائی جاتی ہے کہ لاکھوں آدمی اپنا ایک نمائندہ چنتے ہیں ۔ سو پیچھے پچانوے نہ اُسے جانتے ہیں اور نہ پہچانتے ہیں پھر بھی وہ اُن کا نمائندہ مانا جاتا ہے ۔ چنے جانے کے بعد یہ نمائندہ ان کی بات بھی نہیں پوچھتا ۔ وہ اُنہیں اصلی فائدہ بھی نہیں پہنچا سکتا کیونکہ وہ تو سیکڑوں نمائندوں میں سے ایک ہوتا ہے ۔ اِس طرح ایک راجا ہٹا کر سیکڑوں راجا بن جاتے ہیں اور منسٹروں کی شکل میں دس بیس بادشاہ بن جاتے ہیں ۔ جنتا بیچاری وہی لونڈی اور داسی بنی رہتی ہے ۔ راج کاج چلانے کا خرچہ پہلے سے سیکڑوں گنا بڑھ جاتا ہے ۔ سرکاری نوکروں کی گنتی، تنخواہیں اور بھتے اناپ شناپ بڑھ جاتے ہیں ۔ افسروں، منسٹروں اور راشٹرپتی کی شان شوکت کے آڈمبر پرانے بادشاہوں کو بھی شرماتے ہیں اور یہ کہلاتا ہے 'جنتا کا راج' !

گاندھی جی بھولی جنتا کو ٹھگنے والے اِس پارلیمنٹری حکومت کے مایا جال کو جڑ سے بدل دینا چاہتے تھے ۔ وہ اپنے کو سچا ڈیموکریٹ یعنی سچا لوک تنتری کہتے تھے ۔ وہ چاہتے تھے کہ جنتا سچ مچ راجا بنے اور اپنا

करने के बजाय ज़बर्दस्ती की और बनावटी एकता क़ायम करना है."

गाँधी जी कहा करते थे अहिंसा कमज़ोर से कमज़ोर इनसान को भी फ़ौलाद की सी ताक़त दे देती है. उनकी अहिंसा के अचरज भरे नतीजे हमने हिन्दुस्तान में सत्याग्रह की लड़ाइयों में देखे. भारत की स्त्रियाँ बहुत कमज़ोर और पिछड़ी हुई समझी जाती थीं. गाँधी जी ने उन्हें भी सत्याग्रह में शामिल होने की दावत दी. लोगों ने सोचा गाँधी जी दिक़्क़तों को नहीं समझ रहे. मगर उन्हें क्या पता था कि गाँधी जी के सामने आने वाले हिन्दुस्तान की सही तसवीर है.

थोड़े ही दिनों के बाद नमक सत्याग्रह की लड़ाई में लोगों ने अचरज भरा नज़ारा देखा। हज़ारों स्त्रियाँ घरों की ममता छोड़कर आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ीं। जो स्त्रियाँ कभी चौके-चूल्हे से बाहर नहीं निकली थीं, जिन औरतों ने ज़नानख़ाने की बन्द रोशनी के बाहर कभी क़दम नहीं रखा था, जो शायद ही कभी आम रास्तों पर चली हों, पुराने दक़ियानूसी रीत-रिवाजों में फँसी हुई औरतें, शर्मीली और लजीली औरतें, जो घूँघट हटाने की बात न सोच सकती थीं, पुरानी तहज़ीब पर एतक़ाद रखने वाली बुज़ुर्ग औरतें—सब की सब ताक़त और हिम्मत बटोर कर जनता के समुन्दर में कूद पड़ीं। बेपढ़ी होते हुये भी जगह जगह उन्होंने सत्याग्रह कमेटियों की सदारत की. कमज़ोर होते हुये भी उन्होंने सत्याग्रहियों के जत्थों की कमानी की. उन्होंने पुलिस और उनकी लाठियों का सामना किया. धूप और बारिश में बैठकर पिकटिंग की. जेल के सीख़चों के भीतर सज़ायें काटीं, और बाज़ मौक़ों पर मशीनगन की गोलियों का भी सामना किया. गाँव की औरतें हँसते हुये अपने ख़ाविन्दों, बेटे और बेटियों को टीका लगाकर जेलख़ाने भेजतीं. सदियों की दबी और सताई हुई हिन्दुस्तानी नारी ने अपनी क़ुर्बानी और हिम्मत से सारी दुनिया को अचरज में डाल दिया. यह करिश्मा महज़ गाँधी जी की अहिंसा की वजह से हो पाया.

गाँधी जी खादी और गाँव के धन्धों के इसलिये हक़ में थे कि वे समझते थे कि कल कारख़ाने और मशीनें शोषन की जड़ हैं. गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज' में लिखा है :—

"मशीनों ने ही हिन्दुस्तान को कंगाल कर दिया. मैनचेस्टर की ही वजह से हिन्दुस्तान की कारीगरी क़रीब-क़रीब लोप हो चुकी है. मशीनों ने यूरोप को भी बरबाद करना शुरू कर दिया है. बरबादी इस समय अंग्रेज़ों के दरवाज़े खटखटा रही है। आजकल की सभ्यता का ख़ास

کرنے کے بجائے زبردستی کی اور بناوٹی ایکتا قائم کرنا ہے ۔"

گاندھی جی کہا کرتے تھے اہنسا کمزور سے کمزور اِنسان کو بھی فولاد کی سی طاقت دے دیتی ہے ۔ اُن کی اہنسا کے اچرج بھرے نتیجے ہم نے ہندستان میں ستیاگرہ کی لڑائیوں میں دیکھے ۔ بھارت کی استریاں بہت کمزور اور پچھڑی ہوئی سمجھی جاتی تھیں ۔ گاندھی جی نے اُنہیں بھی ستیاگرہ میں شامل ہونے کی دعوت دی ۔ لوگوں نے سوچا گاندھی جی دقتوں کو نہیں سمجھ رہے ۔ مگر اُنہیں کیا پتہ کہ گاندھی جی کے سامنے آنے والے ہندستان کی صحیح تصویر ہے ۔

تھوڑے ہی دنوں کے بعد نمک ستیاگرہ کی لڑائی میں لوگوں نے اچرج بھرا نظارہ دیکھا ۔ ہزاروں اِستریاں گھروں کی ممتا چھوڑ کر آزادی کی لڑائی میں کود پڑیں ۔ جو استریاں کبھی چوکے چولہے سے باہر نہیں نکلی تھیں' جن عورتوں نے زنان خانے کی بند روشنی سے باہر کبھی قدم نہیں رکھا تھا' جو شاید ہی کبھی عام راستوں پر چڑھی ہوں' پرانے دقیانوسی ریت رواجوں میں پھنسی ہوئی عورتیں' شرمیلی اور لجیلی عورتیں جو گھونگھٹ ہٹانے کی بات نہ سوچ سکتی تھیں پرانی تہذیب پر اعتقاد رکھنے والی بزرگ عورتیں——سب کی سب طاقت اور ہمت بٹور کر جنتا کے سمندر میں کود پڑیں ۔ بےپڑھی ہوتے ہوئے بھی جگہ جگہ اُنہوں نے ستیاگرہ کمیٹیوں کی صدارت کی ۔ کمزور ہوتے ہوئے بھی اُنہوں نے ستیاگرہیوں کے جتھوں کی کپتانی کی ۔ اُنہوں نے پولیس اور اُن کی لاٹھیوں کا سامنا کیا ۔ دھوپ اور بارش میں بیٹھ کر پکیٹنگ کی ۔ جیل کے سینخچوں کے بھیتر سزائیں کاٹیں' اور بعض موقعوں پر مشین گن کی گولیوں کا بھی سامنا کیا ۔ گاؤں کی عورتیں ہنستے ہوئے اپنے خاوندوں' بیٹے بیٹیوں کو ٹیکا لگا کر جیل خانے بھیجتیں ۔ صدیوں کے دبی اور ستائی ہوئی ہندستانی ناری نے اپنی قربانی اور ہمت سے ساری دنیا کو اچرج میں ڈال دیا ۔ یہ کرشمہ محض گاندھی جی کی وجہ سے ہو پایا ۔

گاندھی جی کھادی اور گاؤں کے دھندوں کے اِس لئے حق میں تھے کہ وہ سمجھتے تھے کہ کل کارخانے اور مشینیں شوشن کی جڑ ہیں ۔ گاندھی جی نے 'ہند سوراج' لکھا ہے :——

"مشینوں نے ہی ہندستان کو کنگال کر دیا ۔ مانچسٹر کی ہی وجہ سے ہندستان کی کاریگری قریب قریب لوپ ہو چکی ہے ۔ مشینوں نے یورپ کو بھی برباد کرنا شروع کر دیا ہے ۔ بربادی اِس سمے انگریزوں کے دروازے کھٹکھٹا رہی ہے ۔ آج کل کی سبھیتا کا خاص

जड़ एक ही है और ये सब एक दूसरे के मददगार हैं. और जब कभी आपसे मैं यह कहता हूँ कि आप अपने दिलों से छुआ छूत को निकाल बाहर करें तो मैं आपसे यही चाहता हूँ, इससे कम कुछ नहीं कि आप समूची इनसानी क़ौम की बराबरी और बुनियादी एकता में विश्वास करें. ईश्वर एक है. वही सबका ईश्वर है और मैं आप सबसे कहता हूँ कि आप इसे भूल जाइये कि एक ईश्वर के बच्चों में ऊँच, नीच का कोई फ़रक हो सकता है." (हरिजन 16 फ़रवरी, 1934).

आगे चलकर गान्धी जी ने कहा—"जब ऐसा पाक और शुभ दिन आयेगा तब स्टेशनों के ऊपर हिन्दू पानी और मुसलिम पानी या हिन्दू चाय और मुसलिम चाय की शर्मनाक आवज़ें सुनाई न देंगी. तब स्कूलों और कालिजों में हिन्दुओं और ग़ैर हिन्दुओं के अलग-अलग पढ़ने का इन्तज़ाम न होगा, न अलग-अलग बरतन होंगे, तब न जात पाँत या फ़िरक़ों के नाम पर स्कूल या कालिजों के नाम होंगे और न मुसलिम, हिन्दू, जैन सम्प्रदायों के नाम के अस्पताल होंगे." (कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम, सफ़ा 4, दिसम्बर 13, 1941).

गुजरात विद्यापीठ में तक़रीर करते हुये एकबार गाँधी जी ने कहा था—

"मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मकान के चारों तरफ़ ऊँची दीवारें खड़ी हों और सब तरफ़ की खिड़कियाँ ठूँस-ठूँस कर बन्द कर दी गई हों. मैं चाहता हूँ कि मेरे मकान के चारों तरफ़ सब मुल्कों की कल्चर खुली हवा की तरह पूरी आज़ादी के साथ बहती रहें लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई हवा मेरे पाँव उखाड़ दे. मैं यह नहीं चाहता कि पुरानी कल्चर पर ही हम गुज़ारा करते रहें बल्कि हम एक ऐसी नई कल्चर की तामीर करना चाहते हैं कि जिसकी जड़ें मुल्क की तहज़ीब की पुरानी गहराइयों में हों और जो हमारे अब तक के तजरुबों से मालामाल हो. हम उन सब कल्चरों के समन्वय और मेल के तरफ़दार हैं कि जो हिन्दुस्तान में बाहर से आकर बस गईं, जिन्होंने यहाँ की ज़िन्दगी पर असर डाला और जिन पर खुद यहाँ की धरती का असर पड़ा. क़ुदरती तौर पर हमारा यह कल्चरी मेल जोल और समन्वय स्वदेशी ढंग का होगा जिसमें हर कल्चर को मुनासिब जगह मिलेगी. यह अमरीकी ढंग का न होगा जिसमें ज़्यादा तादाद वाले लोगों का या जिनका ज़ोर है उनकी कल्चर और सब कल्चरों को अपने अन्दर हज़म किये हुये है और जहाँ समन्वय या मेल का मक़सद सब राग रागनियों को मिलाकर एक मधुर सुरीला राग पैदा

جڑ ایک ہی ہے اور یہ سب ایک دوسرے کے مددگار ہیں۔ اور جب کبھی آپ سے میں یہ کہتا ہوں کہ آپ اپنے دلوں سے چھوت چھات کو نکال باہر کریں تو میں آپ سے یہی چاہتا ہوں ۔ اس سے کم کچھ نہیں کہ آپ سموچی انسانی قوم کی برابری اور بنیادی یکتا میں وشواس کریں ۔ ایشور ایک ہے ۔ وہی سب کا ایشور ہے اور میں سب سے کہتا ہوں کہ آپ اسے بھول جائیے کہ ایک ایشور کے بچوں میں اونچ، نیچ کا کوئی فرق ہو سکتا ہے ۔" (ہریجن 16 فروری، 1934) ۔

آگے چل کر گاندھی جی نے کہا—"جب ایسا پاک اور شبھ دن آئیگا تب اسٹیشنوں کے اوپر ہندو پانی اور مسلم پانی یا ہندو چائے اور مسلم چائے کی شرمناک آوازیں سنائی نہ دینگی ۔ تب اسکولوں اور کالجوں میں ہندوؤں اور غیر ہندوؤں کے الگ الگ پڑھنے کا انتظام نہ ہوگا، نہ الگ الگ برتن ہونگے تب نہ ذات پات کا یا فرقوں کے نام پر اسکول یا کالج کے نام ہونگے اور نہ مسلم، ہندو، جین سمپردائیوں کے نام کے اسپتال ہوں گے ۔" (کنسٹرکٹو پروگرام، صفحہ 4، دسمبر 13، 1941) ۔

گجرات ودیا پیٹھ میں تقریر کرتے ہوئے ایکبار گاندھی جی نے کہا تھا—

"میں یہ نہیں چاہتا کہ میرے مکان کے چاروں طرف اونچی دیواریں کھڑی ہوں اور سب طرف کی کھڑکیاں ٹھونس ٹھونس کر بند کر دی گئیں ہوں ۔ میں چاہتا ہوں کہ میرے مکان کے چاروں طرف سب ملکوں کی کلچر کھلی ہوا کی طرح پوری آزادی کے ساتھ بہتی رہیں لیکن میں یہ نہیں چاہتا کہ کوئی ہوا میرے پاؤں اکھاڑ دے ۔ میں یہ نہیں چاہتا کہ پرانی کلچر پر ہی ہم گذارا کرتے رہیں بلکہ ہم ایک ایسی نئی کلچر کی تعمیر کرنا چاہتے ہیں کہ جس کی جڑیں ملک کی تہذیب کی پرانی گہرائیوں میں ہوں اور جو ہمارے اب تک کے تجربوں سے مالا مال ہو ۔ ہم ان سب کلچروں کے سمنو اور میل کے طرفدار ہیں کہ جو ہندستان میں باہر سے آ کر بس گئیں، جنھوں نے یہاں کی زندگی پر اثر ڈالا اور جن پر خود یہاں کی دھرتی کا اثر پڑا ۔ قدرتی طور پر ہمارا یہ کلچری میل جول اور سمنو سودیشی ڈھنگ کا ہوگا جس میں ہر کلچر کو مناسب جگہ ملیگی ۔ یہ امریکی ڈھنگ کا نہ ہو جس میں زیادہ تعداد والے لوگوں کا یا جن کا زور ہے اُن کی کلچر اور سب کلچروں کو اپنے اندر ہضم کئے ہوئے ہیں اور جہاں سمنو یا میل کا مقصد سب راگ راگنیوں کو ملا کر ایک مدھر سریلا راگ پیدا

रंग, जाति, या मजहब का कोई सवाल नहीं. हमें सबके साथ एकसा मोहब्बत का बर्ताव करना चाहिये. अपने सब कामों में सब की भलाई को मद्दे नजर रखना चाहिये. हरिजन आन्दोलन का जिक्र करते हुये गान्धी जी ने सन् 1934 में कहा था :—"अपनी ढलती हुई जिन्दगी के दौर में मैं कोई ऐसा साम्प्रदायिक काम हाथ में नहीं ले सकता जिससे आम जनता को कोई नुकसान पहुँचे. हरिजनों की सेवा में भी मेरे दिल की गहराई में यह ख़ाहिश मौजूद है कि इससे सारी जनता और सब लोगों का भला हो. क्योंकि मैं यह नहीं मानता कि इनसान की जिन्दगी कोई ऐसी अलग-अलग कोठरियों में बन्द है जिनमें एक की दूसरे को हवा न लग सके या इनसानी जिन्दगी के टुकड़े किये जा सकते हैं. इसके खिलाफ इनसानी समाज का जीवन एक ऐसी समूची चीज है जिसके न अलग-अलग टुकड़े हैं और न टुकड़े किये जा सकते हैं. इसलिये जो चीज एक के सच्चे भले की है या हो सकती है वह जरूर सब के भले की होगी. यह कसौटी कभी धोखा नहीं दे सकती.

"मैंने अपनी जिन्दगी भर सबकी भलाई के इस उसूल में विश्वास किया है. इसी लिये मैंने कभी भी कोई ऐसा काम, फिरक़े वाराना या राष्ट्रीय, हाथ में नहीं लिया जो पूरी इनसानी क़ौम के हित को नुक़सान पहुंचाने वाला हो. जब मैंने यह अच्छी तरह देख लिया कि आजकल हिन्दुओं में जिस तरह की छुआ छूत बरती जाती है वह सिर्फ़ हिन्दुओं की आगे की तरक्की के रास्ते में ही रुकावट नहीं है बल्कि आम तौर पर सब लोगों की तरक्की के रास्ते में रुकावट है. सरसरी नजर से देखने वाला भी यह अच्छी तरह देख सकता है कि इस छुआछूत ने न सिर्फ़ ऊँची जाति के हिन्दुओं को बल्कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सब मजहबों के लोगों को मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरों को भी उसी तरह जकड़ रखा है जिस तरह साँप किसी को अपनी कुन्डलियों में जकड़ लेता है. छुआ छूत के इस पिशाच से युद्ध करने में मेरे दिल के अन्दर यह ख़ाहिश नहीं है कि सिर्फ़ हिन्दुओं हिन्दुओं में ही भाई चारा क़ायम हो जाय, मेरी दिली ख़ाहिश यह है कि इनसान इनसान के बीच भाई चारा क़ायम हो जाय जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, और यहूदी सब एक समान शामिल हों क्योंकि मुझे दुनिया के सब बड़े-बड़े मजहबों की बुनियादी सचाई में विश्वास है. मुझे विश्वास है कि ये सब मजहब ईश्वर के दिये हुये हैं. और मुझे विश्वास है कि ये सब मजहब उन लोगों के लिये जरूरी थे जिन्हें ये ईश्वर से मिले. मुझे इस बात का भी विश्वास है कि अगर हम सब अलग-अलग धर्म-मजहबों की किताबों को उन धर्मों के मानने वालों की निगाह से पढ़ें तो हमें पता चलेगा कि इन सब धर्मों की

کوئی سوال نہیں ۔ ہمیں سب کے ساتھ ایک سا محبت کا برتاؤ کرنا چاہئے ۔ اپنے سب کاموں میں سب کی بھلائی کو مدنظر رکھنا چاہئے ۔ ہریجن آندولن کا ذکر کرتے ہوئے گاندھی جی نے سن 1934 میں کہا تھا—"اپنی ڈھلتی ہوئی زندگی کے دور میں میں کوئی ایسا سامپردائک کام ہاتھ میں نہیں لے سکتا جس سے عام جنتا کو کوئی نقصان پہنچے ۔ ہریجنوں کی سیوا میں بھی میرے دل کی گہرائی میں یہ خواہش موجود ہے کہ اس سے ساری جنتا اور سب لوگوں کا بھلا ہو ۔ کیونکہ میں نہیں مانتا کہ انسان کی زندگی کوئی ایسی الگ الگ کوٹھریوں میں بند ہے جن میں ایک کی دوسرے کو ہوا نہ لگ سکے یا انسانی زندگی کے ٹکڑے کئے جا سکتے ہیں ۔ اس کے خلاف انسانی سماج کا جیون ایک ایسی سموچی چیز ہے جس کے نہ الگ الگ ٹکڑے ہیں اور نہ ٹکڑے کئے جا سکتے ہیں ۔ اس لئے جو چیز ایک کے سچے بھلے کی ہے یا ہو سکتی ہے وہ ضرور سب کے بھلے کی ہوگی ۔ یہ کسوٹی کبھی دھوکا نہیں دے سکتی ۔

میں نے اپنی زندگی بھر سب کی بھلائی کے اس اصول میں وشواس کیا ہے ۔ اس لئے میں نے کبھی بھی کوئی ایسا کام، فرقہ وارانہ یا راشٹری، ہاتھ میں نہیں لیا جو پوری انسانی قوم کے ہت کو نقصان پہنچانے والا ہو ۔ جب میں نے یہ اچھی طرح دیکھ لیا کہ آجکل ہندوؤں میں جس طرح کی چھوا چھوت برتی جاتی ہے وہ صرف ہندوؤں کی آگے کی ترقی کے راستے میں ہی رکاوٹ نہیں ہے بلکہ عام طور پر سب لوگوں کی ترقی کے راستے میں رکاوٹ ہے ۔ سرسری نظر سے دیکھنے والا بھی یہ اچھی طرح دیکھ سکتا ہے کہ اس چھوا چھوت نے نہ صرف اونچی جاتی کے ہندوؤں کو بلکہ ہندستان میں رہنے والے سب لوگوں کو مسلمانوں، عیسائیوں اور دوسروں کو بھی اسی طرح جکڑ رکھا ہے جس طرح سانپ کسی کو کنڈلیوں میں جکڑ لیتا ہے ۔ چھوا چھوت کے اس پشاچ سے یدھ کرنے میں میرے دل کے اندر یہ خواہش نہیں ہے کہ صرف ہندوؤں ہندوؤں میں ہی بھائی چارا قایم ہو جائے، میری دلی خواہش یہ ہے کہ انسان انسان کے بیچ بھائی چارا قایم ہو جائے جس میں ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی اور یہودی سب ایک سمان شامل ہوں کیونکہ مجھے دنیا کے سب بڑے بڑے مذہبوں کی بنیادی سچائی میں وشواس ہے ۔ مجھے وشواس ہے کہ یہ سب مذہب ایشور کے دئے ہوئے ہیں ۔ اور مجھے وشواس ہے کہ یہ سب مذہب ان لوگوں کے لئے ضروری تھے جنہیں یہ ایشور سے ملے ۔ مجھے اس بات کا بھی وشواس ہے کہ اگر ہم سب الگ الگ دھرم مذہبوں کی کتابوں کو ان دھرموں کے ماننے والوں کی نگاہ سے پڑھیں تو ہمیں پتہ چلے گا کہ ان سب دھرموں کی

का ख़ून बहाकर अगर आज़ादी मिलती है तो ऐसी आज़ादी नहीं चाहिये. इसीलिये उन्होंने चौरीचौरा के क़त्ले-आम के बाद सत्याग्रह की लड़ाई बन्द कर दी. दरजनों बार उन्होंने लम्बे-लम्बे उपवास और फ़ाके किये और रो-रोकर ईश्वर से दुआएँ माँगीं.

इनसानी तारीख़ में शायद पहली बार जमात की हैसियत से हमें यह बताया गया कि हमारा काम दूसरों को क़त्ल करना नहीं है बल्कि ख़ुद अपने आपका बलिदान कर देना है और फिर भी आख़ीर में हम फ़तहयाब होंगे. गांधीजी का यह कितना शानदार पैग़ाम था. किसी सियासी मक़सद को हासिल करने का यह पैग़ाम नहीं था बल्कि इनसानी क़ौम की भलाई का बुनियादी पैग़ाम था. जिस जंग में सचाई की कोई जगह न हो उसमे मरना मानो अपनी हस्ती को मिटा देना है. पर सत्य और अहिंसा के युद्ध में कुछ बात बाक़ी रह जाती है. उसमें हार जाने पर भी जीत होती है और मर जाने पर भी अमर जीवन मिलता है.

गांधीजी की सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि वे एक बहुत बड़े सियासतदाँ थे, बहुत बड़े नेता थे, बहुत बड़े समाज सुधारक थे लेकिन सब से ज़्यादा वे एक बहुत बड़े इनसान थे. यदि समाज के फ़ायदे के लिये वे किसी क़ुर्बानी का विधान करते तो सब से पहले अपने आप पर उसका अमल करके देख लेते. अगर कोई नया प्रयोग करना चाहते तो सब से पहले उसकी तकलीफ़ें ख़ुद बर्दाश्त करके देख लेते. अपना सब कुछ त्यागकर तब वे दूसरों को त्याग करने का उपदेश देते.

गाँधी जी हर क़दम पर अपने आपको कसौटी पर कसते थे. खाने में, पीने में, किसी से बात करने में, बहस करने में, कोई भी छोटा बड़ा क़दम उठाने में, हर बात और हर फ़िक़रे में वह बराबर अन्दर ही अन्दर देखते रहते थे कि कहीं वह बेसब्र तो नहीं हो रहे हैं? माफ़ी के उसूल को तोड़ तो नहीं रहे हैं? कोई बात ख़ुदी या घमण्ड के असर में तो नहीं कर रहे हैं? दूसरे का हक़ तो नहीं छीन रहे हैं? ज़ायक़े के लिये तो नहीं खा रहे हैं? सचाई से बाल बराबर भी तो नहीं हट रहे हैं? दिल के अन्दर कहीं ग़ुस्से की रमक़ तो नहीं है? अहिंसा के उसूल से तो नहीं डिग रहे हैं? वग़ैरह वग़ैरह.

गान्धी जी जो भी काम करते उसे तोल कर देख लेते कि क्या वह सारी इनसानी क़ौम के फ़ायदे का है या नहीं! हिन्दुस्तान की जनता के ज़रिये ही वह सारी इनसानी क़ौम की ख़िदमत करने की बात सोचते। उन्होंने एक उसूल बना लिया था कि सारी इनसानी क़ौमों का एक ही ख़ानदान है. दुनिया के सब इन्सान भाई-भाई हैं, इसमें देश,

کا خون بہاکر اگر آزادی ملتی ہے تو ایسی آزادی نہیں چاہئے۔ اِسی لئے اُنہوں نے چوری چورا کے قتل عام کے بعد ستیاگرہ کی لڑائی بند کر دی۔ درجنوں بار اُنہوں نے لمبے لمبے اپواس اور فاقے کئے اور رو رو کر ایشور سے دعائیں مانگیں۔

اِنسانی تاریخ میں شاید پہلی بار جماعت کی حیثیت سے ہمیں یہ بتایا گیا کہ ہمارا کام دوسروں کو قتل کرنا نہیں ہے بلکہ خود اپنے آپ کو بلیدان کر دینا ہے اور پھر بھی آخر میں ہم فتحیاب ہونگے۔ گاندھی جی کا یہ کتنا شاندار پیغام تھا۔ کسی سیاسی مقصد کو حاصل کرنے کا یہ پیغام نہیں تھا بلکہ اِنسانی قوم کی بھلائی کا بنیادی پیغام تھا۔ جس جنگ میں سچائی کی کوئی جگہ نہ ہو اُس میں مرنا مانو اپنی ہستی کو مٹا دینا ہے۔ پر ست اور اہنسا کی یدھ میں کچھ بات باقی رہ جاتی ہے۔ اُس میں ہار جانے پر بھی جیت ہوتی ہے اور مر جانے پر بھی امر جیون ملتا ہے۔

گاندھی جی کی سب سے بڑی خاصیت یہ تھی کہ وہ ایک بہت بڑے سیاست داں تھے، بہت بڑے نیتا تھے، بہت بڑے سماج سدھارک تھے لیکن اِن سب سے زیادہ وہ ایک بڑے اِنسان تھے۔ یدی سماج کے فائدے کے لئے کسی قربانی کا ودھان کرتے تو سب سے پہلے اپنے آپ پر عمل کر کے دیکھ لیتے۔ اگر کوئی نیا پریوگ چاہتے تو سب سے پہلے اُس کی تکلیف خود برداشت کر کے دیکھ لیتے۔ اپنا سب کچھ تیاگ کر تب وہ دوسروں کو تیاگ کرنے کا اپدیش دیتے۔

گاندھی جی ہر قدم پر اپنے آپ کو کسوٹی پر کستے تھے۔ کھانے میں، پینے میں، کسی سے بات کرنے میں، بحث کرنے میں، کوئی بھی چھوٹا بڑا قدم اُٹھانے میں، ہر بات اور فقرے میں وہ برابر اندر ہی اندر دیکھتے رہتے تھے کہ کہیں وہ بےصبر تو نہیں ہو رہے ہیں؟ معافی کے اُصول کو توڑ تو نہیں رہے ہیں؟ کوئی بات خودی یا گھمنڈ کے اثر میں تو نہیں کر رہے ہیں؟ دوسرے کا حق تو نہیں چھین رہے ہیں؟ ذائقے کے لئے تو نہیں کھا رہے ہیں؟ سچائی سے بال برابر تو نہیں ہٹ رہے ہیں؟ دل کے اندر کہیں غصے کی رمق تو نہیں ہے؟ اہنسا کے اصول سے تو نہیں ڈگ رہے ہیں؟ وغیرہ وغیرہ۔

گاندھی جی جو بھی کام کرتے اُسے تول کر دیکھ لیتے کہ وہ ساری انسانی قوم کے فائدے کے لئے ہے کہ نہیں! ہندستان کی جنتا کے ذریعے ہی وہ ساری انسانی قوم کی خدمت کرنے کی بات سوچتے۔ انہوں نے ایک اصول بنا لیا تھا کہ ساری انسانی قوموں کا ایک ہی خاندان ہے۔ دنیا کے سب انسان بھائی بھائی ہیں۔ اس میں دیش،

हर शोषण को जन्म देती है इसलिये इनसान 'अपरिग्रही' बने यानी जायदाद के ऊपर से मालिकाना हक़ छोड़ दे. सब की कमाई सब के लिये हो. उनकी सातवीं हिदायत थी कि 'आपसी' मुल्की और अन्तर्राष्ट्रीय—सब झगड़े हमदर्दी, प्रेम, भाईचारे की भावना, और बिना ख़ून बहाये अहिंसा के उसूल पर हल किये जाँय. हर इनसान ईश्वर की औलाद है और ईश्वर कभी यह पसन्द न करेगा कि हम अपनी ख़ुदग़रज़ियों के लिये उसकी सन्तानों को ईजा पहुँचायें या उनका ख़ून बहायें उनकी आठवीं हिदायत थी कि इनसान इनसान के बीच न कोई छोटा है और न बड़ा. ईश्वर कभी यह पसन्द न करेगा कि हम अपने ग़ुरूर या घमन्ड में किसी को छोटा या हक़ीर समझें. एक ही ईश्वर की सन्तान होने के नाते हर इनसान बराबरी का दावेदार है. दर अस्ल हीन और पतित समझे जाने वाले इनसानों के बीच में ही ईश्वर निवास करता है. जो ग़ुरूर करता है उसका सिर नीचा होता है. जो तलवार उठाता है वह उसी तलवार से मिट जाता है. छोटे-बड़े और अमीर-ग़रीब के सब भेद नक़ली हैं. अपने घमन्ड में इनसान ने इन भेदों की बुनियाद डाली है. उनकी नवीं हिदायत थी कि इनसान हर तरह की चोरी से बचे. इसे वह 'अस्तेय' कहते थे. चार रोटी की भूख है और अगर हम छै रोटी खाते हैं तो हमने दो रोटी की चोरी की. ग़रीबों के मुँह से उतने कौर हमने छीन लिये. अगर हमारा काम तीन कुरतों से चल जाता है और हम छै कुरते अपने लिये जमा करते हैं तो हम चोरी करते हैं. हम एक भाई को नंगा रखने में मदद देते हैं. सब इनसानों के बराबर ही हमारा हक़ है, अगर हम ज़्यादा लेते हैं तो हम चोरी करते हैं, गुनाह करते हैं, अमानत में ख़यानत करते हैं. उनकी दसवीं हिदायत थी कि सब बड़े-बड़े मज़हबों में एक सी सचाइयाँ हैं. इसलिये सब मज़हबों का आदर करो. ईश्वर और अल्लाह एक हैं. इनसान ने अपनी बेवक़ूफ़ी में ईश्वर में भी फ़र्क़ करने की बदतमीज़ी की. उनकी ग्यारहवीं हिदायत थी कि कोई काम ऊँचा-नीचा नहीं है. सच्चा ब्राह्मण वही है जो सच्चा मेहतर है. हरिजनों को छोटा समझकर, उनके साथ नफ़रत करके हम इनसानों की बराबरी के दावेदार नहीं बन सकते. हर तरह का श्रम बराबर है चाहे वह राष्ट्रपति का काम हो और चाहे भंगी का. अपने हर क़दम को गान्धीजी ने इन्हीं उसूलों की रोशनी में जाँचा और परखा. गांधीजी की सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि फ़ौरन काम बनाने के लिये अपनी ज़िन्दगी के इन बुनियादी उसूलों के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया. उन्होंने बार-बार कहा कि सचाई को त्याग कर अगर स्वराज आता है तो ऐसा स्वराज मुझे नहीं चाहिये. दूसरों

ھر شوشن کو جنم دیتی ھے. اِس لئے اِنسان 'اَپ گرھی' بنے یعنی جائداد کے اوپر سے مالکانہ حق چھوڑدے. سب کی کمائی سب کے لئے ھو. اُن کی ساتویں ھدایت تھی کہ آپسی' ملکی اور انتر راشٹری—سب جھگڑے ھمدردی' پریم'بھائی چارے کی بھاؤنا' اور بنا خون بہائے آھنسا کے اُصول پر حل کئے جائیں. ھر انسان ایشور کی اولاد ھے اور ایشور کبھی یہ پسند نہ کریگا کہ ھم اپنی خودغرضیوں کےلئے اس کی سنتانوں کو ایذا پہونچائیں یا اُن کا خون بہائیں. اُن کی آٹھویں ھدایت تھی کہ اِنسان انسان کے بیچ نہ کوئی چھوٹا ھے اور نہ بڑا. ایشور کبھی یہ پسند نہ کریگا کہ ھم اپنے غرور یا گھمنڈ میں کسی کو چھوٹا یا حقیر سمجھیں. ایک ھی ایشور کی سنتان ھونے کے ناتے ھر انسان برابری کا دعویدار ھے. دراصل ھین اور پتت سمجھے جانے والے اِنسانوں کے بیچ میں ھی ایشور نواس کرتا ھے. جو غرور کرتا ھے اُس کا سر نیچا ھوتا ھے. جو تلوار اُٹھاتا ھے وہ اُسی تلوار سے مٹ جاتا ھے. چھوٹے بڑے اور امیر غریب کے سب بھید نقلی ھیں. اپنے گھمنڈ میں اِنسان نے اِن بھیدوں کی بنیاد ڈالی ھے. اُن کی نویں ھدایت تھی کہ اِنسان ھر طرح کی چوری سے بچے. اُسے وہ 'استیہ' کہتے تھے. چار روٹی کی بھوک ھے اور اگر ھم چھ روٹی کھاتے ھیں تو ھم نے دو روٹی کی چوری کی. غریبوں کے منھ سے اُتنے کور ھم نے چھین لئے. اگر ھمارا کام تین کرتوں سے چلتا ھے اور ھم چھ کرتے اپنے لئے جمع کرتے ھیں تو ھم چوری کرتے ھیں. ھم ایک بھائی کو ننگا رکھنے میں مدد دیتے ھیں. سب اِنسانوں کے برابر ھی ھمارا حق ھے؛ اگر ھم زیادہ لیتے ھیں تو ھم چوری کرتے ھیں' امانت میں خیانت کرتے ھیں. اُن کی دسویں ھدایت تھی کہ سب بڑے بڑے مذھبوں میں ایک سی سچائیاں ھیں. اِس لئے سب مذھبوں کا آدر کرو. ایشور اور اللہ ایک ھیں. اِنسان نے اپنی بیوقوفی میں ایشور میں بھی فرق کرنے کی بدتمیزی کی. اُن کی گیارھویں ھدایت تھی کہ کوئی کام اُونچا نیچا نہیں ھے. سچا برھمن راج وھی ھے جو سچا مہتر ھے. ھریجنوں کو چھوٹا سمجھ کر' اُن کے ساتھ نفرت کر کے ھم اِنسانوں کی برابری کے دعویدار نہیں بن سکتے. ھر طرح کا شرم برابر ھے چاھے وہ راشٹرپتی کا کام ھو اور چاھے بھنگی کا. اپنے ھر قدم کو گاندھی جی نے اُنھیں اصولوں کی روشنی میں جانچا اور پرکھا. گاندھی جی کی سب سے بڑی خاصیت یہ تھی کہ فوراً کام بنانے کے لئے اپنی زندگی کے ان بنیادی اصولوں کے ساتھ انھوں نے کبھی سمجھوتہ نہیں کیا. انھوں نے بار بار کہا کہ سچائی کو تیاگ کر اگر سوراج آتا ھے تو ایسا سوراج مجھے نہیں چاھئے. دوسروں

गान्धी जी के जनम दिन पर

दो अक्तूबर सन् 1957 को सारे हिन्दुस्तान ने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के जनम दिन को मनाया। उन्हें हम से बिछुड़े क़रीब-क़रीब दस बरस हो रहे हैं. इन दस बरसों में मुल्क ने कितने ही उतार चढ़ाव देखे. हमारे इम्तहान के कितने ही मौके आये. क़ुदरती था कि ऐसे मौक़ों पर हम गान्धी जी की पाक हस्ती को याद करते. ये भी याद करते कि ऐसी पेचीदगियों को सुलझाने के लिये गान्धी जी क्या करते. सन् 1917 से 1947 तक मुल्क की सियासत पर गान्धी जी की ज़बरदस्त छाप थी. वह जिधर डग उठाते थे उधर सारा हिन्दुस्तान चलता था. वे हमें अँधेरे से रोशनी में लाये. हमें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था उन्होंने हमें रास्ता बताया. आज़ादी हासिल करने के लिये हमारे पास कोई हथियार नहीं थे उन्होंने हमें अहिंसा और सत्याग्रह का हथियार दिया. वे बोलते थे और मुल्क महसूस करता था कि वह मुल्क की भावनाओं को ही पेश कर रहे हैं. मिट्टी से उन्होंने योधा पैदा किये. वह जहाँ बैठते थे वह जगह मन्दिर बन जाती थी. वह जो कुछ कहते थे मुल्क आँख बन्द करके उसपर अमल करता था. उन्होंने सबसे पहली हिदायत हमें दी कि हम अपने दिल से डर के जज़बे को क़तई निकाल दें, उनकी दूसरी हिदायत थी कि अन्याय के सामने सर झुकाना हम बन्द कर दें, उनकी तीसरी हिदायत थी कि जो कुछ सच है उसी का हम आग्रह करें यानी उसी पर हम ज़ोर दें, उनकी चौथी हिदायत थी कि अहिंसा को हम अपनी जिन्दगी में ढालें और अपने हर काम को अहिंसा की दूरबीन से देखें. उनकी पाँचवीं हिदायत थी कि हम बुराई से तो नफ़रत करें लेकिन बुराई करने वाले से प्रेम करें. उनकी छठी हिदायत थी कि इनसान के ज़रिये इनसान के शोषन के हम सब दरवाज़े बन्द कर दें स्वामित्व की भावना

گاندھی جی کے جنم دن پر

دو اکتوبر سن 1957 کو سارے ہندستان نے راشٹرپتا مہاتما گاندھی کے جنم دن کو منایا۔ انہیں ہم سے بچھڑے قریب قریب دس برس ہو رہے ہیں۔ اِن دس برسوں میں ملک نے کتنے ہی اُتار چڑھاؤ دیکھے۔ ہمارے امتحان کے کتنے ہی موقع آئے۔ قدرتی تھا کہ ایسے موقعوں پر ہم گاندھی جی کی پاک ہستی کو یاد کرتے۔ یہ بھی یاد کرتے کہ ایسی پیچیدگیوں کو سلجھانے کے لئے گاندھی جی کیا کرتے تھے۔ 1917 سے 1947 تک ملک کی سیاست پر گاندھی جی کی زبردست چھاپ تھی۔ وہ جدھر ڈگ اٹھاتے تھے اُدھر سارا ہندستان چلتا تھا۔ وے ہمیں اندھیرے سے روشنی میں لائے۔ ہمیں کوئی راستہ سوجھ نہیں رہا تھا۔ اُنہوں نے ہمیں راستہ بتایا۔ آزادی حاصل کرنے کے لئے ہمارے پاس کوئی ہتھیار نہیں تھے۔ اُنہوں نے ہمیں اہنسا اور ستیاگرہ کا ہتھیار دیا۔ وے بولتے تھے اور ملک محسوس کرتا تھا کہ وہ ملک کی بھاؤناؤں کو ہی پیش کر رہے ہیں۔ مٹی سے اُنہوں نے یودھا پیدا کئے۔ وہ جہاں بیٹھتے تھے وہ جگہ مندر بن جاتی تھی۔ وہ جو کچھ کہتے تھے ملک آنکھ بند کر کے اُس پر عمل کرتا تھا۔ انہوں نے سب سے پہلی ہدایت ہمیں دی کہ ہم اپنے دل سے ڈر کے جذبے کو قطعی نکال دیں۔ اُن کی دوسری ہدایت تھی کہ انیائے کے سامنے سر جھکانا ہم بند کر دیں۔ اُن کی تیسری ہدایت تھی کہ جو کچھ سچ ہے اُسی کا ہم آگرہ کریں یعنی اُسی پر ہم زور دیں۔ اُن کی چوتھی ہدایت تھی کہ اہنسا کو ہم اپنی زندگی میں ڈھالیں۔ اپنے ہر کام کو اہنسا کی دوربین سے دیکھیں۔ اُن کی پانچویں ہدایت تھی کہ ہم برائی سے تو نفرت کریں لیکن برائی کرنے والے سے پریم کریں۔ اُن کی چھٹی ہدایت تھی کہ اِنسان کے ذریعے اِنسان کے شوشن کے ہم سب دروازے بند کریں۔ سوامتو کی بھاؤنا

पूरी पुस्तक छै खंडों और उनन्चास अध्यायों में बांटी गई है. पहले खंड में भारतीय अर्थशास्त्र की पृष्ठ भूमि यानी पसे मंजर दिया गया है. दूसरे खंड में अर्थशास्त्र के विषय को समझाया गया है, तीसरे खंड में इस्तेमाल और जरूरत के उसूल को समझाया गया है, चौथे खंड में पैदावार की मुख्तलिफ़ शक्लों को दिखाया गया है, पांचवें खण्ड में अदल-बदल के सिद्धान्त पर रोशनी डाली गई है और छठे खण्ड में पैदावार के बटवारे को समझाया गया है, इसी खंड में समाजवादी ढांचा और आर्थिक बराबरी के उसूलों पर बहस की गई है, पुस्तक को 'ईसावास्य मिदम् सर्वम्'—उपनिषद् के श्लोक से शुरू किया गया है और सम्पत्तिदान से खत्म किया गया है, कीमती आंकड़ों के सहारे पुस्तक में दिये हुये उसूल समझाये गये हैं.

नये नुक़्ते नजर से लिखी गई केला जी की यह पुस्तक हिन्दी अर्थशास्त्र की दिशा में एक तारीफ़ के लायक़ क़दम है. हमें उम्मीद है और दूसरी जबानों में भी इसका तर्जुमा होगा.

—वि. ना. पांडे

پوری پستک چھ کھنڈوں اور انچاس ادھیایوں میں بانٹی گئی ہے۔ پہلے کھنڈ میں بھارتیہ ارتھ شاستر کی پرشٹھ بھومی یعنی پس منظر دیا گیا ہے۔ دوسرے کھنڈ میں ارتھ شاستر کے وشئے کو سمجھایا گیا ہے۔ تیسرے کھنڈ میں استعمال اور ضرورت کے اصول کو سمجھایا گیا ہے۔ چوتھے کھنڈ میں پیداوار کی مختلف شکلوں کو دکھایا گیا ہے۔ پانچویں کھنڈ میں ادل بدل کے سدھانت پر روشنی ڈالی گئی ہے اور چھٹے کھنڈ میں پیداوار کے بٹوارے کو سمجھایا گیا ہے۔ اسی کھنڈ میں سماج وادی ڈھانچہ اور آرتھک برابری کے اصولوں پر بحث کی گئی ہے۔ پستک کو 'ایشا واسیہ مدم سروم'—اپنشد کے شلوک سے شروع کیا گیا ہے اور سمپتی دان سے ختم کیا گیا ہے۔ قیمتی آنکڑوں کے سہارے پستک میں دیئے ہوئے اصول سمجھائے گئے ہیں۔

نئے نقطۂ نظر سے لکھی گئی کیلا جی کی یہ پستک ہندی ارتھ شاستر کی دشا میں ایک تعریف کے لائق قدم ہے۔ ہمیں امید ہے اور دوسری زبانوں میں بھی اسکا ترجمہ ہوگا۔

—وی۔ نا۔ پانڈے۔

विचार हों सो सही. अकेले रहा जा सके तो सबसे अच्छा. जैसे अकेले रहने में दुख है वैसे बच्चों के लिये सौतेली माँ के लाने में भी दुख है. अब तुम थोड़े समय भाई के साथ रह सकोगी. बार बार ऐसा मौक़ा न मिलेगा ! दिलों की सफ़ाई कर लेना. कोई चिन्ता न करना. सुख-दुख तो धूप-छांव की तरह आते ही रहते हैं. संसार माया से भरा है. थोड़ी माया वाले को थोड़ा दुख. इसलिये माया और जंजाल बढ़ाने में कोई लाभ नहीं.

"कोनां छोरू, कोनां वाछरू, कोना माने बाप जी,
अन्त काले जवुं एकला, साथे पुण्यने पाप जी."

यानी—"किसके बेटे-बेटी, किसकी जायदाद और किसके माँ-बाप. आख़ीर में तो अकेले ही जाना पड़ेगा. साथ में सिर्फ नेकी और बदी ही जायगी."

जवाहर लाल जी के बारे में सरदार की राय देखें (सफ़ा 255)—"जवाहर लाल जी की सचाई परस्ती और अहिंसा प्रेम ऐसा था कि वे नापाक साधनों को बर्दाश्त नहीं करते थे."

व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले में सरदार जब फिर यरवदा जेल पहुंचे तो गांधी जी के बजाय दूसरी ही मंडली वहां थी. सरदार ने इसपर लिखा :—

"इस बार की मंडली दूसरी ही तरह की है इसलिये बापू के साथ का रस जिसने चखा हो वही जान सकता है. फिर भी यह समझकर दिन काट रहा हूँ :—

"तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग,
सबसे हिल मिलकर चलो नदी नांव संयोग."

इसी तरह के सैकड़ों प्रसंगों से पुस्तक भरी पड़ी है. आज़ाद हिन्दुस्तान के इतिहास को समझने के लिये इस पुस्तक से काफ़ी मदद मिलेगी.

भारतीय अर्थशास्त्र

लेखक श्री भगवान दास केला, प्रकाशक भारतीय ग्रंथ-माला दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 651, मोल पांच रुपया।

भारतीय अर्थशास्त्र के ऊपर केला जी ने भारतीय नुक़्ते नज़र से हिन्दी भाषा में जितना और जो कुछ लिखा है उतना और किसी ने नहीं. अर्थशास्त्र में उनका नज़रिया गान्धी जी का नज़रिया है. इस बड़ी किताब को भी उन्होंने सर्वोदय की निगाह से लिखा है. उनका दावा है कि यही अर्थशास्त्र भारतीय जनता के हित और कल्यान का अर्थशास्त्र है.

وچار هوں سو صحیح. اکیلے رها جا سکے تو سب سے اچھا. جیسے اکیلے رهنے میں دکھ هے ویسے بچوں کے لئے سوتیلی ماں کے لانے میں بھی دکھ هے. اب تم تھوڑے سمئے بھائی کے ساتھ رہ سکو گی بار بار ایسا موقع نہ ملیگا. دلوں کی صفائی کر لینا. کوئی چنتا نہ کرنا. سکھ دکھ تو دھوپ چھاؤں کی طرح آتے هی رهتے هیں. سنسار مایا سے بھرا هے. تھوڑی مایا والے کو تھوڑا دکھ. اِس لئے مایا اور جنجال بڑھانے میں کوئی لابھ نہیں.

"کونا چھورو' کونا واچھرو' کونا مانے باپ جی'
انت کالے جووں اکیلا' ساتھے پنیہ نے پاپ جی."

یعنی—"کس کے بیٹے بیٹی' کس کی جائداد اور کس کے ماں باپ! آخیر میں تو اکیلے هی جانا پڑیگا. ساتھ میں صرف نیکی اور بدی هی جائیگی."

جواهر لال جی کے بارے میں سردار کی رائے دیکھیں (صفحہ 255)—"جواهر لال جی کی سچائی پرستی اور اهنسا پریم ایسا تھا کہ وہ ناپاک سادھنوں کو برداشت نہیں کرتے تھے."

ویکتی گت ستیاگرہ کے سلسلے میں سردار جب پھر یروڈا جیل پہونچے تو گاندھی جی کے بجائے دوسری هی منڈلی وهاں تھی. سردار نے اِس پر لکھا :—

"اِس بار کی منڈلی دوسری هی طرح کی هے اِسلیئے باپو کے ساتھ کا رس جس نے چکھا هو وهی جان سکتا هے. پھر بھی یہ سمجھکر دن کاٹ رها هوں :—

"تلسی یا سنسار میں بھانتی بھانتی کے لوگ'
سب سے هل مل کر چلو ندی ناؤ سنیوگ."

اسی طرح کے سینکڑوں پرسنگوں سے پستک بھری پڑی هے. آزاد هندستان کے اِتهاس کو سمجھنے کے لئے اِس پستک سے کافی مدد ملیگی.

بھارتیہ ارتھ شاستر

لیکھک شری بھگوان داس کیلا' پرکاشک بھارتیہ گرنتھ مالا داراگنج' اِلہ آباد؛ صفحے 651' مول پانچ روپیہ بھارتیہ ارتھ شاستر کے اوپر کیلا جی نے بھارتیہ نقطہ نظر سے هندی بھاشا میں جتنا اور جو کچھ لکھا هے اُتنا اور کسی نے نہیں. ارتھ شاستر میں اُنکا نظریہ گاندھی جی کا نظریہ هے. اِس بڑی کتاب کو بھی اُنھوں نے سرودے کی نگاہ سے لکھا هے. اُنکا دعویٰ هے کہ یہی ارتھ شاستر بھارتیہ جنتا کے هت اور کلیان کا ارتھ شاستر هے.

बरवदा जेल में एक बार गान्धीजी ने कहा—'रक्खा हुआ साँप भी काम का'—पूछने पर कि यह कहावत कैसे चली ? बापू ने कहा—"एक बुढ़िया के यहाँ साँप निकला. उसे मार दिया गया. बुढ़िया ने उसे फेंकने के बजाय छप्पर पर रख दिया. एक उड़ती हुई चील ने, जो कहीं से मोतियों का हार ले आई थी, उसे देखा. हार से साँप उसे ज़्यादा क़ीमती लगा, इसलिये हार तो उसने छप्पर पर डाल दिया और साँप उठा ले गई. इस तरह बुढ़िया को साँप संग्रह करने से हार मिला.'

सरदार ने कहा—"बापू! इसका मूल दूसरा है!"

बापू ने पूछा—"क्या ?"

सरदार बोले :—"एक बनिये के यहाँ साँप निकला. उसे मारने वाला कोई मिलता न था और बनिये की हिम्मत नहीं होती थी. इसलिये उसने साँप को पतीली के नीचे ढाँक दिया. रात को चोर आये. वे कुतूहल से पतीली उघाड़ने लगे तो साँप ने काट लिया और चोरी करने के बजाय स्वर्ग सिधार गये." (सफ़ा 117).

14 जून 32. गरमी में नीबू मँहगे हो गये. बापू बोले—"हम नीबू के बजाय इमली लें."

वल्लभ भाई बोले—"इमली के पानी से वायु बढ़ेगी और हड्डियों में दर्द होगा."

बापू "लेकिन जमनालाल तो पीते हैं ?"

वल्लभ भाई—"जमना लाल की हड्डियों तक इमली को घुसने का रास्ता नहीं."

बापू—"मगर एक बार मैंने इमली बहुत खाई है."

वल्लभ भाई—"उस समय आप पत्थर भी हज़्म कर सकते थे. आज तो बूढ़े हैं."

एक बार बापू ने यरवदा जेल में नारियल की रस्सी की खाट अपने सोने के लिये मँगवाई. वल्लभ भाई निवाड़ की खाट के पक्ष में थे. बापू ने कहा—"मुझे याद है कि हमारे यहाँ बचपन में इस तरह की नारियल की रस्सी की खाटें काम में आती थीं. मेरी माँ उन पर अदरख छीलती थी."

वल्लभ भाई—"इसी लिये तो कहता हूँ कि इस पर निवाड़ लगवा लीजिये. वरना मुट्ठी भर हड्डियों की चमड़ी छिल जायगी."

गान्धी जी ने जब हरिजन अवार्ड के खिलाफ़ उपवास किया तो वल्लभ भाई को नासिक जेल में हटा दिया गया. इस पर बापू ने कहा—"पिंजड़ा तो है पर पंछी उड़ गया."

सरदार के पारिवारिक जीवन की झांकी अपनी लड़की मणि बहिन के नाम लिखे इस खत में देखें —"फिर से निवाड़ के बारे में डाह्या भाई (सरदार के बेटे) के जो

یروداجیل میں ایکبار گاندھی جی نے کہا—"رکھا ہوا سانپ بھی کام کا"—پوچھنے پر کہ یہ کہاوت کیسے چلی ؟ باپو نے کہا—ایک بڑھیا کے یہاں سانپ نکلا . اسے مار دیا گیا . بڑھیا نے اسے پھینکنے کے بجائے چھپر پر رکھ دیا . ایک اُڑتی ہوئی چیل نے جو کہیں سے موتیوں کا ہار لے آئی تھی' اُسے دیکھا . ہار سے سانپ اُسے زیادہ قیمتی لگا . اِس لئے ہار تو اُس نے چھپر پر ڈال دیا اور سانپ اُٹھا لے گئی . اِس طرح بڑھیا کو سانپ سنگرہ کرنے سے ہار ملا ."

سردار نے کہا—"باپو ! اِس کا مول دوسرا ہے ."

باپو نے پوچھا—"کیا ؟"

سردار بولے—"ایک بنئے کے یہاں سانپ نکلا . اُسے مارنے والا کوئی ملتا نہ تھا اور بنئے کی ہمت نہیں ہوتی تھی . اِس لئے اُس نے سانپ کو پتیلی کے نیچے ڈھانک دیا . رات کو چور آئے . وے کتوہل سے پتیلی اُگھاڑنے لگے تو سانپ نے کاٹ لیا اور چوری کرنے کے بجائے سورگ سدھار گئے ." (صفحہ 117) .

14 جون 32' گرمی میں نیبو مہنگے ہو گئے . باپو بولے—"ہم نیبو کے بجائے اِملی لیں ."

ولبھ بھائی بولے—"اِملی کے پانی سے وایو بڑھیگی اور ہڈیوں میں درد ہوگا !"

باپو بولے—"لیکن جمنا لال تو پیتے ہیں ؟"

ولبھ بھائی—"جمنا لال کی ہڈیوں تک اِملی کو گھسنے کا راستہ نہیں ."

باپو—"مگر ایکبار میں نے اِملی بہت کھائی ہے ."

ولبھ بھائی—"اُس سمئے آپ پتھر بھی ہضم کر سکتے تھے . آج تو بوڑھے ہیں ."

ایکبار باپو نے یرودا جیل میں ناریل کی رسی کی کھاٹ اپنے سونے کے لئے منگوائی . ولبھ بھائی نواڑ کی کھاٹ کے پکش میں تھے . باپو نے کہا—"مجھے یاد ہے کہ ہمارے یہاں بچپن میں اِس طرح کی ناریل کی رسی کی کھاٹیں کام میں آتی تھیں . میری ماں ان پر ادرک چھیلتی تھی ."

ولبھ بھائی—"اسی لئے تو کہتا ہوں کہ اِس پر نواڑ لگوا لیجئے . ورنہ مٹھی بھر ہڈیوں کی چمڑی چھل جائیگی ."

گاندھی جی نے جب ہریجن اوارڈ کے خلاف اُپواس کیا تو ولبھ بھائی کو ناسک جیل میں ہٹا دیا گیا . اِس پر باپو نے کہا—"پنجڑا تو ہے پر پنچھی اُڑ گیا ."

سردار کے پریوارک جیون کی جھانکی اپنی لڑکی منی بہن کے نام لکھے اِس خط میں دیکھیں—"پھر سے نواڑ کے بارے میں ڈاہیا بھائی (سردار کے بیٹے) کے جو

ज्ञान-विज्ञान के खोजियों के लिये पुस्तक काफ़ी दिलचस्प है

भूदान गंगोत्री

लेखक श्री दामोदरदास मूँदड़ा, प्रकाशक सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी; सफ़े 312, मोल दो रुपया आठ आने.

लेखक आचार्य विनोबा के पटुशिष्य और सेक्रेटरी थे और इस नाते भूदान आन्दोलन के आग़ाज़ के चश्मदीद गवाह थे. तेलंगाना के पहले भूदान से लेकर सेवागाँव पहुँचने तक विनोबा के रोज़-बरोज़ के काम, बातचीत और उपदेशों की दिलचस्प झाँकी हमें इस डायरी में देखने को मिलती है. पढ़ने वाले के दिल पर भूदान की अहमियत साफ़ नक्श हो जाती है. विनोबाजी के बेशक़ीमत उपदेशों का अमृत इसमें मिलता है. भूदान आन्दोलन को समझने वाले हर शख्स के लिये यह किताब बड़े काम की है.

सर्वोदय पदयात्रा

लेखक, प्रकाशक वही. सफ़े 225; मोल एक रुपया.

विनोबा जी ने अपनी पद यात्रा के सिलसिले में जो अनमोल उपदेश दिये वह इस किताब में इकट्ठा करके छापे गये हैं. आजकल की दुनिया और हिन्दुस्तान की सियासत की रोशनी में विनोबा जी के इस पुस्तक में जाहिर किये हुए विचार सही रास्ता दिखाने का काम करेंगे. पुस्तक सबके पढ़ने लायक़ है. छपाई, सफ़ाई को देखते हुये पुस्तक सस्ती है.

सरदार वल्लभ भाई (दूसरा भाग)

सम्पादक नरहरि डा० परीख, प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, सफ़े 651, जिल्दवाली पुस्तक के दाम पाँच रुपये.

सरदार वल्लभ भाई पटेल की सवाने उमरी यानी जीवन चरित्र की यह दूसरी जिल्द है. इस जिल्द में सन 30 के नमक सत्याग्रह से लेकर सन 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन तक के 12 बरसों के उन वाक़यात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ सरदार पटेल की ज़िन्दगी से था. इसमें कोई शक नहीं कि ये बारह बरस मुल्क की सियासी ज़िन्दगी के लिहाज़ से बहुत ही अहम थे. लेखक ने छोटी-छोटी घटनाओं को भी शामिल कर लिया है, ऐसी घटनाएँ जिनसे सरदार के चरित्र पर रोशनी पड़ सकती थी. ये घटनाएँ काफ़ी दिलचस्प, शिक्षा देने वाली और उसूलों से ताल्लुक़ रखने वाली हैं. इनसे गान्धीजी, जवाहर लाल जी के साथ सरदार के मीठे ताल्लुक़ात की झाँकी मिलती है.

بھودان گنگوتری

لیکھک شری دامودر داس موندڑا' پرکاشک سرو سیوا سنگھ' راجگھاٹ' کاشی؛ صفحے 312' مول دو روپیہ آٹھ آنے۔

لیکھک آچاریہ ونوبا کے پٹو ششیہ اور سکریٹری تھے اور اِس ناتے بھودان آندولن کے آغاز کے چشم دید گواہ تھے۔ تیلنگانا کے پہلے بھودان سے لیکر سیوا گاؤں پہونچنے تک ونوبا کے روز بروز کے کام' بات چیت اور اُپدیشوں کی دلچسپ جھانکی ہمیں اِس ڈائری میں دیکھنے کو ملتی ہے۔ پڑھنے والے کے دل پر بھودان کی اہمیت صاف نقش ہو جاتی ہے۔ ونوبا جی کے بیش قیمت اُپدیشوں کا امرت اِس میں ملتا ہے۔ بھودان آندولن کو سمجھنے والے ہر شخص کے لئے یہ کتاب بڑی کام کی ہے۔

سرودئے پد یاترا

لیکھک' پرکاشک وہی صفحے 225؛ مول ایک روپیہ۔

ونوبا جی نے اپنی پد یاترا کے سلسلے میں جو انمول اُپدیش دیئے وہ اِس کتاب میں اِکٹھا کر کے چھاپے گئے ہیں۔ آجکل کی دنیا اور ہندستان کی سیاست کی روشنی میں ونوبا جی کے اس پستک میں ظاہر کئے ہوئے وچار صحیح راستہ دکھانے کا کام کرینگے۔ پستک سب کے پڑھنے کے لایق ہے۔ چھپائی' صفائی کو دیکھتے ہوئے پستک سستی ہے۔

سردار ولبھ بھائی (دوسرا بھاگ)

سمپادک نرہری ڈا۔ پریکھ' پرکاشک نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد' صفحے 651' جلد- والی پستک کے دام پانچ روپئے۔

سردار ولبھ بھائی پٹیل کی سوانح عمری یعنی جیون چرتر کی یہ دوسری جلد ہے۔ اِس جلد میں سن 30 کے نمک ستیاگرہ سے لیکر سن 42 کے بھارت چھوڑو آندولن تک کے 12 برسوں کے اُن واقعات کا ذکر ہے جن کا تعلق سردار پٹیل کی زندگی سے تھا۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ بارہ برس ملک کی سیاسی زندگی کے لحاظ سے بہت ہی اہم ہیں۔ لیکھک نے چھوٹی چھوٹی گھٹناؤں کو بھی شامل کر لیا ہے' ایسی گھٹنائیں جن سے سردار کے چرتر پر روشنی پڑ سکتی تھی۔ یہ گھٹنائیں کافی دلچسپ' شکشا دینے والی اور اُصولوں سے تعلق رکھنے والی ہیں۔ اِن سے گاندھی جی' جواہر لال جی اور سردار کے میٹھے تعلقات کی جھانکی ملتی ہے۔

सैकड़ों ऊँचाइयों से कामयाब तूफ़ान ,

जनता के अधिकारों की गरजती हुई लहर बनकर बह रहा है !

सिपाही और सैनिकों की कम्पनियाँ यके बाद दीगरे जा रही हैं !

आखिर में उन्हें याद आता है कि उनकी भी मातृ-भूमि है !

यह क्या कम है कि अपने बस भर वे लड़े जनता की आज़ादी के लिये और अपने फ़ौजी नाम के लिये !

ईश्वर, उम्मीद और इतिहास तीनों हिन्दुस्तानियों की तरफ़ थे !

पुस्तक की छपाई वग़ैरह अच्छी है. अंगरेज़ीदाँ हर देशभक्त से हमारी यह प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक को जरूर पढ़े,

न जाने राम और उसके साथियों का अभियान

मूल रूसी ज़बान के लेखक एन० नसोव; मूलरूसी से अनुवादक श्री अर्द्धेन्दु गोस्वामी; अनुवाद की भाषा के सम्पादक-डाक्टर महादेव साहा; प्रकाशक ईस्टर्न ट्रेडिंग कम्पनी, 64 ए धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता- 13, मोल तीन रुपया. छपाई, सफ़ाई, जिल्द सब अच्छी.

बच्चों के साहित्य की यह रूसी पुस्तक रूस में बहुत नाम कमा चुकी है. सरल कहानी के रूप में लेखक ने विज्ञान के चमत्कारों को बड़ी दिलचस्पी से बच्चों को समझाने की कोशिश की है. एक बार हाथ में उठा लेने से बच्चे इसे पूरा पढ़कर ही छोड़ते हैं. प्रकाशक बधाई के हक़दार हैं कि बच्चों के लिये ऐसी सरल वैज्ञानिक ईजादों की पुस्तक उन्होंने शाया की. रंगीन चित्रों से पुस्तक की उपयोगिता बेहद बढ़ गई है.

मानव जाति का उद्भव

मूल रूसी लेखक गगुरेव, अनुवादक और प्रकाशक वही ऊपर की पुस्तक के; क़ीमत एक रुपया बासठ नए पैसे. सफ़े 133; सचित्र; छपाई, सफ़ाई अच्छी.

१३३ सफ़ों की इस किताब में विद्वान लेखक ने इस बात की छान-बीन की है कि इनसानी नस्ल का आग़ाज़ क्या था ? पाँच करोड़ बरस पहले उसकी क्या शक्ल थी ? फिर दर्जेवार उसने कैसे तरक़्क़ी की और आख़ीर में किस तरह बन्दर की योनि और जिस्म में तब्दील होते-होते कैसे वह इनसान बना. लेखक ने पुस्तक के सफ़ों में जो दावे पेश किये हैं उनको समझाने के लिये तस्वीरें भी दी हैं. दूसरे वैज्ञानिक मतों को पेश करके उनकी ताईद या मुख़ालिफ़त की है. डारविन और एंगल्स की राय को लेखक ने सराहा है और नई खोजों के आधार पर उन्हीं रायों पर अपनी दलीलों को क़ायम किया है.

سیکڑوں اونچائیوں کے کامیاب طوفان !

جنتا کے ادھیکاروں کی گرجتی ہوئی لہر بن کر بہہ رہا ہے !

سپاہی اور سینکوں کی کمپنیاں یکے بعد دیگرے جا رہی ہیں !

آخر میں انہیں یاد آتا ہے کہ انکی بھی ماتر بھومی ہیں !

یہ کیا کم ہے کہ اپنے بس بھر وے لڑے

جنتا کی آزادی کے لئے اور اپنے فوجی نام کے لئے !

پستک کی چھپائی وغیرہ اچھی ہے ! ہر انگریزی داں دیش بھکت سے ہماری یہ پرارتھنا ہے کہ وہ اس پستک کو ضرور پڑھے .

نجانے رام اور اس کے ساتھیوں کا ابھیان

مول روسی زبان کے لیکھک این. نسوو؛ مول روسی سے انوادک شری اردھیندو گوسوامی؛ انواد کی بھاشا کے سمپادک ڈاکٹر مہادیو ساہا؛ پرکاشک ایسٹرن ٹریڈنگ کمپنی، 64-A دھرم تلہ اسٹریٹ، کلکتہ -13؛ مول تین روپیہ، چھپائی، صفائی، جلد سب اچھی .

بچوں کے ساھتیہ کی یہ روسی پستک روس میں بہت نام کما چکی ہے . سرل کہانی کے روپ میں لیکھک نے وگیان کے چمتکاروں کو بڑے دلچسپ طریقے سے بچوں کو سمجھانے کی کوشش کی ہے. ایک بار ہاتھ میں اٹھا لینے سے بچے اسے پورا پڑھکر ہی چھوڑتے ہیں . پرکاشک بدھائی کے حقدار ہیں کہ بچوں کے لئے ایسی سرل ویگیانک ایجادوں کی پستک انہوں نے شائع کی . رنگین چتروں سے پستک کی اپیوگتا بےحد بڑھ گئی ہے .

مانو جاتی کا اُدبھو

مول روسی لیکھک گ . گروریو؛ انوادک اور پرکاشک وہی اوپر کی پستک کے؛ قیمت ایک روپیہ باسٹھ نئے پیسے . صفحے 133؛ چھپائی، صفائی اچھی .

133 صفحوں کی اس کتاب میں ودوان لیکھک نے اس بات کی چھان بین کی ہے کہ انسانی نسل کا آغاز کیا تھا، پانچ کروڑ برس پہلے اس کی کیا شکل تھی پھر درجہ وار اس نے کیسی ترقی کی اور آخیر میں کس طرح بندر کی یونی اور جسم سے تبدیل ہوتے ہوتے کیسے وہ انسان بنا . لیکھک نے پستک کے صفحوں میں جو دعوے پیش کئے ہیں ان کو سمجھانے کے لئے تصویریں بھی دی ہیں . دوسرے ویگیانک متوں کو پیش کر کے ان کی تائید یا مخالفت کی ہے . ڈارون اور اینگلس کی رائے کو لیکھک نے سراہا ہے اور نئی کھوجوں کے آدھار پر انہوں رائیوں پر اپنی دلیلوں کو قائم کیا ہے .

گیان وگیان کے کھوجیوں کے لئے پستک کافی دلچسپ ہے.
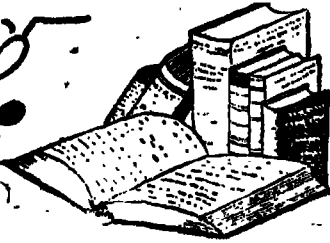
The Revolt of Hindostan—लेखक अर्नेस्ट जोन्स, सम्पादक श्री स्नेहांशु कान्त आचार्य और श्री महादेव प्रसाद साहा, प्रकाशक ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कम्पनी, 64,A धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-13, क़ीमत तीन रुपया, पृष्ठ संख्या 55.

चार्टिस्टनेता अर्नेस्ट चार्ल्स जोन्स का मशहूर काव्य ग्रन्थ 'रिवोल्ट आफ हिन्दुस्तान' का यह हिन्दुस्तानी एडीशन बड़े मौक़े से छाप कर प्रकाशित किया गया जबकि मुल्क सन 1858 की शताब्दी मना रहा था. कविता के साथ साथ जोन्स के सन 1857 के मुताल्लिक लेख भी पुस्तक के आख़ीर में दिये गये हैं. सम्पादक अपनी भूमिका में लिखते हैं :—"जबकि हिन्दुस्तान में देश भर में सन 1857 की शताब्दी मनाई जा रही हैं यह याद करके ख़ुशी होती है कि कम से कम एक अङ्गरेज तो था जो 1857 के विद्रोह को न केवल मुनासिब और ठीक समझता था बल्कि उसे होके रहने वाली घटना मानता था." जोन्स 26 जनवरी 1859 को पैदा हुआ और 26 जनवरी 1869 को मरा. जोन्स ने ब्रिटिश शासण नीति की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त की. उसके विद्रोही विचारों के सबब उसे 6 जून सन 1848 को गिरफ़्तार कर लिया गया और 9 जुलाई सन् 1850 तक उसे जेल में रहना पड़ा. जिस काल कोठरी में उसे तनहाई में रखा गया वह 13 फ़ुट लम्बी और सिर्फ़ 6 फ़ुट चौड़ी थी. इतनी खुली हुई थी कि बारिश का पानी और बरफ़ीले तूफ़ानों के थपेड़े इधर से उधर निकल जाते थे. जोन्स की सेहत बेहद ख़राब हो गई. वहीं उस काल कोठरी में जोन्स ने 'दि न्यू वर्ल्ड' नाम की कविता लिखी जो बाद में सन 1857 में 'दि रिवोल्ट आफ हिन्दुस्तान आर न्यू वर्ल्ड,' नाम से छपकर शाया हुई. जेल में लिखने का सामान नहीं था. जोन्स ने एक पुरानी किताब के हाशियों पर अपने ख़ून से यह कविता लिखी. पूरी की पूरी नज़्म बेहद सुन्दर है. एक नमूना देखें :—

The Revolt of Hindostan لیکھک آرنسٹ جونس، سمپادک شری اسنیہانشو کانت آچاریہ اور شری مہا دیو پرساد ساہا، پرکاشک ایسٹرن ٹریڈنگ کمپنی، 46 A، دھرم تلہ اسٹریٹ، کلکتہ 13، قیمت تین روپیہ، پرشٹھ سنکھیا 55 .

چارٹسٹ نیتا ارنیسٹ چارلس جونس کا مشہور کاویہ گرنتھ 'ریولٹ آف ہندستان' کا یہ ہندستانی ایڈیشن بڑے موقع سے چھاپ کر پرکاشت کیا گیا جب کہ ملک سن 1857 کی شتابدی منا رہا تھا. کویتا کے ساتھ ساتھ جونس کے سن 1857 کے متعلق لیکھ بھی پستک کے آخیر میں دیئے گئے ہیں . سمپادک اپنی بھومیکا میں لکھتے ہیں:—"جب کہ ہندستان میں دیش بھر میں سن 1857 کی شتابدی منائی جا رہی ہے یہ یاد کر کے خوشی ہوتی ہے کہ کم سے کم ایک انگریز تو تھا جو 1857 کے ودروہ کو نہ کیول مناسب اور ٹھیک سمجھتا تھا بلکہ اُسے ہو کے رہنے والی گھٹنا مانتا تھا ." جونس 26 جنوری 1819 کو پیدا ہوا اور 26 جنوری 1869 کو مرا . جونس نے برٹش شوشن نیتی کی زبردست مخالفت کی . اُس کے ودروہی وچاروں کے سبب اُسے 6 جون سن 1848 کو گرفتار کر لیا گیا اور 9 جولائی سن 1856 تک اُسے جیل میں رہنا پڑا . جس کال کوٹھری میں اسے تنہائی میں رکھا گیا وہ 31 فٹ لمبی اور صرف 6 فٹ چوڑی تھی . اِتنی کھلی ہوئی تھی کہ بارش کا پانی اور برفیلے طوفانوں کے "تھپیڑے ادھر سے اُدھر نکل جاتے تھے . جونس کی صحت بےحد خراب ہو گئی . وہیں اُس کال کوٹھری میں جونس نے 'دی نیوورلڈ' نام کی کویتا لکھی جو بعد میں سن 1857 میں 'دی ریولٹ آف ہندستان آر نیو ورلڈ' نام سے چھپ کر شائع ہوئی . جیل میں لکھنے کا سامان نہیں تھا . جونس نے ایک پرانی کتاب کے حاشیوں پر اپنے خون سے یہ کویتا لکھی . پوری کی پوری نظم بےحد سندر ہے . ایک نمونہ دیکھیں:—

में न फँसना. हिन्दू और मुसलमान भाइयो, अपने छोटे-छोटे तफ़रक़ों को भूल जाओ और मैदाने जंग में एक झंडे के नीचे खड़े हो जाओ. जो भी शख़्स इस क़ौमी जंग की मुख़ालफ़त करेगा वह ख़ुद अपने सर पर कुल्हाड़ी मारेगा और ख़ुदकुशी का गुनाह करेगा."

इस नोट से यह साफ़ होजाता है कि देश की सियासी तसवीर उस समय भी लोगों के सामने उतनी ही साफ़ थी कि जितनी आज है.

दिल्ली के घेरे के दिनों में इनक़लाबी नेताओं में आपस में सख़्त तफ़रक़े पैदा हो गये थे. इसका इशारा 'पयामे आज़ादी' में छपी सम्राट बहादुरशाह 'ज़फ़र' की एक नज़्म के इस शेर से मिलता है:—

"क़फ़स में है क्या फ़ायदा शोरो गुल से'
असीरो करो कुछ रिहाई की बातें'."

अखबार के ग्राहक फाँसी के तख़्ते पर

ऊपर के बयान से यह साफ़ है कि 'पयामे आज़ादी' बिलाशक भारत का सब से पहला राष्ट्रीय पत्र था. सर विलियम हावर्ड ने लिखा है कि "दिल्ली पर कब्ज़ा करने के बाद 'पयामे आज़ादी' के सम्पादक मिरज़ा बेदारबख़्त के बदन पर सुअर की चरबी मलकर उन्हें फाँसी दे दी गयी. सर हेनरी काटन अपनी पुस्तक 'इंडियन ऐंड होम मेमायर्स' में लिखते हैं कि "अंग्रेजों के दिल्ली पर क़ब्ज़ा करने के बाद वे सभी लोग फाँसी पर लटका दिये जाते थे जिनके घरों में 'पयामे आज़ादी' का कोई नम्बर मिलता था. दुनिया के अखबारी इतिहास में शायद किसी भी अखबार के पाठकों को पाठक होने के अपराध की ऐसी ज़ालिमाना सज़ा न मिली होगी.

میں نہ پھنسنا . ھندو اور مسلمان بھائیو' اپنے چھوٹے چھوٹے تفرقوں کو بھول جاؤ اور میدان جنگ میں ایک جھنڈے کے نیچے کھڑے ھو جاؤ . جو بھی شخص اِس قومی جنگ کی مخالفت کریگا وہ خود اپنے سر پر کلہاڑی ماریگا اور خودکشی کا گناہ کریگا ."

اِس نوٹ سے یہ صاف ھو جاتا ھے کہ دیش کی سیاسی تصویر اُس سمے بھی لوگوں کے سامنے اتنی صاف تھی کی جتنی آج ھے .

دلی کے گھیرے کے دنوں میں انقلابی نیتاؤں میں آپس میں سخت تفرقے پیدا ھو گئے تھے . اِس کا اِشارہ 'پیام آزادی' میں چھپی سمراٹ بہادر شاہ 'ظفر' کی ایک نظم کے اِس شعر سے ملتا ھے .

"قفس میں ھے کیا فائدہ شور و غل سے؛
اسیرو کرو کچھ رھائی کی باتیں ."

اخبار کے گاہک پھانسی کے تختے پر

اوپر کے بیان سے یہ صاف ظاھر ھے کہ 'پیام آزادی' بلاشک بھارت کا سب سے پہلا راشٹری پتر تھا . سر ولیم ھاورڈ نے لکھا ھے کہ "دلی پر قبضہ کرنے کے بعد 'پیام آزادی' کے سمپادک مرزا بیدار بخت کے بدن پر سور کی چربی مل کر انہیں پھانسی دے دی گئی ." سر ھینری کاٹن اپنی پستک 'انڈین اینڈ ھوم میمایرس' میں لکھتے ھیں کہ "انگریزوں کے دلی پر قبضہ کرنے کے بعد وے سبھی لوگ پھانسی پر لٹکا دیئے جاتے تھے جن کے گھروں میں 'پیام آزادی' کا کوئی نمبر ملتا تھا ." دنیا کے اخباری اتہاس میں شاید کسی بھی اخبار کے پاٹھکوں کو پاٹھک ھونے کے اپرادھ کی ایسی ظالمانہ سزا نہ ملی ھو گی .

बहादुरशाह का ऐलान

'लन्दन टाइम्स' ने सर विलियम रसल को ही सन 1956 क जंगे आजादी की रिपोर्ट देने के लिए अपना खास संवाददाता बनाकर यहाँ भेजा था. उन्होंने 'लन्दन टाइम्स' के सम्पादक जान डिलेन के नाम लखनऊ से अपने एक पत्र के साथ 'पयामे आजादी' में प्रकाशित सम्राट बहादुरशाह का एक ऐलान भी भेजा था जिसे पढ़कर इसमें जरा भी शुबहा नहीं रह जाता कि सन 57 का युद्ध भारत की स्वाधीनता का संग्राम था और 'पयामे आजादी' उस युद्ध का मुख पत्र था. वह ऐलान इस प्रकार है:—

'हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों' उठो! भाइयों, उठो! ख़ुदा ने इनसान को जितनी बरकतें अता की हैं उनमें सब से कीमती बरकत आजादी की है. वह जालिम नाकस जिसने धोका दे दे कर हम से यह बरकत छीन ली है क्या हमेशा के लिए हमें उससे महरूम रख सकेगा? क्या ख़ुदा की मरजी के खिलाफ इस तरह का काम हमेशा जारी रह सकता है? नहीं, कभी नहीं, फिरंगियों ने इतने ज़ुल्म किये हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लबरेज़ हो चुका है... ख़ुदा अब नहीं चाहता कि तुम खामोश रहो क्योंकि उसने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों में अंग्रेजों को अपने वतन से बाहर निकालने की ख्वाहिश पैदा कर दी है और ख़ुदा के फ़ज्ल से और तुम लोगों की बहादुरी से जल्द ही अंग्रेजों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुल्क हिन्दुस्तान में उनका जरा भी निशान न रह जायगा. हमारी इस फ़ौज में छोटे बड़े की कोई तमीज न होगी. सब के साथ बराबरी का बर्ताव किया जायगा. इस पाक जंग में शरीक होने वाले सब आपस में भाई-भाई हैं. उनमें छोटे-बड़े का कोई फ़र्क़ नहीं. मैं अपने तमाम हिन्दी भाइयों से दरख़ास्त करता हूँ कि वह ख़ुदा के बताये हुए इस पाक फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए मैदाने जंग में कूद पड़े."

जी० बी० मालेसन ने अपनी पुस्तक 'दि रेड पैम्फलेट' में 'पयामे आजादी' के एक सम्पादकीय नोट का जिक्र किया है जिसमें लिखा है कि "हिन्द के बाशिन्दों. अरसे से जिसका इन्तजार था आजादी की वह पाक घड़ी आन पहुँची है......हिन्दुस्तान के बाशिन्दे अब तक धोके में आते रहे और अपनी ही तलवारों से अपने ही गले काटते रहे. अब हमें मुल्क फरोशी के इस गुनाह का कुफ्फारा (प्रायश्चित) करना चाहिये. अंग्रेज अब भी अपनी पुरानी दग़ाबाजी से काम लेंगे. वे हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ़ और मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ उभारने की कोशिश करेंगे. लेकिन भाइयों, उनके जाल और फरेबों

ادر شاہ کا اعلان

"لندن ٹائمس' نے سر ولیم رسل کو ہی سن 1958 کی
نگ آزادی کی رپورٹ دینے کے لئے اپنا خاص سنوادداتا بنا کر
ں بھیجا تھا. انہوں نے لندن "ٹائمس' کے سمپادک جان ڈیلین
نام لکھنؤ سے ایک پتر کے ساتھ پیام آزادی' میں پرکاشت
راٹ بہادر شاہ کا ایک اعلان بھی بھیجا تھا۔ جسے پڑھ کر
ں میں ذرا بھی شبہ نہیں رہ جاتا تھا کہ سن '57 کا یدھ
ارت کی سوادھینتا کا سنگرام تھا اور 'پیام آزادی' اُس یدھ کا
ھ پتر تھا. وہ اعلان اِس پرکار ہے۔

"ہندستان کے ہندو اور مسلمانو' اٹھو! بھائیو اٹھو! خدا
اِنسان کو جتنی برکتیں عطا کی ہیں اِن میں سب سے
متی برکت آزادی کی ہے۔ وہ ظالم ناکس جس نے دھوکا
ے کر ہم سے یہ آزادی چھین لی ہے کیا ہمیشہ کے لئے ہمیں
ں سے محروم رکھ سکیگا؟ کیا خدا کی مرضی کے خلاف اِس
ح کا کام ہمیشہ جاری رہ سکتا ہے؟ نہیں' کبھی نہیں'
گیوں نے اتنے ظلم کئے ہیں کہ ان کے گناہوں کا پیالہ لبریز ہو
ا ہے...خدا اب نہیں چاہتا کہ تم خاموش رہو کیونکہ اس
ہندؤں اور مسلمانوں کے دلوں میں انگریزوں کو اپنے وطن
باہر نکالنے کی خواہش پیدا کر دی ہے اور خدا کے فضل اور
لوگوں کی بہادری سے جلد ہی انگریزوں کو اتنی کامل
ست ملیگی کہ ہمارے اِس ملک ہندستان میں ان کا ذرا
ی نشان نہ رہ جائیگا۔ ہماری اِس فوج میں چھوٹے بڑے کی
ی تمیز نہ ہوگی۔ سب کے ساتھ برابری کا برتاؤ دیا جائیگا۔
ں پاک جنگ میں شریک ہونے والے سب آپس میں بھائی
ائی ہیں۔ ان میں چھوٹے بڑے کا کوئی فرق نہیں۔ میں
ہندی بھائیوں سے درخواست کرتا ہوں کہ وہ خدا کے بتائے
ے اِس پاک فرض کو پورا کرنے کے لئے میدان جنگ میں
پڑیں۔"

جی۔ جی۔ ملیسن نے اپنی پستک 'دی ریڈ پمفلیٹ' میں
یام آزادی' کے ایک سمپادکی نوٹ کا ذکر کیا ہے جس میں
ا ہے کہ "ہند کے باشندے۔ عرصے سے جس کا انتظار تھا آزادی
، وہ پاک گھڑی آن پہنچی ہے...ہندستان کے باشندے اب
ک دھوکے میں آتے رہے اور اپنی تلواروں سے اپنے ہی گلے کاٹتے
ے۔ اب ہمیں ملک فروشی کے اِس گناہ کا کفارہ 'پرائشچت'
ا چاہئے۔ انگریز اب بھی اپنی پرانی دغابازی سے کام لینگے۔
ہندؤں کو مسلمانوں کے خلاف اور مسلمانوں کو ہندؤں کے
اف ابھارنے کی کوشش کرینگے۔ لیکن بھائیو' اُن کے جال فریبوں

मैदान में हुई थी. उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि वॉर इन क्रीमिया' में अज़ीमुल्ला की बाअसर शख़्सीयत का रोचक ढंग से ज़िक्र किया है. उन्होंने लिखा है कि 'भारत में राजनीतिक अख़बारों के न होने से अज़ीमुल्ला चिन्तित थे. उनके कुछ अख़बारी बयानों की चर्चा करते हुए सर विलियम ने लिखा है कि 'अनेक यूरोपीय और एशियाई भाषाओं से वाक़िफ़ भारतीय आज़ादी के इस सन्देशवाहक में पत्रकार की वे सभी ख़ासियतें मौजूद थीं जो उन्हें यूरोप की किसी प्रमुख भाषा का मशहूर और बाअसर अख़बार नवीस बना सकती थीं.

ऐतिहासिक सिलसिले की वे कड़ियाँ टूट गई हैं जो यह बतातीं कि भारत वापस आकर अज़ीमुल्ला ने कौन सा ख़ास कार्यक्रम अपने हाथों में लिया, पर 'पयामे आज़ादी' के जो नम्बर ब्रिटिश संग्रहालय में सन् १९३६ तक सुरक्षित थे उनसे पता चलता है कि 'पयामे आज़ादी' के तीसरे नम्बर में भारतीय नरेशों की एकता के मुताल्लिक़ अज़ीमुल्ला का एक बयान छपा था. इन्हीं अंकों से यह पता चलता है कि भारत के इस सब से पहले और सच्चे राष्ट्रीय पत्र का प्रकाशन फ़रवरी सन १८५७ के क़रीब शुरू हुआ था और मिरज़ा बेदारबख़्त के दस्तख़ती परवाने से यह छपा करता था. यानी आजकल के माइनों में बादशाह के हुक्म से मिरज़ा बेदारबख़्त इस पत्र के 'सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक' थे.

'पयामे आज़ादी' के नम्बरों से सन 1757 के स्वाधीनता संग्राम पर ख़ासी अच्छी रोशनी पड़ती है. सन 1858 में लन्दन से छपी हुई 'दि नैरेटिव आफ़ दि इंडियन रिवोल्ट' नामक पुस्तक में 'पयामे आज़ादी' का एक उद्धरण दिया हुआ है जिसमें रुहेलखंड की पल्टनों से आज़ादी की जंग में शामिल होने की अपील की गई थी. उसमें लिखा है :—

"भाइयो, दिल्ली में फ़िरंगियों के साथ आज़ादी की जंग हो रही है. अल्लाह की दुआ से हमने उन्हें जो पहली शिकस्त दी है उससे वह इतना घबरा गये हैं जितना किसी दूसरे वक़्त वह दस शिकस्तों से भी न घबराते. बेशुमार हिन्दुस्तानी बहादुर दिल्ली में आन-आन कर जमा हो रहे हैं. ऐसे मौक़े पर अगर आप वहाँ खाना खा रहे हैं तो हाथ यहाँ आ कर धोइये. हमारे कान इस तरह आप की ओर लगे हुए हैं जिस तरह रोज़ेदारों के कान मुअज़्ज़िन की अज़ान की तरफ़ लगे रहते हैं. हम आप की तोपों की आवाज़ सुनने के लिए बेचैन हैं. हमारी आँखें आपके दीदार की प्यासी सड़क पर लगी हुई हैं. आपका फ़र्ज़ है कि फ़ौरन आइये. हमारा घर आपका घर है. बिना आपकी आमद के बहार के गुलाब में फूल नहीं आ सकते."

میدان میں ہوئی تھی. انہوں نے اپنی پستک 'دیوار ان کریمیا' میں عظیم اللہ کی باثر شخصیت کا روچک ڈھنگ سے ذکر کیا ہے. انہوں نے لکھا ہے کہ "بھارت میں راجنیتک اخباروں کے نہ ہونے سے عظیم اللہ چنتت تھا." ان کے کچھ اخباری بیانوں کی چرچا کرتے ہوئے سر ولیم نے لکھا ہے کہ "انیک یوروپی اور ایشیائی بھاشاؤں سے واقف بھارتیہ آزادی کے اس سندیش واہک میں پترکار کی وہ سبھی خاصیتیں موجود تھیں جو انہیں یوروپ کی کسی پرمکھ بھاشا کا مشہور اور باثر اخبار نویس بنا سکتی تھیں.

اتہاسک سلسلے کی وہ کڑیاں ٹوٹ گئی ہیں جو یہ بتاتیں کہ بھارت واپس آکر عظیم اللہ نے کون سا خاص کاریہ کرم اپنے ہاتھوں میں لیا' پر 'پیام آزادی کے جو نمبر برٹش سنگرہالیہ میں سن 1936 تک' سورکشت تھے ان سے پتہ چلتا ہے کہ 'پیام-آزادی' کے تیسرے نمبر میں بھارتی نریشوں کی ایکتا کے متعلق عظیم اللہ کا ایک بیان چھپا تھا. انہیں انکوں سے یہ پتہ چلتا ہے کہ بھارت کے اس سب سے پہلے اور سچے راشٹری پتر کا پرکاشن فروری سن 1857 کے قریب شروع ہوا تھا اور مرزا بیدار بخت کے دستخطی پروانے سے یہ چھپا کرتا تھا. یعنی آج کل کے معنوں میں بادشاہ کے حکم سے مرزا بیدار بخت اس پتر کے 'سمپادک مدرک' اور پرکاشک تھے.

'پیام آزادی' کے نمبروں سے سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام پر خاصی اچھی روشنی پڑتی ہے. سن 1858 میں لندن سے چھپی ہوئی 'دی انڈین ریولٹ' نامک پستک میں 'پیام آزادی' کا ایک اداہرن دیا ہوا ہے جن میں روہیلکھنڈ کی پلٹنوں سے آزادی کی جنگ میں شامل ہونے کی اپیل کی گئی تھی. اس میں لکھا ہے—

"بھائیو" دلی میں فرنگیوں کے ساتھ آزادی کی جنگ ہو رہی ہے. اللہ کی دعا سے ہم نے جو انہیں پہلی شکست دی ہے اس سے وہ اتنا گھبرا گئے ہیں جتنا کسی دوسرے وقت وہ دس شکستوں سے بھی نہ گھبراتے. بےشمار ہندستانی بہادر دلی میں آن آن کر جمع ہو رہے ہیں. ایسے موقع پر اگر آپ کھانا کھا رہے ہیں تو ہاتھ یہاں آکر دھوئیے. ہمارے کان اس طرح آپ کی اور لگے ہوئے ہیں جس طرح روزے داروں کے کان موذن کی آذان کی طرف لگے رہتے ہیں. ہم آپ کی توپوں کی آواز سننے کے لئے بےچین ہیں. ہماری آنکھیں آپ کی دیدار کی پیاسی سڑک پر لگی ہوئی ہیں. آپ کا فرض ہے کہ فوراً آئیے. ہمارا گھر آپ کا گھر ہے. بنا آپ کی آمد کے بہار کے گلاب میں پھول نہیں آسکتے."

सन् १८५७ से लेकर सन् १९३० तक भारत के वतन परस्त अख़बारों की तरक़्क़ी का इतिहास कमोबेश भारतीय राष्ट्रीयता की तरक़्क़ी का इतिहास समझा जा सकता है. इस लम्बे दौर में एक ओर भारतीय पत्रकारों को अगर रुपये पैसों की ज़बरदस्त दिक़्क़त का सामना करना पड़ा तो दूसरी ओर भयंकर सरकारी दमन का भी. फिर भी जिस निडरता के साथ त्यागमय सेवाभाव लेकर भारतीय पत्रकारों ने नागरिक स्वाधीनता, विचारों की आज़ादी और राजनीतिक आज़ादी के भावों का प्रचार किया वह संसार की पत्रकार कला के इतिहास का एक शानदार अध्याय है. देशव्यापी कोशिशों से आज़ादी का जो चमकदार भवन आज हम अपने देश में तामीर कर रहे हैं उसकी नींव में शहीदों के साथ-साथ पत्रकारों के भी अस्थिपंजर पड़े हुए हैं. सन् १९०५ से लेकर सन् १९३० ई० तक भारतीय अख़बार नवीसी और वतन परस्ती दोनों का एक ही मतलब रहा है.

'पयामे आज़ादी'

सच्चे अर्थ में जो सब से पहला राष्ट्रीय पत्र हमारे देश में प्रकाशित हुआ वह 'पयामे आज़ादी' था. यह फ़रवरी १८५७ से दिल्ली में छपना और शाये होना शुरू हुआ. यह नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लीथो पर छपा करता था. पर इसके प्रकाशन की कोई तै शुदा तारीखें न थीं. कभी सवेरे छपता था तो कभी शाम को, कभी रोज़ छपता था तो कभी एक दिन के अंतर पर. इस पत्र के प्रकाशन की योजना नाना साहब धुन्धपन्त के मंत्री और सलाहकार तथा सन् १८५७ की महान् क्रांति के संयोजक अज़ीमुल्ला ने बनाई थी. सितम्बर सन् १८५७ में झाँसी से 'पयामे आज़ादी' का एक मराठी एडीशन भी प्रकाशित होने लगा था. उसकी केवल एक ही कापी ब्रिटिश म्यूज़ियम में मिलती है.

सन् १८५४ में अज़ीमुल्ला पेशवा नानासाहब के वकील की हैसियत से विलायत गये थे, पर उनका असली मक़सद यूरोप के जनमत को भारतीय स्वाधीनता का समर्थक बनाना था और रूस तथा इटली से ख़ास तौर पर जंगे इनक़लाब के लिये हथियारों और सैनिकों की सहायता हासिल करना था. अपने इसी सफ़र में अज़ीमुल्ला ने यूरोपीय भाषाओं के कई अख़बारों के ज़रिये भारतीय आज़ादी के सवाल को यूरोपीय जनता के सामने रखा था. ग़ालिबन इसी सफ़र में उन्होंने 'पयामे आज़ादी' के लिए प्रेस आदि का इन्तज़ाम भी किया था.

'लन्दन टाइम्स' के विशेष प्रतिनिधि सर विलियम हावर्ड रसल से अज़ीमुल्ला की भेंट क्रीमिया के लड़ाई के

سن 1857 سے لے کر سن 1930 تک بھارت کے وطن پرست اخباروں کی ترقی کا اِتہاس کم و بیش بھارتیہ راشٹریتا کی ترقی کا اِتہاس سمجھا جا سکتا ہے۔ اِس لمبے دور میں ایک اور بھارتیہ پترکاروں کو اگر روپئے پیسوں کی زبردست دقت کا سامنا کرنا پڑا تو دوسری اور بھینکر سرکاری دمن کا بھی۔ پھر بھی جس نڈرتا کے ساتھ تیاگ مے سیوا بھاؤ لے کر بھارتیہ پترکاروں نے ناگرک سوادھینتا، وچاروں کی آزادی اور راج نیتک آزادی کے بھاؤں کا پرچار کیا وہ سنسار کی پترکار کلا کے اتہاس کا ایک شاندار ادھیائے ہے۔ دیش ویاپی کوششوں سے آزادی کا جو چمکدار بھون آج ہم اپنے دیش میں تعمیر کر رہے ہیں اُس کی نیو میں شہیدوں کے ساتھ ساتھ پترکاروں کے بھی اِستھی پنجر پڑے ہوئے ہیں۔ سن 1905 سے لے کر سن 1930 عیسوی تک بھارتیہ اخبار نویسی اور وطن پرستی دونوں کا ایک ہی مطلب ہے۔

'پیام آزادی'

سچے ارتھ میں جو سب سے پہلا راشٹریہ پتر ہمارے دیش میں پرکاشت ہوا وہ 'پیام آزادی' تھا۔ یہ فروری 1857 سے دلی میں چھپنا اور شائع ہونا ہوا۔ یہ ناگری اور اردو دونوں لپیوں میں لیتھو پر چھپا کرتا تھا۔ پر اِس کے پرکاشن کی کوئی طے شدہ تاریخیں نہ تھیں۔ کبھی سویرے چھپتا تھا تو کبھی شام کو، کبھی روز چھپتا تو کبھی ایک دن کے انتر پر۔ اِس پتر کے پرکاشن کی یوجنا نانا صاحب دھندھ پنت کے منتری اور صلاحکار تتھا سن 1857 کی مہان کرانتی کے سنیوجک عظیم اللہ نے بنائی تھی۔ ستمبر سن 1857 میں جھانسی سے 'پیام آزادی' کا ایک مراٹھی ایڈیشن بھی پرکاشت ہونے لگا تھا۔ لیکن اُس کی کیول ایک ہی کاپی برٹش میوزیم میں ملتی ہے۔

سن 1854 میں عظیم اللہ پیشوا نانا صاحب کے وکیل کی حیثیت سے ولایت گئے تھے۔ پر اُن کا اصلی مقصد یورپ کے جن مت کو بھارتیہ سوادھینتا کا سمرتھک بنانا تھا اور روس تتھا اٹلی سے خاص طور پر جنگ انقلاب کے لئے ہتھیاروں اور سینکوں کی سہائیتا حاصل کرنا تھا۔ اپنے اِسی سفر میں عظیم اللہ نے یورپی بھاشاؤں کے کئی اخباروں کے ذریعہ بھارتیہ آزادی کے سوال کو یورپی جنتا کے سامنے رکھا تھا۔ غالباً اِسی سفر میں اُنہوں نے 'پیام آزادی' کے لئے پریس آدی کا انتظام بھی کیا تھا۔

'لندن ٹائمس' کے وشیش پرتیندھی سر ولیم ہاورڈ رسل سے عظیم اللہ کی بھینٹ کریمیا کے لڑائی کے

एक दिन एक फिरंगी रंगून की सड़क पर जा रहा था. उसे मालूम न था कि बादशाह का मजार वहीं पर है. उसे उसने एक मिट्टी का टीला समझकर "बूट" की एक ठोकर जमा दी. उस बेचारे को क्या मालूम था कि एक आजादी का पुजारी उसमें हमेशा की नींद सो रहा है.

हमारे हर दिल अजीज नेताजी सुभाष जब रंगून गये तब उस मजार की मिट्टी को उन्होंने अपने माथे पर लगाया और शहीद बहादुरशाह की क़ब्र पर चिपटकर अक़ीदत (भक्ति) के आँसू चढ़ाये. बहुत देर तक वे आंसू बहाते रहे, हां, बहादुर हमेशा बहादुर की इज्जत करता है! भारत के हिन्दू मुसलमान भाइयों को बहादुरशाह की बहादुरी पर नाज (गर्व) होना चाहिये.

हिन्दू मुसलिम एकता जिन्दाबाद!
शहीदे आजम बहादुरशाह जिन्दाबाद!

ایک دن ایک فرنگی رنگون کی سڑک پر جا رہا تھا۔ اسے معلوم نہ تھا کہ باشاہ کا مزار وہیں پر ہے۔ اسے اس نے ایک مٹی کا ٹیلہ سمجھ کر "بوٹ" کی ایک ٹھوکر جما دی۔ اس بیچارے کو کیا معلوم تھا کہ ایک آزادی کا پجاری اس میں ہمیشہ کی نیند سو رہا ہے۔

ہمارے ہر دلعزیز نیتا جی سوبھاش جب رنگون گئے تب اس مزار کی مٹی تو انہوں نے ماتھے پر لگایا اور شہید بہادرشاہ کی قبر پر لپٹ کر عقیدت (بھکتی) کے آنسو چڑھائے۔ بہت دیر تک وے آنسو بہاتے رہے۔ ہاں، بہادر ہمیشہ بہادر کی عزت کرتا ہے! بھارت کے ہندو مسلمان بھائیوں تو بہادر شاہ کی بہادری پر ناز (گرو) ہونا چاہئے۔

ہندو مسلم ایکتا زندہ باد!
شہید أعظم بہادرشاہ زندہ باد!

१८५७ का देशभक्त अखबार 'पयामे आज़ादी'

विश्वम्भरनाथ पांडे

भारत की आजादी की लड़ाई के लम्बे दौर में भारतीय समाचार पत्रों, ख़ासकर देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का सहयोग उतना ही शानदार है जितना कि उसके लिये आत्मबलि देने वाले शहीदों का। आजादी के इतिहास के पन्नों में उनके सहयोग का जिक्र अकसर किया नहीं जाता. सच तो यह है कि आजादी की शानदार इमारत की नींव में शहीदों के साथ अनेक शहीद पत्रकारों की भी हड्डियाँ पड़ी हुई हैं. १८५७ के ऐसे एक बहादुर अख़बार के बलिदान की अमर कहानी यहाँ दी जा रही है. जबकि अनेक शहीदों की यादगारें जहाँ तहाँ खड़ी की जा रही हैं तब क्या इस साथी पत्रकार की कोई यादगार खड़ी नहीं की जा सकती?

❀ ❀ ❀

1857 کا دیش بھکت اخبار 'پیام آزادی'

وشمبھر ناتھ پانڈے

بھارت کی آزادی کی لڑائی کے لمبے دور میں بھارتیہ سماچار پتروں، خاص کر دیشی بھاشاؤں کے سماچار پتروں کا سہیوگ اتنا ہی شاندار ہے جتنا کہ اس کے لئے آتم بلی دینے والے شہیدوں کا آزادی کے اتہاس کے پنوں میں ان کے سہیوگ کا ذکر اکثر کیا نہیں جاتا۔ سچ تو یہ ہے کہ آزادی کی شاندار عمارت کی نیو میں شہیدوں کے ساتھ انیک شہید پترکاروں کی بھی ہڈیاں پڑی ہوئی ہیں۔ 1857 کے ایسے ایک بہادر اخبار کے بلیدان کی امر کہانی یہاں دی جا رہی ہے۔ جب کہ انیک شہیدوں کی یادگاریں جہاں تہاں کھڑی کی جا رہی ہیں تب کیا اس ساتھی پترکار کی کوئی یادگار کھڑی نہیں کی جا سکتی!

❀ ❀ ❀

शाह के ख्यालों से खूब वाक़िफ़ थे. बहादुर शाह ने चारों तरफ़ फ़रमान भेजे. वे लोग अपने वतन की इज़्ज़त व आबरू बचाने के लिये तलवार की धार पर चलने को भी तैयार थे. "चाहे जान ही चली जाय मगर आन नहीं" यही उनका उसूल था. उन लोगों की जद्दोजहद से ही सिपाहियों की आज़ादी की लड़ाई शुरू हो गयी! फिरंगियों की नज़र में यह "ग़दर" था "म्यूटिनी" थी! मगर आज़ादी के मतवालों के लिये यह "जंगे आज़ादी" का पहला क़दम था. इसने हिन्दुस्तान की तवारीख़ को और भी रौशन कर दिया था! फिरंगियों के साथ लड़ाई होने लगी. लेकिन हुआ क्या? "घर का भेदी लंका ढावे" वाली मसल सच निकली! बादशाह का समधी इलाही बख्श फिरंगियों से मिल गया. उनकी चालों से बादशाह तंग आ चुके थे और आख़िर हुमायूँ के मक़बरे में गिरफ़्तार कर लिये गये.

उनकी गिरफ़्तारी के बाद हडसन ने बादशाह के बेटों को गोली मार दी.

बादशाह के बेटों के सिर एक तश्त में रख कर हडसन उन्हें बादशाह के सामने ले गया और कहा—"बादशाह सलामत की ख़िदमत में कम्पनी की ओर से यह नज़र पेश है!" उस ज़ालिम ने ढंके सिरों पर से कपड़ा हटा दिया! बादशाह ने मुँह फेर कर कहा—"अलहम्दोलिल्लाह! (ईश्वर महान हैं) तैमूर की औलाद इसी तरह सुर्ख़रू (प्रतिष्ठित) होकर अपने बाप के सामने आया करती थी!"

देश के दुश्मनों ने कहा—

"दमदमों में दम नहीं अब ख़ैर माँगो जान की!
ऐ ज़फ़र ठंडी हुई शमशीर हिन्दुस्तान की!

बादशाह ने जवाब दिया—

"ग़ाज़ियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तख़्ते लन्दन तक चलेगी, तेग़ हिन्दुस्तान की!"

बादशाह गिरफ़्तार हुए और रंगून भेजे गये. वहाँ उन पर जो कुछ बीती वह बयान से बाहर है. उनकी हालत पर पत्थर भी रो देगा. उनको दाने-दाने के लिये तरसना पड़ा! रंगून में बादशाह में एक बड़ा तग़य्युर (परिवर्तन) हुआ. तब का एक शेर सुनिये—

"पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसू ने जला दिया,
उसे आह दामने बाद ने सरे शाम से ही बुझा दिया.
मेरी आँख झपकी थी एक पल, तभी दिल ने कहा कहीं उठके चल,
दिले बेक़रार ने आनकर मुझे चुटकी लेके जगा दिया,
पसे मर्ग क़ब्र पै ऐ 'ज़फ़र' पढ़े फ़ातिहा कोई आनकर
वो जो टूटी क़ब्र का था निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया

شاہ کے خیالوں سے خوب واقف دتھے. بہادر شاہ نے چاروں طرف فرمان بھیجے. وے لوگ اپنے وطن کی عزت وآبرو بچانے کے لئے تلوار کی گھاٹ پر چلنے کو بھی تیار تھے. چاہے جان ہی چلی جائے مگر آن نہیں" یہی اُن کا اصول تھا. اُن لوگوں کی جدو جہد سے ہی سپاہیوں کی آزادی کی لڑائی شروع ہو گئی! فرنگیوں کی نظر میں یہ "غدر" تھا "میوٹنی" تھی! مگر آزادی کے متوالوں کے لئے یہ "جنگ آزادی کا" پہلا قدم تھا. اِس نے ہندستان کی تواریخ کو اور بھی روشن کر دیا تھا! فرنگیوں کے ساتھ لڑائی ہونے لگی. لیکن ہوا کیا؟ "گھر کا بھیدی لنکا ڈھاوے" والی مثل سچ نکلی! بہادر شاہ کا سمدھی الٰہی بخش فرنگیوں سے مل گیا. اُن کی چالوں سے بہادر شاہ تنگ آچکے تھے اور آخر ھمایوں کے مقبرہ میں گرفتار کر لئے گئے.

اُن کی گرفتاری کے بعد ھڈسن نے بادشاہ کے بیٹوں کو گولی ماردی. بادشاہ کے بیٹوں کے سر ایک طشت میں رکھ کر ھڈسن انھیں بادشاہ کے سامنے لے گیا اور کہا—"بادشاہ سلامت کی خدمت میں کمپنی کی اور سے یہ نذر پیش ہے!" اُس ظالم نے ڈھکے سروں پر سے کپڑا ھٹا دیا! بادشاہ نے منہ پھیر کر کہا—"الحمد الله!"

("ایشور مہان ھے") تیمور کی اولاد اِسی طرح سرخرو (پرتشٹھت) ہو کر اپنے باپ کے سامنے آیا کرتی تھی!

"دمدموں میں دم نہیں اب خیر مانگو جان کی!
لو ظفر ٹھنڈی ہوئی شمشیر ھندستان کی!"

بادشاہ نے جواب دیا—

دیش کے دشمنوں نے کہا—

"غازیوں میں بو رہیگی جب تلک ایمان کی،
تخت لندن تک چلیگی تیغ ھندستان کی!"

بادشاہ گرفتار ہوئے اور رنگون بھیجے گئے. وہاں اُن پر جو کچھ بیتی وہ بیان سے باہر ھے. اُن کی حالت پر پتھر بھی رو دیگا. اُن کو دانے دانے کے لئے ترسنا پڑا! رنگون میں بادشاہ میں ایک بڑا تغیر (پریورتن) ہوا. تب کا ایک شعر سنئے—

پس مرگ میرے مزار پر جو دیا کسو نے جلا دیا،
اُسے آہ دامن باد نے سر شام سے ہی بجھا دیا.
میری آنکھ جھپکی تھی ایک پل، تبھی دل نے کہا
کہیں اُٹھ کے چل،
دل بیقرار نے آن کر مجھے چٹکی لے کے جگا دیا.
پس مرگ قبر پہ اے 'ظفر' پڑھے فاتحہ کوئی آن کر،
وہ جو ٹوٹی قبر کا تھا نشاں اُسے ٹھوکروں سے مٹا دیا.

बहादुरशाह बराये नाम बादशाह थे. अपनी जिन्दगी की शुरूआत में ही वे रंजोग़म के शिकार हो चुके थे. उनके वालिद (पिता) भी उनसे नाराज़ थे. वे अपने दूसरे फरज़न्द (पुत्र) को 'राजगद्दी' देना चाहते थे. इसलिये बहादुरशाह को घर से अलग रहना पड़ा. वे "फ़न व हिकमत" (कलाकारी) के कद्रदाँ थे. वे उस्ताद ज़ौक़ के शागिर्द थे. बहादुरशाह की शायरी में निजी मजबूरियों की झलक दीख पड़ती है—

"मेरी आँख बंद थी जब तलक,
वह नज़र में नूरे-जमाल था,
खुली आँख तो न खबर रही,
कि वह ख्वाब था कि ख़याल था.
मेरे दिल में था कि कहूँगा मैं,
जो यह दिल पै रंजो-मलाल है,
वह जब आ गया मेरे सामने,
न तो रंज था न मलाल था."

बहादुरशाह की बेबसी के दिनों में उनकी बेगम ज़ीनत-महल ही मदद देती थीं. बेगम सियासत की गुत्थी ठीक-ठीक सुलझाती थी. इसीलिये अंग्रेज़ उनसे खबरदार थे.

बेगम ज़ीनतमहल ने अपने प्यारे बादशाह के लिये अपने ऐश-व-आराम को छोड़ दिया था. वे बहादुरशाह के साथ इन्क़लाब में कूद पड़ीं और जेल में क़ैद रहकर आख़िरी दम तक बहादुरशाह के साथ मुसीबतें झेलीं.

बहादुरशाह का बेटा जवाँबख्त था, जो अंग्रेज़ों की चालबाज़ी और मक्कारी से खूब वाक़िफ़ था. इसलिये अंग्रेज़ उससे जलते थे. इसलिये उसे वलीअहद मानने से उन्होंने इन्कार कर दिया. बादशाह के अँधेरे के दो चिराग़ थे. एक जवाँ बख्त था और दूसरा ज़ीनत-महल! ज़ीनत-बेगम बादशाह की ज़िन्दगी में जगमगाता नूर बनकर चमकीं. जवाँबख्त इनकी ज़िन्दगी का अरमान था. वे थे बराये नाम के बादशाह! उनको कोई आज़ादी न दी गयी. अंग्रेज़ों की यह करतूत बहादुरशाह की ख़ुद्दारी के लिये एक चैलेंज थी. लार्ड एलनबरो गवर्नर जनरल हुआ. उसने बादशाह को ईद और उनके जनम दिन में नज़र देने की जो रस्म थी, उसे बंद कर दिया. बादशाह की हालत बड़ी दर्दनाक थी—

"उड़ाकर आशियाँ सर-सर ने मेरा,
किया साफ़ इस क़दर तिनका न पाया!"

अब तक फ़िरंगियों का पैर खूब जम चुका था. लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह का तख्त छीन लिया गया! झाँसी का हक़ ठुकराया गया! अब भारत फिर से जाग उठा! नाना साहब की पेन्शन बंद हो चुकी थी. वे बहादुर

بہادر شاہ برائے نام بادشاہ تھے۔ اپنی زندگی کی شروعات میں ہی وے رنج و غم کے شکار ہو چکے تھے۔ اُن کے والد (پتا) بھی اُن سے ناراض تھے۔ وے اپنے دوسرے فرزند (پتر) کو راجگدی دینا چاہتے تھے۔ اِس لئے بہادر شاہ کو گھر سے الگ رہنا پڑا۔ وے "فن و حکمت" (کلاکاری) کے قدرداں تھے۔

وے استاد ذوق کے شاگرد تھے۔ بہادر شاہ کی شاعری میں نجی مجبوریوں کی جھلک دیکھ پڑتی ہے—

"میری آنکھ بند تھی جب تلک،
وہ نظر میں نور جمال تھا۔
کھلی آنکھ تو نہ خبر رہی،
کہ وہ خواب تھا کہ خیال تھا۔
میرے دل میں تھا کہ کہونگا میں،
جو یہ دل پہ رنج و ملال ہے۔
وہ جب آگیا میرے سامنے،
نہ تو رنج تھا نہ ملال تھا۔

بہادر شاہ کی بےبسی کے دنوں میں اُن کی بیگم زینت محل مدد دیتی تھیں۔ بیگم سیاست کی گتھی ٹھیک ٹھیک سلجھاتی تھی۔ اِس لئے انگریز اُن سے خبردار تھے۔ بیگم زینت محل ہی نے اپنے پیارے بادشاہ کے لئے اپنےعیش و آرام کو چھوڑ دیا تھا۔ وے بہادر شاہ کے ساتھ انقلاب میں کود پڑی اور جیل میں قید رہ کر آخری دم تک بہادر شاہ کے ساتھ مصیبتیں جھیلیں۔

بہادر شاہ کا بیٹا جواں بخت تھا جو انگریزوں کی چال بازی اور مکاری سے خوب واقف تھا۔ اِس لئے انگریز اُس سے جلتے تھے۔ اِس لئے اسے ولی عہد ماننے سے اُنھوں نے انکار کر دیا۔ بادشاہ کے اندھیرے کے دو چراغ تھے۔ ایک جواں بخت تھا اور دوسرا زینت محل! زینت بیگم بادشاہ کی زندگی میں جگمگاتا نور بن کر چمکیں۔ جواں بخت اُن کی زندگی کا ارمان تھا۔ وے تھے برائے نام کے بادشاہ۔ اُن کو کوئی آزادی نہ دی گئی۔ انگریزوں کی یہ کرتوت بہادر شاہ کی خود داری کے لئے ایک چیلنج تھی۔ لارڈ ایلن برو گورنر جنرل ہوا اِس نے بادشاہ کو عید اور اُن کے جنم دن میں نذر دینے کی جو رسم تھی اُسے بند کر دیا۔ بادشاہ کی حالت بڑی دردناک تھی۔

"اُڑا کر آشیانہ صر صر نے میرا۔
کیا صاف اِس قدر تنکا نہ پایا۔

اب تک فرنگیوں کا پیر خوب جم چکا تھا۔ لکھنؤ کے نواب واجد علی شاہ کا تخت چھین لیا گیا! جھانسی کا حق ٹھکرایا گیا! اب بھارت پھر سے جاگ اٹھا! نانا صاحب کی پینشن بند ہو چکی تھی۔ وہ بہادر

मैं ज़मीं की पीठ का बोझ हूँ,
मैं फ़लक के दिल का गुबार हूँ.
वो हँसी के दिन वो ख़ुशी के दिन,
गये 'हसरतें' बाक़ी रह गयीं,
कभी बादये जामे-नाज़ था,
मगर अब मैं उसका उतार हूँ."

अगर कोई सच्चा शायर शायराना-दिल लेके बहादुर शाह के मज़ार के पास टहलता हो तो वहाँ की सर्द हवा में यही आवाज़ सुनायी पड़ेगी ! मामूली शायर को अपनी हैसियत ख़ूब मालूम है पर बहादुरशाह बादशाह थे, बाबर, अकबर और औरंगज़ेब के तख़्त-व-ताज को रौशन करने वाले थे. उन जैसे बादशाह को मामूली इनसान से ज़्यादा तकलीफ़देह ज़िन्दगी बसर करनी पड़ी हो तो उसका अंदाज़ा आसानी से लगा सकते हैं—

चारागर भर न सके मेरे जिगर के नासूर,
एक गर बंद किया दूसरा रौज़न निकला.

बहादुरशाह को 72 साल की उम्र में "राजगद्दी" मिली. वह भी कैसी ? अकबरशाह के ज़माने में ही कम्पनी ने उनके हक़ो-हुक़ूक़ (अधिकार) को छीन लिया,जिन का "समझौता" कम्पनी के हाकिमों ने बादशाह शाहेआलम से किया था. अकबरशाह ने पैरवी के वास्ते राजा राम मोहन राय को वकील बनाकर इंगलिस्तान भेजा. वहीं राजा साहब का इन्तकाल हो गया, तो मामला ज्यों का त्यों रह गया. अकबर शाह की शिकस्त (हार) हो चुकी थी. अब अंग्रेज़ों ने और भी ज़ुल्म शुरू किये.

जब बहादुरशाह तख़्त पर बैठे, तब भी फ़िरंगियों का वही रवैया जारी रहा. ख़ास मौक़ों पर जो तोहफ़े (भेंट) नज़र के तौर पर बादशाह को दिये जाते थे, मौक़ूफ़ (बन्द) हो चुके थे. जब चार्ल्स मेटकाफ़ रेज़िडेन्ट हुआ, तो उसने सलाम, कोरनिश व मुजरा सब ख़त्म कर दिया. मुग़ल-सल्तनत के ज़वाल (अवनति) के दिन नज़दीक़ आ गये थे.

फ़िरंगियों ने जो बरबरता की था उसे बहादुरशाह जैसे आज़ादी के मतवाले कैसे बर्दाश्त कर सकते थे ? उनकी उम्र ज़्यादा हो चुकी थी. बुढ़ापे के हाल में भी उन्होंने हिम्मत न हारी.

सुनिये तो सही—

यूँ ही तबीयत अपनी हविस पर लगी हुई,
मकड़ी की जैसे ताक मगस पर लगी हुई.
आज़ाद कब करे हमें सैयाद देखिये,
रहती है आँख बाबे-क़फ़स पर लगी हुई.

میں زمین کی پیٹھ کا بوجھ ہوں'
میں فلک کے دل کا غبار ہوں ۔
وہ ہنسی کے دن وہ خوشی کے دن'
گئے حسرتیں باقی رہ گئی ۔
کبھی بادۂ جام ناز تھا'
مگر اب میں اُس کا اُتار ہوں ۔

اگر کوئی سچا شاعر شاعرانہ دل لے کے بہادر شاہ کے مزار کے پاس ٹہلتا ہو تو وہاں کی سرد ہوا میں یہی آواز سنائی پڑیگی ! معمولی شاعر کو اپنی حیثیت خوب معلوم ہے پر بہادر شاہ بادشاہ تھے۔ بابر' اکبر اور اورنگزیب کے تخت و تاج کو روشن کرنے والے تھے ، اُن جیسے بادشاہ کو معمولی انسان سے بھی زیادہ تکلیف دہ زندگی بسر کرنا پڑی ہو' تو اُس کا اندازہ آسانی سے لگا سکتے ہیں——

چارہ گر بھر نہ سکے میرے جگر کا ناسور'
ایک گر بند کیا دوسرا روزن نکلا ۔

بہادر شاہ کو 72 سال کی عمر میں "راجگدی" ملی ۔ وہ بھی کسی ؟ اکبر کے زمانے میں ہی کمپنی نے اُن حق و حقوق (ادھیکار) کو چھین لیا جن کا "سمجھوتہ" کمپنی کے حاکموں نے بادشاہ شاہ عالم سے کیا تھا ۔ اکبرشاہ نے پیروی کے واسطے راجا رام موہن رائے کو وکیل بنا کر انگلستان بھیجا ۔ وہیں راجہ صاحب کا انتقال ہو گیا' تو معاملہ جیوں کا تیوں رہ گیا ۔ اکبر شاہ کی شکست (ہار) ہو چکی تھی' اب انگریزوں نے اور بھی ظلم شروع کئے ۔

جب بہادرشاہ تخت پر بیٹھے' تب بھی فرنگیوں کا وہی رویہ جاری رہا ۔ خاص موقع پر جو تحفے (بھینٹ) نذر کی طور پر بادشاہ کو دیئے جاتے تھے' موقوف (بند) ہو چکے تھے ۔ جب چارلس میٹکاف ریزیڈنیٹ ہوا تو اُس نے سلام' کورنش و مجرا سب ختم کر دیا ۔ مغل سلطنت کے زوال (اونتی) کے دن نزدیک آگئے تھے ۔

فرنگیوں نے جو بربرتا کی تھی اُسے بہادر شاہ جیسے آزادی کے متوالے کیسے برداشت کر سکتے تھے ؟ اُن کی عمر زیادہ ہو چکی تھی ۔ بڑھاپے کے حال میں بھی اُنہوں نے ہمت نہ ہاری ۔

سنیئے تو سہی——

یونہی طبیعت اپنی ہوس پر لگی ہوئی'
مکڑی کی جیسے تاک مگس پر لگی ہوئی ۔
آزاد کب کرے ہمیں صیاد دیکھئے'
رہتی ہے آنکھ باب قفس پر لگی ہوئی ۔

शुमाल हिन्द में भी झाँसी की रानी से लेकर भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, आदि शहीदों ने जंगे आज़ादी का ऐलान किया. हमारे सामने शहीदों में कोई फ़र्क़ नहीं है. सबों का मक़सद आज़ादी था !

बहादुरशाह भी आज़ादी के लिये काम आए.वे सल्तनते मुग़लिया के आख़िरी चिराग़ थे. वे बादशाह होते हुए भी वतन-परस्ती (देश-भक्ति) के शायर थे. उनकी शायरी में जोश था. जज़्बाती लहरें (भावना की तरंगें) उमड़ उठती थीं. बहादुरशाह के बारे में जानना हरेक का फ़र्ज़ है.

बहादुरशाह 'उर्दू' के एक ऊँचे शायर थे. उन्होंने "ज़फ़र" के तख़ल्लुस (उपनाम) से शेरो शायरी की. सब से ज़्यादा भारत की आज़ादी को क़ायम रखने के लिये उन्होंने जो क़ुरबानी की थी वह हमेशा ज़िन्दा-जावेद (सदैव के लिये) रहेगी.

बहादुरशाह की शायरी में गहरे जज़बात थे और ज़िन्दादिली थी. असल में उनके ज़माने तक उर्दू अदब (साहित्य) का रवैया इश्क़-हक़ीक़ी" या "मजाज़ी" के नाम पर ही बहुत कुछ गुलो बलबुल तक महदूद (सीमित) था. दीगर (अन्य) शायरों की तरह उन्हें भी "उर्दू शायरी" में रदीफ़ क़ाफ़िये की तंगी में ज़्यादा मज़ा आता था. उन्होंने 'ज़फ़र' के नाम से बहुत कुछ लिखा है. आज़ादी के लिये उन्हें जो तकलीफ़ उठानी पड़ीं उन्हें सुनकर पत्थर का कलेजा भी दो बूँद आँसू गिरा देगा.

अब उनका कलाम सुनिये—

"न पूछ मुझसे 'ज़फ़र' तू मेरा हक़ीक़ते हाल,
अगर कहूँगा अभी तुमको मैं रुला दूँगा."

ज़फ़र ने अपनी हक़ीक़त (वास्तविकता) को साफ़ तौर से बयान किया है. फिर भी तवारीख़ (इतिहास) ने भी उनकी ज़िन्दगी की दर्दनाक-हालत पर आँसू की बूँदें बहायी हैं—

"जो ख़िज़ाँ हुई वो बहार हूँ.
जो उतर गया वो ख़ुमार हूँ,

जो बिगड़ गया वह नसीब हूँ,
जो उजड़ गया वो सिंगार हूँ.

मेरा हाल क़ाबिले-दीद है,
कि न आस है न उमीद है,

मेरी धुन के हसरतें रह गयीं,
मैं उन हसरतों का मज़ार हूँ.

मैं कहाँ रहूँ, मैं कहाँ बसूँ,
न ये मुझसे ख़ुश न वो मुझसे ख़ुश,

شمال ھند میں بھی جھانسی کی رانی سے لیکر بھگت سنگھ' راج گرو' سکھ دیو' آدی شہیدوں نے جنگ آزادی کا اعلان کیا . ھمارے سامنے شہیدوں میں کوئی فرق نہیں ھے . سبوں کا مقصد آزادی تھا !

بہادر شاہ بھی آزادی کے لئے کام آئے . وے سلطنت مغلیہ کے آخری چراغ تھے . وے بادشاہ ھوتے ھوئے بھی وطن پرستی (دیش بھکتی) کے شاعر تھے . اُن کی شاعری میں جوش تھا . جذباتی لہریں (بھاونا کی ترنگیں) اُمڑ اٹھتی تھیں . بہادر شاہ کے بارے میں جاننا ھر ایک کا فرض ھے .

بہادر شاہ 'اردو' کے اونچے شاعر تھے . اُنھوں نے "ظفر" کے تخلص (اُپ نام) سے شعر و شاعری کی . سب سے زیادہ بھارت کی آزادی کو قایم رکھنے کے لئے انھوں نے جو قربانی کی تھی وہ ھمیشہ زندہ جاوید (سدیو کے لئے) رھیگی .
بہادر شاہ کی شاعری میں گہرے جذبات اور زندہ دلی تھی . اصل میں اُن کے زمانے تک اردو ادب (ساھتیہ) کا رویہ "عشق حقیقی" یا "مجازی" کے نام پر ھی سبھی بہت کچھ گل و بلبل تک ھی محدود (سیمت) تھا . دیگر (انیہ) شاعروں کی طرح انہیں بھی "اُردو شاعری" میں ردیف-قافیہ کی تنگی میں زیادہ مزا آتا تھا . اُنھوں نے 'ظفر' کے نام سے بہت کچھ لکھا ھے . آزادی کے لئے انھیں جو تکلیفیں اٹھانی پڑیں سن کر پتھر کا کلیجہ بھی دو بوند آنسو گرا دیگا .

اب اُن کا کلام سنیئے—

"نہ پوچھ مجھسے 'ظفر' تو میرا حقیقت حال .
اگر کہونگا ابھی تجھکو میں رولا دوں گا ."

ظفر نے اپنی حقیقت (واستوکتا) کو صاف طور سے بیان کیا ھے . پھر بھی تواریخ (اتہاس) نے بھی اُن کی زندگی کی دردناک حالت پر آنسو کی بوندیں بہائیں ھیں—

جو خزاں ھوئی وہ بہار ھوں'
جو اُتر گیا وہ' خمار ھوں .
جو بگڑ گیا وہ نصیب ھوں'
جو اُجڑ گیا وہ سنگار ھوں .
میرا حال قابل دید ھے'
کہ نہ آس ھے نہ اُمید ھے .
میری گھت کے حسرتیں رہ گئیں'
میں اُن حسرتوں کا مزار ھوں .
میں کہاں رھوں' میں کہاں بسوں'
نہ یہ مجھسے خوش نہ وہ مجھسے خوش .

हम तो अपनी अजन्ताओं में मग्न हैं,
तुम तिलिस्मी ग़ुबारे उड़ाते रहो.
फिर न कहना जो यह "ऐटमी शोबिदा,८"
.ख़ुद तुम्हारा नशेमन९ जलाने लगे.

हम तो इक सुबह हैं, सुबहे अमनो अमां।
अपना पैग़ाम है "रोशनी-रोशनी,"
ऐ अंधेरो, उजाले में आजाओ अब,
हिन्द के बामोदर१० जगमगाने लगे.

[नोट:—1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के शताब्दी महोत्सव पर लाल क़िले में हुए मुशायरे में यह नज़्म 16 अगस्त 1957 को पढ़ी गई.]

शहीदे आज़म बहादुरशाह की याद में

श्री डी० राजन

जो वतन की आज़ादी या मज़हब के लिये मर मिटता है वह शहीद है. आज़ादी के लिये क़ुरबानी की ज़रूरत है. ऐसे ही "देश भक्त" हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये हज़ारों लाखों की तादाद में क़ुर्बान हो चुके हैं. दरअसल हमारी आज़ादी की "अमर कहानी" शहीदों के ख़ून से लिखी गयी है. कन्या कुमारी से हिमालय तक कई वतन-परस्त देश-भक्त भारत की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े. कन्या कुमारी दक्खिन में है इसीलिये पहले उसका नाम लिया है कि दक्खिन में ही पहले पहल संतों के प्रेम-धर्म ने जन्म लिया और उत्तर तक फैला. शंकर, रामानुज, मध्वाचार्य वैष्णव और शैव-धर्म के संतों ने अपनी अमृत-बानी सुनाई. उत्तर में भी कई संत लोग पैदा हुए.

आज़ादी की लड़ाई में भी दक्खिन कभी पीछे नहीं रहा. कट्टबोम्मन, राजा देसिंह, वीर चिदम्बरम, व० वे० सु० अय्यर, हैदर, टिप्पु, तिरुप्पूर कुमरन जैसे शहीदों ने हमेशा के लिये आज़ादी की अमर ज्योति जलाई.

---

१. नूर = प्रकाश, २. निकहत = सुगन्ध, ३. बज़्म = सभा ४. शमए = दीप-मोमबत्ती, ५. गुलफ़िशाँ = फूल का खिलना, ६. मुस्तक़िल = स्थाई, ७. मशग़ले = काम-काज, ८. शोबिदा = जादू का खेल , ९. नशेमन = घोंसला, १०. बामोदर = कोठे और दरवाज़े.

ہم تو اپنی اجنتاؤں میں مگن ہیں،
تم طلسمی غبارے اڑاتے رہو،
پھر نہ کہنا جو یہ "ایٹمی شعبدا" 8
خود تمہارا نشیمن 9 جلانے لگے!

ہم تو اِک صبح ہیں صبح امن و اماں،
اپنا پیغام ہے "روشنی-روشنی."
اے اندھیرو، اُجالے میں آجاؤ اب،
ھند کے بام و در 10 جگمگانے لگے!

[نوٹ :—1857 کے سوتنترا سنگرام کے شتابدی مہتو پر لال قلعے میں ہوئے مشاعرے میں یہ نظم 16 اگست 1957 کو پڑھی گئی۔]

شہید اعظم بہادر شاہ کی یاد میں

شری ڈی۔ راجن

جو وطن کی آزادی یا مذہب کے لئے مر مٹتا ہے وہ شہید ہے۔ آزادی کے لئے قربانی کی ضرورت ہے۔ ایسے ہی "دیش بھکت" ھندستان کی آزادی کے لئے ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں قربان ہو چکے ہیں۔ دراصل ہماری آزادی کی "امر کہانی" شہیدوں کے خون سے لکھی گئی ہے۔ کنیا کماری سے ھمالیہ تک کئی وطن پرست دیش بھکت بھارت کی آزادی کی لڑائی میں کود پڑے۔ کنیا کماری دکھن میں ہے اِس لئے پہلے اُس کا نام لیا ہے کہ دکھن میں ہی پہلے پہل سنتوں کے پریم دھرم نے جنم لیا اور اُتر تک شنکر، رامانج، مدھوا چاریہ وشنو اور شیو دھرم کے سنتوں نے اپنی امرت بانی سنائی۔ اتر میں بھی کئی سنت، لوگ پیدا ہوئے۔

آزادی کی لڑائی میں بھی دکھن کبھی پیچھے نہیں رہا۔ کٹومن راجا دے سنگھ ویر چدمبرم و۔ وے۔ ایر، حیدر، ٹیپو، تروپٹ کمرن جیسے شہیدوں نے ہمیشہ کے لئے آزادی کی امر جیوتی جلائی تھی۔

---

1. نور = پرکاش، 2. نکہت = سوگندھ، 3. بزم = سبھا، 4. شمعیں = دیپ موم بتی، 5. گل فشاں = پھول کا کھلنا، 6. مستقل = استھائی، 7. مشغلے = کام کاج، 8. شعبدا = جادو کا کھیل 9. نشیمن = گھونسلا، 10. بام و در = کوٹھے اور دروازے۔

चिराग़ों के सिलसिले (अंग्रेज़ों से ख़िताब)

श्री सलाम मछलीशहरी

नूर१-ओ-नकहत२ की ख़ातिर जो क़ुरबाँ हुए,
जिनको तुमने यह समझा ठिकाने लगे.
फूल बनकर वही मुस्कराने लगे,
चाँद बनकर वही जगमगाने लगे.

बात उलझी सी है, मैं दिवाना जो हूँ,
ख़ैर, अब तुम ज़रा यह बताओ मुझे
क्या कहोगे उसे जो बुझे दीप से,
बज़म३ की ताज़ा शमएं४ जलाने लगे ?

तुमने भारत से ताजे ज़फ़र ले लिया,
हमको भारत ने गान्धी जवाहर दिया.
तुमने इस लाल क़िले में शोले भरे,
परचमे गुलफ़िशाँ५ हम उड़ाने लगे.

तुमने झाँसी की रानी का सर ले लिया,
देश की गोद में नायडू आ गईं।
तुमने इस शहर दिल्ली को वीरां किया,
जन्नतें हर तरफ़ हम सजाने लगे.

यूँ बुझे दीप से दीप जलते रहे,
और हम मुस्तक़िल६ रोशनी बन गए.
फिर भी पिछले अंधेरे सदी बाद भी—
आज क्या जाने क्यों याद आने लगे ?

बात यह है कि हम अहले हिन्दोस्ताँ,
एक आदर्श रखते हैं तहज़ीब का.
हम तो उस दम भी तुम से गले ही मिले,
जब यहाँ से, हुज़ूर ! आप जाने लगे.

ख़ैर, इतना तो बतलाओ ऐ दोस्तो !
आजकल क्या मशाले७ हैं, क्या हाल है ?
कोई कहता था तुम छिप के परदे में फिर,
सरहदे हिन्द पर गुल खिलाने लगे.

چراغوں کے سلسلے (انگریزوں سے خطاب)

شری سلام مچھلی شہری

نور و نکہت 2 کی خاطر جو قربان ہوئے،
جن کو تم نے یہ سمجھا ٹھکانے لگے۔
پھول بن کر وہی مسکرانے لگے—
چاند بن کر وہی جگمگانے لگے !

بات اُلجھی سی ہے، میں دیوانہ جو ہوں،
خیر، اب تم ذرا یہ بتاؤ مجھے۔
کیا کہوگے اُسے جو بجھے دیپ سے،
بزم 3 کی تازہ شمعیں 4 جلانے لگے !

تم نے بھارت سے تاج ظفر لے لیا،
ہم کو بھارت نے گاندھی جواہر دیا۔
تم نے اِس لعل قلعے میں شعلے بھرے۔
پرچم گل‌فشاں 5 ہم اُڑانے لگے !

تم نے جھانسی کی رانی کا سر لے لیا،
دیش کی گود میں نایڈو آگئیں !
تم نے اِس شہر دلی کو ویراں کیا۔
جنتیں ہر طرف ہم سجانے لگے !

یوں بجھے دیپ سے دیپ جلتے رہے،
اور ہم مستقل 9 روشنی بن گئے !
پھر بھی پچھلے اندھیرے صدی بعد بھی۔
آج کیا جانے کیوں یاد آنے لگے !

بات یہ ہے کہ ہم اہل ہندستان،
ایک آدرش رکھتے ہیں تہذیب کا،
ہم تو اِس دم بھی تم سے گلے ہی ملے،
جب یہاں سے حضور ! آپ جانے لگے !

خیر، اِتنا تو بتلاؤ اے دوستو !
آجکل کیا مشغلے 7 ہیں، کیا حال ہے ؟
کوئی کہتا تھا تم چھپ کے پردے میں پھر،
سرحد ہند پر گل کھلانے لگے !

इनसान की ज़िन्दगी नपी तुली है. क़यामत तक तो किसी को जीना नहीं—फिर वचन की मुद्दत क़यामत तक क्यों हो ?

जीवन में उसको वह सब मिलना चाहिये जो उसका हक़ और हिस्सा है—फिर उसमें देरी क्यों—और संकोच क्यों ?

.ख़ाली वादों ही वादों पर तो इनसान जी नहीं सकता और न परिवार ही पाल सकता है.

यह कौन सा इन्साफ़ और इनसानियत है कि एक परिवार के आधार पर केवल एक सियासी त्यागी अपना जीवन बनाये—क्या एक अकेला परिवार को एक अकेला खा जाने वाला "त्यागी" होता है आज के राज के अर्थ में ?

आख़िर यह हवाई वायदे कब तक उड़ान भरते रहेंगे और कब तक झूठे वचन सब्ज़ बाग़ दिखाते रहेंगे ?

जिनमें न आशाओं की कलियाँ, न आज़ादी के फल फूले.'

केवल काँटे ही काँटे.

लेकिन इसने वह काँटे ही टाँके हैं अपने दामन में आज़ादी के लिबास की शोभा बढ़ाने के लिये—और इसलिये '.ख़ारे वतन' हैं और वतन के .ख़ार से प्यार होता है हर सच्चे देश भगत को.

वचन के चमन के फूल भी इसके सामने अधिक से अधिक हैं और रंग रंग के.

देखने में बड़े सुन्दर, बड़े दिलकश, बड़े नज़रफ़रेब,

मगर न बू न महक.

अलबत्ता तेज़रंगत.

लेकिन वह रंगत कब तक ?

काग़ज़ के फूलों की शोख़ी और उनकी ज़िन्दगी ही कितनी ?

पानी के ऊपर काग़ज़ की नाव की उमर ही क्या ?

नई नई तरकीबों से अवाम को लुभाये रखना और जीवन के मीठे सपनों में भुलाये रखना. अजीब अनुभव है राजनीति का—यह बात कितनी विचित्र है कि आज़ाद होते हुऐ वचनों के रंगीन फन्दों में अवाम गिरफ्तार हैं—यानी आज़ादी में क़ैद हैं—फिर भी वचन आये दिन नित नये जतन करते ही रहते हैं और जनता के साथ शातिराना चालें चलने में कोई कसर बाक़ी नहीं रख रहे. इस प्रकार अब तक जितने भी जतन हुए और हो रहे हैं उन पर जितना भी मातम किया जाय कम है और जितना शोक मनाये ठीक है.

اِنسان کی زندگی نپی تلی ھے ۔ قیامت تک تو کسی کو جینا نہیں—پھر وچن کی مدت قیامت تک کیوں ؟

جیون ھی میں اُسی کو وہ سب ملنا چاھئے جو اُس کا حق اور حصہ ھے—پھر اُس میں دیری کیوں—اور سنکوچ کیوں ھوں ؟

خالی وعدوں ھی وعدوں پر تو اِنسان جی نہیں سکتا اور نہ پریوار ھی پال سکتا ھے ۔

یہ کون سا انصاف اور اِنسانیت ھے کہ ایک پریوار کے آدھار پر کیول ایک سیاسی تیاگی اپنا جیون بنائے—کیا ۔ ایک اکیلا پریوار کو ایک اکیلا کھا جانے والا "تیاگی" ھوتا ھے آج کے راج کے ارتھ میں ؟

آخر یہ ھوائی وعدے کب تک اُڑان بھرتے رھیں گے اور کب تک جھوٹے وچن سبز باغ دکھاتے رھیں گے ؟

جن میں نہ آشاؤں کی کلیاں' نہ آزادی کے پھل پھولے ۔

کیول کانٹے ھی کانٹے ۔

لیکن اُس نے وہ کانٹے ھی ٹانکے ھیں اپنے دامن میں آزادی کے لباس کی شوبھا بڑھانے کے لئے—اور اِسی لئے وہ 'خارِ وطن' ھیں اور وطن کے خار سے پیار ھوتا ھے ھر سچے دیش بھگت کو ۔

وچن کے چمن کے پھول بھی اِس کے سامنے آدھک سے ادھک ھیں اور رنگ رنگ کے ۔

دیکھنے میں بڑے سندر' بڑے دل کش' بڑے نظر فریب ۔

مگر نہ بو نہ مہک ۔

البتہ تیز رنگت ۔

لیکن وہ رنگت کب تک ؟

کاغذ کے پھولوں کی شوخی اور اُن کی زندگی ھی کتنی ؟

پانی کے اُوپر کاغذ کی ناؤ کی عمر ھی کیا ؟

نئی نئی ترکیبوں اور باتوں سے عوام کو لبھائے رکھنا اور وچنوں کے میٹھے سپنوں میں جُھلائے رکھنا ۔ عجیب انوبھو ھے راجنیتی کا یہ بات کتنی وچتر ھے کہ آزاد ھوتے ھوئے وچنوں کے رنگین پھندوں میں عوام گرفتار ھیں—یعنی آزادی میں قید ھیں—پھر بھی وچن آئے دن نت نئے جتن کرتے ھی رھتے ھیں اور جنتا کے ساتھ شاطرانہ چالیں چلنے میں کوئی کور کسر باقی نہیں رکھ رھے ۔ اِس پرکار اب تک جتنے بھی جتن ھوئے اور ھو رھے ھیں اُن پر جتنا بھی ماتم کیا جائے کم ھے اور جتنا شوک منایا جائے ٹھیک ھے ۔

आख़िर जनता का भी कुछ हिस्सा है आज़ादी में और कुछ हक़ है जम्हूरियत में—पर उनको जनता के दुःख दर्द से क्या वास्ता, और क्यों वास्ता हो ?

फिर दावा भी करते हैं अहिंसा का.

वचन भी देते हैं सेवा का.

कितना अजीब तमाशा है यह और कितना हसीन फ़रेब !

उनका दावा धोखा और वचन ग़लत साबित हो गया .उस की मियाद भी ख़तम हो गई. आस की भी मियाद होती है. छलकते पैमाने को कब तक रोका जा सकता है—और कब तक विश्वासी जनता सियासी झूठ और फ़रेब का पालन कर सकती है—जब किसी भी इन्सान का वचन बेवज़न हो जाता है तो फिर उसका ख़ुद का कोई वज़न नहीं रहता उसकी ज़िन्दगी में और समाज में—इन्सान सच्चाई और विश्वास के बल पर इज़्ज़त और स्वागत पाता है—इन्सान की इज़्ज़त और क़ीमत उसके ठोस विश्वास में होती है. विश्वास ख़तम होते ही वह भी ख़तम हो जाता है जैसे सूरज डूबते ही दिन ख़तम हो जाता है और अन्धेरा छा जाता है.

वक़्त किसी की परवाह नहीं करता. न किसीकी तरफ़दारी करता है. मतलब यह कि वक़्त फ़िरक़ापरस्त नहीं होता. वह इन्साफ़परस्त होता है और न्याय करता है. वह अपने अख़्त्यार से अपना फ़ैसला ख़ुद सादिर करता है. इसका फ़ैसला इसका निज़ाम घड़ी की सुई की नोक पर रहता है. जो भी उसकी ज़द में आ जाता है "कसेबाशद" छिन के छिन में पीस डालता है. कस देता है इंसाफ़ के शिकंजे में. वह किसी की रूरियायत नहीं रखता. न किसी की सिफ़ारिश स्वीकार करता है—कितने घमन्डियों को उसने आन की आन में ख़ाक में मिला दिया है. कितने तानाशाह और नेताशाह झुके पड़े हैं उनके चरणों में.

वचन इनसान को गिराता भी है, उठाता भी है, बनाता भी है बिगाड़ता भी है—अपनी इज़्ज़त, अपना विक़ार, अपनी बात, अपनी साख क़ायम रखने के लिये इसका .फ़ैसला .ख़ुद इनसान के अख़त्यार में है कि वह अपने लिए क्या निश्चय करता है ?

किसी भी इनसान का बड़प्पन बड़े से बड़े ओहदे में नहीं होता. और न उसका बड़प्पन बड़े से बड़े बंगले में रहता है. इनसान का बड़प्पन केवल बात की सच्चाई, सदाचार की सुन्दरता और किरदार की मज़बूती और पाकीज़गी में होता है. जिस में यह गुण नहीं वह बड़ा होते हुए भी छोटा है और भारी होते हुये भी हलका है.

آخر جنتا کا بھی کچھ حصہ ہے آزادی میں اور کچھ حق ہے جمہوریت میں—پر اُن کو جنتا کے دکھ درد سے کیا واسطہ، اور کیوں واسطہ ہو ؟

پھر دعویٰ بھی کرتے ہیں اہنسا کا ۔

بچن بھی دیتے ہیں سیوا کا ۔

کتنا عجیب تماشہ ہے یہ اور کتنا حسین فریب !

اُن کا دعویٰ جب دھوکا اور بچن غلط ثابت ہو گیا. اُس کی میعاد بھی ختم ہو گئی ۔ آس کی بھی میعاد ہوتی ہے ۔ چھلکتے پیمانے کو کب تک روکا جا سکتا ہے—اور کب تک وشواسی کی جنتا سیاسی جھوٹ اور فریب کا پالن کر سکتی ہے ۔جب کسی بھی انسان کا وچن بےوزن ہو جاتا ہے تو پھر اُس کا خود کا کوئی وزن نہیں رہتا اُس کی زندگی میں اور سماج میں—انسان صرف سچائی اور وشواس کے بل پر عزت اور سواگت پاتا ہے ۔ اِنسان کی عزت اور قیمت اُس کے ٹھوس وشواس میں ہوتی ہے ۔ وشواس ختم ہوتے ہی وہ بھی ختم ہو جاتا ہے ۔ جیسے سورج ڈوبتے ہی دن ختم ہو جاتا ہے اور اندھیرا چھا جاتا ہے ۔

وقت کسی کی پرواہ نہیں کرتا ۔ نہ کسی کی طرفداری کرتا ، مطلب یہ کہ وقت فرقہ پرست نہیں ہوتا ۔ وہ اِنصاف پرست ہوتا ہے اور نیائے کرتا ہے ۔ وہ اپنے اختیار سے اپنا فیصلہ خود صادر کرتا ہے۔ اُس کا فیصلہ اور اُس کا نظام گھڑی کی سوئی کی نوک پر رہتا ہے ۔ جو بھی اُس کی زد میں آجاتا ہے، "کسے باشد" چھن چھن میں پیس ڈالتا ہے، کس دیتا ہے اِنصاف کے شکنجے میں ۔ وہ کسی کی رو رعایت نہیں رکھتا ۔ نہ کسی کی سفارش سویکار کرتا—کتنے گھمنڈیوں کو اُس نے آن کی آن میں خاک میں ملا دیا ہے ۔ کتنے تاناشاہ اور نیتا شاہ جھکے پڑے ہیں اُس کے چرنوں میں ۔

وچن اِنسان کو گراتا بھی ہے اُٹھاتا بھی ہے ۔ بناتا بھی ہے بگاڑتا بھی ہے—اپنی عزت، اپنا وقار، اپنی بات، اپنی ساکھ قایم رکھنے کے لئے اِس کا فیصلہ خود اِنسان کے اختیار میں ہے کہ وہ اپنے لئے کیا نشچے کرتا ہے ؟

کسی بھی اِنسان کا بڑپن بڑے سے بڑے عہدے میں نہیں ہوتا ۔ اور نہ اُس کا بڑپن بڑے سے بڑے بنگلے میں رہتا ۔ اِنسان کا بڑپن کیول بات کی سچائی، سداچار کی سندرتا اور کردار کی مضبوطی اور پاکیزگی میں ہوتا ہے—جس میں یہ گن نہیں وہ بڑا ہوتے ہوئے بھی چھوٹا اور بھاری ہوتے ہوئے بھی ہلکا ہے ۔

कितने अनमोल मोती और नायाब जौहर नाक़द्री और सम्प्रदाय के धार में बह गये और कितने गुणी मुनि फ़ना के दामन में सिमटकर नष्ट हो गये. राज्य ने वह धन खोया जो क़ौम की माया था और माया से हाथ धोया जो जाकर कभी वापस नहीं आती —

देखते के देखते और आन ही आन में कितने क़बीले ख़तम हो गये. कितने परिवार अन्याय की ऊँची दीवार फाँद गये. कितनी बेचैन आत्माएँ जम्हूरियत के लुभावने और रंगीन जाल के फंदों से निकलकर आज़ाद फ़िज़ा में घुल मिल गईं.

यह दिल-शिकन नज़ारा देखकर लाज़मी तौर पर आस टूटी. आस के टूटते ही आशाओं के तार भी टूट गये और उन तारों से धाराएं फूट निकलीं तेज़-तेज़ जज़बात और लाल ग़ुस्से की.

कहाँ गये वह त्यागी और सेवक जिनके अन्दर से हम-दर्दी का एक भाव भी न उभरा—और दुखी इन्सानियत पर जिनकी आँखों से एक झूठा आँसू भी न टपका. जिनकी आत्मा नफ़सानियत के कीचड़ में लुथड़ी पड़ी है — अबतक.

कहाँ हैं वह जन सेवक जिन की ज़बानों पर आत्मा और महात्मा की रट धोखा देती रही है इन्सानियत को और इन्सान की अच्छी अक़ीदत को,—यानी मानवता को और मानव की सुन्दर श्रद्धा को.

आज़ादी के दस वर्ष कम नहीं होते. दस वर्ष के काल में दस नई पीढ़ियाँ जन्म ले सकती हैं. दस नए आकाश बुलन्द हो सकते हैं— समय की लम्बाई, चौड़ाई और पस्ती या बुलन्दी का नाम केवल ख़ुशहाली और परेशानी के पैमाने से होती है. मुसीबत और तक़लीफ़ का एक वर्ष तो बहुत होता है. एक दिन भी अधिक और बहुत अधिक होता है—उसका एक-एक मिनट शताब्दियों की विशालता और गहराई अपने अन्दर रखता है लेकिन उसको वही जानते और समझते हैं जिन पर मुसीबत के पहाड़ टूटते हैं या दुख के दिन बीतते हैं.

सवाल यह है कि इन तमाम चीज़ों की ज़िम्मेदारी किस पर है ?

इनकी ज़िम्मेदारी झूठे वचन देने वालों पर.

असली अपराधी कौन हैं ?

जिन्होंने आशावादियों के दिलों को ख़ाक करके और उनकी आशाओं की दीवारें गिराकर उन पर अपने भवन खड़े किये.

जिन्होंने ग़रीबों का हक़ मारकर अपने जीवन को बहार दी और अपने जमाई को मोटरकार दी.

کتنے انمول موتی اور نایاب جوہر ناقدری اور سامپردائے کے دھار میں بہ گئے . اور کتنے گنی منی فنا کے دامن میں سمٹ کر نشٹ ہو گئے . راجیہ نے وہ دھن کھویا جو قوم کی مایہ تھا اور اُس مایہ سے ہاتھ دھویا جو جاکر کبھی واپس نہیں آتی—

دیکھتے دیکھتے اور آن ہی آن میں کتنے قبیلے ختم ہو گئے . کتنے پریوار انیائے کی اونچی دیوار پھاند گئے . کتنی بےچین آتمائیں جمہوریت کے لبھاؤنے اور رنگین جال کے پھندوں سے نکل کر آزاد فضا میں گھل مل گئیں .

یہ دل شکن نظارہ دیکھ کر لازمی طور پر آس ٹوٹی . اُس کے ٹوٹتے ہی آشاؤں کے تار بھی ٹوٹ گئے . اور اُن تاروں سے دھاریں پھوٹ نکلیں تیز تیز جذبات اور لال لال غصے کی .

کہاں گئے اب وہ تیاگی اور سیوک جن کے اندر سے ہمدردی کا ایک بھاؤ بھی نہ اُبھرا—اور دُکھی انسانیت پر جن کی آنکھوں سے ایک جھوٹھا آنسو بھی نہ ٹپکا . جن کی آتما انسانیت کے کیچڑ میں لتھڑی پڑی ہے اب تک .

کہاں ہیں وہ جن سیوک جن کی زبانوں پر آتما اور مہاتما کی رٹ دھوکا دیتی رہی ہے انسانیت کو اور انسانوں کی اچھی عقیدت کو—یعنی مانوتا کو اور مانو کی سندر شردھا کو .

آزادی کے دس ورش کم نہیں ہوتے. دس ورش کے کال میں دس نئی پیڑھیاں جنم لے سکتی ہیں . دس نئے آکاش بلند ہو سکتے ہیں . سمے کی لمبائی یا چوڑائی اور پستی بلندی کی ناپ کیول خوشحالی اور پریشانی کے پیمانے سے ہوتی ہے . مصیبت اور تکلیف کا ایک ورش تو بہت ہوتا ہے . ایک دن بھی ادھک اور بہت ادھک ہوتا ہے—اُس کا ایک ایک منٹ شتابدیوں کی وشالتا اور گہرائی اپنے اندر رکھتا ہے لیکن اِس کو وہی جانتے اور سمجھتے ہیں جن پر مصیبت کے پہاڑ ٹوٹتے ہیں یا دکھ کے دن بیتتے ہیں .

سوال یہ ہے اِن تمام چیزوں کی ذمہ‌داری کس پر ہے ؟

اِن کی ذمہ‌داری جھوٹے بچن دینے والوں پر .

اصلی اپرادھی کون ہیں ؟

جنہوں نے آشا وادیوں کے دلوں کو خاک کر کے اور اُن کی آشاؤں کی دیواریں گرا کر اُن پر اپنے بھون کھڑے کئے .

جنہوں نے غریبوں کا حق مار کر اپنے جیون کو بہار دی اور اپنے جمائی کو موٹرکار دی .

वह शान्ति पूर्ण जीवन पाकर गुलामी और आज़ादी का अन्तर समझ सकती. आज़ादी की क़द्र क़ीमत जान सकती और अपना कर्तव्य पहचान सकती.

पर नया जोड़ा नया जीवन तो दूर की बात, आज़ादी के मतवालों को फ़ाक़ों की नौबत तक पहुँचा दिया गया. कितनी पुरानी ग़ुलामी और कितनी पुश्तों की ग़रीब जनता की फटी पुरानी लंगोटी तक बिक गई.

क्या यही आज़ादी का वरदान इन ग़रीब और बेज़ुबान इन्सानों के लिए है ?

क्या यही है जमहूरियत का न्याय दलित बहुमत के लिये ?

यह ग़रीब दुखी वह लोग हैं जो अपनों के वचनों पर भरोसा किये और "सन्तोष की सिल" छाती पर रखे वर्षों से ख़ामोश बैठे रहे हैं और ताकते रहे हैं आने वाले अच्छे दिनों की ओर.

लेकिन इन क़िसमत के मारों का दुर्भाग्य तो देखो कि इनके अच्छे दिनों को भी रास्ते से चुरा ले गये कोई चोर.

अगर उनसे कुछ कहा जाय तो कहने वाला भी हैरान होकर रह जाय जब "उलटा डाँटे कोतवाल को चोर"

यही वह नामुराद और निराश जनता है कि आज़ादी के नाम पर ख़ुशहाली के सपने देखते देखते जिसकी आँखें पथरा गईं. दिल बैठ गये. आशायें मर गईं, हसरतों का ख़ून हो गया— गोदियाँ ख़ाली हो गईं. झोलियाँ सड़-गल गईं. कितनों ने अपने अज़ीज़ प्यारों तक की हड्डियाँ दफ़न करदीं या ख़ाक बनाकर उड़ा दीं.

आशा ही आशा में बेकार रहते-रहते कितने काम के हाथ शल पड़ गये. कितने जौलानी दिमाग़ ठस पड़ गये. कितनी योग्यतायें फ़ना हो गईं और अन्दर ही अन्दर घुल-घुल कर अपने जौहर खो बैठीं—योग्यतायें मूल्य में वरदान होती हैं क़ुदरत की ओर से किसी क़ौमी राज्य के लिये यह वह भारी नुक़सान है जिसका बदल कठिन—लेकिन इस महान नुक़सान को केवल ज़िन्दा, क़ाबिल, हक़ पसन्द और इन्साफ़ परवर हकूमतें ही समझती हैं—जौहर की क़ीमत केवल जौहरी ही जानता है और उनकी नाक़दरी पर उसी का मातम और सदमा भी बजा !

नाक़दरी, बेग़ौरी और बेपरवाही का कारण सभ्यता और इतिहास के ज्ञानियों की हिम्मत और साहस को भी ठेस पहुँचाती है और उनकी कार्य शक्ति का उस पर प्रभाव पड़ता है. तहज़ीब और कल्चर के अनमोल भन्डार और प्राचीन संस्कृति के अनेक अनेक चित्र और ख़ज़ाने दुनिया के सामने आते-आते रह जाते हैं और दुनिया उनके लाभ से महरूम हो जाती है. अच्छी, तरक़्क़ी-पसन्द और कृपालु हुकूमतों का कर्तव्य होता है कि वे ऐसी योग्यताओं को क़द्र करें और क़ौमी गुण गान को सम्मान दें.

وہ شانتی پورن جیون پاکر غلامی اور آزادی کا انتر سمجھ سکتی ۔ آزادی کی قدر قیمت جان سکتی اور اپنا کرتویہ پہچان سکتی ۔

پر نیا جوڑا اور نیا جیون تو دور کی بات' آزادی کے متوالوں کو فاقوں کی نوبت' تک پہونچا دیا گیا ۔ کتنی پرانی غلامی اور کتنی پشتوں کی غریب جنتا کی پھٹی پرانی لنگوٹی تک بک گئی ۔

کیا یہی ہے آزادی کا وردان ان غریب اور بےزبان انسانوں کے لئے ؟

کیا یہی ہے جمہوریت کا نیائے دلت بہومت کے لئے ؟

یہ غریب دکھی وہ لوگ ہیں جو اپنوں کے بچنوں پر بھروسہ کئے اور "سنتوش کی سل" چھاتی پر رکھے ورشوں سے خاموش بیٹھے رہے ہیں اور تکتے رہے ہیں آنے والے اچھے دنوں کی اور ۔

لیکن اِن قسمت کے ماروں کا دربھاگیہ تو دیکھو کہ اِن کے اچھے دنوں کو بھی راستے سے چرا لے گئے کوئی چور ۔

اگر اُن سے کچھ کہا جائے تو کہنے والا بھی حیران ہو کر رہ جائے جب ' اُلٹا ڈانٹے کوتوال کو چور ۔"

یہی وہ نامراد اور نراش جنتا ہے کہ آزادی کے نام پر خوشحالی کے سپنے دیکھتے دیکھتے جس کی آنکھیں پتھرا گئیں' دل بیٹھ گئے ۔ آشائیں مر گئیں' حسرتوں کا خون ہو گیا—گودیاں خالی ہو گئیں' جھولیاں سڑ گل گئیں ۔ کتنوں نے اپنے عزیز پیاروں تک کی ہڈیاں دفن کر دیں یا خاک بنا کر اُڑا دیں ۔

آشا ہی آشا میں بےکار رہتے رہتے کتنے کام کے ہاتھ شل پڑ گئے ۔ کتنے جولانی دماغ ٹھس پڑ گئے ۔ کتنی یوگتائیں فنا ہو گئیں اور اندر ہی اندر گھل گھل کر اپنے جوہر کھو بیٹھیں— یوگیتائیں مول میں وردان ہوتی ہیں قدرت کی اور سے ۔ کسی قومی راجیہ کے لئے یہ وہ بھاری نقصان ہے جس کا بدل کٹھن—لیکن اِس مہان نقصان کو کیول زندہ' قابل' حق پسند اور انصاف پرور حکومتیں ہی سمجھتی ہیں—جوہر کی قیمت کیول جوہری ہی جانتا ہے ۔ اور اُن کی ناقدری پر اُسی کا ماتم اور صدمہ بھی بجا !

ناقدری' بےغوری اور بے پروائی کے کارن سبھیتا اور اتہاس کے گیانیوں کی ہمت اور ساہس کو بھی ٹھیس پہونچاتی ہے اور اُن کی کاریہ شکتی پر اُس کا پربھاؤ پڑتا ہے ۔ تہذیب کلچر کے انمول بھنڈار اور پراچین سنسکرتی کے انیک انیک چتر اور خزانے دنیا کے سامنے آتے آتے رہ جاتے ہیں اور دنیا اُن کے لابھ سے محروم ہو جاتی ہے ۔ اچھی' ترقی پسند اور کرپالو حکومتوں کا کرتویہ ہوتا ہے کہ وہ ایسی یوگیتاؤں کی قدر کریں اور قومی گن گان کو سمّان دیں ۔

एक आदमी रसूल के पास आया और पूछने लगा:—'क्या मैं अपने ऊँट की टाँगों को बाँध दूँ और अल्लाह पर तवक्कल करूँ (छोड़ दूँ) या मैं ऊँट को खुला रहने दूँ और अल्लाह पर छोड़ दूँ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—'ऊँट की टाँगों को बाँध दो और फिर अल्लाह पर छोड़ दो."

—अनस, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—'सच्ची आगाही यानी चेतावनी ही दीन है."

—अबू हुरैरा, तिरमिज़ी, शमीउलदारी' मुसलिम, अबूदाऊद, निसाई.

मुहम्मद साहब ने मुझसे कहा:—"ऐ अबूज़र ख़बरदार रहो, तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी आने न पावे. मैं जो अपने लिये चाहता हूँ वही तुम्हारे लिये. कभी दो आदमी के बीच में यह फ़ैसला न करो कि कौन अच्छा है और कौन बुरा. और कभी यतीमों के माल पर क़बज़ा न करो."

—अबूज़र, अबूदाऊद, निसाई.

[डाक्टर मिरज़ा अबुलफ़ज़ल की अंग्रेज़ी किताब से तरजुमा. अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.]

वचन और जतन

श्री अबदुल हलीम अन्सारी

आज़ादी हासिल करते वक़्त वचन देने वालों का कर्तव्य था और राज की कुर्सी पर ठाठ से बैठने वालों पर लाज़िम था कि ग़ुलामी से रिहाई और आज़ादी की प्राप्ति पर सदियों की ग़ुलाम जनता को आज़ादी का नया जोड़ा पहिनाया जाता और आज़ादी के दीपक से उनके अंधेरे घरों में उजाला किया जाता. ग़ुलाम और तरसी जनता को सुख शान्ति का पयाम दिया जाता, नया जीवन नया प्राण दिया जाता. बेशक

ایک آدمی رسول کے پاس آیا اور پوچھنے لگا :—"کیا میں اپنے اونٹ کی ٹانگوں کو باندھ دوں اور پھر اللہ پر توکل کروں (چھوڑ دوں) یا میں اونٹ کو کھلا رھنے دوں اور اللہ پر چھوڑ دوں ؟" پیغمبر نے جواب دیا :—"اونٹ کی ٹانگوں کو باندھ دو اور پھر اللہ پر چھوڑ دو ."

—انس' ترمزی .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچی آگاھی یعنی چیتاونی ھی دین ھے ."

—ابو ھریرہ' ترمزی' شمیم الداری' مسلم' ابو داعود' نساعی .

محمد صاحب نے مجھ سے کہا:—"اے ابوذر! خبردار رھو' تمھارے اندر کمزوری آنے نہ پاوے . میں جو اپنے لئے چاھتا ھوں وھی تمھارے لئے چاھتا ھوں . کبھی دو آدمیوں کے بیچ میں یہ فیصلہ نہ کرو کہ کون اچھا ھے اور کون برا . اور کبھی یتیموں کے مال پر قبضہ نہ کرو ."

—ابوذر' ابو داعود' نساعی .

[ڈاکٹر مرزا ابوالفضل کی انگریزی کتاب سے ترجمہ .
—انوادک شری مجیب رضوی .]

وچن اور جتن

شری عبدالحلیم انصاری

آزادی حاصل کرتے وقت بچن دینے والوں کا کرتویہ تھا اور راج کی کرسی پر ٹھاٹھ سے بیٹھنے والوں پر لازم تھا کہ غلامی سے رھائی اور آزادی کی پراپتی پر صدیوں کی غلام جنتا کو آزادی کا نیا جوڑا پہنایا جاتا اور آزادی کے دیپک سے ان کے اندھیرے گھروں میں اجالا کیا جاتا. غلام اور ترسی جنتا کو سکھ شانتی کا پیام دیا جاتا . نیا جیون نیا پران دیا جاتا. بیشک

कर दूसरे कान से निकाल दिया. उस आदमी ने दोबारा अबुबकर का अपमान किया अबुबकर ने फिर भी कोई परवाह न की. उस आदमी ने तीसरी बार अबुबकर का उसी तरह अपमान किया. इस पर अबुबकर ने उसका उसी तरह के शब्दों में जवाब दिया. यह देख मुहम्मद साहब फ़ौरन खड़े हो गये और वहाँ से चलने लगे. इस पर अबुबकर ने पूछा:—"ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप मुझसे नाराज़ हो गये?" पैग़म्बर ने जवाब दिया:— "नहीं! लेकिन जब उस आदमी ने पहले तुम्हारा अपमान किया था तो एक .फ़रिश्ता इसे झुठलाने के लिये आसमान से उतरा था लेकिन जब तुमने उसका उसी तरह जवाब दे दिया तो वह .फ़रिश्ता चला गया और उसकी जगह शैतान तुम्हारे पास आ बैठा. इसलिये जब तक शैतान यहाँ बैठा है मैं नहीं बैठ सकता.

—इब्न मुसैयब, अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़ुरान पढ़ो और लोगों को पढ़ाओ. क्योंकि सचमुच मैं केवल एक आदमी हूँ और एक दिन तुम्हारे बीच से उठा लिया जाऊँगा."

—इब्ने मसऊद, दारयमी, दारक़ुतनी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़ुरान में पाँच तरह की चीज़ें उतरी हैं: एक मारूफ़ जिनका करना जायज़ है, दूसरे मुनकिर यानी वह चीज़ें जिनका करना नाजायज़ है, तीसरे वह चीज़ें जो साफ़ और सरीह हैं, चौथे वह चीज़ें जो मुतशाबेहात यानी तशबीह (अलंकार) के रूप में की गई हैं और पाँचवें वह चीज़ें जो कहानियों की शकल में हैं. इसलिये जिन चीज़ों को जायज़ बताया गया है उन्हें जायज़ मानो, जिन्हें नाजायज़ बताया गया है उनसे बचो जो सीधी साफ़ हिदायतें हैं उनपर अमल करो, जो तशबीह यानी अलंकार के तौर पर कही गई हैं उन्हें वैसा ही मानो, और जो कहानियाँ कही गई हैं उनसे सबक़ सीखो."

—अबू हुरैरा' बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच अल्लाह अपने लोगों के लिये हर सौ साल के शुरू में एक ऐसा आदमी पैदा कर देगा जो लोगों के दीन को ताज़ा कर देगा.

—अबू हुरैरा, अबूदाऊद.

دوسرے کان سے نکال دیا. اُس آدمی نے دوبارہ ابوبکر کا اپمان ... ابو بکر نے پھر بھی کوئی پرواہ نہ کی. اُس آدمی نے تیسری ... ابوبکر کا اُسی طرح اپمان کیا . اِس پر ابوبکر نے اُس کا ... طرح کے شبدوں میں جواب دیا . یہ دیکھ محمد صاحب کھڑے ہوگئے اور وہاں سے چلنے لگے. اِس پر ابوبکر نے پوچھا— ... اے اللہ کے رسول ! کیا آپ مجھ سے ناراض ہو گئے ؟" پیغمبر جواب دیا—"نہیں ! لیکن جب اِس آدمی نے پہلے ... ہارا اپمان کیا تھا تو ایک فرشتہ اِسے جھٹلانے کے لئے آسمان سے ... ا تھا لیکن جب تم نے اُس کا اُسی طرح جواب دے دیا ... وہ فرشتہ چلا گیا اور اُس کی جگہ شیطان تمہارے پاس بیٹھا . اس لئے جب تک شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں ... ہ سکتا ."

—ابن مصیب' ابوداءود .

محمد صاحب نے کہا :—قرآن پڑھو اور لوگوں کو پڑھاؤ . ... یونکہ سچ مچ میں کیول ایک آدمی ہوں اور ایک دن تمہارے ... بیچ سے اُٹھا لیا جاؤنگا ."

—ابن مسعود' دارمی: دارقطنی .

محمد صاحب نے کہا :—"قرآن میں پانچ طرح کی چیزیں اُتری ہیں: ایک معروف یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا جائز ہے' دوسرے منکر یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا ناجائز ہے' تیسرے وہ چیزیں جو صاف اور صریح ہیں' چوتھے وہ چیزیں جو متشابہات یعنی تشبیہ (النکار) کے روپ میں کہی گئی ہیں ... ور پانچویں وہ چیزیں جو کہانیوں کی شکل میں ہیں . اِس لئے جن چیزوں کو جائز بتایا گیا ہے اُنہیں جائز مانو' جنہیں ناجائز بتایا گیا ہے اُن سے بچو' جو سیدھی صاف ہدائتیں ہیں اُن پر عمل کرو' جو تشبیہہ یعنی النکار کے طور پر کہی گئی ہیں اُنہیں ویسا ہی مانو' اور جو کہانیاں کہی گئی ہیں اُن سے سبق سیکھو ."

—ابو ہریرہ' بیہقی .

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ اللہ اپنے لوگوں کے لئے ہر سو سال کے شروع میں ایک ایسا آدمی پیدا کر دیگا جو لوگوں کے دین کو تازہ کر دیگا ."

—ابو ہریرہ' ابو داءود .

भी छोड़ देगा तो वह बरबाद हो जायगा. इसके बाद एक ऐसा जमाना आयेगा जबकि उस जमाने के लोगों में से अगर कोई इसमें से दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा तो निजात पायेगा."

—अबू हुरैरा, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब से पूछा गया कि :—"आदमियों में सबसे बढ़कर आदमी कौन है ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया :—"हर वह आदमी जो दिल का साफ है और जबान का सच्चा." फिर पूछा गया : "जबान का सच्चा कौन है, यह हम समझ सकते हैं लेकिन दिल का साफ कौन है यह हम कैसे जानें ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया :— "दिल का साफ़ वह है जो पाक हो, नेक हो, पाप न करता हो, कोई बुराई न करता हो और किसी के साथ न बुग्ज (द्वेष) रखता हो और न किसी से हसद (ईर्षा) करता हो."

—अबदुल्ला बिन उम्र, इबने माजह, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"आदमी के लिये दूसरे से झगड़ते रहना और झगड़ा बन्द न करना काफी बड़ा गुनाह है."

—इब्न अब्बास, तिरमिजी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अल्लाह की नजरों में सब से ज़्यादा नफरत अंगेज आदमी वह है जो सब से ज़्यादा झगड़ता और तकरार करता है."

—आयशा, बुखारी, मुस्लिम, तिरमिजी, नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"कोई क़ौम जिसे एक बार हिदायत मिल गई थी उस वक्त तक गुमराह नहीं हुई जब तक उस क़ौम के लोगों ने आपस में झगड़ना शुरू नहीं कर दिया."

—अबु अमामा, तिरमिजी. इब्ने माजा, अहमद.

एक दिन मुहम्मद साहब अपने सहाबियों (साथियों) के साथ बैठे थे. उनमें से एक आदमी ने उठकर अबुबकर का कुछ अपमान किया. लेकिन अबुबकर ने एक कान से सुन-

ہی چھوڑ دے گا تو وہ برباد ہو جائیگا ۔ اِس کے بعد ایک ایسا زمانہ آئیگا جب کہ اُس زمانے کے لوگوں میں سے اگر کوئی اِس میں سے دسویں حصے پر بھی عمل کریگا تو وہ نجات پائیگا ۔"

—ابو ہریرہ، ترمزی ۔

محمد صاحب سے پوچھا گیا کہ :—"آدمیوں میں سب سے بڑھکر آدمی کون ہے ؟" محمد صاحب نے جواب دیا:—"ہر وہ آدمی جو دل کا صاف ہے اور زبان کا سچا ۔" پھر پوچھا گیا :—زبان کا سچا کون ہے یہ ہم سمجھ سکتے ہیں، لیکن دل کا صاف کون ہے یہ ہم کیسے جانیں ؟" پیغمبر نے جواب دیا :— "دل کا صاف وہ ہے جو پاک ہو، نیک ہو، پاپ نہ کرتا ہو، کوئی برائی نہ کرتا ہو اور کسی کے ساتھ نہ بغض (دویش) رکھتا ہو اور نہ کسی سے حسد (ایرشا) کرتا ہو ۔"

—عبداللہ بن عمرو، ابن ماجہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا :—"آدمی کے لئے دوسرے سے جھگڑتے رہنا اور جھگڑا بند نہ کرنا کافی بڑا گناہ ہے ۔"

—ابن عباس، ترمزی ۔

محمد صاحب نے کہا:—"اللہ کی نظروں میں سب سے زیادہ نفرت انگیز آدمی وہ ہے جو سب سے زیادہ جھگڑتا اور تکرار کرتا ہے ۔"

—عائشہ، بخاری، مسلم، ترمزی، نسائی ۔

محمد صاحب نے کہا :—"کوئی قوم جسے ایک بار ہدایت مل گئی تھی اُس وقت تک گمراہ نہیں ہوئی جب تک اُس قوم کے لوگوں نے آپس میں جھگڑنا شروع نہیں کر دیا ۔"

—ابو امامہ، ترمزی، ابن ماجہ: احمد ۔

ایک دن محمد صاحب اپنے صحابیوں (ساتھیوں) کے ساتھ بیٹھے ہوئے تھے ۔ اُن میں سے ایک آدمی نے اُٹھ کر ابوبکر کا کچھ اپمان کیا ۔ لیکن ابوبکر نے ایک کان سے سن

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

डाक्टर मिरज़ा अबुल फज़्ल

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अपनी नसल या खानदान के घमन्ड में कोई किसी को बुरा न कहे. तुम सब आदम की औलाद हो और इस तरह एक दूसरे के बराबर हो जिस तरह एक माप दूसरे माप के बराबर होता है और तुम में से कोई भी माप में पूरा नहीं है. कोई किसी बात में दूसरे से बड़ा नहीं है. सिवाय उनके कि जो नेकी और धार्मिकता में बढ़े हुऐ हों. आदमी के लिये घमन्डी होना, बेशर्म होना या कंजूस होना बहुत बुरी बात है."

—ओक़बा बिन आमिर, अहमद, बेहक़ी.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"उन सब लोगों को जो अपनी नसल का घमन्ड करते हैं, जो कहते हैं हमारे बाप दादा यह थे और वह थे, उन्हें चाहिये इस तरह का घमन्ड करना बन्द कर दें. इस तरह का घमंड उन्हें दोज़ख की आग के कोयले बना देगा. इस तरह का घमन्ड करने से अल्लाह की नज़रों में वह उस कीड़े से भी ज़यादा ज़लील होंगे जो मैले पर अपनी नाक रगड़ता है. सचमुच में इस तरह का घमन्ड जहालत के दिनों की चीज़ थी. अल्लाह ने अब उसे तुम्हारे लिए नाजायज़ कर दिया है. आदमी या तो नेक और ईमान वाला होता है या बद और गुनहगार —सब आदमी आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बना हुआ था."

—अबू हुरैरा, तिरमिज़ी, अबू दाऊद.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई अपने भाई का ख़त बिना उसकी इजाज़त के पढ़ता है वह दोज़ख की आग में पड़ता है (और उसी में फेंका जायगा)."

—इब्ने अब्बास, अबू दाऊद.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच तुम आजकल ऐसे ज़माने में रह रहे हो जिसमें जो कुछ करने का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है उसमें से अगर कोई दसवाँ हिस्सा

محمد صاحب کے کچھ اُپدیش

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا:—"اپنی نسل یا خاندان کے گھمنڈ میں کوئی کسی کو برا نہ کہے۔ تم سب آدم کی اولاد ہو اور ایسی طرح ایک دوسرے کے برابر ہو جس طرح ایک ماپ دوسرے ماپ کے برابر ہوتا ہے اور تم میں سے کوئی بھی ماپ میں پورا نہیں ہے۔ کوئی کسی بات میں دوسرے سے بڑا نہیں ہے۔ سوائے اُن کے کہ جو نیکی اور دھارمکتا میں بڑھے ہوئے ہیں۔ آدمی کے لئے گھمنڈی ہونا، بےشرم ہونا یا کنجوس ہونا بہت بری بات ہے۔"

—عقبہ بن عامر، احمد، بیہقی۔

———

محمد صاحب نے کہا:—"اُن سب لوگوں کو جو اپنی نسل کا گھمنڈ کرتے ہیں، جو کہتے ہیں کہ ہمارے باپ دادا یہ تھے اور وہ تھے، اُنہیں چاہئے کہ اِس طرح کا گھمنڈ کرنا بند کر دیں۔ اِس طرح کا گھمنڈ اُنہیں دوزخ کی آگ کے کوئلے بنا دیگا۔ اِس طرح کا گھمنڈ کرنے سے اللہ کی نظروں میں وہ اُس کیڑے سے بھی زیادہ ذلیل ہونگے جو میلے پر اپنی ناک رگڑتا ہے۔ سچ مچ اِس طرح کا گھمنڈ جہالت کے دنوں کی چیز تھی۔ اللہ نے اب اُسے تمہارے لئے ناجائز کر دیا ہے۔ آدمی یا تو نیک اور ایمان والا ہوتا ہے اور یا بد اور گنہگار۔ سب آدمی آدم کی اولاد ہیں اور آدم مٹی سے بنا ہوا تھا۔"

—ابو ہریرہ، ترمذی، ابوداؤد۔

———

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی اپنے بھائی کا خط بنا اُس کی اجازت کے پڑھتا ہے وہ دوزخ کی آگ میں پڑتا ہے (اور اُسی میں پھینکا جائیگا)۔"

—ابن عباس، ابو داؤد۔

———

محمد صاحب نے کہا:—"سچ مچ آجکل تم ایک ایسے زمانے میں رہ رہے ہو جس میں جو کچھ کرنے کو تمہیں حکم دیا جا رہا ہے۔ اُس میں سے اگر کوئی دسواں حصہ

यह तो हुई बड़ी-बड़ी बातें. रोजमर्रा के जीवन में भी इस तरह की उम्मती भावना गोधूली के सितारों की तरह झिल-मिल करती रहती है. भारत में सदियों से सूफी पीरों के बेशुमार हिन्दू मुरीद रहे और अब भी हैं. मुगलिया बादशाहों ने कई वेदान्ती गुरू बनाये हैं और दारा शिकोह और अकबर बादशाह ने जो वेदान्त-इस्लाम का मौलिक और अत्यन्त महत्वपूर्ण समन्वय किया है, उसके असर शायद हम कुछ सदियों के बाद समझ सकेंगे जब उन जमानों और उन पुरुष श्रेष्ठों का खरा इतिहास खुलेगा और जनता के सामने बेधड़क पेश किया जायगा.

कलाओं के दायरे में वेदान्त-इस्लाम के तत्व एकमेक में घुल-मिलकर कुछ अजब खूबसूरती पैदा कर गये ! इनका असर हमारी जिन्दगी में ऐसा व्यापक हो गया है कि हिन्दू सङ्गीतकार सहज ही बोल बैठता है, 'जी, मैं तो हिन्दुस्तानी तरीके से गाता हूँ.' और उसे दिन भर भी भान नहीं होता कि वह किस अद्भुत संगम और समन्वय का प्रतीक बना हुआ है.

अफसोस है कि आज के स्थापत्य में इस असल और सुन्दर संगम-समन्वय की कोई झलक तक नजर नहीं आती. हमने जो सदियों के पुरुषार्थ से कमाया है, सो हमें इस तरह फेंक न देना चाहिये. इससे हमारा ही नहीं, तमाम दुनिया का भारी नुक़सान होगा. हम भारतियों को बड़ा नाज होना चाहिये कि सारी दुनिया के देशों में एक भारत ही है जो सच्चे मानों में संगम देश रहा है; और आज के लड़ते-झगड़ते, मारते-काटते, जलाते-डुबाते संसार में संगम-राज्य बनने का अधिकार रखता है.

'उम्मत' शब्द अरबिस्तान से आया है मगर 'उम्मत' भारत में ही उगा और पनपा है. ये ही हमारा सच्चा, सनातन और अमर विरसा (विरासत) है, हम भारतीयों को इसके लायक़ बनने की भरसक कोशिश करते रहना है, और इसे सुरक्षित रखकर इसके बढ़ाने और चढ़ाने में अपनी जान और जीवन लगा देना है.

अल्लाह करे ऐसा ही हो !
अल्लाह हमें सद्‌बुद्धि बख्शे !
अल्लाह हमें मदद करे !
आमीन !

[मङ्गल प्रभात से]

یہ تو ہوئی بڑی بڑی باتیں ۔ روز مرہ کے جیون میں بھی اس طرح کی اُمتی بھاونا گودھولی کے ستاروں کی طرح جھل مل کرتی رہتی ہے ۔ بھارت میں صدیوں سے صوفی پیروں کے بے شمار ہندو مرید رہے اور اب بھی ہیں ۔ مغلیہ بادشاہوں نے کئی ویدانتی گرو بنائے ہیں اور دارا شکوہ اور اکبر بادشاہ نے جو ویدانت اسلام کا مولک اور اتینت مہتو پورن سمنوئے کیا ہے، اسکے اثر شاید ہم کچھ صدیوں کے بعد سمجھ سکیں گے۔ جب ان زمانوں اور ان پروش شریشٹھوں کا کھرا اِتہاس کھلے گا اور جنتا کے سامنے بے دھڑک پیش کیا جائیگا ۔

کلاؤں کے دائرے میں ویدانت اِسلام کے تتو ایکم ایک میں گھل ملکر کچھ عجیب خوبصورتی پیدا کر گئے ! اِنکا اثر ہماری زندگی میں ایسا ویاپک ہو گیا ہے کہ ہندو سنگیت کار سہج ہی بول بیٹھتا ہے، 'جی' میں تو ہندستانی طریقے سے گاتا ہوں' اور اُسے دن بھر بھی بھان نہیں ہوتا کہ وہ کس ادبھت سنگم اور سمنوے کا پرتیک بنا ہوا ہے ۔

افسوس ہے کہ آج کے استھاپتیہ میں اِس اصل اور سندر سنگم سمنوے کی کوئی جھلک نظر نہیں آتی ۔ ہم نے جو صدیوں کے پروشارتھ سے کمایا ہے، سو ہمیں اِس طرح پھینک نہ دینا چاہیئے ۔ اِس سے ہمارا ہی نہیں تمام دنیا کا بھاری نقصان ہوگا ۔ ہم بھارتیوں کو بڑا ناز ہونا چاہئے کہ ساری دنیا کے دیشوں میں ایک بھارت ہی ہے جو سچے معنوں میں سنگم دیش رہا ہے؛ اور آج کے لڑتے جھگڑتے، مارتے کاٹتے، جلاتے ڈباتے سنسار میں سنگم راجیہ بننے کا ادھکار رکھتا ہے ۔

'امت' شبد عربستان سے آیا ہے مگر 'امت' بھارت میں ہی اُگا اور پنپا ہے ۔ یہ ہی ہمارا سچا، سناتن اور امر ورثہ (وراثت) ہے، ہم بھارتیوں کو اِس کے لائق بننے کی بھرسک کوشش کرتے رہنا ہے، اور اِسے سورکشت رکھکر اِسکے بڑھانے اور چڑھانے میں اپنی جان اور جیون لگا دینا ہے ۔

اللہ کرے ایسا ہی ہو !
اللہ ہمیں سدبدھی بخشے !
اللہ ہمیں مدد کرے !
آمین !

[منگل پربھات سے]

दी, और जहाँ तक मुझे याद है कहा, 'अब्बास अली, तुम अन्दाज़ा लगा लो कि मस्जिद बनाने में कितना रुपया लगेगा. तुम जितना जमा कर सको, कर लो. अधूरा मैं पूरा कर दूँगा.' हमारे बाबाजान बरसों बड़ौदा और बम्बई में ग़रीब मुसलमानों, ताँगेवालों, विक्टोरिया वालों, कारीगरों व हर तरह के पेशेकारों से पाई-पैसा जमा करते रहे. न गरमी देखी न सर्दी, न दिन देखा न रात. बम्बई की मूसलाधार बरसात में, टखनों तक के कीचड़ में फचाफच घूमते फिरे और आख़िर एक दिन उनका काम ख़तम हुआ. महाराज ने अपना वादा पूरा किया. मुझे अच्छी तरह याद है (मैं कितनी छोटी थी) कि एक सुबह हमारे बाग़ के फाटक पर महल का सवार आ खड़ा हुआ. मैंने दौड़कर फाटक खोला —महाराज की तरफ़ से लिफ़ाफ़ा आया था. मैं चीख़ती-चिल्लाती बाबाजान अम्माजान की तरफ़ दौड़ी : 'महाराज का चेक आया है, महाराज का चेक आया है.'

मस्जिद बनी. बड़ौदे की पुरानी मस्जिद में एक छः फ़ुट लंबा क़ुरानेपाक था, जो बरसों कहीं महफ़ूज़ बन्द पड़ा था. बड़े जुलूस, बड़ी धूमधाम और शान के साथ वह क़ुरानेपाक मस्जिद में लाया गया और एक बग़दादी पीर के हाथों नए घर में उसकी स्थापना हुई. वह जुलूस, वह स्थापना, वह मस्जिद में पहली नमाज़, वह पीर साहब की इमामत, वअज़ (प्रवचन) मैं कभी नहीं भूलूँगी. लेकिन सबसे ज़्यादा चमकदार तस्वीर मेरी आँखों और दिल में यह समाई है कि ज़बरदस्त शानदार जुलूस के सामने महाराज के मुख्य हाथी पर ज़र्रीन हौदे पर ज़र्रीन कपड़े से ढका हुआ वह क़ुरानेपाक मस्जिद की ओर जा रहा है और उसके पीछे हमारे महाराज, पीर साहब के साथ अपने सुनहरी अंबारी में अपने शानदार हाथी की पीठ पर जा रहे हैं.

बड़ौदे में एक बड़ा अजीब वातावरण था. पुराने ज़माने से वहाँ के एक बड़े नवाबी ख़ान्दान की राज दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी. क़िस्सा मैंने यों सुना था कि पुराने ज़माने में इस नवाबी ख़ान्दान के पूर्वजों ने उस ज़माने के गायकवाड़ की दुश्मनों के सामने मदद की थी, जिससे राजा अपनी गद्दी पर सलामत रहे. चुनांचे, इस नवाबी ख़ान्दान को बहुत कुछ पुरस्कार के साथ यह अधिकार हासिल हुआ कि दरबारों में वह गायकवाड़ के साथ सिंहासन पर बिराजें, और उनके सदर दरवाज़े के सामने हाथी डोलते रहें. एक गायकवाड़ के लिए तो यह भी सुना था कि वे मस्जिद में जुमा की नमाज़ में कई बार शरीक रहते थे. मैंने उमर भर इस उम्मती वातावरण का मज़ा लूटा है. हिन्दू, इस्लामी, ईसाई, ज़रथुस्त्री—सभी त्योहार मिल-जुलकर मनाये जाते थे. भारत संगम देश है, तो बड़ौदा ज़रूर संगम राज्य था—और दुआ है कि अब भी वही हाल होगा और सदा रहेगा.

ھیں' اور جہاں تک مجھے یاد ھے کہا 'عباس علی' تم اندازہ لگالو کہ مسجد بنانے میں کتنا روپیہ لگے گا. تم جتنا جمع کر سکو' کر لو . ادھورا میں پورا کردونگا ." ھمارے بابا جان برسوں بڑودہ اور بمبئی میں غریب مسلمانوں' تانگے والوں' وکٹوریہ والوں' کاریگروں و ھر طرح کے پیشہ‌کاروں سے پائی پیسہ جمع کرتے رھے . نہ گرمی دیکھی نہ سردی' نہ دن دیکھا نہ رات . بمبئی کی موسلادھار برسات میں' ٹخنوں تک کے کیچڑ میں پھچاپھچ گھومتے پھرے اور آخر ایک دن اُن کا کام ختم ھوا . مہاراج نے اپنا وعدہ پورا کیا . مجھے اچھی طرح یاد ھے (میں کتنی چھوٹی تھی) کہ ایک صبح ھمارے باغ کے پھاٹک پر محل کا سوار آ کھڑا ھوا . میں نے دوڑ کر پھاٹک کھولا—مہاراج کی طرف سے لفافہ آیا تھا . میں چیختی چلاتی بابا جان اما جان کی طرف دوڑی : "مہاراج کا چیک آیا ھے' مہاراج کا چیک آیا ھے ."

مسجد بنی . بڑودے کی پرانی مسجد میں ایک چھ فٹ لمبا قرآن پاک تھا' جو برسوں کہیں محفوظ بند پڑا تھا . بڑے جلوس' بڑی دھوم دھام اور شان کے ساتھ وہ قرآن پاک مسجد میں لایا گیا اور ایک بغدادی پیر کے ھاتھوں نئے گھر میں اسکی استھاپنا ھوئی . وہ جلوس' وہ استھاپنا' وہ مسجد میں پہلی نماز' وہ پیر صاحب کی امامت' وعظ (پروچن) میں کبھی نہیں بھولوں گی . لیکن سب سے زیادہ چمکدار تصویر میری آنکھوں اور دل میں یہ سمائی ھے کہ زبردست شاندار جلوس کے سامنے مہاراج کے مکھیہ ھاتھی پر زریں ھودے پر' زریں کپڑے سے ڈھکا ھوا وہ قرآن پاک مسجد کی اور جا رھا ھے اور اسکے پیچھے ھمارے مہاراج' پیر صاحب کے ساتھ اپنی سنہری انباری میں اپنے شاندار ھاتھی کی پیٹھ پر جا رھے ھیں .

بڑودے میں ایک بڑا عجیب واتاورن تھا . پرانے زمانے سے وھاں کے ایک بڑے نوابی خاندان کی راج دربار میں بڑی پرتشٹھا تھی . قصہ میں نے یوں سنا تھا کہ پرانے زمانے میں اس نوابی خاندان کے پوروجوں نے اس زمانے کے گایکواڑ کو دشمنوں کے سامنے مدد کی تھی' جس سے راجہ اپنی گدی پر سلامت رھے . چنانچہ' اس نوابی خاندان کو بہت کچھ پرسکار کے ساتھ یہ ادھیکار حاصل ھوا کہ درباروں میں وہ گایکواڑ کے ساتھ سنگھاسن پر وراجیں' اور انکے صدر دروازہ کے سامنے ھاتھی ڈولتے رھیں . ایک گایکواڑ کے لئے تو یہ بھی سنا تھا کہ وے مسجد میں جمعہ کی نماز میں کئی بار شریک رھتے تھے . میں نے عمر بھر اس امتی واتاورن کا مزہ لوٹا ھے . ھندو' اسلامی' عیسائی' زرتھشتوری—سبھی تیوھار مل جلکر منائے جاتے تھے . بھارت سنگم دیش ھے' تو بڑودہ ضرور سنگم راج تھا—اور دعا ھے کہ اب بھی وھی حال ھوگا اور سدا رھیگا .

उम्मत

कुमारी रैहाना तैयबजी

ये लफ़्ज़, 'उम्मत' कितना प्यारा लफ़्ज़ है ! अरबी लफ़्ज़ 'उम्म' का मतलब है 'माँ' ; उम्मत यानी 'एक माँ-बाप के बच्चे'। इसलिये अल्लाह पाक को विश्व का परम पिता मानकर, इस्लामी जमात को उम्मत कहा गया है. लेकिन कोई ज़रूरी नहीं कि उम्मत महज़ इस्लामियों की हो. जहाँ आपसी प्रेम, हमदर्दी, सहकार और नेक ख़्वाहिश होती है, वहाँ 'उम्मत' होती ही है. देखा गया है कि निजी साधना में भी जैसे-जैसे दिल की सफ़ाई और चरित्र-सुधार होने लगता है, वैसे-ही-वैसे प्रेम, ख़ुशी और सभ्यता भी बढ़ने लगती है—बल्कि सफल साधना की पहली निशानी प्रेम और प्रसन्नता की बढ़ती ही होती है. जिस तरह से हम किसी इनसान का बर्ताव देखकर उसकी साधना का ख़ूबी फ़ैसला सहज ही करते हैं, उसी तरह किसी सभ्यता की का फ़ैसला भी उसके नैतिक और आध्यात्मिक प्रभाव से होता है. जब हम दुनिया भर से शिकायतें सुनते हैं कि मग़रिबी संस्कृति से स्वार्थ, हरफ़ाई (स्पर्धा) और दुश्मनी, चालबाज़ी बढ़ती है, तो हमारे दिल में इस तहज़ीब के लिए एक नफ़रत पैदा होना क़ुदरती ही है. ऐसी संस्कृति बुराई फैलाने वाली होती है. इसका सबूत आज सारी दुनिया के पीड़ित देश और दुखी प्रजायें दे रही हैं.

ऐसे आसुरी वातावरण में उम्मत भावना के सितारे कुछ अजब नूर से चमक उठते हैं. तीन-चार रोज़ से बरेली के मंदिर की दिल फड़का देने वाली बात जब से सुनी है मेरा दिल बाग़-बाग़ बना हुआ है. एक मन्दिर, और एक मुस्लिम के हाथ से उसकी नींव डाली जाय, और सुना कि मूर्तिसाज़ भी मुस्लिम ही है जिसने तीन सौ रुपये मन्दिर को भेंट दिये हैं. रहमान साहब ने जो आर्थिक मदद दी, सो बेशक क़ाबिले तारीफ़ है; मगर मन्दिरवालों और रहमान साहब ने जो दिली उम्मत की शानदार इबादतगाह खड़ी की है, उसमें हर भारतीय का ही क्या, हर इन्सान का दिल सिज्दे में झुक सकता है. जहाँ प्रेम है वहाँ ख़ुदा है, जहाँ एका है वहाँ ख़ुदा है !

बरेली का मन्दिर मुझे बड़ौदे की मस्जिद की याद दिलाता है. मैं बिलकुल बच्चा थी तब बाबाजान से शिकायतें सुनती रहती थी कि बड़ोदे में कोई जामा मस्जिद नहीं. एक टूटी मस्जिद थी सही, पर वह किसी के काम न आती थी. बाबाजान ने हमारे महाराज से ज़िक्र किया. महाराज ने बड़ी सहानुभूति से बाबाजान की बात सुनी, अपनी सहमति

اُمت

کماری ریحانہ طیب جی

یہ لفظ' "اُمت" کتنا پیارا لفظ ہے ! عربی لفظ 'ام' کا مطلب ہے 'ماں' ؛ اُمت یعنی 'ایک ماں باپ کے بچے' ۔ اسلیئے اللہ پاک کو وشو کا پرم پتا مان کر' اسلامی جماعت کو اُمت کہا گیا ہے ۔ لیکن کوئی ضروری نہیں کہ اُمت محض اسلامیوں کی ہو ۔ جہاں آپسی پریم' ہمدردی سہکار اور نیک خواہش ہوتی ہے' وہاں 'اُمت' ہوتی ہی ہے ۔ دیکھا گیا ہے کہ نجی سادھنا میں بھی جیسے جیسے دل کی صفائی اور چرتر سدھار ہونے لگتا ہے' ویسے ہی ویسے پریم' خوشی اور سبھیتا بھی بڑھنے لگتی ہے—بلکہ سپھل سادھنا کی پہلی نشانی پریم اور پرسنتا کی بڑھتی ہی ہوتی ہے ۔ جس طرح سے ہم کسی انسان کا برتاؤ دیکھکر اسکی سادھنا کا فیصلہ سہج ہی کرتے ہیں' اسی طرح کسی سبھیتا کی خوبی کا فیصلہ بھی اسکے نیتک اور ادھیاتمک پربھاؤ سے ہوتا ہے۔ جب ہم دنیا بھر سے شکایتیں سنتے ہیں کہ مغربی سنسکرتی سے سوارتھ' حریفائی (اسپردھا) اور دشمنی' چالبازی بڑھتی ہے تو ہمارے دل میں اس تہذیب کے لئے ایک نفرت پیدا ہونا قدرتی ہی ہے ۔ ایسی سنسکرتی برائی پھیلانے والی ہوتی ہے ۔ اسکا ثبوت آج ساری دنیا کے پیڑت دیش اور دکھی پرجائیں دے رہی ہیں ۔

ایسے آسوری واتاورن میں اُمت بھاونا کے ستارے کچھ عجب نور سے چمک اٹھتے ہیں ۔ تین چار روز سے بریلی کے مندر کی دل پھڑکا دینے والی بات جب سے سنی ہے میرا دل باغ باغ بنا ہوا ہے ۔ ایک مندر' اور ایک مسلم کے ہاتھ سے اسکی نیو ڈالی جائے' اور سنا کہ مورتی ساز بھی مسلم ہی ہے جسنے تین سو روپئے مندر کو بھینٹ دیئے ہیں ۔ رحمان صاحب نے جو آرتھک مدد دی' سو بیشک قابل تعریف ہے؛ مگر مندر والوں اور رحمان صاحب نے جو دلی اُمت کی شاندار عبادت گاہ کھڑی کی ہے' اس میں ہر بھارتیہ کا ہی کیا' ہر انسان کا دل سجدے میں جھک سکتا ہے۔ جہاں پریم ہے وہاں خدا ہے' جہاں ایکا ہے وہاں خدا ہے !

بریلی کا مندر مجھے بڑودے کی مسجد کی یاد دلاتا ہے ۔ میں بالکل بچہ تھی تب بابا جان سے شکایتیں سنتی رہتی تھی کہ بڑودے میں کوئی جامع مسجد نہیں۔ ایک ٹوٹی مسجد تھی سہی' پر وہ کسی کے کام نہ آتی تھی۔ بابا جان نے ہمارے مہاراج سے ذکر کیا ۔ مہاراج نے بڑی سہانوبھوتی سے بابا جان کی بات سنی' اپنی سہمتی

हुस्न में गेती१९ ढल के रहेगी
फूल दुलहन के खिल के रहेंगे
फ़र्क़े मरातिब२० उठ जायेगा
जलवे वह महफ़िल के रहेंगे

फ़स्ले ख़िज़ां जाती है 'नज़ीर' ! अब
चाके गरीबाँ२१ सिल के रहेंगे !

१. उक़दे = समस्याएँ, २. हवादिस = दुर्घटनायें, ३. मंज़िल के होकर रहना = मंज़िल पर पहुँच जाना, ४. अज़मते आदम = आदमी का महत्व, ५. मसलि के आदम = आदमी के जीवन का लक्ष, ६. मुसतकबिल = भविष्य, ७. ग़ुँचे = कलियाँ, ८. अज़म = संकल्प, ९. कोह-शिकन = पहाड़ तोड़ने वाला, १०. क़स्र = महल, ११. जादह = काम का ढङ्ग, १२. ख़िज़ाँ = पतझड़, १३. जोया = खोजी, १४. साहिल = किनारा, १५. ख़न्दाँ = हंसते हुए, १६. मरहले = कठनाइयाँ, १७. ऐवाँ = महल १८. चारा = इलाज, १९. गेती = धरती, २०. फ़र्क़े मरातिब = रुतबे का फ़र्क यानी ऊँच-नीच, २१. चाके गरीबाँ = फटा हुआ गरीबाँ.

حسن میں گیتی 19 ڈھل کے رہے گی
پھول دلہن کے کھل کے رہیں گے
فرق مراتب 20 اٹھ جائے گا
جلوے وہ محفل کے رہیں گے

فصل خزاں جاتی ہے 'نظیر' ! اب
چاک گریباں 21 سل کے رہیں گے !

1. عقدے = سمسیائیں، 2. حوادث = درگھٹنائیں، 3. منزل کے ہو کر رہنا = منزل پر پہنچ جانا، 4. عظمت آدم = آدمی کا مہتو، 5. مسلک آدم = آدمی کے جیون کا لکش، 6. مستقبل = بھوشیہ، 7. غنچے = کلیاں، 8. عزم = سنکلپ، 9. کوہ شکن = پہاڑ توڑنے والا، 10. قصر = محل، 11. جادہ = کام کا ڈھنگ، 12. خزاں = پت جھڑ، 13. جویا = کھوجی، 14. ساحل = کنارہ، 15. خنداں = ہنستے ہوئے، 16. مرحلے = کٹھنائیاں، 17. ایوان = محل، 18. چارہ = علاج، 19. گیتی = دھرتی، 20. فرق مراتب = رتبہ کا فرق یعنی اونچ نیچ، 21. چاک گریباں = پھٹا ہوا گریباں ۔

ग़ज़ल

श्री सआदत नज़ीर एम० ए०

कब तक दुश्मन दिल के रहेंगे ?
हमसे वह आख़िर मिलके रहेंगे

कब उक़दे१ मुश्किल के रहेंगे ?
आख़िर दिल दिल मिल के रहेंगे

लाख हवादिस२ राह में आयें
हम हो के मंज़िल३ के रहेंगे

जितने भी तुम तफ़रक़े डालो !
साथी साथी मिल के रहेंगे

अज़मत४ आदम ! मसलिके ५आदम !!
तौर यह मुसतक़बिल६ के रहेंगे

गरम हवा के झोंकों में भी
गुंचे७ दिल के खिल के रहेंगे

अज़्म८ हमारा कोहशिकन९ है
क़स्र१० तुम्हारे हिल के रहेंगे

एक हो जादा११, एक हो मंज़िल
दिल भी फिर तो मिल के रहेंगे

लाख ख़िज़ाँ१२ आँखें दिखलाए
ज़िद्दी गुंचे खिल के रहेंगे

ज़ुल्म किये जा ! जौर किये जा !
हौसले ऊँचे दिल के रहेंगे

लाख घिरें तूफ़ाने बला में
हम जोया१३ साहिल के रहेंगे

तय करेंगे ख़न्दाँ-ख़न्दाँ१५
मरहले१६ जो मुश्किल के रहेंगे

ज़लज़ला वह है आनेवाला
आपके ऐवाँ१७ हिल के रहेंगे

ज़ोर से १८ ग़म का न होगा
ज़ख़्म हरे सब दिल के रहेंगे

غزل

شری سعادت نظیر ایم اے

کب تک دشمن دل کے رہیں گے ؟
ہم سے وہ آخر مل کے رہیں گے

کب عقدے 1 مشکل کے رہیں گے ؟
آخر دل دل مل کے رہیں گے

لاکھ حوادث 2 راہ میں آئیں
ہم ہو کے منزل 3 کے رہیں گے

جتنے بھی تم تفرقے ڈالو !
ساتھی ساتھی مل کے رہیں گے

عظمت 4 آدم، مسلک 5 آدم !!
طور یہ مستقبل 6 کے رہیں گے

گرم ہوا کے جھونکوں میں بھی
غنچے 7 دل کے کھل کے رہیں گے

عزم 8 ہمارا کوہ شکن 9 ہے
قصر 10 تمہارے ہل کے رہیں گے

ایک ہو جادہ، 11 ایک ہو منزل
دل بھی پھر تو مل کے رہیں گے

لاکھ خزاں 12 آنکھیں دکھلائے
ضدی غنچے کھل کے رہیں گے

ظلم کئے جا ! جور کئے جا !
حوصلے اونچے دل کے رہیں گے

لاکھ گھریں طوفان بلا میں
ہم جویا 13 ساحل کے رہیں گے

طے کریں گے ، خنداں خنداں 15
مرحلے 16 جو مشکل کے رہیں گے

زلزلہ وہ ہے آنے والا
آپ کے ایواں 17 ہل کے رہیں گے

زور سے چارۂ 18 غم کا نہ ہوگا
زخم ہرے سب دل کے رہیں گے

गाँधी जी ने सुन लिया. उस समय कोई जवाब न दिया. वह अपने मित्रों के साथ किसी तरह की जबरदस्ती करना ठीक न समझते थे. अगले दिन सुबह को उन्होंने कुछ आश्रम वासियों से कहा—"अहमदाबाद के भंगी बाड़े में जाओ, वहाँ कोई मकान या जगह देखो. अपना आश्रम हम वहीं उठाकर ले आयेंगे और वहाँ के रहने वाले जो खाना हमें अपने हाथों से लाकर देंगे वही हम खा लेंगे या मजदूरी करके पेट भर लेंगे. जो मिलने आएगा वहीं आकर हमसे मिल लेगा." जगह ढूँढ़ी जाने लगी. उन धनवान मित्रों के कानों तक यह खबर पहुँची. हो सकता है उन्होंने आपस में कुछ सलाह की हो. आकर गाँधी जी से मिले. उन्होंने अपने दो दिन पहले के सुझाव की माफ़ी माँगी. आश्रम, आश्रम-वासियों, आश्रम प्रेमियों और आश्रम में आने-जाने वालों के लिये छूत छात हमेशा के लिये मिट गई. यह था गाँधी जी और उनके आश्रम का दर्जे बदर्जे लेकिन काफ़ी तेजी के साथ विकास.

———

گاندھی جی نے سن لیا . اس سمے کوئی جواب نہ دیا . وہ اپنے مترون کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی کرنا ٹھیک نہ سمجھتے تھے . اگلے دن صبح کو انھوں نے کچھ آشرم واسیوں سے کہا—"احمداباد کے بھنگی باڑے میں جاؤ، وہاں کوئی مکان یا جگہہ دیکھو . اپنا آشرم ہم وہیں اٹھا کر لے جائینگے اور وہاں کے رہنے والے جو کھانا اپنے ہاتھوں سے لا کر دینگے وہی ہم کھا لینگے یا مزدوری کر کے پیٹ بھر لینگے . جو ملنے آئیگا وہیں آکر ہم سے مل لیگا ." جگہہ ڈھونڈھی جانے لگی . اُن دھنوان مترون کے کانوں تک یہ خبر پہونچی . ہو سکتا ہے انھوں نے آپس میں کچھ صلاح کی ہو . وہ آ کر گاندھی جی سے ملے . انھوں نے اپنے دو دن پہلے کے سجھاؤ کی معافی مانگی . آشرم، آشرم واسیوں، آشرم پریمیوں اور آشرم میں آنے جانے والوں کے لئے چھوت چھات ہمیشہ کے لئے مٹ گئی . یہ تھا گاندھی جی اور ان کے آشرم کا درجے بدرجے لیکن کافی تیزی کے ساتھ وکاس .

———

यह शब्द मैं याद से ही लिख रहा हूँ पर शायद ही एक दो शब्द का फ़र्क़ हो. उससे असल मतलब में फ़र्क़ बिलकुल नहीं पड़ सकता.

मैं इसे पढ़कर कुछ हैरान हुआ. गाँधीजी को पढ़कर सुनाया और पूछा यह क्या? उन्होंने तुरन्त जवाब दिया—"यह तुम्हारे लिये नहीं है. इसे रख दो. तुम आश्रमवासी बनो तो इसे न मानना. मैं कहाँ मानता हूँ? तुम इसे रहने दो. तुम अपने काम की बात करो."

उनके यह फ़िक़रे भी मैं याद से लिख रहा हूँ. मैं समझ गया कि गाँधीजी और उनका आश्रम दोनों अभी विकास की हालत में थे, अभी खिल रहे थे और रूप ले रहे थे.

रौलट एक्ट के खिलाफ़ सत्याग्रह शुरु हो जाने के बाद से गाँधी जी सारे देश के सामने देश के सब से बड़े और अनन्य नेता के रूप में आगए. मैंने और मेरे जैसे विचारों के बहुत से पुराने काम करने वालों ने अब देख लिया कि अपने नये तरीक़े से गाँधी जी ने जो जान, जो बेदारी, जो जोश और जो त्याग की भावना देश भर में पैदा कर दी थी वह हम अपने पुराने तरीक़ों से न कर पाये थे और न कर सकते थे. मेरा उनसे बार-बार जगह-जगह मिलना, साथ रहना और साथ सफ़र करना तेज़ी के साथ बढ़ता चला गया.

साबरमती (अहमदाबाद) आश्रम में बम्बई में और जगह-जगह उनसे मिलना हुआ. कभी-कभी कुछ फुटकर बातें जो याद में जमी रह गईं मैं यहाँ दे रहा हूँ.

यहाँ एक बात गाँधी जी से सुनी हुई लिख रहा हूँ.

साबरमती आश्रम क़ायम हो चुका था, पहले सत्याग्रह में उसकी बुनियाद पड़ी. वह सत्याग्रह आश्रम ही कहलाता था. कई हज़ार रुपये महीने का खर्च था. गाँधी जी के कुछ धनवान मित्र में और प्रेमी जो सब या अधिकतर गुजराती थे आश्रम का खर्च चलाते थे. खाना बनाने वाले हिन्दू थे. इन धनवान मित्रों में से भी कोई-कोई और उनके घर वाले जब-तब आश्रम में आकर भोजन कर लेते थे. उन्हें ऐसा करने में बड़ी खुशी होती थी. थोड़े ही दिनों में एक मेहतर परिवार आश्रम में आकर ठहर गया और गाँधी जी के हुकुम से और सब की तरह रसोई में आने-जाने और सब के साथ खाने पीने लगा. बहुत से ग़ैर हिन्दू मेहमान भी आश्रम में आने, रहने और बिना भेद भाव सब के साथ खाने-पीने लगे. आश्रम का खर्च चलाने वाले कुछ धनवान भाइयों के लिये यह नई बात थी. वह इसके आदी न थे, उन्हें और उनके घर वालों को आश्रम में खाने में संकोच होने लगा. उन्होंने गांधी जी के पास आकर बड़ी नम्रता से यह सुझाया कि कम से कम उनकी खातिर आश्रम की रसोई को ज़रा छोटी जात वालों और ग़ैर हिन्दुओं से अलग रखा जाये.

یہ شبد میں یاد سے ہی لکھ رہا ہوں پر شاید ہی ایک دو شبد کا فرق ہو ۔ اُس سے اصل مطلب میں فرق بالکل نہیں پڑ سکتا ۔

میں اسے پڑھ کر کچھ حیران ہوا ۔ گاندھی جی کو پڑھ کر سنایا اور پوچھا یہ کیا ؟ انہوں نے ترنت جواب دیا—"یہ تمہارے لئے نہیں ہے ۔ اِسے رکھ دو ۔ تم آشرم واسی بنو تو اِسے نہ ماننا ۔ میں کہاں مانتا ہوں ؟ تم اِسے رہنے دو ۔ تم اپنے کام کی بات کرو ۔"

اُن کے یہ فقرے بھی میں یاد سے لکھ رہا ہوں ۔ میں سمجھ گیا کہ گاندھی جی اور اُن کا آشرم دونوں ابھی وکاس کی حالت میں تھے' ابھی کھل رہے تھے اور روپ لے رہے تھے ۔

رولٹ ایکٹ کے خلاف ستیاگرہ شروع ہو جانے کے بعد سے گاندھی جی سارے دیش کے سامنے دیش کے سب سے بڑے اور اننیہ نیتا کے روپ میں آگئے ۔ میں نے اور میرے جیسے وچاروں کے بہت سے پرانے کام کرنے والوں نے اب دیکھ لیا کہ اپنے نئے طریقے سے گاندھی جی نے جو جان' جو بیداری' جو جوش اور جو تیاگ کی بھاونا دیش میں پیدا کر دی تھی وہ ہم اپنے پرانے طریقوں سے نہ کر پائے تھے اور نہ کر سکتے تھے ۔ میرا اُن سے بار بار جگہہ جگہہ ملنا' ساتھ رہنا اور ساتھ سفر کرنا تیزی کے ساتھ بڑھتا چلا گیا ۔

سابرمتی (احمدآباد) آشرم میں بمبئی میں اور جگہہ جگہہ اُن سے ملنا ہوا ۔ کبھی کبھی کچھ پھٹکر باتیں جو یاد میں جمی رہ گئیں میں یہاں دے رہا ہوں ۔

یہاں ایک بات گاندھی جی سے سنی ہوئی لکھ رہا ہوں ۔

سابرمتی آشرم قایم ہو چکا تھا ۔ پہلے ستیاگرہ میں اُس کی بنیاد پڑی ۔ وہ ستیاگرہ آشرم ہی کہلاتا تھا ۔ کئی ہزار روپئے مہینے کا خرچ تھا ۔ گاندھی جی کے کچھ دھنوان متر اور پریمی جو سب یا ادھکتر گجراتی تھے آشرم کا خرچ چلاتے تھے ۔ کھانا بنانے والے ہندو تھے ۔ اِن دھنوان متروں میں سے بھی کوئی کوئی اور اُن کے گھر والے جب تب آشرم میں آکر بھوجن کر لیتے تھے ۔ اُنہیں ایسا کرنے میں بڑی خوشی ہوتی تھی ۔ تھوڑے ہی دنوں میں ایک مہتر پریوار آشرم میں آکر ٹھہر گیا اور گاندھی جی کے حکم سے اور سب کی طرح رسوئی میں آنے جانے اور سب کے ساتھ کھانے پینے لگا ۔ بہت سے غیر ہندو مہمان بھی آشرم میں آنے' رہنے اور بنا بھید بھاؤ سب کے ساتھ کھانے پینے لگے ۔ آشرم کا خرچ چلانے والے کچھ دھنوان بھائیوں کے لئے یہ نئی بات تھی ۔ وہ اِس کے عادی نہ تھے ۔ انہیں اور اُن کے گھر والوں کو آشرم میں کھانے میں سنکوچ ہونے لگا ۔ انہوں نے گاندھی جی کے پاس آکر بڑی نمرتا سے یہ سجھایا کہ کم سے کم اُن کی خاطر آشرم کی رسوئی کو ذرا چھوٹی ذات والوں اور غیر ہندوؤں سے الگ رکھا جائے ۔

में ही काट कर काफी दुख और गुस्से के साथ जवाब दिया—"मैं तुम्हारी सभा का सदर नहीं बनूंगा. मैं अपनी मंजूरी वापिस लेता हूँ ! तुम तो मेरे सत्याग्रह को बिलकुल ही नहीं समझे. अब जाओ, जो ठीक समझो करो, मैं सदर नहीं. यह मेरा सत्याग्रह नहीं है."

मैं सुनकर घबरा गया और हलके से उनकी इस नाराजगी का कारण पूछा. उन्होंने फिर कहा—"मुझे कोई दूसरा प्रतिज्ञा पत्र नहीं चाहिये. मुझे पंडित मोतीलाल जी नहीं चाहियें. मुझे कोई बड़ा आदमी नहीं चाहिये. इलाहाबाद के अगर चार मेहतर मिलकर मेरे प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तखत कर देंगे और अपनी सत्याग्रह सभा बनायेंगे तो मैं उनका सदर बन जाऊँगा. तुम्हारी सभा का सदर बनना मुझे नामंजूर है.' तुम तो सत्याग्रह को समझे ही नहीं.'

अब मैंने उनसे कहा—"आप नाराज न होइये. मेरी अपनी निजी राय भी यही थी जो आपकी है. कुछ और साथियों की राय वह थी जिस पर आप को इतना दुख हुआ. मैंने पहले से आप को अपना और दूसरों का यह फर्क बताना ठीक नहीं समझा. अब हम वही करेंगे जो आप चाहते हैं. आपके बिना सत्याग्रह कैसा ? आप ही रास्ता बतायें तो हम चल सकते हैं. दूसरा प्रतिज्ञा पत्र नहीं होगा. और कोई आए, चाहे न आए."

गांधीजी ने थोड़ा सोचा. मेरी तरफ को बार-बार देखा एक दो और छोटी-मोटी बात हुई. उनका गुस्सा ठंडा हुआ फिर खुश होकर कहा—"जाओ काम करो, मैं तुम्हारा सदर और तुम सिक्रेटरी."

उसी दिन शाम को या अगले दिन मैं इलाहाबाद के लिये चल पड़ा. यू० पी० सत्याग्रह सभा का विधान छप गया. गाँधीजी सदर, मैं और मंजर अली सिक्रेटरी. मेम्बरों की फ़ेहरिस्त शायद तीस के क़रीब रही होगी, जिसमें एक नाम जवाहरलाल जी का भी था.

[5]

मेरी उसी अहमदाबाद यात्रा की एक और छोटी सी घटना मुझे याद आ रही है.

शायद तीसरे पहर का वक़्त था. मैं गाँधीजी के पास बैठा हुआ था. उनके सत्याग्रह आश्रम की नियमावली छप चुकी थी. छोटे साइज की पाँच सात सफे की छोटी सब चीज थी. एक कापी वहीं कहीं आस-पास पड़ी हुई थी. मेरी निगाह उस पर गई. मैं उसे पढ़ गया. उसमें एक नियम यह छपा हुआ था—"वर्ण आश्रम धर्म को बाधा न पहुँचे इसलिये आश्रमवासी जब कभी आश्रम से बाहर जायंगे तो केवल फल या दूध खाकर ही रहेंगे."

میں ہی کاٹ کر کافی دکھ اور غصہ کے ساتھ جواب دیا—"میں تمہاری سبھا کا صدر نہیں بنونگا . میں اپنی منظوری واپس لیتا ہوں ! تم تو میرے ستیاگرہ کو بالکل ہی نہیں سمجھے . اب جاؤ' جو ٹھیک سمجھو کرو' میں صدر نہیں . یہ میرا ستیاگرہ نہیں ہے ."

میں سن کر گھبرا گیا اور ہلکے سے اُن کی اِس ناراضگی کا کارن پوچھا . انہوں نے پھر کہا—"مجھے کوئی دوسرا پرتگیاں پتر نہیں چاہئے . مجھے پنڈت موتی لال جی نہیں چاہئیں . مجھے کوئی بڑا آدمی نہیں چاہئے . الہ آباد کے اگر چار مہتر ملکر میرے پرتگیاں پتر پر دستخط کر دینگے اور اپنی ستیاگرہ سبھا بنائینگے تو میں' اُن کا صدر بن جاؤنگا . تمہاری سبھا کا صدر بننا مجھے نامنظور ہے . تم تو ستیاگرہ کو سمجھے ہی نہیں .

اب میں نے اُن سے کہا—"آپ ناراض نہ ہوئیے . میری اپنی نجی رائے بھی یہی تھی جو آپ کی ہے . کچھ اور ساتھیوں کی رائے وہ تھی جس پر آپ کو اِتنا دکھ ہوا . میں نے پہلے سے آپ کو اپنا اور دوسروں کا یہ فرق بتانا ٹھیک نہیں سمجھا . اب ہم وہی کرینگے جو آپ چاہتے ہیں . آپ کے بنا ستیاگرہ کیسا ؟ آپ ہی راستہ بتائیں تو ہم چل سکتے ہیں . دوسرا پرتگیاں پتر نہیں ہوگا . اور کوئی آئے' چاہے نہ آئے ."

گاندھی جی نے تھوڑا سوچا . میری طرف کو بار بار دیکھا . ایک دو اور چھوٹی موٹی بات ہوئی . اُن کا غصہ ٹھنڈا ہوا . پھر خوش ہو کر کہا—"جاؤ کام کرو' میں تمہارا صدر اور تم سکریٹری ."

اُسی دن شام کو یا اگلے دن میں الہ آباد کے لئے چل پڑا . یو. پی. ستیاگرہ سبھا کا ودھان چھپ گیا . گاندھی جی صدر' میں اور منظر علی سکریٹری . ممبروں کی فہرست شاید تیس کے قریب رہی ہوگی' جس میں ایک نام جواہرلال جی کا بھی تھا .

[5]

میری اُسی احمدآباد یاترا کی ایک اور چھوٹی سی گھٹنا مجھے یاد آرہی ہے .

شاید تیسرے پہر کا وقت تھا . میں گاندھی جی کے پاس بیٹھا ہوا تھا . اُن کے ستیاگرہ آشرم کی نیماولی چھپ چکی تھی . چھوٹے سائز کی پانچ سات صفحہ کی چھوٹی سی چیز تھی . ایک کاپی وہیں کہیں آس پاس پڑی ہوئی تھی . میری نگاہ اُس پر گئی . میں اسے پڑھ گیا . اُس میں ایک نیم یہ چھپا ہوا تھا—"ورن آشرم دھرم کو بادھا نہ پہونچے اِس لئے آشرم واسی جب کبھی آشرم سے باہر جائینگے تو کیول پھل یا دودھ کھا کر ہی رہینگے ."

सुनकर पीछे जाकर उसी दालान में एक चारपाई पर चित लेट गए. किसी ने उनके इशारे पर तह किया हुआ एक भीगा कपड़ा उनके सर और माथे पर रख दिया. मैं ज़रा दूर बैठकर देखता रहा. चाहता था वह थोड़ा आराम कर लें तो पास पहुंचूँ. एक पल के अन्दर उन्होंने मेरी तरफ़ को आँख फेरी और इशारा करके अपनी चारपाई के पास बुलाया. मैं पास जाकर बैठ गया. कहने लगे—"सब हाल सुनाओ." मैंने जवाब दिया—"अभी आप बहुत थके हैं. ज़रा आराम कर लीजिये," जवाब मिला—"नहीं शुरू कर दो."

मैंने सारा हाल कह सुनाया. केवल पन्डित मोतीलाल और दूसरे प्रतिज्ञा पत्र की बात अभी नहीं कही.

इसके बाद मैंने कहा—"आप हमारी यू० पी० सत्याग्रह सभा के सद्र बनना मंज़ूर कीजिये."

उन्होंने जवाब दिया—"मुझे बड़ी ख़ुशी से मंज़ूर है. मैं तुम्हारी सभा का सद्र बन गया. तुम सिक्रेटरी हो न ?"

मैंने कहा—"हाँ, मैं और मंज़र अली दो सिक्रेटरी हैं."

गांधीजी ने पसन्द किया और कहा—"काम शुरू कर दो.

इससे कुछ पहले गांधीजी ने देश भर से उन लोगों के नाम माँगे थे जो अपने आप को क़ानून तोड़कर जेल जाने के लिये पेश करें. इस पर मैं और मंज़र अली दोनों अपने नाम भेज चुके थे. यह नाम बम्बई के अख़बारों में छपते जाते थे.

गांधीजी से उनके सद्र होने और अपने और मंज़र अली के सिक्रेटरी होने की बात तय करने के बाद मैंने उनसे दूसरे प्रतिज्ञा पत्र की बात छेड़ी. मैंने उनसे कहा—"पन्डित मोती लाल जी को आपका प्रतिज्ञा पत्र मंज़ूर नहीं. उनके लिये और उन जैसे विचार वालों के लिये हमने एक दूसरा प्रतिज्ञा पत्र बना लिया है."

यहाँ मैंने उन्हें दूसरा प्रतिज्ञा पत्र पढ़ सुनाया और कहा—"यह पन्डित मोतीलाल जी को मंज़ूर है. हम चाहते हैं वह हमारी सभा के नायब सद्र हो जायँ इसलिये हमने सोचा है कि जो आदमी दोनों में से किसी एक भी प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त कर दे वह हमारी सभा का मेम्बर बन सके. मोतीलाल जी के आजाने से जवाहरलाल जी का आना आसान हो जायगा, और फिर शायद हम तीन सिक्रेटरी हो जायँगे."

मैंने देखा कि मेरे यह सब बात कहते-कहते गांधीजी के चेहरे का रंग बदल गया, उन्होंने तुरन्त मेरी बात बीच

سن کر پیچھے جاکر اسی دالان میں ایک چارپائی پر چت لیٹ گئے . کسی نے اُن کے اِشارہ پر تہ کیا ہوا ایک بھیگا کپڑا اُن کے سر اور ماتھے پر رکھ دیا . میں ذرا دور بیٹھ کر دیکھتا رہا . چاہتا تھا وہ تھوڑا آرام کر لیں تو پاس پہونچوں . ایک پل کے اندر انہوں نے میری طرف کو آنکھ پھیری اور اشارہ کر کے اپنی چارپائی کے پاس بلایا . میں پاس جاکر بیٹھ گیا . کہنے لگے—"سب حال سناؤ ." میں نے جواب دیا—"ابھی آپ بہت تھکے ہیں ذرا آرام کر لیجئے ." جواب ملا—"نہیں' شروع کر دو ."

میں نے سارا حال کہہ سنایا . کیول پنڈت موتی لال اور دوسرے پرتگیاں پتر کی بات ابھی نہیں کہی .

اِس کے بعد میں نے کہا—"آپ ہماری یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے صدر بننا منظور کیجئے ."

انہوں نے جواب دیا—"مجھے بڑی خوشی سے منظور ہے . میں تمہاری سبھا کا صدر بن گیا . تم سکریٹری ہو نہ ؟"

میں نے کہا—"ہاں' میں اور منظار علی دو سکریٹری ہیں ."

گاندھی جی نے پسند کیا اور کہا—"کام شروع کر دو ."

اِس سے کچھ پہلے گاندھی جی نے دیش بھر سے اُن لوگوں کے نام مانگے تھے جو اپنے آپ کو قانون توڑ کر جیل جانے کے لئے پیش کریں . اِس پر میں اور منظار علی دونوں اپنے نام بھیج چکے تھے . یہ نام بمبئی کے اخباروں میں چھپتے جاتے تھے .

گاندھی جی سے اُن کے صدر ہونے اور اپنے اور منظارعلی کے سکریٹری ہونے کی بات طے کرنے کے بعد میں نے اُن سے دوسرے پرتگیاں پتر کی بات چھیڑی . میں نے اُن سے کہا—"پنڈت موتی لال جی کو آپ کا پرتگیاں پتر منظور نہیں . اُن کے لئے اور اُن جیسے وچاروالوں کے لئے ہم نے ایک دوسرا پرتگیاں پتر بنا لیا ہے ."

یہاں میں نے انہیں دوسرا پرتگیاں پتر پڑھ سنایا اور کہا—"یہ پنڈت موتی لال جی کو منظور ہے . ہم چاہتے ہیں وہ ہماری سبھا کے نایب صدر ہو جائیں اِس لئے ہم نے سوچا ہے کہ جو آدمی دونوں میں سے کسی ایک بھی پرتگیاں پتر پر دستخط کر دے وہ ہماری سبھا کا ممبر بن سکے . موتی لال جی کے آجانے سے جواہر لال جی کا آنا آسان ہو جائیگا اور پھر شاید ہم تین سکریٹری ہو جائیں ."

میں نے دیکھا کہ میرے یہ سب بات کہتے کہتے گاندھی جی کے چہرے کا رنگ بدل گیا . انہوں نے ترنت میری بات بیچ

सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह शुरू करने से पहले लोग उपवास और प्रार्थनाओं के ज़रिये अपनी आत्माओं को शुद्ध कर लें. बड़ों-बड़ों का अन्दाज़ा यह था कि मुमकिन है बड़े-बड़े शहरों में आधी पड़ती हड़ताल हो जावे. पर यह एक इतिहासी घटना है कि उस दिन हिमालय से लेकर रासकुमारी तक दूर से दूर किसी गाँव में भी हल नहीं चला.

अहमदाबाद से ख़बर आते ही इलाहाबाद होम रूल लीग के दफ़्तर में जिसका मैं एक मन्त्री था, मैंने कुछ मित्रों को जमा किया. एक यू. पी. सत्याग्रह सभा क़ायम हुई. गांधीजी को उसका सदर रखने की तजवीज़ हुई. मैं और मंज़रअली सोख़्ता उसके सिक्रेटरी बने. अहमदाबाद जाकर गांधीजी को इसकी इत्तला देने, उनसे हिदायतें लेने और सदर बनाने के लिये राज़ी करने का काम मुझे सौंपा गया.

इस बीच एक और छोटी सी घटना हुई. गांधीजी ने देश भर के सत्याग्रहियों के लिये एक प्रतिज्ञा पत्र निकाला था जो सब अख़बारों में छप चुका था. यू० पी० सत्याग्रह सभा के मेम्बरों के लिये भी इस प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त करना ज़रूरी थे. हम में से कुछ लोग चाहते थे कि पंडित मोतीलाल नेहरू यू० पी० सत्याग्रह सभा के नायब सदर हों. पन्डित मोतीलाल जी को गाँधीजी का प्रतिज्ञा पत्र पसन्द न था. वह क़ानून तोड़ने और जेल जाने को तैयार थे, पर अपनी नकेल दूसरे के हाथ में देना पसन्द न करते थे. कुछ साथियों की सलाह से एक दूसरा प्रतिज्ञा पत्र लिखा गया जिसे पन्डित मोतीलाल जी ने पसन्द कर लिया. वह उस पर दस्तख़त करने को राज़ी हो गये. तय हुआ कि यू० पी० सत्याग्रह सभा का जो मेम्बर चाहे गांधीजी वाले प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त कर दे और जो चाहे इस नये प्रतिज्ञा पत्र पर. दोनों बराबर के मेम्बर समझे जायँ. पर इस सबके लिये भी गांधीजी की सलाह और इजाज़त ज़रूरी थी. यह इजाज़त हासिल करना भी मेरे सुपुर्द हुआ.

गांधीजी से मिलने के लिये मैं अहमदाबाद पहुँचा. हाल ही में अहमदाबाद और वीरमगाम में बलवे हो चुके थे. इन ज़ख़्मों के बहुत से घायल अहमदाबाद के किसी अस्पताल या अस्पतालों में पड़े हुए थे. जिस वक़्त मैं आश्रम पहुँचा गांधीजी इन घायलों को देखने गये हुए थे. मैं बैठकर इन्तज़ार करने लगा.

थोड़ी देर बाद गांधीजी आए. मालूम होता था बेहद थके हुए हैं. पाँव लड़खड़ाते से पड़ रहे थे. मैंने नमस्कार किया. मुझे देखकर ख़ुश हुए. पूछा कब आए? मेरा जवाब

سرکار کے خلاف ستیاگرہ شروع کرنے سے پہلے لوگ اُپواس اور پرارتھناؤں کے ذریعے اپنی آتماؤں کو شدھ کر لیں ۔ بڑوں بڑوں کا اندازہ یہ تھا کہ ممکن ہے بڑے بڑے شہروں میں آدھی پڑتی ہڑتال ہو جاوے۔ پر یہ ایک اِتہاسی گھٹنا ہے کہ اُس دن ہمالیہ سے لیکر راس کماری تک دور سے دور کسی گاؤں میں بھی ہل نہیں چلا ۔

احمدآباد سے خبر آتے ہی الہ‌آباد ہوم رول لیگ کے دفتر میں جس کا میں ایک منتری تھا، میں نے کچھ متروں کو جمع کیا ۔ ایک یو. پی. ستیاگرہ سبھا قایم ہوئی ۔ گاندھی جی کو اُس کا صدر رکھنے کی تجویز ہوئی ۔ میں اور منظر علی سوختہ اُس کے سکریٹری بنے ۔ احمدآباد جا کر گاندھی جی کو اِس کی اِطلاع دینے، اُن سے ہدایتیں لینے اور صدر بنانے کے لئے راضی کرنے کا کام مجھے سونپا گیا ۔

اِس بیچ ایک چھوٹی سی گھٹنا ہوئی ۔ گاندھی جی نے دیش بھر کے ستیاگرہیوں کے لئے ایک پرتگیاں پتر نکالا تھا جو سب اخباروں میں چھپ چکا تھا ۔ یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے ممبروں کے لئے بھی اِس پرتگیاں پتر پر دستخط کرنا ضروری تھے ۔ ہم میں سے کچھ لوگ چاہتے تھے کہ پنڈت موتی لال نہرو یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے نایب صدر ہوں ۔ پنڈت موتی لال جی کو گاندھی جی کا پرتگیاں پتر پسند نہ تھا ۔ وہ قانون توڑنے اور جیل جانے کو تیار تھے، پر اپنی نکیل دوسرے کے ہاتھ میں دینا پسند نہ کرتے تھے ۔ کچھ ساتھیوں کی صلاح سے ایک دوسرا پرتگیاں پتر لکھا گیا جسے پنڈت موتی لال جی نے پسند کر لیا ۔ وہ اُس پر دستخط کرنے کو راضی ہو گئے ۔ طے ہوا کہ یو. پی. ستیاگرہ سبھا کا جو ممبر چاہے گاندھی جی والے پرتگیاں پتر پر دستخط کر دے اور جو چاہے اِس نئے پرتگیاں پتر پر ۔ دونوں برابر کے ممبر سمجھے جائیں ۔ پر اِس سب کے لئے بھی گاندھی جی کی صلاح اور اجازت ضروری تھی ۔ یہ اجازت حاصل کرنا بھی میرے سپرد ہوا ۔

گاندھی جی سے ملنے کے لئے میں احمدآباد پہونچا ۔ حال ہی میں احمدآباد اور ویرم گام میں بلوے ہو چکے تھے ۔ اِن زخموں کے بہت سے گھایل احمدآباد کے کسی اسپتال یا اسپتالوں میں پڑے ہوئے تھے ۔ جس وقت میں آشرم پہونچا گاندھی جی اِن گھایلوں کو دیکھنے گئے ہوئے تھے ۔ میں بیٹھ کر اِنتظار کرنے لگا ۔

تھوڑی دیر بعد گاندھی جی آئے ۔ معلوم ہوتا تھا بےحد تھکے ہوئے ہیں ۔ پاؤں لڑکھڑاتے سے پڑ رہے تھے ۔ میں نے نمسکار کیا ۔ مجھے دیکھ کر بےحد خوش ہوئے ۔ پوچھا کب آئے ؟ میرا جواب

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट था उसे उस किताब के दर्शन नहीं कराए गये और अंगरेज़ ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेटों तक को पढ़ने को दी गई. मुझे उस किताब को देखने और उसमें अपना नाम और हाल पढ़ने का सौभाग्य मिला था. अब सवाल था कि इन सबको और इसी तरह के औरों को अंगरेज़ी राज की राह के रोड़ों को किस तरह हटाया जाये. ख़ुर्राट और तजरबेकार अफ़सरों की एक कमेटी मुक़र्रर हुई. उसने एक बहुत बड़ी रिपोर्ट इस बात की तैयार की कि अंगरेज़ी राज के ख़िलाफ़ कब-कब, कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह बग़ावत के ख़याल पैदा हुए और फैले और कहाँ क्या-क्या कोशिशें हुईं. इस रिपोर्ट के आधार पर और इस कमेटी की सलाह के मुताबिक़ बड़े लाट की कौंसिल में दो नये क़ानून पेश किये गए. यह दोनों क़ानून रोलट ऐक्ट कहलाते हैं और देश में उस समय 'काले क़ानूनों' के नाम से मशहूर थे. इन नए क़ानूनों में देश के छोटे से छोटे पुलिस अफ़सरों को वह ज़बरदस्त अधिकार दे दिये गए जिनके रहते देश के अन्दर नरम या गरम किसी तरह के राजकाजी आन्दोलन का चल सकना भी नामुमकिन था. नरम दल के बड़े से बड़े नेता भी इन्हें देखकर हैरानी, असन्तोश और ग़ुस्से से भर गये. लाट साहब की कौंसिल के अन्दर इन क़ानूनों के ख़िलाफ़ माननीय श्रीनिवास शास्त्री और मिस्टर एम. ए. जिन्नाह की जो ज़ोरदार तक़रीरें हुईं वह एक बार सारे देश में गूँज गईं. क़ानून पास हो गए. सारा देश ग़ुस्से और बेचैनी से भर गया. गांधी जी कैसे चुप रह सकते थे? उनके लिये यह भगवान का दिया हुआ मौक़ा था.

इस गरमा गरमी के शुरू के दिनों में गांधीजी अहमदाबाद में सख़्त बीमार पड़े हुए थे. कहा जाता है कि एक बार उनके बचने की भी आशा कम दिखाई देती थी. हो सकता है कि उनकी बीमारी शरीर की कम और मन की अधिक रही हो. हो सकता है उनकी आत्मा अन्दर से कर्त्तव्य-पथ का दरवाज़ा खोजने के लिये बेचैन रही हो. जो हो, देश के रोग के सामने वह अपना रोग भूल गए. अहमदाबाद से ही उन्होंने नये काले क़ानूनों के ख़िलाफ़ सत्याग्रह करने यानी खुले तौर पर सरकार का कोई न कोई क़ानून तोड़ने और उसकी सज़ा में जेल जाने का प्रोग्राम देश के सामने रक्खा. देश भर के लिए एक सत्याग्रह सभा बनाई गई जिसके गाँधीजी सद्र थे. गाँधीजी ने ख़ुद बम्बई जाकर ज़ब्त किताबों को खुले आम बेचकर सत्याग्रह शुरू किया. देश पर इसका कितना गहरा असर हुआ इसका पहले से किसी को गुमान भी न हो सकता था और अब भी अन्दाज़ा लगा सकना कठिन है. 6 अप्रैल 1919 के लिये हड़ताल ऐलान हो चुकी थी, गाँधीजी का उससे मक़सद यह था, कि

ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ تھا اُسے اُس کتاب کے درشن نہیں کرائے گئے اور انگریز جوائنٹ مجسٹریٹوں تک کو پڑھنے کو دی گئی۔ مجھے اُس کتاب کو دیکھنے اور اُس میں اپنا نام اور حال پڑھنے کا سوبھاگیہ ملا تھا۔ اب سوال تھا کہ اِن سب کو اور اسی طرح کے اوروں کو انگریزی راج کی راہ کے روڑوں کو کس طرح ہٹایا جائے۔ خرانٹ اور تجربہ‌کار افسروں کی ایک کمیٹی مقرر ہوئی۔ اُس نے ایک بہت بڑی رپورٹ اِس بات کی تیار کی کہ انگریزی راج کے خلاف کب کب، کہاں کہاں اور کس کس طرح بغاوت کے خیال پیدا ہوئے پھیلے کہاں اور کیا کیا کوششیں ہوئیں۔ اِس رپورٹ کے آدھار پر اور اِس کمیٹی کی صلاح کے مطابق بڑے لاٹ کی کونسل میں دو نئے قانون پیش کئے گئے۔ یہ دونوں قانون رولٹ ایکٹ کہلاتے ہیں اور دیش میں اُس سمے 'کالے قانونوں' کے نام سے مشہور تھے۔ اِن نئے قانونوں میں دیش کے چھوٹے سے چھوٹے پولس افسروں کو وہ زبردست ادھیکار دے دیئے گئے جن کے رہتے دیش کے اندر نرم یا گرم کسی طرح کے راجکاجی آندولن کا چل سکنا بھی ناممکن تھا۔ نرم دل کے بڑے سے بڑے نیتا بھی اِنہیں دیکھ کر حیرانی، اسنتوش اور غصہ سے بھر گئے۔ لاٹ صاحب کی کونسل کے اندر اِن قانونوں کے خلاف مانیہ شرینواس شاستری اور مسٹر ایم۔ اے۔ جناح کی جو زوردار تقریریں ہوئیں وہ ایک بار سارے دیش میں گونج گئیں۔ قانون پاس ہو گئے۔ سارا دیش غصہ اور بےچینی سے بھر گیا۔ گاندھی جی کیسے چپ رہ سکتے تھے؟ اُن کے لئے یہ بھگوان کا دیا ہوا موقع تھا۔

اِس گرما گرمی کے شروع کے دنوں میں گاندھی جی احمدآباد میں سخت بیمار پڑے ہوئے تھے۔ کہا جاتا ہے کہ ایک بار اُن کے بچنے کی بھی آشا کم دکھائی دیتی تھی۔ ہو سکتا ہے کہ اُن کی بیماری شریر کی کم اور من کی ادھک رہی ہو۔ ہو سکتا ہے اُن کی آتما اندر سے کرتویہ پتھ کا دروازہ کھوجنے کے لئے بےچین رہی ہو۔ جو ہو، دیش کے روگ کے سامنے وہ اپنا روگ بھول گئے۔ احمدآباد سے ہی انہوں نے نئے کالے قانونوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے یعنی کھلے طور پر سرکار کا کوئی نہ کوئی قانون توڑنے اور اُس کی سزا میں جیل جانے کا پروگرام دیش کے سامنے رکھا۔ دیش بھر کے لئے ایک ستیاگرہ سبھا بنائی گئی جس کے گاندھی جی صدر تھے۔ گاندھی جی نے خود بمبئی جاکر ضبط کتابوں کو کھلے عام بیچ کر ستیاگرہ شروع کیا۔ دیش پر اِس کا کتنا گہرا اثر ہوا اس کا پہلے سے کسی کو گمان بھی نہ ہو سکتا تھا اور اب بھی اندازہ لگا سکنا کٹھن ہے۔ 6 اپریل 1919 کے لئے ہڑتال اعلان ہو چکی تھی۔ گاندھی جی کا اُس سے مقصد یہ تھا کہ

दोपहर को मैं तुम्हें बुलाऊँगा, तब तुमसे बातें होंगी." मैंने उनकी आज्ञा मान ली.

दोपहर बाद उन्होंने मुझे ऊपर के एक कमरे में बुलाया. वह और मैं ही थे. फ़र्श पर बैठकर लगभग दो घंटे तक फिर बातें होती रहीं. वह सब बातें मुझे अब याद नहीं रहीं. इतना याद है कि गांधी जी को हिन्दुस्तान भर की एक-एक छावनी के बारे में यह जानकारी थी कि किसमें कितनी फ़ौज है, कितनी देसी और कितनी अंगरेज़ी, और कितने हथियार हैं, और कहाँ कोई बग़ावत या आन्दोलन खड़ा हो जाने पर सरकार कितना मुक़ाबला कर सकती है. उन्होंने इन चीज़ों को अच्छी तरह पढ़ रखा था. फ़ौजों के इधर से उधर आने जाने को भी वह ध्यान से पढ़ते सुनते रहते थे. मुझ पर यह भी असर पड़ा कि किसी एक जगह को अपने आन्दोलन के लिये या सत्याग्रह के लिये चुनते समय यह सब चीज़ें उनकी निगाह में रहती हैं. उस दिन की दो घंटे की बात-चीत से दो बातें मेरे दिल पर जम गईं. एक यह कि अंगरेज सरकार की हिंसा करने की शक्ति की जितनी अच्छी जानकारी गाँधी जी को थी उतनी हमारे पुराने क्रान्तिकारी दल में किसी को न थी. दूसरी यह कि विदेशी हुकूमत से नफ़रत और मुल्क की आज़ादी के लिये तड़प भी गाँधीजी में किसी दूसरे से कम न थी. कुछ ऐसा भी लगा कि उनकी धर्म, पाप और अहिंसा की बातें केवल वक़्त की ज़रूरत थीं और वह बड़ी मेहनत के साथ कोई नया रास्ता ढूँढ़ रहे थे या बना रहे थे.

मेरा दिल बदला, मैं गहरे सोच में पड़ गया. फिर भी अधिक न ठहरा. शाम की गाड़ी से मैं इलाहाबाद के लिये रवाना हो गया.

इस तरह मेरी गाँधी जी की दूसरी मुलाक़ात ख़तम हुई.

[4]

पहली जंग के ख़तम होने से पहले-पहले देश में नई जान और नई उमंगें पैदा हो रही थीं. गाँधी जी के छोटे-छोटे नये तजरबे भी बहुत सों का ध्यान अपनी तरफ़ खींच रहे थे. सरकार इन सब बातों को देख और समझ रही थी बढ़ती हुई बेचैनी और आज़ादी की प्यास को कुचलने की तरकीबें सोची जाने लगीं. देश भर के कुछ चुने हुए काम करने वालों या आज़ादी के प्रेमियों की एक फ़ेहरिस्त तैयार करके हर एक का थोड़ा-थोड़ा हाल देते हुए अंगरेज़ी में एक छोटी सी किताब तैयार की और गुप्त रीति से उसे हिन्दुस्तान भर के सब अंगरेज अफ़सरों के हाथों में पहुँचाया गया. मुझे मालूम है कि बाज़-बाज़ ज़िलों में जहाँ हिन्दुस्तानी

دوپہر کو میں تمہیں بلاؤنگا' تب تم سے باتیں ہونگی . میں نے اُن کی آگیاں مان لی .

دوپہر بعد انہوں نے مجھے اُوپر کے ایک کمرے میں بلایا . وہ اور میں ہی تھے . فرش پر بیٹھ کر لگ بھگ دو گھنٹے تک پھر باتیں ہوتی رہیں . وہ سب باتیں مجھے اب یاد نہیں رہیں . اِتنا یاد ہے کہ گاندھی جی کو ہندستان بھر کی ایک ایک چھاونی کے بارے میں یہ جانکاری تھی کہ کس میں کتنی فوج ہے' کتنی دیسی اور کتنی انگریزی' اور کتنے ہتھیار ہیں' اور کہاں کوئی بغاوت یا آندولن کھڑا ہو جانے پر سرکار کتنا مقابلہ کر سکتی ہے . انہوں نے اِن چیزوں کو اچھی طرح پڑھ رکھا تھا . فوجوں کے اِدھر سے اُدھر آنے جانے کو بھی وہ دھیان سے پڑھتے سنتے رہتے تھے . مجھ پر یہ بھی اثر پڑا کہ کسی ایک جگہہ کو اپنے آندولن کے لئے یا ستیاگرہ کے لئے چنتے سمے یہ سب چیزیں ان کی نگاہ میں رہتی ہیں . اُس دن کی دو گھنٹے کی بات چیت سے دو باتیں میرے دل پر جم گئیں . ایک یہ کہ انگریز سرکار کی ہنسا کرنے کی شکتی کی جتنی اچھی جانکاری گاندھی جی کو تھی اُتنی ہمارے پرانے کرانتکاری دل میں کسی کو نہ تھی . دوسرے یہ کہ ودیشی حکومت سے نفرت اور ملک کی آزادی کے لئے تڑپ بھی گاندھی جی میں کسی دوسرے سے کم نہ تھی . کچھ ایسا بھی لگا کہ ان کی دھرم' پاپ اور اہنسا کی باتیں کیول وقت کی ضرورت تھیں اور وہ بڑی محنت کے ساتھ کوئی نیا راستہ ڈھونڈ رہے تھے یا بنا رہے تھے .

میرا دل بدلا' میں گہرے سوچ میں پڑ گیا . پھر بھی ادھک نہ ٹھہرا . شام کی گاڑی سے میں الہ‌آباد کے لئے روانہ ہو گیا .

اِس طرح میری گاندھی جی کی دوسری ملاقات ختم ہوئی .

[4]

پہلی جنگ کے ختم ہونے سے پہلے پہلے دیش میں نئی جان اور نئی اُمنگیں پیدا ہو رہی تھیں . گاندھی جی کے چھوٹے چھوٹے نئے تجربے بھی بہت سوں کا دھیان اپنی طرف کھینچ رہے تھے . سرکار اِن سب باتوں کو دیکھ اور سمجھ رہی تھی . بڑھتی ہوئی بےچینی اور آزادی کی پیاس کو کچلنے کی ترکیبیں سوچی جانے لگیں . دیش بھر کے کچھ چنے ہوئے کام کرنے والوں یا آزادی کے پریمیوں کی ایک فہرست تیار کر کے ہر ایک کا تھوڑا تھوڑا حال دیتے ہوئے انگریزی میں ایک چھوٹی سی کتاب تیار کی اور گپت ریتی سے اسے ہندستان بھر کے سب انگریز افسروں کے ہاتھوں میں پہونچایا گیا . مجھے معلوم ہے کہ بعض بعض ضلعوں میں جہاں ہندستانی

मैं गुजरात पहुँचा. गाँधी जी उस समय नडियाद के अनाथालय में ठहरे हुए थे. मैं उनसे वहीं मिलने के लिये गया. मेरी उनकी यह दूसरी मुलाक़ात थी.

सुबह का वक़्त था. गाँधी जी अनाथालय के हाल के एक कोने में फ़र्श के ऊपर एक गद्दा बिछाए बैठे हुए थे. आठ दस काम करने वाले उनके दाएँ-बाएँ और सामने थे. उनमें से दो की याद मेरे अन्दर अभी तक बाक़ी है. एक शंकर लाल बैंकर और दूसरे वल्लभ भाई पटेल. गांधी जी में और उनमें बातें हो रही थीं, कुछ गुजराती में और कुछ हिन्दुस्तानी में मिली-जुली. मैंने जाकर नमस्कार किया. गाँधी जी ने मुझे पहचान लिया. पूछा कि मैं वही हूँ न जो उनसे अहमदाबाद में मिल चुका था. मेरे हाँ करने पर उन्होंने प्रेम के साथ मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया. मैं बैठ गया. उनकी बातें सुनने लगा. लगभग दो घंटे बातें होती रहीं. मैं गुजराती और हिन्दुस्तानी दोनों समझ रहा था. मुझे अब उन बातों की तफ़सील तो याद नहीं रही पर इतना अच्छी तरह याद है कि दो घंटे तक लगातार गाँधी जी उन सब काम करने वालों को तरह-तरह से यही समझाते रहे कि धर्म पर क़ायम रहना, पाप नहीं करना, किसी को मारना नहीं, किसी को दुख भी नहीं पहुँचाना, अन्यायियों के साथ भी दिल में प्रेम रखना और प्रेम के साथ ही उनसे बरतना वग़ैरा-वग़ैरा. मैं ध्यान से सुनता रहा. कभी-कभी मैंने बात को साफ़ करने के लिये कोई छोटा सा सवाल भी कर लिया. हर बात का वही जवाब. उन्हें इतनी इस बात की चिन्ता नहीं थी कि किसानों का अन्याय दूर हो जितनी इसकी कि किसी भी सरकारी आदमी या सरकारी नौकर को ज़रा सा भी दुख न पहुँचा हो. मेरे मन में गाँधी जी की तरफ़ से फिर वही भाव उभरे जो एक साल पहले पैदा हुए थे. दो-तीन घंटे की बातें सुन कर और अच्छे से अच्छे काम करने वालों के साथ मुझ में फिर उनकी तरफ़ से निराशा और एक तरह की नफ़रत ही जागी. खाने का वक़्त आ रहा था. सब खड़े हो गए. मैं भी खड़ा हो गया. मैंने गाँधी जी से कहा—"मैं पहले भी आप से मिलने आया था और इतने दिनों बाद फिर आया हूँ. अब मैं इसी दोपहर की गाड़ी से लौट जाऊँगा. सिर्फ़ इतना अर्ज़ कर दूँ कि मैं उतना ही disappointed (निराश) और disgusted (बेज़ार) जा रहा हूँ जितना पहली बार."

गाँधी जी फिर मुस्कराए. कुछ और लोग भी देख रहे थे. मुझसे कहा—"अभी और ठहरो." मैंने जवाब दिया—"मुझे ठहरने से कोई फ़ायदा दिखाई नहीं देता." गाँधी जी ने कहा—"इतनी दूर से आए हो. मेरे कहने से कुछ देर और ठहर जाओ. तुम भी खाना खा लो, मैं भी खा लूँ. फिर

میں گجرات پہونچا ۔ گاندھی جی اُس سمے نڈیاد کے اناتھالیہ میں ٹھہرے ہوئے تھے ۔ میں اُن سے وہیں ملنے کے لئے گیا ۔ میری اُن کی یہ دوسری ملاقات تھی ۔

صبح کا وقت تھا ۔ گاندھی جی اناتھالیہ کے ہال کے ایک کونے میں فرش کے اوپر ایک گدا بچھائے بیٹھے ہوئے تھے ۔ آٹھ دس کام کرنے والے اُن کے دائیں بائیں اور سامنے تھے ۔ اُن میں سے دو کی یاد میرے اندر ابھی تک باقی ہے ۔ ایک شنکر لال بینکر اور دوسرے ولبھ بھائی پٹیل ۔ گاندھی جی میں اور اُن میں باتیں ہو رہی تھیں' کچھ گجراتی میں اور کچھ ہندستانی میں ملی جلی ۔ میں نے جاکر نمسکار کیا ۔ گاندھی جی نے مجھے پہچان لیا ۔ پوچھا کہ میں وہی ہوں نہ جو اُن سے احمدآباد میں مل چکا تھا ۔ میرے ہاں کرنے پر انہوں نے پریم کے ساتھ مجھے اپنے پاس بیٹھنے کا اشارہ کیا ۔ میں بیٹھ گیا ۔ اُن کی باتیں سننے لگا ۔ لگ بھگ دو گھنٹے باتیں ہوتی رہیں ۔ میں گجراتی اور ہندستانی دونوں سمجھ رہا تھا ۔ مجھے اب اُن باتوں کی تفصیل تو یاد نہیں رہی پر اِتنا اچھی طرح یاد ہے کہ دو گھنٹے تک لگاتار گاندھی جی اُن سب کام کرنے والوں کو طرح طرح سے یہی سمجھاتے رہے کہ دھرم پر قایم رہنا' پاپ نہیں کرنا' کسی کو مارنا نہیں' کسی کو دکھ بھی نہیں پہنچانا' انیائیوں کے ساتھ بھی دل میں پریم رکھنا اور پریم کے ساتھ ہی اِن سے برتنا وغیرہ وغیرہ ۔ میں دھیان سے سنتا رہا ۔ کبھی کبھی میں نے بات کو صاف کرنے کے لئے کوئی چھوٹا سا سوال بھی کر لیا ۔ ہر بات کا وہی جواب ۔ انہیں اِتنی اِس بات کی چنتا نہیں تھی کہ کسانوں کا انیائے دور ہو جتنی اِس کی کہ کسی بھی سرکاری آدمی یا سرکاری نوکر کو ذرا سا بھی دکھ نہ پہنچا ہو ۔ تو میرے من میں گاندھی جی کی طرف سے پھر وہی بھاؤ اُبھرے جو ایک سال پہلے پیدا ہوئے تھے ۔ دو تین گھنٹے کی باتیں سن کر اور اچھے سے اچھے کام کرنے والوں کے ساتھ مجھ میں پھر اُن کی طرف سے نراشا اور ایک طرح کی نفرت ہی جاگی ۔ کھانے کا وقت آ رہا تھا ۔ سب کھڑے ہو گئے ۔ میں بھی کھڑا ہو گیا ۔ میں نے گاندھی جی سے کہا — "میں پہلے بھی آپ سے ملنے آیا تھا اور اِتنے دنوں بعد پھر آیا ہوں ۔ اب میں اِسی دوپہر کی گاڑی سے لوٹ جاؤنگا ۔ صرف اِتنا عرض کر دوں کہ میں اُتنا ہی disappointed (نراش) اور disgusted (بیزار) جا رہا ہوں جتنا پہلی بار ۔"

گاندھی جی پھر مسکرائے ۔ کچھ اور لوگ بھی دیکھ رہے تھے ۔ مجھسے کہا — "ابھی اور ٹھہرو ۔" میں نے جواب دیا — "مجھے ٹھہرنے سے کوئی فایدہ دکھائی نہیں دیتا ۔" گاندھی جی نے کہا — "اِتنی دور سے آئے ہو ۔ میرے کہنے سے کچھ دیر اور ٹھہر جاؤ ۔ تم بھی کھانا کھا لو' میں بھی کھا لوں ۔ پھر

चलते मैंने उनसे यह भी कहा—"मेरी आप से एक ही प्रार्थना है, ईश्वर के लिये आप और जो चाहे कीजिये, हिन्दुस्तान की राजनीति में दखल न दीजिये, नहीं तो आप इस देश को और मिटा देंगे." वह सुनकर मुस्कराए और कहने लगे—"अच्छा, अभी तो और फिर भी आओगे."

मैंने—"देखिये—नमस्कार !" कह कर विदा ली. स्टेशन आया. सोलन के लिये वापिस चल दिया.

मैं रास्ते भर यही सोचता आया कि इतना लम्बा सफ़र और इतना खर्च सब बेकार गया.

सोलन पहुँचकर मैंने इसी मज़मून के ख़त अपने दोस्तों को लिख दिये.

कुछ दिनों के बाद मुझे मालूम हुआ कि गाँधीजी जब पहले पहल दक्खिन अफरीक़ा से हिन्दुस्तान आए थे तब मिस्टर गोखले ने, जिन्हें गाँधीजी अपने गुरु की तरह मानते थे, यह वायदा ले लिया था कि वह यहाँ आने के एक साल बाद तक इस देश की हालत को चुपचाप बैठकर देखेंगे और समझेंगे और किसी तरह का कोई अमली क़दम कम से कम उस साल तक नहीं उठाएंगे. मैं जब गांधीजी से पहली मरतबा मिला तो यह उसी एक साल के अन्दर का दिन था.

[3]

पहली मुलाक़ात हुए लगभग दो साल बीत चुके थे. पहला महायुद्ध ख़तम होने पर आ रहा था. जो हज़ारों हिन्दुस्तानी सिपाही योरप के लड़ाई के मैदानों से लौट-लौट कर आ रहे थे और जो ख़बरें लड़ाई की देश भर में फैल रही थीं उनकी बदौलत एक नई उमंग और आज़ादी की नई लगन देश भर में फैलती जा रही थी. मैं पहाड़ छोड़ कर इलाहाबाद आ चुका था. अभी आगे के काम के लिये दोस्तों से सलाह ही कर रहा था कि इतने में सुना कि उन्हीं मिस्टर गाँधी ने चम्पारन बिहार में वहाँ के ग़रीब किसानों पर निलहे गोरों के अत्याचारों के ख़िलाफ़ कुछ आन्दोलन शुरू किया है. गाँधी जी के अपने पहले तजरबे से मुझे इतना जोश भी न आ सका कि बिहार, जो इलाहाबाद से बहुत दूर न था, जाकर उनके आन्दोलन को देखूँ.

थोड़े दिन और बीते. सुना कि गुजरात में खेड़ा ज़िला के किसानों की फ़सलें ख़राब हो गई थीं. सरकार उनसे ज़बरदस्ती लगान वसूल कर रही थी. इस अन्याय के ख़िलाफ़ गाँधी जी ने गुजरात में एक नया आन्दोलन खड़ा किया है.

چلتے میں نے اُن سے یہ بھی کہا—"میری آپ سے ایک ہی پرارتھنا ہے، ایشور کے لئے آپ اور جو چاہے کیجئے، ہندستان کی راجنیتی میں دخل نہ دیجئے، نہیں تو آپ اِس دیش کو اور مٹا دینگے." وہ سن کر مسکرائے اور کہنے لگے—"اچھا ابھی تو اور پھر بھی آؤگے."

میں نے—"دیکھیئے—نمسکار !" کہہ کر بدالی. اسٹیشن آیا. سولن کے لئے واپس چل دیا.

میں راستے بھر یہی سوچتا آیا کہ اِتنا لمبا سفر اور اِتنا خرچ سب بیکار گیا.

سولن پہونچکر میں نے اِسی مضمون کے خط اپنے دوستوں کو لکھ دیئے.

کچھ دنوں کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ گاندھی جی جب پہلے پہل دکھن افریقہ سے ہندستان آئے تھے تب مسٹر گوکھلے نے، جنہیں گاندھی جی اپنے گرو کی طرح مانتے تھے، یہ وعدہ لے لیا تھا کہ وہ یہاں آنے کے ایک سال بعد تک اِس دیش کی حالت کو چپ چاپ بیٹھ کر دیکھینگے اور سمجھینگے اور کسی طرح کا کوئی عملی قدم کم سے کم اِس سال تک نہیں اُٹھائیں گے. میں جب گاندھی جی سے پہلی مرتبہ ملا تو یہ اُسی ایک سال کے اندر کا دن تھا.

[3]

پہلی ملاقات ہوئے لگ بھگ دو سال بیت چکے تھے. پہلا مہایدھ ختم ہونے پر آ رہا تھا. جو ہزاروں ہندستانی سپاہی یورپ کے لڑائی کے میدانوں سے لوٹ لوٹ کر آ رہے تھے اور جو خبریں لڑائی کی دیش بھر میں پھیل رہی تھیں اُن کی بدولت ایک نئی اُمنگ اور آزادی کی نئی لگن دیش بھر میں پھیلتی جا رہی تھی. میں پہاڑ چھوڑ کر اِلہ‌آباد آ چکا تھا. ابھی آگے کے کام کے لئے دوستوں سے صلاح ہی کر رہا تھا کہ اِتنے میں سنا کہ ان ہی مسٹر گاندھی نے چمپارن بہار میں وہاں کے غریب کسانوں پر نلہے گوروں کے اتیاچاروں کے خلاف کچھ آندولن شروع کیا ہے. گاندھی جی کے اپنے پہلے تجربے سے مجھے اِتنا جوش بھی نہ آ سکا کہ بہار، جو الہ‌آباد سے بہت دور نہ تھا، جا کر اُن کے آندولن کو دیکھوں.

تھوڑے دن اور بیتے. سنا کہ گجرات میں کھیڑا ضلع کے کسانوں کی فصلیں خراب ہو گئی تھیں. سرکار اُن سے زبردستی لگان وصول کر رہی تھی. اِس انیائے کے خلاف گاندھی جی نے گجرات میں ایک نیا آندولن کھڑا کیا ہے.

नक़्शा था. एक छोटी सी लड़की, शायद पाँच छै बरस की रही होगी, उनके आगे बैठी थी. मुझे जहाँ तक याद है, गांधीजी उसके सर से जुएं बीन-बीन कर पास रखे हुए एक पानी के कटोरे में डालते जाते थे. उसी सज धज के एक दो और आदमी कमरे के पास से आते जाते दिखाई दिए. मैं कमरे में घुसा. मालूम करके कि यही मिस्टर गांधी हैं कुछ अचम्भा सा लगा. उन्होंने टाट का एक टुकड़ा मेरी तरफ़ करके मुझे बैठने को कहा. मैं बैठ गया. बातें शुरु हुईं'

मैंने अपना और हाल की देश की आज़ादी की कोशिशों का हाल जो मैं जानता था सब उन्हें तफ़सील से कह सुनाया. मालूम होता था बड़े ध्यान से सुन रहे हैं और जो-जो मैं कहता हूँ सब पीते जाते हैं. बीच-बीच में उन्होंने कई सवाल भी किये. इस बात-चीत में कई घन्टे लगे. दोपहर से शाम होने आई. कभी-कभी वह उठकर दूसरा काम भी करते रहे. पर जब-जब मैंने उनसे उनकी राय पूछी और उनसे आगे के लिए सलाह लेना चाहा तो लग-भग हर बात पर वह कुछ ऐसा ही जवाब देते थे—"मैं तो राजनीति नहीं समझता. मैं तो धरम जानता हूँ. सबकूँ अपने धरम पर रहना चाहिये. अपना धरम पालना चाहिये. पाप तो नहीं करना चाहिये. किसी कूँ मारना पाप है, 'वग़ैरा-वग़ैरा. मैंने बार-बार और तरह-तरह से उनसे पूछना चाहा कि आख़िर हिन्दुस्तान को आज़ादी कैसे मिल सकती है. हर बार वह कोई न कोई इसी तरह का फ़िक़रा दोहरा देते थे. मुझ पर यह असर ज़रूर पड़ा कि वह मुझमे और मेरी बातों में रस ले रहे थे. उनकी आँखों में मुझे बार-बार एक अनोखा स्नेह और अपनापन दिखाई देता था. मालूम होता था वह चाहते हैं मैं और ठहरूँ और उनसे बातें करूं. पर बार-बार तोते की तरह रटे हुए उनके वही फ़िक़रे सुन-कर—"मैं तो धरम जानता हूँ. पाप तो नहीं करना चाहिये सब कूँ अपना धरम पालना चाहिये, " मैं उकता गया. मेरे इस पूछने पर भी कि आख़िर धर्म है क्या चीज़, वह मेरी तसल्ली का जवाब न दे सके. मुझे उनसे एक तरह की नफ़रत हो गई. मै सोचने लगा कि धर्म अधर्म के जिन दक़ियानूसी ख़्यालों ने इस मुल्क को बरबाद किया है और उसे ग़ुलामी के यह दिन दिखाए हैं. वही ख़्याल इस आदमी के अन्दर कूट-कूट कर भरे हुए हैं. मैंने मन में तय कर लिया कि शाम की गाड़ी से सोलन लौट जाया जाय. आख़िर में मैंने उनसे कहा कि आज ही मैं सोलन वापिस जा रहा हूँ. मैंने उनसे यह भी साफ़ कह दिया कि मैं आपसे disappointed और disgusted यानी निराश होकर और बेज़ार होकर जा रहा हूँ. मुझे याद है कि मैंने अंगरेज़ी के ही यही दोनों शब्द उपयोग किये थे. चलते

نقشہ تھا ۔ ایک چھوٹی سی لڑکی شاید پانچ چھ برس کی رہی ہوگی اُن کے آگے بیٹھی تھی ۔ مجھے جہاں تک یاد ہے گاندھی جی اُس کے سر سے جوئیں بین بین کر پاس رکھے ہوئے پانی کے کٹورے میں ڈالتے جاتے تھے ۔ اُسی سج دھج کے ایک دو اور آدمی کمرہ کے پاس سے آتے جاتے دکھائی دیئے ۔ میں کمرہ میں گھسا ۔ معلوم کر کے کہ یہی مسٹر گاندھی ہیں کچھ اچنبھا سا لگا ۔ اُنھوں نے ٹاٹ کا ایک ٹکڑا میری طرف کر کے مجھے بیٹھنے کو کہا ۔ میں بیٹھ گیا ۔ باتیں شروع ہوئیں ۔

میں نے اپنا اور حال کی دیش کی آزادی کی کوششوں کا حال جو میں جانتا تھا سب اُنھیں تفصیل سے کہہ سنایا ۔ معلوم ہوتا تھا بڑے دھیان سے سن رہے ہیں اور جو جو میں کہتا ہوں سب پیتے جاتے ہیں ۔ بیچ بیچ میں اُنھوں نے کئی سوال بھی کئے ۔ اِس بات چیت میں کئی گھنٹے لگے دوپہر سے شام ہونے آئی ۔ کبھی کبھی وہ اُٹھ کر دوسرا کام بھی کرتے رہے ۔ پر جب جب میں نے اُن سے اُن کی رائے پوچھی اور اُن سے آگے کے لئے صلاح لینا چاہا تو لگ بھگ ہر بات پر وہ کچھ ایسا ہی جواب دیتے تھے—"میں تو راجنیتی نہیں سمجھتا ۔ میں تو دھرم جانتا ہوں ۔ سب کوں اپنے دھرم پر رہنا چاہئیے ۔ اپنا دھرم پالنا چاہئیے ۔ پاپ تو نہیں کرنا چاہئیے ۔ کسی کوں مارنا تو پاپ ہے " وغیرہ وغیرہ ۔ میں نے بار بار اور طرح طرح سے اُن سے پوچھنا چاہا کہ آخر ہندستان کو آزادی کیسے مل سکتی ہے ۔ ہر بار وہ کوئی نہ کوئی اِسی طرح کا فقرہ دوہرا دیتے تھے ۔ مجھ پر یہ اثر ضرور پڑا کہ وہ مجھ میں اور میری باتوں میں رس لے رہے تھے ۔ اُن کی آنکھوں میں مجھے بار بار ایک انوکھا سنیہہ اور اپنا پن دکھائی دیتا تھا ۔ معلوم ہوتا تھا وہ چاہتے ہیں میں اور ٹھہروں اور اُن سے باتیں کروں ۔ پر بار بار طوطے کی طرح رٹے ہوئے اُن کے وہی فقرے سن کر— "میں تو دھرم جانتا ہوں ۔ پاپ تو نہیں کرنا چاہئیے ۔ سب کوں اپنا دھرم پالنا چاہئیے" میں اُکتا گیا ۔ میرے اِس پوچھنے پر بھی کہ آخر دھرم ہے کیا چیز' وہ میری تسلی کا جواب نہ دے سکے ۔ مجھے اُن سے ایک طرح کی نفرت ہو گئی ۔ میں سوچنے لگا کہ دھرم ادھرم کے جن دقیانوسی خیالوں نے اِس ملک کو برباد کیا ہے اور اسے غلامی کے یہ دن دکھائے ہیں وہی خیال اِس آدمی کے اندر کوٹ کوٹ کر بھرے ہوئے ہیں ۔ میں نے من میں طے کر لیا کہ شام کی گاڑی سے سولن لوٹ جایا جائے ۔ آخر میں میں نے اُن سے کہا کہ میں آج ہی سولن واپس جا رہا ہوں ۔ میں نے اُن سے یہ بھی صاف کہہ دیا کہ میں آپ سے disappointed اور disgusted یعنی نراش ہو کر اور بیزار ہو کر جا رہا ہوں ۔ مجھے یاد ہے کہ میں نے انگریزی کے ہی یہی دونوں شبد اپیوگ کیئے تھے ۔ چلتے

करके सैकड़ों बरस तक भी इस उपजाऊ देश को छोड़कर नहीं जा सकती थी. कुछ बरसों के तजरबे ने अच्छी तरह दिखा दिया कि यह रास्ता थोड़ा-बहुत अंगरेज़ों के दिलों में हिंदुस्तानियों का डर भले ही पैदा कर दे, न जनता में जान फूँक सकता था, न उन्हें आज़ादी की लड़ाई के लिये तैयार कर सकता था और न देश को आज़ाद करा सकता था. इस दल के आम लोगों में एक गहरी निराशा छाई हुई थी.

सन् 1908 में लोकमान्य तिलक के जेल भेजे जाने ने इस दल को ख़ासा धक्का पहुँचाया था. सन 1910 में अरविन्द बाबू के कलकत्ता छोड़ के भागने से दल की हिम्मतें और पस्त हो गईं, अरविन्द बाबू के उस आख़री दिन मैं कलकत्ते में ही था और कई घन्टे उनके साथ रहा. सन 1912 के बाद दल के बहुत से लोग इधर-उधर आसाम की सरहद पर या हिमालय की तराई में छिपे दबे किसी तरह दिन काट रहे थे. जिस गली से वह चल रहे थे वह आगे बन्द दिखाई देती थी और दूसरा कोई रास्ता भी मुड़कर आज़ादी की मंज़िल तक पहुँचने का दिखाई न देता था.

इसी सिलसिले में सन 1912 से 1916 तक के दिन मैंने सोलन में काटे. दिल के अन्दर गहरी निराशा थी. जापान, रूस आयरलैंड और फ़्रान्स के इतिहासों के ख़ूब पन्ने लौटे पर अपने देश की आज़ादी का कोई रास्ता दिखाई न दिया.

[2]

सुनने में आया कि मिस्टर गांधी नाम के एक सज्जन इसी साल हिन्दुस्तान आए हैं. दक्खिन अफ़रीक़ा में वह वहाँ के हिन्दुस्तानियों के अधिकारों के लिए लड़ते रहे हैं और कामयाबी के साथ लड़ते रहे हैं. वहाँ की हिन्दुस्तानी जनता ने भी इनका ख़ूब साथ दिया है. क़ुदरती तौर पर उनसे मिलने की ख़्वाहिश दिल में पैदा हुई, इस उम्मीद में कि उनकी सलाह से शायद अपने देश की आज़ादी के लिये कोई आगे का रास्ता सूझे.

मैं अकेला सोलन से चला. सीधा अहमदाबाद पहुँचा. पता लगाया तो मालूम हुआ कि मिस्टर गांधी शहर के बाहर किसी छोटे से बँगले में रह रहे हैं. मैं वहाँ पहुँचा. मेरी गाँधीजी की यह पहली मुलाक़ात थी.

मुझे अब तक याद है वह एक छोटे से कमरे के अन्दर जिसका फ़र्श बीच-बीच में उखड़ा हुआ था, टाट का एक छोटा सा टुकड़ा बिछाए उस पर बैठे थे. एक छोटी सी मैली सी घुटनों तक की धोती बाँधे हुए थे. बाक़ी बदन

کر کے سیکڑوں برس تک بھی اِس اُپجاؤ دیش کو چھوڑ کر نہیں جا سکتی تھی ۔ کچھ برسوں کے تجربے نے اچھی طرح دکھا دیا کہ یہ راستہ تھوڑا بہت انگریزوں کے دلوں میں ہندستانیوں کا ڈر بھلے ہی پیدا کر دے، نہ جنتا میں جان پھونک سکتا تھا نہ اُنھیں آزادی کی لڑائی کے لئے تیار کر سکتا تھا اور نہ دیش کو آزاد کرا سکتا تھا۔ اِس دل کے عام لوگوں میں ایک گہری نراشا چھائی ہوئی تھی ۔

سن 1908 میں لوکمانیہ تلک کے جیل بھیجے جانے نے اِس دل کو خاصہ دھکا پہونچایا تھا ۔ سن 1910 میں اروند بابو کے کلکتہ چھوڑ کے بھاگنے سے دل کی ہمتیں اور پست ہو گئیں ۔ اروند بابو کے اس آخری دن میں کلکتہ میں ہی تھا اور کئی گھنٹے اُن کے ساتھ رہا ۔ سن 1912 کے بعد دل کے بہت سے لوگ اِدھر ادھر آسام کی سرحد پر یا ہمالیہ کی ترائی میں چھپے دبے کسی طرح دن کاٹ رہے تھے جس گلی سے وہ چل رہے تھے وہ آگے بند دکھائی دیتی تھی اور دوسرا کوئی راستہ بھی مڑ کر آزادی کی منزل تک پہونچنے کا دکھائی نہ دیتا تھا ۔

اِس سلسلے میں سن 1912 سے 1916 تک کے دن میں نے سولن میں کاٹے ۔ دل کے اندر گہری نراشا تھی ۔ جاپان، روس، آئرلینڈ اور فرانس کے اِتہاسوں کے خوب پنے لوٹے پر اپنے دیش کی آزادی کا کوئی راستہ دکھائی نہ دیا ۔

[2]

سننے میں آیا کہ مسٹر گاندھی نام کے ایک سجن اِسی سال ہندستان آئے ہیں ۔ دکھن افریقہ میں وہ وہاں کے ہندستانیوں کے ادھیکاروں کے لئے لڑتے رہے ہیں اور کامیابی کے ساتھ لڑتے رہے ہیں ۔ وہاں کی ہندستانی جنتا نے بھی اِن کا خوب ساتھ دیا ہے ۔ قدرتی طور پر اُن سے ملنے کی خواہش دل میں پیدا ہوئی، اِس اُمید میں کہ اُن کی صلاح سے شاید اپنے دیش کی آزادی کے لئے کوئی آگے کا راستہ سوجھے ۔

میں اکیلا سولن سے چلا ۔ سیدھا احمدآباد پہونچا ۔ پتہ لگایا تو معلوم ہوا کہ مسٹر گاندھی شہر کے باہر کسی چھوٹے سے بنگلے میں رہ رہے ہیں ۔ میں وہاں پہونچا ۔ میری گاندھی جی کی یہ پہلی ملاقات تھی ۔

مجھے اب تک یاد ہے کہ وہ ایک چھوٹے سے کمرے کے اندر جس کا فرش بیچ بیچ میں اُکھڑا ہوا تھا ٹاٹ کا ایک چھوٹا سا ٹکڑا بچھائے اُس پر بیٹھے تھے ۔ ایک چھوٹی سی میلی سی گھٹنوں تک کی دھوتی باندھے ہوئے تھے ۔ باقی بدن

से अंगरेज़ हिन्दुस्तानियों से सँभलकर बैठने लगे. इस आन्दोलन का सब से बड़ा अड्डा कलकत्ता था. कलकत्ते की इस नाखुशगवार हवा से बाहर निकलने के लिए अंगरेज़ों ने दिल्ली को राजधानी बनाया. दिल्ली में बड़े शानदार जलूस के साथ दाख़िल होते हुए जब उन्होंने मुग़लों के तीन सौ बरस के रोब को अपने ऊपर ओढ़ना चाहा तो सन 1912 के लार्ड हार्डिंग के बम ने फिर एकदम अंगरेज़ क़ौम की उस सारी शान और सारे मज़े को किरकिरा कर दिया. सारे हिन्दुस्तान में एक लहर सी दौड़ गई कि दिल्ली को राजधानी बनाना अंगरेज़ सरकार को रास नहीं आयेगा. बम और पिस्तौल की राह ने कुछ देर के लिये अपना कुछ न कुछ चमत्कार दिखलाया इससे इनकार नहीं किया जा सकता.

पर वह चमत्कार चन्द रोज़ से ज्यादह न ठहर सका. दिल्ली बम के बाद ही सरकार ने जो चौतरफ़ा दमन शुरू किया उससे मुल्क में फिर एक बार अन्धयारी छा गई और बढ़ती गई. उसके बाद भी कुछ हिम्मत वाले लोगों ने इधर उधर इसी तरह की चीज़ें जारी रखीं. पर पाँच सात बरस के तजरबे से उस दल के विचारवान लोगों ने देख लिया कि इन तरीक़ों से और जो कुछ भी हम कर पाएँ या न कर पायें अंगरेज़ी राज देश से नहीं मिटाया जा सकता. एक एक गुप्त हत्या का ठीक ठाक करने में बीस-बीस और तीस-तीस आदमियों की ज़रूरत पड़ती थी. सफलता हो भी गई तो पुलिस के सुराग़ लगाने पर क़रीब-क़रीब ना-मुमकिन था कि इनमें से कोई न कोई फूट न जावे. बरसों मुक़दमा चलने के बाद एक जान के बदले बीस-बीस और तीस-तीस देश भक्तों से ज़िन्दगी भर के लिये हाथ धो बैठना पड़ता था. जनता में जो लोग इनके काम से अन्दर-अन्दर हमदर्दी भी रखते थे वह इन सज़ाओं को देखकर सहम जाते थे. डकैतियों में एक-एक डकैती पर कभी-कभी इतना ख़र्च हो जाता था जितना वसूल न हो पाता था, फिर जो लोग जान पर खेल कर डकैती डालते थे उन्हीं में रुपये पैसे या हथियारों के बँटवारे पर या इनके ठीक-ठीक इस्तेमाल पर फिर वह सिर-फुटौवल होती थी कि जिस-से दिल फट जाते थे. पुलिस को अगर पता चलता था कि इस दल का कोई आदमी फलाँ गाँव में ठहरा था तो उस गाँव के लोगों पर वह मारें पड़ती थीं कि एक-एक गाँववाला पुलिस की चौकी पर जाकर नाक रगड़ता था और सरकार की वफ़ादारी की क़समें खाने लगता था. दल के समझदार लोगों को दिखाई दे गया कि जो अंगरेज़ क़ौम एक जंग में अपने हज़ारों आदमी कटवा सकती है और लाखों रुपये गोले बारूद पर ख़र्च कर सकती है वह इक्का-दुक्का आदमियों की साल दो साल के अन्दर जानें गँवा कर और वह भी इतनी ज़बरदस्त क़ीमत वसूल

میں انگریز ہندستانیوں سے سنبھل کر بیٹھنے لگے ۔ اِس آندولن کا سب سے بڑا اڈا کلکتہ تھا ۔ کلکتے کے اُس ناخوشگوار ہوا سے باہر نکلنے کے لئے انگریزوں نے دلی کو راجدھانی بنایا ۔ دلی میں بڑے شاندار جلوس کے ساتھ داخل ہوتے ہوئے جب اُنھوں نے مغلوں کے تین سو برس کے رعب کو اپنے اُوپر اوڑھنا چاہا تو سن 1912 کے لارڈ ہارڈنگ کے بم نے پھر ایکدم انگریز قوم کی اُس ساری شان اور سارے مزے کو کرکرا کر دیا ۔ سارے ہندستان میں ایک لہر سی دوڑ گئی کہ دلی کو راجدھانی بنانا انگریز سرکار کو راس نہیں آئیگا ۔ بم اور پستول کی راہ نے کچھ دیر کے لئے اپنا کچھ نہ کچھ چمتکار دکھلایا اِس سے اِنکار نہیں کیا جا سکتا ۔

پر وہ چمتکار چندروز سے زیادہ نہ ٹھہر سکا ۔ دلی بم کے بعد ہی سرکار نے جو چوطرفہ دمن شروع کیا اُس سے ملک میں پھر ایک بار اندھیاری چھا گئی' اور بڑھتی گئی ۔ اُس کے بعد بھی کچھ ہمت والے لوگوں نے اِدھر اُدھر اِسی طرح کی چیزیں جاری رکھیں ۔ پر پانچ سات برس کے تجربے سے اُس دل کے وچاروان لوگوں نے دیکھ لیا کہ اِن طریقوں سے' اور جو کچھ بھی ہم کر پائیں یا نہ کر پائیں انگریزی راج دیش سے نہیں مٹایا جا سکتا ۔ ایک ایک گپت ہتیا کا ٹھیک ٹھاک کرنے میں بیس بیس اور تیس تیس آدمیوں کی ضرورت پڑتی تھی ۔ سپھلتا ہو بھی گئی تو پولیس کے سراغ لگانے پر قریب قریب نامُمکن تھا کہ اُن میں سے کوئی نہ کوئی پھوٹ نہ جاوے ۔ برسوں مقدمہ چلنے کے بعد ایک جان کے بدلے بیس بیس اور تیس تیس دیش بھکتوں سے زندگی بھر کے لئے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑتا تھا ۔ جنتا میں جو لوگ اِن کے کام سے اندر اندر ہمدردی بھی رکھتے تھے وہ اِن سزاؤں کو دیکھ کر سہم جاتے تھے ۔ ڈکیتیوں میں ایک ایک ڈکیتی پر کبھی کبھی اِتنا خرچ ہو جاتا تھا جتنا وصول نہ ہو پاتا تھا' پھر جو لوگ جان پر کھیل کر ڈکیتیاں ڈالتے تھے اُنھیں میں روپئے پیسے یا ہتیاروں کے بٹوارے پر یا اِن کے ٹھیک ٹھیک استعمال پر پھر وہ سر پھٹول ہوتی تھی کہ جس سے دل پھٹ جاتے تھے ۔ پولیس کو اگر پتہ چلتا تھا کہ اِس دل کا کوئی آدمی فلاں گاؤں میں ٹھہرا تھا تو اُس گاؤں کے لوگوں پر وہ ماریں پڑتی تھیں کہ ایک ایک گاؤں والا پولیس کی چوکی پر جاکر ناک رگڑتا تھا اور سرکار کی وفاداری کی قسمیں کھانے لگتا تھا ۔ دل کے سمجھدار لوگوں کو دکھائی دے گیا کہ جو انگریز قوم ایک جنگ میں اپنے ہزاروں آدمی کٹوا سکتی ہے اور لاکھوں روپئے گولے بارود پر خرچ کر سکتی ہے وہ اِکا دکا آدمیوں کی سال دو سال کے اندر جانیں گنوا کر اور وہ بھی اِتنی زبردست قیمت وصول

गांधी जी के साथ पहली मुलाक़ातें

पंडित सुन्दरलाल

सन 1915 की बात है.

मैं सोलन में था. हिन्दुस्तान की राजनीति में उस समय दो ही दल थे. एक नरम दल जो इंगलिस्तान के बादशाह की वफ़ादारी की क़समें खाता था, अंगरेज़ सरकार के रहते अपने देश को शिक्षा प्रचार और समाज सुधार के ज़रिये ऊँचा ले जाना और मज़बूत करना चाहता था, और दरख़ास्तों और अरज़ी परचों के ज़रिये अंगरेज़ों से राज-काज में छोटे-मोटे अधिकार और नौकरियाँ लेकर अपने को सफल मानता था. कांगरेस इसी दल के हाथों में थी. दूसरा गरम दल जो स्वदेशी, अंगरेज़ी माल के बायकाट, क़ौमी तालीम और 'स्वराज' की प्यास लोगों में पैदा करके बम और पिस्तौल के ज़रिये इधर-उधर अंगरेज़ हाकिमों की हत्या करके और ख़ज़ानों वग़ैरा को लूटकर अंगरेज़ों को इस देश से निकाल देने की आशा करता था. इस दूसरे दल का जन्म बँगाल की तक़सीम के साथ-साथ सन 1905 में हुआ था. इस दल में बहुत से जान पर खेलने वाले नौजवान थे. उन्होंने अपनी समितियाँ बनाईं. कई अंगरेज़ों और उनके हिन्दुस्तानी मददगारों की जगह-जगह हत्याएँ कीं. ख़ज़ानों और हथियारों के गोदामों पर डाके डाले. मालूम होता है अच्छी और बुरी सभी चीज़ें अपने-अपने समय पर और अपनी जगह कुछ न कुछ उपयोग रखती हैं. शायद अच्छे और बुरे का फ़रक़ भी अन्धेरे और उजाले के फ़रक़ की तरह मौक़े और महल का ही फ़रक़ है. मुझे अच्छी तरह याद है कि सन 1907 से पहले अंग-रेज़ों का दबदबा और उनका घमन्ड कितना गहरा था और सारे देश पर किस तरह छाया हुआ था. बड़े से बड़े हिन्दु-स्तानी के लिए पहले या दूसरे दर्जे के रेल के किसी ऐसे डिब्बे में घुसने की हिम्मत करना जिसमें कोई अंगरेज़ पहले से बैठा हो एक ग़ैर मामूली बात थी और कोई भी छोटे से छोटा अंगरेज़ ऐसे मौक़े पर किसी बड़े से बड़े हिन्दुस्तानी का खुले अपमान कर सकता था. सन 1907 के खुदीराम बोस के मुज़फ़्फ़रपुर बम ने इस हालत को मानो जादू की तरह एक रात में बदल दिया. अंगरेज़ समझ गए कि यह कीड़ा काट भी सकता है. हिन्दुस्तानियों को इधर से उधर तक निराशा की अंधयारी घटा में आशा की एक बिजली सी कौंधती हुई दिखलाई पड़ गई. रेल के डिब्बों

گاندھی جی کے ساتھ پہلی ملاقاتیں

پنڈت سندر لال

سن 1915 کی بات ھے .

میں سولن میں تھا . ھندستان کی راجنیتی میں اُس سمے دو ھی دل تھے . ایک نرم دل جو اِنگلستان کے بادشاہ کی وفاداری کی قسمیں کھاتا تھا؛ انگریز سرکار کے رھتے اپنے دیش کو شکشا پرچار اور سماج سدھار کے ذریعہ اُونچا لیجانا اور مضبوط کرنا چاھتا تھا، اور درخواستوں اور عرضی پرچوں کے ذریعہ انگریزوں سے راجکاج میں چھوٹے موٹے ادھیکار اور نوکریاں لیکر اپنے کو سپھل مانتا تھا . کانگریس اُسی دل کے ھاتھوں میں تھی . دوسرا گرم دل جو سودیشی، انگریزی مال کے بائیکاٹ، قومی تعلیم اور 'سوراج' کی پیاس لوگوں میں پیدا کر کے بم اور پستول کے ذریعہ اِدھر اُدھر انگریز حاکموں کی ھتیا کر کے اور خزانوں وغیرہ کو لوٹ کر انگریزوں کو اِس دیش سے نکال دینے کی آشا کرتا تھا . اِس دوسرے کے دل کا جنم بنگال کی تقسیم کے ساتھ ساتھ سن 1905 میں ھوا تھا . اُس دل میں بہت سے جان پر کھیلنے والے نوجوان تھے . اُنھوں نے اپنی سمتیاں بنائیں . کئی انگریزوں اور اُن کے ھندستانی مددگاروں کی جگہہ جگہہ ھتیائیں کیں . خزانوں اور ھتھیاروں کے گوداموں پر ڈاکے ڈالے . معلوم ھوتا ھے اچھی اور بری سبھی چیزیں اپنے اپنے سمے پر اور اپنی جگہہ کچھ نہ کچھ اُپیوگ رکھتی ھیں . شاید اچھے اور برے کا فرق بھی اندھیرے اور اُجالے کے فرق کی طرح موقع اور محل کا ھی فرق ھے . مجھے اچھی طرح یاد ھے کہ سن 1907 سے پہلے انگریزوں کا دبدبہ اور اُن کا گھمنڈ کتنا گھرا تھا اور سارے دیش پر کس طرح چھایا ھوا تھا . بڑے سے بڑے ھندستانی کے لئے پہلے یا دوسرے درجہ کے ریل کے کسی ایسے ڈبے میں گھسنے کی ھمت کرنا جسمیں کوئی انگریز پہلے سے بیٹھا ھو ایک غیر معمولی بات تھی اور کوئی بھی چھوٹے سے چھوٹا انگریز ایسے موقع پر کسی بڑے سے بڑے ھندستانی کا کھلے اپمان کر سکتا تھا . سن 1907 کے خودی رام بوس کے مظفر پور بم نے اِس حالت کو مانو جادو کی طرح ایک رات میں بدل دیا . انگریز سمجھ گئے کہ یہ کیڑا کاٹ بھی سکتا ھے . ھندستانیوں کو اِدھر سے اُدھر تک نراشا کی اندھیاری گھٹا میں آشا کی ایک بجلی سی کوندتی ھوئی دکھائی پڑ گئی . ریل کے ڈبوں

अक्तूबर 1957 اکتوبر

जिल्द 24 جلد नम्बर 4 نمبر

अक्तूबर 1957 اکتوبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

'145 مٹھی گنج' الہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

be had from—

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD

इस नम्बर के खास लेख	اس نمبر [illegible] س لیکھ
गांधीजी के साथ पहली मुलाक़ातें	گاندھی جی کے ساتھ پہلی ملاقاتیں
—पंडित सुन्दरलाल	—پنڈت سندر لال
शहीदे आज़म बहादुरशाह की याद में	شہید اعظم بہادر شاہ کی یاد میں
—श्री डी राजन	—شری ڈی۔ راجن
1857 का देश भक्त अखबार 'पयामे आज़ादी'	1857 کا دیش بھکت اخبار 'پیام آزادی'
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشومبھر ناتھ پانڈے
हमारी राय—	ہماری رائے—
—गांधी जी के जनम दिन पर	گاندھی جی کے جنم دن پر—
—विश्वम्भरनाथ पांडे	وشومبھر ناتھ پانڈے

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत
(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान: स्व० श्री मंज़र अली सोख़्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:०:—

गान्धी बाबा
(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:०:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान
275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता
100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़
क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है
क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़
क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सो...
145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندی گھر

...پر ہر طرح کی کتابیں ملنے ...ک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی ... انگریزی کی من پسند کتابوں کے ...میں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت
(ہندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: سورگیہ شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:٥:—

گاندھی بابا
(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:٥:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران
275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا
100 صفحے دام بارہ آنے

...اتما گاندھی کے بلیدان سے سبق
قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے
قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق
قیمت دو آنے

...ستانی کلچر سوسائٹی
...مٹھی گنج الہ آباد

(2) एशिया और अफ्रीका की सरकारें यू० एन० ओ० की आने वाली जनरल एसम्बली के सामने यह तजवीज़ पेश करें कि इन तजरबों को बिना किसी शर्त के बन्द करके एक ऐसे समझौते की तरफ़ क़दम उठाया जावे जिस से दुनिया की सब फ़ौजें आम तौर पर ख़त्म की जा सकें.

(3) इस तरह के तजरबों की आगे की सब तजवीज़ें जिनमें एनीवेटाक एटालस की तजवीज़ भी शामिल हैं मनसूख़ कर दी जावें. ऐटमी शक्तियाँ, ऐटमी अड्डे बनाना और दूसरे देशों के फ़ौजी अड्डों में ऐटमी हथियार दाख़िल करना या ऐटमीसपोर्ट (Task force units) दाख़िल करना बन्द कर दें.

इन उद्देश्यों के पूरा हो जाने से विश्व शान्ति को और राष्ट्रों की आज़ादी को बहुत बड़ी मदद मिलेगी. इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिये एशिया और अफ्रीका के सब देशों को मिलकर पूरी कोशिश करनी चाहिये चाहे किसी देश के राजकाजी आदर्श या धार्मिक विचार कुछ भी क्यों न हों या किसी देश में कितने भी विचारों और धर्मों के लोग क्यों न रहते हों. एशिया और अफ्रीका के बाहर के लोगों का इसमें सहयोग प्राप्त करने के लिये भी हम पूरी कोशिश करेंगे.

अगस्त सन् 1957 —सुन्दरलाल

2. ایشیا اور افریقہ کی سرکاریں یو . این . او کی آنے والی جنرل اسمبلی کے سامنے یہ تجویز پیش کریں کہ ان تجربوں کو بنا کسی شرط کے بند کرکے ایک ایسے سمجھوتے کی طرف قدم اٹھایا جاوے جس سے دنیا کی سب فوجیں عام طور پر ختم کی جا سکیں .

3. اس طرح کے تجربوں کی آگے کی سب تجویزیں جن میں اینی ویٹاک ایٹالس کی تجویز بھی شامل ہے منسوخ کردی جاویں . ایٹمی شکتیاں، ایٹمی اڈے بنانا اور دوسرے دیشوں کے فوجی اڈوں میں ایٹمی ہتھیار داخل کرنا یا ایٹمی سپورٹ (Task Force Units) داخل کرنا بند کردیں .

ان ادیشوں کے پورا ہوجانے سے وشو شانتی کو اور راشٹروں کی آزادی کو بہت بڑی مدد ملے گی . ان ادیشوں کو پورا کرنے کے لئے ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں کو مل کر پوری کوشش کرنی چاہیے چاہے کسی دیش کے راج کاجی آدرش یا دھارمک وچار کچھ بھی کیوں نہ ہو یا دیش میں کتنے بھی وچاروں اور دھرموں کے لوگ کیوں نہ رہتے ہوں . ایشیا اور افریقہ کے باہر کے لوگوں کا اس میں سہیوگ پراپت کرنے کے لئے بھی ہم پوری کوشش کریں گے .

اگست سن 1957 —سندر لال

यद्यपि मिस्र पर फ़ौजी हमला कामियाब नहीं हुआ फिर भी बीच पूरब के देशों में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव अब भी कई शकलों में बढ़ रहा है.

(१) जापानियों के राष्ट्रीय भावों और उनकी ऐतिहासिक परम्पराओं के ख़िलाफ़ ओकीनावा टापुओं को जापान से अलग कर दिया गया है और उन्हें संयुक्त राज अमरीका के लिये ऐटमी अड्डा बनाया जा रहा है.

(२) संयुक्त राज अमरीका ने जारडन और अरब देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दख़ल देने के लिये अपना छटा जहाज़ी बेड़ा लबनान के समन्दर में भेज दिया है और उस बेड़े को ऐटमी हथियारों से लैस कर दिया है.

(३) ताईवान का टापू पीपुल्स रिपबलिक आफ़ चाइना का एक अंग और उसके जिस्म का एक टुकड़ा है. फिर भी ऐटमी मिसाइल "मेटेडोर" ताईवान भेज दिया गया. दक्खिन कोरिया में भी लड़ाई बन्द समझौते के ख़िलाफ़ ऐटमी हथियार दाख़िल किये जा रहे हैं.

बड़ी-बड़ी ताक़तों की युद्ध नीति ऐटमी युद्ध की तरफ़ जा रही है. जो फ़ौजी अड्डे फ़ौजी गुट बन्दियों की ज़रूरत के लिये क़ायम किये गए हैं उनमें अब ऐटमी युद्ध का सामान जमा किया जा रहा है और वे ऐटमी अड्डे बन रहे हैं. विदेशी ऐटमी अड्डों का बनाया जाना और दूसरे देशों में ऐटमी हथियारों का दाख़िल किया जाना इन देशों की स्वधीनता पर एक हमला है इससे ऐटमी युद्ध का ख़तरा बढ़ता जाता है.

एशिया और अफ़्रीका के किसी देश में भी नए ऐटमी अड्डों का क़ायम किया जाना एशिया और अफ़्रीक़ा के सारे इलाक़े के लिये ख़तरनाक है.

शान्त महासागर में सारी एशियाई और अफ़्रीक़ी क़ौमों की इच्छा के विरुद्ध ऐटमी और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे जारी हैं.

ऐटमी शक्तियाँ अपने इलाक़ों से बहुत दूर अपने को नुक़सान से बचाने के लिये शान्त महासागर में यह तजुरबे कर रही हैं. इन तजरबों का ज़हरीला असर एशिया और अफ़्रीक़ा के लोगों पर पड़ रहा है. यह तजरबे इसलिये किये जा रहे हैं कि करोड़ों लोगों को एक साथ कैसे ख़त्म किया जा सके. संयुक्त राज अमरीका अगले साल एनीवेटाक एटाल्स (Eniwetok Atolls) में एक बड़े पैमाने पर इस तरह के तजरबे करने की तजवीज़ कर रहा है.

इन हालतों में हम एशिया और अफ़्रीक़ा के नुमाइन्दे माँग करते हैं कि:

(1) ऐटमी शक्तियाँ बिना किसी शर्त के इन तजरबों को बन्द करें.

یدپی مصر پر فوجی حملہ کامیاب نہیں ہوا پھر بھی بیچ پورب کے دیشوں میں انٹر راشٹریہ تناؤ اب بھی کئی شکلوں میں بڑھ رہا ہے ۔

(1) جاپانیوں کے راشٹریہ بھاؤں اور اُن کی اتہاسک پرمپراؤں کے خلاف اوکی ناوا ٹاپوں کو جاپان سے الگ کر دیا گیا ہے اور انہیں سنیکت راج امریکہ کے لئے ایٹمی اڈا بنایا جا رہا ہے ۔

(2) سنیکت راج امریکہ نے جارڈن اور عرب دیشوں کے اندر کے معاملوں میں زبردستی دخل دینے کے لئے اپنا چھٹا جہازی بیڑا لبنان کے سمندر میں بھیج دیا ہے اور اُس بیڑے کو ایٹمی ہتھیاروں سے لیس کر دیا ہے ۔

(3) تائی وان کا ٹاپو پیپلس ری پبلک آف چائنا کا ایک انگ اور اُس کے جسم کا ایک ٹکڑا ہے ۔ پھر بھی ایٹمی مسائل "میٹیڈور" تائی وان بھیج دیا گیا ۔ دکھن کوریا میں بھی لڑائی بند سمجھوتے کے خلاف ایٹمی ہتھیار داخل کئے جا رہے ہیں ۔

بڑی بڑی طاقتوں کی یدھ نیتی ایٹمی یدھ کی طرف جا رہی ہے ۔ جو فوجی اڈے فوجی گٹ بندیوں کی ضرورتوں کے لئے قائم کئے گئے ہیں اُن میں اب ایٹمی یدھ کا سامان جمع کیا جا رہا ہے اور وے ایٹمی اڈے بن رہے ہیں ۔ ودیشی ایٹمی اڈوں کا بنایا جانا اور دوسرے دیشوں میں ایٹمی ہتھیاروں کا داخل کیا جانا ان دیشوں کی سوادھینتا پر ایک حملہ ہے اِس سے ایٹمی یدھ کا خطرہ بڑھتا جاتا ہے ۔

ایشیا اور افریقہ کے کسی دیش میں بھی نئے ایٹمی اڈوں کا قائم کیا جانا ایشیا اور افریقہ کے سارے علاقے کے لئے خطرناک ہے ۔

شانت مہا ساگر میں ساری ایشیائی اور افریقی قوموں کی اِچھا کے ورودھ ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے جاری ہیں ۔

ایٹمی شکتیاں اپنے علاقوں سے بہت دور اپنے کو نقصان سے بچانے کے لئے شانت مہا ساگر میں یہ تجربے کر رہی ہیں ۔ اِن تجربوں کا زہریلا اثر ایشیا اور افریقہ کے لوگوں پر پڑ رہا ہے ۔ یہ تجربے اِس لئے کئے جا رہے ہیں کہ کروڑوں لوگوں کو ایک ساتھ کیسے ختم کیا جا سکے۔ سنیکت راج امریکہ اگلے سال اینی ویٹاک ایٹالس (Eniwetok Atolls) میں ایک بڑے پیمانے پر اِس طرح کے تجربے کرنے کی تجویز کر رہا ہے ۔

اِن حالتوں میں ہم ایشیا اور افریقہ سے مانگ کرتے ہیں کہ :

1. ایٹمی شکتیاں بنا کسی شرط کے اِن تجربوں کو بند کریں ۔

विचारकों से बातचीत के आधार पर कह रहे हैं. जापानी लोग साहसी हैं, नेक हैं, बहादुर हैं, मेहनती हैं, होशियार हैं, प्रेमी हैं और उन्नतिशील हैं. इस समय सारे एशिया की, अफ़रीक़ा की और दुनिया के सब स्वतन्त्रता प्रेमी और न्याय प्रेमी लोगों को उनके साथ पूरी हमदरदी है. हमें विश्वास है कि जापान बहुत जलदी ही फिर से पूरी तरह आज़ाद होगा और एशिया और अफ़रीक़ा के दूसरे देशों के साथ मिलकर दुनिया के सब देशों और सब लोगों की आज़ादी, ख़ुशहाली और यकजेहती को फिर से क़ायम करने में बहुत बड़ा हिस्सा लेगा.

وچارکوں سے بات چیت کے آدھار پر کہہ رہے ہیں ۔ جاپانی لوگ ساہسی ہیں، نیک ہیں، بہادر ہیں، محنتی ہیں، ہوشیار ہیں، پریمی ہیں اور انّتی شیل ہیں ۔ اس سمے سارے ایشیا کی افریقہ کی اور دنیا کے سب سوتنترتا پریمی اور نیائے پریمی لوگوں کو اُن کے ساتھ پوری ہمدردی ہے ۔ ہمیں وشواس ہے کہ جاپان بہت جلدی ہی پھر سے پوری طرح آزاد ہوگا اور ایشیا اور افریقہ کے دوسرے دیشوں کے ساتھ مل کر دنیا کے سب دیشوں اور سب لوگوں کی آزادی خوشحالی اور یکجہتی کی پھر سے قائم کرنے میں بہت بڑا حصہ لیگا ۔

एशिया और अफ़्रीक़ा के प्रतिनिधियों का एलान, तोकियो 16-8-57

अगस्त सन् १९५७ के तोक्यो विश्व सम्मेलन में एशिया और अफ़्रीक़ा के जो नुमाइन्दे जमा हुये थे उन्हों ने मिलकर नीचे लिखा ऐलान शाया किया.

हम एशिया और अफ़्रीक़ा के देशों के नुमाइन्दे जो ऐटम और हाइड्रोजिन बम के ख़िलाफ़ और फ़ौजों को ख़त्म करने के पक्ष में तीसरे विश्व सम्मेलन के मौक़े पर तोक्यो में जमा हुए हैं नीचे लिखा ऐलान शाया करते हैं.

एशिया और अफ़्रीक़ा की क़ौमों की सभ्यता बहुत प्राचीन सभ्यता है. यह क़ौमें अब सब की आज़ादी और विश्व शान्ति का एक नया युग लाने की कोशिश कर रही हैं.

सन १९५५ में एशिया और अफ़्रीक़ा की २९ सरकारों के नुमाइन्दे बानडुंग कानफ़्रेन्स में जमा हुए थे. उन्होंने यह प्रस्ताव पास किया था कि ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों का उपयोग न किया जाय और एक देश के लोगों का दूसरे देश के लोगों पर राज करना बन्द किया जावे. इन देशों की डेढ़ अरब जनता का संकल्प इस प्रस्ताव के पीछे था.

हाल में एशिया और अफ़्रीक़ा के देशों में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन से इस इलाक़े की आज़ादी और शान्ति ख़तरे में पड़ गई है.

ایشیا اور افریقہ کے پرتی ندھیوں کا اعلان توکیو 16-8-57

اگست سن 1957 کے توکیو وشو سمیلن میں ایشیا اور افریقہ کے جو نمائندے جمع ہوئے تھے انہوں نے مل کر نیچے لکھا اعلان شائع کیا ۔

ہم ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کے نمائندے جو ایٹم اور ہائڈروجن بم کے خلاف اور فوجوں کو ختم کرنے کے پکش میں تیسرے وشو سمیلن کے موقع پر توکیو میں جمع ہوئے ہیں نیچے لکھا اعلان شائع کرتے ہیں ۔

ایشیا اور افریقہ کی قوموں کی سبھیتا بہت پراچین سبھیتا ہے یہ قومیں اب سب کی آزادی اور وشو شانتی کا ایک نیا یگ لانے کی کوشش کر رہی ہے ۔

1955 میں ایشیا اور افریقہ کی 29 سرکاروں کے نمائندے بانڈنگ کانفرنس میں جمع ہوئے تھے ۔ انہوں نے یہ پرستاؤ پاس کیا تھا کہ ایٹم اور ہائڈروجن میں ہتھیار کا اپیوگ نہ کیا جائے اور ایک دیش کے لوگوں کا دوسرے دیش کے لوگوں پر راج کرنا بند کیا جاوے ۔ اِن دیشوں کی ڈیڑھ ارب جنتا کا سنکلپ اِس پرستاؤ پیچھے تھا ۔

حال میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں میں کچھ ایسی گھٹنائیں ہوئی ہیں جن سے اِس علاقے کی آزادی اور شانتی خطرے میں پڑ گئی ہے ۔

तीनों खास प्रस्तावों के पास हो जाने के बाद, सम्मेलन समाप्त होने से पहले, "अब और हिरोशिमा नहीं होने देंगे"—ना· का जापानी गाना पूरे बीस हजार आदमियों ने खड़े होकर बड़े जोश और एक आवाज के साथ गाया. गाते समय सब एक दूसरे की बाहों में बाहें डालकर जंजीरे की तरह बँधे हुए थे और गाने के स्वर के साथ-साथ सबके सब दाँए और बाँए को झुकते जाते थे. बिलकुल समन्दर की सी लहरें मालूम होती थीं. जनता की संकल्प शक्ति और जोश दोनों सीमा को लाँघते हुए दिखाई दे रहे थे।

जापान की इस यात्रा में हमने जो खास चीजें देखीं उनमें से एक यह भी थी कि नागासाकी में ठीक उस जगह जिस जगह बारह वर्ष पहले बम गिराया गया था आज एक बड़ी सुन्दर और ऊँची पत्थर की मूर्ति बनी हुई है. मूर्ति शायद लगभग दस फुट ऊँचे खंबे-नुमा चबूतरे पर बैठे हुए आसन में है. एक पैर नीचे लटक रहा है. दूसरा पैर पालथी में है. बदन नंगा है. केवल एक छोटी सी धोती पत्थर ही में खुदी हुई कमर से लिपटी है. उस धोती का एक सिरा बाँए कंधे पर पड़ा है. दाहना हाथ ऊपर की तरफ़ उठा हुआ अंगूठे के पास की उँगली से आसमान की तरफ़ इशारा करता मालूम होता है. बाँयाँ हाथ सीधा फैला हुआ है. हथेली नीचे की तरफ़ है. हमने जापानी मित्रों से इसका मतलब पूछा. हमें बताया गया कि दाहना हाथ ईश्वर की तरफ़ इशारा करता है और बायाँ शान्ति की तरफ़. कहा गया कि मूर्ति शान्ति के उस देवता की मूर्ति है जो ईश्वर से सब के भले और विश्व शान्ति के लिये प्रार्थना कर रहा है. मूर्ति को देखकर बिलकुल महात्मा गाँधी की याद आ-जाती है. माथे पर ठीक बीच में कुछ उभरा हुआ निशान है. हमने पूछा यह क्या है तो हमें बताया गया कि हिन्दुओं का तिलक.

जापन में एक "गाँधी पीस लीग" नाम की संस्था भी क़ायम है जिसके एक खास कार्यकर्ता रैवरैण्ड शोजुन मीबु हैं जो हमसे मिले थे.

जापान जाकर जापानी जाति के लिये आदर और जापानियों से प्रेम हमारे दिल में बहुत बढ़ा. जापानी एशियाई हैं. उनका रहन सहन एशियाई है. उनका दिल एशियाई है. इसमें सन्देह नहीं पिछली दो तीन पीढ़ियों के अन्दर जापान अधिक से अधिक पच्छिमीयता यानी मग़रबीयत की तरफ़ बढ़ चला था. इसी कारण पूरब के दूसरे देशों से वह कुछ कट सा गया था. लेकिन इसमें भी शक नहीं कि जापान को अपनी इस ग़लती के लिये—और ग़लतियाँ हम सबसे होती हैं—काफ़ी से कहीं अधिक दण्ड भुगतना पड़ा है. जापान आज अन्याय पीड़ित है. जापान के अधिकतर विचारवान लोग अपनी ग़लती को भी अच्छी तरह महसूस कर रहे हैं. हम यह जापानी

تینوں خاص پرستاؤں کے پاس ہو جانے کے بعد، سمیلن سماپت ہونے سے پہلے، "اب اور ھیرو شما نہیں ہونے دینگے"— نام کا جاپانی گانا پورے بیس ہزار آدمیوں نے کھڑے ہو کر بڑے جوش اور ایک آواز کے ساتھ گایا۔ گاتے سمے سب ایک دوسرے کی باہوں میں باہیں ڈال کر زنجیرے کی طرح بندھے ہوئے تھے اور گانے کے سور میں ساتھ ساتھ سب کے سب داہیں اور بائیں کو جھکتے جاتے تھے۔ بالکل سمندر کی سی لہریں معلوم ہوتی تھیں۔ جنتا کی سنکلپ شکتی اور جوش دونوں سیما کو لانگتے ہوئے دکھائی دے رہے تھے۔

جاپان کی اِس یاترا میں ہم نے جو خاص چیز دیکھی اُن میں سے ایک یہ بھی تھی کہ ناگا ساکی میں ٹھیک اُس جگہ جس جگہ بارہ برس پہلے بم گرایا گیا تھا آج ایک بڑی سندر اور اونچی پتھر کی مورتی بنی ہوئی ہے۔ مورتی شاید لگ بھگ دس فٹ اونچے کھمبے—نما چبوترے پر بیٹھے ہوئے آسن میں ہے؛ ایک پیر نیچے لٹک رہا ہے۔ دوسرا پیر پالتھی میں ہے۔ بدن ننگا ہے۔ کیول ایک چھوٹی سی دھوتی پتھر ہی میں کھدی ہوئی کمر سے لپٹی ہے۔ اُس دھوتی کا ایک سرا بائیں کندھے پر پڑا ہے۔ داہنا ہاتھ اوپر کی طرف اُٹھا ہوا انگوٹھے کے پاس کی اُنگلی سے آسمان کی طرف اشارہ کرتا معلوم ہوتا ہے۔ بایاں ہاتھ سیدھا پھیلا ہوا ہے۔ ھتیلی نیچے کی طرف ہے۔ ہم نے جاپانی متروں سے اِس کا مطلب پوچھا۔ ہمیں بتایا گیا کہ داہنا ہاتھ ایشور کی طرف اشارہ کرتا ہے اور بایاں شانتی کی طرف، کہا گیا کہ مورتی شانتی کے اُس دیوتا کی مورتی ہے جو ایشور سے سب کے بھلے اور وشو شانتی کے لئے پرارتھنا کر رہا ہے۔ مورتی کو دیکھ کر بالکل مہاتما گاندھی کی یاد آجاتی ہے۔ ماتھے پر ٹھیک بیچ میں کچھ اُبھرا ہوا نشان ہے۔ ہم نے پوچھا یہ کیا ہے تو ہمیں بتایا گیا کہ ہندؤں کا تلک۔

جاپان میں ایک "گاندھی پیس لیگ" نام کی سنستھا بھی قائم ہے جس کے ایک خاص کاریہ کرتا ریورینڈ شوجن میبو ہیں جو ہم سے ملے تھے۔

جاپان کے جاپانی جاتی کے لئے ادر اور جاپانیوں سے پریم ہمارے دل میں بہت بڑھا۔ جاپانی ایشیائی ہیں اُن کا رہن سہن ایشیائی ہے۔ اُن کا دل ایشیائی ہے۔ اِس میں سندیہ نہیں پچھلی دو تین پیڑھیوں کے اندر جاپان ادھک سے ادھک پچھمیتا یعنی مغربیت کی طرف بڑھ چلا تھا۔ اِسی کارن پورب کے دوسرے دیشوں سے وہ کچھ کٹ سا گیا تھا۔ لیکن اِس میں بھی شک نہیں کہ جاپان کو اپنی اُس غلطی کے لئے— اور غلطیاں ہم سب سے ہوتی ہیں— کافی سے کہیں ادھک ڈنڈ بھگتنا پڑا ہے۔ جاپان آج انیائے پیڑت ہے۔ جاپان کے ادھک تر وچاروان لوگ اپنی غلطی کو بھی اچھی طرح محسوس کر رہے ہیں۔ ہم یہ جاپانی

(ब) "इस तरह के जलसों की कार्रवाई सीधे या मुख़्तलिफ़ देशों की सरकारों की मारफ़त यू० एन० ओ० के पास भेजी जावे."

(स) "इस तरह का आन्दोलन हर देश के लोग अपने अपने ढंग से करें ताकि अधिक से अधिक जनता इस आन्दोलन में साथ दे सके".

इस प्रस्ताव में यू० एन० ओ० की उस "डिस आरमामेंट सब कमेटी" यानी '.फ़ौज, तोड़ सब-कमेटी" का भी ज़िक्र किया गया है जो लन्दन में हो रही है, जिसमें पाँच राष्ट्र शामिल हैं और जिसकी यही ग़रज़ है कि इन तजरबों को बन्द किया जावे और .फ़ौजों को ख़त्म करने की तरफ़ क़दम बढ़ाया जावे.

दुनिया के लोगों से सिफ़ारिश की गई है कि वह अपनी-अपनी सरकारों पर ज़ोर दें कि वे यू० एन० ओ० जनरल एसम्बली से और लन्दन की सब-कमेटी से इस काम को पूरा करावें.

इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि इस बारे में सब देशों और सब क़ौमों को मिलकर काम करना चाहिये, ख़ासकर :—

(1) दुनिया के साइन्सदानों ने इस बारे में जो खोज की है उसके नतीजों को सब देशों में फैलाया जावे और जहाँ तक हो सके जलदी साइन्सदानों की एक अन्तर राष्ट्रीय बैठक की जावे.

(2) सब देशों के धार्मिक नेताओं, स्त्रियों, विद्यार्थियों, मज़दूरों, मछियारों, किसानों वग़ैरह से सिफ़ारिश की गई है कि वह इस नेक और ज़रूरी काम के लिये दूसरे देशों के इसी तरह के लोगों के साथ मिलकर काम करें.

इस प्रस्ताव में एशिया और अफ़रीक़ा के देशों और शान्त महासागर यानी पैसफ़िक ओशन के किनारे के लोगों से ख़ास तौर पर सिफ़ारिश की गई है कि वह इस काम के लिये मिलकर खड़े हो जाएं "क्योंकि हाल में इस तरह के जो तजरबे हुए हैं वह अधिकतर इसी इलाक़े में हुए हैं और इसी इलाक़े में ऐटम और हाइड्रोजिन हथियार अधिकतर दाख़िल किये जा रहे हैं. ख़ासकर ओकीनावा, कोरिया और दूसरी जगहों के .फ़ौजी अड्डों में ऐटमी युद्ध की तैयारीयाँ जारी है."

"हम इस बात को भी ज़रूरी समझते हैं कि इन मक़सदों को पूरा करने के लिये जहाँ तक हो सके जलदी दूसरी अफ़रीक़ा-एशियन कानफ़रेन्स की जावे.

इस प्रस्ताव के आख़ीर में उन लोगों की मदद के लिये भी अपील की गई है जिन्हें इस तरह के बमों और तजरबों से नुक़सान पहुँचा है.

ب—"اِس طرح کے جلسوں کی کاروائی سیدھے یا مختلف دیشوں کی سرکاروں کی معرفت یو . این . او کے پاس بھیجی جائے .

س—"اِس طرح کا آندولن ہر دیش کے لوگ اپنے اپنے ڈھنگ سے کریں تاکہ ادھک سے ادھک جنتا اِس اندولن میں ساتھ دے سکے" .

اِس پرستاؤ میں یو . این . او کی اُس "ڈس آرمامنٹ سب کمیٹی" یعنی فوج توڑ سب کمیٹی" کا بھی ذکر کیا گیا ھے جو لندن میں ہو رہی ھے' جس میں پانچ راشٹر شامل ھیں اور جس کی یہی غرض ھے کہ اُن تجربوں کو بند کیا جاوے اور فوجوں کو ختم کرنے کی طرف قدم بڑھایا جاوے .

دنیا کے لوگوں سے شفارش کی گئی ھے کہ وہ اپنی اپنی سرکاروں پر زور دیں کہ وے یو . این . او کی جنرل اسمبلی سے اور لندن کی سب کمیٹی سے اِس کام کو پورا کراویں .

اِس بات پر زور دیا گیا ھے کہ اِس بارے میں سب دیشوں اور سب قوموں کو مل کر کام کرنا چاہئے' خاص کر :

1. دنیا کے سائنسدانوں نے اِس بارے میں جو کھوج کی ھے اُس کے نتیجوں کو سب دیشوں میں پھیلایا جاوے اور جہاں تک ہو سکے جلدی سائنسدانوں کی ایک انتر راشٹریہ بیٹھک کی جاوے .

2. سب دیشوں کے دھارمک نیتاؤں' استریوں' ودیارتھیوں مزدوروں' مچھیاروں' کسانوں وغیرہ سے شفارش کی گئی ھے کہ وہ اِس نیک اور ضروری کام کے لئے دوسرے دیشوں کے اِسی طرح کے لوگوں کے ساتھ مل کر کام کریں :

اِس پرستاؤ میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں اور شانتی مہاساگر یعنی پیسفک اوشن کے کنارے کے لوگوں سے خاص طور پر شفارش کی گئی ھے کہ وہ اِس کام کے لئے مل کر کھڑے ہو جائیں کیونکہ "حال میں جو اِس طرح کے تجربے ہوئے ھیں وہ ادھک تر اِسی علاقے میں ہوئے ھیں اور اِسی علاقے میں ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیار ادھک تر داخل کئے جارہے ھیں . خاص کر اوکی ناوا' کوریا اور دوسری جگہوں کے فوجی اڈوں میں ایٹمی یدھ کی تیاریاں جاری ھیں" .

"ہم اِس بات کو بھی ضروری سمجھتے ھیں کہ ہم مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے جہاں تک ہو سکے جلدی دوسری افریکہ-ایشین کانفرنس کی جاوے ."

اِس پرستاؤ کے آخر میں اُن لوگوں کی مدد کے لئے بھی اپیل کی گئی ھے جنھیں اِس طرح کے بموں اور تجربوں سے نقصان پہنچا ھے .

इस अपील में लिखा है कि "दुनिया के सब लोग इस बात के लिये उत्सुक हैं कि क़ौमों-क़ौमों के बीच तनाव घटे, दुनिया की फ़ौजें ख़त्म हों और ऐटम और हाइड्रोजन बम ख़त्म हों".

इसके लिये सब से पहली जरूरत इस बात की बताई गई है कि "ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे .फ़ौरन बन्द किये जावें". क्योंकि "इन तजरबों से ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों की दौड़ तेज होती जा रही है, और दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य का ख़तरा बढ़ता जा रहा है".

इसके बाद इस अपील में कहा गया है कि 'जापान के लोग तीन बार इन बमों की बरबादी बरदाश्त कर चुके हैं, इसलिये सब महाद्वीपों के नुमाइन्दों के साथ मिलकर हम, जिनमें हिरोशिमा और नागासाकी के जख़्मी लोग भी शामिल हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ से और दुनिया की सरकारों से यह मांग करते हैं कि :

"अमरीका, इंगलैंड और सोवियत रूस .फ़ौरन और बिना किसी शर्त के आपस में यह समझौता करें कि ऐटम और हाइड्रोजिन बम के तजरबे बन्द कर दिये जावें.

"इस तरह का समझौता कराने में यू० एन० ओ० अपनी पूरी ताक़त लगा दे.

और "दुनिया की सरकारें इस तरह का समझौता कराने की हर तरह से कोशिश करें"

अन्त में कहा गया कि :—"इस तरह का समझौता होजाने से ऐटम और हाइड्रोजन बमों का बनाना, जमा करना और काम में लाना भी बन्द हो सकेगा और आम तौर पर फ़ौजों के ख़त्म करने के लिये रास्ता साफ़ हो जायगा".

और "उन सब लोगों के नाम पर जो दुनिया की शान्ति और ख़ुशहाली चाहते हैं, यू० एन० ओ० से और दुनिया की सरकारों से अपील करते हैं कि वह हमारी आवाज़ की तरफ़ ध्यान दें".

तीसरे प्रस्ताव में ऐटम और हाइड्रोजिन बम को बन्द कराने और दुनिया की फ़ौजों का ख़त्म कराने के लिये दुनिया के सब लोगों से मिलकर काम करने की सिफ़ारिश की गई है.

इस प्रस्ताव में कहा गया है कि "यू० एन० ओ० की जनरल ऐसेम्बली पर जोर डालने के लिये और तीनों ऐटमी देशों से इन तजरबों को बन्द कराने के लिये दुनिया के लोगों को नीचे लिखे काम करने चाहिये :

(अ) "अक्तूबर और नवम्बर के महीनों में तारीख़ें मुक़र्रर करके जलसे वग़ैरह करके यह माँग की जावे कि इन तजरबों को .फ़ौरन और बिना शर्त के बन्द किया जाय."

اِس اپیل میں لکھا ہے کہ "دنیا کے سب لوگ اِس بات کے لئے اُتسک ہیں کہ قوموں کے بیچ تناؤ گھٹے، دنیا کی فوجیں ختم ہوں اور ایٹم اور ہائڈروجن بم ختم ہوں."

اِس کے لئے سب سے پہلی ضرورت اِس بات کی بتائی گئی ہے کہ "ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے فوراً بند کئے جائیں." کیونکہ تجربوں سے ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیاروں کی دوڑ تیز ہوتی جا رہی ہے' اور دنیا کے لوگوں کے سوانتھ کو خطرہ بڑھتا جا رہا ہے."

اِس کے بعد اپیل میں کہا گیا ہے کہ' جاپان کے لوگ تین بار اِن بموں کی بربادی برداشت کر چکے ہیں' اِس لئے سب مہادیپوں کے نمائندوں کے ساتھ مل کر ہم' جن میں ہیروشما اور ناگا ساکی کے زخمی لوگ بھی شامل ہیں' سنگیت راشٹر سنگھ سے اور دنیا کی سرکاروں سے یہ مانگ کرتے ہیں کہ :—

"امریکہ' انگلینڈ اور سویٹ روس فوراً اور بنا کسی شرط کے آپس میں یہ سمجھوتا کریں کہ ایٹم اور ہائڈروجن بم کے تجربے بند کر دئے جاویں .

' اِس طرح کا سمجھوتا کرانے میں یو. این. او اپنی پوری طاقت لگا دے .

اور "دنیا کی سرکاریں اِس طرح کا سمجھوتا کرانے کی ہر طرح سے کوشش کریں" .

انت میں کہا گیا ہے کہ :—"اِس طرح کا سمجھوتا ہوجانے سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کا بنانا' جمع کرنا اور کام میں لانا بھی بند ہو سکے گا اور عام طور پر فوجوں کے ختم کرنے کے لئے راستہ صاف ہو جائیگا" .

اور "اُن سب لوگوں کے نام پر جو دنیا کی شانتی اور سب کی خوش حالی چاہتے ہیں' یو . این . او سے اور دنیا کی سرکاروں سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ ہماری آواز کی طرف دھیان دیں" .

تیسرے پرستاؤ میں ایٹم اور ہائڈروجن بم کو بند کرانے اور دنیا کی فوجوں کو ختم کرانے کے لئے دنیا کے سب لوگوں سے مل کر کام کرانے کی سفارش کی گئی ہے .

اِس پرستاؤ میں کہا گیا ہے کہ "یو این . او کی جنرل اسمبلی پر زور ڈالنے کے لئے اور تینوں ایٹمی دیشوں سے اِن تجربوں کو بند کرانے کے لئے دنیا کے لوگوں کو نیچے لکھے کام کرنے چاہئیں .

الف— "اکتوبر اور نومبر کے مہینوں میں تاریخیں مقرر کرکے جلسے وغیرہ کرکے یہ مانگ کی جاوے کہ اِن تجربوں کو فوراً اور بنا شرط بند کیا جائے .

तोक्यो सम्मेलन के आखिरी फ़ैसले भी दुनिया के लिये बहुत ही अधिक महत्व के थे. 16 अगस्त सन् 1957 का कम से कम बीस हज़ार जनता की मौजूदगी में सम्मेलन में तीन प्रस्ताव एक राय से पास हुए. प्रस्तावों के पास होने के समय जनता का जोश देखने ही की चीज़ थी.

पहला प्रस्ताव सम्मेलन की तरफ़ से एक एलान के रूप में था जिसे 'तोक्यो का एलान' कहा गया. इस एलान के अन्दर सम्मेलन में शामिल होने वाले सब देशों के सब प्रतिनिधियों का एक उद्देश्य 'एटमी युद्ध की सब तैयारियों को ख़तम करना' बताया गया है. और यह मांग की गई कि :—

(1) "जो सरकारें इस तरह के बमों के तजरबे कर रही हैं वे आपस में एक तरह का समझौता करें जिससे ऐटम और हाईड्रोजन बमों के तजरबे फ़ौरन और बिना किसी शर्त के बन्द कर दिये जावें".

(2) "ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों का बनाना, जमा करना और काम में लाना बिल्कुल बन्द कर दिया जावे".

(3) "जिन राष्ट्रों के पास इस तरह के हथियार हैं वह किसी दूसरे देशों में इन हथियारों को हरगिज़ दाख़िल करने न पावें".

(4) "आम तौर पर सब देशों की फ़ौजें ख़तम कर दी जावें और इस काम पर इस तरह की निगरानी रहे जिसे सब देश मन्ज़ूर कर लें, यदि इस तरह सारी फ़ौजों का ख़तम करना अभी सम्भव नहीं है तो फ़िलहाल कम से कम सब देशों की फ़ौजों को कम करने का समझौता कर लिया जावे".

(5) "दूसरे देशों में फ़ौजी अड्डे क़ायम करने और उन्हें बढ़ाने के हम ख़िलाफ़ हैं".

(6) "हम इस बात को समझते हैं कि सब अलग-अलग फ़ौजी दलों और अखाड़ों को एक साथ तोड़ देने से, सब फ़ौजी अड्डों को ख़तम कर देने से और सब दूसरे देशों से अपनी-अपनी फ़ौजों को हटा लेने से ऐटमी युद्ध का ख़तरा कम हो जावेगा"

इसके बाद इस एलान में एक ऐसे भविष्य की मांग की गई है जिससे हिरोशिमा और नागासाकी के शहीदों की आत्माओं को शान्ति मिले. और "हर तरह के युद्ध को नाजायज़ क़रार देना और बन्द कराना "अपना आख़री मक़सद" बनाया गया है.

दूसरा प्रस्ताव "संयुक्त राष्ट्र संघ यानी यू० एन० ओ० और दुनिया की सरकारों के नाम एक अपील" की शक्ल में है.

توکیو سمیلن کے آخری فیصلے بھی دنیا کے لئے بہت ہی ادھک مہتو کے تھے . 16 اگست 1957 کو کم سے کم بیس ہزار جنتا کی موجودگی میں سمیلن میں تین پرستاؤ ایک رائے سے پاس ہوئے . پرستاؤ کے پاس ہونے کے سمئے جنتا کا جوش دیکھنے کی چیز تھی .

پہلا پرستاؤ سمیلن کی طرف سے ایک اعلان کے روپ میں تھا جسے 'توکیو کا اعلان' کہا گیا . اِس اعلان کے اندر سمیلن شامل ہونے والے سب دیشوں کے سب پرتی ندھیوں کا ایک ادیش 'ایٹمی یدھ کی سب تیاریوں کو ختم کرنا' بتایا گیا ہے اور یہ مانگ کی گئی کہ :—

(1) "جو سرکاریں اس طرح کے بموں کے تجربے کر رہی ہیں وے آپس میں ایک اِس طرح کا سمجھوتا کریں جس سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے فوراً اور بنا کسی شرط کے بند کر دئیے جاویں ."

(2) "ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیاروں کا بنانا' جمع کرنا اور کام میں لانا بالکل بند کر دیا جاوے ."

(3) "جن راشٹروں کے پاس اِس طرح کے ہتھیار ہیں وہ کسی دوسرے دیشوں میں اِن ہتھیاروں کو ہرگز داخل کرنے نہ پاویں .

(4) "عام طور پر سب دیشوں کی فوجیں ختم کر دی جاویں اور اِس کام پر اِس طرح کی نگرانی رہے جسے سب دیش منظور کر لیں' یدی اِس طرح ساری فوجوں کا ختم کرنا ابھی سمبھو نہیں ہے تو فی الحال کم سے کم سب دیش کی فوجوں کو کم کرنے کا سمجھوتا کر لیا جاوے ."

( ) "دوسرے دیشوں میں فوجی اڈے قائم کرنے اور اُنہیں بڑھانے کے ہم خلاف ہیں ."

(6) "ہم اِس بات کو سمجھتے ہیں کہ سب الگ الگ فوجی دلوں اور اکھاڑوں کو ایک ساتھ توڑ دینے سے' سب فوجی اڈے ختم کر دینے سے اور سب دوسرے دیشوں سے اپنی اپنی فوجوں کو ہٹا لینے سے ایٹمی یدھ کا خطرہ کم ہو جائیگا ."

اِس کے بعد اِس اعلان میں ایک ایسے بھوشیہ کی مانگ کی گئی ہے جس میں ہیروشما اور ناگا ساکی کے شہیدوں کی آتماؤں کو شانتی ملے' اور "ہر طرح کے یدھ کو ناجائز قرار دینا اور بند کرانا "اپنا" آخری مقصد بنایا گیا ہے .

دوسرا پرستاؤ 'سنیوکت راشٹر سنگھ یعنی یو. این. او اور دنیا کی سرکاروں کے نام ایک اپیل" کی شکل میں ہے .

टापू के मछिहारों के नुमाइन्दे भी थे. कुल जापानी नुमाइन्दों की तादाद लगभग चार हज़ार थी.

दस दिन के सम्मेलन में पहले अलग-अलग व्यवसाय के लोगों की अलग-अलग सभाएँ हुईं, जैसे धार्मिक लोगों की सभाएं, साइन्सदानों की सभाएं, वकीलों की सभाएं, ट्रेड्यूनियनिस्टों की सभाएं, माताओं की सभाएं वग़ैरह. सब ने अपने-अपने दृष्टिकोण और अपने-अपने ढंग से सम्मेलन के उद्देशों का समर्थन किया, और अपने-अपने बयान लिखकर बड़े सम्मेलन के सामने पेश किये. इन सभाओं के अन्दर और सम्मेलन के अन्दर बहसें बहुत ही दिल खोलकर और सफ़ाई के साथ हुईं जो देखने के क़ाबिल चीज़ थी.

सम्मेलन के प्रस्तावों और उसके अन्तर राष्ट्रीय राजकाजी प्रभाव से हटकर केवल यह एक बात ही बड़ी अच्छी क़ीमती और गहरा असर रखने वाली थी कि सम्मेलन के अन्दर लगभग दो सप्ताह तक सब देशों के अच्छे से अच्छे लोग जिन में सब धर्मों, सब नसलों और रंगों के, गोरे, काले, पीले, भूरे, और लाल सब तरह के लोग शामिल थे. रात दिन पूरी बेतकल्लुफ़ी के साथ एक दूसरे से मिलते-जुलते साथ खाते पीते और खुलकर बातें करते रहे. साफ़ दिखाई देता था कि ये लोग अपने को इस देश या उस देश के नागरिक न समझकर, विश्व के नागरिक समझ रहे हैं. सम्मेलन के अन्दर और उसके चारों ओर के वातावरण में एक नई मानवता जन्म लेती हुई दिखाई दे रही थी. अपने-अपने राष्ट्रों के अलग-अलग दृष्टिकोण भी थे, अलग-अलग बहसें भी थीं, लेकिन इन सब के अन्दर से यह साफ़ चमक रहा था कि आख़िर में सारा मानव समाज एक कुटुम्ब है, उसे एक कुटुम्ब ही की तरह रहना होगा, और उसकी व्यापक अन्तरात्मा, उसकी इज्तमाई रूह, एक कुटुम्ब की तरह रहने के लिये बेचैन है.

इस समय दुनिया में दो ही ख़ास संगठन ऐसे हैं जिनमें सब देशों के लोग मिलकर बैठते हैं और सब के मिले-जुले हित की बातें सोचते हैं—एक संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन यानी यू० एन० ओ० और दूसरे इस तरह के शान्ति सम्मेलन. फ़रक़ यह है कि संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन में अधिकतर सरकारों के नुमाइन्दे होते हैं. उनके मिलने में एक ऊपरीपन, थोड़ी बहुत बनावट, क़ायदों की पाबन्दी और कुछ एहतियात और संकोच क़ुदरती है. जबकि इस तरह के सम्मेलनों में जनता और जन संस्थाओं के नुमाइन्दे होते हैं जिनमें ज़ाब्तों की कोई पाबन्दी नहीं होती और लोग कहीं ज़्यादा दिल खोलकर मिलते-जुलते और विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं और करते हैं.

ٹاپو کے مچھیاروں کے نمائندے بھی تھے ۔ کل جاپانی نمائندوں کی تعداد لگ بھگ چار ہزار تھی ۔

دس دن کے سمیلن میں پہلے الگ الگ بیوسائے کے لوگوں کی الگ الگ سبھائیں ہوئیں، جیسے دھارمک لوگوں کی سبھائیں، سائنس دانوں کی سبھائیں، وکیلوں کی سبھائیں، ٹریڈیونینسٹوں کی سبھائیں، ماتاؤں کی سبھائیں وغیرہ ۔ سب نے اپنے اپنے درشٹی کون اور اپنے ڈھنگ سے سمیلن کے آدیشوں کا سمرتھن کیا، اور اپنے اپنے بیان لکھ کر بڑے سمیلن کے سامنے پیش کئے ۔ ان سبھاؤں کے اندر اور سمیلن کے اندر بحثیں بہت ہی دل کھول کر اور صفائی کے ساتھ ہوئی جو دیکھنے کے قابل چیز تھی ۔

سمیلن کے پرستاؤں اور اس کے انترراشٹریہ راج کاجی پربھاؤ سے ہٹ کر کیول یہ ایک بات ہی بڑی اچھی، قیمتی اور گہرا اثر رکھنے والی تھی کہ سمیلن کے اندر لگ بھگ دو سپتاہ تک سب دیشوں کے اچھے سے اچھے لوگ جن میں دھرموں، سب نسلوں اور سب رنگوں کے، گورے، کالے، پیلے، بھورے اور لال سب طرح کے لوگ شامل تھے ۔ رات دن پورے بےتکلفی کے ساتھ ایک دوسرے سے ملتے جلتے ساتھ کھاتے پیتے کھل کر باتیں کرتے رہے ۔ صاف دکھائی دیتا تھا کہ یہ لوگ اپنے کو اس دیش یا اس دیش کے ناگرک نہ سمجھ کر، وشو کے ناگرک سمجھ رہے ہیں ۔ سمیلن کے اندر اور اس کے چاروں اور کے واتاورن میں ایک نئی مانوتا جنم لیتی ہوئی دکھائی دے رہی تھی ۔ اپنے اپنے راشٹروں کے الگ الگ درشٹی کون بھی تھے، الگ الگ بحثیں بھی تھیں ۔ لیکن ان سب کے اندر سے یہ صاف چمک رہا تھا کہ آخر میں سارا مانو سماج ایک کٹمب ہے، اسے ایک کٹمب ہی کی طرح رہنا ہوگا، اور اس کی ویاپک انتر آتما، اس کی اجتماعی روح، ایک کٹمب کی طرح رہنے کے لئے بےچین ہے ۔

اس سمے دنیا میں دو ہی خاص سنگٹھن ایسے ہیں جن میں سب دیشوں کے لوگ مل کر بیٹھتے ہیں اور سب کے ملے جلے ہت کی باتیں سوچتے ہیں—ایک سنیوکت راشٹر سنگٹھن یعنی یو۔ این۔ او۔ اور دوسرے اس طرح کے شانتی سمیلن ۔ فرق یہ ہے کہ سنیوکت راشٹری سنگٹھن میں ادھکتر سرکاروں کے نمائندے ہوتے ہیں ۔ ان کے ملنے میں ایک اوپری پن، تھوڑی بہت بناوٹ، قاعدوں کی پابندی اور کچھ احتیاط اور سنکوچ قدرتی ہے ۔ جب کہ اس طرح کے سمیلنوں میں جنتا اور جن سنستھاؤں کے نمائندے ہوتے ہیں جن میں ضابطوں کی کوئی پابندی نہیں ہوتی اور لوگ کہیں زیادہ دل کھول کر ملتے جلتے اور وچاروں کا آدان پردان کر سکتے ہیں اور کرتے ہیں ۔

कर कई दरजन बड़े-बड़े और सैकड़ों छोटे-छोटे अड्डे हैं. ओकीनावा जैसे जापान के टापुओं पर तो अमरीका का पूरा फ़ौजी क़ब्ज़ा है. सन् 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर बम पड़ने के बाद जापान को अमरीका के साथ जो सन्धि करनी पड़ी थी उससे छुटकारा पाने के लिये और अपने देश को फिर से पूरी तरह आज़ाद करने के लिये जापानी पूरी कोशिश कर रहे हैं. क़ुदरती तौर पर जापान की इस समय की अन्तर राष्ट्रीय नीति भी पूरी तरह आज़ाद जापानी नीति नहीं समझी जा सकती.

लगभग तीन सप्ताह जापान में रहकर हमने वहाँ के अनेक नगरों जैसे तोक्यो, कामाकुरा, योकोहामा आदि में और अनेक बड़े-बड़े जलसों में इन अमरीकी जकड़बन्दियों के ख़िलाफ़ जापानी जनता और ख़ासकर जापानी नौजवानों के असन्तोष और उनकी तड़प को अच्छी तरह देखा है. जापानी लोग बहुत धीर, गम्भीर, हद दरजे के मेहनती और बहादुर हैं. ज़ाहिर है इन गुणों के सामने अमरीकी जकड़बन्दी और यह अन्तर राष्ट्रीय अन्याय बहुत देर तक नहीं ठहर सकते. सवाल केवल समय का है.

शायद इस परवशता ही के कारण सम्मेलन के अन्दर कुछ देशों के नुमाइन्दों के आने में भी दिक़्क़तें पेश आईं. ख़ासकर नए चीन और रूस के नुमाइन्दों को इजाज़त (विज़ा) मिलने में बड़ी कठिनाई हुई. एक बार तो ऐसा लगता था कि शायद इन देशों के नुमाइन्दे सम्मेलन में भाग न ले सकें. लेकिन फिर किसी तरह जूं तूं कर मामला हल हुआ. चीन और रूस के नुमाइन्दे समय पर भाग लेने के लिये सम्मेलन में पहुँच सके. मंगोलिया के नुमाइन्दे सम्मेलन समाप्त होने से ठीक एक दिन पहले पहुँचे. कुछ पुर्वीय योरप के देशों के नुमाइन्दे आख़ीर तक भी नहींपहुँच सके.

फिर भी तोक्यो सम्मेलन ख़ासा ज़बरदस्त और सार्वदेशिक सम्मेलन था. अमरीका, इन्गलैन्ड, फ्रान्स, पूर्व जरमनी, पच्छिम जरमनी, आसट्रीया, हालैन्ड, रूस, मंगोलिया, चीन, मिस्र, भारत, लंका, बरमा, आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलेन्ड. फ़िलिप्पाइन, इन्डोनेशिया, इन्डोचाइना, पेरु, पोलैन्ड, रोमेनया. चेकोस्लोवाकिया, थाइलैन्ड, कोरिया, पुर्तगाल, वैनेज़ुला आदि लगभग तीस देशों पृथ्वी के पाँचों महाद्वीपों और दुनिया भर की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं और अन्तर राष्ट्रीय सगठनों के नुमाइन्दे सम्मेलन में शामिल थे. इन नुमाइन्दों में बौद्ध, शिन्तो, ईसाई, मुसलिम, यहूदी, और हिन्दू सब धर्मों के मानने वाले, बड़े-बड़े ईसाई पादरी और बौद्ध महन्त, राजनैतिक नेता, प्रोफ़ेसर, डाक्टर, वकील, लेखक, पत्रकार दुनिया की पार्लमेंटों के मेम्बर मौजूद थे. जापान के नुमाइन्दों में हिरोशिमा और नागासाकी के घायल लोगों के नुमाइन्दे और बिकिनी

کر کئی درجن بڑے بڑے اور سیکڑوں چھوٹے چھوٹے اڈے ھیں ۔ اوکیناوا جیسے جاپان کے ٹاپوؤں پر امریکہ کا پورا قبضہ ھے ۔ سن 1945 میں ہیروشما اور ناگا ساکی پر بم پڑنے کے بعد جاپان کو امریکہ کے ساتھ جو سندھی کرنی پڑی تھی اُس سے چھٹکارا پانے کے لئے اور اپنے دیش کو پھر سے پوری طرح آزاد کرنے کے لئے جاپانی پوری کوشش کر رہے ھیں ۔ قدرتی طور پر جاپان کی اِس سمے کی انترراشٹریہ نیتی بھی پوری طرح آزاد جاپانی نیتی نہیں سمجھی جا سکتی ۔

لگ بھگ تین سپتاہ جاپان میں رہ کر ھم نے وھاں انیک نگروں جیسے ٹوکیو، کاماکورا، یاکوھاما ادی میں انیک بڑے بڑے جلسوں میں اِن امریکی جکڑبندیوں کے خلاف جاپانی جنتا اور خاص کر جاپانی نوجوانوں کے اسنتوش اور اُن کی تڑپ کو اچھی طرح دیکھا ھے ۔ جاپانی لوگ بہت دھیر، گمبھیر حد درجے کے محنتی اور بہادر ھیں ۔ ظاھر ھے کہ اِن گنوں کے سامنے امریکی جکڑ بندی اور یہ انترراشٹریہ انیائے بہت دنوں تک نہیں ٹھہر سکتے ۔ سوال کیول سمے کا ھے ۔

شاید اِس پروشتہ ھی کے کارن سمیلن کے اندر کچھ دیشوں کے نمائندوں کے جانے میں بھی دقتیں پیش آئیں ۔ خاص کر نئے چین اور روس کے نمائندوں کو اجازت (ویزا) ملنے میں بڑی کٹھنائی ھوئی ۔ ایک بار تو ایسا لگتا تھا کہ شاید اِن دیشوں کے نمائندے سمیلن میں بھاگ نہ لے سکیں ۔ لیکن پھر کسی طرح جوں توں کر معاملہ حل ھوا ۔ چین اور روس کے نمائندے سمے پر بھاگ لینے کے لئے سمے پر سمیلن میں پہونچ سکے ۔ منگولیا کے نمائندے سمیلن سماپت ھونے سے ٹھیک ایک دن پہلے پہونچے ۔ کچھ پوروی یورپ کے دیشوں کے نمائندے آخر تک بھی نہیں پہنچ سکے ۔

پھر بھی ٹوکیو سمیلن خاصہ زبردست اور ساروديشک سمیلن تھا ۔ امریکہ، انگلینڈ، فرانس، پورو جرمنی، آسٹریا، ھالینڈ، روس، منگولیا، چین، مصر، بھارت، لنکا، برما، آسٹریلیا، نیوزی لینڈ، فلپائن، انڈونیشیا، انڈوچائنا، پیرو، پولینڈ، رومانیا، چیکوسلواکیا، تھائی لینڈ، کوریا، پرتگال، وینزولا آدی لگ بھگ تیس دیشوں پرتھوی کے پانچوں مہادیپوں اور دنیا بھر کی انیک سورجنک سنستھاؤں اور انتر راشٹریہ سنگٹھنوں کے نمائندے سمیلن میں شامل تھے ۔ اِن نمائندوں میں بودھ، شنٹو، عیسائی، مسلم، یہودی اور ھندو سب دھرموں کے ماننے والے بڑے بڑے عیسائی پادری اور بودھ مہنت، راج نیتک نیتا، پروفیسر، ڈاکٹر، وکیل، لیکھک، پترکار، دنیا کی پارلیمنٹوں کے ممبر موجود تھے ۔ جاپان کے نمائندوں میں ھیروشیما اور ناگا ساکی کے گھائل لوگوں کے نمائندے اور بکنی

ऐटम और हाईड्रोजन बम के ख़िलाफ़ तीसरा विश्व सम्मेलन

ऐटम और हाईड्रोज बमों से सब से अधिक नुक़सान अभी तक जापान को उठाना पड़ा है. क़ुदरती तौर पर जापान में ऐटम और हाईड्रोजन बम के ख़िला और फौजें कम करने के हक़ में एक जापान कौंसिल' है. इस कौनसिल की तरफ़ से जापान के अन्दर दो विश्व सम्मेलन पहले हो चुके हैं. तीसरा विश्व सम्मेलन तोक्यो 6 अगस्त सन् 1957 से 16 अगस्त सन् 1957 तक हुआ.

सम्मेलन की तैयारी के लिए 'तैयारी कमेटी' (प्रिपेरेटरी कमेटी) बनाई गई थी, जिनमें दुनिया के लगभग सा देशों के थोड़े-थोड़े आदमी शामिल थे और जिनकी बैठकें तोक्यों में कई सप्ताह पहले से होती रहीं. इन्गलैन्ड अमरीका, आसट्रेलिया, फ्रान्स, चीन, भारत, लंका, बरमा आदि अनेक देशों के नुमाइन्दे इस तैयारी कमेटी में शामिल थे.

तैयारी कमेटी के एक मेम्बर की हैसियत से हम भी 28 जुलाई को पहुँच गए थे.

जापान की जनता और वहाँ की सरकार दोनों ऐटम और हाईड्रोजन बम के तजरबों के सख्त ख़िलाफ़ हैं. वह दिल से चाहते हैं कि हर तरह के सर्वनाशक हथियारों का बनना और काम में लाया जाना क़ानून बन्द कर दिया जावे और इस तरह के बमों के जो ढेर कुछ देशों ने जमा कर रखे हैं उन्हें नष्ट कर दिया जावे. वह चाहते हैं कि दुनिया भर के देशों की फ़ौजें धीरे-धीरे, आपसी समझौते से, कम कर दी जावें ताकि अन्त में युद्ध की सम्भावना ही दुनिया में मिट जावे. इस काम के लिये जापान के प्रधान मन्त्री और वहाँ की जनता के प्रतिनिधि दोनों दुनिया भर में घूम चुके हैं और भारत भी आ चुके हैं. दुनिया के देशों में शायद जापान ही अकेला देश है जिसके विधान की एक धारा में साफ़-साफ़ शब्दों में युद्ध का विरोध किया गया है और यह लिख दिया है कि जापान की अन्तर्राष्ट्रीय नीति युद्ध विरोधी नीति होगी.

लेकिन जापान आज बुरी तरह अमरीका के फ़ौजी शिकंजे में जकड़ा हुआ है. छोटे से जापान के अन्दर अमरीका की स्थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के मिला-

ایٹم اور ہائیڈروجن بم کے خلاف

تیسرا وشو سمیلن

ایٹم اور ہائیڈروجن بموں سے سب سے ادھک نقصان ابھی تک جاپان کو اٹھانا پڑا ہے۔ قدرتی طور پر جاپان میں 'ایٹم اور ہائیڈروجن بم کے خلاف اور فوجیں کم کرنے کے حق میں ایک جاپان کونسل' ہے۔ اس کونسل کی طرف سے جاپان کے اندر دو وشو سمیلن ہو چکے ہیں۔ تیسرا وشو سمیلن توکیو میں 6 اگست سن 1957 سے 16 اگست 1957 تک ہوا۔

سمیلن کی تیاری کے لئے ایک 'تیاری کمیٹی' (پریپریٹری کمیٹی) بنائی گئی تھی، جس میں دنیا کے لگ بھگ سب دیشوں کے تھوڑے تھوڑے آدمی شامل تھے اور جس کی بیٹھکیں توکیو میں کئی سپتاہ پہلے سے ہوتی رہیں۔ انگلینڈ، امریکہ، آسٹریلیا، فرانس، چین، بھارت، لنکا، برما آدی انیک دیشوں کے نمائندے اس تیاری کمیٹی میں شامل تھے۔

تیاری کمیٹی کے ایک ممبر کی حیثیت سے ہم بھی 28 جولائی کو توکیو پہنچ گئے تھے۔

جاپان کی جنتا اور وہاں کی سرکار دونوں ایٹم اور ہائیڈروجن بم کے تجربوں کے سخت خلاف ہیں۔ وہ دل سے چاہتے ہیں کہ اس طرح کے سروناشک ہتھیاروں کا بننا اور کام میں لایا جانا قانوناً بند کر دیا جائے اور اس طرح کے بموں کے جو ڈھیر کچھ دیشوں نے جمع کر رکھے ہیں انہیں نشٹ کر دیا جائے۔ وہ چاہتے ہیں کہ دنیا بھر کے دیشوں کی فوجیں دھیرے دھیرے، آپسی سمجھوتے سے، کم کر دی جاویں تاکہ انت میں یدھ کی سمبھاؤنا ہی دنیا سے مٹ جائے۔ اس کام کے لئے جاپان کے پردھان منتری اور وہاں کی جنتا کے پرتینیدھی دونوں دنیا بھر میں گھوم چکے ہیں اور بھارت بھی آ چکے ہیں۔ دنیا کے دیشوں میں شاید جاپان ہی ایک اکیلا دیش ہے جس کے ودھان کی ایک دھارا میں صاف صاف شبدوں میں یدھ کا ورودھ کیا گیا ہے اور یہ لکھ دیا گیا ہے کہ جاپان کی انتر راشٹریہ نیتی یدھ ورودھی نیتی ہوگی۔

لیکن جاپان آج بری طرح امریکہ کے فوجی شکنجے میں جکڑا ہوا ہے۔ چھوٹے سے جاپان کے اندر امریکہ کی استھل سینا، جل سینا اور ہوائی سینا ملا

आवे तो मैं और मेरे बहुत से हिन्दुस्तानी साथी बड़ी .खुशी के साथ उसमें हिस्सा लेना चाहेंगे.

डेलिगेट बहनो और भाइयो ! आप का काम इस युग का सबसे बड़ा आध्यात्मिक काम है. हम में से हर एक पूरी श्रद्धा और पक्के इरादे के साथ अपने कर्तव्य को पूरा करे तो हमारी सफलता लाज़मी है.

—

آوے میں اور میرے بہت سے ہندستانی ساتھی بڑی خوشی کے ساتھ اس میں حصہ لینا چاہیں گے ۔

ڈیلیگیٹ بہنوں اور بھائیوں ! آپ کا کام اس یوگ کا سب سے بڑا ادھیاتمک کام ہے۔ ہم سے ہر میں ایک پوری شردھا اور پکے ارادے کے ساتھ اپنے کو کرتویہ کو پورا کرے تو ہماری سپھلتا لازمی ہے ۔

—

में सहयोग देने से साफ़ इन्कार कर दें, चाहे इस इन्कार के लिये उसे प्राण ही क्यों न देना पड़े. इसी तरह हर मज़दूर का और हर काम करने वाले का, जो युद्ध के सामान के बनाने या लाने लेजाने में लगा हो, यह पवित्र कर्तव्य है कि यदि उसे इस बात का विश्वास हो गया है कि युद्ध बुरी चीज़ है तो इस तरह का काम करने से इनकार करदे.

हम सब यह चाहते हैं कि अपने .फ़ैसलों पर अमल कराने के लिए हम कुछ अमली क़दम बढ़ा सकें मैं आप से कहना चाहता हूँ कि दुनिया के मज़दूर ही दुनिया की सब सरकारों की आर्थिक और राजनीतिक नीति को असली रूप देने वाले हैं. वे यदि एक बार इस सचाई को समझ लें और अपनी शक्ति को जान जायँ तो दुनिया की कोई ताक़त मानव समाज को नए युद्ध की ओर नहीं ढकेल सकती.

जो सरकार या जो देश दुनिया की जनता की इस राय की परवाह न करते हुए इसके ख़िलाफ़ अमल करता रहे उसका आर्थिक, सामाजिक और ज़रूरत पड़े तो राजनैतिक बहिष्कार यानी उसके साथ असहयोग भी एक ऐसा तरीक़ा है जिसकी तरफ़ सब शान्ति प्रेमियों को गम्भीरता के साथ ध्यान देना चाहिये.

अन्त में हाइड्रोजन बमों के नित्य नए तजरबों को बन्द कराने के लिये मेरी प्रार्थना है कि इस इतने बड़े मामले में दुनिया की अन्तरात्मा को जानने के लिये हम सब को हर तरह की .क़ुरबानी के लिये तैयार रहना चाहिये. हम सब का यह पवित्र कर्तव्य है. इस लिये मैं फिर एक बार अमरीका के सत्याग्रहियों को प्रणाम करता हूँ. भारत में हम लोगों ने जब यह सुना कि क्रिस्मस टापुओं की तरफ़ एक सत्याग्रही जहाज भेजे जाने की तजवीज़ हो रही है, तो हम में से बहुत से जैसे मेरे मैथडिस्ट दोस्त डा० जे० सी० कुमारप्पा, मेरे दोस्त डा० चोथ राम गिडवानी, ख़ुद मैं, और बहुत से लोग उस सत्याग्रह में शामिल होने के लिये उत्सुक थे. अपने लिये तो मैं इस से अच्छी किसी मौत का अनुमान ही नहीं कर सकता कि दुनिया की शान्ति के लिये मैं प्राण दे सकूँ. मैंने कुछ अमरीकी दोस्तों से पूछा था कि हम में से कुछ अमरीकी सत्याग्रहियों के साथ शामिल हो सकते हैं या नहीं. मुझसे कहा गया कि इससे अमरीकी सत्याग्रहियों की कठिनाइयाँ और बढ़ सकती हैं. मैं फिर जापान के, आस्ट्रेलिया के, अमरीका के और दुनिया के किसी भी हिस्से के दोस्तों और साथियों से नम्रता के साथ अपील करता हूँ कि जहाँ कहीं भी और जब कभी भी मिलकर इस तरह के काम करने का मौक़ा

میں سہیوگ دینے سے صاف انکار کریں' چاہے اِس اِنکار کے لئے اُسے پران ہی کیوں نہ دینا پڑے ۔ اِسی طرح ہر مزدور کا اور ہر کام کرنے والے کا' جو یدھ کے سامان کے بنانے یا لانے لے جانے میں لگے ہیں' یہ پوِتر کرتویہ ہے کہ یدی اُسے اِس بات کا وشواس ہو گیا ہے کہ یدھ بری چیز ہے تو اِس طرح کا کام کرنے سے انکار کر دے ۔

ہم سب یہ چاہتے ہیں کہ اپنے فیصلوں پر عمل کرانے کے لئے ہم کچھ عملی قدم اٹھا سکیں' میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ دنیا کے مزدور ہی دنیا کی سب سرکاروں کی ارتھک اور راج نیتک نیتی کو اصلی روپ دینے والے ہیں ۔ وے یدی ایک بار اِس سچائی کو سمجھ لیں اور اپنی شکتی کو جان جائیں تو دنیا کی کوئی طاقت سماج کو نئے یدھ کی اور نہیں ڈھکیل سکتی ۔

جو سرکار یا جو دیش دنیا کی جنتا کی اِس رائے کی پرواہ نہ کرتے ہوئے اِس کے خلاف عمل کرتا رہے اُس کا ارتھک' سماجک اور ضرورت پڑے تو راج نیتک بہشکار یعنی اُس کے ساتھ اسہیوگ بھی ایک ایسا طریقہ ہے جس کی طرف سب شانتی پریمیوں کو گمبھیرتا کے ساتھ دھیان دینا چاہئے ۔

انت میں ہائڈروجن بموں کے نت نئے تجربوں کو بند کرانے کے لئے میری پرارتھنا ہے کہ اِس اتنے بڑے معاملے میں دنیا کی انتر آتما کو جاننے کے لئے ہم سب کو ہر طرح قربانی کے لئے تیار رہنا چاہئے ۔ ہم سب کا یہ پوتر کرتویہ ہے ۔ اِس لئے میں پھر ایک بار امریکہ کے ستیاگرہیوں کو پرنام کرتا ہوں ۔ بھارت میں ہم لوگوں نے جب یہ سنا کہ کرسمس ٹاپوؤں کی طرف ایک ستیہ گرہی جہاز بھیجے جانے کی تجویز ہو رہی ہے' تو ہم میں سے بہت کے جیسے میرے میتھوڈسٹ دوست ڈی. جے سی. کمارپا' میرے دوست ڈی چوتھ رام گدوانی' خود میں' اور اور بہت سے لوگ اِس ستیاگرہ میں شامل ہونے کے لئے اُتسک تھے ۔ اپنے لئے تو میں اِس سے اچھی کسی موت کا انومان ہی نہیں کر سکتا کہ دنیا کی شانتی کے لئے میں پران دے سکوں میں نے کچھ امریکی دوستوں سے پوچھا تھا کہ ہم میں سے کچھ امریکی ستیاگرہیوں کے ساتھ شامل ہو سکتے ہیں یا نہیں ۔ مجھسے کہا گیا کہ اِس سے امریکی ستیہ گرہیوں کی کٹھنائیاں اور بڑھ سکتی ہیں ۔ میں پھر جاپان کے' آسٹریلیا کے' امریکہ کے' اور دنیا کے کسی بھی حصے کے دوستوں اور ساتھیوں سے نمرتا کے ساتھ اپیل کرتا ہوں کہ جہاں کہیں بھی اور جب کبھی بھی مل کر اِس طرح کے کام کرنے کا موقعہ

रीत दिशा में है और हमारी आजकल की अधिकतर मुसीबतों की जड़ हमारा यही ग़लत झुकाव है.

आत्म-संयम यानी अपनी इच्छाओं को क़ाबू में रखना और अपरिग्रह यानी किसी चीज़ को अपनी निजी सम्पत्ति न समझना यह दोनों बातें हमारे सर्वोच्च आदर्श होने चाहियें. हम मानते हैं कि दुनिया के सब लोग तब ही सुखी रह सकते हैं जब कि हर आदमी दूसरों के सुख की अधिक और अपने सुख की कम चिन्ता करे.

इससे यह भी नतीजा निकलता है कि जहाँ तक हो सके दुनिया की सब अच्छी चीज़ों और आम तौर पर उत्पत्ति के सब साधन समाज की सम्पत्ति होने चाहियें, न कि व्यक्ति की. इस मामले में हम कम्युनिज़्म के बहुत निकट पहुँच जाते हैं और हमें इसका गर्व है.

तीसरी बात यह है कि महात्मा गाँधी की तालीम में सब से अधिक महत्व की चीज़ "अहिंसा" है. गाँधी जी के अनुसार हर मर्द और हर औरत का यह पवित्र कर्तव्य है कि वह हर अन्याय और हर बुराई का डटकर मुक़ाबला करे और यदि आवश्यकता हो तो इस मुक़ाबला करने में अपने सर्वस्व की बाज़ी लगा दे. लेकिन गाँधी जी का कहना है कि यह मुक़ाबला "अहिंसात्मक" होना चाहिये. इस तरह के मुक़ाबला करने वाले को गाँधीजी "सत्याग्रही कहते हैं. सत्याग्रही को चाहिये कि जहाँ तक हो सके अपने दिल को सब की तरफ़ से यहाँ तक कि बुराई या अन्याय करने वालों की तरफ़ से भी, प्रेम से भर ले और फिर ख़ुद अपने त्याग और कष्ट सहने के ज़रिये बुराई या अन्याय करने वाले को ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश करे.

मैं जानता हूँ कि यह मामला कुछ कठिन मामला है. बहन श्रीमती रामेश्वरी नहरू ने उस दिन इस रास्ते की तुलना तलवार की धार पर चलने से की थी. लेकिन भारत ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इसी रास्ते पर चलकर अपने को सब से बड़ी साम्राज्य प्रेमी शक्ति के पंजे में आज़ाद किया.

दुनिया के सब शान्ति प्रेमियों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि वे अहिंसात्मक सत्याग्रह के इस तरीक़े को अधिक गम्भीरता के साथ जानने और समझने की कोशिश करें, इस रास्ते की अपनी एक अलग तकनीक है, उसके लिये एक ख़ास तरह की तैयारी की आवश्यकता होती है, एक साधन की ज़रूरत होती है. यह साधना और तैयारी हिंसात्मक विरोध की साधना और तैयारी से बिलकुल दूसरी ही तरह की होती है.

इस रास्ते के अनुसार हर ऐसे साइंसदाँ, एंजीनियर या कारीगर का, जिसे इस बात का विश्वास हो गया हो कि ऐटम और हाइड्रोजिन हथियार बुरी चीज़ें हैं, यह पवित्र कर्तव्य है कि वह इस तरह के हथियारों के बनाने

دشا میں ہے اور ہماری آجکل کی ادھکتر مصیبتوں کی جڑ ہمارا یہی غلط جھکاؤ ہے ۔

آتم‌سایم یعنی اپنی اچھاؤں کو قابو میں رکھنا اور اپریگرہ یعنی کسی چیز کو اپنی نجی سمپتی نہ سمجھنا یہ دونوں باتیں ہمارے سروچ آدرش ہونے چاہئیں ۔ ہم مانتے ہیں کہ دنیا کے سب لوگ تب ہی سکھی رہ سکتے ہیں جب کہ ہر آدمی دوسروں کے سکھ کی ادھک اور اپنے سکھ کی کم چنتا کرے ۔

اِس سے یہ بھی نتیجہ نکلتا ہے کہ جہاں تک ہو سکے دنیا کی سب سے اچھی چیزوں اور عام طور پر اتپتی کے سب سادھن سماج کی سمپتی ہونے چاہئیں' نہ کی ویکتی کی اِس معاملے میں ہم کمیونزم کے بہت نکٹ پہنچ جاتے ہیں اور ہمیں اِس کا گرو ہے ۔

تیسری بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی تعلیم میں سب سے ادھک مہتو کی چیز "اہنسا" ہے گاندھی جی کے انوسار ہر مرد اور ہر عورت کا یہ پوتر کرتویہ ہے کہ وہ ہر انیائے اور ہر برائی کا ڈٹ کر مقابلہ کرے اور یدی اوشیکتا ہو تو اِس مقابلہ کرنے میں اپنے سروسو کی بازی لگا دے ۔ لیکن گاندھی جی کا کہنا ہے کہ یہ مقابلہ "اہنساتمک" ہونا چاہئے ۔ اِس طرح کے مقابلہ کرنے والے کو گاندھی جی "ستیا گرہی" کہتے ہیں ۔ ستیا گرہی کو چاہئے کہ جہاں تک ہو سکے اپنے دل کو سب کی طرف سے یہاں تک کہ برائی یا انیائے کرنے والوں کی طرف سے بھی' پریم سے بھر لے اور پھر خود اپنے تیاگ اور کشٹ سہنے کے ذریعے برائی یا انیائے کرنے والے کو ٹھیک راستے پر لانے کی کوشش کرے ۔

میں جانتا ہوں کہ یہ معاملہ کچھ کٹھن معاملہ ہے بہن شریمتی رامیشوری نہرو نے اُس دن اِس راستے کی تولنا تلوار کی دھار پر چلنے سے کی تھی ۔ لیکن بھارت میں مہاتما گاندھی کے نیتوت میں اسی راستے پر چل کر اپنے کو دنیا کی سب سے بڑی سامراج پریمی شکتی کے پنجے سے آزاد کیا ۔

دنیا کے سب شانتی پریمیوں سے میری پرارتھنا ہے کہ وہ اہنساآتمک ستیہ گرہ کے اِس طریقہ کو ادھک گمبھیرتا کے ساتھ جاننے اور سمجھنے کی کوشش کریں' اس راستے کی اپنی ایک الگ ٹکنیک ہے' اِس کے لئے ایک خاص طرح کی تیاری کی اوشیکتا ہوتی ہے' ایک سادھن کی ضرورت ہوتی ہے ۔ یہ سادھن اور تیاری ہنسا‌آتمک ورودھ کی سادھنا اور تیاری کے بالکل دوسری طرح کی ہوتی ہے ۔

اِس راستے کے انوسار ہر ایسے سائنسداں' انجینیر یا کاریگر کا' جسے اِس بات کا وشواس ہوگیا ہو کہ ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیار بری چیزیں ہیں' یہ پوتر کرتویہ ہے کہ وہ اِس طرح کے ہتھیاروں کے بنانے

भेजा है जिसमें हम सब ने उन्हें प्रणाम किया है और उनका पूरा-पूरा समर्थन करने का उनसे वादा किया है. तीस वर्ष तक मैं अपने गुरु महात्मा गाँधी के चरणों में बैठा हूँ और उनके नेतृत्व में अपने देश की आज़ादी के लिये लड़ चुका हूँ. इसलिये मैं आप से इजाज़त चाहता हूँ कि मैं आपके सामने उस रास्ते को पेश करूँ जिसे मैं गाँधी जी का बताया हुआ शान्ति का रास्ता समझता हूँ और यह भी बताऊँ कि ऐटम और हाइड्रोजिन बम के सवाल के साथ उसका क्या सम्बन्ध है.

पहली बात यह है कि महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी धार्मिकता थी. धर्म में उन्हें गहरा विश्वास था. मैं स्वयं धर्म का मानने वाला हूँ. मैं ईश्वर में विश्वासी हूँ, मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वासी हूँ, आध्यात्मिक यानी रूहानी ज़िन्दगी का मानने वाला हूँ और रूहानी "कम्युनियन" यानी योग या सलूक का भी मानने वाला हूँ. लेकिन हम लोग दुनिया के सब बड़े-बड़े धर्म मज़हबों की बुनियादी एकता के मानने वाले हैं. हम मानते हैं कि इन धर्म मज़हबों में जो फ़रक़ हैं वह अधिकतर ग़ैर ज़रूरी बातों से सम्बन्ध रखते हैं. इस पृथ्वी पर किस तरह का जीवन बिताना चाहिये इस बारे में सब धर्मों की बुनियादी शिक्षा एक सी है. हम मानते हैं कि हर सभ्य देश के अन्दर लोगों को धर्म मज़हब के मामले में पूरी आज़ादी होनी चाहिये. जो-जो चाहें माने और जिस तरह चाहे अपने ईश्वर अल्लाह की पूजा-आराधना करे. साथ ही हम यह भी कहना चाहते हैं कि अब समय आ गया है जबकि, विश्व शान्ति के हित में, मानव समाज को प्रेम के साथ एक दूसरे को समझा-बुझाकर और निस्पक्षता के साथ एक दूसरे को समझ कर, इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि मानव जाति एक मिले-जुले बीच के ऐसे धर्म की तरफ़ क़दम बढ़ा सकें जिस धर्म का अधिक सम्बन्ध इस बात के साथ हो कि हम सब किस तरह अपनी ज़िन्दगी बसर करें और एक दूसरे के साथ किस तरह बरतें, और कम सम्बन्ध इस बात के साथ हो कि हम संसार की उत्पत्ति या परलोक आदि के बारे में क्या मानताएँ रखते हैं या किस विधि के साथ उस ईश्वर अल्लाह की पूजा-आराधना करते हैं जो हम सब का मालिक है. इस तरह के धर्म में हम सब बड़े-बड़े धर्मों के क़ायम करने वालों का एक बराबर आदर कर सकेंगे और दुनिया की सब बड़ी-बड़ी धर्म पुस्तकों से एक लाभ उठा सकेंगे.

दूसरी बात यह है कि महात्मा गाँधी की शिक्षा के अनुसार मनुष्य की ज़िन्दगी का आदर्श अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू हासिल करना होना चाहिये, न कि इन्द्रियों के सुखों की ओर दौड़ना आजकल की सभ्यता का झुकाव इसके ठीक विप-

. اُنھیں ایک سندیشا بھی بھیجا ھے جس میں ہم سب نے ں پرنام کیا ھے اور اُن کا پورا پورا سمرتھن کرنے کا اُن سے کیا ھے . تیس ورش تک میں اپنے گرو مہاتما گاندھی کے ں میں بیٹھا ھوں اور اُن کے نیترتو میں اپنے دیش کی ے لئے لڑ چکا ھوں . اِس لئے میں آپ سے اجازت چاھتا کہ میں آپ کے سامنے اُس راستے کو پیش کروں جسے گاندھی جی کا بتایا ھوا شانتی کا راستہ سمجھتا ھوں اور ی بتاؤں کہ ایٹم اور ھائڈروجن بم کے سوال کے ساتھ اُس کا سمبندھ ھے .

پہلی بات یہ ھے کہ مہاتما گاندھی کی سب سے بڑی وشیشتا کی دھارمکتا تھی . دھرم میں اُنھیں گہرا وشواس تھا . میں دھرم کا ماننے والا ھوں . میں ایشور میں وشواسی ھوں' یو کے بعد کے جیون میں وشواسی ھوں' ادھیاتمک یعنی حانی زندگی کا ماننے والا ھوں اور روحانی "کمونین" یعنی) یا سلوک کا بھی ماننے والا ھوں . لیکن ھم لوگ دنیا کے سب بڑے بڑے دھرم مذھبوں کی بنیادی ایکتا کے ماننے والے ں . ھم مانتے ھیں کہ اِن دھرم مذھبوں میں جو فرق ھیں دھکتر غیر ضروری باتوں سے سمبندھ رکھتے ھیں . اِس پرتھوی اس طرح کا جیون بتانا چاھئے اِس بارے میں سب دھرموں بنیادی شکشا ایک سی ھے . ھم مانتے ھیں کہ ھر سبھیہ ں کے اندر لوگوں کو دھرم مذھب کے معاملے میں پوری دی ھونی چاھئے . جو جو چاھے مانے اور جس طرح چاھے ایشور اللہ کی پوجا ارادھنا کرے . ساتھ ھی ھم یہ بھی کہنا ھتے ھیں کہ اب سمے آ گیا ھے جب کہ' وشو شانتی کے ھت ں' مانو سماج کو پریم کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھا بجھا اور نشپکشتا کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھ کر' اِس بات کوشش کرنی چاھئے کہ مانو جاتی ایک ملے جلے بیچ کے ے دھرم کی طرف قدم بڑھا سکیں جس دھرم کا ادھک بندھ اِس بات کے ساتھ ھو کہ ھم سب کس طرح اپنی زندگی ر کریں اور ایک دوسرے کے ساتھ کس طرح برتیں' اور کم بندھ اِس بات کے ساتھ ھو کہ ھم سنسار کی اُتپتی یا پرلوک ی کے بارے میں کیا مانتائیں رکھتے ھیں یا کس ودھی کے تھ ایشور اللہ کی پوجا آرادھنا کرتے ھیں جو ھم سب کا مالک . اِس طرح کے دھرم میں ھم سب بڑے بڑے دھرموں کے ئم کرنے والوں کا ایک برابر آدر کر سکیں گے اور دنیا کی سب ی بڑی دھرم پستکوں سے ایک لابھ اُٹھا سکیں گے.

دوسرے بات یہ ھے کہ مہاتما گاندھی کی شکشا کے بسار منشیہ کی زندگی کا آدرش اپنی اندریوں پر قابو حاصل کرنا ھونا چاھئے' نہ کہ اندریوں کے سکھوں کی اور وڑنا ، آج کل کی سبھیتا کا جھکاؤ اِس کے ٹھیک وپریت

सदर साहब, डैलीगेट साथियो और मेरे जापानी भाइयो और बहनो !

मैं अपने उन जापानी दोस्तों का आभारी हूँ जिन्हों ने हमें इस सुन्दर देश में आने का और ऐटम और हाइड्रोजिन बम के खिलाफ़ और दुनिया की फ़ौजों को कम करने के पक्ष में अपनी कोशिशों में हिस्सा लेने का यह मौक़ा दिया, उनकी इन नेक कोशिशों में सारे भारतवासी पूरी तरह उनके साथ हैं.

चन्द और डैलिगेट भाइयों के साथ में अभी नागासाकी और हिरोशिमा होकर आया हूँ. उस भयंकर दुर्घटना को हुए बारह बरस बीत चुके. इतने दिनों के बाद भी जो कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा उसे देखकर मुझे अचरज होता है कि कोई भी मनुष्य इस तरह का काम कैसे कर सका. बेगुनाह माताओं की गोद में बैठे हुए मासूम बच्चों को जिन्दा भून डालना और बीमारों और बूढ़ों को उनके बिस्तरों के अन्दर जलाकर खाक कर देना इतनी बड़ी दुष्टता और इतना बड़ा पाप है जिसे दुनिया की जनता को बरदाश्त नहीं करना चाहिये, और मुझे आशा है कि दुनिया की जनता इसे आइन्दा कभी बरदाश्त नहीं करेगी. "अब और हिरोशिमा नहीं होने देंगे" यह आवाज़ आज मानव समाज के हृदय से ज़ोरों के साथ निकल रही है. कोई अब इस आवाज़ की अवहेलना नहीं कर सकता.

भारतवासी यह भी मानते हैं कि किसी भी देश या राष्ट्र को यह अधिकार नहीं है कि वह दुनिया के किसी भी दूसरे देश में अपनी फ़ौजी अड्डे क़ायम करे. नए नए देशों में ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों को दाखिल करना तो भारत वासियों की निगाह से एक अव्वल दरजे का अन्तर्राष्ट्रीय जुर्म है. भारत उन सब सन्धियों और समझौतों के भी खिलाफ़ है जो दुनिया को एक दूसरे के विरुद्ध दो जंगी अखाड़ों में बाँट देते हैं भारतवासी सब राष्ट्रों के मिले जुले एक ऐसे सुलहनामे के पक्ष में हैं जिसके अनुसार सब मिल कर दुनिया की शान्ति को क़ायम रखने का वचन दें और जिसमें अमरीका और रूस दोनों शामिल हों. भारत किसी तरह का युद्ध नहीं चाहता. भारत सारे मानव समाज को एक कुटुम्ब मानता है और दुनिया की सब लोगों की एकता का हामी है.

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये क्या-क्या उपाय करने चाहिये इस पर इस सम्मेलन में काफ़ी बहसें हो चुकी हैं. उन बहसों के दौरान में कई बार उन उपायों की भी चरचा हुई है जो भारत के नेता महात्मा गाँधी ने हमें सिखाए हैं. हमारे बहादुर अमरीकी दोस्त हाइड्रोजिन बम के खिलाफ़ इस समय भी वह उपाय काम में ला रहे हैं जिन्हें वह "गांधियन उपाय" और "अहिंसात्मक उपाय" कहते हैं. विश्व सम्मेलन के इस मंच से हमने उन्हें एक संदेशा भी

صدر صاحب' ڈیلیگیٹ ساتھیو اور میرے جاپانی بھائیو اور بہنو !

میں اپنے اُن جاپانی دوستوں کا آبھاری ہوں جنہوں نے ہمیں اِس سندر دیش میں آنے کا اور ایٹم اور ہائڈروجن بم کے خلاف اور دنیا کے فوجوں کو کم کرنے کے پکش میں اپنی کوششوں میں حصہ لینے کا یہ موقعہ دیا' اُن کی اِن نیک کوششوں میں سارے بھارت واسی پوری طرح اُن کے ساتھ ہیں ۔

چند اور ڈیلیگیٹ بھائیوں کے ساتھ میں ابھی ناگاساکی اور ہیروشما ہو کر آیا ہوں ۔ اُس بھینکر دُرگھٹنا کو ہوئے بارہ برس' بیت چکے۔ اِتنے دنوں کے بعد بھی جو کچھ میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اُسے دیکھ کر مجھے اچرج ہوتا ہے کہ کوئی بھی منشیہ اِس طرح کا کام کیسے کر سکا ۔ بےگناہ ماتاؤں کی گود میں بیٹھے ہوئے معصوم بچوں کو زندہ بھون ڈالنا اور بیماروں اور بوڑھوں کو اُن کے بستروں کے اندر جلاکر خاک کر دینا اتنی بڑی دشٹتا اور اِتنا بڑا پاپ ہے جسے دنیا کی جنتا کو برداشت نہیں کرنا چاہئے' اور مجھے آشا ہے کہ دنیا کی جنتا اِسے آئندہ کبھی برداشت نہیں کرے گی ۔" اب اور ہیروشما نہیں ہونے دیں گے" یہ آواز آج مانو سماج کے ہردے سے زوروں کے ساتھ نکل رہی ہے ۔ کوئی اب اِس آواز کی اَوہیلنا نہیں کر سکتا ۔

بھارت واسی یہ بھی مانتے ہیں کہ کسی بھی دیش یا راشٹر کو یہ ادھیکار نہیں ہے کہ وہ دنیا کے کسی بھی دوسرے دیش میں اپنے فوجی اڈے قائم کرے ۔ نئے نئے دیشوں میں ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیاروں کو داخل کرنا تو بھارت واسیوں کی نگاہ میں ایک اول درجے کا انتر راشٹریہ جرم ہے۔ بھارت اُن سب سندھیوں اور سمجھوتوں کے بھی خلاف ہے جو دنیا کو ایک دوسرے کے وِرودھ دو جنگی اکھاڑوں میں بانٹ دیتے ہیں ۔ بھارت واسی سب راشٹروں کے ملے جلے ایک ایسے صلحنامے کے پکش میں ہیں جس کے انوسار سب مل کر دنیا کی شانتی کو قائم رکھنے کا وچن دیں اور جس میں امریکہ اور روس دونوں شامل ہوں ۔ بھارت کسی طرح کا یدھ نہیں چاہتا ۔ بھارت سارے مانو سماج کو ایک کٹمب مانتا ہے اور دنیا کے سب لوگوں کی ایکتا کا حامی ہے ۔

اِس اُدیش کو پورا کرنے کے لئے کیا کیا اپائے کرنے چاہئے اِس پر اِس سمیلن میں کافی بحثیں ہو چکی ہیں۔ اُن بحثوں کے دوران میں کئی بار اُن اپائیوں کی بھی چرچا ہوئی ہے جو بھارت کے نیتا مہاتما گاندھی نے ہمیں سکھائے ہیں۔ ہمارے بہادر امریکی دوست ہائڈروجن بم کے خلاف اِس سمے بھی وہ اپائے کام میں لا رہے ہیں جنہیں وہ "گاندھین اپائے" اور "اہنساتمک اپائے" کہتے ہیں ۔ وشو سمیلن کے اِس منچ سے

कर्म या फ़ेल के अन्दर हमें तीन तरह के काम मिलते हैं—स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ यानी ख़ुदग़रज़ी, दूसरों का भला और केवल फ़र्ज़ समझकर सब का यकसाँ भला पहली तरह के काम ऐसे हैं जैसे क़रज़ा लेना, दूसरी तरह के काम ऐसे हैं जैसे दूसरे को क़रज़ा देना और तीसरी तरह के काम सब क़रज़ों से छुटकारा पाना. पाप और पुण्य दोनों बन्धन हैं. मोक्ष यानी निजात इन दोनों से आज़ाद हो जाना है. पाप करना, कोई बुराई करना ऐसा ही है जैसा क़रज़ा लेना जिसे हमें दण्ड या तकलीफ़ की शक्ल में अदा करना होगा. नेकी करना, परोपकार करना ऐसा है जैसा किसी को क़रज़ा देना. वह हमें सुख के रूप में वापिस मिलेगा. और असली आज़ादी इन दोनों विचारों से ऊपर उठकर सब हिसाब चुकता यानी बेबाक़ कर देना है. यही हालत हमें कड़ी मेहनत के बाद गहरी मीठी नींद यानी 'निर्वाण' का हक़दार बना देती है.

यह सब चीज़ें तीन-तीन के रूप में चलती हैं, इनमें दो रूप एक दूसरे के ख़िलाफ़ मालूम होते हैं और तीसरा उन्हें जोड़ता है. जैसे इच्छा किसी चीज़ की जानकारी को और उसके साथ हमारे काम को दोनों को जोड़ती है. हमारे सारे शरीर की बनावट में यही तीन-तीन के जोड़े दिखाई देते हैं. हमारे हाथ पैर, हमारे दिल और दिमाग़ दोनों में नाता जोड़ते हैं. यही आत्मा और ग़ैर-आत्मा के नाते का हाल है.

अपने शरीर की बनावट को अगर हम इस प्रकार अच्छी तरह समझ सकें और शरीर और मन और आत्मा यानी रूह के सम्बन्ध को समझ सकें तो यह सारा भेद हम पर खुल सकता है. इस भेद को ठीक-ठीक समझने का रास्ता वही है जिसे हिन्दू धर्म ग्रन्थों में "योग" मुसलिम धर्म ग्रंथों में "सलूक" या "शग़ल" और ईसाई धर्म ग्रंथों में "कम्यूनियन विद दि स्पिरिट" कहा गया है.

کرم یا فعل کے اندر ہمیں تین طرح کے کام ملتے ہیں— کیول سوارتھ' پرارتھ اور پرمارتھ یعنی خود غرضی' دوسروں کا بھلا' اور کیول فرض سمجھکر سب کا یکساں بھلا۔ پہلی طرح کے کام ایسے ہیں جیسے قرضہ لینا؛ دوسری طرح کے کام ایسے ہیں جیسے دوسرے کو قرضہ دینا' اور تیسری طرح کے کام سب قرضوں سے چھٹکارا پانا۔ پاپ اور پنیہ دونوں بندھن ہیں۔ موکھش یعنی نجات ان دونوں سے آزاد ہو جانا ہے۔ پاپ کرنا' کوئی برائی کرنا ایسا ہی ہے جیسا قرضہ لینا جسے ہمیں ڈنڈ یا تکلیف کی شکل میں ادا کرنا ہوگا۔ نیکی کرنا' پروپکار کرنا ایسا ہے جیسا کسی کو قرضہ دینا۔ وہ ہمیں سکھ کے روپ میں واپس ملیگا۔ اور اصلی آزادی ان دونوں وچاروں سے اوپر اٹھ کر سب حساب چکتا یعنی بیباق کر دینا ہے۔ یہی حالت ہمیں کڑی محنت کے بعد گہری میٹھی نیند یعنی 'نروان' کا حقدار بنا دیتی ہے۔

یہ سب چیزیں تین تین کے روپ میں چلتی ہیں' ان میں دو روپ ایک دوسرے کے خلاف معلوم ہوتے ہیں اور تیسرا انہیں جوڑتا ہے۔ جیسے اچھا کسی چیز کی جانکاری کو اور اس کے ساتھ ہمارے کام کو دونوں کو جوڑتی ہے۔ ہمارے سارے شریر کی بناوٹ میں یہی تین تین کے جوڑے دکھائی دیتے ہیں۔ ہمارے ہاتھ پیر' ہمارے دل اور دماغ دونوں میں ناتا جوڑتے ہیں۔ یہی آتما اور غیر-آتما کے ناتے کا حال ہے۔

اپنے شریر کی بناوٹ کو اگر ہم اس پرکار اچھی طرح سمجھ سکیں اور شریر اور من اور آتما یعنی روح کے سمبندھ کو سمجھ سکیں تو یہ سارا بھید ہم پر کھل سکتا ہے۔ اس بھید کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کا راستہ وہی ہے جسے ہندو دھرم گرنتھوں میں "یوگ" مسلم دھرم گرنتھوں میں 'سلوک' یا "شغل" اور عیسائی دھرم گرنتھوں میں "کمیونین ود دی اسپرٹ" کہا گیا ہے۔

महात्मा गाँधी के अनुसार शान्ति का रास्ता, और ऐटम और हाईड्रोजन बम का सवाल

पण्डित सुन्दरलाल

(वह भाषण जो 16 अगस्त सन 1957 को तोक्यो (जापान) में तीसरे विश्व सम्मेलन के सामने दिया गया)

❀ ❀ ❀

مہاتما گاندھی کے انوسار شانتی کا راستہ' اور ایٹم اور ہائڈروجن بم کا سوال

پنڈت سندر لال

(وہ بھاشن جو 16 اگست سن 1957 کو ٹوکیو (جاپان) میں تیسرے وشو سمیلن کے سامنے دیا گیا .)

❀ ❀ ❀

रीर-आत्मा को वह अभी तक सच समझे हुए था वह अब उसे झूठ और केवल धोका मालूम होने लगता है. जवानी में जो चीज़ सुन्दर, आनन्द देने वाली और चित्त को मोहती हुई मालूम होती थी, वह बुढ़ापे में बदसूरत, बद-शकल और तकलीफ़देह मालूम होने लगती है. एक पुराना मुहावरा है "ज्ञान रंज को बढ़ाता है." अंगरेज़ी शब्द 'वाइज़' के मूल मानी ही 'ग़मगीन' है. जो चीज़ अच्छी लगती थी वह अब बुरी लगने लगती है. जो ठीक मालूम होती थी वह ग़लत होने लगती है और आगे चलकर अच्छा और बुरा, ठीक और ग़लत दोनों ही ग़लत मालूम होने लगते हैं. पुण्य और पाप यानी ख़ैर और शर दोनों पाप यानी शर मालूम होने लगते हैं. सोने की बेड़ियाँ वैसी ही बेड़ियाँ हैं जैसी लोहे की. एक पीढ़ी के लोग पैदा होते हैं, बढ़ते हैं और तजरबों और तकलीफ़ों के अन्दर से गुज़रते हुए उन्हें अक़ल और समझ आती है. वह फिर चल देते हैं. दूसरी पीढ़ी उनकी जगह लेती है. उसी तरह की ग़लतियों, तजरबों और तकलीफ़ों में से निकल कर उसे समझ आती है. वह भी चल देती है. यह चक्कर बराबर जारी रहता है. एक बीमारी ख़तम हो जाती है. दूसरी बीमारियाँ उसकी जगह आ जाती हैं. एक बुराई मिटती है, दूसरी सर उठाती है. नेकी और बदी, सुख और दुख हमेशा एक दूसरे का काटते रहते हैं. अन्त में दोनों एक साथ ख़तम होते हैं. इस दुई को आत्मा ख़ुद ही पैदा करता है और ख़ुद ही ख़तम करता है. नेकी और बदी दोनों जुड़वाँ बच्चे हैं. दोनों साथ साथ ख़तम होते हैं. जब तक आदमी जागता रहता है और काम करता रहता है तब तक उस आत्मा के लिये जिसकी आँखें खुल गई हैं नेकी यानी निष्काम कर्म का रास्ता ही फ़र्ज़ यानी कर्त्तव्य का रास्ता है. लेकिन धीरे-धीरे यह बेदारी भी कम होने लगती है. थका हुआ आत्मा फिर 'निर्वाण' की नींद सोना चाहता है. कुछ देर के लिये वह कठिन मेहनत और आरामदह आलस्य दोनों से थक जाता है. पाप और पुण्य, स्वार्थ और परमार्थ दोनों के चक्कर से वह निकलना चाहता है.

इस तरह ज्ञान के अन्दर हमें तीन तरह की चीज़ें मिलती हैं—सत्य, मिथ्या और माया, यानी जो चीज़ें हैं, जो नहीं हैं और जिनका होना एक धोका है. इच्छा यानी ख़ाहिश के अन्दर तीन सूरतें आ जाती हैं—राग, द्वेश और वैराग्य, यानी ख़ास चीज़ों से मोह या लगाव होना, ख़ास चीज़ों से नफ़रत होना और सब चीज़ों की तरफ़ से बेलाग होना, ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर. इन्हीं तीनों को काम, क्रोध और नैष्काम्य भी कह सकते हैं. यह वैराग्य या नैष्काम्य एक शान्ति और सकून की हालत है.

شریر-آتما کو وہ ابھی تک سچ سمجھے ہوئے تھا وہ اب اُسے جھوٹ اور کیول' دھوکا معلوم ہونے لگتا ھے . جوانی میں جو چیز سندر اور آنند دینے والی اور چت کو موہتی ہوئی معلوم ہوتی تھی' وہ بڑھاپے میں بدصورت' بدشکل اور تکلیف دہ معلوم ہونے لگتی ھے. ایک پرانا محاورہ ھے "گیان رنج کو بڑھاتا ھے." انگریزی شبد 'وائز' کے مول معنی ھی 'غمگین' ھے . جو چیز اچھی لگتی تھی وہ اب بری لگنے لگتی ھے . جو ٹھیک معلوم ہوتی تھی وہ غلط معلوم ہونے لگتی ھے' اور آگے چلکر اچھا اور برا' ٹھیک اور غلط دونوں ھی غلط معلوم ہونے لگتے ھیں . پنیہ اور پاپ یعنی خیر اور شر دونوں پاپ یعنی شر معلوم ہونے لگتے ھیں . سونے کی بیڑیاں ویسی ھی بیڑیاں ھیں جیسی لوھے کی . ایک پیڑھی کے لوگ پیدا ہوتے ھیں' بڑھتے ھیں اور تجربوں اور تکلیفوں کے اندر سے گذرتے ہوتے' اُنہیں عقل اور سمجھ آتی ھے . وہ پھر چل دیتے ھیں . دوسری پیڑھی اُن کی جگہہ لیتی ھے . اُسی طرح کی غلطیوں' تجربوں اور تکلیفوں میں سے نکلکر اُسے سمجھ آتی ھے . وہ بھی چل دیتی ھے . یہ چکر برابر جاری رھتا ھے . ایک بیماری ختم ھو جاتی ھے' دوسری بیماریاں اُس کی جگہہ آجاتی ھیں . ایک برائی مٹتی ھے' دوسری سر اُٹھاتی ھے . نیکی اور بدی' سکھ اور دکھ ھمیشہ ایک دوسرے کو کاٹتے رھتے ھیں . انت میں دونوں ایک ساتھ ختم ہوتے ھیں . اِس دوئی کو آتما خود ھی پیدا کرتا ھے اور خود ھی ختم کرتا ھے . نیکی اور بدی دونوں جڑواں بچے ھیں . دونوں ساتھ ساتھ ختم ہوتے ھیں . جب تک آدمی جاگتا رھتا ھے اور کام کرتا رھتا ھے تب تک اُس آتما کے لئے جس کی آنکھیں کھل گئی ھیں نیکی یعنی نشکام کرم کا راستہ ھی فرض یعنی کرتویہ کا راستہ ھے . لیکن دھیرے دھیرے یہ بیداری بھی کم ہونے لگتی ھے . تھکا ہوا آتما پھر 'نروان' کی نیند سونا چاھتا ھے . کچھ دیر کے لئے وہ کٹھن محنت اور آرامدہ آلسیہ دونوں سے تھک جاتا ھے . پاپ اور پنیہ' سوارتھ اور پرمارتھ دونوں کے چکر سے وہ نکلنا چاھتا ھے .

اس طرح گیان کے اندر ھمیں تین طرح کی چیزیں ملتی ھیں—ستیہ' متھیا اور مایا' یعنی جو چیزیں ھیں' جو نہیں ھیں اور جن کا ہونا ایک دھوکا ھے . اچھا یعنی خواھش کے اندر تین صورتیں آجاتی ھیں—راگ' دویش اور ویراگیہ' یعنی خاص چیزوں سے موہ یا لگاؤ ہونا' خاص چیزوں سے نفرت ہونا اور سب چیزوں کی طرف سے بےلاگ ہونا' نا کاھو سے دوستی نا کاھو سے بیر . اِنہیں تینوں کو کام' کرودھ اور نیشکامیہ بھی کہہ سکتے ھیں . یہ ویراگیہ یا نیشکامیہ ایک شانتی اور سکون کی حالت ھے .

कर्म, अपनी भलाई को सब की भलाई के लिये क़ुरबान कर देना, व्यक्ति की भलाई को कुटुम्ब की भलाई के लिये या समाज की भलाई के लिये क़ुरबान कर देना, यही यह "यज्ञ" है. भगवद्गीता में लिखा है:—"प्रजापति ने जब शुरू में दुनिया को बनाया तो "यज्ञ" के साथ बनाया और अपनी सारी प्रजा से कह दिया कि "यज्ञ' के द्वारा ही तुम बढ़ोगे और फलो फूलोगे....हमारा छोटा आपा हमारे बड़े और व्यापक आपे के लिये अपने को क़ुरबान करता है यही यज्ञ है". यह बड़ा आपा ही असली सत्यम् सुन्दरम् और शिवम् है. इस दुनिया में जो कुछ हमें सच्चा, सुन्दर और अच्छा दिखाई देता है वह सब उसी का अक्स है.

सर्वात्मा या रूहे कुल के इन गुणों के मुक़ाबले में ग़ैर-आत्मा यानी प्रकृति या जड़ माद्दे में सत्व, तमस और रजस्—यह तीन गुण पाये जाते हैं. सत्व चीज़ों का वह गुण है जिसके ज़रिये चीज़ें जानी जा सकती हैं. तमस् वह गुण है जिसके कारण उन्हें रखने की आत्मा को इच्छा होती है. रजस् वह गुण है जिसका सम्बन्ध चीज़ों की हरकत से है. अगर हम किसी भी ठोस चीज़ को ले लें तो यही तीनों बातें गुण, द्रव्य और कर्म शब्दों से प्रकट की जा सकती हैं. हम चीज़ों के गुणों से उन्हें जानते समझते हैं. उनके द्रव्य रूप के कारण उन्हें रखने की इच्छा करते हैं. और उनके कर्म रूप के कारण हम उनके साथ तरह-तरह के काम करते हैं. हमारे शरीर भी ग़ैर-आत्मा यानी जड़ पदार्थ ही हैं. लेकिन अकसर हम उन्हें ही अपना आपा समझ बैठते हैं यह ऐसा ही है. जैसे लोहे की किसी लाल तपती हुई गेंद की गरमी को हम उसकी लाली और और उसके लोहे से अलग करके नहीं देख सकते. पर हैं वह अलग-अलग चीज़ें और फिर भी एक.

हमारे जिस्म हमारे आत्मा के इतने निकट हैं कि अकसर हम जिस्म के तीन गुणों यानी सत्व, तमस् और रजस् को आत्मा के गुण समझने और कहने लगते हैं. कभी-कभी हम इन तीन शब्दों से मतलब अपने मन की तीन हालतों से लेते हैं. और यूँ उसे आत्मा से जोड़ देते हैं. हम कहते हैं कि सात्विक आत्मा ज्ञानी, आरिफ़, समझदार और नेक आदमी का ज्ञानवान, सुसंस्कृत, प्रकाशवान और नूरानी आत्मा है, जो चीज़ों को ठीक-ठीक समझता है. तामस् आत्मा उस आदमी का जो अपनी ख़्वाहिशों के क़ाबू में है आलस्य और प्रमाद भरा आत्मा है, जो दुनिया की चीज़ों को चिपटा हुआ हो. राजस् आत्मा क्रियाशील यानी बाअमल आदमी का आत्मा है जो सदा चंचल, बेचैन और काम में लगा रहता है.

आत्मा जब ग़ैर-आत्मा की तरफ़ से हटने लगता है और उसे अपने से अलग कर देना चाहता है तब जिस

کرم، اپنی بھلائی کو سب کی بھلائی کے لئے قربان کر دینا، ویکتی کی بھلائی کو کٹمب کی بھلائی کے لئے یا سماج کی بھلائی کے لئے قربان کر دینا، یہی یہ "یگیہ" ہے۔ بھگود گیتا میں لکھا ہے:—"پرجا پتی نے جب شروع میں دنیا کو بنایا تو "یگیہ" کے ساتھ بنایا اور اپنی ساری پرجا سے کہہ دیا کہ "یگیہ" کے دوارا ہی تم بڑھوگے اور پھلو پھولوگے...ہمارا چھوٹا آپا ہمارے بڑے اور ویاپک آپے کے لئے اپنے کو قربان کرتا ہے یہی یگیہ ہے۔" وہ بڑا آپا ہی اصلی ستیم، سندرم اور شوم ہے۔ اس دنیا میں جو کچھ ہمیں سچا، سندر اور اچھا دکھائی دیتا ہے وہ سب اسی کا عکس ہے۔

سروآتما یا روح کل کے ان گنوں کے مقابلے میں غیر-آتما یعنی پرکرتی یا جڑ مادے میں ستو، تمس اور رجس—یہ تین گن پائے جاتے ہیں۔ ستو چیزوں کا وہ گن ہے جس کے ذریعے چیزیں جانی جا سکتی ہیں۔ تمس وہ گن ہے جس کے کارن انہیں رکھنے کی آتما کو اچھا ہوتی ہے۔ رجس وہ گن ہے جس کا سمبندھ چیزوں کی حرکت سے ہے۔ اگر ہم کسی بھی ٹھوس چیز کو لے لیں تو یہی تینوں باتیں گن، درویہ اور کرم شبدوں سے پرکٹ کی جا سکتی ہیں۔ ہم چیزوں کے گنوں سے انہیں جانتے سمجھتے ہیں۔ ان کے درویہ روپ کے کارن انہیں رکھنے کی اچھا کرتے ہیں۔ اور ان کے کرم روپ کے کارن ہم ان کے ساتھ طرح طرح کے کام کرتے ہیں۔ ہمارے شریر بھی غیر-آتما یعنی جڑ پدارتھ ہی ہیں۔ لیکن اکثر ہم انہیں ہی اپنا آپا سمجھ بیٹھتے ہیں۔ یہ ایسا ہی ہے جیسے لوہے کی کسی لال تپتی ہوئی گیند کی گرمی کو ہم اس کی لالی اور اس کے لوہے سے الگ کر کے نہیں دیکھ سکتے۔ پر ہیں وہ الگ الگ چیزیں اور پھر بھی ایک۔

ہمارے جسم ہمارے آتما کے اتنے نکٹ ہیں کہ اکثر ہم جسم کے تین گنوں یعنی ستو، تمس اور رجس کو آتما کے گن سمجھنے اور کہنے لگتے ہیں۔ کبھی کبھی ہم ان تین شبدوں سے مطلب اپنے من کی تین حالتوں سے لیتے ہیں، اور یوں اسے آتما سے جوڑ دیتے ہیں۔ ہم کہتے ہیں کہ ساتوک آتما گیانی، عارف، سمجھدار اور نیک آدمی کا گیانوان، سوسنسکرت، پرکاشوان اور نورانی آتما ہے، جو چیزوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھتا ہے۔ تامس آتما اس آدمی کا جو اپنی خواہشوں کے قابو میں ہے آلسیہ اور پرماد بھرا آتما ہے، جو دنیا کی چیزوں کو چمٹا ہوا ہو۔ راجس آتما کریا شیل یعنی باعمل آدمی کا آتما ہے جو سدا چنچل، بےچین اور کام میں لگا رہتا ہے۔

آتما جب غیر-آتما کی طرف سے ہٹنے لگتا ہے اور اسے اپنے سے الگ کر دینا چاہتا ہے تب جس

आत्मा या रूह को अपनी इस जीवन यात्रा में दो रास्तों से गुज़रना पड़ता है. पहला 'प्रवृत्ति मार्ग' यानी 'क़ौसे नजूल' जिसमें रूह ग़ैर-आत्मा यानी ग़ैर-रूह यानी बाहर की चीज़ों को अपनाती है, यानी उन्हें अपने ऊपर ओढ़ती है. और दूसरा 'निवृत्ति मार्ग' यानी 'क़ौसे उरूज' जिसमें फिर से ऊपर चढ़ने के लिये रूह ग़ैर-रूह को अपने से अलग करती है या उतार फेंकती है.

आत्मा के जो तीन रूप हमने ऊपर बताये हैं उन तीनों का अलग-अलग सम्बन्ध ज्ञान, इच्छा और क्रिया यानी इल्म, ख़्वाहिश और अमल से है. इनमें 'इच्छा' यानी 'ख़्वाहिश' ही वह असल चीज़ है जो एक व्यक्त आत्मा को दूसरी व्यक्त आत्मा से, एक रूह को दूसरी रूह से, एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग करती है. जब इच्छा मिट जाती है तो यह अलहदगी भी जाती रहती है. यही हमारे सब अच्छे बुरे कामों की जड़ है.

यही तीन यानी ज्ञान, इच्छा और क्रिया रूहों या जीवों को एक दूसरे से अलग करते हैं. ऐसा अलग आत्मा 'पराग आत्मा' कहलाता है. पर जब इस आत्मा का रुख़ अन्दर को हो जाता है तब वह 'प्रत्याग आत्मा' हो जाता है. तब यह सब अलहदगी मिट जाती है. तब यही तीनों सूरतें एक व्यापक आत्मा यानी रूहेकुल के तीन गुणों—चित्त, आनन्द और सत्त यानी मारफ़त, क़ुदरत और वजूदे हक़ीक़ी—में बदल जाती हैं. यह मारफ़त ही अक़्ले कुल है. इन्हीं तीनों को सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता और सर्व व्यापकता भी कहते हैं. शुद्ध आत्मा यानी रूहेकुल के इन्हीं तीन गुणों के नाम सत्यम, प्रियम और हितम, या शान्तम, सुन्दरम और शिवम भी हैं. असली वजूद यानी वजूदे हक़ीक़ी केवल यही शुद्ध आत्मा या रूहेकुल है. वही देखने वाला है और वही देखने की चीज़. वही जानने वाला है और वही जानने की चीज़. उसी से सब रोशन है जिस तरह यह दुनिया सूरज से. वह अपने को भी जानता है और ग़ैर-आपे को भी. वह अपने जानने को भी जानता है. वही है और कुछ है ही नहीं. वह नित्य है और सब बदलता हुआ धोका है. इससे हमें कभी धोका नहीं हो सकता. वही आनन्द का भण्डार है, सुन्दरता का ख़ज़ाना है, वही प्रेम है, वही अनन्त बरकत है, वही एक चाहने की चीज़ है. सब दिलों का वही एक प्रीतम है और जो कुछ प्यार के क़ाबिल है केवल उसी के कारण. वह नित्य है, अनन्त है. वह नेकी का भण्डार है. वही यज्ञ यानी क़ुरबानी है. प्रेम और सेवा के ज़रिये अपने छोटे आपे को उस बड़े आपे के लिये, जो सब के अन्दर रमा हुआ है, क़ुरबान कर देना ही उसके दर्शन, दीदार, यानी आत्म दर्शन का तरीक़ा है. इसी का नाम निःश्रेयस है यानी सब का भला है. अन्त में निःस्वार्थ कर्म, निष्काम

آتما یا روح کو اپنی اِس جیون یاترا میں دو راستوں سے گذرنا پڑتا ہے ۔ پہلا 'پرورتی مارگ' یعنی 'قوس نزول' جس میں روح غیر-آتما یعنی غیر-روح یعنی باہر کی چیزوں کو اپناتی ہے' یعنی انہیں اپنے اوپر اوڑھتی ہے ۔ اور دوسرا 'نرورتی مارگ' یعنی 'قوس عروج' جسمیں پھر سے اوپر چڑھنے کے لئے روح غیر-روح کو اپنے سے الگ کرتی ہے یا اُتار پھینکتی ہے ۔

آتما کے جو تین روپ ہم نے اوپر بتائے ہیں اُن تینوں کا الگ الگ سمبندھ گیان' اچھا' اور کریا یعنی علم خواہش اور عمل سے ہے ۔ ان میں اِچھا' یعنی 'خواہش' ہی وہ اصل چیز ہے جو ایک ویکت آتما کو دوسری ویکت آتما سے' ایک روح کو دوسری روح سے' ایک ویکتی کو دوسرے ویکتی سے' الگ کرتی ہے ۔ جب اِچھا مٹ جاتی ہے تو یہ علیحدگی بھی جاتی رہتی ہے ۔ یہی ہمارے سب اچھے برے کاموں کی جڑ ہے ۔

یہی تین یعنی گیان' اچھا اور کریا روحوں یا جیوں کو ایک دوسرے سے الگ کرتے ہیں ۔ ایسا الگ آتما 'پراگ آتما' کہلاتا ہے ۔ پر جب اِس آتما کا رخ اندر کو ہو جاتا ہے تب وہ 'پرتیاگ آتما' ہو جاتا ہے ۔ تب یہ سب علیحدگی مٹ جاتی ہے ۔ تب یہی تینوں صورتیں ایک ویاپک آتما یعنی روح کل کے تین گنوں—چت' آنند اور ست یعنی معرفت' قدرت اور وجود حقیقی—میں بدل جاتی ہیں ۔ یہ معرفت ہی عقل کل ہے ۔ اِنہیں تینوں کو سروگیتا' سرو شکتیمتا اور سرو ویاپکتا بھی کہتے ہیں ۔ شدھ آتما یعنی روح کل کے اِنہیں تین گنوں کے نام ستیم' پریم اور ھتم' یا شانتم' سندرم اور شوم بھی ہیں ۔ اصلی وجود یعنی وجود حقیقی کیول یہی شدھ آتما یا روح کل ہے ۔ وہی دیکھنے والا ہے اور وہی دیکھنے کی چیز ۔ وہی جاننے والا ہے اور وہی جاننے کی چیز ۔ اُسی سے سب روشن ہے جس طرح یہ دنیا سورج سے ۔ وہ اپنے کو بھی جانتا ہے اور غیر-آپے کو بھی ۔ وہ اپنے جاننے کو بھی جانتا ہے ۔ وہی ہے اور کچھ ہے ہی نہیں ۔ وہ نتیہ ہے اور سب بدلتا ہوا دھوکا ہے ۔ اُس سے ہمیں کبھی دھوکا نہیں ہو سکتا ۔ وہی آنند کا بھنڈار ہے' سندرتا کا خزانہ ہے' وہی پریم ہے' وہی اننت برکت ہے' وہی ایک چاہنے کی چیز ہے ۔ سب دلوں کا وہی ایک پریتم ہے اور جو کچھ پیار کے قابل ہے کیول اُسی کے کارن ۔ وہ نتیہ ہے' اننت ہے ۔ وہ نیکی کا بھنڈار ہے ۔ وہی یگیہ یعنی قربانی ہے ۔ پریم اور سیوا کے ذریعے اپنے چھوٹے آپے کو اُس بڑے آپے کے لئے' جو سب کے اندر رما ہوا ہے' قربان کردینا ہی اُس کے درشن' دیدار یعنی آتم درشن کا طریقہ ہے ۔ اِسی کا نام نہشرئیس ہے یعنی سب کا بھلا ہے ۔ انت میں نسوارتھ کرم' نشکام

एक आत्मा के अलग-अलग रूप

डाक्टर भगवान दास

आत्मा एक और बेअन्त है. उसका कोई ओर छोर नहीं. उससे बाहर कुछ नहीं. उसी आत्मा को सर्वात्मा या रूहेकुल भी कह सकते हैं. लेकिन इस दुनिया में देखने समझने के लिए उसी एक को तीन अलग-अलग रूपों में देखा जा सकता है. एक आत्मा का व्यापक अव्यक्त रूप जो सब में रमा हुआ है. दूसरे अलग-अलग व्यक्त आत्मायें जिन्हें अलग-अलग आत्मा, जीव या रूह कहते हैं. और तीसरे हमारे यह अलग-अलग मन और शरीर. पहले यानी व्यापक अव्यक्त आत्मा के अन्दर सब व्यक्त आत्मा यानी अलग-अलग रूहें शामिल हैं. और हमारे अलग-अलग मन-शरीर ही इन अलग-अलग आत्माओं को एक दूसरे से अलग और व्यक्त यानी ज़ाहिर करते हैं.

इसकी एक मिसाल एक ही नदी के अन्दर अलग अलग बरतनों में एक ही पानी की शकलें बदल जाने से दी जाती है.

उस व्यापक अव्यक्त आत्मा की जानकारी का नाम 'मैटाफ़िज़िक' यानी 'दर्शन शास्त्र' या 'फ़लसफ़ा' है. अलग-अलग व्यक्त आत्माओं के बयान को 'साइकालोजी' यानी 'मनोविज्ञान' कहते हैं. हमारे मन-शरीरों से सम्बन्ध रखने वाली साइन्सों को मामूली जड़विज्ञान या 'साइको फ़िज़िक्स' कहा जाता है. दर्शन शास्त्र या फ़लसफ़े में हमें सब साइन्सों के बुनियादी असूल मिल जाते हैं.

जब आत्मा ग़ैर-आत्मा यानी अपने से बाहर की चीज़ों की बात करता है तो तीन सूरतें पैदा होती हैं. पहली यह कि आत्मा ग़ैर-आत्मा को अपने सामने रखकर उसकी जानकारी हासिल करता है. फिर चाहे उसके वजूद को सच्चा माने या झूठा. दूसरी यह कि आत्मा ग़ैर-आत्मा के साथ कुछ न कुछ काम करता है. उसे अपने ऊपर ओढ़ना है जैसे आदमी कपड़े पहनता है,, या उसे अपने अन्दर दाखिल कर लेता है जैसे आदमी खाना खाता है. उसके साथ अपना अपनापन जोड़ता है. या उसे उतार फेंकता है और अपने को उससे अलग कर लेता है. तीसरी यह कि जानने और काम करने के बीच में आत्मा ग़ैर-आत्मा से अपने को जोड़ लेने की या उसे अपने अन्दर हज़म कर लेने की या उसे फेंक देने की 'इच्छा' करता है. यह 'इच्छा' तीसरी सूरत है. यह इच्छा या ख़्वाहिश आत्मा की ही वृत्ति या हालत है.

ایک آتما کے الگ الگ روپ

ڈاکٹر بھگوان داس

آتما ایک اور بے انت ہے ۔ اُس کا کوئی اور چھور نہیں ۔ اُس سے باہر کچھ نہیں ۔ اُسی آتما کو سرو آتما یا روح کل بھی کہہ سکتے ہیں ۔ لیکن اِس دنیا میں دیکھنے سمجھنے کے لئے اُسی ایک کو تین الگ الگ روپوں میں دیکھا جا سکتا ہے ۔ ایک آتما کا ویاپک اویکت روپ جو سب میں رما ہوا ہے ۔ دوسرے الگ الگ ویکت آتمائیں جنھیں الگ الگ آتما، جیو یا روح کہتے ہیں ۔ اور تیسرے ہمارے یہ الگ الگ من اور شریر ۔ پہلے یعنی ویاپک اویکت آتما کے اندر سب ویکت آتما یعنی الگ الگ روحیں شامل ہیں ۔ اور ہمارے الگ الگ من-شریر ہی اِن الگ الگ آتماؤں کو ایک دوسرے سے الگ اور ویکت یعنی ظاہر کرتے ہیں ۔

اِس کی ایک مثال ایک ہی ندی کے اندر الگ الگ برتنوں میں ایک ہی پانی کی شکلیں بدل جانے سے دی جاتی ہے ۔

اُس ویاپک اویکت آتما کی جانکاری کا نام 'میٹافزک' یعنی 'درشن شاستر' یا 'فلسفہ' ہے ۔ الگ الگ ویکت آتماؤں کے بیان کو 'سائیکالوجی' یعنی 'منو وگیان' کہتے ہیں ۔ ہمارے من-شریروں سے سمبندھ رکھنے والی سائنسوں کو معمولی جڑ وگیان یا 'سائکو فزکس' کہا جاتا ہے ۔ درشن شاستر یا فلسفے میں ہمیں سب سائنسوں کے بنیادی اُصول مل جاتے ہیں ۔

جب آتما غیر-آتما یعنی اپنے سے باہر کی چیزوں کی بات کرتا ہے تو تین صورتیں پیدا ہوتی ہیں۔ پہلی یہ کہ آتما غیر آتما کو اپنے سامنے رکھ کر اِس کی جانکاری حاصل کرتا ہے، پھر چاہے اُس کے وجود کو سچا مانے یا جھوٹا ۔ دوسری یہ کہ آتما غیر آتما کے ساتھ کچھ نہ کچھ کام کرتا ہے۔ اُسے اپنے اوپر اوڑھتا ہے جیسے آدمی کپڑے پہنتا ہے، یا اُسے اپنے اندر داخل کر لیتا ہے جیسے آدمی کھانا کھاتا ہے ۔ اُس کے ساتھ اپنا اپناپن جوڑتا ہے ۔ یا اُسے اتار پھینکتا ہے اور اپنے کو اُس سے الگ کر لیتا ہے۔ تیسری یہ کہ جاننے اور کام کرنے کے بیچ میں آتما غیر-آتما سے اپنے کو جوڑ لینے کی یا اسے اپنے اندر ہضم کر لینے کی یا اسے پھینک دینے کی 'اِچھا' کرتا ہے ۔ یہ اِچھا تیسری صورت ہے ۔ یہ اِچھا یا خواہش آتما کی ہی ایک ورتی یا حالت ہے ۔

कारण हुई. उस समय मेरी बहन की उम्र सिर्फ़ पाँच वर्ष की थी. कितनी प्यारी और दया-पात्र थी वह ! मैं अब उसे देख सकता हूँ. वे माँ को समझाकर रोने से चुप कर रहे थे, लेकिन वह बिना रुके हुए लगातार रो रही थी. शायद उसका रोना सुनकर इनका अन्त:करण छिदता था, क्योंकि इन्होंने मेरी बहन को खा डाला था. यदि इनका अन्त:करण छिदता था तो……

मेरी बहन को मेरे भाई ने खा डाला ! मैं नहीं कह सकता कि यह बात मेरी माँ को मालूम था या नहीं.

माँ को जरूर मालूम हुआ होगा, लेकिन रोते समय उसने कुछ कहा नहीं. शायद उसने इसे ठीक समझा हो. मुझे याद है कि जब मैं चार या पाँच वर्ष का था तो उस समय मेरे भाई ने मुझसे कहा था कि पुत्र के लिये माता-पिता के प्रति सब से बड़ा भक्ति का काम यह है कि जब वे बीमार पड़ें तो वह अपने माँस का एक टुकड़ा काटकर उसे पकाये और उन्हें खाने के लिए दे. और मां ने यह नहीं कहा था कि यह ठीक नहीं है. यदि एक टुकड़ा खाया जा सकता है, तो वास्तव में पूरा भी खाया जा सकता है ! लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि जिस ढंग से मां रो रही थी उससे दूसरों के हृदय फटे जा रहे थे. अब उसे याद करने से भी मुझे दु:ख होता है. कितना अजीब है !

12

पिछले चार हज़ार वर्षों से मनुष्य एक दूसरे को खा रहे हैं और मैं आज ही यह जान सका कि मैं आजीवन उन्हीं में घुला-मिला रहा. मेरी बहन ठीक उसी समय मरी जब मेरे बड़े भाई घर-गृहस्थी का प्रबन्ध कर रहे थे. मुझे कैसे विश्वास हो सकता है कि हमें खिलाने के लिये उन्होंने गुप्त रूप से उसे हमारे खाने में नहीं मिला दिया ?

हो सकता है कि अनजाने मैंने अपनी बहन को खा लिया ! और अब मेरी बारी आई है कि मैं खाया जाऊँ !

मेरी चार हज़ार वर्ष पुरानी मनुष्य-भक्षी वंश-परम्परा है. यद्यपि इसे मैं पहले नहीं समझ सका, लेकिन अब मैं इसे समझ रहा हूँ. वास्तविक मनुष्य पाना कठिन है !

13

शायद अब भी कुछ ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने मनुष्य का माँस नहीं खाया है. उन बच्चों को बचाइये !

अप्रैल 1918

کارن ہوئی ۔ اُس سمے میری بہن کی عمر صرف پانچ ورش کی تھی ۔ کتنی پیاری اور دیا پاتر تھی وہ ! میں اب اُسے دیکھ سکتا ہوں ۔ وے ماں کو سمجھا کر رونے سے چپ کر رہے تھے' لیکن وہ بنا رکے ہوئے لگاتار رو رہی تھی ۔ شاید اُس کا رونا سن کر اِن کا انتہ کرن چھدتا تھا' کیونکہ اِنہوں نے میری بہن کو کھا ڈالا تھا ۔ یدی اِن کا انتہ کرن چھدتا تھا تو...

میری بہن کو میرے بھائی نے کھا ڈالا ! میں نہیں کہہ سکتا کہ یہ بات میری ماں کو معلوم تھی یا نہیں ۔

ماں کو ضرور معلوم ہوا ہوگا' لیکن روتے سمے اس نے کچھ کہا نہیں ۔ شاید اُس نے اِسے ٹھیک سمجھا ہو ۔ مجھے یاد ہے کہ جب میں چار یا پانچ ورش کا تھا تو اُس سمے میرے بھائی نے مجھسے کہا تھا کہ پتر کے لئے ماتا پتا کے پرتی سب سے بڑا بھکتی کا کام یہ ہے کہ جب وے بیمار پڑیں تو وہ اپنے مانس کا ایک ٹکڑا کاٹ کر اسے پکائے اور انہیں کھانے کے لئے دے ۔ اور ماں نے یہ نہیں کہا تھا کہ یہ ٹھیک نہیں ہے ۔ یدی ایک ٹکڑا کھایا جا سکتا ہے' تو واستو میں پورا بھی کھایا جا سکتا ہے ! لیکن اب میں سوچتا ہوں کہ جس ڈھنگ سے ماں رو رہی تھی اُس سے دوسروں کے ہردئے پھٹے جا رہے تھے ۔ اب اسے یاد کرنے سے بھی مجھے دکھ ہوتا ہے ۔ کتنا عجیب ہے !

12

پچھلے چار ہزار ورشوں سے منشیہ ایک دوسرے کو کھا رہے ہیں' اور میں آج ہی یہ جان سکا کہ میں آجیون انہیں میں گھلا ملا رہا ۔ میری بہن ٹھیک اُسی سمے مری جب میرے بڑے بھائی گھر گرہستی کا پربندھ کر رہے تھے ۔ مجھے کیسے وشواس ہو سکتا ہے کہ ہمیں کھلانے کے لئے انہوں نے گپت روپ سے اُسے ہمارے کھانے میں نہیں ملا دیا ؟

ہو سکتا ہے کہ انجانے میں نے اپنی بہن کو کھا لیا ! اور اب میری باری آئی ہے کہ میں کھایا جاؤں !

میری چار ہزار ورش پرانی منشیہ بھکشی ونش پرمپرا ہے ۔ یدیپی اِسے میں پہلے نہیں سمجھ سکا' لیکن اب میں اِسے سمجھ رہا ہوں ۔ واستوک منشیہ پانا کٹھن ہے ۔

13

شاید اب بھی کچھ ایسے بچے ہیں جنہوں نے منشیہ کا مانس نہیں کھایا ہے ۔ اُن بچوں کو بچائیے ۔

اپریل 1918

तब उनका एक और तरीक़ा भी मेरी समझ में आ गया. वे सिर्फ़ सुधार करने से ही इनकार नहीं करते बल्कि उसके साथ ही साथ उन्होंने अपनी तैयारी भी कर ली है. उन्होंने मेरे ऊपर 'पागल आदमी' की चिप्पी भी चिपका दी है. जब वे मुझे खा डालेंगे तो उसके बाद उनके कार्य का कोई कुपरिणाम न होगा. यही नहीं, वास्तव में लोग उनकी तारीफ़ करेंगे. जब आसामियों ने यह कहा था कि उन्होंने एक बदमाश को मारकर खा डाला तो वे भी यही तरीक़ा अपना रहे थे. यह उनका पुराना राग है.

इस पर चेन लाओ-वू हम लोगों के पास बड़े गुस्से से आये. लेकिन वे मेरा मुंह कैसे बन्द कर सकते थे? मैं जालसाज़ी के इन सदस्यों के सामने अपने विचार रखने के लिये तुल गया. उनसे मैंने कहा कि 'आप लोगों को सुधार करना चाहिए! आप लोगों को हृदय के भीतर से सुधार करना चाहिए! आप लोगों को समझ लेना चाहिए कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कोई स्थान नहीं होगा! अगर आप सुधार नहीं करते तो आप लोग ख़ुद खा डाले जायेंगे! अगर आप बहुत से बच्चों को भी पैदा करें तो भी वे सब के सब असली मनुष्यों के द्वारा उसी तरह नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे शिकारियों द्वारा भेड़िये! आप सब कीड़ों की तरह नष्ट कर दिये जायेंगे!'

चेन लाओ-वू ने उन सब मनुष्यों को भगा दिया और मैं नहीं जानता कि मेरा भाई कहां ग़ायब हो गया. चेन लाओ-वू ने मुझे समझाकर मेरे कमरे में वापस भेजा. पूरा कमरा अन्धकार में डूबा था. छत की शहतीर और धन्नियाँ काँपने लगीं. कुछ देर काँपने के बाद उनकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई बहुत अधिक बढ़ गई और वे सब मेरे ऊपर ढेर हो गई.

वे बहुत ही ज्यादा भारी हैं. वे हिलाई-डुलाई भी नहीं जा सकतीं. वे लोग चाहते हैं कि मैं मर जाऊँ. लेकिन मैं जानता हूँ कि वास्तव में वे भारी नहीं हैं. इसलिये मैं उन्हें धक्का देकर हटा दूँगा. मेरा शरीर पसीने से तर हो गया है. लेकिन आप लोग मुझे चिल्लाने से नहीं रोक सकते, 'फ़ौरन सुधार कीजिये! अपने हृदय के भीतर से सुधार कीजिये! आप लोगों को जानना चाहिये कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कोई स्थान न रहेगा!'

11

सूरज नहीं चमक रहा है. द्वार कभी नहीं खुलता. प्रतिदिन दो बार भोजन. अपनी खाने की दोनों छोटी-छोटी लकड़ियों को पकड़े हूँ. मैंने अपने भाई के बारे में सोचा और यह अनुभव किया कि मेरी बहन की मृत्यु इन्हीं के

تب ان کا ایک اور طریقہ بھی میری سمجھ میں آگیا۔ وے صرف سدھار کرنے سے ہی انکار نہیں کرتے بلکہ اس کے ساتھ ہی ساتھ انہوں نے اپنی تیاری بھی کر لی ہے۔ انہوں نے میرے اوپر 'پاگل آدمی' کی چٹی بھی چپکا دی ہے۔ جب وے مجھے کھا ڈالینگے تو اس کے بعد ان کے کارئہ کا کوئی کوپریڻام نہ ہوگا۔ یہی نہیں' واستو میں لوگ ان کی تعریف کرینگے۔ جب آسامیوں نے یہ کہا تھا کہ انہوں نے ایک بدمعاش کو مار کر کھا ڈالا تو وے بھی یہی طریقہ اپنا رہے تھے۔ یہ ان کا پرانا راگ ہے۔

اس پر چین لاؤ-وو ہم لوگوں کے پاس بڑے غصے سے آئے۔ لیکن وے میرا منہ کیسے بند کر سکتے تھے؟ میں جال‌سازی کے ان سدسیوں کے سامنے اپنے وچار رکھنے کے لئے تل گیا۔ ان سے میں نے کہا کہ' 'آپ لوگوں کو سدھار کرنا چاہئے! آپ لوگوں کو ہردئے کے بھیتر سے سدھار کرنا چاہئے! آپ لوگوں کو سمجھ لینا چاہئے کہ منشیہ بھکشی منشیوں کے لئے سنسار میں کوئی استھان نہیں ہوگا! اگر آپ سدھار نہیں کرتے تو آپ لوگ خود کھا ڈالے جائینگے! اگر آپ بہت سے بچوں کو بھی پیدا کریں تو بھی وے سب کے سب اصلی منشیوں کے دوارا اسی طرح نشٹ کر دیئے جائینگے جیسے شکاریوں دوارا بھیڑیئے! آپ سب کیڑوں کی طرح نشٹ کر دیئے جائینگے!

چین لاؤ-وو نے ان سب منشیوں کو بھگا دیا اور میں نہیں جانتا کہ میرا بھائی کہاں غائب ہو گیا۔ چین لاؤ-وو نے مجھے سمجھا کر میرے کمرے میں واپس بھیجا۔ پورا کمرا اندھکار میں ڈوبا تھا۔ چھت کی شہتیر اور دھنیاں کانپنے لگیں۔ کچھ دیر کانپنے کے بعد ان کی لمبائی' چوڑائی اور موٹائی بہت ادھک بڑھ گئی اور وے سب میرے اوپر ڈھیر ہو گئیں۔

وے بہت ہی زیادہ بھاری ہیں۔ وہ ہلائی ڈلائی بھی نہیں جا سکتیں۔ وے لوگ چاہتے ہیں کہ میں مر جاؤں۔ لیکن میں جانتا ہوں کہ واستو میں وے بھاری نہیں ہیں۔ اس لئے میں انہیں دھکا دیکر ہٹا دونگا۔ میرا شریر پسینے سے تر ہو گیا ہے۔ لیکن آپ لوگ مجھے چلانے سے نہیں روک سکتے' 'فوراً سدھار کیجئے! اپنے ہردئے کے بھیتر سے سدھار کیجئے! آپ لوگوں کو جاننا چاہئے کہ منشیہ بھکشی منشیوں کے لئے سنسار میں کوئی استھان نہ رہیگا!'

11

سورج نہیں چمک رہا ہے۔ دوار کبھی نہیں کھلتا۔ پرتی دن دوبار بھوجن۔ اپنی کھانے کی دونوں چھوٹی چھوٹی لکڑیوں کو پکڑے ہوں۔ میں نے اپنے بھائی کے بارے میں سوچا اور یہ انوبھو کیا کہ میری بہن کی مرتیو انہیں کے

तक कि पिछले दिन उन्होंने वुल्फ विलेज में उस मनुष्य को पकड़ा. पिछले साल जब एक सार्वजनिक स्थान पर एक मनुष्य को प्राण-दण्ड मिला तो तपेदिक के एक रोगी ने उस मरे हुए अपराधी के ख़ून में रोटी का टुकड़ा डुबोकर इस आशा से चाटा कि उससे उसका रोग ठीक हो जायेगा.

'मेरे भाई, अगर वे सब मनुष्यों को खाना चाहते हैं तो आप उन्हें रोक नहीं सकते. परन्तु आप भी उस जाल-साज़ी में क्यों शामिल हुए हैं ? उनकी तरह के मनुष्य-भक्षी दानव कुछ भी करने में न चूकेंगे. वे मुझे भी खा सकते हैं. वे आपको भी खा सकते हैं. और उसी जालसाज़ी में वे एक-दूसरे को भी खा सकते हैं. लेकिन अगर वे घूम पड़ें और अचानक अपने को सुधार लें तो हर-एक को शान्ति मिल जायगी. अगर ऐसी ही हालत रहे तो भी हम दोनों ख़ासतौर से एक-दूसरे को स्नेह कर सकते हैं, मेरे भाई ! उनका साथ छोड़ दीजिये ! उनका खण्डन कीजिये ! उनसे कहिये कि आप ऐसा नहीं कर सकते, मेरे भाई ! मुझे विश्वास है कि आप 'नहीं' कह सकते हैं, क्योंकि अभी पिछले दिन जब आसामियों ने आपसे लगान कम करने के लिये कहा था तो आपने 'नहीं' कह दिया था.

जब मैंने अपने भाई से इस प्रकार कहा तो पहले तो वे रूखे ढंग से मुस्कराये. लेकिन शीघ्र ही उनकी मुद्रा क्रूर हो गई. और जब मैंने जालसाज़ी के गुप्त मामलों का भंडा फोड़ दिया तो उनके मुंह का रंग बिल्कुल ही बदल गया. सामने के दरवाज़े के बाहर मनुष्यों का एक झुण्ड खड़ा था. उसमें बड़े चाओ और उनका कुत्ता भी था. वे सब अपनी गर्दनें निकाल कर आगे बढ़ने लगे. मैं कुछ चेहरों को नहीं पहचान सका. वे ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे कि पर्दे से ढँके हों. लेकिन दूसरे आदमी गम्भीर थे. उनके दाँत खुले हुए थे और वे अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिये अपने होंठ काट रहे थे. मैं सब को पहचान गया. वे सब उसी जालसाज़ी में शामिल थे. वे सब मनुष्य-भक्षी दानव थे. लेकिन इसके साथ-साथ मैं यह भी जान गया था कि उनके विचारों और उनकी भावनाओं में फ़र्क़ था. उनमें से कुछ का विचार था कि मनुष्य-भक्षण सदा से चलता आया है और वह ठीक भी है. इनके विरुद्ध कुछ ऐसे भी थे जिनका विचार था कि मनुष्य-भक्षण ठीक नहीं है, लेकिन फिर भी वे करते थे. उन्हें यह डर था कि कहीं उनका भन्डा फोड़ न हो जाय और इसी से वे मेरे कथनों पर क्षुब्ध थे. वे मुझे मुँह चिढ़ा रहे थे.

ऐसा प्रतीत होता है कि उसी समय मेरा भाई भी मुझसे क्षुब्ध हो गया और उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'चले जाओ ! पागल आदमी को देखने में क्या मज़ा आता है ?

تک کہ پچھلے دن انہوں نے وُلف ولیج میں اس منشیہ کو پکڑا۔ پچھلے سال جب ایک سارودھنک استھان پر ایک منشیہ کو پران دنڈ ملا تو تپ دق کے ایک روگی نے اس مرے ہوئے اپرادھی کے خون میں روٹی کا ٹکڑا ڈبو کر اس آشا سے چاٹا کہ اس سے اس کا روگ ٹھیک ہو جائیگا ۔

'میرے بھائی' اگر وے سب منشیوں کو کھانا چاہتے ہیں تو آپ انہیں روک نہیں سکتے۔ پرنتو آپ بھی اس جال سازی میں کیوں شامل ہوئے ہیں ؟ ان کی طرح کے منشیہ بھکشی دانو کچھ بھی کرنے میں نہ چوکینگے ۔ وے مجھے بھی کھا سکتے ہیں ۔ وے آپ کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ اور اسی جال سازی میں وے ایک دوسرے کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ لیکن اگر وے گھوم پڑیں اور اچانک اپنے کو سدھار لیں تو ہر ایک کو شانتی مل جائیگی ۔ اگر ایسی ہی حالت رہے تو بھی ہم دونوں خاص طور سے ایک دوسرے کو سنیہہ کر سکتے ہیں' میرے بھائی ! ان کا ساتھ چھوڑ دیجئے ! ان کا کھنڈن کیجئے ! ان سے کہیئے کہ آپ ایسا نہیں کر سکتے' میرے بھائی ! مجھے وشواس ہے کہ آپ 'نہیں' کہہ سکتے ہیں' کیونکہ ابھی پچھلے دن جب آسامیوں نے آپ سے لگان کم کرنے کے لئے کہا تھا تو آپ نے 'نہیں' کہہ دیا تھا ۔

جب میں نے اپنے بھائی سے اس پرکار کہا تو پہلے تو وے روکھے ڈھنگ سے مسکرائے ۔ لیکن شیگھر ہی ان کی مدرا کرور ہو گئی ۔ اور جب میں نے جال سازی کے گپت معاملوں کا بھنڈا پھوڑ دیا تو ان کے منہ کا رنگ بالکل ہی بدل گیا ۔ سامنے کے دروازے کے باہر منشیوں کا ایک جھنڈ کھڑا تھا ۔ اس میں بڑے چاؤ اور ان کا کتا بھی تھا ۔ وے سب اپنی گردنیں نکال کر آگے بڑھنے لگے ۔ میں کچھ چہروں کو نہیں پہچان سکا ۔ وے ایسے دکھائی دے رہے تھے جیسے کہ پردے سے ڈھکے ہوں ۔ لیکن دوسرے آدمی گمبھیر تھے ۔ ان کے دانت کھلے ہوئے تھے اور وے اپنی مسکراہٹ چھپانے کے لئے اپنے ہونٹ کاٹ رہے تھے میں سب کو پہچان گیا۔ وے سب اسی جال سازی میں شامل تھے۔ وے سب منشیہ بھکشی دانو تھے ۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ میں یہ بھی جان گیا کہ ان کے وچاروں اور ان کی بھاوناؤں میں فرق تھا ۔ ان میں سے کچھ کا وچار تھا کہ منشیہ بھکشن سدا سے چلتا آیا ہے اور وہ ٹھیک بھی ہے ۔ ان کے ورودھ کچھ ایسے بھی تھے جن کا وچار تھا کہ منشیہ بھکشن ٹھیک نہیں ہے' لیکن پھر بھی وے کرتے تھے ۔ انہیں یہ ڈر تھا کہ کہیں ان کا بھنڈا پھوڑ نہ ہو جائے اور اسی سے وے میرے کتھنوں پر چھبدھ تھے ۔ وے مجھے منہ چڑھا رہے تھے ۔

ایسا پرتیت ہوتا ہے کہ اسی سمے میرا بھائی بھی مجھ سے چھبدھ ہو گیا اور اس نے زور سے چلا کر کہا' چلے جاؤ ! پاگل آدمی کو دیکھنے میں کیا مزا آتا ہے ؟'

अगर अपने उस स्थायी विचार से उन्हें छुटकारा मिल जाय तो वे आत्म-विश्वास के साथ अपने काम-काज कर सकते हैं और शान्तिपूर्वक घूम-फिर सकते हैं, खाना खा सकते हैं और सो सकते हैं. तब वे कितने अधिक सुख-चैन में होंगे ! अपनी आदतों में सुधार करने का मतलब होगा एक नई दुनिया में प्रवेश, एक दर्रे से गुज़र कर आगे के एक नये दृश्य का दर्शन !

लेकिन पिता और पुत्र, भाई और बहन, पति और पत्नी, मित्र और शत्रु, अध्यापक और शिष्य और अजनबी —सभी आलसाज़ी में हैं, एक-दूसरे को बढ़ावा दे रहे हैं, एक-दूसरे को शामिल कर रहे हैं. वे मर जाना पसन्द करेंगे, लेकिन सुधार का एक मामूली क़दम नहीं उठायेंगे.

10

प्रात:काल तड़के मैं अपने भाई की खोज में निकला. वह हाल के द्वार के सामने खड़े थे और आकाश की ओर देख रहे थे. मैं उनके पीछे जा पहुँचा और रास्ता रोककर मैंने उनसे बड़ी सच्चाई और शान्ति से कहा – 'भाई साहब, मुझे आपसे कुछ कहना है.'

'कह डालो,' जल्दी से घूमकर और अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने उत्तर दिया.

'मुझे सिर्फ कुछ शब्द कहने हैं, परन्तु मेरे लिये उन्हें कहना कठिन हो रहा है. भाई साहब, मेरा विचार है कि शुरू में सब असभ्य मनुष्य कुछ न कुछ मनुष्य-भक्षी थे. बाद को उनके विचारों में अन्तर हो गया. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना छोड़ दिया. अपनी नैतिक अवस्था को सुधारने की प्रबल प्रेरणा से वे मनुष्य बन गये, मेरा मतलब है, वास्तविक मनुष्य. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना जारी रक्खा. वे कीड़ों की तरह थे. उन्होंने मछली और बन्दरों की स्थिति से होकर विकास किया और आखिर में वे आदमी बन गये. उनमें से कुछ सुधरना चाहते ही न थे, और वे अब भी कीड़े हैं. मनुष्यों को खाने वाले मनुष्य मनुष्यों को न खाने वाले मनुष्यों की अपेक्षा कितनी अधिक लज्जा और घृणा के पात्र हैं. जितना अन्तर कीड़ों और बन्दरों में है उससे भी अधिक अन्तर इन दो कोटियों के मनुष्यों में है.

वह घटना बहुत पुराने युग की है जब यी-या ने चीह और चाउ को खिलाने के लिये अपने पुत्र का मांस पकाया था. इस बात की कल्पना कौन कर सकता था कि पान-कू के पृथ्वी और आकाश को अलग-अलग बाँटने के दिन से लेकर यी-या के पुत्र के समय तक मनुष्य मनुष्य को खाता रहा है ? यी-या के पुत्र के समय से लेकर सू-सू-लिंग के समय तक वे मनुष्य को खाते आये हैं. और सी-सु-लिंग के आगे भी उन्होंने मनुष्य को खाना जारी रक्खा है, यहां

اگر اپنے اُس استھائی وچار سے اُنھیں چھٹکارا مل جائے تو وے آتم وشواس کے ساتھ اپنے کام کاج کر سکتے ھیں اور شانتی پوروک گھوم پھر سکتے ھیں، کھانا کھا سکتے ھیں اور سو سکتے ھیں۔ تب وے کتنے ادھک سکھ چین میں ھونگے! اپنی عادتوں میں سدھار کرنے کا مطلب ھوگا ایک نئی دنیا میں پرویش، ایک درہ سے گذر کر آگے کے ایک نئے درشیہ کا درشن!

لیکن پتا اور پتر، بھائی اور بہن، پتی اور پتنی، متر اور شترو، ادھیاپک اور شسیہ اور اجنبی—سبھی جال سازی میں ھیں اور ایک دوسرے کو بڑھاوا دے رھے ھیں۔ ایک دوسرے کو شامل کر رھے ھیں۔ وے مر جانا پسند کرینگے، لیکن سدھار کا ایک معمولی قدم نہیں اُٹھائینگے۔

10

پراتہکال تڑکے میں اپنے بھائی کی کھوج میں نکلا۔ وہ ھال کے دوار کے سامنے کھڑے تھے اور آکاش کی اور دیکھ رھے تھے۔ میں اُن کے پیچھے جا پہونچا اور راستہ روک کر میں نے ان سے بڑی سچائی اور شانتی سے کہا—'بھائی صاحب، مجھے آپ سے کچھ کہنا ہے!'

'کہہ ڈالو' جلدی سے گھوم کر اور اپنا سر ھلاتے ھوئے اُنھوں نے اُتر دیا۔

'مجھے صرف کچھ شبد کہنے ھیں' پرنتو میرے لئے انھیں کہنا کٹھن ھو رھا ھے۔ بھائی صاحب' میرا وچار ھے کہ شروع میں سب اسبھیہ منشیہ کچھ نہ کچھ منشیہ بھکشی تھے۔ بعد کو اُن کے وچاروں میں انتر ھو گیا۔ اُن میں سے کچھ نے منشیوں کو کھانا چھوڑ دیا۔ اپنی نیتک اوستھا کو سدھارنے کی پربل پریرنا سے وے منشیہ بن گئے' میرا مطلب ھے' واستوک' منشیہ۔ اُن میں سے کچھ نے منشیوں کو کھانا جاری رکھا۔ وے کیڑوں کی طرح تھے۔ انھوں نے مچھلی اور بندروں کی استھتی سے ھو کر وکاس کیا اور آخر میں وے آدمی بن گئے۔ ان میں سے کچھ سدھرنا چاھتے ھی نہ تھے' اور وے اب بھی کیڑے ھیں۔ منشیوں کو کھانے والے منشیہ منشیوں کو نہ کھانے والے منشیوں کی اپیکشا کتنی ادھک لجا اور گھرنا کے پاتر ھیں۔ جتنا انتر کیڑوں اور بندروں میں ھے اُس سے بھی ادھک انتر اِن دو کوٹیوں کے منشیوں میں ھے۔

وہ گھٹنا بہت پرانے یگ کی ھے جب یی-یا نے چیھ اور چاؤ کو کھلانے کے لئے اپنے پتر کا مانس پکایا تھا۔ اِس بات کی کلپنا کون کر سکتا تھا کہ پان-کو کے پرتھوی اور آکاش کو الگ الگ بانٹنے کے دن سے لیکر یی-یا کے پتر کے سمئے تک منشیہ منشیہ کو کھاتا رھا ھے؟ یی-یا کے پتر کے سمے سے لیکر سو-سو-لنگ کے سمے تک وے منشیہ کو کھاتے آئے ھیں۔ اور سی-سو لنگ کے آگے بھی انھوں نے منشیہ کو کھانا جاری رکھا ھے' یہاں

नहीं थी. मैंने उससे पूछा—'क्या मनुष्य-भक्षण ठीक है ?' मुस्कराते हुए ही उसने जवाब दिया—''इस वर्ष कोई अकाल तो पड़ा नहीं है. फिर मनुष्य-भक्षण की क्या जरूरत ?'' मैं फौरन समझ गया कि यह भी जालसाजी में शामिल है। यह भी मनुष्यों को खाना चाहता है. इसलिये मेरी हिम्मत सौ-गुनी बढ़ गई.

मैंने हठ करते हुए फिर वही सवाल पूछा—'क्या यह ठीक है ?'

वह बोला—'ऐसी चीजों के बारे में पूछने से क्या लाभ ? सचमुच आपको मज़ाक़ करना आता है. आज मौसम बड़ा अच्छा है .'

''मौसम बड़ा अच्छा है. चन्द्रमा .खूब चमकदार है. लेकिन फिर भी मैं आपसे हठ करके पूछता हूँ कि 'क्या यह ठीक है ?' ''

मेरे हठ करने से वह हड़बड़ा गया और गुनगुनाकर कहा—'नहीं...'

'नहीं ठीक है. फिर वे मनुष्यों को क्यों खाते रहते हैं ?'

'यह सच नहीं है.'

'सच नहीं है ! वुल्फ विलेज में उन्होंने यही किया और सब पुरानी किताबों में यह मोटे-मोटे अक्षरों में साफ-साफ लिखा है !'

उसका भाव बदल गया और उसका मुख बदरंग हो गया. आँखें फाड़ कर देखते हुए उसने कहा'—मुमकिन है कि यह सच हो. ऐसा हमेशा से होता रहा है.'

'हमेशा से होता रहा है—पर क्या यह ठीक है ?'

'मैं आपके साथ बहस करने नहीं जा रहा हूँ. आप इसका जिक्र न कीजिये. अगर आप जिक्र करते हैं तो ग़लती करते हैं.'

मैं उछल कर खड़ा हो गया और मैंने उसकी ओर घूर कर देखा. परन्तु तभी वह ग़ायब हो गया. चोटी से एड़ी तक मैं पसीना-पसीना हो गया. उम्र में वह मेरे भाई से कहीं ज्यादा छोटा था. लेकिन फिर भी वह उस जालसाजी में शामिल था. उसके माता-पिता ने उससे ऐसा करने के लिये कहा होगा. और मुझे डर है कि कहीं उसने अपने लड़कों को भी यही शिक्षा न दी हो. इसी से बच्चे भी मेरी ओर क्रूर दृष्टि से देखते हैं.

9

वे मनुष्यों को खाना चाहते हैं, लेकिन .खुद खाये जाने से डरते हैं. वे चौकन्ने होकर चारों ओर सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हैं.

ہیں تھی. میں نے اُس سے پوچھا—'کیا منشیہ بھکشن ٹھیک ہے ؟'
سکراتے ہوئے ہی اُسے نے جواب دیا—''اِس ورش کوئی اکال تو
ڑا نہیں ہے ۔ پھر منشیہ بھکشن کی کیا ضرورت ؟'' میں فوراً
مجھ گیا کہ یہ بھی جال‌سازی میں شامل ہے ۔ یہ منشیوں کو
انا چاہتا ہے ۔ اِس لئے میری ہمت سوگنی بڑھ گئی ۔

میں نے ہٹھ کرتے ہوئے پھر وہی سوال پوچھا—'کیا یہ ٹھیک
؟'

وہ بولا—'ایسی چیزوں کے بارے میں پوچھنے سے کیا لابھ ؟
چ مچ آپ کو مذاق کرنا آتا ہے ۔ آج موسم بڑا اچھا ہے .'

''موسم بڑا اچھا ہے ۔ چندرماں خوب چمکدار ہے ۔ لیکن پھر
ی میں آپ سے ہٹھ کر کے پوچھتا ہوں کہ 'کیا یہ ٹھیک
؟''

میرے ہٹھ کرنے سے وہ ہڑبڑا گیا اور گنگنا کر کہا—
ہیں...'

'نہیں ٹھیک ہے ۔ پھر وے منشیوں کو کیوں کھاتے رہتے
یں ؟'

'یہ سچ نہیں ہے .'

'سچ نہیں ہے ! وُلف ولیج میں انہوں نے یہی کیا اور
ب پرانی کتابوں میں یہ موٹے موٹے اکشروں میں صاف صاف
ا ہے !'

اُس کا بھاؤ بدل گیا اور اُس کا مکھ بدرنگ ہو گیا ۔ آنکھیں
ڑ کر دیکھتے ہوئے اس نے کہا— 'ممکن ہے کہ یہ سچ ہو ۔ ایسا
یشہ سے ہوتا رہا ہے!'

'ہمیشہ سے ہوتا رہا ہے— پر کیا یہ ٹھیک ہے ؟'

'میں آپ کے ساتھ بحث کرنے نہیں جا رہا ہوں ۔ آپ
س کا ذکر نہ کیجئے ۔ اگر آپ ذکر کرتے ہیں تو غلطی کرتے
ں!'

میں اُچھل کر کھڑا ہو گیا اور میں نے اُس کی اور گھور کر
کھا ۔ پرنتو تبھی وہ غایب ہو گیا ۔ چوٹی سے ایڑی تک میں
سینہ پسینہ ہو گیا ۔ عمر میں وہ میرے بھائی سے کہیں زیادہ
وٹا تھا ۔ لیکن پھر بھی وہ اس جال‌سازی میں شامل تھا ۔
س کے ماتا پتا نے اُس سے ایسا کرنے کے لئے کہا ہوگا ۔ اور مجھے
ہے کہ کہیں اس نے اپنے لڑکوں کو بھی یہی شکشا نہ دی
۔ اِسی سے بچے بھی میری اور کرور درشٹی سے دیکھتے
ں ۔

9

وے مانشوں کو کھانا چاہتے ہیں' لیکن خود کھائے جانے
ڈرتے ہیں ۔ وہ چوکنے ہو کر چاروں اور سندیہہ پورن درشٹی
دیکھتے ہیں ۔

वे इस मतलब से जाल बिछा रहे हैं कि मैं ख़ुद अपने को मार डालूँ. पिछले दिन के सड़क पर आदमियों के जमाव और अपने भाई के बर्ताव का मिलान करके ही मैं उनकी जालसाज़ी का लगभग 9/10 भाग समझ गया हूँ. अगर मैं अपनी कमर में बँधी हुई पेटी को खोल लूँ और उसे छत की किसी शहतीर में डाल कर फाँसी लगा लूँ तो इससे अधिक ख़ुशी की दूसरी बात उनके लिये न होगी. मेरा खूब अच्छी तरह से दम घुट जायेगा. वे हत्यारे कहे जाने की बदनामी से भी बच जायँगे और इसके साथ ही साथ उनके हृदय की इच्छा भी पूरी हो जायगी. सचमुच वे ख़ुशी के मारे नाचेंगे. इसके विरुद्ध, अगर मैं डर या चिन्ता से मर जाऊँ, तो मैं और अधिक दुबला हो जाऊँगा. लेकिन इसे भी वे स्वीकार कर लेंगे.

वे सिर्फ़ मरे हुए का माँस खा सकते हैं! ज़रा ठहरिये—एक बार मैंने एक प्रकार के जानवर के बारे में पढ़ा था. उसे 'लकड़बग्घा' कहते हैं. उसकी आँखें और पूरा शरीर देखने में बड़ा डरावना लगता था. वह अकसर मरा माँस खाता था और बड़ी से बड़ी हड्डियाँ चबा कर निगल जाता था. उसके बारे में सोचने से ही मुझे डर लगता है. लकड़बग्घा भेड़िये का रिश्तेदार होता है और भेड़िया कुत्ते का. पिछले दिन चाओ के कुत्ते ने कई बार मेरी ओर देखा था. उसके दिमाग़ में भी वही विचार होगा. वह भी इन लोगों से मिला है और उसने भी अपना हिस्सा पक्का कर लिया है. वह बुड्ढा आदमी अपनी आँखें बराबर फ़र्श पर जमाये था, लेकिन उससे मैं धोखे में नहीं आया.

सबसे अधिक धिक्कार मुझे अपने भाई पर आता है. आख़िर वह मनुष्य है. उसे डर क्यों नहीं लगता? मुझे खाने के लिये वह इस जालसाज़ी में क्यों शामिल हुआ? अभ्यास हो जाने से क्या उसका स्वभाव कठोर हो गया है? इसी से क्या वह इस काम में कोई बुरी बात नहीं देखता? या वह यह जानता है कि वह अपराध कर रहा है और जान बूझ कर भी वह अपने अन्तःकरण की आवाज़ के ख़िलाफ़ काम कर रहा है?

पहले तुम्हें और फिर सब मनुष्य भक्षी दानवों को मैं कोसता हूँ! पहले तुम्हें और फिर सब मनुष्य-भक्षी दानवों को मैं बदल दूँगा!

8

अब वे सारे विचार उन्हें साफ़-साफ़ मालूम हो जाने चाहियें......

अचानक एक नौजवान आदमी मेरे पास आया. उसकी उम्र बीस वर्ष से ज़्यादा न रही होगी. मैं उसका चेहरा अच्छी तरह से नहीं देख सका. लेकिन वह मुस्करा रहा था. उसने मुझे देखकर सिर हिलाया. उसकी मुस्कराहट असली

وہ اِس مطلب سے جال بچھا رہے ہیں کہ میں خود اپنے کو مار ڈالوں ۔ پچھلے دن کے سڑک پر آدمیوں کے جماؤ اور اپنے بھائی کے برتاؤ کا میلان کر کے ہی میں اُن کی جال‌سازی کا لگ بھگ 9/10 بھاگ سمجھ گیا ہوں ۔ اگر میں اپنی کمر میں باندھی ہوئی پیٹی کو کھول لوں اور اسے چھت کے کسی شہتیر میں ڈال کر پھانسی لگا لوں تو اِس سے ادھک خوشی کی دوسری بات اُن کے لئے نہ ہوگی ۔ میرا خوب اچھی طرح سے دم گھٹ جائیگا ۔ وے ہتیارے کہے جانے کی بدنامی سے بھی بچ جائینگے اور اِس کے ساتھ ہی ساتھ اُن کے ہردئے کی اِچھا بھی پوری ہو جائیگی ۔ سچ مچ وے خوشی کے مارے ناچیں گے ۔ اِس کے وِرودھ، اگر میں ڈر یا چنتا سے مر جاؤں، تو میں اور ادھک دبلا ہو جاؤں گا ۔ لیکن اِسے بھی وے سوئیکار کر لینگے ۔

وے صرف مرے ہوئے کا مانس کھا سکتے ہیں ! ذرا ٹھہرئیے— ایک بار میں نے ایک پرکار کے جانور کے بارے میں پڑھا تھا ۔ اُسے 'لکڑبگھا' کہتے ہیں ۔ اُس کی آنکھیں اور پورا شریر دیکھنے میں بڑا ڈراونا لگتا تھا ۔ وہ اکثر مرا مانس کھاتا تھا اور بڑی سے بڑی ہڈیاں چبا کر نگل جاتا تھا ۔ اُس کے بارے میں سوچنے سے ہی مجھے ڈر لگتا ہے ۔ لکڑبگھا بھیڑیئے کا رشتہ‌دار ہوتا ہے اور بھیڑیا کتے کا ۔ پچھلے دن چاؤ کے کتے نے کئی بار میری اور دیکھا تھا ۔ اُس کے دماغ میں بھی وہی وچار ہوگا ۔ وہ بھی اِن لوگوں سے ملا ہے اور اس نے بھی اپنا حصہ پکا کر لیا ہے ۔ وہ بڈھا آدمی اپنی آنکھیں برابر فرش پر جمائے تھا، لیکن اِس سے میں دھوکے میں نہیں آیا ۔

سب سے ادھک دھکار مجھے اپنے بھائی پر آتا ہے ۔ آخر وہ منشیہ ہے ۔ اسے ڈر کیوں نہیں لگتا ۔ مجھے کھانے کے لئے وہ اِس جال‌سازی سے کیوں شامل ہوا ؟ ابھیاس ہو جانے سے کیا اس کا سوبھاؤ کٹھور ہو گیا ہے ؟ اِسی سے کیا وہ اِس کام میں کوئی بری بات نہیں دیکھتا ؟ یا وہ یہ جانتا ہے کہ وہ اپرادھ کر رہا ہے اور جان بوجھ کر بھی وہ اپنے انتہ‌کرن کی آواز کے خلاف کام کر رہا ہے ؟

پہلے تمہیں اور پھر سب منشیہ بھکشی دانوں کو میں کوستا ہوں ! پہلے تمہیں اور پھر سب منشیہ بھکشی دانووں کو میں بدل دونگا !

8

اب وے سارے وچار اُنہیں صاف صاف معلوم ہو جانے چاہئیں...

اچانک ایک نوجوان آدمی میرے پاس آیا ۔ اُس کی عمر بیس ورش سے زیادہ نہ رہی ہوگی ۔ میں اُس کا چہرہ اچھی طرح سے نہیں دیکھ سکا ۔ لیکن وہ مسکرا رہا تھا ۔ اُس نے مجھے دیکھ کر سر ہلایا ۔ اُس کی مسکراہٹ اصلی

5

जब मैं और आगे सोचता हूँ तो इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि अगर यह बुड्ढा आदमी छिपे भेस में जल्लाद नहीं है और सचमुच एक डाक्टर ही है, तो भी इतना तो तय है ही कि वह मनुष्य-भक्षी मनुष्य है. आजकल के डाक्टरों के पूर्वगामी पथप्रदर्शक ला-शीह्-चेन ने 'जड़ी-बूटियों पर' नामक जो ग्रन्थ लिखा है उसमें साफ़-साफ़ कहा गया है कि मनुष्य का माँस तल कर खाया जा सकता है. इसलिये क्या वह मनुष्य-भक्षी मनुष्य होने से इनकार कर सकता है ?

जहाँ तक मेरे भाई का सवाल है, मैं उस पर झूठा आरोप नहीं लगाता हूँ. जब वे मुझे प्राचीन-काल का इतिहास पढ़ाते थे, तो उन्होंने ख़ुद कहा था कि मनुष्य अपने 'पुत्रों के बदले में अन्न' पा सकता था. और एक बार एक दुष्ट मनुष्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा था कि उसकी हत्या करना उसे एक अत्यन्त नम्र दण्ड देना था. 'उसका तो माँस खा डालना चाहिये था और उसकी खाल का कम्बल बनवाना चाहिये था.' उस समय मैं बहुत छोटा था और बहुत देर तक मेरा दिल धड़कता रहा और पिछले दिन जब वुल्फ़ विलेज नामक गाँव के आसामियों ने मनुष्य के दिल और जिगर के खाये जाने की कहानी बताई तो मुझे तनिक भी अचरज न हुआ. उस समय मेरा भाई बिना रुके हुये लगातार अपना सिर हिलाता रहा था. इससे आप समझ सकते हैं कि उनके विचार अब भी बिल्कुल पहले-जैसे ही क्रूर हैं. यदि आप 'पुत्र देकर बदले में खाना' ले सकते हैं तो आप बदले में कुछ भी ले-दे सकते हैं. आप किसी को भी खा सकते हैं. पहले मैं सिर्फ़ उनके भाषण सुन भर लेता था और किसी बात पर पूछ-ताछ नहीं करता था. लेकिन अब मैं समझ गया कि मुझे भाषण देते समय उनके होंठों पर मनुष्य की चर्बी तो रगड़ी ही रहती थी, इसके साथ-साथ उनका पूरा दिल भी मनुष्य को खाने के विचारों से भरा रहता था.

6

हर जगह अँधेरा. मैं नहीं जानता कि इस समय दिन है या रात. चाओ का कुत्ता फिर भूँकने लगा है.

शेर की क्रूरता, ख़रगोश का डरपोकपन, लोमड़ी की मक्कारी...

7

मैं उनका तरीक़ा भलीभांति समझ गया हूँ. वे मुझे सीधे नहीं मारना चाहते, उनकी हिम्मत नहीं है. वे नतीजों से डरते हैं. इसलिये उन सबने मिलकर गुटबन्दी की है और

5

جب میں اور آگے سوچتا ہوں تو اِس نتیجے پر پہونچتا ہوں کہ اگر یہ بڈھا آدمی چھپے بھیس میں جلاد نہیں ہے اور سچ مچ ایک ڈاکٹر ہی ہے تو بھی اِتنا تو طے ہے ہی کہ وہ منشیہ بھکشی منشیہ ہے ۔ آجکل کے ڈاکٹروں کے پورگامی پتھ پردرشک لی شیہ-چین نے 'جڑی بوٹیوں پر' نامک جو گرنتھ لکھا ہے اُس میں صاف صاف کہا گیا ہے کہ منشیہ کا مانس تل کر کھایا جا سکتا ہے ۔ اِس لئے کیا وہ منشیہ بھکشی منشیہ ہونے سے انکار کر سکتا ہے ؟

جہاں تک میرے بھائی کا سوال ہے' میں اُس پر جھوٹا آروپ نہیں لگاتا ہوں ۔ جب وے مجھے پراچین کال کا اِتہاس پڑھاتے تھے' تو اُنہوں نے خود کہا تھا کہ منشیہ اپنے 'پتروں کے بدلے میں ان' پا سکتا تھا ۔ اور ایک بار ایک دشٹ منشیہ کے بارے میں بتاتے ہوئے اُنہوں نے کہا تھا کہ اُس کی ہتیا کرنا اُسے ایک اتینت نمر دنڈ دینا تھا ۔ اُس کا تو مانس کھا ڈالنا چاہئے تھا اور اُس کی کھال کا کمبل بنوانا چاہئے تھا؛ اُس سمے میں بہت چھوٹا تھا اور بہت دیر تک میرا دل دھڑکتا رہا اور پچھلے دن جب وُلف ولیج نامک گاؤں کے آسامیوں نے منشیہ کے دل اور جگر کے کھائے جانے کی کہانی بتائی تو مجھے تنک بھی اچرج نہ ہوا ۔ اِس سمے میرا بھائی بنا رکے ہوئے لگاتار اپنا سر ہلاتا رہا تھا ۔ اِس سے آپ سمجھ سکتے ہیں کہ اُن کے وچار اب بھی بالکل پہلے جیسے ہی کرور ہیں ۔ یدی آپ 'پتر دیکر بدلے میں کھانا' لے سکتے ہیں تو آپ بدلے میں کچھ بھی لے دے سکتے ہیں ۔ آپ کسی کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ پہلے میں صرف اُن کے بھاشن سن بھر لیتا تھا اور کسی بھی بات پر پوچھ تاچھ نہیں کرتا تھا ۔ لیکن اب میں سمجھ گیا کہ مجھے بھاشن دیتے سمے اُن کے ہونٹوں پر منشیہ کی چربی تو رگڑی ہی رہتی تھی' اِس کے ساتھ ساتھ اُن کا پورا دل بھی منشیہ کو کھانے کے وچاروں سے بھرا رہتا تھا ۔

6

ہر جگہ اندھیرا ۔ میں نہیں جانتا کہ اِس سمے دن ہے یا رات ۔ چاؤ کا کتا پھر بھونکنے لگا ہے ۔

شیر کی کرورتا' خرگوش کا ڈرپوک پن' لومڑی کی مکاری......

7

میں اُن کا طریقہ بھلی بھانت سمجھ گیا ہوں ۔ وے مجھے سیدھے نہیں مارنا چاہتے۔ اُن کی ہمت نہیں ہے ۔ وے نتیجوں سے ڈرتے ہیں ۔ اِس لئے اُن سب نے ملکر گٹ بندی کی ہے اور

अच्छा'. क्या वे सोचते थे कि मैं यह नहीं समझा कि दूसरा भेष धारण किये हुए वह बुड्ढा आदमी वास्तव में एक जल्लाद था. नब्ज़ देखने के बहाने वह सिर्फ़ यह पता लगाना चाहता था कि मारे जाने के लिए मैं काफ़ी मोटा हूँ अथवा नहीं. और इस ख़ास काम के लिये उसे एक टुकड़ा मिलेगा. लेकिन मैं डरा नहीं. गोकि मैं उनकी तरह मनुष्य-भक्षी नहीं हूँ तो भी मुझमें उनसे ज़्यादा हिम्मत है. मैंने अपनी दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर बाहर निकाल लीं और इन्तिज़ार करने लगा कि देखें अब आगे वह क्या करता है. बुड्ढा आदमी चुपचाप बैठ गया. उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और बहुत देर तक मेरी नब्ज़ देखता रहा. वह बहुत देर तक चुप रहा. इसके बाद उसने अपनी दानवी आँखें खोलीं और कहा—'तरह-तरह की बातें न सोचा करो. शान्त रहो और कुछ दिनों तक आराम करो. इससे तुम बिल्कुल अच्छे हो जाओगे.'

'तरह-तरह की बातें न सोचा करो ! शान्त रहो और आराम करो.' आराम करते-करते जब मैं और ज़्यादा मोटा हो जाऊँगा तब मुझमें उनके खाने के लिये और ज़्यादा सामान हो जायगा. इस आराम से मेरा क्या लाभ होगा ? मैं 'बिल्कुल अच्छा' कैसे हो जाऊँगा ? मनुष्यों का यह झुण्ड जो दूसरों को निगल जाना चाहता है, लेकिन जो चोरों की तरह सब बात को छिपाने की कोशिश करता रहता है और जो सीधे-सीधे मारने की हिम्मत नहीं करता है—ये तो मुझे हँसाते-हँसाते मार डालेंगे. मैं अपने को रोक न सका और मेरी हँसी फूट निकली. मैं पूरी तरह से ख़ुश था. मैं स्वयं जानता था कि मेरी हँसी में हिम्मत और सच्ची भावना है. वह बुड्ढा आदमी और मेरे भाई हक्का-बक्का हो गये. मेरी हिम्मत और सच्ची भावना ने उन्हें जीत लिया था.

लेकिन मुझमें हिम्मत है, इस कारण वे मुझे निगलने के लिये और भी अधिक उत्सुक हो जायेंगे, क्योंकि मुझे निगलने पर उन्हें मेरी हिम्मत मिल जायेगी. वह बुड्ढा आदमी द्वार से बाहर चला गया. लेकिन बहुत दूर जाने के पहले ही उसने धीमी आवाज़ में मेरे भाई से कहा—'जल्दी लेना है'. मेरे भाई ने अपना सिर हिलाया. तो आप भी इसमें शामिल हैं ! अपने भाई की साज़िश की मुझे आशा न थी, फिर भी मुझे यह जानकर अचरज नहीं हुआ. मुझे खाने की साज़िश में मेरा ही भाई है !

मेरा भाई मनुष्य-भक्षी दानव है !
मैं मनुष्य-भक्षी दानव का भाई हूँ !

चाहे मैं ख़ुद ही खा डाला जाऊँ, तो भी मैं एक मनुष्य-भक्षी दानव का भाई ही कहलाऊँगा !

اچھا۔' کیا وے سوچتے تھے کہ میں یہ نہیں سمجھا کہ دوسرا بھیس دھارن کئے ہوئے وہ بڈھا آدمی واستو میں ایک جلاد تھا۔ نبض دیکھنے کے بہانے وہ صرف یہ پتہ لگانا چاہتا تھا کہ مارے جانے کے لئے میں کافی موٹا ہوں اتھوا نہیں۔ اور اِس خاص کام کے لئے اسے ایک ٹکڑا ملیگا۔ لیکن میں ڈرا نہیں۔ گوکہ میں اُن کی طرح منشیہ بھکشی نہیں ہوں تو بھی مجھ میں اُن سے زیادہ ہمت ہے۔ میں نے اپنی دونوں مٹھیاں باندھکر باہر نکال لیں اور انتظار کرنے لگا کہ دیکھوں اب آگے وہ کیا کرتا ہے۔ بڈھا آدمی چپ چاپ بیٹھ گیا۔ اس نے اپنی آنکھیں بند کر لیں اور بہت دیر تک میری نبض دیکھتا رہا۔ وہ بہت دیر تک چپ رہا۔ اِس کے بعد اُس نے اپنی دانوی آنکھیں کھولیں اور کہا—'طرح طرح کی باتیں نہ سوچا کرو۔ شانت رہو اور کچھ دنوں تک آرام کرو۔ اِس سے تم بالکل اچھے ہو جاؤ گے۔'

'طرح طرح کی باتیں نہ سوچا کرو! شانت رہو اور آرام کرو۔' آرام کرتے کرتے جب میں اور زیادہ موٹا ہو جاؤنگا تب مجھ میں اُن کے کھانے کے لئے اور زیادہ سامان ہو جاؤنگا۔ اِس آرام سے میرا کیا لابھ ہوگا؟ میں 'بالکل اچھا' کیسے ہو جاؤنگا؟ منشیوں کا یہ جھنڈ جو دوسروں کو نگل جانا چاہتا ہے' لیکن جو چوروں کی طرح سب بات کو چھپانے کی کوشش کرتا رہتا ہے اور جو سیدھے۔ سیدھے مارنے کی ہمت نہیں کرتا ہے—یہ تو مجھے ہنساتے ہنساتے مار ڈالینگے۔ میں اپنے کو روک نہ سکا اور میری ہنسی پھوٹ نکلی۔ میں پوری طرح سے خوش تھا۔ میں سوئم جانتا تھا کہ میری ہنسی میں ہمت اور سچی بھاونا ہے۔ وہ بڈھا آدمی اور میرے بھائی ہکا بکا ہو گئے۔ میری ہمت اور سچی بھاونا نے اُنھیں جیت لیا تھا۔

لیکن مجھ میں ہمت ہے' اِس کارن وے مجھے نگلنے کے لئے اور بھی ادھک اُتسک ہو جائینگے' کیونکہ مجھے نگلنے پر اُنھیں میری ہمت مل جائیگی۔ وہ بڈھا آدمی دوار سے باہر چلا گیا۔ لیکن بہت دور جانے کے پہلے ہی اس نے دھیمی آواز میں میرے بھائی سے کہا—'جلدی لینا ہے'۔ میرے بھائی نے اپنا سر ہلایا۔ تو آپ بھی اِس میں شامل ہیں! اپنے بھائی کی سازش کی مجھے آشا نہ تھی۔ پھر بھی مجھے یہ جان کر اچرج نہیں ہوا۔ مجھے کھانے کی سازش میں میرا ہی بھائی ہے!

میرا بھائی منشیہ بھکشی دانو ہے!
میں منشیہ بھکشی دانو کا بھائی ہوں!

چاہے میں خود ہی کھا ڈالا جاؤں' تو بھی میں ایک منشیہ بھکشی دانو کا بھائی ہی کہلاؤنگا!

नहीं करते. मैं कैसे कल्पना कर सकता था कि इन मनुष्यों के विचार क्या हैं, खास तौर पर उस समय जबकि वे किसी को निगलने की तैयारी कर रहे हों ?

अब प्रत्येक वस्तु को समझने के पूर्व उसकी जाँच-पड़ताल कर लेना जरूरी है. यद्यपि साफ़-साफ नहीं तो भी थोड़ा-बहुत तो मुझे याद पड़ता ही है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य अक्सर खाये गये हैं. पता लगाने के लिए मैं एक इतिहास की पुस्तक देख रहा था, लेकिन उसमें तिथियाँ नहीं दी थीं हर एक पन्ने पर सिर्फ़ 'दान-शीलता, 'सदाचारिता,' 'नैतिकता' और 'गुण' के लिए कुछ शब्द लिखे थे. मैं बराबर करवटें बदलता रहा, लेकिन मुझे नींद न आई. आधी रात तक मैं पुस्तक में बड़ी साव-धानी के साथ छान-बीन करता रहा. तब कहीं मैं यह समझ पाया कि उन शब्दों के बीच में क्या लिखा था. पूरी पुस्तक में सिर्फ़ दो ही शब्द थे 'मनुष्य-भक्षण'.

पुस्तक में वे सब शब्द और आसामियों द्वारा कही गई वे सारी बातें हँसती हुई अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोल रही हैं अजीब तरह से मेरी ओर देख रही हैं.

मैं भी मनुष्य हूँ. वे मुझे निगल जाना चाहते है !

4

आज प्रातःकाल मैं चुपचाप बैठा था. तभी चेन लाओ-वू ने खाना भेजा—तरकारियों का एक कटोरा और उबली हुई मछली का एक कटोरा. मछली की आँखें सफेद और कड़ी थीं. मनुष्य-भक्षी उस जन-समूह की भाँति ही उसका मुँह खुला था. मैंने कुछ लुकमे खा लिये. परन्तु मुझे यह पता न लगा कि यह चिकनी चीज मछली है या मनुष्य. इसलिए मैंने क़ै कर दी और उसे फर्श पर उगल दिया.

मैंने कहा—'लाओ-वू, कृपया जाकर मेरे भाई से कह दीजिए कि मेरा मन बहुत बुरी तरह से ऊब गया है और मैं बाग में टहलना चाहता हूँ. लाओ-वू ने कोई जवाब न दिया. वे बाहर निकल गए. कुछ समय बाद वे वापस आए और उन्होंने द्वार खोला.

वास्तव में मेरी समझ में यह न आया कि वे मेरे साथ क्या करने जा रहे थे। लेकिन मैं यह समझ गया कि वे मेरे ऊपर रक्खे गए अपने शिकञ्जे को ढीला करने नहीं जा रहे हैं. निःसन्देह, मेरे भाई एक बूढ़े आदमी को भीतर लाए. वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ा. वह आदमी डर रहा था कि कहीं मैं उसकी आँखों की क्रूर दृष्टि न देख लूँ. इसी से वह अपनी आँखों को फर्श पर झुकाए रहा. उसने मुझे अपनी आँखों की कोरों से देखा. मेरे भाई ने कहा—'आज तुम बिल्कुल ठीक मालूम होते हो.' मैंने कहा, 'हाँ'. इस पर मेरे भाई ने कहा—'हम लोगों ने डाक्टर से आज आकर तुम्हें ठीक करने के लिये कहा है—'मैंने कहा, 'बहुत

نہیں کرتے. میں کیسے کلپنا کر سکتا تھا کہ اِن منشیوں کے وچار کیا ہیں، خاص طور پر اُس سمے جب کہ وے کسی کو نگلنے کی تیاری کر رہے ہوں ؟

اب پرتئیک وستو کو سمجھنے کے پوروُ اُس کی جانچ پڑتال کرلینا ضروری ہے . یدپی صاف صاف نہیں تو بھی تھوڑا بہت تو مجھے یاد پڑتا ہی ہے کہ پراچین کال سے لیکر آج تک منشیہ اکثر کھائے گئے ہیں . پتہ لگانے کے لئے میں ایک اِتہاس کی پستک دیکھ رہا تھا، لیکن اُس میں تتھیاں نہیں دی تھیں. ہر ایک پنے پر صرف 'دان شیلتا' 'سداچاریتا' 'نیتکتا' اور 'گن' کے لئے کچھ شبد لکھے تھے . میں برابر کروٹیں بدلتا رہا لیکن مجھے نیند نہیں آئی. آدھی رات تک میں پستک میں بڑی ساودھانی کے ساتھ چھان بین کرتا رہا . تب کہیں میں یہ سمجھ پایا کہ اُن شبدوں کے بیچ میں کیا لکھا تھا . پوری پستک میں صرف دو ہی شبد تھے 'منشیہ بھکشن .'

پستک میں وے سب شبد اور آسامیوں دوارا کہی گئی وے ساری باتیں ہنستی ہوئی اپنی بڑی بڑی آنکھیں کھول رہی ہیں اور عجیب طرح سے میری اور دیکھ رہی ہیں .

میں بھی منشیہ ہوں . وے مجھے نگل جانا چاہتے ہیں !

4

آج پراتہ‌کال میں چپ چاپ بیٹھا تھا . تبھی چین لاؤ-وو نے کھانا بھیجا—ترکاریوں کا ایک کٹورا اور اُبلی ہوئی مچھلی کا ایک کٹورا . مچھلی کی آنکھیں سفید اور کڑی تھیں . منشیہ بھکشی اُس جن سموہ کی بھانت ہی اُس کا منہ کھلا تھا . میں نے کچھ لقمے کھا لئے . پرنتو مجھے یہ پتہ نہ لگا کہ یہ چکنی چیز مچھلی ہے یا منشیہ . اِس لئے میں نے قے کر دی اور اُسے فرش پر اُگل دیا .

میں نے کہا—'لاؤ وو، کرپیا جا کر میرے بھائی سے کہہ دیجئے کہ میرا من بہت بری طرح سے اُوب گیا ہے اور میں باغ میں ٹہلنا چاہتا ہوں، لاؤ وو نے کوئی جواب نہیں دیا . وے باہر نکل گئے . کچھ سمے بعد وے واپس آئے اور انہوں نے دوار کھولا .

واستو میں میری سمجھ میں یہ نہ آیا کہ وے میرے ساتھ کیا کرنے جا رہے ہیں . لیکن میں یہ سمجھ گیا کہ وے میرے اُوپر رکھے گئے اپنے شکنجے کو ڈھیلا کرنے نہیں جا رہے ہیں . نسندیہہ، میرے بھائی ایک بوڑھے آدمی کو بھیتر لائے اور وہ دھیرے دھیرے میری اور بڑھا . وہ آدمی ڈر رہا تھا کہ کہیں میں اس کی آنکھوں کی کرور درشٹی نہ دیکھ لوں . اِسی سے وہ اپنی آنکھوں کو فرش پر جھکائے رہا . اُس نے مجھے اپنی آنکھوں کی کوروں سے دیکھا . میرے بھائی نے کہا—'آج تم بالکل ٹھیک معلوم ہوتے ہو . میں نے کہا—'ہاں'' . اِس پر میرے بھائی نے کہا—ہم لوگوں نے ڈاکٹر ہو سے آج آکر تمہیں ٹھیک کرنے کے لئے کہا ہے' میں نے کہا' 'بہت

इस पर विरूप मुख वाले मनुष्यों का वह झुण्ड दाँत खोलकर जोरों से हँसने लगा. तब चेन लाओ-वू मेरे पास आये और मुझे खींचकर घर ले गये.

वे मुझे खींचकर घर ले गये. घर के मनुष्यों ने ऐसा रुख अपनाया कि जैसे वे मुझे जानते ही न हों. उनके मुख के भाव वैसे ही थे जैसे कि दूसरे मनुष्यों के. जब मैं अपने पढ़ने-लिखने वाले कमरे में घुस गया तो उन्होंने द्वार पर ताला लगा दिया. ऐसा लग रहा था कि जैसे वे किसी मुर्गी अथवा बतख को कटघरे में बन्द कर रहे हों.

कुछ दिन हुए, वुल्फ विलेज नामक गाँव के आसामी यह कहने के लिये आये थे कि उनके ज़िले में अकाल पड़ा है. उन्होंने मेरे भाई को सूचना दी कि वहाँ गाँव वालों ने एक बड़े बदमाश को मार डाला और इसके बाद उनमें से कुछ एक ने उसे चीरकर उसका हृदय और जिगर निकाल लिया. उन्होंने उन टुकड़ों को तला और उन्हें खा डाला जिससे उनमें हिम्मत पैदा हो. मैं उनके बीच में ही बोल पड़ा. आसामियों और मेरे भाई ने बुरी तरह मेरी ओर देखा. अब मेरी समझ में आया कि उन्होंने मेरी ओर उसी प्रकार देखा था जिस प्रकार बाहर के झुन्ड ने.

जब मैं इसे सोचता हूँ तो चोटी से लेकर एड़ी तक सिहर जाता हूँ.

वे उस मनुष्य के भीतरी अङ्ग खा गये, तो क्या वे मुझे न खाजायेंगे ?

उस स्त्री के कथन पर विचार कीजिये, 'जी चाहता है कि तुझे कई बार दाँतों से काट खाऊँ.' और इस कथन का उन हँसी अथवा विरूप मुख और खुले हुए दाँतों वाले मनुष्यों के उस झुन्ड तथा आसामियों द्वारा कही गई उस कहानी से मिलान कीजिये. साफ़ जाहिर है कि ये शब्द एक गुप्त सङ्केत थे. उनके शब्दों में जहर था, उनकी हँसी में कटारें थी, और उनके चमकते हुए सफ़ेद दाँतों की कतारें प्रकट कर रही थीं कि वे मनुष्य-भक्षी दानव हैं.

अब, जैसा कि मैं सोचता हूँ, मैं कोई बदमाश नहीं हूँ. लेकिन मुझसे श्री कु-चिउ का कुत्ता कुचल गया था, इसलिये अब यह कहना कठिन है. ऐसा लगता है कि उनके दूसरी तरह के विचार हैं. उनकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता. इसके अलावा, जब कभी वे आप से नाराज़ होंगे तो आपको बदमाश समझने लगेंगे. मुझे वे बातें याद हैं जब मेरे बड़े भाई मुझे निबन्ध लिखना सिखाते थे. जब कभी भले से भले मनुष्य की भी मैं कटु आलोचना करता था तो मेरे भाई उसका अनुमोदन करते थे, और यदि मैं दुष्ट मनुष्यों को क्षमा कर देता था तो वे कहा करते थे कि, 'तुम बड़े भले लड़के हो जो सर्वसाधारण की तरह व्यवहार

اِس پر وِروپ مکھ والے منشیوں کا وہ جھنڈ دانت کھول کر زوروں سے ہنسنے لگا۔ تب چین لاؤ-وو میرے پاس آئے اور مجھے کھینچ کر گھر لے گئے۔

وے مجھے کھینچ کر گھر لے گئے۔ گھر کے منشیوں نے ایسا رخ اپنایا کہ جیسے وے مجھے جانتے ہی نہ ہوں۔ اُن کے مکھ کے بھاؤ ویسے ہی تھے جیسے کہ دوسرے منشیوں کے۔ جب میں اپنے پڑھنے لکھنے والے کمرے میں گھس گیا تو اُنہوں نے دوار پر تالا لگا دیا۔ ایسا لگ رہا تھا کہ جیسے وے کسی مرغی اتھوا بطخ کو کٹگھرے میں بند کر رہے ہوں۔

کچھ دن ہوئے، وُلف ولیج نامک گاؤں کے آسامی یہ کہنے کے لئے آئے تھے کہ اُن کے ضلع میں اکال پڑا ہے۔ اُنہوں نے میرے بھائی کو سوچنا دی کہ وہاں گاؤں والوں نے ایک بڑے بدمعاش کو مار ڈالا اور اِس کے بعد اُن میں سے کچھ ایک نے اسے چیر کر اُس کا ہردیہ اور جگر نکال لیا۔ اُنہوں نے ان ٹکڑوں کو تلا اور اُنہیں کھا ڈالا جس سے اُن میں ہمت پیدا ہو۔ میں اُن کے بیچ میں ہی بول پڑا۔ آسامیوں اور میرے بھائی نے بری طرح میری اور دیکھا۔ اب میری سمجھ میں آیا کہ اُنہوں نے میری اور اُسی پرکار دیکھا تھا جس پرکار باہر کے جھنڈ نے۔

جب میں اِسے سوچتا ہوں تو چوٹی سے لیکر ایڑی تک سہر جاتا ہوں۔

وے اُس منشیہ کے بھیتری انگ کھا گئے۔ تو کیا وے مجھے نہ کھا جائینگے؟

اُس اِستری کے کتھن پر وچار کیجئے، 'جی چاہتا ہے کہ تجھے کئی بار دانتوں سے کاٹ کھاؤں'؛ اور اِس کتھن کا اُس ہنسی اتھوا وِروپ مکھ اور کھلے ہوئے دانتوں والے منشیوں کے اُس جھنڈ تتھا آسامیوں دوارا کہی گئی اُس کہانی سے ملان کیجئیے۔ صاف ظاہر ہے کہ یہ شبد ایک گپت سنکیت تھے۔ اُن کے شبدوں میں زہر تھا؛ اُن کی ہنسی میں کٹاریں تھیں۔ اور اُن کی چمکتے ہوئے سفید دانتوں کی قطاریں پرکٹ کر رہی تھیں کہ وے منشیہ بھکشی دانو ہیں۔

اب، جیسا کہ میں سوچتا ہوں، میں کوئی بدمعاش نہیں ہوں۔ لیکن مجھسے شری کو-چیؤ کا کتا کچل گیا تھا۔ اِس لئے اب یہ کہنا کٹھن ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ اُن کے دوسری طرح کے وچار ہیں۔ اُن کی میں کلپنا تک نہیں کر سکتا۔ اِس کے علاوہ، جب کبھی وے آپ سے ناراض ہونگے تو آپ کو بدمعاش سمجھنے لگیں گے۔ مجھے وے باتیں یاد ہیں جب میرے بڑے بھائی مجھے نبندھ لکھنا سکھاتے تھے۔ جب کبھی بھلے سے بھلے منشیہ کی بھی میں کٹو آلوچنا کرتا تھا تو میرے بھائی اُس کا انوموڈن کرتے تھے؛ اور یدی میں دشٹ منشیوں کو چھما کر دیتا تھا تو وے کہا کرتے تھے کہ، 'تم بھلے لڑکے ہو جو سروسادھارن کی طرح ویوہار

सात आदमी और भी थे जो मेरे बारे में काना-फूसी कर रहे थे. वे डर रहे थे कि कहीं मैं उन्हें देख न लूँ. सड़क के सारे आदमी वैसे ही थे. उनमें से एक खास तौर से क्रूर था. वह सीधे मेरी ओर देखकर मुँह फाड़कर हँसा. मैं चोटी से लेकर एड़ी तक काँप उठा. मैं जानता हूँ कि उन्होंने पूरी तैयारी कर ली है.

लेकिन मैं डरा नहीं. मैंने सड़क पर घूमना जारी रक्खा. वहाँ बच्चों का एक झुन्ड था. वह भी मेरे बारे ही में बातें कर रहा था. उनके मुख का भाव वैसा ही था जैसा कि बड़े चाओ का. उनके मुख विरूप थे. मैं सोचने लगा, 'छोटे बच्चों से मेरी क्या दुश्मनी है जिससे ये भी इस प्रकार के हैं ?' बरबस मैं चिल्ला उठा, 'तुम लोग मुझे बताओ !' इस पर वे सब भाग गये.

मैं सोचने लगा, 'बड़े चाओ और मुझमें क्या दुश्मनी है ? मुझमें और सड़क के मनुष्यों में क्या दुश्मनी है ?' सिवाय इसके कि बीस वर्ष पूर्व मुझसे श्री कु-चिउ का कुत्ता कुचल गया था और इससे श्री कु-चिउ बहुत चिढ़ गये थे. गोकि बड़ा चाओ उन्हें नहीं जानता तो भी उसने इसके बारे में सुना होगा और उसी अपमान का बदला लेना चाहता है. इसी ने सड़क के मनुष्यों को मेरा शत्रु बना दिया है. परन्तु बच्चों के बारे में क्या कहा जाय ? उस समय तो वे पैदा भी नहीं हुए थे. फिर वे मेरी तरफ आँखें फाड़-फाड़कर क्यों घूरते हैं जैसे कि वे मुझसे डरते हों अथवा इसी से मैं डरता हूँ. इसी से मुझे बेहद अचरज और दुःख होता है.

अब मैं समझ गया—उनके माता-पिता ने उन्हें ऐसा बर्ताव करने के लिए कहा है !

3

रात को मैं सो नहीं पाता हूँ. किसी बात को समझने के लिये पहले उस पर छान-बीन करना जरूरी हो जाता है. वे मनुष्य—उनमें से कुछ को मजिस्ट्रेट ने दण्ड दिये हैं, कुछ जनसाधारण द्वारा चाँटे खा चुके हैं, कुछ की पत्नियाँ साधारण कोटि के मनुष्यों की गालियां खा चुकी हैं, कुछ के माता-पिता महाजनों (ऋण दाताओं) द्वारा मार डाले गये हैं; लेकिन इतनी बड़ी-बड़ी मुसीबतों के समय भी ये ऐसे डरावने नहीं दिखाई दिए जैसे कि कल दिखाई दे रहे थे—और उस समय न तो ये इतने क्रूर ही थे.

कल सड़क पर सब से ज्यादा अजीब तो वह स्त्री थी. उसने यह कहते हुए अपने लड़के को चाँटा मारा, 'जी चाहता है कि तुझे कई बार दांतों से काट खाऊँ, तभी मेरा गुस्सा शान्त होगा'. लेकिन जब वह यह कह रही थी तब मेरी ओर देख रही थी.

سات آدمی اور بھی تھے جو میرے بارے میں کانا پھوسی کر رہے تھے. وہ ڈر رہے تھے کہ کہیں میں انہیں دیکھ نہ لوں. سڑک کے سارے آدمی ویسے ہی تھے. اُن میں سے ایک خاص طور سے کرور تھا. وہ سیدھے میری اور دیکھ کر منھ پھاڑ کر ہنسا. میں چوٹی سے لے کر ایڑی تک کانپ اُٹھا. میں جانتا ہوں کہ انہوں نے پوری تیاری کر لی ہے.

لیکن میں ڈرا نہیں. میں نے سڑک پر گھومنا جاری رکھا. وہاں بچوں کا ایک جھنڈ تھا. وہ بھی میرے بارے ہی میں باتیں کر رہا تھا. اُن کے مکھ کا بھاؤ ویسا ہی تھا جیسا کہ بڑے چاؤ کا. اُن کے مکھ وروپ تھے. میں سوچنے لگا 'چھوٹے بچوں سے میری کیا دشمنی ہے جس سے یہ بھی اِس پرکار کے ہیں ؟' بربس میں چلا اُٹھا' 'تم لوگ مجھے بتاؤ !' اِس پر وے سب بھاگ گئے.

میں سوچنے لگا' 'بڑے چاؤ اور مجھ میں کیا دشمنی ہے ؟ مجھ میں اور سڑک کے منشیوں میں کیا دشمنی ہے ؟' سوائے اِس کے بیس ورش پورو مجھ سے شری کو-چیو کا کتا کچل گیا تھا اور اِس سے شری کو-چیو بہت چڑھ گئے تھے. گوکہ بڑا چاؤ اُنہیں نہیں جانتا تو بھی اُس نے اِس کے بارے میں سنا ہوگا اور اُسی اپمان کا بدلہ لینا چاہتا ہے. اِسی نے سڑک کے منشیوں کو میرا شترو بنا دیا ہے. پرنتو بچوں کے بارے میں کیا کہا جائے ؟ اُس سمے تو وے پیدا بھی نہیں ہوئے تھے. پھر وے میری طرف آنکھ پھاڑ پھاڑ کر کیوں گھورتے ہیں جیسے کہ وے مجھ سے ڈرتے ہوں اتھوا اِسی سے میں ڈرتا ہوں. اِسی سے مجھے بےحد اچرج اور دکھ ہوتا ہے.

اب میں سمجھ گیا— اُن کے ماتا پتا نے اُنہیں ایسا برتاؤ کرنے کے لئے کہا ہے !

3

رات کو میں سو نہیں پاتا ہوں. کسی بات کو سمجھنے کے لئے پہلے اس پر چھان بین کرنا ضروری ہو جاتا ہے. وے منشیہ— اُن میں کچھ کو مجسٹریٹ نے ڈنڈ دیئے ہیں' کچھ جن سادھارن دوارا چانٹے کھا چکے ہیں' کچھ کی پتنیاں سادھارن کوٹی کے منشیوں کی گالیاں کھا چکی ہیں' کچھ کے ماتا پتا مہاجنوں (رنڑ داتاؤں) دوارا مار ڈالے گئے ہیں؛ لیکن اِتنی بڑی بڑی مصیبتوں کے سمے بھی یہ ایسے ڈراونے نہیں دکھائی دیئے جیسے کہ کل دکھائی دے رہے تھے— اور اُس سمے نہ تو یہ اِتنے کرور ہی تھے.

کل سڑک پر سب سے زیادہ عجیب تو وہ استری تھی. اُس نے یہ کہتے ہوئے اپنے لڑکے کو چانٹا مارا' 'جی چاہتا ہے کہ تجھے کئی بار دانتوں سے کاٹ کھاؤں. تبھی میرا غصہ شانت ہوگا'. لیکن جب وہ یہ کہہ رہی تھی تب میری اور دیکھ رہی تھی.

दिया और आश्वासन देते हुए पुनः सूचित किया कि अब उसका भाई बिल्कुल ठीक हो गया है और इस समय दफ़्तर के एक काम से बाहर गया है. इसके बाद वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा और उसने मुझे अपने भाई की वह डायरी दिखाई जिसे वह अपने पागलपन में लिखा करता था. शायद यह डायरी मेरे मित्रों की रुचि का विषय बन सके.' यह कहते हुए उसने मुझे वह डायरी दे दी.

मैं पढ़ने के लिये डायरी घर ले आया. मुझे उससे पता चला कि मेरे मित्र को 'परिपीड़न-भ्रम' का रोग था. डायरी की भाषा में न स्पष्टता थी और न क्रम. स्थान-स्थान पर उसमें बेलगाम और बे सिर-पैर की बात लिखी थीं. डायरी में कहीं पर भी तारीख़ न थी और न उसकी स्याही अथवा लेख ही एक से थे. इन बातों से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक साँस में एक ही बार बैठकर नहीं लिखी गई थी. परन्तु फिर भी सम्पूर्ण डायरी में एक तुक, एक तथ्य, दिखाई देता है. इसी से मैं उस डायरी की एक नक़ल तैयार कर रहा हूँ. इसे मैं दिमाग़ी रोगों के विशेषज्ञों के सामने रखना चाहता हूँ. डायरी में लिखे हुए मनुष्यों के नामों को ही मैंने बदला है, गोकि वे सभी नाम मेरे गाँव के मनुष्यों के ही थे जिन्हें बाहर की दुनिया का कोई भी मनुष्य नहीं जानता. इनके अलावा डायरी का एक शब्द भी मैंने नहीं बदला. इससे डायरी के शेष मूल में कोई अन्तर नहीं आया है. जहाँ तक इसके शीर्षक का प्रश्न है, उसे स्वयं मेरे मित्र ने बीमारी से छुटकारा मिलने के बाद दिया है और उसे बदलने का कोई कारण नहीं दिखाई देता.

❀ ❀ ❀

2 अप्रैल
गणतन्त्र का सातवाँ वर्ष
(अर्थात् 1918)

आज शाम का चन्द्रमा बड़ा चमकदार है. इस प्रकार का चन्द्रमा मैंने पिछले 30 वर्षों में नहीं देखा. आज इसे मैंने देखा और इससे मुझे एक अजीब ताज़गी का अनुभव हुआ. तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे बीते हुए जीवन के तीस वर्ष से ज़्यादा का समय सिर्फ़ एक सपना रहा है. लेकिन मुझे बहुत ही होशियार रहना चाहिए. नहीं तो—नहीं तो चाओ के कुत्ते ने मेरी तरफ़ इस प्रकार क्यों देखा ? और कई बार!

2

आज रात को चन्द्रमा नहीं निकला. मैं जानता हूँ कि कुछ अनिष्ट होने वाला है. आज सवेरे बाहर जाते समय मैं बड़ा सावधान था. बड़े चाओ की मुख-मुद्रा बड़ी अजीब थी. वह मुझसे डरा हुआ सा मालूम होता था, जैसे कि वह मेरी कुछ हानि करना चाहता हो. उसके अलावा छः—

یا اور آشواسن دیتے ہوئے پنہ سوچت کیا کہ اب اُس کا بھائی بالکل ٹھیک ہو گیا ہے اور اس سمے دفتر کے ایک کام سے باہر گیا ہے ۔ اِس کے بعد وہ کھِکھلا کر ھنس پڑا اور اُس نے مجھے اپنے بھائی کی وہ ڈائری دکھائی جسے وہ اپنے پاگلپن میں لکھا کرتا تھا ۔ شاید یہ ڈائری میرے مترون کی روچی کا وشے بن سکے؛ یہ کہتے ہوئے اُس نے مجھے وہ ڈائری دے دی ۔

میں پڑھنے کے لئے ڈائری گھر لے آیا ۔ مجھے اُس سے پتہ چلا کہ میرے متر کو 'پریپیڑن بھرم' کا روگ تھا ۔ ڈائری کی بھاشا میں نہ اسپشٹتا تھی اور نہ کرم ۔ استھان استھان پر اس میں بےلگام اور بے سر پیر کی باتیں لکھی تھیں ۔ ڈائری میں کہیں پر بھی تاریخ نہ تھی اور نہ اُس کی سیاھی اتھوا لیکھ ھی ایک سے تھے ۔ اِن باتوں سے میں اِس نتیجے پر پہنچا کہ یہ ایک سانس میں ایک ھی بار بیٹھ کر نہیں لکھی گئی تھی ۔ پرنتو پھر بھی سمپورن ڈائری میں ایک تک، ایک تتھیہ، دکھائی دیتا ھے ۔ اِسی سے میں اُس ڈائری کی ایک نقل تیار کر رھا ھوں ۔ اِسے میں دماغی روگوں کے وشیشگیوں کے سامنے رکھنا چاھتا ھوں ۔ ڈائری میں لکھے ھوئے منشیوں کے ناموں کو ھی میں نے بدلا ھے، گوکہ وے سبھی نام میرے گاؤں کے منشیوں کے ھی تھے جنہیں باھر کی دنیا کا کوئی بھی منشیہ نہیں جانتا ۔ اِس کے علاوہ ڈائری کا ایک شبد بھی میں نے نہیں بدلا ۔ اِس سے ڈائری کے شیش مول میں کوئی انتر نہیں آیا ھے ۔ جہاں تک اِس کے شیرشک کا پرشن ھے، اُسے سوئم میرے متر نے بیماری سے چھٹکارا ملنے کے بعد دیا ھے اور اُسے بدلنے کا کوئی کارن نہیں دکھائی دیتا ۔

❀ ❀ ❀

2 اپریل
گن تنتر کا ساتواں ورش
(ارتھات 1918)

آج شام کا چندرماں بڑا چمکدار ھے ۔ اِس پرکار کا چندرماں میں نے پچھلے 30 ورشوں میں نہیں دیکھا ۔ آج اِسے میں نے دیکھا اور اِس سے مجھے ایک عجیب تازگی کا انوبھو ھوا ۔ تب مجھے گیات ھوا کہ میرے بیتے ھوئے جیون کے تیس ورش سے زیادہ کا سمے صرف ایک سپنا رھا ھے ۔ لیکن مجھے بہت ھی ھوشیار رھنا چاھئے ۔ نہیں تو—نہیں تو چاؤ کے کتے نے میری طرف اِس پرکار کیوں دیکھا ؟ اور کئی بار!

2

آج رات کو چندرماں نہیں نکلا ۔ میں جانتا ھوں کہ کچھ ارشٹ ھونے والا ھے ۔ آج سویرے باھر جاتے سمے میں بڑا ساودھان تھا ۔ بڑے چاؤ کی مکھ مدرا بڑی عجیب تھی ۔ وہ مجھسے ڈرا ھوا سا معلوم ھوتا تھا، جیسے کہ وہ میری کچھ ھانی کرنا چاھتا ھو ۔ اُس کے علاوہ چھ—

"मगर इस बीच थीं कहाँ तुम ?"

कई शहरों के नाम उन्होंने बताए—कुछ इस तरह गोया बहुत पहले भूली किसी बात को याद करने की कोशिश कर रही हैं. और इस बीच बराबर किसी बाज़ की तरह सारे कमरे में बग़ैर ज़रा भी आवाज़ किये चक्कर काटती रहीं.

"वह पोशाक कहाँ से मिली ?"

"मैंने ही बनाई है. अपने सारे कपड़े मैं ही बनाती हूँ."

यह सोचकर मुझे अच्छा लग रहा था कि वह औरों से मुख़्तलिफ़ हैं. लेकिन अफ़सोस यही था कि वह बोलती बहुत ही कम थीं. जब तक मैं कुछ पूछता नहीं था तब तक अमूमन वह चुप्पी ही साधे रहती थीं.

अब वह फिर आकर मेरे पास कोच पर बैठ गईं और चुपचाप, एक दूसरे से चिपटे हम दोनों उसी तरह बैठे रहे—जब तक कि नाना-नानी लौट नहीं आए. वह लोग जब आए तब उनमें से मोम और धूपबत्ती की महक आ रही थी, और एक अजीब सी संजीदगी और मिठास थी उनके बरताव में.

रात का खाना हम लोगों ने त्योहारों के दिन की तरह खाया—वैसी ही संजीदगी के साथ और खाते वक़्त बहुत ही कम बोले और इतने धीरे-धीरे गोया बहुत ही हलकी नींद कोई सोया हुआ है, जिसके जग जाने का डर है.

—अनुवादक, श्री सुमंगल प्रकाश

"مگر اس بیچ تھیں کہاں تم ؟"

کئی شہروں کے نام اُنھوں نے بتائے—کچھ اِس طرح گویا بہت پہلے بھولی کسی بات کو یاد کرنے کی کوشش کر رھی ھیں ۔ اور اِس بیچ برابر کسی باز کی طرح سارے کمرے میں بغیر ذرا ھی آواز کئے چکر کاٹتی رھیں ۔

"وہ پوشاک کہاں سے ملی ؟"

"میلے ھی بنائی ھے ۔ اپنے سارے کپڑے میں ھی بناتی ھوں ۔"

یہ سوچکر مجھے اچھا لگ رھا تھا کہ وہ اوروں سے مختلف ھیں ۔ لیکن افسوس یہی تھا کہ وہ بولتی بہت ھی کم تھیں۔ جب تک میں کچھ پوچھتا نہیں تھا تب تک عموماً وہ چپ ھی سادھے رھتی تھیں ۔

اب وہ پھر آکر میرے پاس کوچ پر بیٹھ گئیں اور چپ چاپ، ایک دوسرے سے چپٹے ھم دونوں اُسی طرح بیٹھے رھے—جب تک کہ نانا-نانی لوٹ نہیں آئے ۔ وہ لوگ جب آئے تب اُن میں سے موم اور دھوپ بتی کی مہک آرھی تھی، اور ایک عجیب سی سنجیدگی اور مٹھاس تھی اُن کے برتاؤ میں ۔

رات کا کھانا ھم لوگوں نے تیوھاروں کے دن کی طرح کھایا—ویسی ھی سنجیدگی کے ساتھ اور کھاتے وقت بہت ھی کم بولے اور اِتنے دھیرے دھیرے گویا بہت ھی ھلکی نیند کوئی سو یا ھوا ھے، جس کے جگ جانے کا ڈر ھے ۔

—انوادک، شری سومنگل پرکاش ۔

एक पागल आदमी की डायरी

श्री लुइ सुन

दो भाई थे. यहाँ उनके नाम बताना ज़रूरी नहीं हैं. मिडिल स्कूल में वे दोनों मेरे गहरे दोस्त रह चुके थे. लेकिन इधर पिछले बहुत वर्षों से हम लोग अलग-अलग हो गये थे. इससे उन दोनों भाइयों के बारे में मिलने वाले समाचार भी बराबर कम होते गये । लेकिन कुछ दिन पहले, अचानक मुझे ख़बर मिली कि उनमें से एक बहुत बीमार हो गया था. इसलिये जब मैं अपनी जन्म-भूमि वापस आया तो विशेषतया उन्हें देखने गया. वहाँ बड़े भाई ने मेरा स्वागत किया और यह बताया कि उसका छोटा भाई बीमार था, अपने घर पर आने के लिये उसने मुझे धन्यवाद

ایک پاگل آدمی کی ڈایری

شری لوئی سن

دو بھائی تھے ۔ یہاں اُن کے نام بتانا ضروری نہیں ھیں ۔ مڈل اسکول میں وے دونوں میرے گہرے دوست رہ چکے تھے ۔ لیکن اِدھر پچھلے بہت ورشوں سے ھم لوگ الگ الگ ھو گئے تھے ۔ اِس سے اُن دونوں بھائیوں کے بارے میں ملنے والے سماچار بھی برابر کم ھوتے گئے ۔ لیکن کچھ دن پہلے، اچانک مجھے خبر ملی کہ اُن میں سے ایک بہت بیمار ھو گیا تھا ۔ اِس لئے جب میں اپنی جنم بھومی واپس آیا تو وشیشتیا اُنھیں دیکھنے گیا ۔ وھاں بڑے بھائی نے میرا سواگت کیا اور یہ بتایا کہ اُس کا چھوٹا بھائی بیمار تھا۔ اپنے گھر پر آنے کے لئے اُس نے مجھے دھنیہ واد

और कुछ देर तक वह संजीदगी और कड़ाई के साथ मुझसे बातें करती रहीं; लेकिन उन्होंने जो कुछ कहा वह मेरी समझ में नहीं आया और वह उठ खड़ी हुईं और अपनी ठोड़ी पर उँगलियाँ मारती हुईं कमरे में टहलने लगीं—उनकी घनी भौंहें कभी तन जातीं, कभी ढीली पड़ जातीं.

मेज़ पर जलती हुई मोमबत्ती पिघलती चली जा रही थी और शीशे में उसका अक्स जगमगा रहा था, फ़र्श पर काली-काली परछाइयाँ लोट रही थीं, कोने में मूर्ति के आगे रोशनी जल रही थी और बर्फ़ से ढकी हुई खिड़कियों के शीशों पर चाँदनी ने चाँदी कर दी थी. माँ चारों तरफ़ इस तरह देख रही थीं गोया नन्ही दीवारों या छत पर कुछ ढूँढ़ रही हों.

"सोने का क्या वक्त है तेरा ?"

"थोड़ी देर और रहने दो मुझे यहाँ !"

"ओ हाँ, आज दिन में भी तो थोड़ा सो लिया है", उन्हें याद आया.

"क्या तुम फिर चली जाना चाहती हो ?" मैं उनसे पूछ बैठा.

"कहाँ ?" वह चौंक सी पड़ीं, और मेरा सिर ऊपर को उठाकर मेरी तरफ़ इतनी देर तक ताकती रहीं कि मेरी आँखों में आँसू आ गये.

"क्या बात है रे ?" उन्होंने पूछा.

"गरदन दुख रही है".

दिल भी दुख रहा था मेरा, क्योंकि यकायक मैं यह समझ गया था कि वह हमारे घर नहीं रहेंगी और फिर चली जायेंगी.

"अपने बाप-सा होता जा रहा है तू", पायदान को ठोकर से एक तरफ़ को हटाते हुए वह बोलीं. "उनके बारे में कुछ बताया है तुझे—तेरी नानी ने ?"

"हाँ".

"वह मैक्सिम को बहुत प्यार करती थीं—बहुत ही ज़्यादा. और वह भी उन्हें प्यार करते थे—"

"मैं जानता हूँ."

माँ मोमबत्ती की तरफ़ देखने लगीं और उनकी भौंहें सिकुड़ गईं. फिर उन्होंने उसे बुझा दिया और कहा—"अब ठीक है."

सचमुच इससे हवा में ताज़गी और उम्दगी आ गई, और काली-काली परछाइयाँ ग़ायब हो गईं. जगह-जगह फ़र्श पर तेज़ दूधिया रोशनी बिखर गई और खिड़की के शीशों पर सुनहरे दाने चमक उठे.

اور کچھ دیر تک وہ سنجیدگی اور کڑائی کے ساتھ مجھسے باتیں کرتی رہیں؛ لیکن انہوں نے جو کچھ کہا وہ میری سمجھ میں نہیں آیا اور وہ اٹھ کھڑی ہوئیں اور اپنی ٹھوڑی پر انگلیاں مارتی ہوئیں کمرے میں ٹہلنے لگیں—ان کی گھنی بھونہیں کبھی تن جاتیں، کبھی ڈھیلی پڑ جاتیں۔

میز پر جلتی ہوئی موم بتی پگھلتی چلی جا رہی تھی اور شیشے میں اس کا عکس جگمگا رہا تھا، فرش پر کالی کالی پرچھائیاں لوٹ رہی تھیں۔ کونے میں مورتی کے آگے روشنی جل رہی تھی اور برف سے ڈھکی ہوئی کھڑکیوں کے شیشوں پر چاندنی نے چاندی کر دی تھی۔ ماں چاروں طرف اس طرح دیکھ رہی تھیں گویا ننھی دیواروں یا چھت پر کچھ ڈھونڈھ رہی ہوں۔

"سونے کا کیا وقت ہے تیرا ؟"

"تھوڑی دیر اور رہنے دو مجھے یہاں !"

"او ہاں، آج دن میں بھی تو تھوڑا سو لیا ہے" انہیں یاد آیا۔

"کیا تم پھر چلی جانا چاہتی ہو ؟" میں ان سے پوچھ بیٹھا۔

"کہاں ؟" وہ چونک سی پڑیں، اور میرا سر اوپر کو اٹھا کر میری طرف اتنی دیر تک تاکتی رہیں کہ میری آنکھوں میں آنسو آ گئے۔

"کیا بات ہے رے ؟" انہوں نے پوچھا۔

"گردن دکھ رہی ہے۔"

دل بھی دکھ رہا تھا میرا، کیونکہ یکایک میں یہ سمجھ گیا تھا کہ وہ ہمارے گھر نہیں رہینگی اور پھر چلی جائیں گی۔

"اپنے باپ-سا ہوتا جا رہا ہے تو۔" پائدان کو ٹھوکر سے ایک طرف کو ہٹاتے ہوئے وہ بولیں—"ان کے بارے میں کچھ بتایا ہے تجھے—تیری نانی نے۔"

"ہاں۔"

"وہ میکسم کو بہت پیار کرتی تھیں—بہت ہی زیادہ۔ اور وہ بھی انہیں پیار کرتے تھے—"

"میں جانتا ہوں۔"

ماں موم بتی کی طرف دیکھنے لگیں اور ان کی بھو نہیں سکڑ گئیں۔ پھر انہوں نے اسے بجھا دیا اور کہا—"اب ٹھیک ہے۔"

سچ مچ اس سے ہوا میں تازگی اور عمدگی آ گئی، اور کالی کالی پرچھائیاں غایب ہو گئیں۔ جگہہ جگہہ فرش پر تیز دودھیا روشنی بکھر گئی اور کھڑکی کے شیشوں پر سنہرے دانے چمک اٹھے۔

शाम को नाना जी और नानी अपनी मर्ज़ी से उम्दा पोशाक पहनकर 'वेस्पर्स' की दुआ के लिये गिरजाघर चल दिए. नानाजी रंगसाज़ों के मुखिया की अपनी वर्दी में चमचमा रहे थे, जिसके ऊपर रोयेंदार ऊनी लबादा पड़ा हुआ था, और उनकी तोंद शान के साथ बाहर को निकली हुई थी. चुलबुलाहट के साथ उनकी तरफ़ आँखों का इशारा करके नानी मेरी माँ से बोलीं—"ज़रा देख तो बाबू जी को! कितने शानदार लग रहे हैं न?—छोटे से बकरे की तरह फुरतीले". और माँ खिलखिला कर हँस पड़ीं.

जब माँ के कमरे में उनके साथ मैं अकेला रह गया तब वह कोच के ऊपर पालथी मार कर बैठ गईं और अपनी बग़ल की तरफ़ इशारा करती हुई बोलीं—"आ, यहाँ बैठ जा. अच्छा बता कैसा लगता है तुझे यहाँ? अच्छा नहीं लगता, क्यों?"

"कैसा लगता है मुझे यहाँ?" कैसा सवाल था यह! मैंने जवाब दिया—"मैं क्या जानूँ".

"नाना जी पीटते हैं तुझे, क्यों?"

"अब उतना नहीं पीटते!"

"ओह?—अच्छा, अब मुझे अपनी सारी बातें सुना—जो कुछ कहना चाहता हो कह डाल—हाँ, तो?"

नाना जी के बारे में मैं उनसे कुछ नहीं कहना चाहता था. इसलिये मैं उन्हें उस भले आदमी की बातें सुनाने लगा जो ऊपर की कोठरी में रहा करता था और जो किसी को भी अच्छा नहीं लगता था और नाना जी ने जिसे निकाल दिया था. पर मैं समझ गया कि यह बातें उन्हें अच्छी नहीं लग रही थीं, क्योंकि वह बोलीं—"ठीक, और बातें सुना".

उन तीन लड़कों की बात मैंने कही और किस तरह उस कर्नल ने अपने अहाते से मुझे निकाल बाहर किया था, यह भी सुनाया. और यह सब सुनते-सुनते उन्होंने मुझे अपनी बाँहों में और भी कस लिया.

"यह क्या बेहूदा बातें!" उनकी आँखें जल उठीं, और एक मिनट तक फ़र्श की तरफ़ वह चुपचाप ताकती रहीं.

"नाना जी क्यों बिगड़ रहे थे तुमसे?" मैंने पूछा.

"क्योंकि मैंने ग़लती की है, उनके हिसाब से".

"कि उस बच्चे को यहाँ नहीं लाईं तुम—?"

वह गोया आसमान से गिरीं—एकदम चौंक पड़ीं, भौंहें सिकुड़ गईं और अपने होंट काटने लगीं. फिर क़हक़हा मारकर हँस पड़ीं और मुझे और भी कसकर चिपटा के बोलीं—"तू तो बड़ा शैतान है रे! देख ख़बरदार, कभी किसी से नहीं कहना यह बात, समझा? कभी मुँह से न निकले—बस, भूल ही जा कि कभी यह बात सुनी थी".

شام کو نانا جی اور نانی اپنی مرضی سے عمدہ پوشاک پہن کر 'ویسپرس' کی دعا کے لئے گرجا گھر چل دیئے. نانا جی رنگسازوں کے مکھیا کی اپنی وردی میں چمچما رہے تھے، جس کے اوپر روئیں دار اونی لبادہ پڑا ہوا تھا، اور ان کی توند شان کے ساتھ باہر کو نکلی ہوئی تھی. چلبلاہٹ کے ساتھ ان کی طرف آنکھوں کا اشارہ کر کے نانی میری ماں سے بولیں—"ذرا دیکھ تو بابو جی کو! کتنے شاندار لگ رہے ہیں نہ؟—چھوٹے سے بکرے کی طرح پھرتیلے." اور ماں کھلکھلا کر ہنس پڑیں.

جب ماں کے کمرے میں ان کے ساتھ میں اکیلا رہ گیا تب وہ کوچ کے اوپر پالتھی مار کر بیٹھ گئیں اور اپنی بغل کی طرف اشارہ کرتی ہوئی بولیں—"آ، یہاں بیٹھ جا. اچھا بتا کیسا لگتا ہے تجھے یہاں؟ اچھا نہیں لگتا، کیوں؟"

"کیسا لگتا ہے مجھے یہاں؟ کیا سوال تھا یہ! میں نے جواب دیا—"میں کیا جانوں."

نانا جی پیٹتے ہیں تجھے، کیوں؟"

"اب اتنا نہیں پیٹتے!'

"اوہ؟—اچھا، اب مجھے اپنی ساری باتیں سنا—جو کچھ کہنا چاہتا ہو کہہ ڈال—ہاں، تو؟"

نانا جی کے بارے میں میں ان سے کچھ نہیں کہنا چاہتا تھا. اس لئے میں انہیں اس بھلے آدمی کی باتیں سنانے لگا جو اوپر کی کوٹھری میں رہا کرتا تھا اور جو کسی کو بھی اچھا نہیں لگتا تھا اور ناناجی نے جسے نکال دیا تھا. پر میں سمجھ گیا کہ یہ باتیں انہیں اچھی نہیں لگ رہی تھیں، کیونکہ وہ بولیں—"ٹھیک، اور باتیں سنا."

ان تین لڑکوں کی بات میں نے کہی اور کس طرح اس کرنل نے اپنے احاطے سے مجھے نکال باہر کیا تھا، یہ بھی سنایا. اور یہ سب سنتے سنتے انہوں نے مجھے اپنی بانہوں میں اور بھی کس لیا.

'یہ کیا بیہودہ باتیں!" ان کی آنکھیں جل اٹھیں، اور ایک منٹ تک فرش کی طرف وہ چپ چاپ تاکتی رہیں.

"نانا جی کیوں بگڑ رہے تھے تم سے؟" میں نے پوچھا.

"کیونکہ میں نے غلطی کی ہے، ان کے حساب سے."

"کہ اس بچے کو یہاں نہیں لائیں تم—؟"

وہ گویا آسمان سے گریں—ایکدم چونک پڑیں، بھونہیں سکڑ گئیں اور اپنے ہونٹ کاٹنے لگیں. پھر قہقہہ مار کر ہنس پڑیں اور مجھے اور بھی کس کر چپٹا کے بولیں—"تو تو بڑا شیطان ہے رے! دیکھ خبردار، کبھی کسی سے نہیں کہنا یہ بات، سمجھا؟ کبھی منھ سے نہ نکلے—بس، بھول ہی جا کہ کبھی یہ بات سنی تھی."

अब मैं अपने को रोक नहीं सका—मेरे आँसू किसी तरह भी नहीं रुक रहे थे—और मैं तन्दूर पर से नीचे कूद पड़ा और उनके पास दौड़ गया. मेरी आँखों से ख़ुशी के आँसू बह रहे थे—यह देखकर कि इतनी अजीब और गहरी मोहब्बत के साथ नाना-नानी एक दूसरे से गुफ़्तगू कर रहे हैं और मेरे आँसू इसलिये भी बह रहे थे कि उनकी बातें सुनकर मुझे रंज हो रहा था, और इसलिए भी कि मेरी माँ आ गई थीं और फिर आख़िर में इसलिए भी कि उन्होंने मुझे—आँसुओं समेत लेकर अपनी छाती से लगा लिया. उन्होंने मुझे कसकर चिपटा लिया और मेरे साथ ख़ुद भी रोने लगे.

बड़ी धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए से नाना जी मुझसे कहने लगे—"तो तू यहाँ था, शैतान की दुम ! ले, तेरी माँ फिर आ गई है और अब तो हमेशा तू उसी के पीछे लगा फिरेगा न, क्यों ? और बूढ़े खूसट नाना जी अब जाँय भाड़ में ! है न यही बात ? और नानी ने तो बिल्कुल चौपट ही कर दिया है तुझे...सो वह भी नहीं चाहिये अब—क्यों ? धत तेरे की !"

हमें हटाकर वह उठ खड़े हुए और ऊँची आवाज़ में गुस्से के साथ बोले—सबके सब छोड़ते जा रहे हैं हमें—सब मुँह फेरे ले रहे हैं हमारी तरफ़ से.—तो फिर बुला लाओ उसे अब, देर क्यों करती हो ? जल्दी करो !"

नानी बावरचीख़ाने से चली गईं, और नाना जी कोने में जाकर सिर झुकाए खड़े हो गए.

"या ख़ुदाए करीम !" उन्होंने बुदबुदाना शुरू किया "देख—तू तो हमारे दिल की सब जानता है !" और अपने सीने पर उन्होंने एक घूँसा मारा.

यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा. असल में ख़ुदा से दुआ करने का उनका तरीक़ा ही मुझे बहुत बुरा लगता था, क्योंकि अपने बनाने वाले के आगे भी गोया वह अपने ही को बड़ा समझते थे.

जब माँ अन्दर आईं तब उनकी लाल पोशाक से सारा बावरचीख़ाना रोशन हो गया, और जब वह मेज़ के आगे नाना जी और नानी के बीच में बैठ गईं तब उनकी पोशाक की चौड़ी-चौड़ी ढीली बाँहें नाना जी और नानी जी के कन्धों पर लहराने लगीं. वह अहिस्ता-अहिस्ता संजीदगी के साथ कुछ सुनाने लगीं, और वे दोनों भी चुपचाप, बीच में दख़ल देने की कोशिश किए बग़ैर, इस तरह मेरी माँ की बात सुनने लगे गोया वही उनकी माँ है और वे उनके बच्चे !

जोश के सबब से मैं इतना थक गया था कि कोच पर बैठे-बैठे ही मुझे गहरी नींद आ गई.

اب میں اپنے کو روک نہیں سکا—میرے آنسو کسی طرح بھی نہیں رک رہے تھے—اور میں تندور پر سے نیچے کود پڑا اور اُن کے پاس دوڑ گیا۔ میری آنکھوں سے خوشی کے آنسو بہہ رہے تھے—یہ دیکھ کر کہ اِتنی عجیب اور گہری محبت کے ساتھ نانا نانی ایک دوسرے سے گفتگو کر رہے ہیں اور میرے آنسو اِس لئے بھی بہہ رہے تھے کہ اُن کی باتیں سن کر مجھے رنج ہو رہا تھا، اور اس لئے بھی کہ میری ماں آگئی تھیں، اور پھر آخیر میں اِس لئے بھی کہ انہوں نے مجھے—آنسوؤں سمیت لیکر اپنی چھاتی سے لگا لیا۔ اُنہوں نے مجھے کس کر چپٹا لیا اور میرے ساتھ خود بھی رونے لگے۔

بڑی دھیمی آواز میں بدبداتے ہوئے سے نانا جی مجھسے کہنے لگے—"تو تو یہاں تھا، شیطان کی دم ! لے تیری ماں پھر آگئی ہے اور اب تو ہمیشہ تو اُسی کے پیچھے لگا پھریگا نہ، کیوں ؟ اور بوڑھے کھوسٹ نانا جی اب جائیں بھاڑ میں ! ہے نہ یہی بات ؟ اور نانی نے تو بالکل چوپٹ ہی کر دیا ہے تجھے......سو وہ بھی نہیں چاہئے اب—کیوں ؟ دھت تیرے کی !"

ہمیں ہٹا کر وہ اُٹھ کھڑے ہوئے اور اونچی آواز میں غصہ کے ساتھ بولے—"سب کے سب چھوڑتے جا رہے ہیں ہمیں—سب منھ پھیرے لے رہے ہیں ہماری طرف سے۔ —تو پھر بلا لاؤ اسے اب، دیر کیوں کرتی ہو ؟ جلدی کرو !"

نانی باورچی خانے سے چلی گئیں، اور نانا جی کونے میں جا کر سر جھکائے کھڑے ہو گئے۔

"یا خدائے کریم !" اُنہوں نے بدبدانا شروع کیا "دیکھ—تو تو ہمارے دل کی سب جانتا ہے !" اور اپنے سینے پر انہوں نے ایک گھونسہ مارا۔

یہ سب مجھے اچھا نہیں لگا۔ اصل میں خدا سے دعا کرنے کا اُن کا طریقہ ہی مجھے بہت برا لگتا تھا، کیونکہ اپنے بنانے والے کے آگے بھی گویا وہ اپنے ہی کو بڑا سمجھتے تھے۔

جب ماں اندر آئیں تب ان کی لال پوشاک سے سارا باورچی خانہ روشن ہو گیا، اور جب وہ میز کے آگے نانا جی اور نانی کے بیچ میں بیٹھ گئیں تب ان کی پوشاک کی چوڑی چوڑی ڈھیلی باہیں نانا جی اور نانی جی کے کندھوں پر لہرانے لگیں۔ وہ آہستہ آہستہ سنجیدگی کے ساتھ کچھ سنانے لگیں، اور وہ دونوں بھی چپ چاپ، بیچ میں دخل دینے کی کوشش کئے بغیر، اِس طرح میری ماں کی بات سننے لگے گویا وہی اُن کی ماں ہے اور وے ان کے بچے !

جوش کے سبب سے میں اِتنا تھک گیا تھا کہ کوچ پر بیٹھے بیٹھے ہی مجھے گہری نیند آ گئی۔

"बाबू जी' माफ़ कर दो उसे ! ईसामसीह के लिये, माफ़ कर दो उसे ! क्या इस तरह उसे छोड़ ही दोगे बिलकुल ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि बड़े आदमियों और रईसों के घर ऐसी बातें नहीं होतीं ? जानते हो कि औरतें कैसी होती हैं. देखो, माफ़ करदो उसे इस बार ! ग़लती किससे नहीं होती बाबू जी ?"

नाना जी ने दीवार के सहारे अपनी पीठ टेककर नानी की तरफ़ देखा. और फिर कड़वी हँसी हँसकर—हँसे क्या, रोना भरा था उस हँसी में—वह भुनभुना उठे—"और ? फिर इसके बाद ? कोई भी है ऐसी ग़लती जो तुम माफ़ न कर दो ? क्यों ? अगर तुम्हारी चल सके तो सभी को माफ़ी मिल जाया करे…धत् तेरे की."

और नानी के ऊपर झुककर, उनके दोनों कंधे पकड़कर वह उन्हें हिलाने लगे और जल्दी-जल्दी फुसफुसाते हुए बोले-—"लेकिन तुम क्यों इतनी परेशान हो ? मेरे अन्दर रहम नहीं रह गया है ज़रा भी. देखो न, बिलकुल क़ब्र में पैर लटकाए बैठे हैं हम लोग, फिर भी इस बुढ़ापे में सज़ा ही सज़ा भुगतनी पड़ रही है ! न ज़रा भी चैन मिल पाता है न सुख… और न कभी मिलेगा अब…और इसके अलावा…देख लेना तुम !…मरने के पहले भीख माँगने की नौबत आएगी —हाँ भीख !"

नानी ने उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया, और उनकी बग़ल में बैठी-बैठी धीरे-धीरे हँसती हुई बोलीं—"अरे, छिः छिः ! तो भीख माँगने से घबड़ाते हो तुम ? अच्छा मान लो, इस भीख माँगने की ही नौबत आ गई ! तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा तब, तुम घर में बैठे रहा करना और मैं भीख माँग लाया करूँगी.—हमारा घर तब भी भरा-पूरा रहेगा; इसकी फ़िक्र तुम बिलकुल छोड़ दो !"

वह अचानक क़हक़हा मारकर हँस पड़े और बकरे की तरह अपना सिर हिलाने लगे और फिर उन्होंने नानी की गरदन पकड़कर उन्हें अपने सीने से लगा लिया, बिलकुल ज़रा से और सिकुड़े-सिकुड़ाए से लग रहे थे वह नानी की बग़ल में !

"ओह, कैसी नादान हो तुम," वह बोल उठे "कितनी भोली भाली !—बस, अब तुम्हीं तो एक मेरी रह गई हो ! तुम समझती नहीं हो न कुछ, इसीलिये किसी भी बात की घबड़ाहट नहीं होती तुम्हें. लेकिन पीछे तो फिर कर देखो ज़रा—और सोचो तो, कि कितनी मेहनत की है तुमने और मैंने इनके लिये—कैसे-कैसे गुनाह तक किये हैं मैंने इनकी ख़ातिर—लेकिन फिर भी, इतना करने पर भी, आज—"

"بابو جی' معاف کر دو اُسے ! عیسیٰ مسیح کے لئے' معاف کر دو اُسے ! کیا اِس طرح اُسے چھوڑ ہی دو گے بالکل ؟ کیا تمہارا خیال ہے کہ بڑے آدمیوں اور رئیسوں کے گھر ایسی باتیں نہیں ہوتیں ؟ جانتے ہو کہ عورتیں کیسی ہوتی ہیں ۔ دیکھو' معاف کر دو اُسے اس بار ! غلطی کس سے نہیں ہوتی بابو جی ؟"

نانا جی نے دیوار کے سہارے اپنی پیٹھ ٹیک کر نانی کی طرف دیکھا ۔ اور پھر کڑوی ہنسی ہنسکر— ہنسے کیا' رونا بھرا تھا اُس ہنسی میں— وہ بھنبھنا اُٹھے—"اور ؟ پھر اِس کے بعد ؟ کوئی بھی ہے ایسی غلطی جو تم معاف نہ کر دو ؟ کیوں ؟ اگر تمہاری چل سکے تو سبھی کو معافی مل جایا کرے ...... دھت تیرے کی ۔"

اور نانی کے اُوپر جھک کر' اُن کے دونوں کندھے پکڑ کر وہ اُنھیں ہلانے لگے اور جلدی جلدی پھسپھساتے ہوئے بولے— "لیکن تم کیوں اِتنی پریشان ہو ؟ میرے اندر رحم نہیں رہ گیا ہے ذرا بھی۔ دیکھو نہ' بالکل قبر میں پیر لٹکائے بیٹھے ہیں ہم لوگ' پھر بھی اِس بڑھاپے میں سزا ہی سزا بھگتنی پڑ رہی ہے ! نہ ذرا بھی چین مل پاتا ہے نہ سکھ... اور نہ کبھی ملیگا اب... اور اِس کے علاوہ... دیکھ لینا تم... مرنے کے پہلے بھیک مانگنے کی نوبت آئیگی— ہاں بھیک !"

نانی نے اُن کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے لیا' اور اُن کی بغل میں بیٹھی بیٹھی دھیرے دھیرے ہنستی ہوئی بولیں—"ارے' چھی چھی ! تو بھیک مانگنے سے گھبراتے ہو تم ؟ اچھا مان لو' اِس بھیک مانگنے کی ہی نوبت آگئی ! تمہیں کچھ نہیں کرنا پڑیگا تب' تم گھر میں بیٹھے رہا کرنا اور میں بھیک مانگ لایا کرونگی ۔—ہمارا گھر تب بھی بھرا پورا رہیگا' اِس کی فکر تم بالکل چھوڑ دو !"

وہ اچانک قہقہہ مار کر ہنس پڑے اور بکرے کی طرح اپنا سر ہلانے لگے ۔ اور پھر انہوں نے نانی کی گردن پکڑ کر انہیں اپنے سینے سے لگا لیا' بالکل ذرا سے اور سکڑے سکڑائے سے لگ رہے تھے وہ نانی کی بغل میں !

"اوہ' کیسی نادان ہو تم ۔" وہ بول اُٹھے' "کتنی بھولی بھالی !—بس' اب تمہیں تو ایک میری رہ گئی ہو ! تم سمجھتی نہیں ہو نہ کچھ' اِسی لئے کسی بھی بات کی گھبراہٹ نہیں ہوتی تمہیں ۔ لیکن پیچھے تو پھر کر دیکھو ذرا— اور سوچو تو' کہ کتنی محنت کی ہے تم نے اور میں نے اِن کے لئے— کیسے کیسے گناہ تک کئے ہیں میں نے اِن کی خاطر— لیکن پھر بھی' اِتنا کرنے پر بھی' آج—"

आँख ही आँख और कान ही कान हैं. मेरे सीने के अन्दर न जाने कैसा होने लगा और मेरी बड़ी ज़बरदस्त ख़्वाहिश हुई कि चीख़ उठूँ.

"लेक्सी तू जा यहाँ से !" नाना जी ने रुखाई के साथ मुझसे कहा !

"क्यों ?" मेरी माँ ने मुझे फिर अपनी तरफ़ खींचते हुए उनसे पूछा. "नहीं, तू यहाँ से नहीं जाएगा. मैं मना कर रही हूँ." और किसी गुलाबी बादल की तरह उठकर मेरी माँ धीरे-धीरे नाना जी के पीछे जा खड़ी हुईं.

"ज़रा सुनो तो बाबू जी—"

नाना जी उनकी तरफ़ मुड़कर चीख़ उठे—

"चुप रह."

"अपनी ज़बान को क़ाबू में रखिये, बाबू जी." संजीदगी से माँ ने जवाब दिया.

नानी कोच पर से उठ खड़ी हुईं और अपनी उँगली दिखाते हुए उन्हों ने माँ को टोका—"यह क्या' वारवारा ?"

और नाना भी बुद्बुदाते हुए बैठ गए—"अच्छा ठैरो तो ज़रा ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि किसने—? क्यों ? कौन था वह ?……कैसे हुआ यह सब ?"

और अचानक ऐसी आवाज़ में, जो उनकी नहीं मालूम पड़ती थी, वह गरज उठे—"मेरा मुँह काला कर दिया तूने" वारका !"

"भाग यहाँ से !" नानी मुझसे बोलीं, और मैं बावरचीख़ाने में जा छुपा. ऐसा लग रहा था गोया मेरा दम घुटा जा रहा है. तन्दूरी चूल्हे के ऊपर मैं जा चढ़ा, और बहुत देर तक वहाँ बैठा-बैठा उन लोगों की बात-चीत सुनता रहा, जो बीच के दीवार के बावजूद सुनाई पड़ रही थी. या तो वे सब के सब एक साथ बोलने लगते थे, और या बड़ी देर तक बिल्कुल चुप रहते, गोया सो गये हों. उन लोगों की बातचीत का मज़मून था कोई बच्चा, जो हाल ही में मेरी माँ के पैदा हुआ था और किसी के यहाँ छोड़ दिया गया था. लेकिन मैं यह नहीं समझ सका कि नाना जी की नाराज़ी किस बात पर थी—उनसे बग़ैर पूछे बच्चा पैदा किया गया इस पर या इसलिये कि वह उस बच्चे को नाना जी के यहाँ नहीं लाईं.

बाद को वह बावरचीख़ाने में चले आए. उनके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा नीला सा पड़ रहा था, और बेहद थके दिखाई दे रहे थे. उनके पीछे नानी भी आ पहुँचीं, अपने गालों पर बहते हुए आँसुओं को कुरते से पोंछती हुई. नाना जी एक बेंच पर ऊपर पैर करके बैठ गए और अपने हाथ भी उसी पर टेककर कांपते कांपते अपने पीले पड़े हुए होंटों को काटने लगे. और नानी उनके आगे घुटनों के बल झुक गईं और सुकून के साथ लेकिन ज़ोर देकर बोलीं—

آنکھ ہی آنکھ اور کان ہی کان ہیں۔ میرے سینے کے اندر نہ جانے کیسا ہونے لگا اور میری زبردست خواہش ہوئی کہ چیخ اٹھوں۔

"لیکسی، تو جا یہاں سے!" ناناجی نے رکھائی کے ساتھ مجھسے کہا!

"کیوں؟" میری ماں نے مجھے پھر اپنی طرف کھینچتے ہوئے اُن سے پوچھا۔ "نہیں، تو یہاں سے نہیں جائیگا۔ میں منع کر رہی ہوں۔" اور کسی گلابی بادل کی طرح اُٹھ کر میری ماں دھیرے دھیرے نانا جی کے پیچھے جا کھڑی ہوئیں۔

"ذرا سنو تو بابو جی—"

"نانا جی اُن کی طرف مڑ کر چیخ اُٹھے—

"چپ رہ۔"

"اپنی زبان کو قابو میں رکھئے، بابو جی۔" سنجیدگی سے ماں نے جواب دیا۔

نانی کوچ پر سے اُٹھ کھڑی ہوئیں اور اپنی اُنگلی دکھاتے ہوئے اُنہوں نے ماں کو ٹوکا—"یہ کیا، واروارا؟"

اور نانا بھی بدبداتے ہوئے بیٹھ گئے—"اچھا ٹھہرو تو ذرا! میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کسنے—؟ کیوں؟ کون تھا وہ؟… کیسے ہوا یہ سب؟"

اور اچانک ایسی آواز میں، جو اُن کی نہیں معلوم پڑتی تھی، وہ گرج اُٹھے۔ "میرا منھ کالا کر دیا تونے، وارکا!"

"بھاگ یہاں سے!" نانی مجھ سے بولیں، اور میں باورچی خانے میں جا چھپا۔ ایسا لگ رہا تھا گویا میرا دم گھٹا جا رہا ہے۔ تندوری چولہے کے اوپر میں جا چڑھا، اور بہت دیر تک وہاں بیٹھا بیٹھا اُن لوگوں کی بات چیت سنتا رہا، جو بیچ کی دیوار کے باوجود سنائی پڑ رہی تھی۔ یا تو وے سب کے سب ایک ساتھ بولنے لگتے تھے، اور یا بڑی دیر تک بالکل چپ رہتے، گویا سو گئے ہوں۔ اُن لوگوں کی بات چیت کا مضمون تھا کوئی بچہ، جو حال ہی میں میری ماں کے پیدا ہوا تھا اور کسی کے یہاں چھوڑ دیا گیا تھا۔ لیکن میں یہ نہیں سمجھ سکا کہ نانا جی کی ناراضی کس بات پر تھی—اُن سے بغیر پوچھے بچہ پیدا کیا گیا اِس پر یا اِس لئے کہ وہ اُس بچے کو نانا جی کے یہاں نہیں لائیں۔

بعد کو وہ باورچی خانے میں چلے آئے، اُن کے بال بکھرے ہوئے تھے، چہرہ نیلا سا پڑ رہا تھا اور بےحد تھکے ہوئے دکھائی دے رہے تھے۔ اُن کے پیچھے پیچھے نانی بھی آ پہونچیں، اپنے گالوں پر بہتے ہوئے آنسوؤں کو کرتے سے پونچھتی ہوئی۔ نانا جی ایک بینچ پر اوپر پیر کر کے بیٹھ گئے اور اپنے ہاتھ بھی اُسی پر ٹیک کر کانپتے کانپتے اپنے پیلے پڑے ہوئے ہونٹوں کو کاٹنے لگے۔ اور نانی اُن کے آگے گھٹنوں کے بل جھک گئیں اور سکون کے ساتھ لیکن زور دیکر بولیں—

उतार कर वह देहलीज़ के उधर फेंकती जाती थीं और हिक़ारत से अपने लाल-लाल होंट सिकोड़े लगातार बोलती ही चली जा रही थीं—"बोलता क्यों नहीं है तू? ख़ुशी नहीं हुई तुझे मेरे आने की? उफ़! कैसी गन्दी है यह क़मीज़......"

फिर उन्होंने बतख़ की चरबी से मेरे कान मलने शुरू किये जिससे मुझे तकलीफ़ होने लगी, लेकिन इतनी बढ़िया ख़ुशबू निकल रही थी उनके कपड़ों से उस वक़्त कि तकलीफ़ जितनी हो रही थी उससे कम मालूम हुई.

मैं उनकी आँखों की तरफ़ ताकता हुआ उनसे चिपटता ही चला जा रहा था. ख़ौफ़ के सबब मेरे मुँह से आवाज़ नहीं निकल पा रही थी. और उनके अल्फ़ाज़ के साथ-साथ बीच-बीच में नानी की दुखभरी आवाज़ मेरे कानों तक पहुँच रही थी—"इतनी मनमानी करने लगा है यह...ज़रा किसी की नहीं सुनता. अपने नाना तक से नहीं डरता, ज़रा भी......अरी वारिया! वारिया!"

"क्यों पैं-पैं कर रही हो माँ, चुप भी रहो. इस तरह बक-बक करके क्या कर लोगी?"

सभी चीज़ें माँ के सामने छोटी लगने लगी थीं, रहम के क़ाबिल और बूढ़ी! मैं ख़ुद भी बूढ़ा सा लगने लगा था, नाना जी की तरह बूढ़ा.

अपने घुटनों से मुझे चिपटा कर मेरे बालों पर अपना गरम-गरम, भारी हाथ फेरती हुई वह बोलीं—"किसी कड़े आदमी की देख-भाल में रखने की ज़रूरत है इसे. और अब स्कूल भी तो जाना चाहिये...कुछ सीखना चाहता है कि नहीं? क्यों रे?"

"मैं तो सब सीख चुका, जो जानना था."

"और भी थोड़ा-बहुत सीखना बाक़ी है रे!...अरे! कितनी ताक़त आगई है तुझमें!" और मेरे साथ खेल-तमाशा करते हुए वह अपनी तेज़ मीठी आवाज़ में दिल खोलकर हसने लगीं.

उसी वक़्त नाना जी अन्दर दाख़िल हुए. उनका चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया था, आँखें लाल हो रही थीं, और ग़ुस्से के मारे वह काँप रहे थे. मेरी माँ ने उन्हें देखते ही मुझे दूर हटा दिया और ऊँची आवाज़ में उनसे पूछा—"तो फिर क्या तय किया आपने बाबू जी? मुझे नहीं रहने देंगे यहाँ?"

नाना जी खिड़की के पास खड़े होकर अपनी उँगलियों के नाख़ूनों से शीशे पर जमी बरफ़ खुरचने लगे, और बड़ी देर तक कुछ नहीं बोले. हालत बहुत ही नाज़ुक और तक-लीफ़देह थी और, जैसा कि ऐसे संगीन मौक़ों पर मेरे साथ हमेशा होता था, मुझे लग रहा था गोया मेरे जिस्म भर में

اُتار کر وہ دہلیز کے اُدھر پھینکتی جاتی تھیں اور حقارت سے اپنے لال لال ہونٹ سکوڑے لگاتار بولتی ہی چلی جارہی تھیں—"بولتا کیوں نہیں ہے تو؟ خوشی نہیں ہوئی تجھے میرے آنے کی؟ اُف! کیسی گندی ہے یہ قمیض..."

پھر اُنہوں نے بطخ کی چربی سے میرے کان ملنے شروع کئے جس سے مجھے تکلیف ہونے لگی. لیکن اِتنی بڑھیا خوشبو نکل رہی تھی اُن کے کپڑوں سے اُس وقت کہ تکلیف جتنی ہو رہی تھی اُس سے کم معلوم ہوئی.

میں اُن آنکھوں کی طرف تاکتا ہوا اُن سے چپٹتا ہی چلا جا رہا تھا. خوف کے سبب میرے منھ سے آواز نہیں نکل پا رہی تھی. اور اُن کے الفاظ کے ساتھ ساتھ بیچ بیچ میں نانی کی دکھ بھری آواز میرے کانوں تک پہونچ رہی تھی—"اِتنی من مانی کرنے لگا ہے یہ...ذرا کسی کی نہیں سنتا. اپنے نانا تک سے نہیں ڈرتا، ذرا بھی...اری واریا! واریا!"

"کیوں پیں پیں کر رہی ہو ماں، چپ بھی رہو. اِس طرح بک بک کر کے کیا کر لوگی؟"

سبھی چیزیں ماں کے سامنے چھوٹی لگنے لگی تھیں، رحم کے قابل اور بوڑھی! میں خود بھی بوڑھا سا لگنے لگا تھا، نانا جی کی طرح بوڑھا.

اپنے گھٹنوں سے مجھے چپٹا کر میرے بالوں پر اپنا گرم گرم بھاری ہاتھ پھیرتی ہوئی وہ بولیں—"کسی کڑے آدمی کی دیکھ بھال میں رکھنے کی ضرورت ہے اِسے. اور اب اِسکول بھی تو جانا چاہئے.....کچھ سیکھنا چاہتا ہے کہ نہیں؟ کیوں رے؟"

"میں تو سب سیکھ چکا، جو جاننا تھا."

"اور بھی تھوڑا بہت سیکھنا باقی ہے رے!...ارے! کتنی طاقت آگئی ہے تجھ میں!" اور میرے ساتھ کھیل تماشا کرتے ہوئے وہ اپنی تیز میٹھی آواز میں دل کھولکر ہنسنے لگیں.

اِسی وقت نانا جی اندر داخل ہوئے. اُن کا چہرہ ایکدم سفید پڑ گیا تھا، آنکھیں لال ہو رہی تھیں، اور غصہ کے مارے وہ کانپ رہے تھے. میری ماں نے اُنہیں دیکھتے ہی مجھے دور ہٹا دیا اور اُونچی آواز میں اُن سے پوچھا—"تو پھر کیا طے کیا آپنے بابو جی؟ مجھے نہیں رہنے دینگے یہاں؟"

نانا جی کھڑکی کے پاس کھڑے ہو کر اپنی اُنگلیوں کے ناخونوں سے شیشے پر جمی برف کھرچنے لگے، اور بڑی دیر تک کچھ نہیں بولے. حالت بہت ہی نازک اور تکلیف دہ تھی اور، جیسا کہ ایسے سنگین موقعوں پر میرے ساتھ ہمیشہ ہوتا تھا، مجھے لگ رہا تھا گویا میرے جسم بھر میں

मुझे यक़ीन नहीं आया, और अगर पादरी साहब ही हों तो वह किसी किराएदार के ही यहाँ आए होंगे.

"चल-चल !" कोचवान ने घोड़ों को हाँका, और उनकी पीठ पर कोड़ा फटकारते हुए मौज के साथ फिर सीटी बजाने लगा.

घोड़े मैदान को चीरते हुए दौड़ चले, और मैं खड़ा खड़ा उनकी तरफ़ ताकता रहा, फिर मैंने फाटक बन्द कर दिया. सूने पड़े बावरचीख़ाने में घुसते ही सबसे पहली आवाज़ मैंने अपनी माँ की सुनी. पास वाले कमरे में अपनी ज़ोरदार आवाज़ में वह कह रहीं थीं—"तो अब चाहते क्या हैं आप ? मेरी जान लेंगे ?"

अपनी ऊपरी पोशाक बदले बग़ैर ही मैं पिंजड़ों को पटक-पटककर दौड़ा हुआ बाहर के बरामदे में आया और नाना जी से टकरा गया. उन्होंने मेरी गरदन दबोच ली और अपनी ख़ूँख़्वार सी आँखें मेरे चेहरे पर गाड़ दीं, और बड़ी मुश्किल से एक घूँट सा सटक कर भारी गले से बोले—

"तेरी माँ फिर आ गई है......जा उसके पास...... ठैहरो......!" उन्होंने इतनी ज़ोर से मुझे झकझोर डाला कि मैं मुश्किल से गिरते-गिरते बचा और भीतर के दरवाज़े तक लुढ़कता चला गया. "चला जा......! जा......!"

मैं दरवाज़े से जा टकराया, जिस पर ऊन और मोमजामा चढ़ा हुआ था, लेकिन खटका गिराने में मुझे काफ़ी देर लग गई क्योंकि मेरा हाथ सर्दी से ठिठुरकर बिल्कुल सुन्न हो गया था और घबड़ाहट के मारे काँप रहा था. जब आख़ीर में मैं धीरे से अन्दर घुसा तो बिल्कुल ख़ौफ़ज़दा और अचंभे से भरा हुआ देहलीज़ पर ही रुक गया.

"यह आ गया !" मेरी माँ बोल उठी, "परमात्मा, कितना बड़ा हो गया है यह ! क्यों, मुझे पहचानता नहीं है ?......यह कैसे कपड़े पहनाए हैं इसे माँ ?......और देखो तो, इसके कान बिल्कुल सफ़ेद पड़े जा रहे हैं ! बतख़ की चरबी तो लाओ माँ, ज़रा जल्दी से."

कमरे के बीचोंबीच खड़ी वह मेरे ऊपर झुककर मेरी ऊपरी पोशाक उतारने लगीं और मुझे इस तरह उलट पलट कर देखने लगीं गोया मैं कोई गेंद हूँ. उनके लम्बे चौड़े बदन पर एक गरम, मुलायम, ख़ूबसूरत पोशाक थी, मर्दों के पूरे लबादे से बड़ी; और कंधे से लेकर कमर तक उस पर काले काले बटन तिरछी क़तार में टँके हुए थे. पहले कभी मैंने वैसी कोई पोशाक नहीं देखी थी.

उनका चेहरा पहले से छोटा लग रहा था और आँखें पहले से ज़्यादा बड़ी और धँसी हुई थीं; पर उनके बालों का सुनहरापन और भी गहरा हो उठा था. मेरे कपड़े उतार-

مجھے یقین نہیں آیا، اور اگر پادری صاحب ہی ہوں تو وہ کسی کرایہ‌دار کے ہی یہاں آئے ہونگے۔

"چل چل!" کوچوان نے گھوڑوں کو ہانکا، اور اُن کی پیٹھ پر کوڑا پھٹکارتے ہوئے موج کے ساتھ پھر سیٹی بجانے لگا۔

گھوڑے میدان کو چیرتے ہوئے دوڑ چلے، اور میں کھڑا کھڑا اُن کی طرف تاکتا رہا، پھر میں نے پھاٹک بند کر دیا۔ سونے پڑے باورچی خانے میں گھستے ہی سب سے پہلی آواز میں نے اپنی ماں کی سنی۔ پاس والے کمرے میں اپنی زوردار آواز میں وہ کہہ رہی تھیں—"تو اب چاہتے کیا ہیں آپ؟ میری جان لینگے؟"

اپنی اوپری پوشاک بدلے بغیر ہی میں پنجڑوں کو پٹک پٹکا کر دوڑا ہوا باہر کے برآمدے میں آیا اور نانا جی سے ٹکرا گیا۔ اُنہوں نے میری گردن دبوچ لی اور اپنی خونخوار سی آنکھیں میرے چہرے پر گاڑ دیں، اور مشکل سے ایک گھونٹ سا سٹک کر بھاری گلے سے بولے—

"تیری ماں پھر آگئی ہے...جا اُس کے پاس...ٹھہرو...!" اُنہوں نے اتنی زور سے مجھے جھنجھوڑ ڈالا کہ میں مشکل سے گرتے گرتے بچا اور بھیتر کے دروازے تک لڑھکتا چلا گیا۔ "چلا جا...! جا...!"

میں دروازے سے جا ٹکرایا، جس پر اُون اور موم جامہ چڑھا ہوا تھا، لیکن کھٹکا گرانے میں مجھے کافی دیر لگ گئی کیونکہ میرا ہاتھ سردی سے ٹھٹھر کر بالکل سن ہو گیا تھا اور گھبراہٹ کے مارے کانپ رہا تھا۔ جب آخر میں میں دھیرے سے اندر گھسا تو بالکل خوف زدہ اور اچنبھے سے بھرا ہوا دہلیز پر ہی رک گیا۔

"یہ آگیا!" میری ماں بول اُٹھی، ہے پرماتما، کتنا بڑا ہو گیا ہے یہ! کیوں، مجھے پہچانتا نہیں ہے؟ ...یہ کیسے کپڑے پہنائے ہیں اِسے ماں؟ ...اور دیکھو تو، اِس کے کان بالکل سفید پڑے جا رہے ہیں! بطخ کی چربی تو لاؤ ماں، ذرا جلدی سے۔"

کمرے کے بیچوں بیچ کھڑی وہ میرے اوپر جھک کر میری اوپری پوشاک اُتارنے لگیں اور مجھے اِس طرح اُلٹ پلٹ کر دیکھنے لگیں گویا میں کوئی گیند ہوں۔ اُن کے لمبے چوڑے بدن پر ایک گرم، ملایم، خوبصورت پوشاک تھی، مردوں کے پورے لبادے سے بڑی؛ اور کندھے سے لیکر کمر تک اُس پر کالے کالے بٹن ترچھی قطار میں ٹنکے ہوئے تھے۔ پہلے کبھی میں نے ویسی کوئی پوشاک نہیں دیکھی تھی۔

اُن کا چہرہ پہلے سے چھوٹا لگ رہا تھا اور آنکھیں پہلے سے زیادہ بڑی اور دھنسی ہوئی تھیں، پر اُن کے بالوں کا سنہرا پن اور بھی گہرا ہو اُٹھا تھا۔ میرے کپڑے اُتار

मेरी माँ

श्री गोर्की

एक रोज सनीचर के दिन बहुत सबेरे मैं पेत्रोवना के सब्ज़ी के खेत में बुलबुल पकड़ने के लिये जा घुसा. वहाँ मैं बहुत देर तक रहा, क्योंकि वे इतनी तेज़ थीं कि मेरे जाल में फँसती ही नहीं थीं. उनकी ख़ूबसूरती ने मुझे बुरी तरह से लुभा लिया था. चाँदी से चमकते जमे हुए बर्फ़ पर वह फुदकती फिरतीं. और बर्फ़ से ढकी हुई झाड़ियों की डालों पर उड़कर जा बैठती थीं और बर्फ़ का दूधिया बुरादा सा चारों तरफ़ झड़ उठता था. यह सब मुझे इतना लुभावना लग रहा था कि मैं अपनी नाकामयाबी की परेशानी भूल गया. यों भी मैं शिकार के फ़न में उस्ताद नहीं था, क्योंकि दरअसल अपना शिकार पाने से ज़्यादा मुझे उसके पीछे लगे फिरने में मज़ा आता था और सब से ज़्यादा मज़ा चिड़ियों के तौर तरीक़े जानने और उनके बारे में सोचने समझने में मिलता था. बर्फ़ से ढके हुए एक खेत के किनारे अकेले बैठे बैठे, उस बर्फ़ीले दिन के गहरे सन्नाटे में, चिड़ियों की चहचहाहट सुनने में मैं मस्त था कि किसी गाड़ी की घन्टियों की टुनटुनाहट मुझे दूर पर हलकी सी सुनाई दी, किसी पपीहे के दिलसोज़ गीत की तरह.

बर्फ़ पर बैठा बैठा मैं अकड़ सा गया था और मुझे लगा कि मेरे कान बर्फ़ के मारे जम से गये हैं. इसलिये जाल और पिंजड़ों को बटोरकर मैं दीवार पर चढ़ बाग़ीचे में कूद पड़ा और घर आ पहुँचा.❀

सड़क की तरफ़ का फाटक खुला पड़ा था और एक बहुत बड़ा, लम्बा चौड़ा आदमी मौज से सीटी बजाता, एक बड़ी सी बन्द गाड़ी में जुते हुए पसीने से तरबतर तीन घोड़ों की रास पकड़कर अहाते से बाहर लिये जा रहा था. मेरा दिल उछलने लगा.

"किसे लेकर आए थे तुम ?"

उसने मेरी तरफ़ मुड़कर अपनी बाँहों के नीचे से मुझे देखा और कोचवान की गद्दी पर चढ़कर जवाब दिया—"पादरी साहब को."

❀ बचपन में ही वालिद के इन्तक़ाल हो जाने के बाद गोर्की अपनी वालदा के साथ नाना नानी के पास रहने लगा था. उसके नाना रंगरेज़ थे और बड़े अच्छे मिज़ाज के थे. गोर्की की माँ कुछ दिन ही वहाँ रहकर कहीं बाहर चली गई और गोर्की अपनी प्यारी नानी के साये में रहकर पलने लगा.

میری ماں

شری گورکی

ایک روز سنیچر کے دن بہت سویرے میں پیتروونا کے سبزی کے کھیت میں بلبل پکڑنے کے لئے جا گھسا۔ وہاں میں بہت دیر تک رہا، کیونکہ وے اِتنی تیز تھیں کہ میرے جال میں پھنستی ہی نہیں تھیں۔ اُن کی خوبصورتی نے مجھے بری طرح سے لبھا لیا تھا۔ چاندی سے چمکتے جمے ہوئے برف پر وہ پھدکتی پھرتیں، اور برف سے ڈھکی ہوئی جھاڑیوں کی ڈالوں پر اُڑ کر جا بیٹھتی تھیں اور برف کا دودھیا برادہ سا چاروں طرف جھڑ اُٹھتا تھا۔ یہ سب مجھے اِتنا لبھاؤنا لگ رہا تھا کہ میں اپنی ناکامیابی کی پریشانی بھول گیا۔ یوں بھی میں شکار کے فن میں اُستاد نہیں تھا، کیونکہ دراصل اپنا شکار پانے سے زیادہ مجھے اُس کے پیچھے لگے پھرنے میں مزہ آتا تھا اور سب سے زیادہ مزہ چڑیوں کے طور طریقے جاننے اور اُن کے بارے میں سوچنے سمجھنے میں ملتا تھا۔ برف سے ڈھکے ہوئے ایک کھیت کے کنارے بیٹھے بیٹھے، اُس برفیلے دن کے گہرے سناٹے میں، چڑیوں کی چہچہاہٹ سننے میں میں مست تھا کہ کسی گاڑی کی گھنٹیوں کی ٹنٹناہٹ مجھے دور پر ہلکی سی سنائی دی، کسی پپیہے کے دلسوز گیت کی طرح۔

برف پر بیٹھا بیٹھا میں اکڑ سا گیا تھا اور مجھے لگا کہ میرے کان برف کے مارے جم سے گئے ہیں۔ اِس لئے جال اور پنجڑوں کو بٹور کر میں دیوار پر چڑھ باغیچے میں کود پڑا اور گھر آپہونچا۔❀

سڑک کی طرف کا پھاٹک کھلا پڑا تھا اور ایک بہت بڑا، لمبا چوڑا آدمی موج سے سیٹی بجاتا، ایک بڑی سی بند گاڑی میں جتے ہوئے پسینے سے تربتر تین گھوڑوں کی راس پکڑ کر احاطے سے باہر لئے جا رہا تھا۔ میرا دل اُچھلنے لگا۔

"کسے لیکر آئے تھے تم ؟"

اُس نے میری طرف مڑ کر اپنی بانہوں کے نیچے سے مجھے دیکھا اور کوچوان کی گدی پر چڑھکر جواب دیا—"پادری صاحب کو۔"

❀بچپن میں ہی والد کے اِنتقال ہوجانے کے بعد گورکی اپنی والدہ کے ساتھ نانا نانی کے پاس رہنے لگا تھا۔ اُس کے نانا رنگریز تھے اور بڑے اچھے مزاج کے تھے۔ گورکی کی ماں کچھ دن ہی وہاں رہ کر کہیں باہر چلی گئیں اور گورکی اپنی پیاری نانی کے سایہ میں رہ کر پلنے لگا۔

के तौर पर इंगलैन्ड में जो ऐडवर्ड छटे के नाम पर हुकूमत करता था उसने हुक्म दे दिया कि तमाम अंग्रेज़ी कौम प्रोटेस्टेंट मज़हब को माने और सारा इंगलिस्तान प्रोटेस्टेंट हो गया. इसके बाद मलका मेरी तख्त पर बैठी और गोया किसी ने जादू कर दिया. फ़ौरन तमाम इंगलिस्तान के लोग फिर से रोमन कैथोलिक हो गये. मलका मरी और पहिया फिर घूम गया. सारा इंगलिस्तान अब ऐंगलीकन मज़हब का मानने वाला हो गया. आजकल हम इस बात के सुनने के बहुत आदी हो गये हैं कि राज्य या बादशाह रिआया के मज़हब में कोई दख़ल नहीं देता. लेकिन हिटलर और उसके वारिस आजकल भी दुनिया को इस तरह की आज़ादी देने को तैयार नहीं हैं. सोलहवीं और सत्तरहवीं सदी में दुनिया के हर मुल्क के अन्दर राज को इससे गहरा ताल्लुक़ होता था कि रिआया किस मज़हब को मानती है. लेकिन हिन्दुस्तान में मुग़ल बादशाहों ने अपनी रिआया के मज़हबी विश्वास में दख़ल नहीं दिया और इस मामले में रिआया को आज़ाद छोड़ दिया था और इस बात में मुग़ल बादशाह अपने ज़माने के लिहाज़ से अपनी एक अलग मिसाल थे. सोलहवीं सदी ईसवी में एक दूसरे के बाद इंगलैन्ड के कई बादशाहों ने ऐक्ट्स आफ़ सुपरीमेसी और एक्ट्स आफ़ यूनिफ़ारमिटी नाम के कानून पास करके ज़बरदस्ती यह हुक्म दे दिया कि इंगलैन्ड के लाखों रोमन कैथोलिक अपने मज़हब को छोड़कर अपने गिरजों में बादशाह के मज़हब यानी प्रोटेस्टेंट मज़हब की लिखी हुई दुआएँ भी पढ़ा करें और हर मज़हबी बात में सब से बड़े पुरोहित पोप के बजाय प्रोटेस्टेन्ट बादशाही हुक्म मानें. इस शाही फ़रमान के न मानने पर हज़ारों रोमन कैथोलिक पादरियों को कड़ी सज़ाएँ दी गईं. इस तरह सन 1562 ईसवी में इंगलैंड में राज की तरफ़ से उन्तालीस मज़हबी उसूलों की एक फ़ेहरिस्त क़ानून की शकल में पास कर दी गई और उनमें से हर उसूल का मानना मुल्क के हर एक आदमी का क़ानूनी फ़र्ज़ बना दिया गया. यह बात भी याद रखनी चाहिये कि उस वक्त तक इंगलैंड के मुख़्तलिफ़ ज़िलों में पचास फ़ीसदी से लेकर नब्बे फ़ीसदी तक आबादी रोमन कैथोलिक थी. इन सब को ज़बरदस्ती अपना मज़हब छोड़कर उस वक्त के बादशाह का मज़हब मानना पड़ा. मुग़ल बादशाहों ने कभी इस तरह के कोई क़ानून जारी नहीं किये. और अपनी रियाया की बहुत बड़ी तादाद को, जो ग़ैर मुसलिम थी, मज़हब के मामले में पूरी तरह आज़ाद रखा. मुसलमानों के लिये भी किसी मुग़ल बादशाह ने या तो इसलाम छोड़कर दूसरा मज़हब अख़्तियार करने वालों को कभी कोई सज़ा दे दी या ज़्यादा से ज़्यादा यह हुक्म दे दिया कि आम रहन सहन में मुसलमान एक ख़ास ऊपरी तरीक़े की पाबन्दी करें, मसलन यह कि लोग शराब न पियें वग़ैरा.

کے طور پر انگلینڈ میں جو ایڈورڈ چھٹے کے نام پر حکومت کرتا تھا اُس نے حکم دے دیا کہ تمام انگریزی قوم پروٹسٹینٹ مذہب کو مانے اور سارا انگلستان پروٹسٹینٹ ہو گیا ۔ اِس کے بعد ملکہ میری تخت پر بیٹھی اور گویا کسی نے جادو کر دیا ۔ فوراً تمام انگلستان کے لوگ پھر سے رومن کیتھولک ہو گئے ۔ ملکہ مری اور پہیا پھر گھوم گیا ۔ سارا انگلستان اب اینگلیکن مذہب کا ماننے والا ہو گیا ۔ آجکل ہم اِس بات کے سننے کے بہت عادی ہو گئے ہیں کہ راج یا بادشاہ رعایا کے مذہب میں کوئی دخل نہیں دیتا ۔ لیکن ہٹلر اور اُس کے وارث آجکل بھی دنیا کو اِس طرح کی آزادی دینے کو تیار نہیں ہیں ۔ سولھویں اور سترھویں صدی میں دنیا کے ہر ملک کے اندر راج کو اِس سے گہرا تعلق ہوتا تھا کہ رعایا کس مذہب کو مانتی ہے ۔ لیکن ہندستان میں مغل بادشاہوں نے اپنی رعایا کے مذہبی وشواس میں دخل نہیں دیا اور اس معاملے میں رعایا کو آزاد چھوڑ دیا تھا اور اِس بات میں مغل بادشاہ اپنے زمانے کے لحاظ سے اپنی ایک الگ مثال تھے ۔ سولھویں صدی عیسوی میں ایک دوسرے کے بعد انگلینڈ کے کئی بادشاہوں نے ایکٹس آف سوپریمیسی اور ایکٹس آف یونیفارمٹی نام کے قانون پاس کر کے زبردستی یہ حکم دے دیا کہ انگلینڈ کے لاکھوں رومن کیتھولک اپنے مذہب کو چھوڑ کر اپنے گرجوں میں بادشاہ کے مذہب یعنی پروٹیسٹینٹ مذہب کی لکھی ہوئی دعائیں ہی پڑھا کریں اور ہر مذہبی بات میں سب سے بڑے پروہت پوپ کے بجائے پروٹیسٹینٹ بادشاہی حکم مانیں ۔ اِس شاہی فرمان کے نہ ماننے پر ہزاروں رومن کیتھولک پادریوں کو کڑی سزائیں دے گئیں ۔ اِس طرح سن 1562 عیسوی میں انگلینڈ میں راج کی طرف سے اُنتالیس مذہبی اصولوں کی ایک فہرست قانون کی شکل میں پاس کر دی گئی اور اُن میں سے ہر اُصول کا ماننا ملک کے ہر ایک آدمی کا قانونی فرض بنا دیا گیا ۔ یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ اُس وقت تک انگلینڈ کے مختلف ضلعوں میں پچاس فیصدی سے لیکر نبّے فیصدی تک آبادی رومن کیتھولک تھی ۔ اِن سب کو زبردستی اپنا مذہب چھوڑ کر اُس وقت کے بادشاہ کا مذہب ماننا پڑا ۔ مغل بادشاہوں نے کبھی اِس طرح کے کوئی قانون جاری نہیں کئے ۔ اور اپنی رعایا کی بہت بڑی تعداد کو، جو غیر مسلم تھی، مذہب کے معاملے میں پوری طرح آزاد رکھا ۔ مسلمانوں کے لئے بھی کسی مغل بادشاہ نے یا تو اِسلام چھوڑ کر دوسرا مذہب اختیار کرنے والوں کو کبھی کوئی سزا دے دی یا زیادہ سے زیادہ یہ حکم دے دیا کہ عام رہن سہن میں مسلمان ایک خاص اوپری طریقے کی پابندی کریں، مثلاً یہ کہ لوگ شراب نہ پیئیں، وغیرہ ۔

को मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस वक्त वह ख़ुद दुनिया भर में सबसे बड़ा हाकिम था. अपने को ख़लीफ़ा का नाइब मानने से कुछ दिनों तक यहाँ के बादशाहों का काम जरूर चल गया लेकिन उससे इस बात का कोई क़ायदा न बन पाया कि एक बादशाह के बाद तख्त का हक़दार कौन और कैसे हो. इस बारे में न कोई क़ानून था और न पुराने बादशाहों के अमल से कोई मदद मिल सकती थी. क़ुदरती नतीजा यह था कि क़रीब क़रीब बादशाहों के मरने के वक्त तख्त के लिये खासी गरमा गरमी और भाग दौड़ दिखाई देती है. जिस वक्त बाबर मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ था उसका वज़ीर आज़म इस फ़िक्र और साज़िश में लगा हुआ था कि हुमायूँ को किस तरह तख्त से अलग किया जावे. हुमायूँ की मौत इतनी अचानक हुई और हिन्दुस्तान में मुग़लों की हालत उस वक्त इतनी नाज़ुक थी कि उस वक्त तख्त के लिये ज्यादा झगड़ा न हो पाया. अकबर की मौत के बाद जहाँगीर तख्त पर बैठा लेकिन जहाँगीर के सब से बड़े बेटे ख़ुसरो ने अपने बाप के उस हक़ के ख़िलाफ़ हाथ पैर मारे. जहाँगीर की हुकूमत के आखिरी दिनों में तख्त के लिये तरह तरह की भद्दी साज़िशें हुईं. जहाँगीर के मरने के वक्त शाहजहाँ दकन में था इसलिये शाहजहाँ के लिये तख्त को तैयार रखने की ग़रज़ से बदक़िस्मत बुलाक़ी को चुना गया. शाहजहाँ के पहुँचते ही बुलाक़ी मार डाला गया और तख्त के दूसरे दावेदारों के ख़ून में से अपना रास्ता बनाकर शाहजहाँ बाप के तख्त पर बैठा. औरंगज़ेब ने शाहजहाँ से बदला चुकाया. उसने शाहजहाँ को क़ैद करके शाहजहाँ की ज़िन्दगी में शाहजहाँ के नाम पर नहीं बल्कि ख़ुद अपने नाम पर बादशाहत करनी शुरू की. इस सबसे ज़ाहिर होता है कि इस ज़माने के बारे में मुसलमानों में जो आम ख्याल था इसी से मिलता जुलता मुग़लों का अमल था. यह बात नहीं थी कि एक बादशाह के बाद दूसरे को गद्दी मिलने का कोई माना हुआ क़ानून या रिवाज रहा हो और किसी ने ज़बरदस्ती बग़ावत करके उसे तोड़ा हो, बल्कि जो कुछ होता था वह एक मामूली चीज़ थी और इसलिये होता था कि इस मामले में कोई ख़ास क़ानून पहले से नहीं था.

यह भी याद रखना ज़रूरी है कि मुग़ल बादशाहों ने रियाया को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने की बहुत बड़ी आज़ादी दे रखी थी. उसमें बादशाह कोई दख़ल न देता था. यह वह ज़माना था जब यूरप में वे बादशाह भी जो बिल्कुल ख़ुदमुख्तार थे और वे भी जिनके यहाँ पार्लीमेंट बनी हुई थी, दोनों अपनी अपनी रियाया को साफ़-साफ़ यह हुक्म देते थे कि रियाया इस ख़ास क़िस्म के मज़हबी अक़ीदों (विश्वासों) को माने और उसके ख़िलाफ़ किसी दूसरे अक़ीदों को न माने. मिसाल

کو ماننے سے انکار کر دیا کیونکہ اُس وقت وہ خود دنیا بھر میں سب سے بڑا حاکم تھا۔ اپنے کو خلیفہ کا نائب ماننے سے کچھ دنوں تک یہاں کے بادشاہوں کا کام ضرور چل گیا لیکن اُس سے اِس بات کا کوئی قاعدہ نہ بن پایا کہ ایک بادشاہ کے بعد تخت کا حقدار کون اور کیسے ہو۔ اِس بارے میں نہ کوئی قانون تھا اور نہ پرانے بادشاہوں کے عمل سے کوئی مدد مل سکتی تھی۔ قدرتی نتیجہ یہ تھا کہ قریب قریب بادشاہوں کے مرنے کے وقت تخت کے لئے خاصی گرما گرمی اور بھاگ دوڑ دکھائی دیتی ہے۔ جس وقت بابر موت کے بستر پر پڑا ہوا تھا اُس کا وزیراعظم اِس فکر اور سازش میں لگا ہوا تھا کہ ہمایوں کو کسی طرح تخت سے الگ کیا جاوے۔ ہمایوں کی موت اتنی اچانک ہوئی اور ہندستان میں مغلوں کی حالت اُس وقت اتنی نازک تھی کہ اُس وقت تخت کے لئے زیادہ جھگڑا نہ ہو پایا۔ اکبر کی موت کے بعد جہانگیر تخت پر بیٹھا لیکن جہانگیر کے سب سے بڑے بیٹے خسرو نے اپنے باپ کے اُس حق کے خلاف ہاتھ پیر مارے۔ جہانگیر کی حکومت کے آخری دنوں میں تخت کے لئے طرح طرح کی بھدی سازشیں ہوئیں۔ جہانگیر کے مرنے کے وقت شاہ جہاں دکن میں تھا اِس لئے شاہ جہاں کے لئے تخت کو تیار رکھنے کی غرض سے بدقسمت بلاقی کو چنا گیا۔ شاہجہاں کے پہنچتے ہی بلاقی مار ڈالا گیا اور تخت کے دوسرے دعویداروں کے خون میں سے اپنا راستہ بناکر شاہ جہاں باپ کے تخت پر بیٹھا۔ اورنگزیب نے شاہجہاں سے بدلہ چکایا۔ اُس نے شاہجہاں کو قید کر کے شاہ جہاں کی زندگی میں شاہ جہاں کے نام پر نہیں بلکہ خود اپنے نام پر بادشاہت کرنی شروع کی۔ اِس سب سے ظاہر ہوتا ہے کہ اِس زمانے کے بارے میں مسلمانوں میں جو عام خیال تھا اِسی سے ملتا جلتا مغلوں کا عمل تھا۔ یہ بات نہیں تھی کہ ایک بادشاہ کے بعد دوسرے کو گدی ملنے کا کوئی مانا ہوا قانون یا رواج رہا ہو اور کسی نے زبردستی بغاوت کر کے اُسے توڑا ہو، بلکہ جو کچھ ہوتا تھا وہ ایک معمولی چیز تھی اور اِس لئے ہوتا تھا کہ اِس معاملے میں کوئی خاص قانون پہلے سے نہیں تھا۔

یہ بھی یاد رکھنا ضروری ہے کہ مغل بادشاہوں نے رعایا کو اپنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کرنے کی بہت بڑی آزادی دے رکھی تھی۔ اُس میں بادشاہ کوئی دخل نہ دیتا تھا۔ یہ وہ زمانہ تھا جب یورپ میں وے بادشاہ بھی جو بالکل خود مختار تھے اور وے بھی جن کے یہاں پارلیمینٹ بنی ہوئی تھی، دونوں اپنی اپنی رعایا کو صاف صاف یہ حکم دیتے تھے کہ رعایا اِس خاص قسم کے مذہبی عقیدوں (وشواسوں) کو مانے اور اُس کے خلاف کسی دوسرے عقیدوں کو نہ مانے۔ مثال

हैसियत से काम कर रहा हूँ, लेकिन इसलाम उससे क्या चाहता है इसका वह ख़ुद फैसला करता था. मुग़ल राज में एक ऐसी शख्सी हुकूमत थी जिसमें उसूल के तौर पर भी और अमली तौर पर भी लोगों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने का एक बहुत बड़ा मैदान छूटा हुआ था.

लेकिन इस बारे में एक बात याद रखनी चाहिये. कई बातों में मुग़ल बादशाह के अख्तयार बँधे हुए थे. फिर भी अगर कोई बादशाह उन हदों से बढ़ जाने का फैसला कर लेता था तो राज के तौर तरीक़ों में पार्लमिन्ट या असेम्बली या कौंसिल जैसी कोई ऐसी चीज़ मौजूद नहीं थी जो बादशाह को ऐसा करने से रोक सके. बादशाह की किसी पालिसी के साथ अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने का रियाया के पास सिर्फ एक तरीक़ा था और वह था बग़ावत करने का तरीक़ा. वह तरीक़ा उन दिनों हमेशा ठीक तरीक़ा माना जाता था. मसलन उस ज़माने में इंगलैंड के बादशाह के ख़िलाफ़ इस तरह की बग़ावत एक मज़हबी गुनाह समझा जाता था. हिन्दुस्तान में यह बात नहीं थी. इसके अलावा शुरू शुरू ज़माने के मुसलिम क़ानून में बादशाह के बारे में कोई ऐसा क़ायदा नहीं था कि किसी बादशाह के बाद गद्दी उसके लड़के ही को मिले. शुरू के मुसलमान बादशाहों ने अपने अमल में भी इस तरह का कोई क़ायदा नहीं माना. यह सही है कि शीओं ने इस तरह का दावा किया था और इसी वजह से शीओं और सुन्नियों में फ़र्क़ पड़ गया. मिस्र में ख़लीफ़ा ही मुसलमानों का हाकिम होता था. ख़लीफ़ा को मुसलमान अपने में से चुनते थे. शीओं को छोड़कर क़ुरान या हदीस में किसी ने भी बेटे को बाप की गद्दी पर बैठने के हक़ या उसूल को नहीं माना. यहाँ तक कि बादशाहत के मामले में मुसलमानों में कोई ख़ास क़ानून एक के बाद दूसरे के गद्दी पर बैठने का है ही नहीं. बादशाहत के लिये किसी इनसान का ज़ाती हक़ इसलाम नहीं मानता. इसलाम के मुताबिक़ बादशाहत किसी की ज़ाती मिल्कियत नहीं होती और न किसी की बपौती हो सकती है. क़ुदरती तौर पर तख्त का कौन हक़दार है और कौन नहीं, इस पर न किसी क़ानून की ज़रूरत थी और न कोई क़ानून माना जा सकता था. हिन्दुस्तान में शुरू के मुसलमान बादशाहों ने इस मुश्किल काम को इस तरह हल किया कि उन्होंने कम से कम कहने के लिये अपने को ख़ुदमुख़्तार बादशाह नहीं माना. वे कहते थे कि हम अपने किसी ज़ाती हक़ से बादशाहत नहीं कर रहे हैं बल्कि उस दूसरे बैठे हुए मुसलिम बादशाह के मुक़र्रर किये हुए अफ़सर या नाइब की हैसियत से काम कर रहे हैं जो अपने को ख़लीफ़ा कहता है. बाबर और उसके बाद के बादशाहों ने इसलिये इस पुरानी फ़र्ज़ी रस्म

حیثیت سے کام کر رہا ہوں، لیکن اسلام اُس سے کیا چاہتا ہے اِس کا وہ خود فیصلہ کرتا تھا۔ مغل راج میں ایک ایسی شخصی حکومت تھی جس میں اُصول کے طور پر بھی اور عملی طور پر بھی لوگوں کو اپنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کرنے کا ایک بہت بڑا میدان چھوٹا ہوا تھا۔

لیکن اِس بارے میں ایک بات یاد رکھنی چاہئے۔ کئی باتوں میں مغل بادشاہ کے اختیار بندھے ہوئے تھے۔ پھر بھی اگر کوئی بادشاہ اُن حدوں سے بڑھ جانے کا فیصلہ کر لیتا تھا تو راج کے طور طریقوں میں پارلیمنٹ یا اسمبلی یا کونسل جیسی کوئی ایسی چیز موجود نہیں تھی جو بادشاہ کو ایسا کرنے سے روک سکے۔ بادشاہ کی کسی پالیسی کے ساتھ اپنی ناراضگی ظاہر کرنے کا رعایا کے پاس صرف ایک طریقہ تھا اور وہ تھا بغاوت کرنے کا طریقہ۔ وہ طریقہ اُن دنوں ہمیشہ ٹھیک طریقہ مانا جاتا تھا۔ مثلاً اُس زمانے میں انگلینڈ کے بادشاہ کے خلاف اِس طرح کی بغاوت ایک مذہبی گناہ سمجھا جاتا تھا۔ ہندستان میں یہ بات نہیں تھی۔ اِس کے علاوہ شروع شروع زمانے کے مسلم قانون میں بادشاہ کے بارے میں کوئی ایسا قاعدہ نہیں تھا کہ کسی بادشاہ کے بعد گدی اُس کے لڑکے ہی کو ملے۔ شروع کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے عمل میں بھی اِس طرح کا کوئی قاعدہ نہیں مانا۔ یہ صحیح ہے کہ شیعوں نے اِس طرح کا دعویٰ کیا تھا اور اِسی وجہ سے شیعوں اور سنیوں میں فرق پڑ گیا۔ مصر میں خلیفہ ہی مسلمانوں کا حاکم ہوتا تھا۔ خلیفہ کو مسلمان اپنے میں سے چنتے تھے۔ شیعوں کو چھوڑ کر قرآن یا حدیث میں کسی نے بھی بیٹے کو باپ کی گدی پر بیٹھنے کے حق یا اُصول کو نہیں مانا۔ یہاں تک کہ بادشاہت کے معاملے میں مسلمانوں میں کوئی خاص قانون ایک کے بعد دوسرے کے گدی پر بیٹھنے کا ہے ہی نہیں۔ بادشاہت کے لئے کسی انسان کا ذاتی حق اِسلام نہیں مانتا۔ اسلام کے مطابق بادشاہت کسی کی ذاتی ملکیت نہیں ہوتی اور نہ کسی کی باپوتی ہو سکتی ہے۔ قدرتی طور پر تخت کا کون حقدار ہے اور کون نہیں، اِس پر نہ کسی قانون کی ضرورت تھی اور نہ کوئی قانون مانا جا سکتا تھا۔ ہندستان میں شروع کے مسلمان بادشاہوں نے اِس مشکل کام کو اِس طرح حل کیا کہ اُنھوں نے کم سے کم کہنے کے لئے اپنے کو خودمختار بادشاہ نہیں مانا۔ وے کہتے تھے کہ ہم اپنے کسی ذاتی حق سے بادشاہت نہیں کر رہے ہیں بلکہ اُس دوسرے بیٹھے ہوئے مسلم بادشاہ کے مقرر کئے ہوئے افسر یا نائب کی حیثیت سے کام کر رہے ہیں جو اپنے کو خلیفہ کہتا ہے۔ بابر اور اُس کے بعد کے بادشاہوں نے اِس لئے اِس پرانی فرضی رسم

बातों में मुग़ल बादशाह इसलाम के एजेन्टों की तरह भी काम करते थे. यहाँ एक उसूल की बात है. मुग़ल बादशाह और सबसे ज़्यादा औरंगज़ेब, इसलाम के एजेंट से ज़्यादा और कुछ न थे. अकबर इस बात के कहने में फ़ख़ करता था कि मेरी फ़तहों से इसलाम के उसूल दूर दूर तक फैलते हैं और इसलाम के पैग़म्बर का हुक्म उन मुल्कों तक पहुँचता है जहाँ पहले कभी पैग़म्बर का नाम भी नहीं सुनाया गया था.

जहाँगीर और शाहजहाँ दोनों अपने को सच्चे दीन के रक्षक मानते थे और दीन के जायज़ हक़ का ख़्याल रखते थे. औरंगज़ेब की सबसे बड़ी ख़ाहिश यह थी कि न सिर्फ़ मुसलमानों बल्कि कम से कम बाहर के रहन सहन में ग़ैर मुसलमानों में भी मुसलिम रहन सहन को बढ़ाया जाय. साथ ही औरंगज़ेब को भी इस मामले में ईसाइयों के साथ यह रियायत करनी पड़ी थी. उन्हें शराब पीने की इजाज़त दी गई थी जबकि बाक़ी तमाम रियाया के लिये शराब पीना क़ानूनन मना था. लेकिन इसलामी हुकूमत के वे उसूल जो ख़ासकर क़ुरान पर नहीं बल्कि बाद के मुसलिम बादशाहों के रिवाजों और ईरान के ग़ैर मुसलिम बादशाहों की रिवायतों पर ढाल लिये गये थे आसानी से हिन्दुस्तान में न चल सकते थे. एक सवाल यह था कि हिन्दुस्तान दारुल-इसलाम है, या दारुलहरब. दारुलइसलाम के माने हैं मुसलमानों का घर और दारुलहरब के माने हैं मुसलमानों के हमले की जगह. इस तरह के सीधे सादे मामले में भी औरंगज़ेब जैसे बादशाह के लिये भी उन मुसलिम रिवाजों को जो हिन्दुस्तान के बाहर चलते थे हिन्दुस्तान में जारी करना नामुमकिन था. इससे पहले के हिन्दुस्तान के मुसलिम बादशाहों ने कभी-कभी मुसलिम शरअ या मुसलिम रिवाज के ख़िलाफ़ अमल करने की भी हिम्मत न की थी. मालुम होता है कि इसलाम के हिन्दुस्तान आने के शुरू के दिनों में ही यह बात समझ ली गई थी कि तमाम हिन्दुस्तान को इसलाम का अपनाना नामुमकिन है. यह मामला यहीं पर रह गया और इसकी वजह से हिन्दुस्तान के अन्दर इसलामी क़ानून और इसलामी रिवाज में काफ़ी तब्दीलियाँ करनी पड़ीं. इसका क़ुदरती नतीजा यह हुआ कि यह उसूल बिल्कुल ख़त्म हो गया कि हिन्दुस्तान में यहाँ के मुसलमान बादशाह मज़हबे इसलाम के महज़ एजेन्ट बनकर हुकूमत करें.

अब हम फिर यह देखना चाहते हैं कि मुग़लों की हुकूमत का ढंग क्या था. मुग़ल हुकूमत यानी शख़्सी हुकूमत यानी एक आदमी की हुकूमत तो थी ही लेकिन वह एक हद के अन्दर ही शख़्सी हुकूमत थी. बादशाह आम तौर पर यह दावा करता था कि मैं इसलाम के एक एजेन्ट की

باتوں میں مغل بادشاہ اِسلام کے ایجنٹوں کی طرح بھی کام کرتے تھے. یہاں ایک اُصول کی بات ھے. مغل بادشاہ اور سب سے زیادہ اورنگزیب اسلام کے ایجنٹ سے زیادہ اور کچھ نہ تھے. اکبر اِس بات کے کہنے میں فخر کرتا تھا کہ میری فتحوں سے اِسلام کے اُصول دور دور تک پھیلتے ھیں اور اِسلام کے پیغمبر کا حکم اُن ملکوں تک پہنچتا ھے جہاں پہلے کبھی پیغمبر کا نام بھی نہیں سنایا گیا تھا .

جہانگیر اور شاہجہاں دونوں اپنے کو سچے دین کے رکشک مانتے تھے اور دین کے جائز حق کا خیال رکھتے تھے . اورنگزیب کی سب سے بڑی خواھش یہ تھی کہ نہ صرف مسلمانوں بلکہ کم سے کم باھر کے رھن سھن میں غیر مسلمانوں میں بھی مسلم رھن سھن کو بڑھایا جائے . ساتھ ھی اورنگزیب کو بھی اِس معاملے میں عیسائیوں کے ساتھ یہ رعایت کرنی پڑی تھی . اُنھیں شراب پینے کی اجازت دے گئی تھی جب کہ باقی تمام رعایا کے لئے شراب پینا قانوناً منع تھا . لیکن اِسلامی حکومت کے وے اُصول جو خاص کر قرآن پر نہیں بلکہ بعد کے مسلم بادشاھوں کے رواجوں اور ایران کے غیر مسلم بادشاھوں کی رعایتوں پر ڈھال لئے گئے تھے آسانی سے ھندستان میں نہ چل سکتے تھے . ایک سوال یہ تھا کہ ھندستان دارالسلام ھے، یا دارالحرب . دارالسلام کے معنے ھیں مسلمانوں کا گھر اور دارالحرب کے معنے ھیں مسلمانوں کے حملے کی جگہہ . اِس طرح کے سیدھے سادے معاملے میں بھی اورنگزیب جیسے بادشاہ کے لئے بھی اُن مسلم رواجوں کو جو ھندستان کے باھر چلتے تھے ھندستان میں جاری کرنا ناممکن تھا . اُس سے پہلے کے ھندستان کے مسلم بادشاھوں نے کبھی کبھی مسلم شرع یا مسلم رواج کے خلاف عمل کرنے کی بھی ھمت نہ کی تھی . معلوم ھوتا ھے کہ اِسلام کے ھندستان آنے کے شروع کے دنوں میں ھی یہ بات سمجھ لی گئی تھی کہ تمام ھندستان کو اِسلام کا اپنانا ناممکن ھے . یہ معاملہ یہیں پر رہ گیا اور اِس کی وجہ سے ھندستان کے اندر اِسلامی قانون اور اِسلامی رواج میں کافی تبدیلیاں کرنی پڑیں . اِس کا قدرتی نتیجہ یہ ھوا کہ یہ اُصول بالکل ختم ھو گیا کہ ھندستان میں یہاں کے مسلمان بادشاہ مذھب اِسلام کے محض ایجنٹ بن کر حکومت کریں .

اب ھم پھر یہ دیکھنا چاھتے ھیں کہ مغلوں کی حکومت کا ڈھنگ کیا تھا . مغل حکومت یعنی شخصی حکومت یعنی ایک آدمی کی حکومت تو تھی ھی لیکن وہ ایک حد کے اندر ھی شخصی حکومت تھی . بادشاہ عام طور پر یہ دعویٰ کرتا تھا کہ میں اِسلام کے ایک ایجنٹ کی

लिया था. सद्रुलसद्र राज का ख़ास आलिम होता था. शायद मुल्क भर में वह शरअ का सब से ज़्यादा जानने वाला समझा जाता था और मुमकिन है कि शरअ पर सब से ज़्यादा वाक़िफ़ भी वही हो. सब मुग़ल बादशाहों ने शरअ का मतलब ऐलान करने का पूरा हक़ सद्र को दे रखा था. सिर्फ़ अकबर ने यह हक़ अपने हाथ में लिया था कि जब कभी उलमाओं की राय न मिलती थी तो बादशाह आदिल की हैसियत से .ख़ुद उनमें से जिस राय को ठीक समझे उसी पर अमल करे. लेकिन इस ऐलान पर भी अकबर उस वक़्त तक अमल न कर सका जब तक उसने अपने पुराने सद्रुलसद्र को निकालकर उसकी जगह दूसरा सद्र मुक़र्रर न कर लिया. अब्दुल नबी को निकालकर उसकी जगह सद्रजहाँ को मुक़र्रर किया गया. उलमाओं के फ़तवे का ऐलान भी तब तक नहीं हो सका जब तक कि सद्रुलसद्र ने ख़ासकर दस्तख़त नहीं कर दिया. यह एक अजीब सूरत थी. सद्रुलसद्र जब तक सद्रुलसद्र रहता था तब तक सिर्फ़ उसे ही यह ऐलान करने का हक़ था कि शरअ का हुक्म क्या है. लेकिन बादशाह सद्र को मुक़र्रर और बरख़ास्त कर सकता था. वह बादशाह के मातेहत न था पर बादशाह उसे निकाल सकता था. औरंगज़ेब के तख़्त पर बैठने के वक़्त इसकी बहुत अच्छी मिसाल देखने को मिली. सद्रुलसद्र ने शाहजहाँ के ज़िन्दा रहते हुए औरंगज़ेब को बादशाह क़रार देने से इनकार कर दिया. औरंगज़ेब को उसे बरख़ास्त करके दूसरा सद्र मुक़र्रर करना पड़ा. इस दूसरे सद्र ने पहले ही से यह राय ज़ाहिर कर दी थी कि चूँकि शाहजहाँ क़ैद में होने की वजह से काम करने के क़ाबिल नहीं इसलिये उसके ज़िन्दा रहते हुए भी औरंगज़ेब के नाम का .ख़ुतबा पढ़ा जा सकता है. इस तरह मुग़ल बादशाहों के लिये अपने किसी काम को ठीक साबित करने के लिये यह लाज़िमी था कि वह कोई न कोई ऐसा आलिम ढूँढ लें जो सद्रुलसद्र बनकर बादशाह के काम को जायज़ क़रार दे सके. औरंगज़ेब के ज़माने में एक और तरह से यह चमक गया कि शरअ के मामले में बादशाह किस तरह दूसरे के मातेहत था. कुछ अफ़सर इस काम के लिये मुक़र्रर किये गये थे जो रियाया को इजाज़त देते थे कि वे अगर बादशाह के ख़िलाफ़ कोई नालिश करना चाहें तो कर सकें. यह अफ़सर वकलाए शरअ कहलाते थे. यह मुक़दमे बादशाह के ख़िलाफ़ उस तरह के ज़ाती मामलों में दायर किये जा सकते थे जिस तरह कि अंग्रेज़ी क़ानून में पेटन्ट्स-आफ़-राइट के मातेहत दायर किया जाता था. औरंगज़ेब की हुकूमत की पालिसी से इनका कोई ताल्लुक़ नहीं था और न कोई उसके मुताबिक़ मुल्क के राज काज में दख़ल दे सकता था.

मुग़ल सल्तनत मज़हबी सल्तनत तो नहीं थी, लेकिन कई

ما تھا۔ صدر الصدر راج کا خاص عالم ہوتا تھا۔ شاید ملک بھر میں وہ شرع کا سب کے زیادہ جاننے والا سمجھا جاتا تھا اور ممکن ھے کہ شرع پر سب سے زیادہ واقف بھی وھی ھو۔ سب مغل بادشاھوں نے شرع کا مطلب اعلان کرنے کا پورا حق صدر کو دے رکھا تھا ۔ صرف اکبر نے یہ حق اپنے ھاتھ میں لیا تھا کہ جب کبھی علماؤں کی رائے نہ ملتی تھی تو بادشاہ عادل کی حیثیت سے خود اُن میں سے جس رائے کو ٹھیک سمجھے اُسی پر عمل کرے ۔ لیکن اِس اعلان پر بھی اکبر اُس وقت تک عمل نہ کر سکا جب تک اُس نے اپنے پرانے صدر الصدر کو نکال کر اُس کی جگہہ دوسرا صدر مقرر نہ کر لیا۔ عبدالنبی کو نکال کر اُس کی جگہہ صدر جہاں کو مقرر کیا گیا ۔ علماؤں کے فتوے کا اعلان بھی تب تک نہیں ھو سکا جب تک کہ صدرالصدر نے خاص کر دستخط نہیں کر دیا ۔ یہ ایک عجیب صورت تھی ۔ صدرالصدر جب تک صدر الصدر رھتا تھا تب تک صرف اُسے ھی یہ اعلان کرنے کا حق تھا کہ شرع کا حکم کیا ھے ۔ لیکن بادشاہ صدر کو مقرر اور برخاست کر سکتا تھا ۔ وہ بادشاہ کے ماتحت نہ تھا پر بادشاہ اُسے نکال سکتا تھا ۔ اورنگزیب کے تخت پر بیٹھنے کے وقت اِس کی بہت اچھی مثال دیکھنے کو ملی ۔ صدر الصدر نے شاہجہاں کے زندہ رھتے ھوئے اورنگزیب کو بادشاہ قرار دینے سے انکار کر دیا ۔ اورنگزیب کو اُسے برخاست کر کے دوسرا صدر مقرر کرنا پڑا ۔ اِس دوسرے صدر نے پہلے ھی سے یہ رائے ظاھر کر دی تھی کہ چونکہ شاہجہاں قید میں ھونے کی وجہ سے کام کرنے کے قابل نہیں اِس لئے، اُس کے زندہ رھتے ھوئے بھی اورنگزیب کے نام کا خطبہ پڑھا جا سکتا ھے ۔ اِس طرح مغل بادشاھوں کے لئے اپنے کسی کام کو ٹھیک ثابت کرنے کے لئے یہ لازمی تھا کہ وہ کوئی نہ کوئی ایسا عالم ڈھونڈھ لیں جو صدرالصدر بن کر بادشاہ کے کام کو جائز قرار دے سکے ۔ اورنگزیب کے زمانے میں ایک اور طرح سے یہ چمک گیا کہ شرع کے معاملے میں بادشاہ کس طرح دوسرے کے ماتحت تھا ۔ کچھ افسر اِس کام کے لئے مقرر کئے گئے تھے جو رعایا کو اجازت دیتے تھے کہ وے اگر بادشاہ کے خلاف کوئی نالش کرنا چاھیں تو کر سکیں ۔ یہ افسر وکلا شرع کہلاتے تھے ۔ یہ مقدمے بادشاہ کے خلاف اُس طرح کے ذاتی معاملوں میں دائر کئے جاسکتے تھے جس طرح کہ انگریزی قانون میں پیٹینٹس آف رائٹ کے ماتحت دائر کیا جاتا تھا ۔ اورنگزیب کی حکومت کی پالسی سے اِن کا کوئی تعلق نہیں تھا اور نہ کوئی اُس کے مطابق ملک کے راج کاج میں دخل دے سکتا تھا ۔

مغل سلطنت مذھبی سلطنت تو نہیں تھی، لیکن کئی

जान बख़्श देने के बजाय उसे क़ाज़ी के पास हुक्म के लिए भेज दिया. औरंगज़ेब का ज़माना मुसलमानों के पूरे ज़ोर का ज़माना था और औरंगज़ेब ख़ुशी से मुसलमानों के फ़ैसले के आगे सर झुका देता था.

अब यह सवाल पैदा होता है कि मुग़ल राज मज़हबी राज था. मुग़ल राज से पहले के यानी शुरू ज़माने के मुसलिम बादशाहों का अमल चाहे कैसा भी रहा हो मुग़लों की हुकूमत इसलामी या मज़हबी नहीं कही जा सकती. मज़हबी हुकूमत का मतलब यह है कि हुकूमत यानी सरकार पुरोहितों, पादरियों या मुल्लाओं के मातेहत हो. इसलाम ने ईसाई चर्च की तरह कभी मुसलिम मुल्लाओं का इजतमा नहीं खड़ा किया. इसलाम में कभी भी कोई ख़ास पुरोहित यानी मज़हबी रस्में अदा करने कराने वाली कोई ख़ास जमाअत नहीं रही. मज़हबी तौर पर इसलाम में कभी भी कोई ख़ास छोटे बड़े पुरोहित या पादरी नहीं हुए. इसलिये मज़मून में मज़हबी हुकूमत मुसलिम राज में हो ही नहीं सकती थी जबकि किसी को किसी वक़्त भी शरअ का ऐसा मतलब बता देने का हक़ नहीं था जिसमें ग़ल्ती न हो सके. मुसलमानों में ख़लीफ़ा हुए हैं. कभी कभी एक साथ एक से ज़्यादा भी ख़लीफ़ा हुए हैं. लेकिन ख़लीफ़ा उन मानों में मुसलमानों का रूहानी हाकिम नहीं होता था जिन मानों में अभी तक पोप कैथॉलिक ईसाइयों का रूहानी हाकिम है. जिस तरह पोप को ईसाई धर्म के मामलों में इस तरह के हुक्म जारी करने का हक़ है जिनका मानना हर ईसाई का फ़र्ज़ है उस तरह ख़लीफ़ा को कभी आम मुसलमानों के लिये हुक्म जारी करने का हक़ हासिल नहीं हुआ. इसलाम अभी तक मज़हबी मामलों में सिर्फ़ एक ही चीज़ को सनद मानता है और वह है रसूल की हदीसों और सहाबा की ज़िन्दगी के वाक़यों की रोशनी में क़ुरान का हुक्म. उसमें सिर्फ़ एक तब्दीली मान ली गई थी. वह यह कि तमाम मुसलिम दुनिया मिलकर जिस चीज़ को जायज़ कह दे वह जायज़ है.

जबकि सब जगह इसलाम की सूरत यह थी तो हिन्दुस्तान में और ख़ासकर मुग़ल हिन्दुस्तान में तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी थी. इस मुल्क में हिन्दुस्तान की आबादी के एक बहुत बड़े हिस्से के साथ इसलाम को शरअ से कोई ताल्लुक़ नहीं था. जिस मुल्क में आबादी के इतने बड़े हिस्से को बड़े-बड़े मामलों में उनके अपने क़ानून के मातेहत छोड़ दिया गया था वहाँ इसलाम की कोई मज़हबी हुकूमत हो ही नहीं सकती थी. इस मामले में औरंगज़ेब ने भी कोई तब्दीली करने की कोशिश नहीं की.

लेकिन एक बात ऐसी थी कि जिस में मुग़ल राज ने एक मज़हबी आलिम के अख़्तियार को बहुत दर्जे तक मान

جان بخش دینے کے بجائے اُسے قاضی کے پاس حکم کے لئے بھیج دیا ۔ اورنگزیب کا زمانہ مسلمانوں کے پورے زور کا زمانہ تھا اور اورنگزیب خوشی سے مسلمانوں کے فیصلے کے آگے سر جھکا دیتا تھا ۔

اب یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ مغل راج مذہبی راج تھا۔ مغل راج سے پہلے کے یعنی شروع زمانے کے مسلم بادشاہوں کا عمل چاہے کیسا بھی رہا ہو مغلوں کی حکومت اِسلامی یا مذہبی نہیں کہی جا سکتی ۔ مذہبی حکومت کا مطلب یہ ہے کہ حکومت یعنی سرکار پروہتوں، پادریوں یا ملاؤں کے ماتحت ہو ۔ اِسلام نے عیسائی چرچ کی طرح کبھی مسلم ملاؤں کا اجتماع نہیں کھڑا کیا ۔ اِسلام میں کبھی بھی کوئی خاص پروہت یعنی مذہبی رسمیں ادا کرنے کرانے والی کوئی خاص جماعت نہیں رہی ۔ مذہبی طور پر اسلام میں کبھی بھی کوئی خاص چھوٹے بڑے پروہت یا پادری نہیں ہوئے ۔ اِس لئے مضمون میں مذہبی حکومت مسلم راج میں ہو ہی نہیں سکتی تھی جب کہ کسی کو کسی وقت بھی شرع کا ایک ایسا مطلب بتا دینے کا حق نہیں تھا جس میں غلطی نہ ہو سکے ۔ مسلمانوں میں خلیفہ ہوئے ہیں ۔ کبھی کبھی ایک ساتھ ایک سے زیادہ بھی خلیفہ ہوئے ہیں ۔ لیکن خلیفہ اُن معنوں میں مسلمانوں کا روحانی حاکم نہیں ہوتا تھا جن معنوں میں ابھی تک پوپ کیتھولک عیسائیوں کا روحانی حاکم ہے ۔ جس طرح پوپ کو عیسائی دھرم کے معاملوں میں اِس طرح کے حکم جاری کرنے کا حق ہے جن کا ماننا ہر عیسائی کا فرض ہے اُس طرح خلیفہ کو کبھی عام مسلمانوں کے لئے حکم جاری کرنے کا حق حاصل نہیں ہوا ۔ اسلام ابھی تک مذہبی معاملوں میں صرف ایک ہی چیز کو سند مانتا ہے اور وہ ہے رسول کی حدیثوں اور صحابہ کی زندگی کے واقعوں کی روشنی میں قرآن کا حکم ۔ اِس میں صرف ایک تبدیلی مان لی گئی تھی ۔ وہ یہ کہ تمام مسلم دنیا مل کر جس چیز کو جائز کہہ دے وہ جائز ہے ۔

جب کہ سب جگہہ اسلام کی صورت یہ تھی تو ہندستان میں اور خاص کر مغل ہندستان میں تو یہ اور بھی زیادہ ضروری تھی ۔ اِس ملک میں ہندستان کی آبادی کے ایک بہت بڑے حصے کے ساتھ اِسلام کو شرع سے کوئی تعلق نہیں تھا ۔ جس ملک میں آبادی کے اتنے بڑے حصے کو بڑے بڑے معاملوں میں اُن کے اپنے قانون کے ماتحت چھوڑ دیا گیا تھا وہاں اِسلام کی کوئی مذہبی حکومت ہو ہی نہیں سکتی تھی ۔ اِس معاملے میں اورنگزیب نے بھی کوئی تبدیلی کرنے کی کوشش نہیں کی ۔

لیکن ایک بات ایسی تھی کہ جس میں مغل راج نے ایک مذہبی عالم کے اختیار کو بہت درجے تک مان

किया जाता था कि जो मुसलमान मज़हबी जुर्म करेगा यानी अपने किसी मज़हबी फ़र्ज़ को पूरा नहीं करेगा उसपर ख़ास हालतों में शरअ के मुताबिक़ मुक़दमा नहीं चलाया जायगा. मानना पड़ता है कि मुग़ल बादशाहों ने इस मामले में लोगों को काफ़ी रियायत दे दी थी. बाज़ लोग समझते हैं कि इसकी पहल अकबर ने की थी लेकिन यह ग़लत है. अकबर से पहले अलाउद्दीन और मुहम्मद तुग़लक़ इसी तरह का आज़ाद ढंग अख़्तियार कर चुके थे. अकबर ने .ख़ुद अपने सुल्तान, आदिल या इमाम आदिल होने का जो फ़रमान उल्माओं को जमा करके उनसे जारी कराया था जिसके मुताबिक़ उल्माओं की एक दूसरे के ख़िलाफ़ दो रायों में किसी एक को ठीक ऐलान कर देने का अकबर को हक़ मिल गया था, जिसे योरप वाले ग़ल्ती से "इनफ़ालिएबिलिटि डिक्री" यानी 'बादशाह की मासूमियत का फ़रमान' कहते हैं, वह भी असल में मुसलिम शरअ को बदलने वाली चीज़ नहीं थी बल्कि एक बहुत बड़े दर्जे तक मुसलमानों को तसल्ली देने वाली चीज़ थी. अलाउद्दीन ने यह ऐलान कर दिया था कि "मैं शरअ का क़ानून नहीं जानता और इसलिये जो मेरा दिल कहता है वही करता हूँ" इसके ख़िलाफ़ अकबर का यही कहना था कि मैं जो करता हूँ शरअ के मुताबिक़ करता हूँ. सिर्फ़ शरअ के जानने वाले मुख़्तलिफ़ आलिमों की जो अलग अलग राय एक दूसरे के ख़िलाफ़ मौजूद हैं उनमें से मैं किसी एक राय को चुन लेता हूँ." इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ तक उसूल की बात है अकबर ने भी शरअ को बदलने का अख़्तियार अपने हाथ में नहीं लिया. यह दूसरी बात है कि अमल में उसने शरअ के कुछ हुक्मों की परवाह नहीं की और उसका अमल किसी बात में शरअ के ख़िलाफ़ रहा.

औरंगज़ेब ने शरअ के बदलने के इस हक़ से बिलकुल ही हाथ खींच लिया. बार बार देखने में आता है कि औरंगज़ेब न सिर्फ़ दीवानी और फ़ौजदारी के मामले में ही शरै के आलिमों की राय लेता था बल्कि सरकारी टैक्स लगाने के मामले, तिजारत और व्योपार के क़ायदे क़ानून बनाने में भी वह अक्सर शरअ का हुक्म देखता था. अहमदाबाद में कुछ लोगों ने तार बनाने का काम अपने ही हाथों में ले रखा था. औरंगज़ेब ने आलिमों से सलाह कर इस इजारे को तोड़ दिया और सबको तार बनाने और बेचने की इजाज़त दे दी. एक मर्तबा औरंगज़ेब ने ग़ल्ला वग़ैरा का निर्ख़ बाँध देना चाहा लेकिन जैसे ही उसे मालूम हुआ कि ऐसा शरअ के ख़िलाफ़ है उसने अपनी कोशिश बन्द कर दी. उसे किसी के मुसलमान होने पर .ख़ुशी होती थी लेकिन फिर भी एक मर्तबा जब किसी आदमी ने, जिसे क़तल के मामले में मौत की सज़ा दी गई थी, मुसलमान हो जाने और जान बख़्शवाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो औरंगज़ेब ने उसकी

کیا جاتا تھا کہ جو مسلمان مذہبی جرم کریگا یعنی اپنے کسی مذہبی فرض کو پورا نہیں کرے گا اُس پر خاص حالتوں میں شرع کے مطابق مقدمہ نہیں چلایا جائیگا۔ ماننا پڑتا ہے کہ مغل بادشاہوں نے اِس معاملے میں لوگوں کو کافی رعایت دے دی تھی۔ بعض لوگ سمجھتے ہیں کہ اِس کی پہل اکبر نے کی تھی لیکن یہ غلط ہے۔ اکبر سے پہلے علاؤالدین اور محمد تغلق اِسی طرح کا آزاد ڈھنگ اختیار کر چکے تھے۔ اکبر نے خود اپنے سلطان عادل یا امام عادل ہونے کا جو فرمان علماؤں کو جمع کر کے اُن سے جاری کرایا تھا جس کے مطابق علماؤں کی ایک دوسرے کے خلاف دو رائیوں میں کسی ایک کو ٹھیک اعلان کر دینے کا اکبر کو حق مل گیا تھا، جسے یورپ والے غلطی سے "اِنفالئیبلیٹی ڈکری" یعنی 'بادشاہ کی معصومیت کا فرمان' کہتے ہیں، وہ بھی اصل میں مسلم شرع کو بدلنے والی چیز نہیں تھی بلکہ ایک بڑے درجے تک مسلمانوں کو تسلی دینے والی چیز تھی۔ علاؤالدین نے یہ اعلان کر دیا تھا کہ "میں شرع کا قانون نہیں جانتا اور اِس لئے جو میرا دل کہتا ہے وہی کرتا ہوں۔" اِس کے خلاف اکبر کا یہی کہنا تھا کہ "میں جو کرتا ہوں شرع کے مطابق کرتا ہوں۔ صرف شرع کے جاننے والے مختلف عالموں کی جو الگ الگ رائے ایک دوسرے کے خلاف موجود ہیں ان میں سے میں کسی ایک رائے کو چن لیتا ہوں۔" اِس کا مطلب یہ ہوا کہ جہاں تک اصول کی بات ہے اکبر نے بھی شرع کو بدلنے کا اختیار اپنے ہاتھ میں نہیں لیا۔ یہ دوسری بات ہے کہ عمل میں اُس نے شرع کے کچھ حکموں کی پرواہ نہیں کی اور اُس کا عمل کسی بات میں شرع کے خلاف رہا۔

اورنگزیب نے شرع کے بدلنے کے اِس حق سے بالکل ہی ہاتھ کھینچ لیا۔ بار بار دیکھنے میں آتا ہے کہ اورنگزیب نہ صرف دیوانی اور فوجداری کے معاملے میں ہی شرع کے عالموں کی رائے لیتا تھا بلکہ سرکاری ٹیکس لگانے کے معاملے، تجارت اور بیوپار کے قاعدے قانون بنانے میں بھی وہ اکثر شرع کا حکم دیکھتا تھا۔ احمدآباد میں کچھ لوگوں نے تار بنانے کا کام اپنے ہی ہاتھوں میں لے رکھا تھا۔ اورنگزیب نے عالموں سے صلاح کر اِس اجارے کو توڑ دیا اور سب کو تار بنانے اور بیچنے کی اجازت دے دی۔ ایک مرتبہ اورنگزیب نے غلہ وغیرہ کا نرخ باندھ دینا چاہا لیکن جیسے ہی اُسے معلوم ہوا کہ ایسا شرع کے خلاف ہے اُس نے اپنی کوشش بند کر دی۔ اُسے کسی کے مسلمان ہونے پر خوشی ہوتی تھی لیکن پھر بھی ایک مرتبہ جب کسی آدمی نے، جسے قتل کے معاملے میں موت کی سزا دی گئی تھی، مسلمان ہو جانے اور جان بخشوانے کی خواہش ظاہر کی تو اورنگزیب نے اُس کی

जरूर था लेकिन उसके बनाने में मुग़ल राज का कोई हाथ नहीं था. इन यूरप वालों को कोई मुग़ल क़ानून नहीं मिले क्योंकि मुग़लों ने कभी नये क़ानून बनाये ही नहीं. लिखे हुए क़ानून तो उस ज़माने में इतने ज्यादा थे कि औरंगज़ेब ने, जो .खुद बड़ा आलिम था, यह महसूस किया कि मुसलिम शरअ की पेचीदगियों में से रास्ता मिलना भी कभी कभी मुश्किल हो जाता है. इसलिये औरंगज़ेब ने शरअ के क़ानून को फिर से तरतीब देकर लिखवाया. इस काम में औरंगज़ेब ने बादशाह की हैसियत से अपना कोई अख़्तियार नहीं जताया. "फ़तवए आलमगीरी" नाम की किताब तैयार कराई गई. बहुत से आलिमों ने मिलकर उसे तैयार किया. किताब के नाम के साथ आलमगीरी के नाम से यह नहीं समझना चाहिये कि उसमें कोई आलमगीर का हुक्म शामिल है. हर बात जो किताब में कही गई है उसके लिये किताब लिखने वाले आलिमों ने शरअ की किसी न किसी पुरानी किताब से हवाला दिया है.

मुग़ल ज़माने में ही हिन्दू धर्म शास्त्र की भी कई संस्कृत किताबें तैयार कराई गईं, लेकिन इनमें भी किसी बादशाह के हुक्म से कोई बात नहीं लिखी गई. कमलाकर, रघुनन्दन, मित्र मिश्र, नरसिंह और बहुत से छोटे मोटे पंडितों ने धर्मशास्त्र के अलग अलग हिस्सों पर मेहनत की, इन विद्वानों ने हमेशा पुराने शास्त्रों से ही लेकर अपनी राय जाहिर की है. कहीं कहीं इतना जरूर किया है कि जहाँ उन्हें पुरानी किताबों में तरह तरह की एक दूसरे के ख़िलाफ़ रायें मिली हैं वहाँ उन्होंने उन्हीं में से किसी एक राय को लेकर अपना एक नया रास्ता बनाया है. इस मामले में हिन्दुओं को एक और रियायत थी जो मुसलमानों को नहीं थी. हिन्दुओं की अपनी कचहरियाँ थीं जो पंचायतें कहलाती थीं. धर्मशास्त्र का मतलब मालूम करने में जहाँ दिक़्क़त होती थी यह पंचायतें उसी पर आख़िरी फ़ैसला देती थीं. आम मुग़ल ज़माने में किसी मुग़ल बादशाह की तरफ़ से इन पंचायतों के रंग रूप, उनके पंचों या उनके काम के ढंग को बदलने या उसमें दख़ल देने की कोशिश नहीं की गई.

फ़ौजदारी का क़ानून यानी जुर्मों की सज़ा देने का क़ानून इसलामी क़ानून था. मामूली तौर पर रियाया और राज और रियाया के ताल्लुक़ इसलामी क़ानून से चलते थे. अकबर ने मुग़ल राज की मज़हबी पालिसी को बदलकर एक ख़ास नई तब्दीली की थी. लेकिन जो तब्दीलियाँ अकबर ने कीं वे भी असल में मुल्क के अमन आमान से ही वास्ता रखती थीं. ऐसे मौक़ों पर आम तौर से राज की तरफ़ से यह ऐलान कर दिया जाता था कि कुछ क़ायदे क़ानून को तोड़ देने पर भी सरकार, ख़ासकर, ग़ैर मुसलिम मुजरिमों पर मुक़दमा नहीं चलावेगी. कभी कभी यह ऐलान

ضرور تھا لیکن اُس کے بنانے میں مغل راج کا کوئی ہاتھ نہیں تھا۔ ان یورپ والوں کو کوئی مغل قانون نہیں ملے کیونکہ مغلوں نے کبھی نئے قانون بنائے ہی نہیں۔ لکھے ہوئے قانون تو اُس زمانے میں اتنے زیادہ تھے کہ اورنگزیب نے، جو خود بڑا عالم تھا، یہ محسوس کیا کہ مسلم شرع کی پیچیدگیوں میں سے راستہ ملنا بھی کبھی کبھی مشکل ہو جاتا ہے۔ اِس لئے اورنگزیب نے شرع کے قانون کو پھر سے ترتیب دے کر لکھوایا۔ اس کام میں اورنگزیب نے بادشاہ کی حیثیت سے اپنا کوئی اختیار نہیں جتایا۔ "فتوئے عالمگیری" نام کی کتاب تیار کرائی گئی۔ بہت سے عالموں نے مل کر اُسے تیار کیا۔ کتاب کے نام کے ساتھ عالمگیری کے نام سے یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ اُس میں کوئی عالمگیر کا حکم شامل ہے۔ ہر بات جو کتاب میں کہی گئی ہے اس کے لئے کتاب لکھنے والے عالموں نے شرع کی کسی نہ کسی پرانی کتاب سے حوالہ دیا ہے۔

مغل زمانے میں ہی ہندو دھرم شاستر کی بھی کئی سنسکرت کتابیں تیار کرائی گئیں؛ لیکن اِن میں بھی کسی بادشاہ کے حکم سے کوئی بات نہیں لکھی گئی۔ کملا کر، رگھونندن، متر مشر، نرسنگھ اور بہت سے چھوٹے موٹے پنڈتوں نے دھرم شاستر کے الگ الگ حصوں پر محنت کی، اِن ودوانوں نے ہمیشہ پرانے شاستروں سے ہی لے کر اپنی رائے ظاہر کی ہے۔ کہیں کہیں اتنا ضرور کیا ہے کہ جہاں انہیں پرانی کتابوں میں طرح طرح کی ایک دوسرے کے خلاف رائیں ملی ہیں وہاں انہوں نے انہیں میں سے کسی ایک رائے کو لے کر اپنا ایک نیا راستہ بنایا ہے۔ اِس معاملے میں ہندوؤں کو ایک اور رعایت تھی جو مسلمانوں کو نہیں تھی۔ ہندوؤں کی اپنی کچہریاں تھیں جو پنچایتیں کہلاتی تھیں۔ دھرم شاستر کا مطلب معلوم کرنے میں جہاں دقت ہوتی تھی یہ پنچایتیں اُس پر آخری فیصلہ دیتی تھیں۔ عام مغل زمانے میں کسی مغل بادشاہ کی طرف سے اِن پنچایتوں کے رنگ روپ، اُن کے پنچوں یا اُن کے کام کے ڈھنگ کو بدلنے یا اُس میں دخل دینے کی کوشش نہیں کی گئی۔

فوجداری کا قانون یعنی جرموں کی سزا دینے کا قانون اسلامی قانون تھا۔ معمولی طور پر رعایا اور راج اور رعایا کے تعلق اسلامی قانون سے چلتے تھے۔ اکبر نے مغل راج کی مذہبی پالیسی کو بدل کر ایک خاص نئی تبدیلی کی تھی۔ لیکن جو تبدیلیاں اکبر نے کیں وہ بھی اصل میں ملک کے امن آمان سے ہی واسطہ رکھتی تھیں۔ ایسے موقعوں پر عام طور سے راج کی طرف سے یہ اعلان کر دیا جاتا تھا کہ کچھ قاعدے قانون کو توڑ دینے پر بھی سرکار، خاص کر، غیر مسلم مجرموں پر مقدمہ نہیں چلاوے گی۔ کبھی کبھی یہ اعلان

शाही हुकूमत के सम्बंध में आता है वह सिर्फ़ एक रिवाजी चीज़ है या वह लफ़्ज़ों का हेर फेर है या यह है कि और सब चीज़ों की तरह बादशाह का पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है. अब हम अपने दूसरे मसले पर आ जाते हैं यानी यह कि मुग़ल हुकूमत कहाँ तक एशियाई तानाशाही थी. इससे यह सवाल भी पैदा होता है कि "एशियाई तानाशाही" क्या चीज़ है ? इस बात में बहुत शक है कि एशिया में कभी किसी ख़ास क़िस्म की तानाशाही गढ़ी गई हो जो यूरप की तानाशाही से ज़्यादा बुरी हो. इस क़िस्म की हुकूमत में पूरब और पश्चिम, एशिया और यूरप का कोई फ़र्क़ नहीं. जैसे .फ्रांस में लुई चौदहवाँ यह दावा करता था कि मैं ही हुकूमत हूँ वैसे ही हिन्दुस्तान में औरंगज़ेब ने उससे बढ़कर कोई बात नहीं कही. बल्कि आम तौर पर यह दावा भी नहीं किया.

इसमें कोई शक नहीं कि मुग़ल बादशाहों की हुकूमत शख़्सी हुकूमत थी. उस ज़माने में आम जनता के चुने हुए लोगों की कोई इस तरह की कौंसिल या पार्लीमेंट वग़ैरा नहीं थी जिसके ज़रिये बादशाह के कामों पर रोक थाम रखी जा सकती. लेकिन अगर उसके यह मानी लें कि मुग़ल बादशाह अपनी रियाया के जान माल के पूरे मालिक थे और जो चाहे कर सकते थे या सियासी मामलों में भी जो चाहे हुक्म दे सकते थे, उन्हें कभी भी क़ानून के मातेहत नहीं माना गया, बल्कि वे अक्सर .ख़ुद अपने को क़ानून के नौकर कहते थे तो दूसरी बात है. जायदाद वग़ैरा सब तरह के मामलों में रियाया का कुल ज़ाती क़ानून हिन्दू धर्म शास्त्र और मुसलिम शरअ पर चलता था. मुग़ल बादशाह मानते थे कि उन्हें उसमें तब्दीली करने का कोई अख़्तियार नहीं है. जहाँ तक पता चलता है सिर्फ़ शाहजहाँ ने एक मौक़े पर हिन्दू धर्म शास्त्र में कुछ तब्दीली की थी. यह उस वक़्त जब शाहजहाँ ने यह हुक्म जारी कर दिया कि अगर कोई हिन्दू इसलाम को अपनाना चाहे तो उस घर के लोग उस पर जायदाद वग़ैरा के डर का बेजा दबाव न डालें. मुमकिन है कि इससे धर्मशास्त्र के जायदाद के विरासत के क़ानून में कोई तब्दीली पैदा हुई हो. क्योंकि धर्मशास्त्र का क़ानून यह रहा होगा कि मज़हब बदल लेने पर कोई शख़्स अपनी ख़ान्दानी विरासत नहीं पा सकता. और शाहजहाँ के क़ानून के मुताबिक़ एक हिन्दू मुसलमान हो जाने पर भी अपनी ख़ान्दानी विरासत पा सकता था. मुसलमानों की शरअ में तो कभी किसी बादशाह ने किसी तब्दीली की कोशिश नहीं की.

इस वजह से कुछ मशहूर योरोपियन मुसाफ़िरों ने यह अजीब बात कह डाली है कि मुग़लों के ज़माने में कोई लिखा हुआ क़ानून था ही नहीं. लिखा हुआ क़ानून तो

شاهی حکومت کے سمبندھ میں آتا ہے وہ صرف ایک رواجی چیز ہے یا وہ لفظوں کا ہیر پھیر ہے یا یہ ہے کہ اور سب چیزوں کی طرح بادشاہ کا پیدا کرنے والا بھی اللہ ہی ہے ۔ اب ہم اپنے دوسرے مسئلے پر آجاتے ہیں یعنی یہ کہ مغل حکومت کہاں تک ایشیائی تاناشاہی تھی ۔ اُس سے یہ سوال بھی پیدا ہوتا ہے کہ "ایشیائی تاناشاہی" کیا چیز ہے ؟ اِس بات میں بہت شک ہے کہ ایشیا میں کبھی کسی خاص قسم کی تاناشاہی گڑھی گئی ہو جو یورپ کی تاناشاہی سے زیادہ بری ہو ۔ اِس قسم کی حکومت میں پورب اور پچھم، ایشیا اور یورپ کا کوئی فرق نہیں ۔ جیسے فرانس میں لوئی چودھواں یہ دعویٰ کرتا تھا کہ میں ہی حکومت ہوں ویسے ہی ہندستان میں اورنگزیب نے اُس سے بڑھ کر کوئی بات نہیں کہی ۔ بلکہ عام طور پر یہ دعویٰ بھی نہیں کیا ۔

اِس میں کوئی شک نہیں کہ مغل بادشاہوں کی حکومت شخصی حکومت تھی ۔ اُس زمانے میں عام جنتا کے چنے ہوئے لوگوں کی کوئی اِس طرح کی کونسل یا پارلیمینٹ وغیرہ نہیں تھی جس کے ذریعہ بادشاہ کے کاموں پر روک تھام رکھی جا سکتی ۔ لیکن اگر اُس کے یہ معنی لیں کہ مغل بادشاہ اپنی رعایا کے جان مال کے پورے مالک تھے اور جو چاہے کر سکتے تھے یا سیاسی معاملوں میں بھی جو چاہے حکم دے سکتے تھے، انہیں کبھی بھی قانون کے ماتحت نہیں مانا گیا، بلکہ وے اکثر خود اپنے کو قانون کے نوکر کہتے تھے تو دوسری بات ہے ۔ جائیداد وغیرہ سب طرح کے معاملوں میں رعایا کا کل ذاتی قانون ہندو دھرم شاستر اور مسلم شرع پر چلتا تھا ۔ مغل بادشاہ مانتے تھے کہ اُنہیں اُس میں تبدیلی کرنے کا کوئی اختیار نہیں ہے ۔ جہاں تک پتہ چلتا ہے صرف شاہ جہاں نے ایک موقع پر ہندو دھرم شاستر میں کچھ تبدیلی کی تھی ۔ یہ اُس وقت جب شاہ جہاں نے یہ حکم جاری کر دیا کہ اگر کوئی ہندو اسلام کو اپنانا چاہے تو اُس گھر کے لوگ اُس پر جائیداد وغیرہ کے ڈر کا بیجا دباؤ نہ ڈالیں ۔ ممکن ہے کہ اِس سے دھرم شاستر کے جائداد کے وراثت کے قانون میں کوئی تبدیلی پیدا ہوئی ہو ۔ کیونکہ دھرم شاستر کا قانون یہ رہا ہوگا کہ مذہب بدل لینے پر کوئی شخص اپنی خاندانی وراثت نہیں پا سکتا ۔ اور شاہ جہاں کے قانون کے مطابق ایک ہندو مسلمان ہوجانے پر بھی اپنی خاندانی وراثت پا سکتا تھا ۔ مسلمانوں کی شرع میں تو کبھی کسی بادشاہ نے کوئی تبدیلی کی کوشش نہیں کی ۔

اِس وجہ سے کچھ مشہور یوروپین مسافروں نے یہ عجیب بات کہہ ڈالی ہے کہ مغلوں کے زمانے میں کوئی لکھا ہوا قانون تھا ہی نہیں ۔ لکھا ہوا قانون تو

कुछ होता है वह .खुदा के ही हुक्म से होता है. इन बातों से यह साबित नहीं होता कि मुग़ल बादशाहों का यह दावा था कि वह मामूली इन्सान से कुछ भी ऊँचा रुतबा रखते थे और न इन चीज़ों से उन्हें कोई मज़हबी या दीनी रुतबा हासिल होता था. उस ज़माने के यूरप के बहुत से बादशाहों का यह दावा था कि उनकी तख़्तनशीनी के वक़्त उनके सर पर पवित्र तेल की मालिश किये जाने से उनको ख़ास मज़हबी रुतबा हासिल हो जाता था जो आम इन्सानों को हासिल नहीं था. इस बारे में मुग़ल बादशाहों का जो ख़याल था और यूरप के (Divine Right) .खुदाई हक़ मानने वाले बादशाहों का जो ख़याल था उन दोनों का फ़र्क़ सत्रहवीं सदी के इंगलिस्तान की तारीख़ को देखने से अच्छी तरह समझ में आ सकता है. जब जेम्स अव्वल ने राज के लिये अपने हक़ को ख़ुदा का दिया हक़ बताया तो यह एक मज़हबी उसूल पैदा होगया कि बादशाह की किसी चीज़ की किसी को मुख़ालिफ़त नहीं करनी चाहिये और सबको बादशाह का हुक्म चुपचाप मान लेना चाहिये. बादशाह से बग़ावत करना सिर्फ़ एक क़ानूनी जुर्म ही नहीं रहा बल्कि एक मज़हबी गुनाह भी समझा गया जिसको परलोक या आख़िरत में भुगतना पड़ेगा. इसी से इंगलैंड के इन्क़लाब के बाद ऐसे पादरी पैदा हो गये थे जिन्होंने विलियम और मेरी की वफ़ादारी की क़सम खाने से इन्कार कर दिया था. उनमें उस ज़माने के इंगलिस्तान के कुछ बड़े से बड़े पादरी भी शामिल थे. उन्होंने यह ख़याल ज़ाहिर किया कि जेम्स दोयम जो समुद्र पार चला गया था उनका क़ानूनी बादशाह है. उन्हीं में से कुछ लोगों ने मिलकर हालैन्ड से विलियम को बुला भेजा था ताकि जेम्स दोयम इंगलिस्तान को कैथोलिक बना डालने की कोशिश न कर सके. शाही मरतबे के बारे में इस तरह का ख़याल मुग़ल ज़माने के हिन्दुस्तान में मौजूद न था. जब सलीम ने अपने बाप अकबर के ख़िलाफ़ बग़ावत की तो किसी क़ाज़ी ने उसके ख़िलाफ़ फ़तवा नहीं दिया और न जब .ख़ुर्रम ने जहाँगीर के ख़िलाफ़ बग़ावत की तो किसी क़ाज़ी ने उसे गुनहगार ठैहराया. अलबत्ता यह सच है कि औरंगज़ेब के गद्दी पर बैठने के वक़्त सदरुस्सदर ने उसी के नाम को पढ़ने और उसके शहन्शाह होने का ऐलान करने से इन्कार कर दिया था, इसलिये कि औरंगज़ेब का बाप शाहजहाँ उस वक़्त ज़िन्दा था. मगर उस मिसाल से मुग़ल ताज के दैवी या .खुदाई होने का उसूल साबित नहीं होता. अकबर के ज़माने में भी जब उसके सौतेले भाई हकीम ने हिन्दुस्तान पर हमला किया तो अकबर ने कोई .ख़ुदाई दावा पेश नहीं किया बल्कि बाप की सल्तनत को विरासत में पाने के लिये सिर्फ़ अपनी फ़ौजी ताक़त पर ही भरोसा किया था. इस तरह जहाँ कहीं .ख़ुदाई हक़ का ज़िक्र, शाही ताक़त या

کچھ ہوتا ھے وہ خدا کے ھی حکم سے ھوتا ھے. اِن باتوں سے یہ ثابت نہیں ھوتا کہ مغل بادشاھوں کا یہ دعویٰ تھا کہ وہ معمولی اِنسان سے کچھ بھی اُونچا رتبہ رکھتے تھے اور نہ اِن چیزوں سے اُنھیں کوئی مذھبی یا دینی رتبہ حاصل ھوتا تھا. اُس زمانے کے یورپ کے بہت سے بادشاھوں کا یہ دعویٰ تھا کہ اُن کی تخت نشینی کے وقت اُن کے سر پر پوتر تیل کی مالش کئے جانے سے اُن کو خاص مذھبی رتبہ حاصل ھو جاتا تھا جو عام اِنسانوں کو حاصل نہیں تھا. اِس بارے میں مغل بادشاھوں کا جو خیال تھا اور یورپ کے (Divine Right) خدائی حق ماننے والے بادشاھوں کا جو خیال تھا اُن دونوں کا فرق سترھویں صدی کے انگلستان کی تاریخ کو دیکھنے سے اچھی طرح سمجھ میں آ سکتا ھے. جب جیمس اول نے راج کے لئے اپنے حق کو خدا کا دیا حق بتایا تو یہ ایک مذھبی اُصول پیدا ھو گیا کہ بادشاہ کی کسی چیز کی کسی کو مخالفت نہیں کرنی چاھئے اور سب کو بادشاہ کا حکم چپ چاپ مان لینا چاھئے. بادشاہ سے بغاوت کرنا صرف ایک قانونی جرم ھی نہیں رھا بلکہ ایک مذھبی گناہ بھی سمجھا گیا جس کو پرلوک یا آخرت میں بھگتنا پڑیگا. اِسی سے انگلینڈ کے انقلاب کے بعد ایسے پادری پیدا ھو گئے تھے جنھوں نے ولیم اور میری کی وفاداری کی قسم کھانے سے انکار کر دیا تھا. اُن میں اُس زمانے کے انگلستان کے کچھ بڑے سے بڑے پادری بھی شامل تھے. انھوں نے یہ خیال ظاھر کیا کہ جیمس دویم جو سمندر پار چلا گیا تھا، اُن کا قانونی بادشاہ ھے. اِنھیں میں سے کچھ لوگوں نے مل کر ھالینڈ سے ولیم کو بلا بھیجا تھا تاکہ جیمس دویم انگلستان کو کیتھولک بنا ڈالنے کی کوشش نہ کر سکے. شاھی مرتبہ کے بارے میں اِس طرح کا خیال مغل زمانے کے ھندستان میں موجود نہ تھا. جب سلیم نے اپنے باپ اکبر کے خلاف بغاوت کی تو کسی قاضی نے اُس کے خلاف فتویٰ نہیں دیا اور نہ جب خرم نے جہانگیر کے خلاف بغاوت کی تو کسی قاضی نے اُسے گناھگار ٹھہرایا. البتہ یہ سچ ھے کہ اورنگزیب نے گدی پر بیٹھنے کے وقت صدرالصدر نے اُس کے نام کو پڑھنے اور اُس کے شہنشاہ ھونے کا اعلان کرنے سے انکار کر دیا تھا، اِس لئے کہ اورنگزیب کا باپ شاہجہاں اُس وقت زندہ تھا. مگر اُس مثال سے مغل تاج کے دیوی یا خدائی ھونے کا اصول ثابت نہیں ھوتا. اکبر کے زمانے میں بھی جب اُس کے سوتیلے بھائی حکیم نے ھندستان پر حملہ کیا تو اکبر نے کوئی خدائی دعویٰ پیش نہیں کیا بلکہ باپ کی سلطنت کو وراثت میں پانے کے لئے صرف اپنی فوجی طاقت پر ھی بھروسہ کیا تھا. اِس طرح جہاں کہیں خدائی حق کا ذکر شاھی طاقت یا

हिन्दुस्तान में मुग़ल हुकूमत का ढंग

प्रोफ़ेसर श्रीराम शर्मा एम० ए०

हिन्दुस्तान में मुग़ल बादशाहों की मज़हबी पालिसी पर इतनी गरमा गरम बहस होती रही है कि मुग़लों के हुकूमत करने के तरीक़े के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है. कोई कहता है कि मुग़लों की हुकूमत बिलकुल एक एशियाई तानाशाही थी और कोई कहता है कि वह एक इसलामी यानी मज़हबी हुकूमत थी. यहाँ तक दावा किया गया है कि हिन्दुस्तान का राज मुग़लों की .खुदाई देन थी और कुछ लोग मुग़ल बादशाहों को अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए कहते हैं, यानी यह कि .खुद अल्लाह ने उन्हें इस मुल्क पर हुकूमत करने का हुक्म दिया था. बदक़िस्मती से इन नतीजों पर पहुँचने से पहले लोगों ने उन असली किताबों और दस्तावेज़ों को अच्छी तरह नहीं देखा जो हमारे पास हिन्दुस्तान में मुग़ल हुकूमत के बारे में इस वक़्त मौजूद हैं. शुरू के अरब क़ानून बनाने वालों के क़ानूनी मसलों और दूसरे मुल्कों में मुसलमान बादशाहों के कामों, या हिन्दुस्तान के बाहर के लेखकों की बड़ी-बड़ी लफ़्ज़ी बहसों से यहाँ की मुग़ल हुकूमत का ठीक-ठीक रूप समझने में हमें कोई मदद नहीं मिलती. हाँ, इन बातों को ध्यान में रखकर हम अपनी तहक़ीक़ात आगे बढ़ा सकते हैं.

मुग़ल ज़माने के कुछ इतिहास लिखने वालों और कुछ हाल के लेखकों ने बाज़ मुग़ल बादशाहों की बाबत यह दावा किया है कि उन्हें .खुदा ने बादशाहत का हक़ दिया था. पहले हम इसी दावे पर ग़ौर कर लेना चाहते हैं. अकबर और उसके बाद के बादशाहों को उस ज़माने की तारीख़ लिखने वालों और ख़ासकर शाही इतिहास लेखकों ने अकसर .खुदा का ख़लीफ़ा या नायब कहकर बयान किया है. जब जहाँगीर के बेटे .खुसरो ने अपने बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी तो जहाँगीर ने .खुद अपनी डायरी (तुज़ुक जहाँगीरी में दावा किया था कि उसको .खुदा ने हिन्दुस्तान का शहन्शाह बनाया है. शाहजहाँ ने गोलकुन्डा के आदिलशाह के नाम अपने एक ख़त में अपने को "ज़िलइल्लाह" (.खुदा का साया) लिखा है. औरंगज़ेब ने अपने को दुनिया में .खुदा का वकील लिखा है.

यह सब दावे साबित करते हैं कि मुग़ल बादशाह मानते थे कि उन्हें राज करने का हक़ ज़ाहिरा देखने में .खुदा से मिला हुआ है, लेकिन जब हम ज़रा ग़ौर से देखें तो पता चलता है कि इन बादशाहों के यह सब दावे सिर्फ़ इस आम इसलामी यक़ीन को दुहराते हैं कि दुनिया में जो

ھندستان میں مغل حکومت کا ڈھنگ

پروفیسر شری رام شرما ایم اے.

ھندستان میں مغل بادشاہوں کی مذھبی پالیسی پر اِتنی گرما گرم بحث ھوتی رھی ھے کہ مغلوں کے حکومت کرنے کے طریقہ کے بارے میں لوگوں کو بہت کم جانکاری ھے . کوئی کہتا ھے کہ مغلوں کی حکومت بالکل ایک ایشیائی تاناشاھی تھی اور کوئی کہتا ھے کہ وہ ایک اسلامی یعنی مذھبی حکومت تھی . یہاں تک دعویٰ کیا گیا ھے کہ ھندستان کا راج مغلوں کی خدائی دین تھی اور کچھ لوگ مغل بادشاھوں کو اللہ کے مقرر کئے ھوئے کہتے ھیں' یعنی یہ کہ خود اللہ نے اُنھیں اِس ملک پر حکومت کرنے کا حکم دیا تھا . بدقسمتی سے اِن نتیجوں پر پہنچنے سے پہلے لوگوں نے اُن اصلی کتابوں اور دستاویزوں کو اچھی طرح نہیں دیکھا جو ھمارے پاس ھندستان میں مغل حکومت کے بارے میں اِس وقت موجود ھیں . شروع کے عرب قانون بنانے والوں کے قانونی مسئلوں اور دوسرے ملکوں میں مسلمان بادشاھوں کے کاموں' یا ھندستان کے باھر کے لیکھکوں کی بڑی بڑی لفظی بحثوں سے یہاں کی مغل حکومت کا ٹھیک ٹھیک روپ سمجھنے میں ھمیں کوئی مدد نہیں ملتی . ھاں' اُن باتوں کو دھیان میں رکھ کر ھم اپنی تحقیقات آگے بڑھا سکتے ھیں .

مغل زمانے کے کچھ اتہاس لکھنے والوں اور کچھ حال کے لیکھکوں نے بعض مغل بادشاھوں کی بابت یہ دعویٰ کیا ھے کہ اُنھیں خدا نے بادشاھت کا حق دیا تھا . پہلے ھم اِسی دعوے پر غور کر لینا چاھتے ھیں . اکبر اور اُس کے بعد کے بادشاھوں کو اُس زمانے کے تاریخ لکھنے والوں اور خاص کر شاھی اتہاس لیکھکوں نے اکثر خدا کا خلیفہ یا نایب کہہ کر بیان کیا ھے . جب جہانگیر کے بیٹے خسرو نے اپنے باپ کے خلاف بغاوت کی تھی تو جہانگیر نے خود اپنی ڈائری (تزک جہانگیری) میں دعویٰ کیا تھا کہ اُس کو خدا نے ھندستان کا شہنشاہ بنایا ھے . شاھجہاں نے گولکنڈہ کے عادل شاہ کے نام اپنے ایک خط میں اپنے کو "ظل اللہ" (خدا کا سایہ) لکھا ھے . اورنگ زیب نے اپنے کو دنیا میں خدا کا وکیل لکھا ھے .

یہ سب دعوے ثابت کرتے ھیں کہ مغل بادشاہ مانتے تھے کہ اُنھیں راج کرنے کا حق ظاھرہ دیکھنے میں خدا سے ملا ھوا ھے . لیکن جب ھم ذرا غور سے دیکھیں تو پتہ چلتا ھے کہ اِن بادشاھوں کے یہ سب دعوے صرف اِس عام اِسلامی یقین کو دوھراتے ھیں کہ دنیا میں جو

सितम्बर 1957 ستمبر

जिल्द 24 جلد नम्बर 3 نمبر

सितम्बर 1957 ستمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद '145 مٹھی گنج' الہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy [illegible]

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

इनमें कई सौ बेचारे कोढ़ी हैं जो अपना कोढ़ दिखा दिखा कर पैसे माँगते फिरते हैं और कभी-कभी कुछ अधिक पा जाते हैं तो शराब पीकर या किसी और बुराई में फँसकर अपना ग़म ग़लत करने की भी कोशिश करते हैं. इन सब से ऊपर उठकर दिल्ली के लाखों ग़रीबों की हालत से भी हम वाक़िफ़ हैं पर इस से जियादा कहने को अब दिल नहीं उभरता.

शासकों, शायद दुनिया के अधिकतर शासकों की एक बहुत बड़ी बदक़िस्मती यह होती है कि उन्हें ख़ास ऐनकों के ज़रिये से ही दुनिया को देखना मिल सकता है. उनके कान दूसरों के कान होते हैं, उनकी आँखें दूसरों की आँखें. उनको ख़बरें देने वाले यह ताड़ लेते हैं कि उनके मालिक किस तरह की ख़बरें सुनना चाहते हैं और उसी तरह की ख़बरें उन्हें सुनाते हैं. जैसे वह चाहते हैं उसी तरह के आँकड़े उनके लिये तैयार हो जाते हैं. हम दंग रह गए जबकि दिल्ली के एक बहुत बड़े शासक ने हम से बात करते हुए कहा की —"लोग ख़ाहमख़ाह ग़लत कहते हैं कि देश में बेकारी है. कहीं बेकारी नहीं है." एक और साहब ने राय जाहिर की कि—"देश को निकम्मे ग्रेजुएटों की जरूरत नहीं है, देश को जरूरत है एन्जीनियर्स की और वह कभी बेकार नहीं रह सकते." यह बताने का उन पर कोई ख़ास असर नहीं हुआ कि देश के अनेक एन्जीनियरिंग कालिजों से पास हुए काफ़ी नौजवान बरसों एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर अरज़ियाँ लेकर घूमते फिरते हैं. भ्रष्टाचार की बाबत तो आम तौर पर यह कहा जाता है कि देश में जो कुछ भ्रष्टाचार है वह हमें अंग्रेजी हुकूमत से वरासत में मिला है और इन छै सात बरस के अन्दर काफ़ी कम हुआ है, और दूसरे देशों से हमारे देश में भ्रष्टाचार अब भी बहुत कम है ! इन बातों का क़ुदरती नतीजा यह है कि नेताओं और जनता के बीच, शासकों और शासितों के बीच खाई और बदगुमानी बढ़ती चली जा रही है.

—सुन्दरलाल

اِن میں سے کئی سو بیچارے کوڑھی هیں جو اپنا کوڑھ دکھا دکھا کر پیسے مانگتے پھرتے هیں اور کبھی کبھی کچھ ادھک پا جاتے هیں تو شراب پی کر یا کسی اور برائی میں پھنس کر اپنا غم غلط کرنے کی بھی کوشش کرتے هیں. اِن سب سے اوپر اٹھ کر دلی کے لاکھوں غریبوں کی حالت سے بھی هم واقف هیں پر اِس سے زیادہ کہنے کو اب دل نہیں ابھرتا.

شاسکوں، شاید دنیا کے ادھکتر شاسکوں کی ایک بہت بڑی بدقسمتی یہ هوتی هے کہ انہیں خاص عینکوں کے ذریعے سے هی دنیا کو دیکھنا مل سکتا هے. اُن کے کان دوسروں کے کان هوتے هیں، اُن آنکھیں دوسروں کی آنکھیں. اُن کو خبریں دینے والے یہ تاڑ لیتے هیں کہ اُن کے مالک کس طرح کی خبریں سننا چاهتے هیں اور اُسی طرح کی خبریں وہ اُنھیں سناتے هیں. جیسے وہ چاهتے هیں اُسی طرح آنکڑے اُن کے لئے تیار هو جاتے هیں. هم دنگ رہ گئے جب کہ دلی کے ایک بہت بڑے شاسک نے هم سے بات کرتے هوئے کہا کہ—"لوگ خواہ مخواہ غلط کہتے هیں کہ دیش میں بیکاری هے. کہیں بیکاری نہیں هے." ایک اور صاحب نے رائے ظاهر کی کہ—"دیش کے نکمے گریجوائٹوں کی ضرورت نہیں هے، دیش کو ضرورت هے انجینیرس کی اور وہ کبھی بیکار نہیں رہ سکتے." یہ بتانے کا اُن پر کوئی خاص اثر نہیں هوا کہ دیش کے انیک انجینیرنگ کالجوں سے پاس هوئے کافی نوجوان برسوں ایک دفتر سے دوسرے دفتر عرضیاں لیکر گھومتے پھرتے هیں. بھرشٹاچار کی بابت تو عام طور پر یہ کہا جاتا هے کہ دیش میں جو کچھ بھرشٹاچار هے وہ همیں انگریزی حکومت سے وراثت میں ملا هے اور اِن چھ سات برس کے اندر کافی کم هوا هے، اور دوسرے دیشوں سے همارے دیش میں بھرشٹا اب بھی بہت کم هے! اِن باتوں کا قدرتی نتیجہ یہ هے کہ نیتاؤں اور جنتا کے بیچ، شاسکوں اور شاسِتوں کے بیچ کھائی اور بدگمانی بڑھتی چلی جا رهی هے.

—سندر لال

ड्युटी हमारे मित्र के साथ लगी हुई थी इसी तरह उसी जीपवि की ओर से एक मोटर और एक मोटर ड्राइवर की भी ड्युटी उसी जगह लगी हुई थी. और अधिक कुरेदने पर हमारी आँखों से आँसू टपक पड़े. अधिक पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि पारलिमेन्ट के और भी बहुत से मेम्बर इसी तरह के असरों से दबे हुए हैं. उन पर खर्च करने वाले अपने खर्च का पूरा बदला चुका लेने में कोई कसर उठा नहीं रखते. इन पंक्तियों के लिखते समय भी हमारा दिल .खून के आँसू बहा रहा है. हमें नहीं मालूम कि पारलिमेन्ट के मेम्बरों में इस तरह के भाइयों का अल्पमत है या बहुमत. पर हम समझते हैं कि इस बात में किसी को भी किसी तरह का कोई शक नहीं हो सकता कि हमारी आजकल ,की पारलिमेन्टों और धारा सभाओं में मुशकिल से दस फ़ीसदी मेम्बर ऐसे होंगे जो सचमुच पारलिमेन्टों के या धारा सभा के कामों में, तजवीजों और बिलों में कोई सच्ची, और समझदारी की दिलचस्पी रखते हों. शासन पर और देश भर में छोटे बड़े सरकारी कर्मचारियों पर जो इसका बुरा असर पड़ता है वह कहीं भी थोड़ी सी आँख खोलकर देखा जा सकता है. देश भर में जिस तरह की बेजा दख़लअन्दाज़ी, तरह तरह के सरकारी कामों में होती रहती है उसकी कहानियाँ दिल्ली से कलकत्ते, दिल्ली से बम्बई, या दिल्ली से मद्रास के किसी भी रेल के सफ़र में अनेक सुनने को मिल सकती हैं. सुनने की इच्छा रखने वाले को इसके लिये दिल्ली से बाहर जाने की भी ज़रूरत नहीं है.

ऊँचे से ऊँचे नेताओं और सरकारी लोगों,पर भी इसका असर पड़े बग़ैर नहीं रह सकता. चुनाओं के लिये नामज़दगी के तरीक़े, नामज़दगी की कसौटियाँ और चुनाओं के ढंग लगभग सब सदाचार की दृष्टि से पतन की हद को पहुंच चुके हैं. गाड़ी चल रही है, जिस तरह भी चल सके और जब तक चल सके.

दिल्ली में पिछले साल पीलिया (Jaundice) की वबा के फैलने की जो दुर्घटना हुई और अभी तक जारी है वह केवल अन्दर के गहरे रोग का केवल एक ऊपरी लक्षण है. इस बीमारी का फैलना इन हालात में किसी को कोई अजीब बात मालूम नहीं होनी चाहिये. दिल्ली भारत की राजधानी है. बड़े से बड़े शासकों और नेताओं का यहाँ सदा जमघट रहता है. यहाँ बड़े-बड़े महलों जैसे बंगले हैं आए दिन बड़ी-बड़ी दावतें होती हैं. इसी दिल्ली में लगभग दस हज़ार इनसान गली-गली भीख माँगते फिरते हैं. इनमें से लगभग आठ हज़ार कड़ाके की सर्दी में चीथड़ों में लिपटे हुए या बिना चीथड़ों के खुले आसमान के नीचे पटरियों पर सोते हैं या किसी तरह रात बिताते हैं.

یوٹی ہمارے متر کے ساتھ لگی ہوئی تھی اسی طرح سی پولیس پکی کی اور سے ایک موٹر اور ایک موٹر رائیور کی بھی ڈیوٹی اسی جگہہ لگی ہوئی تھی ۔ اور ٹھک کریدنے پر ہماری آنکھوں سے آنسو ٹپک پڑے ۔ ادھک وچھ تاچھ کرنے پر معلوم ہوا کہ پارلیمنٹ کے اور بھی بہت سے ممبر سی طرح کے اثروں سے دبے ہوئے ہیں ۔ اُن پر خرچ کرنے والے پنے خرچ کا پورا بدلہ چکا لینے میں کوئی کسر اُٹھا نہیں رکھتے ۔ ن پنکتیوں کے لکھتے سمے بھی ہمارا دل خون کے آنسو بہا رہا ہے ۔ ہمیں نہیں معلوم کہ پارلیمنٹ کے ممبروں میں اِس طرح کے بھائیوں کا الپمت ہے یا بہومت ۔ پر ہم سمجھتے ہیں کہ اِس بات میں کسی کو بھی کسی طرح کا کوئی شک نہیں ہو سکتا کہ ہماری آجکل کی پارلیمنٹوں اور دھارا سبھاؤں میں مشکل سے دس فیصدی ممبر ایسے ہونگے جو سچ مچ پارلیمنٹوں کے یا دھارا سبھا کے کاموں میں، تجویزوں اور بلوں میں کوئی سچی، اور سمجھداری کی دلچسپی رکھتے ہوں ۔ شاسن پر اور دیش بھر میں چھوٹے بڑے سرکاری کرمچاریوں پر جو اِس کا برا اثر پڑتا ہے وہ کہیں بھی تھوڑی سی آنکھ کھول کر دیکھا جا سکتا ہے ۔ دیش بھر میں جس طرح کی بیجا دخل اندازی، طرح طرح کے سرکاری کاموں میں ہوتی رہتی ہے اُس کی کہانیاں دلی سے کلکتہ، دلی سے بمبئی، یا دلی سے مدراس کے کسی بھی ریل کے سفر میں انیک سننے کو مل سکتی ہیں ۔ سننے کی اِچھا رکھنے والے کو اِس کے لئے دلی سے باہر جانے کی بھی ضرورت نہیں ہے ۔

اُونچے سے اُونچے نیتاؤں اور سرکاری لوگوں پر بھی اِس کا اثر پڑے بغیر نہیں رہ سکتا ۔ چناؤں کے لئے نامزدگی کے طریقے، نامزدگی کی کسوٹیاں اور چناؤں کے ڈھنگ لگ بھگ سب سداچار کی درشٹی سے پتن کی حد کو پہونچ چکے ہیں ۔ گاڑی چل رہی ہے، جس طرح بھی چل سکے اور جب تک چل سکے ۔

دلی میں پچھلے سال پیلیا (Jaundice) کی وبا کے پھیلنے کی جو درگھٹنا ہوئی اور ابھی تک جاری ہے وہ کیول اندر کے گہرے روگ کا کیول ایک اُوپری لکچھن ہے ۔ اس بیماری کا پھیلنا اِن حالات میں کسی کو کوئی عجیب بات معلوم نہیں ہونی چاہئے ۔ دلی بھارت کی راجدھانی ہے ۔ بڑے سے بڑے شاسکوں اور نیتاؤں کا یہاں سدا جمگھٹ رہتا ہے ۔ یہاں بڑے بڑے محلوں جیسے بنگلے ہیں ۔ آئے دن بڑی بڑی دعوتیں ہوتی ہیں ۔ اِسی دلی میں لگ بھگ دس ہزار انسان گلی گلی بھیک مانگتے پھرتے ہیں ۔ اِن میں سے لگ بھگ آٹھ ہزار کڑاکے کی سردی میں چیتھڑوں میں لپٹے ہوئے یا بنا چیتھڑوں کے کھلے آسمان کے نیچے پٹریوں پر سوتے ہیں یا کسی طرح رات بتاتے ہیں ۔

पार्टी से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से मेम्बरों को अकसर ऐसे विषयों पर भी जिनका देश के भले या बुरे के साथ गहरा सम्बन्ध होता है अपनी अन्तर आत्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ भरे सदन में हाथ उठाना पड़ता है. इसका क़ुदरती और लाज़मी नतीजा यह है कि हमारी आजकल की पार्लिमेंटों या धारा सभाओं के अधिकांश मेम्बर इस बात पर सोचना भी बन्द कर देते हैं कि किस तजवीज़ या किस बिल से देश का क्या फ़ायदा या क्या नुक़सान होगा. वह मजबूर होकर अपनी मेम्बरी से दूसरी ही तरह के फ़ायदे उठाने में लग जाते हैं.

इस तरह के मेम्बरों की हालत कुछ-कुछ उस जज की सी हालत होती है जो उस जवान माँ को जिसने किसी ज़बरदस्त दुख और निराशा की हालत में अपने तीन बरस के बच्चे का गला घोंट कर मार डाला और फिर उस पर रोना और सिर पीटना शुरू किया. इसलिये फाँसी की सज़ा देनी पड़ती है क्योंकि क़ानून की दफ़ा, क़ानून का ज़ाब्ता और क़ानूनी गवाहियाँ जज के लिये और कोई रास्ता ही नहीं छोड़तीं. अकसर पढ़े लिखे जज तो इसे अपनी "ड्यूटी" अपना "फ़र्ज़" समझ कर भी इस तरह के फ़ैसले देते हैं.

आज हमारे सदाचार के गिरावट की यह हालत है कि देश के उत्तर से दक्खिन तक और पूरब से पच्छिम तक सैकड़ों शिक्षा संस्थाएं ऐसी हैं जिनमें अध्यापकों से एक सौ बीस रुपये तनख़ाह लेकर दो सौ की रसीद पर दस्तख़त करने पड़ते हैं. हमें बड़ी हार्दिक वेदना के साथ कहना पड़ता है कि जिस तरह इस तरह की शिक्षा संस्थाओं में इस तरह के अध्यापकों से शिक्षा लेने वाले बालकों से यह आशा करना कि उनका चरित्र कभी भी जीवन में ऊँचा हो सकेगा, लगभग वैसा ही है, जैसा बबूल बोकर उससे आम की आशा करना. ठीक उसी तरह पारलिमेन्ट के या धारा सभाओं के जिन मेम्बरों को पारटी भक्ति के कारण अपनी अन्तर आत्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ हाथ उठाना पड़ जाता है उनसे यह आशा करना कि वह उन ज़िम्मेवारी की कुरसियों पर बैठ कर देश को सचमुच ऊँचा ले जा सकेंगे या करोड़ों जनता का सच्चा भला कर सकेंगे उतना ही ग़लत है.

इस दर्दनाक हालत का असर देश की इन पारलिमेन्टों और धारा सभाओं में साफ़ दिखाई देता है. दिल्ली में हम एक दिन अचानक अपने एक पुराने मित्र पारलिमेन्ट के एक मेम्बर के घर पहुँच गए. हमने वहाँ एक नौजवान को टाइप करते हुए देखा जिसे हम पहले से जानते थे. हम कुछ हैरान हुए. पूछने पर मालूम हुआ कि वह अब भी देश के उसी मशहूर पूँजीपति का नौकर था और उसी से वेतन पाता था, जिससे कभी पहले पाया करता था. अब उसकी

پارٹی سے سمبندھ رکھنے والے بہت سے ممبروں کو اکثر ایسے وشیوں پر بھی جن کا دیش کے بھلے یا برے کے ساتھ گہرا سمبندھ ہوتا ہے اپنی انتر آتما کی آواز کے خلاف بھرے سدن میں ہاتھ اُٹھانا پڑتا ہے ۔ اِس کا قدرتی اور لازمی نتیجہ یہ ہے کہ ہماری آجکل کی پارلیمنٹوں یا دھارا سبھاؤں کے ادھیکانش ممبر اِس بات پر سوچنا بھی بند کر دیتے ہیں کہ کس تجویز یا کس بل سے دیش کا کیا فائدہ یا کیا نقصان ہوگا ۔ وہ مجبور ہو کر اپنی ممبری سے دوسری ہی طرح کے فایدے اُٹھانے میں لگ جاتے ہیں ۔

اِس طرح کے ممبروں کی حالت کچھ کچھ اُس جج کی سی حالت ہوتی ہے جو اُس جوان ماں کو جس نے کسی زبردست دکھ اور نراشا کی حالت میں اپنے تین برس کے بچے کا گلا گھونٹ کر مار ڈالا اور پھر اُس پر رونا اور سر پیٹنا شروع کیا ۔ اِس لئے پھانسی کی سزا دینی پڑتی ہے کیونکہ قانون کی دفعہ، قانون کا ضابطہ اور قانونی گواہیاں جج کے لئے اور کوئی راستہ ہی نہیں چھوڑتیں ۔ اکثر پڑھے لکھے جج تو اِسے اپنی "ڈیوٹی" اپنا "فرض" سمجھ کر بھی اِس طرح کے فیصلے دیتے ہیں ۔

آج ہمارے سداچار کے گراوٹ کی یہ حالت ہے کہ دیش کے اُتر سے دکھن تک اور پورب سے پچھم تک سیکڑوں شکشا سنستھائیں ایسی ہیں جنمیں ادھیاپکوں کو ایک سو بیس روپئے تنخواہ لیکر دو سو کی رسید پر دستخط کرنے پڑتے ہیں ۔ ہمیں بڑی ہاردک ویدنا کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ جس طرح اِس طرح کی شکشا سنستھاؤں میں اِس طرح کے ادھیاپکوں سے شکشا لینے والے بالکوں سے یہ آشا کرنا کہ اُن کا چرتر کبھی بھی جیون میں اُونچا ہو سکیگا، لگ بھگ ویسا ہی ہے، جیسا ببول بو کر اُس سے آم کی آشا کرنا ۔ ٹھیک اُسی طرح پارلیمنٹ کے یا دھارا سبھاؤں کے جن ممبروں کو پارٹی بھکتی کے کارن اپنے انتر آتما کی آواز کے خلاف ہاتھ اُٹھانا پڑ جاتا ہے اُن سے یہ آشا کرنا کہ وہ اُن ذمہ‌داری کی کرسیوں پر بیٹھ کر دیش کو سچ مچ اُونچا لیجا سکینگے یا کروڑوں جنتا کا سچا بھلا کر سکینگے اُتنا ہی غلط ہے ۔

اِس دردناک حالت کا اثر دیش کی اِن پارلیمنٹوں اور دھارا سبھاؤں میں صاف دکھائی دیتا ہے ۔ دلی میں ہم ایک دن اچانک اپنے ایک پرانے متر پارلیمنٹ کے ایک ممبر کے گھر پہونچ گئے۔ ہمنے وہاں ایک نوجوان کو ٹائپ کرتے ہوئے دیکھا جسے ہم پہلے سے جانتے تھے۔ ہم کچھ حیران ہوئے۔ پوچھنے پر معلوم ہوا کہ وہ اب بھی دیش کے اُسی مشہور پونجی پتی کا نوکر تھا اور اُسی سے ویتن پاتا تھا جس سے کبھی پہلے پایا کرتاتھا۔ اب اُس کی

पार्टी शासन के लिये दो बातें जरूरी हैं. एक यह कि देश में एक से अधिक राजनीतिक पारटियां हों और दूसरी यह कि देश की सारी हुकूमत किसी एक पार्टी के हाथों में हो. इस तरह की राजकाजी पारटियां आम तौर पर किसी एक लक्ष या उद्देश को सामने रखकर बनाई जाती हैं. मसलन इस देश की कांगरेस पार्टी शुरू में केवल "शान्त और वैध उपायों द्वारा स्वराज प्राप्ति" के उद्देश से बनी. भारत के जो नर नारी इस उद्देश से सहमत थे वह कांगरेस के मेम्बर बन गए. देश के विदेशी शासन से आजाद हो जाने के बाद इस उद्देश में थोड़ा सा फ़रक़ आया. कांगरेस का उद्देश अब देश में कल्याणकारी राज (Welfare State) क़ायम करना या उसके बाद समाजवादी ढाँचे (Socialistic pattern) पर राज क़ायम करना ठहराया गया. काँगरेस ने समय समय पर कुछ और खास खास विषयों पर भी एक मत से या बहुमत से ठहराव पास किये. इस बीच देश की सब से बड़ी पार्टी होने के कारण हुकूमत की बाग काँगरेस पार्टी के हाथों में आई. पारलिमेंट के सामने या किसी धारा सभा के सामने कोई ऐसा सवाल आया या कोई ऐसा बिल पेश हुआ जिसका काँगरेस के उस समय तक के निर्धारित उद्देश से कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं था. कोई मेम्बर उस ख़ास सवाल पर इधर या उधर वचन देकर काँगरेस का मेम्बर नहीं हुआ था. अब वह सवाल या वह बिल बहस के लिये काँगरेस पार्टी की बैठक में सामने आया. काँगरेस के प्रधान नेताओं की राय या हाई कमांड की राय एक तरफ़ दिखाई दी. इस पर भी जब पार्टी की बैठक में वोट लिये गए तो मामूली कसरत राय से नेताओं की राय के हक़ में फ़ैसला हो गया. इसके बाद उन सब लोगों के लिये जिनकी राय बहुमत से नहीं मिलती थी जरूरी समझा जाता है कि वह बहुमत के साथ ही वोट दें चाहे वह कितना भी उनकी आत्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ क्यों न हो. अगर हम इस बात का भी ध्यान रखें कि बहुमत में कम या अधिक कुछ न कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिन्होंने ख़ास ख़ास नेताओं के जा या बेजा असर में आकर पार्टी मीटिंग में वोट दिया हो तो यह बात भी दावे से नहीं कही जा सकती कि सचमुच पार्टी का सच्चा बहुमत उसी ओर था जिस ओर अधिकांश के हाथ उठे. यह घटना पारटियों के आधार पर शासन की आए दिन की घटना है.

इस एक मामले में जो हाल उस पार्टी का है जिसके हाथों में शासन की बाग है लगभग वही हाल विरोधी पारटियों या और दूसरी पारटियों का है. पार्टी शासन का यह एक ख़ास और उजागर पहलू है. नतीजा यह होता है कि हर पारलिमेंट और हर धारा सभा के अन्दर किसी भी

پارٹی شاسن کے لئے دو باتیں ضروری ہیں ۔ ایک یہ کہ دیش میں ایک سے ادھک راجنیتک پارٹیاں ہوں اور دوسری یہ کہ دیش کی ساری حکومت کسی ایک پارٹی کے ہاتھوں میں ہو ۔ اس طرح کی راجکاجی پارٹیاں عام طور پر کسی ایک لکش یا اُدیش کو سامنے رکھ کر بنائی جاتی ہیں ۔ مثلاً اِس دیش کی کانگریس پارٹی شروع میں کیول "شانت اور ویدھ اُپایوں دوارا سوراج پراپتی" کے اُدیش سے بنی ۔ بھارت کے جو نر ناری اِس اُدیش سے سہمت تھے وہ کانگریس کے ممبر بن گئے۔ دیش کے ودیشی شاسن سے آزاد ہو جانے کے بعد اِس اُدیش میں تھوڑا سا فرق آیا ۔ کانگریس کا ادیش اب دیش میں کلیان کاری راج (Welfare State) قایم کرنا یا اُس کے بعد سماج وادی ڈھانچے (Socialistic pattern) پر راج قایم کرنا ٹھہرایا گیا ۔ کانگریس نے سمے سمے پر کچھ اور خاص خاص وشیوں پر بھی ایک مت سے یا بہومت سے ٹھہراؤ پاس کئے ۔ اس بیچ دیش کی سب سے بڑی پارٹی ہونے کے کارن حکومت کی باگ کانگریس پارٹی کے ہاتھوں میں آئی ۔ پارلیمنٹ کے سامنے یا کسی دھارا سبھا کے سامنے کوئی ایسا سوال آیا یا کوئی ایسا بل پیش ہوا جس کا کانگریس کے اُس سمے تک کے نردھارت اُدیش سے کوئی خاص سمبندھ نہیں تھا ۔ کوئی ممبر اُس خاص سوال پر اِدھر یا اُدھر وچن دیکر کانگریس کا ممبر نہیں ہوا تھا ۔ اب وہ سوال یا وہ بل بحث کے لئے کانگریس پارٹی کی بیٹھک میں سامنے آیا ۔ کانگریس کے پردھان نیتاؤں کی رائے یا ہائی کمانڈ کی رائے ایک طرف دکھائی دی ۔ اِس پر بھی جب پارٹی کی بیٹھک میں ووٹ لئے گئے تو معمولی کثرت رائے سے نیتاؤں کی رائے کے حق میں فیصلہ ہو گیا ۔ اِس کے بعد اُن سب لوگوں کے لئے جن کی رائے بہومت سے نہیں ملتی تھی ضروری سمجھا جاتا ہے کہ وہ بہومت کے ساتھ ہی ووٹ دیں چاہے وہ کتنا ہی اُن کی آتما کی آواز کے خلاف کیوں نہ ہو. اگر ہم اِس بات کا بھی دھیان رکھیں کہ بہومت میں کم یا ادھک کچھ نہ کچھ لوگ ایسے بھی ہو سکتے ہیں جنھوں نے خاص خاص نیتاؤں کے جا یا بیجا اثر میں آکر پارٹی میٹنگ میں ووٹ دیا ہو تو یہ بات بھی دعوے سے نہیں کہی جا سکتی کہ سچ مچ پارٹی کا سچا بہومت اُسی اُور تھا جس اُور ادھیکانش کے ہاتھ اُٹھے ۔ یہ گھٹنا پارٹیوں کے آدھار پر شاسن کی آئے دن کی گھٹنا ہے ۔

اِس ایک معاملے میں جو حال اُس پارٹی کا ہے جس کے ہاتھوں میں شاسن کی باگ ہے لگ بھگ وہی حال ورودھی پارٹیوں یا اور دوسری پارٹیوں کا ہے ۔ پارٹی شاسن کا یہ ایک خاص اور اُجاگر پہلو ہے ۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ہر پارلیمنٹ اور ہر دھارا سبھا کے اندر کسی بھی

महात्मा गांधी की कुछ बातें इस सम्बन्ध में याद रखने के क़ाबिल हैं. एक यह कि उन्होंने इन्गलैन्ड की उस पार्लमेंट की तुलना, जो दुनिया की पार्लिमेंटों की माँ मानी जाती है, एक "बाँझ वेश्या" (A barren prostitute) से की थी. दूसरी यह कि जब आज़ादी के दिन नज़दीक आने लगे तो उन्होंने यह साफ़ कहा था कि—"आजकल के कांग्रेसी नेता पार्लिमेंटरी हुकूमत के लिये काम कर रहे हैं, मैं पार्लिमेंटरी हुकूमत नहीं चाहता, पर इस समय तो मैं उन्हीं का साथ दे रहा हूँ." तीसरे गांधीजी के बलिदान से थोड़े ही दिन पहले जब दिल्ली में आज़ाद हिन्द की पार्लिमेंटरी हुकूमत बाज़ाब्ता क़ायम हो गई तो उसका रूप देखकर गाँधीजी के मुँह से निकल पड़ा :—"यह तो एक बहुत बड़ी बला आ गई ! मुझे अब इस बला से लड़ना पड़ेगा !"

अब हम ज़रा अपनी आजकल की शासन व्यवस्था की तरफ़ एक निगाह डालें. हमारे आजकल के अधिकतर राजकाजी नेता अंगरेज़ों की दी हुई शिक्षा पाए हुए और अंगरेज़ी विचारों में ही पले हुए थे. क़ुदरती तौर पर वह अंगरेज़ी शासन पद्धति के दिलदादा थे. अपने देश में अच्छी से अच्छी नियत के साथ भी वह उसी की नक़ल कर सकते थे. यही उन्होंने किया—वही पार्लिमेंटरी तर्ज़, वही दो सदन, वही चुनाव के ढंग, इंगलैन्ड के बादशाह की जगह भारत का राष्ट्रपति, गवरनरों और लेफ़टीनेन्ट गवरनरों का वही सिलसिला, पार्लिमेंट और धारा सभाओं के अन्दर वही सरकारी दल (Treasury Benches) और विरोधी दल (Opposition) और वही धुवाँधार तक़रीरें. हालत यहाँ तक पहुँच चुकी है कि हमारे स्वतन्त्र दलों और विरोधी दलों के बड़े से बड़े नेता भी ईमानदारी के साथ मानते और कहते हैं कि शासन चाहे किसी भी दल के हाथों में हो अच्छे शासन के लिये अच्छे और ज़बरदस्त विरोधी दलों का होना ज़रूरी है. बिना अलग अलग और कम या अधिक एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी राजकाजी दलों के वह शासन की कल्पना भी नहीं कर सकते. इसीलिये हम में से बहुत से रूस और चीन जैसे देशों की बाबत यह सुनकर कि वहाँ अलग अलग राजकाजी पार्टियाँ नहीं हैं, या अगर हैं तो एक दूसरे के विरोधी या प्रतिस्पर्धी नहीं हैं, हैरान रह जाते हैं और वह समझ ही नहीं सकते कि इस तरह के किसी भी देश की हुकूमत अच्छी और जनता के लिये हितकर हुकूमत कैसे हो सकती है.

पार्टियों के आधार पर शासन व्यवस्था दूसरे किसी देश के लिये कहां तक हितकर साबित हुई है या नहीं या इस समय हितकर है या नहीं इस सवाल में हम अभी नहीं पड़ना चाहते. हम केवल अपने देश की आजकल की व्यवस्था को ही ज़रा और पास से देखना चाहते हैं.

مہاتما گاندھی کی کچھ باتیں اِس سمبندھ میں یاد رکھنے کے قابل ھیں ۔ ایک یہ کہ اُنھوں نے انگلینڈ کی اُس پارلیمنٹ کی تلنا جو دنیا کی پارلیمنٹوں کی ماں مانی جاتی ھے' ایک بانجھ ویشیا (A barren prostitute) سے کی تھی ۔ دوسری یہ کہ جب آزادی کے دن نزدیک آنے لگے تو اُنھوں نے یہ صاف کہا تھا کہ—"آجکل کے کانگریسی نیتا پارلیمنٹری حکومت کے لئے کام کر رھے ھیں' میں پارلیمنٹری حکومت نہیں چاھتا' پر اِس سمے تو میں اُنھیں کا ساتھ دے رھا ھوں ۔" تیسرے گاندھی جی کے بلیدان سے تھوڑے ھی دن پہلے جب دلی میں آزاد ھند کی پارلیمنٹری حکومت باضابطہ قایم ھو گئی تو اُس کا روپ دیکھ کر گاندھی جی کے منھ سے نکل پڑا:—"یہ تو ایک بہت بڑی بلا آ گئی ! مجھے اب اِس بلا سے لڑنا پڑیگا !"

اب ھم ذرا اپنی آجکل کی شاسن ویوستھا کی طرف ایک نگاہ ڈالیں ۔ ھمارے آجکل کے ادھکتر راجکاجی نیتا انگریزوں کی دی ھوئی شکشا پائے ھوئے اور انگریزی وچاروں میں ھی پلے ھوئے تھے ۔ قدرتی طور پر وہ انگریزی شاسن پدھتی کے دلدادہ تھے ۔ اپنے دیش میں اچھی سے اچھی نیت کے ساتھ بھی وہ اُسی کی نقل کر سکتے تھے۔ یہی اُنھوں نے کیا—وھی پارلیمنٹری طرز' وھی دو سدن' وھی چناؤ کے ڈھنگ' انگلینڈ کے بادشاہ کی جگہہ بھارت کا راشٹرپتی' گورنروں اور لفٹیننٹ گورنروں کا وھی سلسلہ' پارلیمنٹ اور دھارا سبھاؤں کے اندر وھی سرکاری دل (Treasury Benches) اور وِرودھی دل (Opposition) اور وھی دھواں دھار تقریریں ۔ حالت یہاں تک پہونچ چکی ھے کہ ھمارے سوتنتر دلوں اور ورودھی دلوں کے بڑے سے بڑے نیتا بھی ایمانداری کے ساتھ مانتے اور کہتے ھیں کہ شاسن چاھے کسی بھی دل کے ھاتھوں میں ھو اچھے شاسن کے لئے اچھے اور زبردست ورودھی دلوں کا ھونا ضروری ھے ۔ بنا الگ الگ اور کم یا ادھک ایک دوسرے کے پرتی اسپردھی راجکاجی دلوں کے وہ شاسن کی کلپنا بھی نہیں کر سکتے۔ اِسی لئے ھم میں سے بہت سے روس اور چین جیسے دیشوں کی بابت یہ سن کر کہ وھاں الگ الگ راجکاجی پارٹیاں نہیں ھیں' یا اگر ھیں تو ایک دوسرے کے ورودھی یا پرتی اسپردھی نہیں ھیں' حیران رہ جاتے ھیں اور یہ سمجھ ھی نہیں سکتے کہ اِس طرح کے کسی بھی دیش کی حکومت اچھی اور جنتا کے لئے ھتکر حکومت کیسے ھو سکتی ھے ۔

پارٹیوں کے آدھار پر شاسن ویوستھا دوسرے کسی دیش کے لئے کہاں تک ھتکر ثابت ھوئی ھے یا نہیں یا اِس سمے ھتکر ھے یا نہیں اِس سوال میں ھم ابھی نہیں پڑنا چاھتے ۔ ھم کیول اپنے دیش کی آجکل کی ویوستھا کو ھی ذرا اور پاس سے دیکھنا چاھتے ھیں ۔

आजकल की सरकारें

दुनिया के अन्दर एक एक जमाने में एक एक चीज़ का खास ज़ोर होता है. उसीके अनुसार कोई ज़माना धर्म प्रधान समझा जाता है, कोई संस्कृति प्रधान, कोई अर्थ प्रधान इत्यादि. कभी कभी एक ही समय में अलग अलग देशों में अलग अलग चीज़ों का ज़ोर होता है. आजकल लगभग सारी दुनिया में राजनीति का बोल बाला है. इसलिये इस युग को राजनीति प्रधान युग कहा जा सकता है. धर्म, सदाचार, अर्थ, संस्कृति, कला और साहित्य सब को आज हम अधिकतर राजनीति ही की निगाह से देखते हैं. राजनीति आज हमारे सारे मानव जीवन पर छाई हुई है. इसीलिये राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता ही सब जगह आज दुनिया के नेता माने जाते हैं.

कहा जाता है कि मानव इतिहास के शुरू में मनुष्य और पशुओं में बहुत कम अन्तर था. धीरे धीरे मनुष्य ने अपने मस्तिष्क के सहारे उन्नति करना शुरू किया. कुटुम्ब बना. समाज बना. छोटे छोटे गिरोह बने. उन गिरोहों में प्रबन्ध और संचालन के लिये सरदार होने लगे. धीरे धीरे राजा बने, सम्राट बने, और राजा और प्रजा का अन्तर पैदा हुआ.

दुनिया के स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली समाज शास्त्र की अधिकतर किताबें मनुष्य की सबसे पहले की जंगली हालत से शुरू होती हैं. राजनीति की अधिकतर किताबें राजाओं और सम्राटों के युग से शुरू होती हैं.

आजकल अकसर कहा जाता है कि राजाओं या सम्राटों यानी बादशाहों या शहनशाहों का ज़माना बड़े अन्धकार का ज़माना था. उसी से गुलामी का रिवाज चला, राजा और प्रजा, मालिक और गुलाम का अन्तर पैदा हुआ, समाज में ऊँच नीच की बात आई. दूसरों को चूस कर थोड़े से बड़ा बनने वालों और लाखों और करोड़ों दलित, नादार चुसने वालों में दुनिया बंट गई, इत्यादि.

यह भी कहा जाता है कि जिसे आजकल डेमोक्रेसी, जमहूरियत, प्रजातन्त्र, जनतन्त्र या लोकशाही कहा जाता है उसने जनम लेकर दुनिया और दुनिया की जनता को मुसीबत के उस गड्ढे में से निकाला. इस तरह की अधिकतर बातों में सचाई का एक अंश तो होता ही है, फिर चाहे वह रुपये में छै आने हो या दस आने. इस तरह के जनतंत्र की सबसे बड़ी मिसालें आज संयुक्त राज अमरीका और इंगलैन्ड की दी जाती हैं. भारत का आजकल का विधान भी, यूँ तो कहीं से कुछ और कहीं से कुछ लेकर तैयार किया गया है, पर अधिकतर प्रजातंत्र या जनतन्त्र की इसी कल्पना पर ढला हुआ है.

آجکل کی سرکاریں

دنیا کے اندر ایک، ایک زمانے میں ایک ایک چیز کا خاص زور ہوتا ہے۔ اسی کے انوسار کوئی زمانہ دھرم پردھان سمجھا جاتا ہے، کوئی سنسکرتی پردھان، کوئی ارتھ پردھان اتیادی۔ کبھی کبھی ایک ہی سمے میں الگ الگ دیشوں میں الگ الگ چیزوں کا زور ہوتا ہے۔ آجکل لگ بھگ ساری دنیا میں راجنیتی کا بول بالا ہے۔ اس لئے اس یگ کو راجنیتی پردھان یگ کہا جا سکتا ہے۔ دھرم، سداچار، ارتھ، سنسکرتی، کلا اور ساہتیہ سب کو آج ہم ادھکتر راجنیتی ہی کی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ راجنیتی آج ہمارے سارے مانو جیون پر چھائی ہوئی ہے۔ اسی لئے راجنیتک نیتا اور کاریہ کرتا ہی سب جگہ آج دنیا کے نیتا مانے جاتے ہیں۔

کہا جاتا ہے کہ مانو اتہاس کے شروع میں منشیہ اور پشوؤں میں بہت کم انتر تھا۔ دھیرے دھیرے منشیہ نے اپنے مستشک کے سہارے انتی کرنا شروع کیا۔ کٹمب بنا۔ سماج بنا۔ چھوٹے چھوٹے گروہ بنے۔ ان گروہوں میں پربندھ اور سنچالن کے لئے سردار ہونے لگے۔ دھیرے دھیرے راجا بنے، سمراٹ بنے، اور راجا اور پرجا کا انتر پیدا ہوا۔

دنیا کے اسکولوں میں پڑھائی جانے والی سماج شاستر کی ادھکتر کتابیں منشیہ کی سب سے پہلے کی جنگلی حالت سے شروع ہوتی ہیں۔ راجنیتی کی ادھک تر کتابیں راجاؤں اور سمراٹوں کے یگ سے شروع ہوتی ہیں۔

آجکل اکثر کہا جاتا ہے کہ راجاؤں یا سمراٹوں یعنی بادشاہوں یا شہنشاہوں کا زمانہ بڑے اندھکار کا زمانہ تھا۔ اسی سے غلامی کا رواج چلا، راجا اور پرجا، مالک اور غلام کا انتر پیدا ہوا، سماج میں اونچ نیچ کی بات آئی۔ دوسروں کو چوس کر تھوڑے سے بڑا بنے والوں اور لاکھوں اور کروڑوں دلت، نادار چسنے والوں میں دنیا بٹ گئی، اتیادی۔

یہ بھی کہا جاتا ہے کہ جسے آجکل ڈیموکریسی، جمہوریت، پرجا تنتر، جن تنتر یا لوک شاہی کہا جاتا ہے اس نے جنم لیکر دنیا اور دنیا کی جنتا کو مصیبت کے اس گڑھے میں سے نکالا۔ اس طرح کی ادھکتر باتوں میں سچائی کا ایک انش تو ہوتا ہی ہے، پھر چاہے وہ روپئے میں چھ آنے ہو یا دس آنے۔ اس طرح کے جن تنتر کی سب سے بڑی مثالیں آج سنیکت راج امریکہ اور انگلینڈ کی دی جاتی ہیں۔ بھارت کا آجکل کا ودھان بھی، یوں تو کہیں سے کچھ اور کہیں سے کچھ لیکر تیار کیا گیا ہے، پر ادھکتر پرجاتنتر یا جن تنتر کی اسی کلپنا پر ڈھلا ہوا ہے۔

अमरीका या इंगलैंड बना देने के ही चक्कर में पड़े हुए हैं. दूसरी तरफ़ विदेशों के साथ अपने सम्बन्ध में हम शान्ति और अहिंसा के उस रास्ते पर चलने की कोशिश कर रहे हैं जो राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने हमारे सामने रखा था. कभी कभी तो हम लगभग उन्हीं के शब्दों में उन्हीं के भावों को प्रगट भी करते रहते हैं. यह है आजकल के भारत का दो रुख़ा पन.

इस दो रुख़ी चाल के चलने में सब से बड़ी भूल हम यह कर रहे हैं कि हम एक ऐसे बुनियादी उसूल को भूल जाते हैं कि जो जड़ और चेतन यानी बेजान और जानदार दोनों तरह की सृष्टि में साफ़ काम करता हुआ दिखाई देता है. वह उसूल यह है कि कोई भी परस्पर विरोधी शक्तियाँ जब एक साथ मैदानों में छोड़ दी जाती हैं तो वह दोनों एक दूसरे को काटकर अपने को नष्ट कर देती हैं. एक ही देश की शासन नीति में हिंसा और अहिंसा को साथ-साथ चलाने की यह कोशिश देश को अन्दर से और बाहर से दोनों तरफ़ से बेहद खोखला करती जा रही है. अगर भारत एक बार इस बात को समझ ले और पक्के इरादे के साथ देश के अन्दर की व्यवस्था को अपनी पुरानी कलचर से मिलाकर चले, अपनी औद्योगिक और आर्थिक आकांक्षाओं यानी सनअती और माली प्रोग्रामों को अपने नैतिक और रूहानी उसूलों के साथ मिलाकर चले, और निडरता और सच्चाई के साथ 'पीसफ़ुल को-एगज़िस्टेन्स यानी शान्ति पूर्वक सब के साथ मिलकर रहने के उन अहिंसात्मक उसूलों और आदर्शों पर ख़ुद अमल करने लगे जिन्हें वह दुनिया के सामने पेश कर रहा है, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि दुनिया की आजकल की कठिनाइयों पर भारत उसे वैसी ही अपूर्व विजय दिला सकता है जैसी विजय राष्ट्र-पिता ने हमें अपने आज़ादी के संग्राम में दिलाई है.

इसी भाव और इसी आशा के साथ हम अपने देश भाइयों और अपनी सरकार से यह अपील कर रहे हैं. हमें विश्वास है कि अगर हम सब मिलकर समय की आवश्यकता को समझें और उस पर अमल करें तो हम अमरीका और यूरप के नक़लची और उनके दस्तनिगर बने रहने के बजाय उनको राह दिखाने वाले और उन्हें नजात दिलाने वाले बन सकते हैं. आज हम साफ़-साफ़ उनके नक़लची और दस्तनिगर बने हुए हैं.

—सुन्दरलाल

امریکہ یا انگلینڈ بنا دینے کے ہی چکر میں پڑے ہوئے ہیں ۔ دوسری طرف ودیشوں کے ساتھ اپنے سمبندھ میں ہم شانتی اور اہنسا کے اُس راستے پر چلنے کی کوشش کر رہے ہیں جو راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے ہمارے سامنے رکھا تھا ۔ کبھی کبھی تو ہم لگ بھگ اُنہیں کے شبدوں میں اُنہیں کے بھاؤں کو پرگٹ بھی کرتے رہتے ہیں ۔ یہ ہے آجکل کے بھارت کا دورخاپن ۔

اِس دو رخی چال کے چلنے میں سب سے بڑی بھول ہم یہ کر رہے ہیں کہ ہم ایک ایسے بنیادی اُصول کو بھول جاتے ہیں کہ جو جڑ اور چیتن یعنی بےجان اور جاندار دونوں طرح کی سرشٹی میں صاف کام کرتا ہوا دکھائی دیتا ہے ۔ وہ اُصول یہ ہے کہ کوئی بھی پرسپر ورودھی شکتیاں جب ایک ساتھ میدان میں چھوڑ دی جاتی ہیں تو وہ دونوں ایک دوسرے کو کاٹ کر اپنے کو نشٹ کر دیتی ہیں ۔ ایک ہی دیش کی شاسن نیتی میں ہنسا اور اہنسا کو ساتھ ساتھ چلانے کی یہ کوشش دیش کو اندر سے اور باہر سے دونوں طرف سے بےحد کھوکھلا کرتی جا رہی ہے ۔ اگر بھارت ایکبار اِس بات کو سمجھ لے اور پکے ارادے کے ساتھ دیش کے اندر کی ویوستھا کو اپنی پرانی کلچر سے ملا کر چلے‘ اپنی آودیوگک اور آرتھک آکانشاؤں یعنی صنعتی اور مالی پروگراموں کو اپنے نیتک اور روحانی اُصولوں کے ساتھ ملاکر چلے‘ اور نڈرتا اور سچائی کے ساتھ 'پیسفل کوایگزسٹینس' یعنی شانتی پوروک سب کے ساتھ مل کر رہنے کے اُن اہنساتمک اُصولوں اور آدرشوں پر خود عمل کرنے لگے جنہیں وہ دنیا کے سامنے پیش کر رہا ہے‘ تو اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ دنیا کی آجکل کی کٹھنائیوں پر بھارت اُسے ویسی ہی اپورو وجے دلا سکتا ہے جیسی وجے راشٹر پتا نے ہمیں اپنے آزادی کے سنگرام میں دلائی ہے ۔

اِسی بھاؤ اور اِسی آشا کے ساتھ ہم اپنے دیش بھائیوں اور اپنی سرکار سے یہ اپیل کر رہے ہیں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ اگر ہم سب ملکر سمے کی آوشیکتا کو سمجھیں اور اُس پر عمل کریں تو ہم امریکہ اور یورپ کے نقلچی اور اُن کے دست نگر بنے رہنے کے بجائے اُن کو راہ دکھانے والے اور انہیں نجات دلانے والے بن سکتے ہیں ۔ آج ہم صاف صاف اُن کے نقلچی اور دست نگر بنے ہوئے ہیں ۔

—سندر لال ۔

लेकिन सवाल यह है कि इस मामले में पहल कौन करे, और कैसे करे ?

मेरी राय में इस सवाल का जवाब सीधा और साफ़ है. जवाब यह है कि यह पहल भारत ही कर सकता है और उसे ही करनी चाहिये. भारत ही को सबसे पहले अपने सब हथियार फेंक देने चाहियें और अपनी सब फ़ौजें बरख़ास्त कर देनी चाहियें. भारत ही इस पर तुरन्त और पूरी तरह अमल करके दिखा सकता है.

इस के कारण भी साफ़ हैं और भारत के प्राचीन और हाल के इतिहास के पन्नों पर मोटे अक्षरों में लिखे हुए हैं. प्राचीन समय में अशोक ने दुनिया को एक नया रास्ता ऐसे बड़े पैमाने पर दिखाया कि जिस से उस समय उसी की सारी नैतिक बुनियादें हिल गईं. अशोक के उस कारनामे ने ही महात्मा गांधी के आगमन के लिये ज़मीन तैयार की जिसने उनके उसूलों, उनके तरीक़ों, उनके अहिंसात्मक उपायों, और उनकी आज़ादी की लड़ाई और उसकी अन्तिम विजय को मुमकिन बना दिया.

पर कठिनाई यह है कि भारत की पुरानी मज़हबी और रूहानी तहज़ीब के साथ यूरप की दुनिया और माद्दा परस्ती के भयंकर टकराव ने भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक अजीब दो रुख़ी और दो दिली पैदा कर दी है. इस द्वंद्व या दो रुख़े पन ने जब तक महात्मा गांधी जीवित रहे, उनके स्वतंत्रता संग्राम में बराबर तरह तरह की रुकावटें डालीं जिनसे उन के अहिंसात्मक मिशन को काफ़ी नुक़सान पहुँचा और वह जैसा चाहिये था कामयाब न हो सका. उन के मरते ही हमारे इस दो रुख़ेपन ने देश की लगभग सारी शक्ति को पच्छिमी राहों पर डाल दिया. मगर फिर भी हमारी यह ग़लत रवी और कमज़ोरी ने ज़माने के उस रुख़, हालात और उन ज़रूरतों को न बदल सकी जिन्होंने महात्मा गाँधी को जन्म दिया था और न दुनिया की उन शक्तियों को नष्ट कर सकी जिन की मदद से महात्मा गाँधी भारत को अपने ढंग से आज़ादी दिलाने में कामयाब हो सके.

इस दुविधा या दो रुख़े पन को ठीक ठीक समझने के लिये हमें एक बार अपने देश के अन्दर की हालत और अपने विदेशी सम्बन्धों दोनों को पूरी तरह समझना होगा और दोनों का मुक़ाबला करके देखना होगा. इन दोनों का मुक़ाबला करने से पता चलेगा कि एक तरफ़ तो देश के अंदर के प्रोग्राम, प्रबन्ध और व्यवस्था में, और देश को आगे बढ़ाने की योजनाओं में हमने अपने आप को बिलकुल पच्छिमी विचारों और पच्छिमी तरीक़ों के हवाले कर रखा है, और देश के प्रबन्ध और फ़ौजों के संगठन दोनों में हमने जीवन के वही आदर्श अपने सामने रख रखे हैं जो अमरीका और यूरप के सामने रहे हैं, यहां तक कि हम अपने देश को

لیکن سوال یہ ہے کہ اِس معاملے میں پہل کون کرے، اور کیسے کرے ؟

میری رائے میں اِس سوال کا جواب سیدھا اور صاف ہے ۔ جواب یہ ہے کہ یہ پہل بھارت ہی کر سکتا ہے اور اُسے ہی کرنی چاہئے ۔ بھارت ہی کو سب سے پہلے اپنے سب ہتھیار پھینک دینے چاہئیں اور اپنی سب فوجیں برخاست کر دینی چاہئیں ۔ بھارت ہی اِس پر ترنت اور پوری طرح عمل کر کے دکھا سکتا ہے ۔

اِس کے کارن بھی صاف ہیں اور بھارت کے پراچین اور حال کے اِتہاس کے پنوں پر موٹے اکشروں میں لکھے ہوئے ہیں ۔ پراچین سمے میں اشوک نے دنیا کو ایک نیا راستہ ایسے بڑے پیمانے پر دکھایا کہ جس سے اُس سمے اُسی کی ساری نیتک بنیادیں ہل گئیں. اشوک کے اُس کارنامے نے ہی مہاتما گاندھی کے آگمن کے لئے زمین تیار کی جس نے اُن کے اُصولوں، اُن کے طریقوں، اُن کے اہنساتمک اُپایوں، اور اُن کی آزادی کی لڑائی اور اُس کی انتم وجے کو ممکن بنا دیا ۔

پر کٹھنائی یہ ہے کہ بھارت کی پرانی مذہبی اور روحانی تہذیب کے ساتھ یورپ کی دنیا اور مادہ پرستی کے بھینکر ٹکراؤ نے بھارت کے راشٹریہ جیون میں ایک عجیب دورخی اور دو دلی پیدا کر دی ہے ۔ اِس دوندھ یا دو رخے پن نے جب تک مہاتما گاندھی جیوت رہے۔ اُن کے سوتنترتا سنگرام میں برابر طرح طرح کی روکاوٹیں ڈالیں جن سے اُن کے اہنساتمک مشن کو کافی نقصان پہونچا اور وہ جیسا چاہئے تھا کامیاب نہ ہو سکا ۔ اُن کے مرتے ہی ہمارے اِس دورخے پن نے دیش کی لگ بھگ ساری شکتی کو پچھمی راہوں پر ڈال دیا ۔ مگر پھر بھی ہماری یہ غلط روی اور کمزوری نے زمانے کے اُس رخ، حالات اور اُن ضرورتوں کو نہ بدل سکی جنہوں نے مہاتما گاندھی کو جنم دیا تھا اور نہ دنیا کی اُن شکتیوں کو نشٹ کر سکی جن کی مدد سے مہاتما گاندھی بھارت کو اپنے ڈھنگ سے آزادی دلانے میں کامیاب ہو سکے ۔

اِس دویدھا یا دورخے پن کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے ہمیں ایکبار اپنے دیش کے اندر کی حالت اور اپنے ودیشی سمبندھوں دونوں کو پوری طرح سمجھنا ہوگا اور دونوں کا مقابلہ کر کے دیکھنا ہوگا ۔ ان دونوں کا مقابلہ کرنے سے پتہ چلیگا کہ ایک طرف تو دیش کے اندر کے پروگرام، پربندھ اور ویوستھا میں، اور دیش کو آگے بڑھانے کی یوجناؤں میں میں ہم اپنے آپ کو بالکل پچھمی وچاروں اور پچھمی طریقوں کے حوالے کر رکھا ہے، اور دیش کے پربندھ اور فوجوں کے سنگٹھن دونوں میں ہم نے جیون کے وہی آدرش اپنے سامنے رکھ رکھے ہیں جو امریکہ اور یورپ کے سامنے رہے ہیں، یہاں تک کہ ہم اپنے دیش کو

हमने इसे 'शान्ति युद्ध' कहा है. शान्ति युद्ध सचमुच एक अनोखा वाक्य है. यह आन्दोलन भी अपने ढंग का वैसा ही नया और अनोखा है. लेकिन जाने या अनजाने समय की आवश्यकताओं और माँगों को जितनी अच्छी तरह यह आन्दोलन ज़ाहिर कर रहा है उतनी अच्छी तरह दुनिया का कोई आन्दोलन इस समय नहीं कर रहा है. वास्तव में यही आन्दोलन इस दौर का 'युग धर्म' है.

यह बात भी क़ुदरती और लाज़मी है कि इस शान्ति-युद्ध का सब से ख़ास मक़सद, और आख़िरी मंज़िल वह तहरीक हो जो आज 'डिस-आरमामेन्ट' के रूप में चल रही है यानी यह कि दुनिया की सब क़ौमों के सब हथियार ले लिये जावें और दुनिया की सब फ़ौजें बरख़ास्त कर दी जावें. इस शान्ति आन्दोलन की असली और आख़री जीत हार इन्हीं फ़ौजों और हथियारों के कम या ख़तम हो जाने के सवाल पर निर्भर है. इसी एक सवाल पर यह भी निर्भर है कि मानव जाति का जीवन ख़त्म होगा या मानव इतिहास में एक ऐसे नए युग और नई सभ्यता का उदय होगा जो अब तक के सब युगों और सब सभ्यताओं से कहीं अधिक शानदार होगी. आजकल दुनिया के सामने जितनी समस्याएँ हैं उन सब के हल की कसौटी भी डिसआरमामेन्ट ही है. अगर एक बार यह सवाल ठीक ठीक हल हो जाये तो बाक़ी के वह सब सवाल धीरे-धीरे अपने आप शान्ति और समझौते के साथ हल हो जायँगे जो आज मानव जाति को एक ज़बरदस्त भूल भुलैयां में डाले हुए हैं और जिनका हल आसानी से किसी को सूझ नहीं रहा है. पिछले पचास बरस के अन्दर जैसे-जैसे हिंसा के नये नये हथियार और तरीक़े निकलते गये वैसे ही आदमी के अन्दर सच्ची मानवता और इनसानियत भी ज़ोरों के साथ पैदा होती गई. यह मानवता ही शान्ति आन्दोलन में राष्ट्रों के एक दूसरे को अधिक अच्छी तरह समझने की इच्छा में और पूरी या अधूरी हथियार-बन्दी में अपने को प्रगट कर रही है.

एक ओर सोवियत रूस की राजनीति और उसकी पालिसी में जो ज़बरदस्त उलट फेर हुए हैं उन्होंने और दूसरी ओर भारत की अहिंसात्मक तटस्थता यानी ग़ैर जानिबदारी और इसके साथ भारत के 'पंचशील' के उसूल ने जो विश्व शान्ति और विश्व मैत्री की बुनियाद हो सकता है, इन दोनों ने मिलकर पूरी कामयाबी के साथ दुनिया की नैतिक तराज़ू के पलड़े को शान्ति की तरफ़ झुका दिया है. सारी दुनिया अब शान्ति के हक़ में आवाज़ ऊँची कर रही है. दुनिया को इससे जो शक्ति मिली है और जो अवसर मिला है उससे यदि ठीक ठीक और सच्चाई के साथ फ़ायदा उठाया जा सके तो मानव इतिहास में एक नया पन्ना पलटा जा सकता है जिसके लिये सारी मानव जाति इस समय भूकी और प्यासी है.

ہم نے اِسے 'شانتی یدھ' کہا ہے ۔ شانتی یدھ سچ مچ ایک انوکھا واکیہ ہے ۔ یہ آندولن بھی اپنے ڈھنگ کا ویسا ہی نیا اور انوکھا ہے۔ لیکن جانے یا انجانے سمے کی آوشیکتاؤں اور مانگوں کو جتنی اچھی طرح یہ آندولن ظاہر کر رہا ہے اُتنی اچھی طرح دنیا کا کوئی آندولن اِس سمے نہیں کر رہا ہے ۔ واستو میں یہی آندولن اِس دور کا 'یگ دھرم' ہے ۔

یہ بات بھی قدرتی اور لازمی ہے کہ اِس شانتی یدھ کا سب سے خاص مقصد اور آخری منزل وہ تحریک ہو جو آج 'ڈس آرما مینٹ' کے روپ میں چل رہی ہے یعنی یہ کہ دنیا کی سب قوموں کے سب ہتھیار لے لیئے جاویں اور دنیا کی سب فوجیں برخاست کردی جاویں۔ اِس شانتی اندولن کی اصلی اور آخری جیت ہار اِنہیں فوجوں اور ہتیاروں کے کم یا ختم ہو جانے کے سوال پر نربھر ہے ۔ اِسی ایک سوال پر یہ بھی نربھر ہے کہ مانو جاتی کا جیون ختم ہوگا یا مانو اِتہاس میں ایک ایسے نئے یگ اور نئی سبھیتا کا اُدے ہوگا جو اب تک کے سب یگوں اور سب سبھیتاؤں سے کہیں ادھک شاندار ہوگی۔ آجکل دنیا کے سامنے جتنی سمسیائیں ہیں اُن سب کے حل کی کسوٹی بھی ڈس آرمامینٹ ہی ہے ۔ اگر ایک بار یہ سوال ٹھیک ٹھیک حل ہو جائے تو باقی کے وہ سب سوال دھیرے دھیرے اپنے آپ شانتی اور سمجھوتے کے ساتھ حل ہو جائینگے جو آج مانو جاتی کو ایک زبردست بھول بھلیاں میں ڈالے ہوئے ہیں اور جن کا حل آسانی سے کسی کو سوجھ نہیں رہا ہے ۔ پچھلے پچاس برس کے اندر جیسے جیسے ہنسا کے نئے نئے ہتیار اور طریقے نکلتے گئے ویسے ہی آدمی کے اندر سچی مانوتا اور انسانیت بھی زوروں کے ساتھ پیدا ہوتی گئی ۔ یہ مانوتا ہی شانتی اندولن میں راشٹروں کے ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے کی اچھا میں اور پوری یا ادھوری ہتیار بندی میں اپنے کو پرگٹ کر رہی ہے ۔

ایک اور سوویت روس کی راجنیتی اور اس کی پالیسی میں جو زبردست اُلٹ پھیر ہوئے ہیں اُنہوں نے اور دوسری اور بھارت کی اہنساتمک، تٹستھتا یعنی غیر جانب داری اور اِس کے ساتھ بھارت کے 'پنچشیل' کے اصول نے جو وشو شانتی اور وشو میتری کی بنیاد ہو سکتا ہے' اِن دونوں نے مل کر پوری کامیابی کے ساتھ دنیا کی نیتک ترازو کے پلڑے کو شانتی کی طرف جھکا دیا ہے ۔ ساری دنیا اب شانتی کے حق میں آواز اُونچی کر رہی ہے ۔ دنیا کو اِس سے جو شکتی ملی ہے اور جو اوسر ملا ہے اُس سے یدی ٹھیک ٹھیک اور سچائی کے ساتھ فائدہ اُٹھایا جا سکے تو مانو اتہاس میں ایک نیا پنّا پلٹا جا سکتا ہے جس کے لئے ساری مانوتا جاتی اِس سمے بھوکی اور پیاسی ہے ۔

शान्ति युद्ध

अंगरेजी में एक मशहूर कहावत है कि आदमी के जीवन और उसके तरह तरह के मामलों में कभी कभी इस तरह की एक ज़ोरदार लहर आती है जिससे अगर उसी समय पूरा पूरा फ़ायदा उठा लिया जाय तो आदमी की क़िस्मत जाग जाती है और अगर आदमी उस समय चूक जाय तो लहर के एक बार चढ़कर उतर जाने के बाद सिवाय बरबादी और पछतावे के और कुछ बाक़ी नहीं रह जाता, यहाँ तक कि उस बरबादी से फिर पनप सकना भी कठिन हो जाता है. आज दुनिया में ठीक इसी तरह की एक लहर आई हुई है. मानव जाति का सबसे अधिक भला इसी में है कि इस लहर से वह पूरा पूरा फ़ायदा उठा ले और उसे पीछे हट जाने का मौक़ा न दे.

यह लहर दुनिया का वह ज़बरदस्त आन्दोलन है जिसे शान्ति आन्दोलन, अमन तहरीक या पीस मूवमेन्ट कहा जाता है. कोई कोई इसे "पीस-वार" यानी शान्ति-युद्ध या 'शान्ति के लिए युद्ध' भी कहते हैं. यह अद्भुत युद्ध वास्तव में हिंसा और अहिंसा के बीच का युद्ध है. इस युद्ध के अन्त में चाहे हिंसा जीते और चाहे अहिंसा जीते मगर हक़ीक़त यह है कि इतना बड़ा संग्राम मानव जीवन में हिंसा और अहिंसा के बीच आज तक दुनिया में कभी नहीं हुआ था. इस संग्राम में बाज़ी और दाँव भी बहुत गहरे लगे हुए हैं हार जीत केवल इसमें नहीं है कि मानव सभ्यता और संस्कृति ज़िन्दा रहे या न रहे, बल्कि इस बात की भी है कि मानव जाति ज़िन्दा बचे या न बचे.

हिंसा ने दुनिया में इस समय वह विराट रूप और एक ऐसे भयंकर ज्वालामुखी पहाड़ का सा रूप धारण कर लिया है कि उस का क़ुदरती नतीजा यह हुआ कि इनसान के दिलो दिमाग़ के अन्दर अहिंसा और शान्ति की जो प्रवृत्तियाँ और रुजहान सोए हुए थे वह एकदम जगह जगह जाग उठे. इन सब हितकर प्रवृत्तियों और रुजहानों को विश्वव्यापी और आलमगीर शान्ति आन्दोलन में अपने को ज़ाहिर करने का मौक़ा मिल रहा है. इसीलिये यह आन्दोलन इतना गहरा, ज़बरदस्त और व्यापक दिखाई देता है.

شانتی یدھ

انگریزی میں ایک مشہور کہاوت ہے کہ آدمی کے جیون اور اس کے طرح طرح کے معاملوں میں کبھی کبھی اس طرح کی ایک زوردار لہر آتی ہے جس سے اگر اسی سمے پورا پورا فایدہ اٹھا لیا جائے تو آدمی کی قسمت جاگ جاتی ہے اور اگر آدمی اس سمے چوک جائے تو لہر کے ایک بار چڑھ کر اتر جانے کے بعد سوائے بربادی اور پچھتاوے کے اور کچھ باقی نہیں رہ جاتا ۔ یہاں تک کہ اس بربادی سے پھر پنپ سکنا بھی کٹھن ہو جاتا ہے ۔ آج دنیا میں ٹھیک اسی طرح کی ایک لہر آئی ہوئی ہے ۔ مانو جاتی کا سب سے ادھک بھلا اسی میں ہے کہ اس لہر سے وہ پورا پورا فایدہ اٹھا لے اور اسے پیچھے ہٹ جانے کا موقع نہ دے ۔

یہ لہر دنیا کا وہ زبردست آندولن ہے جسے شانتی آندولن' امن تحریک یا پیس موومینٹ کہا جاتا ہے ۔ کوئی کوئی اسے "پیس-وار" یعنی شانتی یدھ یا 'شانتی کے لئے یدھ' بھی کہتے ہیں ۔ یہ ادبھت یدھ واستو میں ہنسا اور اہنسا کے بیچ کا یدھ ہے ۔ اس یدھ کے انت میں چاہے ہنسا جیتے اور چاہے اہنسا جیتے مگر حقیقت یہ ہے کہ اتنا بڑا سنگرام مانو جیون میں ہنسا اور اہنسا کے بیچ آج تک دنیا میں کبھی نہیں ہوا تھا ۔ اس سنگرام میں بازی اور داؤں بھی بہت گہرے لگے ہوئے ہیں ۔ ہار جیت کیول اس میں نہیں ہے کہ مانو سبھیتا اور سنسکرتی زندہ رہے یا نہ رہے بلکہ اس بات کی بھی ہے کہ مانو جاتی زندہ بچے یا نہ بچے ۔

ہنسا نے دنیا میں اس سمے وہ ورات روپ اور ایک ایسے بھینکر جوالامکھی پہاڑ کا سا روپ دھارن کر لیا ہے کہ اس کا قدرتی نتیجہ یہ ہوا کہ انسان کے دل و دماغ کے اندر اہنسا اور شانتی کی جو پرورتیاں اور رجحان سوئے ہوئے تھے وہ ایکدم جگہ جگہ جاگ اٹھے ۔ ان سب ہتکر پرورتیوں اور رجحانوں کو وشوویاپی اور عالمگیر شانتی آندولن میں اپنے کو ظاہر کرنے کا موقع مل رہا ہے ۔ اسی لئے یہ آندولن اتنا گہرا' زبردست اور ویاپک دکھائی دیتا ہے ۔

बहादुरी की सराहते हुए अपनी पिछली दुश्मनी को भुला दिया. इस दोस्ती से सिखों में फिर कुछ हौसला बढ़ा और वह अंग्रेजी फ़ौज में भरती होने लगे जहाँ वे अपनी सिख निशानियों को जैसे के तैसा ही क़ायम रख सकते थे. लेकिन और सब बातों में सिखों में कोई जीवन नहीं रह गया था. उनमें न तो धार्मिक जीवन था और न क़ौमी जीवन. वह उन्हीं पुराने देवताओं को पूजने लगे थे और वही पुरानी और लचर रस्में अदा करते थे जिनमें से उन्हें निकालने के लिये उनके गुरुओं ने निहायत बहादुरी से कोशिश की थी. सिखों की तालीम और पाँच निशानियाँ सिर्फ़ बराए नाम रह गईं. आजकल की संघ सभा सिखों को फिर पुराने ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश कर रही है.

بہادری کو سراہتے ہوئے اپنی پچھلی دشمنی کو بھلا دیا ۔ اس دوستی سے سکھوں میں پھر کچھ حوصلہ بڑھا اور وہ انگریزی فوج میں بھرتی ہونے لگے جہاں وے اپنی سکھ نشانیوں کو جیسا کے تیساہی قائم رکھ سکتے تھے ۔ لیکن اور سب باتوں میں سکھوں میں کوئی جیون نہیں رہ گیا تھا ۔ اُن میں نہ تو دھارمک جیون تھا اور نہ قومی جیون۔ وہ اُنہیں پرانے دیوتاؤں کو پوجنے لگے تھے اور وہی پرانی اور لچر رسمیں اداکرتے تھے جن میں سے اُنہیں نکالنے کے لئے اُن کے گروؤں نے نہایت بہادری سے کوشش کی تھی ۔ سکھوں کی تعلیم اور اور پانچ نشانیاں صرف برائے نام رہ گئیں ۔ آجکل کی سنگھ سبھا سکھوں کو پھر پرانے ٹھیک راستے پر لانے کی کوشش کر رہی ہے ۔

नन्द सिंह बेरार, खैरसिंह अंबाला और करमसिंह मान वगैरा. एक मुसलमान को जिसका नाम सोनता था सिख बनाकर उसका नाम भी रामसिंह रखा गया था और उसकी लड़कियों की शादी रामगढ़िया के सरदारों के यहाँ हुई थी. मेदों के भाई हरिसिंह पैदाइशी मुसलमान थे. उनको भाई ओनेसिंह कंथल वाले ने सिख बनाया था. एक मुसलमान, जिसका सिख नाम निहालसिंह रखा गया था, गुरुद्वारा भिलयानी का महंत हो गया था. महाराज नरेन्द्र सिंह पटियाला नरेश के इशारे से एक शख्स सदर उद्दीन सिख बनाया गया था और महंत दयासिंह ने उसका नाम फतह सिंह रखा था. यह शख्स 26 साल तक धर्मशाला फूल का महंत रहा और सन1869 में मर गया. इस तरह महाराजा रंजीतसिंह के ज़माने में हज़ारों मुसलमान मर्द और औरतें सिख धर्म के हलक़े में शामिल हुए थे.3

लेकिन महाराजा रंजीतसिंह की हुकूमत में हिन्दू असर ने सिख धर्म को सख्त धक्का पहुँचाया. उसका असर ख़ालसा सिपाहियों पर भी पड़ा. अगरचे इन सिपाहियों में सिख धम क़रीब क़रीब अपनी पुरानी पाकीज़गी में मौजूद था. नयी ऐश पसन्दी ने सिखों की सादगी और आज़ादी को बरबाद कर दिया. असल में सिख धर्म एक सादा और सख्त धर्म है और आसानी से सिख लोग ऐश और आराम की तरफ़ नहीं झुकते. सिखों के मज़हबी और दुनियावी रस्मों में अक्सर सिवाय भजन गाने और प्रार्थना करने के और कुछ नहीं होता.

एक महाराजा अपने बराबर वाले महाराजों में अपना मर्तबा किस तरह क़ायम रख सकता है जब तक कि वह गद्दी पर बैठने व अपनी शादी के मौक़े पर नजूमियों और पंडितों को बुलाकर उन रस्मों और जलसों को शानदार न बना दे. सिख राजाओं और अमीरों को सिख धर्म को अपनी पसन्द के मुताबिक़ बना लेना हमेशा मुश्किल रहा है. इसलिये जब कभी वह दिखावा और रस्में पूरी करना चाहते हैं तो सिख धर्म के दायरे के बाहर जाने के लिये मजबूर होते हैं.

महाराजा रंजीत सिंह के बाद जब बादशाहत सिर्फ़ जेवरों और क़ीमती कपड़ों तक ही रह गई तो ऊँचे ख़ान्दानों के लिये सिख धर्म भी सिर्फ़ पगड़ी और दाढ़ी का फ़ैशन रह गया. नतीजा यह हुआ कि आगे चलकर ऐसेलोगों ने, जिनके रहन सहन के तरीक़े सख्त और जिनमें ज़ब्त मौजूद था, सिख सरदारों के हाथ से हुकूमत छीन ली. आम सिखों में अभी पुरानी इस्प्रिट कुछ बाक़ी थी लेकिन वह भी गुरुद्वारों की हालत बदल जाने और लड़ाई में धक्का पहुँचने की वजह से कम होने लगी. अंग्रेज़ों ने उससे फ़ायदा उठाने की कोशिश की और सिखों की शरीफ़ाना

ننّد سنگھ بیرار، کھیر سنگھ انبالا اور کرم سنگھ مان وغیرہ ۔ ایک مسلمان کو جس کا نام سونتا تھا سکھ بناکر اُس کا نام بھی رام سنگھ رکھا گیا تھا اور اُس کی لڑکیوں کی شادی رام گڑیا کے سرداروں کے یہاں ہوئی تھی ۔ میدوں کے بھائی ہری سنگھ پیدائشی مسلمان تھے ۔ اُن کو بھائی اونے سنگھ کنتھل والے نے سکھ بنایا تھا۔ ایک مسلمان، جس کا سکھ نام نہال سنگھ رکھا گیا تھا، گرودوارا بھلیانی کا مہنت ہو گیا تھا ۔ مہاراج نریندر سنگھ پٹیالہ نریش کے اشارے سے ایک شخص صدر الدین سکھ بنایا گیا تھا اور مہنت دیا سنگھ نے اُس کا نام فتح سنگھ رکھا تھا ۔ یہ شخص 26 سال تک دھرم‌شالا پھول کا مہنت رہا اور سن 1869 میں مر گیا ۔ اِس طرح مہاراجہ رنجیت سنگھ کے زمانے میں ہزاروں مسلمان مرد اور عورتیں سکھ دھرم کے حلقے میں شامل ہوئے تھے ۔ 3

لیکن مہاراجہ رنجیت سنگھ کی حکومت میں ہندو اثر نے سکھ دھرم کو سخت دھکا پہنچایا ۔ اُس کا اثر خالصہ سپاہیوں پر بھی پڑا، اگرچہ اِن سپاہیوں میں سکھ دھرم قریب قریب اپنی پرانی پاکیزگی میں موجود تھا ۔ نئی عیش پسندی نے سکھوں کی سادگی اور آزادی کو برباد کر دیا ۔ اصل میں سکھ دھرم ایک سادا اور سخت دھرم ہے اور آسانی سے سکھ لوگ عیش اور آرام کی طرف نہیں جھکتے ۔ سکھوں کے مذہبی اور دنیاوی رسموں میں اکثر سوائے بھجن گانے اور پرارتھنا کرنے کے اور کچھ نہیں ہوتا ۔

ایک مہاراجہ اپنے برابر والے مہاراجوں میں اپنا مرتبہ کس طرح قائم رکھ سکتا ہے جب تک کی وہ گدی پر بیٹھنے و اپنی شادی کے موقع پر نجومیوں اور پنڈتوں کو بلا کر اُن رسموں اور اور جلسوں کو شاندار نہ بنا دے ۔ سکھ راجاؤں اور امیروں کو سکھ دھرم کو اپنی پسند کے مطابق بنا لینا ہمیشہ مشکل رہا ہے ۔ اِس لئے جب کبھی وہ دکھاوا اور رسمیں پوری کرنا چاہتے ہیں تو سکھ دھرم کے دائرے کے باہر جانے کے لئے مجبور ہوتے ہیں ۔

مہاراجہ رنجیت سنگھ کے بعد جب بادشاہت صرف زیوروں اور قیمتی کپڑوں تک ہی رہ گئی تو اُونچے خاندانوں کے لئے سکھ دھرم بھی صرف پگڑی اور داڑھی کا فیشن رہ گیا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آگے چل کر ایسے لوگوں نے، جن کے رہن سہن کے طریقے سخت اور جن میں ضبط موجود تھا، سکھ سرداروں کے ہاتھ سے حکومت چھین لی ۔ عام سکھوں میں ابھی پرانی اسپرٹ کچھ باقی تھی لیکن وہ بھی گرودواروں کی حالت بدل جانے اور لڑائی میں دھکا پہنچنے کی وجہ سے کم ہونے لگی ۔ انگریزوں نے اُس سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش کی اور سکھوں کی شریفانہ

रखा.3 ईसाई गिरजे के कुल हक़ तो उन्हीं लोगों को दिये जाते थे जो यहूदियों से ईसाई होते थे और जिनका ख़तना होता था.

इसी तरह जब पुराने सिख जिनको गुरु गोविन्द सिंह ने ख़ुद दीक्षा दी थी, शहीद हो गये और उनकी औलाद जिलावतनी (परदेस) में रहने के लिये मजबूर हो गई और संगतें बिना सरदारों के रह गईं तो वह पुराने रस्म रिवाजों और विश्वासों में ढल गईं. जो लोग छोटी क़ौमों में से आए थे उनसे और उन लोगों से फ़र्क़ होने लगा जो ऊँची जातों से आए थे. दीक्षा लेने के बाद भी कुछ को तो सिर्फ़ दरवाज़े पर ही जगह मिलती थी, और दूसरों को मन्दिर के अन्दर दाख़िल होने का हुक्म होता था. कुछ लोग ऐसे थे जो उस मुसीबत के ज़माने में खुले तौर पर सिख होने का इक़रार करने की हिम्मत नहीं करते थे. उनको इजाज़त दी गई कि वह सिख धर्म की ऊपरी निशानियों के बग़ैर ही काम चलाएँ और ऐसे आदमियों को 'सहजधारी' कहा गया. उन दिनों जब लम्बे केश रखना मौत को बुलाना था कोई आदमी उनके उस भेस बदलने पर ऐतराज़ करने का ख़्याल दिल में नहीं लाता था जो सहजधारियों ने अख़्तयार कर रखा था. उनको सिख धर्म पर पूरा ऐतक़ाद था मगर वह इसके लिये मरने को तैयार न थे. जिन सहजधारियों ने यह रियायती तरीक़ा अख़्तयार कर रखा था वह असली सिखों की बराबरी का दावा नहीं करते थे. यह अपने जिलावतन भाइयों की इसप्रिट और उनकी ज़ाहिरी शकल का हमेशा ख़्याल रखते थे और हर तरह उनकी मदद किया करते थे.

इस तरह सिख इसप्रिट और तर्ज़े ज़िन्दगी ख़ालसा की सूरत में उस वक़्त भी क़ायम रखा गया जबकि क़स्बों और शहरों में पाबन्दियाँ ढीली पड़ गईं थीं. सरदार रतनसिंह के लिखे हुए "पुन्य प्रकाश" में लिखा है कि मुसीबत के ज़माने के बाद भी जिसमें होकर वह गुज़र चुके थे लड़ने वाले सिखों के दिलों में पुरानी भावना अब भी साफ़ साफ़ और मुस्तैदी से मौजूद है. वह अब भी मूर्ति पूजा से दूर रहते हैं और नये तरीक़े पर शादी करते और पंथ की हुकूमत सब से बढ़कर मानते हैं. जो सुझाव (तजवीज़ें) उनकी संगत या पंचायत में तै होती हैं उन पर अमल करते हैं. जनेऊ, अवतार, जात पात या छुआ छूत को नहीं मानते और आज़ादी से उन लोगों को वापस ले लेते हैं जो मुसलमान हो गये थे. बहुत से मशहूर सिखों ने ऐसी मुसलमान औरतों से शादी की जिन्होंने सिख धर्म को अपना लिया था. उनमें से बाज़ के नाम यह हैं—अनूप सिंह जो चन्द्रथाल का रहने वाला ब्रह्मण था, सख़्तसिंह पेजगढ़ का खत्री था.

फिर भी बन्दा के सरहद फ़तह करने पर कुछ मुसलमानों ने सिख धर्म अख़्तयार किया था (दीक्षा दस्तूर हुलनीशा, मुसन्निफ़ बाज़ मोहम्मद).

رکھا ۔ 3 عیسائی گرجے کے کل حق تو انہیں لوگوں کو دیئے جاتے تھے جو یہودیوں سے عیسائی ہوتے تھے اور جن کا ختنہ ہوتا تھا ۔

اسی طرح جب پرانے سکھ جن کو گرو گووند سنگھ نے خود دیکشا دی تھی، شہید ہوگئے اور اُن کی اولاد جلاوطنی (پردیس) میں رہنے کے لئے مجبور ہو گئی اور سنگتیں بنا سرداروں کے رہ گئیں تو وہ پرانے رسم رواجوں اور وشواسوں میں ڈھل گئیں ۔ جو لوگ چھوٹی قوموں میں سے آئے تھے اُن سے اور اُن لوگوں سے فرق ہونے لگا جو اونچی ذاتوں سے آئے تھے ۔ دیکشا لینے کے بعد بھی کچھ کو تو صرف دروازے پر ہی جگہہ ملتی تھی اور دوسروں کو مندر کے اندر داخل ہونے کا حکم ہوتا تھا ۔ کچھ لوگ ایسے تھے جو اُس مصیبت کے زمانے میں کھلے طور پر سکھ ہونے کا اقرار کرنے کی ہمت نہیں کرتے تھے ۔ اُن کو اجازت دی گئی کہ وہ سکھ دھرم کی اوپری نشانیوں کے بغیر ہی کام چلائیں اور ایسے آدمیوں کو 'سہجدھاری' کہا گیا ۔ اُن دنوں جب لمبے کیش رکھنا موت کو بلانا تھا کوئی آدمی اُن کے اُس بھیس بدلنے پر اعتراض کرنے کا خیال دل میں نہیں لاتا تھا جو سہجدھاریوں نے اختیار کر رکھا تھا ۔ اُن کو سکھ دھرم پر پورا اعتقاد تھا مگر وہ اِس کے لئے مرنے کو تیار نہ تھے ۔ جن سہجدھاریوں نے یہ رعایتی طریقہ اختیار کر رکھا تھا وہ اصلی سکھوں کی برابری کا دعوہ نہیں کرتے تھے ۔ یہ اپنے جلاوطن بھائیوں کی اسپرٹ اور اُن کی ظاہری شکل کا ہمیشہ خیال رکھتے تھے اور ہر طرح اُن کی مدد کیا کرتے تھے ۔

اِس طرح سکھ اسپرٹ اور طرز زندگی خالصہ کی صورت میں اُس وقت بھی قائم رکھا گیا جب کہ قصبوں اور شہروں میں پابندیاں ڈھیلی پڑ گئیں تھیں ۔ سردار رتن سنگھ کے لکھے ہوئے "پنیہ پرکاش" میں لکھا ہے کہ مصیبت کے زمانے کے بعد بھی جس میں ہو کر وہ گذر چکے تھے لڑنے والے سکھوں کے دلوں میں پرانی بھاونا اب بھی صاف صاف اور مستعدی سے موجود ہے ۔ وہ اب بھی مورتی پوجا سے دور رہتے ہیں اور نئے طریقے پر شادی کرتے اور پنتھ کی حکومت سب سے بڑھ کر مانتے ہیں ۔ جو سوجھاؤ (تجویزیں) اُن کی سنگت یا پنچایت میں طے ہوتی ہیں اُن پر عمل کرتے ہیں ۔ جینیو، اوتار، ذات-پات یا چھوا چھوت کو نہیں مانتے اور آزادی سے اُن لوگوں کو واپس لے لیتے ہیں جو مسلمان ہو گئے تھے ۔ بہت سے مشہور سکھوں نے ایسی مسلمان عورتوں سے شادی کی جنہوں نے سکھ دھرم کو اپنا لیا تھا ۔ اُن میں سے بعض کے نام یہ ہیں— انوپ سنگھ جو چندر تھال کا رہنے والا برہمن تھا، سخت سنگھ پیج گڑھ کا کھتری تھا ۔

پھر بھی بندا کے سرحد فتح کرنے پر کچھ مسلمانوں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا (دیکشا دستورالنیشا، مصنف باز محمد) ۔

गुरु गोबिन्द सिंह ने बिलकुल साफ़-साफ़ कहा है कि सिख दूसरी क़ौमों से हमदर्दी और मोहब्बत रखते भी ऐसा न करें कि अपने मैयार को दूसरों के साथ मिलाकर गड़बड़ कर दें. सिख अपनी रसमों को चारों फ़िरक़ों के लोगों से अलग ही रखेंगे. वह सब से मुनासिब बर्ताव करेंगे लेकिन उनका विश्वास और ज़िन्दगी के काम का अमल सबसे अलग रहेगा." 2 सिख अपने उसूलों को बहुत दिनों तक बरक़रार रखे रहे और हिन्दू और मुसलमान दोनों के मेल से बहुत फ़ायदा उठाते रहे और अपनी तरक्क़ी को दोनों तरफ़ के ग़लत असर से बचाते रहे. लेकिन जब सिखों को मुग़ल हुकूमत से लड़ना पड़ा तो उनकी वह भावना कम होने लगी. गुरु गोबिन्द सिंह मोहब्बत के भन्डार होने के सबब से अपने दुश्मनों के दिलों में भी मोहब्बत पैदा कर सके. औरंगज़ेब का एक सिपहसालार सैयद बेग गुरु से जंग करने आया लेकिन उनसे मुलाक़ात होने पर उसे अफ़सोस हुआ और शर्म से लौटकर उसने अहद कर लिया कि ज़ुल्म की मदद के लिये मैं कभी जंग न करूँगा. बुद्धू-शाह, नबीखाँ और ग़नीखाँ मुसलमान ही थे जिन्होंने बहुत नाज़ुक वक्त पर गुरु की मदद की थी. सिखों से मुसलमानों की बढ़ती हुई नफ़रत का नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों में सिख धर्म की बढ़ती पर असर पड़ा और मुसलमानों का सिक्खों में शामिल होना कम होता गया. यहाँ तक कि जब बाद के मुग़ल बादशाहों की सख्तियाँ बाबा बन्दा के हिन्दुओं और सिखों के ख़िलाफ़ बढ़ गई तो सिखों में दीक्षा सिर्फ़ हिन्दुओं तक ही महदूद हो गई. नतीजा यह हुआ कि सिख धर्म ने जो नया ख्याल पैदा किया था उसमें पुराने हिन्दू ख्याल भी शामिल होने लगे.

यही हाल ईसाई धर्म का भी हुआ था. शुरू में जब ज्यादातर यहूदियों में से भी ईसाई बनते थे तो नये ईसाइयों के साथ पुराने यहूदी तरीक़े पर बर्ताव होता था. उस तरीक़े में अन्दर के हलक़े के मुरीदों और बाहर वाले मुरीदों में फ़र्क़ समझा जाता था.

अन्दर के हलक़े के मुरीदों का ख़तना हुआ करता था और वह यहूदी रस्म अदा किया करते थे, गिरजे के सब से अन्दर के हिस्से तक जाने के हक़दार होते थे और बाहर के हलक़े के मुरीदों को जो उन रस्मों की पाबन्दी न करते थे सिर्फ़ 'हमदर्द' समझा जाता था, उनको सिर्फ़ गिरजे के दरवाज़े पर ही पूजा करने की इजाज़त होती थी. ईसाइयों और ग़ैर यहूदियों में यही फ़र्क़

2. सूर्य प्रकाश—रुत 3—अध्याय 50.

گرو گوبند سنگھ نے بالکل صاف صاف کہا ہے کہ سکھ دوسری قوموں سے ہمدردی اور محبت رکھتے بھی ایسا نہ کریں کہ اپنے معیار کو دوسروں کے ساتھ ملا کر گڑبڑ کر دیں ۔ سکھ اپنی رسموں کو چاروں فرقوں کے لوگوں سے الگ ہی رکھیں گے ۔ وہ سب سے مناسب برتاؤ کریں گے لیکن اُن کا وشواس اور زندگی کے کام کا عمل سب سے الگ رہیگا ۔" 2 سکھ اپنے اُصولوں کو بہت دنوں تک برقرار رکھے رہے اور ہندو اور مسلمان دونوں کے میل سے بہت فائدہ اٹھاتے رہے اور اپنی ترقی کو دونوں طرف کے غلط اثر سے بچاتے رہے ۔ لیکن جب سکھوں کو مغل حکومت سے لڑنا پڑا تو اُن کی وہ بھاؤنا کم ہونے لگی ۔ گرو گوبند سنگھ محبت کے بھنڈار ہونے کے سبب سے اپنے دشمنوں کے دلوں میں بھی محبت پیدا کر سکے ۔ اورنگزیب کا ایک سپہ سالار سید بیگ گرو سے جنگ کرنے آیا لیکن اُن سے ملاقات ہونے پر اُسے افسوس ہوا اور شرم سے لوٹ کر اُس نے عہد کر لیا کہ ظلم کی مدد کے لئے میں کبھی جنگ نہ کرونگا ۔ بدھوشاہ' نبی خاں اور غنی خاں مسلمان ہی تھے جنھوں نے بہت نازک وقت پر گرو کی مدد کی تھی ۔ سکھوں سے مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی نفرت کا نتیجہ یہ ہوا کہ مسلمانوں میں سکھ دھرم کی بڑھتی پر اثر پڑا اور مسلمانوں کا سکھوں میں شامل ہونا کم ہوتا گیا ۔ یہاں تک کہ جب بعد کے مغل بادشاہوں کی سختیاں بابا بندا کے ہندوؤں اور سکھوں کے خلاف بڑھ گئیں تو سکھوں میں دیکشا صرف ہندوؤں تک ہی محدود ہو گئی ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سکھ دھرم نے جو نیا خیال پیدا کیا تھا اُس میں پرانے ہندو خیال بھی شامل ہونے لگے ۔

یہی حال عیسائی دھرم کا بھی ہوا تھا ۔ شروع میں جب زیادہ تر یہودیوں میں سے بھی عیسائی بنتے تھے تو نئے عیسائیوں کے ساتھ پرانے یہودی طریقے پر برتاؤ ہوتا تھا ۔ اُس طریقے میں اندر کے حلقے کے مریدوں اور باہر والے مریدوں میں فرق سمجھا جاتا تھا ۔

اندر کے حلقے کے مریدوں کا ختنہ ہوا کرتا تھا اور وہ یہودی رسم ادا کیا کرتے تھے' گرجے کے سب سے اندر کے حصے تک جانے کا حقدار ہوتے تھے اور باہر کے حلقے کے مریدوں کو جو اُن رسموں کی پابندی نہ کرتے تھے صرف 'ہمدرد' سمجھا جاتا تھا' اُن کو صرف گرجے کے دروازے پر ہی پوجا کرنے کی اجازت ہوتی تھی ۔ عیسائیوں اور غیر یہودیوں میں بھی فرق

2— سوریہ پرکاش—روت 3—ادھیائے 50 ۔

"न मैं मक्के को हज करने जाऊँ और न हिन्दुओं के तीर्थों में पूजा करने."

"मैं सिर्फ़ उस एक की बन्दगी करूँगा किसी दूसरे की नहीं."

"मैं न मूर्तियों को पूजूँगा और न नमाज़ पढ़ूँगा."

"मैं अपने दिल को सिर्फ़ उसके क़दमों में लगाऊँगा जो सब से ऊपर है."

"हम न हिन्दू हैं और न मुसलमान."

"हमने अपने तन और अपनी जानों को अल्लाह व राम के नाम क़ुर्बान कर दिया है."—भैरो राग,

दबिस्तान का लेखक छटे और सातवें गुरुओं के ज़माने में पंजाब आया था. वह सिखों की बाबत लिखता है—

"गुरु नानक के सिख मूर्ति पूजा को बुरा कहते हैं. उनका विश्वास है कि सब गुरू गुरु नानक के ही अवतार हैं. वह हिन्दू मन्त्रों को नहीं पढ़ते और न हिन्दू मन्दिरों की कोई ख़ास इज़्ज़त करते हैं. वे हिन्दू अवतारों को नहीं मानते और न संस्कृत ही पढ़ते हैं जो हिन्दुओं की राय में देवताओं की ज़बान है."

सिखों को हिन्दू शास्त्रों में लिखे हुए रीत रिवाज पर यक़ीन नहीं और न वे खाने पीने में छूत छात की पाबंदियों के क़ायल हैं. एक आलिम हिन्दू प्रतापमल ने जब यह देखा कि उसका लड़का इसलाम की तरफ़ झुका है तो उसने उससे कहा था—"तुमको मुसलमान होने की कोई ज़रूरत नहीं, अगर तुम खाने पीने की आज़ादी चाहते हो तो अच्छा हो कि तुम सिख हो जाओ."

गुरु के लन्गरख़ाने में और बराबरी सिखाने के लिये सब का एक साथ बिठाकर खाना खाने के सिवाय सिख अपने गुरुद्वारों में किसी तरह की कोई बड़ी रसम अदा नहीं करते. इसलिये आपस में झगड़े की कोई वजह नहीं पैदा होती और न उनमें अलग अलग फ़िरक़े ही पैदा हुए. अमृतसर के गुरुद्वारे में मज़हबी पूजा सिर्फ़ यह होती है कि रात दिन अखंड पाठ ग्रंथ साहब का जारी रखा जाता है. सिर्फ़ आधी रात के क़रीब एक दो घन्टे बन्द रहता है. बाक़ी तमाम वक़्त रागी लोग ग्रन्थ साहब के शब्द बारी बारी से मिलकर गाया करते हैं. किसी तरह की कोई लैकचर बाज़ी या बहस मुबाहिसा वहाँ नहीं होता और इसीलिये कोई हुज्जत आपस में पैदा नहीं होती. सिखों का यह सादा और ख़ूबसूरत रिवाज 250 बरस पहले सुजानराय बटाला वाले ने देखा था. उसने 1667 ईसवी में अपनी किताब "ख़लास उत्तवारीख़ में लिखा है—

"उनके लिये सिर्फ़ पूजा का यह तरीक़ा है कि वह अपने गुरुओं के बनाये भजनों को मीठे स्वरों में साज़ और बाजों के साथ मिलकर गाते हैं."

"نہ میں مکے کو حج کرنے جاؤں اور نہ هندؤں کے تیرتھوں میں پوجا کرنے ."

"میں صرف اُس ایک کی بندگی کرونگا کسی دوسرے کی نہیں ."

"میں نہ مورتیوں کو پوجوں گا اور نہ نماز پڑھوں گا ."

"میں اپنے دل کو صرف اُس ایک کے قدموں میں لگاؤنگا جو سب سے اُوپر ہے ."

"ہم نہ هندو ہیں اور نہ مسلمان ."

"ہم نے اپنے تن اور اپنی جانوں کو اللہ و رام کے نام قربان کر دیا ہے ."—بھیروں راگ .

دبستان کا لیکھک چھٹے اور ساتویں گرؤں کے زمانے میں پنجاب آیا تھا . وہ سکھوں کی بابت لکھتا ہے—

"گرو نانک کے سکھ مورتی پوجا کو برا کہتے ہیں . اُن کا وشواس ہے کہ سب گرو گرونانک کے ہی اوتار ہیں . وہ هندو منتروں کو نہیں پڑھتے اور نہ هندو مندروں کی کوئی خاص عزت کرتے ہیں . وے هندو اوتاروں کو نہیں مانتے اور نہ سنسکرت ہی پڑھتے ہیں جو هندؤں کی رائے میں دیوتاؤں کی زبان ہے ."

سکھوں کو هندو شاستروں میں لکھے ہوئے ریت رواج پر یقین نہیں اور نہ وے کھانے پینے میں چھوت-چھات کی پابندیوں کے قائل ہیں . ایک عالم هندو پرتاپ مل نے جب یہ دیکھا کہ اُس کا لڑکا اِسلام کی طرف جھکا ہے تو اُس نے اُس سے کہا تھا—"تم کو مسلمان ہونیکی کوئی ضرورت نہیں' اگر تم کھانے پینے کی آزادی چاہتے ہو تو اچھا ہوکہ تم سکھ ہو جاؤ ."

گرو کے لنگرخانے میں اور برابری سکھانے کےلئے سب کو ایک ساتھ بیٹھا کر کھانا کھانے کے سوائے سکھ اپنے گرودواروں میں کسی طرح کی کوئی بڑی رسم ادا نہیں کرتے . اِس لئے آپس میں جھگڑے کی کوئی وجہ نہیں پیدا ہوتی اور نہ اُن میں الگ الگ فرقے ہی پیدا ہوئے . امرتسر کے گرودوارے میں مذہبی پوجا صرف یہ ہوتی ہے کہ رات دن اکھنڈ پاٹھ گرنتھ صاحب کا جاری رکھا جاتا ہے . صرف آدھی رات کے قریب ایک دو گھنٹے بند رہتا ہے . باقی تمام وقت راگی لوگ گرنتھ صاحب کے شبد باری باری سے مل کر گایا کرتے ہیں . کسی طرح کی کوئی لیکچر بازی یا بحث مباحثہ وہاں نہیں ہوتا اور اِس لئے کوئی حجت آپس میں پیدا نہیں ہوتی . سکھوں کا یہ سادہ اور خوبصورت رواج 250 برس پہلے سوجان رائے بٹالہ والے نے دیکھا تھا . اُس نے 1667 عیسوی میں اپنی کتاب "خلاص التواریخ" میں لکھا ہے—

اُن کے لئے صرف پوجا کا یہ طریقہ ہے کہ وہ اپنے گرؤں کے بنائے بھجنوں کو میٹھے سروں میں ساز اور باجوں کے ساتھ ملکر گاتے ہیں .

बिला किसी फ़र्क़ के सबको अपने मजहब में शामिल कर लेने के अलावा और भी ऐसे तरीक़े थे जिनसे सिख धर्म की इस भावना को क़ायम रखा जाता था. "गुरुओं का लंगर" जिसमें बिला लिहाज छोटे बड़े सबको खाना मिलता था, इसलिये क़ायम किया गया था कि वे तमाम रुकावटें जो फ़िरक़े और मजहब के तास्सुब की वजह से क़ायम थीं दूर हो जायें और सब बराबर हो जायें. इस लिये यह क़ायदा रखा गया था कि जो भी खाना खाने आये, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सबको एक पंगत में बैठकर एक साथ खाना खाना होगा, यहाँ तक कि अकबर और राजा साहब हरीपुर को भी, जब वह गुरु अमरदास से मुलाक़ात करने गये थे, उसी तरह सब के साथ बैठकर खाना खाना पड़ा था. यह जाहिर करने के लिये कि मुसलमान और नीच जात के हिन्दू सब वैसे ही रहते हैं जैसे ऊँची जात वाले, गुरु अर्जुन देव ने 1 ग्रंथ साहब में इन लोगों की साखियाँ भी शामिल की हैं. इनमें कबीर साहब मुसलमान जुलाहे थे, फ़रीद एक मुसलमान फ़क़ीर, भीखन एक मुसलिम आलिम, साईं नाई, नाम देव छीपी, रविदास मोची, मर्दाना मुसलमान, मिरदहा और बहुत से दूसरे मुसलमान रागी शामिल हैं. यह बात और भी साफ़ हो जाती है जब हम यह देखते हैं कि सिख लोग उस पूरे ग्रंथ साहब को जिसमें यह सब राग साखियाँ वग़ैरा शामिल ईश्वरी या इलहामी समझते हैं और उसकी बेहद इज्जत करते हैं.

इन बातों का असर उस जमाने के सिखों की अदालतों और रस्म रिवाजों पर बराबर दिखाई पड़ता है. सिख लोग हिन्दुओं और मुसलमानों को एक ही निगाह से देखते थे और मजहबी तौर पर अपने को इनमें से किसी फ़रीक़ में शामिल नहीं करते थे. गुरु नानक का पहला क़ौल जब उन्होंने प्रचार शुरू किया था यह था कि "ना कोई हिन्दू न मुसलमान और जब उनका चोला छूटा तो हिन्दू मुसलमान दोनों उनको अपना बताते थे. गुरु अर्जुन ने अपनी किताब में निहायत दिलेरी से साफ़-साफ़ कहा है—

"मैं न हिन्दू व्रत रखता हूँ और न रमजान के रोजे."

"मैं सिर्फ़ उसकी इबादत करता हूँ, वही मेरी आख़िरी पनाह है."

"मैंने हिन्दू और तुर्क दोनों से नाता तोड़ लिया है."

"मैं सिर्फ़ एक मालिक को मानता हूँ जो अल्लाह है."

1. "सारी संगत एक साथ बिला लिहाज बरन या आश्रम के लंगरख़ाने में दाख़िल होकर एक पंगत में बैठती थी और समझा जाता था कि सब एक बराबर साफ़ और पाक हैं"—सूर्य प्रकाश रास 1—बाब 30

بلا کسی فرق کے سب کو اپنے مذہب میں شامل کر لینے کے علاوہ اور بھی ایسے طریقے تھے جن سے سکھ دھرم کی اس بھاؤنا کو قائم رکھا جاتا تھا۔ "گروؤں کا لنگر" جس میں بلالحاظ چھوٹے بڑے سب کو کھانا ملتا تھا، اس لئے قائم کیا گیا تھا کہ وہ تمام رکاوٹیں جو فرقے اور مذہب کے تعصب کی وجہ سے قائم تھیں دور ہو جائیں اور سب برابر ہو جائیں۔ اس لئے یہ قاعدہ رکھا گیا تھا کہ جو بھی کھانا کھانے آئے، چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان، سب کو ایک پنگت میں بیٹھ کر ایک ساتھ کھانا ہوگا، یہاں تک کہ اکبر اور راجہ صاحب ہری پور کو بھی، جب وہ گرو امرداس سے ملاقات کرنے گئے تھے، اسی طرح سب کے ساتھ بیٹھ کر کھانا کھانا پڑا تھا۔ یہ ظاہر کرنے کے لئے کہ مسلمان اور نیچ ذات کے ہندو سب ویسے ہی رہتے ہیں جیسے اونچی ذات والے، گرو ارجن دیو نے 1 گرنتھ صاحب میں ان لوگوں کی ساکھیاں بھی شامل کی ہیں۔ ان میں کبیر صاحب مسلمان جولاہے تھے، فرید ایک مسلمان فقیر، بھیکھن ایک مسلم عالم، سائیں نائی، نام دیو چھیپی، روی داس موچی، مردانہ مسلمان، مردہا اور بہت سے دوسرے مسلمان راگی شامل ہیں۔ یہ بات اور بھی صاف ہو جاتی ہے جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ سکھ لوگ اس پورے گرنتھ صاحب کو جس میں یہ سب راگ ساکھیاں وغیرہ شامل ہیں ایشوری یا الہامی سمجھتے ہیں اور اس کی بےحد عزت کرتے ہیں۔

ان باتوں کا اثر اس زمانے کے سکھوں کی عدالتوں اور رسم رواجوں پر برابر دکھائی پڑتا ہے۔ سکھ لوگ ہندوؤں اور مسلمانوں کو ایک ہی نگاہ سے دیکھتے تھے اور مذہبی طور پر اپنے کو ان میں سے کسی فریق میں شامل نہیں کرتے تھے۔ گرو نانک کا پہلا قول جب انہوں نے پرچار شروع کیا تھا یہ تھا کہ "نا کوئی ہندو نا مسلمان" اور جب ان کا چولا چھوٹا تو ہندو مسلمان دونوں ان کو اپنا بتاتے تھے۔ گرو ارجن نے اپنی کتاب میں نہایت دلیری سے صاف صاف کہا ہے—

"میں نہ ہندو ورت رکھتا ہوں اور نہ رمضان کے روزے۔"

"میں صرف اس کی عبادت کرتا ہوں، وہی میری آخری پناہ ہے۔"

"میں نے ہندو اور ترک دونوں سے ناتا توڑ لیا ہے۔"

"میں صرف ایک مالک کو مانتا ہوں جو اللہ ہے۔"

1 "ساری سنگت ایک ساتھ بلالحاظ برن یا آشرم کے لنگر خانے میں داخل ہو کر ایک پنگت میں بیٹھتی تھی اور سمجھا جاتا تھا کہ سب ایک برابر صاف اور پاک ہیں۔"—سوریہ پرکاش، راس 1—باب 30۔

सज्जन—जोकि पहले एक डाकू था मगर गुरु नानक की नसीहत से सिख हुआ और उनके धर्म का उसने प्रचार किया; एक नवाब का लड़का जिसको डला के भाई यारू ने जलन्धर दोआब में सिख बनाया था; वज़ीरख़ाँ—अकबर का एक नायब वज़ीर था और ख़ुफ़िया तौर पर गुरु अर्जुन देव की तालीम पर अमल करता था; बुधनशाह—गुरु नानक का बड़ा भक्त था और आख़िर में गुरु गोविन्द के ज़माने में सिख होकर ही मरा; बीबी गुल्दन—लाहौर के क़ाज़ी की लड़की थी और उसको गुरु हर गोबिन्द ने सिख धर्म की तालीम दी थी; सैफ़ाबाद रियासत पटियाला के रहने वाले शफ़ी उद्दीन को गुरु तेग़ बहादुर ने ऐन अपनी गिरफ़्तारी से पहले सिख बनाया था; सैयद शाह को भाई नन्दलाल ने सिख बनाया. एक मुसलमान फ़क़ीर इब्राहीम ने सब से पहले अपने को गुरु गोबिन्द सिंह के रू बरू सिख धर्म अख़्तियार करने के लिये पेश किया था. गुरु ने उसका नाम अजमेर सिंह रखा और सिखों को एक हुक्म जारी किया कि "अगर कोई मुसलमान अदना हो या आला, सचाई से ख़ालसा धर्म मानना चाहता हो तो मुनासिब है कि उसको दीक्षा दी जाय और संगत में शामिल कर लिया जाय."

बहुत से नामों में से जिन्होंने सिख धर्म अख़्तियार किया था यह सिर्फ़ चन्द नाम हैं. इन नये सिक्खों की हालत जाँच करने पर, जो गुरु नानक और उनके बाद संगत में शामिल हुए थे, ऐसा मालूम होता है कि पठान, सैयद और शिया जिनको मुग़लों ने शकिस्त दे दी थी सिख मज़हब को ज़्यादा पसन्द करते थे, जबकि मग़रूर मुग़ल उन लोगों का धर्म अख़्तियार करना अपनी तौहीन समझते थे जिनको उन्होंने जंग में शकिस्त दी थी. जहाँगीर को गुरु अर्जुन के ख़िलाफ़, जैसा कि जहाँगीर ने ख़ुद "तुज़क जहाँगीरी" में लिखा है, सब से बड़ी शिकायत यह थी कि "बहुत से सीधे सादे हिन्दू ही नहीं बल्कि बहुत से बेवक़ूफ़ मुसलमान भी गुरु अर्जुन की दीक्षा और तर्क़ों से मोहित हो जाते हैं." गुरु ने बहुत से ऐसे लोगों को भी दीक्षा दी थी जो नीची जातों के थे, मसलन रामदास जो मोची थे. गुरु गोविन्द सिंह ने पहुल (सिख बनने) का दरवाज़ा सब के लिये बराबर खोल दिया था. यहाँ तक कि मेहतरों को भी दीक्षा दी थी, और उन्हें उनके मज़बूत विश्वास के लिये 'मज़हबी' कहा जाता था. उन मज़हबियों को बाज़ वक़्त 'रँघरीटा' भी कहते हैं. इसकी वजह यह हो सकती है कि उनमें से बहुत से लोग 'राँगड़' ज़ात के मुसलमान थे. इन लोगों ने गुरु तेग़ बहादुर की कटी हुई लाश को निकाल लाने में निहायत जवाँमर्दी से काम लिया था. इसपर उनको गुरु गोविन्द सिंह ने 'रँघरेटे के बेटे' कहकर पुकारा था.

سجن—جو کہ پہلے ایک ڈاکو تھا مگر گرونانک کی نصیحت سے سکھ ہوا اور اُن کے دھرم کا اُس نے پرچار کیا؛ ایک نواب کا لڑکا جس کو ڈلا کے بھائی یارو نے جالندھر دو آب میں سکھ بنایا تھا؛ وزیر خاں—اکبر کا ایک نائب وزیر تھا اور خفیہ طور پر گرو ارجن دیو کی تعلیم پر عمل کرتا تھا؛ بدھن شاہ—گرو نانک کا بڑا بھگت تھا اور آخر میں گرو گوبند کے زمانے میں سکھ ہو کر ہی مرا؛ بی بی گلدن— لاہور کے قاضی کی لڑکی تھی اور اُس کو گرو ہرگوبند نے سکھ دھرم کی تعلیم دی تھی؛ سیفاباد ریاست پٹیالہ کے رہنے والے شفیع الدین کو گرو تیغ بہادر نے عین اپنی گرفتاری سے پہلے سکھ بنایا تھا؛ سید شاہ کو بھائی نند لال نے سکھ بنایا. ایک مسلمان فقیر ابراہیم نے سب سے پہلے اپنے کو گرو گوبند سنگھ کے روبرو سکھ دھرم اختیار کرنے کے لئے پیش کیا تھا. گرو نے اُس کا نام اجمیر سنگھ رکھا اور سکھوں کو ایک حکم جاری کیا کہ "اگر کوئی مسلمان ادنیٰ ہو یا اعلیٰ، سچائی سے خالصہ دھرم ماننا چاہتا ہو تو مناسب ہے کہ اُس کو دیکشا دی جائے اور سنگت میں شامل کر لیا جائے."

بہت سے ناموں میں سے جنھوں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا یہ صرف چند نام ہیں. ان نئے سکھوں کی حالت جانچ کرنے پر، جو گرو نانک اور اُن کے بعد سنگت میں شامل ہوئے تھے، ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پٹھان، سید اور شیعہ جن کو مغلوں نے شکست دے دی تھی سکھ مذہب کو زیادہ پسند کرتے تھے، جب کہ مغرور مغل اُن لوگوں کا دھرم اختیار کرنا اپنی توہین سمجھتے تھے جن کو اُنھوں نے جنگ میں شکست دی تھی. جہانگیر کو گرو ارجن کے خلاف، جیسا کہ جہانگیر نے خود "تزک جہانگیری" میں لکھا ہے، سب سے بڑی شکایت یہ تھی کہ "بہت سے سیدھے سادے ہندو ہی نہیں بلکہ بہت سے بیوقوف مسلمان بھی گرو ارجن کی دیکشا اور طریقوں سے موہت ہو جاتے ہیں." گرو نے بہت سے ایسے لوگوں کو بھی دیکشا دی تھی جو نیچی ذاتوں کے تھے. مثلاً رام داس جو موچی تھے. گرو گوبند سنگھ نے پہول (سکھ بننے) کا دروازہ سب کے لئے برابر کھول دیا تھا. یہاں تک کہ مہتروں کو بھی دیکشا دی تھی اور اُنھیں ان کے مضبوط وشواس کے لئے 'مذہبی' کہا جاتا تھا. اُن مذہبیوں کو بعض وقت 'رنگھریٹا' بھی کہتے ہیں، اِس کی وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ اُن میں سے بہت سے لوگ 'رانگڑ' ذات کے مسلمان تھے. اِن لوگوں نے گرو تیغ بہادر کی کٹی ہوئی لاش کو نکال لانے میں نہایت جوانمردی سے کام لیا تھا. اِس پر اُن کو گرو گوبند سنگھ نے 'رنگھریٹے کے بیٹے' کہہ کر پکارا تھا.

दोबारा जारी करने का मौक़ा मिल गया था. सिख गुरुद्वारे मठधारी महन्तों के हाथ में पड़ गये और संगतों से जब पहले के हम-मज़हब सिख ख़त्म हो गये तो हुकूमत उन्हीं महन्तों के हाथ में आ गई जो गुरुद्वारों पर क़ब्ज़ा रखते थे.

एक बात और भी थी जिस से सिख धर्म के सच्चाई के साथ बढ़ने में ख़लल पड़ गया. सिक्खों की तारीख़ के आख़िरी ज़माने में सिख धर्म में दाख़िला सिर्फ़ एक मौक़े के लिये रह गया. चूँकि इस पहलू पर आम तौर से विचार नहीं किया गया है इसलिये मैं इसको कुछ तफ़सील के साथ बयान करना चाहता हूँ.

सिख धर्म सब जातों और फ़िरक़ों के लिये था और शुरू में हिन्दू और मुसलमान दोनों में से ही सिख लिये जाते थे. गुरु नानक ने एशियाई कोचक, ईरान और दूसरे मुल्कों में, जहाँ जहाँ वह गये थे, बहुत से मुरीद बनाये थे. सेवादास ने अपने ग्रंथ "जन्म साखी" (1528 ईसवी) में बहुत सी ऐसी जगहों का ज़िक्र किया है जैसे "पठानों की किरी", जहाँ बहुत से मुसलमानों ने सिख धर्म अपनाया था. सिक्खों की इस फ़ेहरिस्त से जो भाई गुरुदास (1629) ने अपने ग्यारहवें गीत में दी है इसमें और नामों के साथ ऐसे नाम भी लिखते हैं जैसे मर्दाना जो गुरु नानक के साथ रहता था, दौलतख़ाँ पठान जो बाद में एक सिख संत हुआ है और गूजर लोहार जो गुरु अंगद का चेला था. उसने अपने गाँव में सिख धर्म की लोगों को तालीम दी थी. इनके अलावा हमज़ा और मियाँ जमाल बराबर गुरु गोविन्द की ख़िदमत में हाज़िर रहते थे. तारीख़ में हमको मुसल-मानों के बहुत से नाम मिलते हैं जो सिख धर्म को सराहते थे; मसलन राय बूला रतलवन्डी का मुसलमान सरदार जो गुरुनानक के माँ बाप की निस्बत भी गुरु नानक की .ज़्यादा क़द्र करता था. अल्लाहयार और हुसेनी शाह, जिन्होंने गुरु अमरदास से रूहानी सबक़ लिया था, क़रीब क़रीब सिख ही समझे जा सकते हैं. अकबर की रवादारी पर और सती के रिवाज के बन्द करने पर भी गुरु अमरदास का असर था. साईं मियाँ मीर का गुरु अर्जुन देव से इस क़दर गहरा ताल्लुक़ था कि गुरु जी अमृतसर के गुरु-द्वारे की नींव रखने के लिये साईं मियाँ मीर को लाये थे. गुरुद्वारे की नींव साईं मियाँ मीर के हाथों की रखी हुई है. दाराशिकोह का सिखों की तरफ़ इतना .ज़्यादा झुकाव था कि इसी वजह से औरंगज़ेब ने उनके साथ .ज़्यादतियाँ की थीं. सैयद बुद्धू शाह साकिन सुधौरा, कालेख़ाँ और सैयद बेग गुरु गोविन्द सिंह की तरफ़ से लड़े थे. इनके सिवाय और बहुत से ऐसे लोग भी थे जिन्होंने सिख धर्म क़ुबूल कर लिया था. इनमें सिर्फ़ थोड़े से नाम यहाँ दिये जा सकते हैं. मसलन्—

دوبارہ جاری کرنے کا موقعہ مل گیا تھا ۔ سکھ گردوارے مٹھ دھاری مہنتوں کے ہاتھ میں پڑ گئے اور سنگتوں سے جب پہلے کے ہم مذہب سکھ ختم ہو گئے تو حکومت اُنہیں مہنتوں کے ہاتھ میں آ گئی جو گردواروں پر قبضہ رکھتے تھے ۔

ایک بات اور بھی تھی جس سے سکھ دھرم کے سچائی کے ساتھ بڑھنے میں خلل پڑ گیا ۔ سکھوں کی تاریخ کے آخری زمانے میں سکھ دھرم میں داخلہ صرف ایک موقعہ کے لئے رہ گیا ۔ چونکہ اِس پہلو پر عام طور سے وچار نہیں کیا گیا ہے اِس لئے میں اِس کو کچھ تفصیل کے ساتھ بیان کرنا چاہتا ہوں ۔

سکھ دھرم سب جاتوں اور فرقوں کے لئے تھا اور شروع میں ہندو اور مسلمان دونوں میں سے ہی سکھ لئے جاتے تھے۔ گرونانک نے ایشیائی کوچک، ایران اور دوسرے ملکوں میں، جہاں جہاں وہ گئے تھے، بہت سے مرید بنائے تھے ۔ سیوا داس نے اپنے گرنتھ "جنم ساکھی" (1628 عیسوی) میں بہت سی ایسی جگہوں کا ذکر کیا ہے جیسے "پٹھانوں کی کری" جہاں بہت سے مسلمانوں نے سکھ دھرم اپنایا تھا ۔ سکھوں کی اِس فہرست سے جو بھائی گرداس (1559) نے اپنے گیارھویں گیت میں دی ہے اِس میں اور ناموں کے ساتھ ایسے نام بھی لکھتے ہیں جیسے مردانہ جو گرو نانک کے ساتھ رہتا تھا، دولت خاں پٹھان جو بعد میں ایک سکھ سنت ہوا ہے اور گوجر لوہار جو گرو انگد کا چیلا تھا ۔ اُس نے اپنے گاؤں میں سکھ دھرم کی لوگوں کو تعلیم دی تھی ۔ اِن کے علاوہ ہمزہ اور میاں جمال برابر گروگوبند کی خدمت میں حاضر رہتے تھے۔ تاریخ میں ہم کو مسلمانوں کے بہت سے نام ملتے ہیں جو سکھ دھرم کو سراہتے تھے؛ مثلاً رائے بولا رتل ونڈی کا مسلمان سردار جو گرونانک کے ماں باپ کی نسبت بھی گرونانک کی زیادہ قدر کرتا تھا ۔ اللہ یار اور حسینی شاہ، جنہوں نے گرو امرداس سے روحانی سبق لیا تھا، قریب قریب سکھ ہی سمجھے جا سکتے ہیں ۔ اکبر کی رواداری پر اور ستی کے رواج کے بند کرنے پر بھی گرو امرداس کا اثر تھا ۔ سائیں میاں میر کا گرو ارجن دیو سے اِس قدر گہرا تعلق تھا کہ گرو جی امرتسر کے گردوارے کی نیو رکھنے کے لئے سائیں میاں میر کو لائے تھے ۔ گردوارے کی نیو سائیں میاں میر کے ہاتھوں کی رکھی ہوئی ہے ۔ دارا شکوہ کا سکھوں کی طرف اتنا زیادہ جھکاؤ تھا کہ اِسی وجہ سے اورنگ زیب نے اُن کے ساتھ زیادتیاں کی تھیں ۔ سید بدھو شاہ، ساکن سدھورا، کالے خاں اور سید بیگ گرو گوبند سنگھ کی طرف سے لڑے تھے ۔ اِن کے سوائے اور بہت سے ایسے لوگ بھی تھے جنہوں نے سکھ دھرم قبول کر لیا تھا ۔ اِن میں سے صرف تھوڑے سے نام یہاں دیئے جا سکتے ہیں ۔ مثلاً—

सिख मजहब का दरमियानी रास्ता

प्रोफ़ेसर तेजासिंह एम० ए०

सिख धर्म उस वक़्त तक सिर्फ़ एक मजहबी आन्दोलन था जब तक कि दुनियावी ताक़त की हविस का उस पर असर न हुआ था. शुरू के सिख गुरुओं ने जालिम हाकिमों से लड़ाई जरूर लड़ी थी मगर वह किसी लोभ में न आये थे. छटे सिख गुरु ने जितनी लड़ाइयाँ लड़ीं उन सब में फ़तह पाई और दसवें गुरु साहब ने भी ज्यादातर लड़ाइयों में फ़तह पाई थी. मगर उन लड़ाइयों में जीतने पर भी उन्होंने एक इंच जमीन पर भी क़ब्जा नहीं किया. जो कुछ जमीन उनके पास थी उसको उन्होंने या तो नक़द रुपया देकर खरीदा था या उनके चेलों ने उन्हें नजर दी थी.

सिख गुरुओं के पास जब ऐशो आराम के सारे सामान मौजूद थे तब भी उन्होंने अपना रहन सहन सादा ही बनाये रक्खा. जिन रागियों की साखियाँ ग्रंथ साहब में जमा की गई हैं उन्होंने हमेशा औसत दर्जे के रहन सहन के तरीक़े को ही सराहा है. इसे वे राजयोग कहा करते थे—ऐसा योग जो त्याग और भोग दोनों के बीच का रास्ता है. यह कहना ठीक नहीं है कि पाँचवें या छटे सिख गुरु के जमाने से सिख धर्म का मेआर गिर गया और गुरुओं को सच्चा बादशाह और उनकी गद्दी को तख्त और सिखों की संगत को दरबार कहा जाने लगा. लेकिन शुरू गुरुओं और खासकर उन रागियों की तहरीरों से जिनकी साखियाँ दूसरे गुरु के वक़्त से ही लिखी जाने लगी थीं यह साफ़ मालूम होता है कि इस तरह के लफ़्ज बाद में नहीं चले बल्कि शुरू से ही काम में आते रहे हैं. एशिया में फ़क़ीर महात्माओं का दर्जा बादशाहों से बड़ा माना जाता रहा है और उनकी शान में इसी तरह की पदवियाँ काम में लाई जाती रही हैं.

सिख धर्म में तब्दीली बाद में जरूर हुई लेकिन यह तब्दीली उस वक़्त से ही नजर आती हैं जब आखिरी गुरु साहब पंजाब से चले गये थे और दक्खिन में जाकर उन्होंने शरीर त्याग दिया था. गुरु के जिन चुने हुए भक्तों ने गुरु गोबिन्दसिंह से सबक़ पाया था और जिनकी मौजूदगी से आम सिक्खों में सच्चाई की भावना क़ायम रह सकती थी उनको गुरु के शरीर त्यागने के बाद कमजोरों की हिफ़ाजत करने के लिये अपनी जिन्दगी बचाना और जालिमों से लड़ना पड़ गया और उन्हें आम लोगों से दूर चला जाना पड़ा. उस वक़्त आम सिक्खों को या तो अपनी क़िस्मत पर भरोसा करना पड़ा या उन पुराने पेशेवर गुरुओं से सबक़ लेना पड़ा जिन को अब रुपया लेकर अपने पुराने पेशे को

سکھ مذہب کا درمیانی راستہ

پروفیسر تیجا سنگھ ایم. اے.

سکھ دھرم اُس وقت تک صرف ایک مذہبی آندولن تھا جب تک کہ دنیاوی طاقت کی حوس کا اُس پر اثر نہ ہوا تھا. شروع کے سکھ گرؤں نے ظالم حاکموں سے لڑائی ضرور لڑی تھی مگر وہ کسی لوبھ میں نہ آئے تھے. چھٹے سکھ گرو نے جتنی لڑائیاں لڑیں اُن سب میں فتح پائی, اور دسویں گرو صاحب نے بھی زیادہ تر لڑائیوں میں فتح پائی تھی. مگر اُن لڑائیوں میں جیتنے پر بھی اُنھوں نے ایک انچ زمین پر بھی قبضہ نہیں کیا. جو کچھ زمین اُن کے پاس تھی اُس کو اُنھوں نے یا تو نقد روپیہ دے کر خریدا تھا یا اُن کے چیلوں نے اُنھیں نذر دی تھی.

سکھ گرؤں کے پاس جب سب عیش و آرام کے سارے سامان موجود تھے تب بھی اُنھوں نے اپنا رہن-سہن سادہ ہی بنائے رکھا. جن راگیوں کی ساکھیاں گرنتھ صاحب میں جمع کی گئیں ہیں اُنھوں نے ہمیشہ اوسط درجے کے رہن سہن کے طریقے کو ہی سراہا ہے. اِس وے راج یوگ کہا کرتے تھے—ایسا یوگ جو تیاگ اور بھوگ دونوں کے بیچ کا راستہ ہے. یہ کہنا ٹھیک نہیں ہے کہ پانچویں یا چھٹے سکھ گرو کے زمانے سے سکھ دھرم کا میعار گر گیا اور گرؤں کو سچا بادشاہ اور اُن کی گدی کو تخت اور سکھوں کی سنگت کو دربار کہا جانے لگا. لیکن شروع گرؤں اور خاص کر اُن راگیوں کی تحریروں سے جن کی ساکھیاں دوسرے گرو کے وقت سے ہی لکھی جانے لگی تھیں یہ صاف معلوم ہوتا کہ ہے اِس طرح کے لفظ بعد میں نہیں چلے بلکہ شروع سے ہی کام میں آتے رہے ہیں. ایشیا میں فقیر مہاتماؤں کا درجہ بادشاہوں سے بڑا مانا جاتا رہا ہے اور اُن کی شان میں اِسی طرح کی پدویاں کام میں لائی جاتی رہی ہیں.

سکھ دھرم میں تبدیلی بعد میں ضرور ہوئی لیکن یہ تبدیلی اُس وقت سے ہی نظر آتی ہیں جب آخری گرو صاحب پنجاب سے چلے گئے تھے اور دکھن میں جاکر اُنھوں نے شریر تیاگ دیا تھا. گرو کے جن چنے ہوئے بھکتوں نے گرو گوبند سنگھ سے سبق پایا اور تھا جن کی موجودگی سے عام سکھوں میں سچائی کی بھاونا قایم رہ سکتی تھی اُن کو گرو کے شریر تیاگنے کے بعد کمزوروں کی حفاظت کرنے کے لئے اپنی زندگی بچانا اور ظالموں سے لڑنا پڑ گیا اور اُنھیں عام لوگوں سے دور چلا جانا پڑا. اُس وقت عام سکھوں کو یا تو اپنی قسمت پر بھروسہ کرنا پڑا یا اُن پرانے پیشہ ور گرؤں سے سبق لینا پڑا اور جن کو اب روپیہ لے کر اپنے پرانے پیشے کو

मुसलमानों की दोस्ताना मजहबी बहस बराबर चलती रहती थी.

مسلمانوں کی دوستانہ مذہبی بحث برابر چلتی رہتی تھی ۔

---

1. Islamic Culture Vol. 1, No. 2 pp. 190-191.
2. फुतूह अल-बलदान (लेडेन, सफा 446 صفحہ (لیڈن) فتوح البلدان
3. Ibn Batuta (H. A. R. Gibb) p. 295
4. Burton's Pilgrimage to Al-Madinah, Vol. 11, p. 174.
5. AS. Soc. Vols. iii and iv
6. Balazuri, p. 439.
7. The Caliphate its Rise, Decline and Fall, by Sir W. Muir, pp. 354-355.
8. Islamic Culture, Vol. I, No. 2. p. 205
9. 'Ajaib al Hind (ed. P. A. Von Der Lith), p. 155.
10. Abid, p. 481.
11. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.
12. Ibn Hauqal (de Goeje)' p. 232.
13. Ahsan ut-Taqasim, p. 482.
14. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.
15. Muruj-uz-Zahab (Paris), Vol I. pp. 253-54.
16. Ajaib al-Hind, pp. 2-3
17. Voyage du Merchand Arb (Frrand), p. 139.
18. Ajaib al-Hind, p. 147.
19. Fihrist pp. 345-349.

पुजारी थे और अनगिनत तादाद में अरब सैयाह, आलिम, तारीखदाँ और जुगराफ़ियादाँ भारत में आ आकर ज्ञान के इस लामहदूद खज़ाने से दान हासिल करने लगे. हारूँ-अर-रशीद के वज़ीर यहया बरमकी ने एक आलिम को इस बात के लिये मुक़र्रर किया कि वह हिन्दुस्तानमें राइज मुख़तलिफ़ मज़हबों और हिन्दुस्तान की जड़ी बूटियों के बारे में अपनी तफसीली रिपोर्ट पेश करे. इब्न-अन-नजीम का कहना है कि उसने बतारीख़ 349 हिजरी की अलकिन्दी के हाथ की लिखी हुई इस रिपोर्ट की एक नक़ल देखी है. इब्न-अन-नजीम के मुताबिक़ इस रिपोर्ट में बल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दिरों और मुलतान और भारत के मुख़तलिफ़ मज़हबों और मज़हबी किताबों का भी बयान था. इब्न-अन-नजीम ने पूरी किताब का ख़ुलासा भी दिया है. जिन मज़हबी किताबों का इनमें बयान है उनमें से कुछ ये हैं— महाकालिया, आदित्यभक्तिया, चन्द्रभक्तिया, वक्रान्तिया (जिसके पैरोकार ज़ंजीर पहनते थे), गङ्गायात्रिया, राज-पुत्रिया और एक और फ़िरक़ा जिसके हामी लम्बे बाल रखते थे, शराब से परहेज़ करते थे और औरतों की सोहबत से बचते थे."19

हिन्दुस्तान के मग़रिबी साहिल पर जगह जगह हिन्दू मुसलमानों की जिस तरह की मिली जुली आबादियाँ उस वक़्त बस गई थीं और जिस तरह दोनों एक दूसरे के मज़हब की कहानी और मज़हबी गहराइयों में दाख़िला पाने की कोशिश कर रहे थे. उनका यह शौक़ आपस के गहरे ताल्लुक़ और मेल जोल से ही पूरी हो सकती थी.

उस वक़्तके एक राजा की बाबत लिखा है कि उसने ख़लीफ़ा हारूँ रशीद को ख़त लिखकर किसी ऐसे मुसलिम आलिम को भेजने की दरख़ास्त की जो राजा के हिन्दू पण्डितों से मज़हबी बहस कर सके. इसी वाक़िये का एक दूसरा बयान यह है कि राजा ने मुसलमान आलिम को इसलिये बुलाया ताकि वह एक बहुत ऊँचे बौद्ध आलिम से मज़हबी बहस मुबाहिसा कर सके. यह सही भी हो सकता है. बहर हाल वह मुसलिम आलिम भारत आया, लेकिन उस बौद्ध आलिम के सामने उसकी एक न चली. कई दिन तक बहस होती रही. मुसलिम आलिम क़ुरान और हदीस को आख़िरी सनद कहकर पेश करता था जबकि बौद्ध आलिम क़ुरान और हदीस दोनों से इनकार करता था. इसके बाद बहस ख़ुदा के वजूद पर शुरू हो गई और बौद्ध लाजवाब होने लगा और उसने हार की शर्म से बचने के लिये, कहते हैं, एक दिन उस मुसलमान आलिम को ज़हर देकर मरवा डाला. लेकिन इस अफसोसनाक वाक़ये से यह मज़हबी बहस रुकी नहीं और उस ज़माने के वाक़ेयात में इनकी ऐसी मिसालें मिलती हैं जिनसे ज़ाहिर होता है कि हिन्दू

پجاری تھے اور انگنت تعداد میں عرب سیاح' عالم' تاریخ‌داں اور جغرافیہ داں بھارت میں آ آ کر گیان کے اِس لامحدود خزانے سے دان حاصل کرنے لگے ۔ ہاروں‌الرشید کے وزیر یحیٰ برمکی نے ایک عالم کو اِس بات کے لئے مقرر کیا کہ وہ ہندستان میں رائج مختلف مذہبوں اور ہندستان کی جڑی بوٹیوں کے بارے میں اپنی تفصیلی رپورٹ پیش کرے ۔ ابن-ان-نظیم کا کہنا ہے : کہ اُس نے بتاریخ 349 ہجری کی الکندی کے ہاتھ کی لکھی ہوئی اِس رپورٹ کی ایک نقل دیکھی ہے ۔ ابن-ان نظیم کے مطابق اِس رپورٹ میں بلبھ رائے کی راجدھانی مہانگر کے دیو مندروں اور ملتان اور بھارت کے مختلف مذہبوں اور مذہبی کتابوں کا بھی بیان تھا ۔ ابن-ان-نظیم نے پوری کتاب کا خلاصہ بھی دیا ہے ۔ جن مذہبی کتابوں کا اِس میں بیان ہے اُن میں سے کچھ یہ ہیں—مہاکالیا' آدت بھکتیا' چندر بھکتیا' وکرانتیا (جس کے پیروکار زنجیر پہنتے تھے)' گنگا یاتریا' راج پتریا اور ایک اور فرقہ جس کے حامی لمبے بال رکھتے تھے' شراب سے پرہیز کرتے تھے اور عورتوں کی صحبت سے بچتے تھے ۔" 19

ہندستان کے مغربی ساحل پر جگہ جگہ ہندو مسلمانوں کی جس طرح کی ملی جلی آبادیاں اُس وقت بس گئیں تھیں اور جس طرح دونوں ایک دوسرے کے مذہب کی کہانی اور مذہبی گہرائیوں میں داخلہ پانے کی کوشش کر رہے تھے' اُن کا یہ شوق آپس کے گہرے تعلق اور میل جول سے ہی پوری ہو سکتی تھی ۔

اس وقت کے ایک راجہ کے بابت لکھا ہے کہ اُس نے خلیفہ ہاروں‌الرشید کو خط لکھ کر کسی ایسے مسلم عالم کو بھیجنے کی درخواست کی جو راجہ کے ہندو پنڈتوں سے مذہبی بحث کر سکے ۔ اسی واقعہ کا ایک دوسرا بیان یہ ہے کہ راجہ نے مسلمان عالم کو اِس لئے بلایا تاکہ وہ ایک بہت اُونچے بودھ عالم سے مذہبی بحث مباحثہ کر سکے ۔ یہ صحیح بھی ہو سکتا ہے ۔ بہر حال وہ مسلم عالم بھارت آیا' لیکن اُس بودھ عالم کے سامنے اُس کی ایک نہ چلی ۔ کئی دن تک بحث ہوتی رہی ۔ مسلم عالم قرآن اور حدیث کو آخری سند کہہ کر پیش کرتا تھا جب کہ بودھ عالم قرآن اور حدیث دونوں سے انکار کرتا تھا ۔ اِس کے بعد بحث خدا کے وجود پر شروع ہو گئی اور بودھ لاجواب ہونے لگا اور اُس ہار کی شرم سے بچنے کے لئے' کہتے ہیں' ایک دن اُس مسلمان عالم کو زہر دے کر مروا ڈالا ۔ لیکن اِس افسوسناک واقعہ سے یہ مذہبی بحث رکی نہیں اور اُس زمانے کے واقعات میں اِن کی ایسی مثالیں ملتی ہیں جن سے ظاہر ہوتاہے کہ ہندو

अरमान भी बढ़ा. मिसाल के तौर पर मसूदी लिखता है—
"खम्भात का राजा मुसलमानों और दूसरे मज़हबी पैरोकारों के साथ, जो उसके दरबार में आते थे, मज़हबी ख्यालात का तबादला करता था." 15

इसी तरह से बुज़ुर्ग बिन शहरयार लिखता है कि अलौर के राजा महरुग ने जिसकी हुकूमत ऊँचे और नीचे के काश्मीर के बीच में थी, मनसूरा के राजा को लिखा कि वह किसी ऐसे आदमी को भेजे जो हिन्दी ज़बान में इसलाम के उसूलों को उसे समझा सके. मनसूरा के शाह ने अब्दुल्ला नामी एक क़ाबिल शख्स को, जो तीन बरस तक मनसूरा में रह चुका था, अलौर भेजा. उसने क़ुरान का हिन्दी में तर्जुमा करके रोज़ राजा को सुनाना शुरू किया. राजा पर उसका गहरा असर पड़ा. 16 इस तरह के असर पड़ने उस वक्त क़ुदरती थे; इसके बाद मुसलिम मुल्कों में हिन्दुओं की आमद रफ़्त शुरू हुई और दोनों के बीच के समाजी ताल्लुक़ात और ज़्यादा गहरे और दिलचस्प होते गये. सुलेमान लिखता है—

इराक़ के बन्दरगाह सैराफ़ में बहुत से हिन्दू रहते हैं और जब कोई अरब सौदागर उनकी दावत करता है तो उनकी तादाद सौ तक पहुँच जाती है. उनमें से हर शख्स का खाना अलग अलग रकाबियों में परसा जाता है क्योंकि एक ही रकाबी में कोई एक दूसरे के साथ नहीं खाता."17 इन्हीं हिन्दुओं के मुताल्लिक़ बुज़ुर्ग बिन शहरयार कहता है—

"ये लोग बोल चाल की अरबी इस सफ़ाई से और जल्द जल्द बोलते हैं कि हमारे आलिम फ़ाज़िल मौलवी दंग और हैरान रह जाते हैं. इन लोगों में आम तौर पर सिंधी, गुजराती और मुलतानी हैं जो अरसए क़दीम से हमारे मुल्कों के साथ तिजारत करते आ रहे हैं."18

इस तिजारती रिश्ते से हिन्दुस्तान मुसलिम मुल्कों के गहरे मेल जोल में आया और इसलामी दुनिया पर अपने ज्ञान, साइन्स, रुहानी ताल्लुक़ात और मज़हब का असर डाल पाया. अरब और ईरानी सौदागर हिन्दुस्तान से तिजारती माल के साथ साथ सनत और साइंस के क्षेत्र भी ले जाते थे.

दूसरी तरफ़ अब्बासी ख़लीफ़ाओं के दरबार की इनसानी रहम दिली और मज़हबी बरदाश्त से मुतास्सिर होकर हिन्दू पंडित बड़ी तादाद में बग़दाद में जमा होने लगे. ख़लीफ़ा के दरबार में नजूम और वैद्यक के सब से आला ओहदों पर हिन्दू पंडित ही सरफ़राज़ थे. मुसलमानों के दिलों में हिन्दुस्तान के ज्ञान की भेद भरी गहराई की थाह लेने की, ज्ञानी, ध्यानी और सिरजनशील भारत को जानने का गहरा शौक़ पैदा हुआ. अरब के आलिम ज्ञान के सच्चे

ارمان بھی بڑھا۔ مثال کے طور پر مسعودی لکھتا ہے—
"کھمبات کا راجہ مسلمانوں اور دوسرے مذہبی پیروکاروں کے ساتھ، جو اس کے دربار میں آتے تھے، مذہبی خیالات کا تبادلہ کرتا تھا۔ 15

اسی طرح سے بزرگ بن شہریار لکھتا ہے کہ الور کے راجہ مہروگ نے جس کی حکومت اونچے اور نیچے کے کشمیر کے بیچ میں تھی، منصورا کے راجہ کو لکھا کہ وہ کسی ایسے آدمی کو بھیجے جو ہندی زبان میں اسلام کے اصولوں کو سمجھا سکے۔ منصورا کے بادشاہ نے عبداللہ نامی ایک قابل شخص کو، جو تین برس تک منصورا میں رہ چکا تھا، الور بھیجا۔ اس نے قرآن کا ہندی میں ترجمہ کر کے روز راجہ کو سنانا شروع کیا۔ راجہ پر اس کا گہرا اثر پڑا۔ 16 اس طرح کے اثر پڑنے اس وقت قدرتی تھے۔ اس کے بعد مسلم ملکوں میں ہندوؤں کی آمدورفت شروع ہوئی اور دونوں کے بیچ کے سماجی تعلقات اور زیادہ گہرے اور دلچسپ ہوتے گئے۔ سلیمان لکھتا ہے—

عراق کے بندرگاہ سیراف میں بہت سے ہندو رہتے ہیں اور جب کوئی عرب سوداگر ان کی دعوت کرتا ہے تو ان کی تعداد سو تک پہنچ جاتی ہے۔ ان میں سے ہر شخص کا کھانا الگ الگ رکابیوں میں پروسا جاتا ہے کیونکہ ایک ہی رکابی میں کوئی ایک دوسرے کے ساتھ نہیں کھاتا۔" 17 انہیں ہندوؤں کے مطابق بزرگ بن شہریار کہتا ہے—

"یہ لوگ بول چال کی عربی اس صفائی سے اور جلد جلد بولتے ہیں کہ ہمارے عالم فاضل مولوی دنگ اور حیران رہ جاتے ہیں۔ ان لوگوں میں عام طور پر سندھی، گجراتی اور ملتانی ہیں جو عرصۂ قدیم سے ہمارے ملکوں کے ساتھ تجارت کرتے آ رہے ہیں۔" 18

اس تجارتی رشتے سے ہندوستان مسلم ملکوں کے گہرے میل جول میں آیا اور اسلامی دنیا پر اپنے گیان، سائنس، روحانی تعلقات اور مذہب کا اثر ڈال پایا۔ عرب اور ایرانی سوداگر ہندوستان سے تجارتی مال کے ساتھ ساتھ صنعت اور سائنس کے کھیتر بھی لے جاتے تھے۔

دوسری طرف عباسی خلیفاؤں کے دربار کی انسانی رحم دلی اور مذہبی برداشت سے متاثر ہو کر ہندو پنڈت بڑی تعداد میں بغداد میں جمع ہونے لگے۔ خلیفہ کے دربار میں نجوم اور ویدک کے سب سے اعلیٰ عہدوں پر ہندو پنڈت ہی سرفراز تھے۔ مسلمانوں کے دلوں میں ہندوستان کے گیان کی بھید بھری گہرائی کی تھاہ لینے کی، گیانی، دھیانی اور سرجن شیل بھارت کو جاننے کا گہرا شوق پیدا ہوا۔ عرب کے عالم گیان کے سچے

उसने इसलाम के बारे में अपनी वाक़फ़ियत लोगों को बताई. उसने बताया कि मुसलमानों का ख़लीफ़ा निहायत सादी ज़िन्दगी बसर करता है और ग़रूर उसे छू तक नहीं गया. शहरयार लिखता है—"यही वजह है कि बौद्ध मुसलमानों से इतनी मोहब्बत करते हैं और उनके साथ इतनी हमदर्दी रखते हैं." (10) सुलेमान सौदागर लिखता है—"राजा बल्हर की तरह राजा गुजर भी अरबों' कीजा निब दोस्ताना बर्ताव रखता है." 11

अस्ताख़री 951 ईसवी में हिन्दुस्तान आया था. उसके जुग़राफ़िये की किताब में हिन्दुस्तान का बयान है. अस्ताख़री ने सबसे पहले हिन्दुस्तान के एक सूबे सिन्ध का नक़्शा तैयार किया. अस्ताख़री के वक़्त तक ख़ास-ख़ास शहरों में हिन्दू-मुसलिम तिजारत के मरकज़ क़ायम हो चुके थे. एक मुसलिम मुसन्निफ़ के मुताबिक़ इन मरकज़ों में हिन्दू और मुसलमानों के समाजी रिश्ते के नतीजे की शकल में मिले जुले रस्म रिवाज और बर्ताव बनते जा रहे थे. इब्न हौकल लिखता है—"मुलतान में हिन्दू और मुसलमान एक ही सी पोशाक पहनते हैं और एक ही फ़ैशन के बाल सँवारते हैं. मनसूरा और मुलतान और आस पास के शहरों में दोनों यकसाँ अरबी और सिन्धी ज़बान बोलते हैं." 12 बसरहरी लिखता है कि—"सिंध में अरबी, फ़ारसी और सिन्धी तीनों यकसाँ समझी जाती हैं." 13 अस्ताख़री और इब्न हौकल लिखते हैं कि हिन्दू इलाक़ों में मुसलमान जगह जगह बस गये थे और उन्होंने इबादत के लिये मसजिदें तामीर कर ली थीं. सुलेमान सौदागर सिंहल के बारे में लिखता है कि "सिंहल में मुख़्तलिफ़ मज़हबों के पैरोकार बसते हैं और सिंहल का राजा इन मुख़्तलिफ़ मज़हबी पैरोकारों को अपने अपने मज़हब को फैलाने की इजाज़त देता है."14

यह ज़ाहिर है कि तिजारत के मरकज़ तहज़ीबी रद्दो बदल के भी मरकज़ थे. इनमें ख़ास शहर ख़ुज़दार महफ़ूज़ाह, मन्सूराह और जन्दौर वग़ैरा थे. जो मुसलमान इन शहरों में बस गये थे वे क़ौम के अरब थे. वे भारतीयों में इस दरजे मिल जुल गये थे कि कुछ पीढ़ियों बाद उनका पहचाना जाना भी नामुमकिन हो गया.

इनके तौर तरीक़े, ख़्यालात बिकुल हिन्दुओं जैसे हो गये. इन लोगों की एक अलग ही जमात बन गई जो तमाम जनूबी भारत में फैल गई. इनमें से एक जमात अली को शिव का अवतार समझकर पूजा करती थी.

तिजारती रिश्ते के साथ ज्यों ज्यों तहज़ीबी लेन देन बढ़ा त्यों त्यों भारतीयों और अरबों में एक दूसरे को जानने, समझने और एक दूसरे से मोहब्बत करने और एक दूसरे के मज़हब की ज़्यादा से ज़्यादा वाक़फ़ियत हासिल करने का

اُس نے اسلام کے بارے میں اپنی واقفیت لوگوں کو بتائی. اُس نے بتایا کہ مسلمانوں کا خلیفہ نہایت سادی زندگی بسر کرتا ہے اور غرور اُسے چھو تک نہیں گیا. شہر یار لکھتا ہے—"یہی وجہ ہے کہ بودھ مسلمانوں سے اتنی محبت کرتے ہیں اور اُن کے ساتھ اِتنی ہمدردی رکھتے ہیں." 10 سلیمان سوداگر لکھتا ہے—" راجہ بلہر کی طرح راجہ گجر بھی عربوں کی جانب دوستانہ برتاؤ رکھتا ہے." 11

استاخری 951 عیسوی میں ھندستان آیا تھا. اُس کے جغرافیہ کی کتاب میں ھندستان کا بیان ہے. استاخری نے سب سے پہلے ھندستان کے ایک صوبے سندھ کا نقشہ تیار کیا. استاخری کے وقت تک خاص خاص شہروں میں ھندو مسلم تجارت کے مرکز قائم ہو چکے تھے. ایک مسلم مصنف کے مطابق اِن مرکزوں میں ھندو اور مسلمانوں کے سماجی رشتے کے نتیجے کی شکل میں ملے جلے رسم رواج اور برتاؤ بنتے جا رہے تھے. ابن ھوکل لکھتا ہے—"ملتان میں ھندو اور مسلمان ایک ھی سی پوشاک پہنتے ہیں اور ایک ھی فیشن کے بال سنوارتے ہیں. منصورہ اور ملتان اور آس پاس کے شہروں میں دونوں یکساں عربی اور سندھی زبان بولتے ہیں." 12 بسہری لکھتا ہے کہ—"سندھ میں عربی' فارسی اور سندھی تینوں یکساں سمجھی جاتی ہیں." 13 استاخری اور ابن ھوکل لکھتے ہیں کہ ھندو علاقوں میں مسلمان جگہ جگہ بس گئے تھے اور اُنہوں نے عبادت کے لئے مسجدیں تعمیر کر لی تھیں. سلیمان سوداگر سنگھل کے بارے میں لکھتا ہے کہ !' سنگھل میں مختلف مذہبوں کے پیروکار بستے ہیں اور سنگھل کا راجہ اِن مختلف مذہبی پیروکاروں کو اپنے اپنے مذہب کو پھیلانے کی اجازت دیتا ہے." 14

یہ ظاہر ہے کہ تجارت کے مرکز تہذیبی ردوبدل کے بھی مرکز تھے. اِس میں خاص شہر خوزدار, ماحفوزا' منصورا اور جندر وغیرہ تھے. جو مسلمان اِن شہروں میں بس گئے تھے وے قوم کے عرب تھے. وے بھارتیوں میں اِس درجے مل جل گئے تھے کہ کچھ پیڑھیوں بعد اُن کا پہچانا جانا بھی ناممکن ہو گیا.

اِن کے طور طریقے' خیالات بالکل ھندوؤں جیسے ہو گئے. اِن لوگوں کی ایک الگ ھی جماعت بن گئی جو تمام جنوبی بھارت میں پھیل گئی. اِن میں سے ایک جماعت علی کو شو کا اوتار سمجھکر پوجا کرتی تھی.

تجارتی رشتے کے ساتھ جیوں جیوں تہذیبی لین دین بڑھا تیوں تیوں بھارتیوں اور عربوں میں ایک دوسرے کو جاننے' سمجھنے اور ایک دوسرے سے محبت کرنے اور ایک دوسرے کے مذہب کی زیادہ واقفیت حاصل کرنے کا

मोहब्बत का .ख़याल .क़ायम हो गया जिसमें ख़लीफ़ा तक ने सिन्ध में मन्दिरों को गिराने या इसलाम को फैलाने की इजाज़त नहीं दी.

अंग्रेज़ तारीख़दाँ सर विलियम म्यूर अफ़सोस के साथ लिखता है :—

"यह बात याद रखनी चाहिये कि अरब .फ़ातेह जो रवय्या मातेहत .क़ौमों के साथ बरतते थे वह हिन्दुस्तान में जाकर बिलकुल उलट गया. मन्दिरों को ज्यों का त्यों मह.फ़ूज़ छोड़ दिया गया और बुत-परस्ती की कोई मनाही नहीं की गई. जैसा कि वेल ने लिखा है 'हिन्दुस्तान की लड़ाई मज़हबी जंग या जेहाद नहीं रह गई क्योंकि वहाँ मज़हबी तब्दीली का सवाल ही नहीं उठाया गया. सिन्ध मे अल्लाह की परिस्तिश के साथ साथ बुतों की परिस्तिश की भी आज़ादी हो गई.······और इस तरह बावजूद इसलामी हकूमत के भारत एक बुत-परस्त मुल्क बना रह गया." 7

जर्मन आलिम वान क्रेमर लिखता है —

सिन्ध में अबुल .क़ासिम की हकूमत में और उसके बाद भी ब्राह्मणों की इज़्ज़त और शान ज्यों की त्यों .क़ायम रही. ज़मीन की मालगुज़ारी भी 3 .फ़ीसदी ज्यों की त्यों जारी रखी गई. हिन्दुओं को खुली इजाज़त थी कि वे मन माने मन्दिर बनवायें, मुसलमानों के साथ तिजारत करें और बेख़ौफ़ होकर अपनी बढ़ती के लिये जो कुछ मुनासिब समझें करें." 8

इस पर आसानी से ऐतबार किया जा सकता है कि इन हालतों के अन्दर दोनों गिरोह एक दूसरे की तरफ़ बहुत दरजे तक नरम हो गये होंगे और दोनों में तहज़ीबी रिश्ता .क़ायम हुआ होगा. लेकिन सिन्ध ही अकेला ऐसा सूबा नहीं था जहाँ दोनों गिरोहों के बीच दोस्ताना समाजी बर्ताव चल रहा था. भारत के तमाम मग़रिबी साहिल के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जुल कर मोहब्बत के साथ रह रहे थे. मुसलिम सय्याहों के मुताबिक़ मुसलमानों और भारती बौद्धों में बेहद भाईचारा हो गया था. बुज़ुर्ग बिन शहरयार नवीं सदी के भारत के पच्छिमी किनारे के बारे में अपने ख़ास तजरबों के बल पर लिखता है— "बिकुर या भिक्खुओं का गिरोह सिंहल का रहने वाला है. इन्हें मुसलमानों से मोहब्बत और मुसलमानों की जानिब ये बेहद नरम हैं." 9 इन भिक्खुओं ने इसलाम के बारे में वाक़फ़ियत हासिल करने के लिये अपना एक नुमाइन्दा अरब भेजा यह नुमाइन्दा ख़लीफ़ा उमर के वक़्त में अरब पहुँचा. वापस लौटते हुए मकरान में उसका इन्तक़ाल हो गया. लेकिन उसका एक साथी सही सलामत सिंहल पहुँचा और वहाँ

محبت کا خیال قائم ہو گیا جس میں خلیفہ تک نے سندھ میں مندروں کو گرانے یا اسلام کو پھیلانے کی اجازت نہیں دی ۔

انگریز تاریخ داں سر ولیم میور افسوس کے ساتھ لکھتا ہے:—

"یہ بات یاد رکھنی چاہئے کہ عرب فاتح جو رویہ ماتحت قوموں کے ساتھ برتتے تھے وہ ہندستان میں جاکر بالکل الٹ گیا ۔ مندروں کو جیوں کا تیوں محفوظ چھوڑ دیا گیا اور بت پرستی کی کوئی مناہی نہیں کی گئی ۔ جیسا کہ ویل نے لکھا ہے 'ہندستان کی لڑائی مذہبی جنگ یا جہاد نہیں رہ گئی کیونکہ وہاں مذہبی تبدیلی کا سوال ہی نہیں اٹھایا گیا ۔ سندھ میں اللہ کی پرستش کے ساتھ ساتھ بتوں کی پرستش کی بھی آزادی ہوگئی......اور اِس طرح باوجود اسلامی حکومت کے بھارت ایک بت پرست ملک بنا رہ گیا ۔" 7

جرمن عالم واں کریم لکھتا ہے—

سندھ میں ابوالقاسم کی حکومت میں اور اُس کے بعد بھی برہمنوں کی عزت اور شان جیوں کی تیوں قائم رہی ۔ زمین کی مالگزاری بھی 3 فیصدی جیوں کی تیوں جاری رکھی گئی ۔ ہندؤں کو کھلی اجازت تھی کہ وہ من مانے مندر بنوائیں' مسلمانوں کے ساتھ تجارت کریں اور بےخوف ہو کر اپنی بڑھتی کے لئے جو کچھ مناسب سمجھیں کریں ۔" 8

اِس پر آسانی سے اعتبار کیا جا سکتا ہے کہ اِن حالتوں کے اندر دونوں گروہ ایک دوسرے کی طرف بہت درجے تک نرم ہو گئے ہوں گے اور دونوں میں تہذیبی رشتہ قائم ہوا ہوگا ۔ لیکن سندھ ہی اکیلا ایسا صوبہ نہیں تھا جہاں دونوں گروہوں کے بیچ دوستانہ سماجی برتاؤ چل رہا تھا ۔ بھارت کے تمام مغربی ساحل کے مسلمان ہندؤں کے ساتھ مل جل کر محبت کے ساتھ رہ رہے تھے ۔ مسلم سیاحوں کے مطابق مسلمانوں اور بھارتی بودھوں میں بےحد بھائی چارا ہو گیا تھا ۔ بزرگ بن شہر یار نویں صدی کے بھارت کے پچھمی کنارے کے بارے میں اپنے خاص تجربوں کے بل پر لکھتا ہے—"بیکور یا بھکھوؤں کا گروہ سنگھل کا رہنے والا ہے۔ اِنہیں مسلمانوں سے محبت اور مسلمانوں کی جانب یہ بےحد نرم ہیں ۔" 9 اِن بھکھوؤں نے اسلام کے بارے میں واقفیت حاصل کرنے کے لئے اپنا ایک نمائندہ عرب بھیجا ۔ یہ نمائندہ خلیفہ عمر کے وقت میں عرب پہنچا ۔ واپس لوٹتے ہوئے مکران میں اُس کا انتقال ہو گیا ۔ لیکن اِس کا ایک ساتھی صحیح سلامت سنگھل پہنچا اور وہاں

वासबूत और तफसील से लिखा है और जिसका बाद के मुसन्निफ़ों ने भी सनद के तौर पर हवाला दिया है. इनके अलावा इब्न रिस्ताह (903 ई०), अबु ज़ुल्फ़ (943 ई०), अस्ताखरी (951 ई०) मसूदी (945 ई०) मुताहर इब्न ताहिर, अलबेरूनी (999 ई०), इब्न बतूता (943 ई०), हमदुल्ला मुस्तफ़ा और बाद के दूसरे मुसलिम तारीखदानों ने उस वक़्त के हिन्दुस्तान के बारे में निहायत .कीमती तारीख़ी, तिजारती, जुग़राफियाई और समाजी जानकारी की बातें अपनी किताबों में दर्ज की हैं.

अब्बासी या अरबी तहज़ीब ने यूनानी और भारती आर्य तहज़ीब से ही वजूद पाया. अरब-अब्बासी तहज़ीब की बैरूनी शकल हालाँकि सेमेटिक और ईरानी थी लेकिन उसका साइन्सी और रूहानी ज्ञान, उसकी वैद्यक और उसकी फ़िलास.फी पर गहरा भारती और बाद में यूनानी असर पड़ा. उसके अरबी ढाँचे में भारती रूह ज़ाहिर हो रही थी. सिन्ध की .फतह के बाद भारत की माली दौलत के साथ-साथ भारत की रूहानी दौलत भी ख़लीफ़ा के दरबार में पहुँची. भारती यूनिवर्सिटियों में तक्षिला में ज़रूर मुसलिम तालिबइल्म रहे होंगे. काश्मीर उस ज़माने में तहज़ीब का ख़ास मरकज़ था जहाँ ईरानी-बौद्ध तुल्बा तालीम हासिल करने आया करते थे. अब्बासी तहज़ीब को ख़ली.फा के बरमकी (बौद्ध) वज़ीरों ने जो अज़मत और शान दी वह बिलाशक बेमिसाल है. .कानून और इन्सा.फ के वज़ीरों की हैसियत से और तहज़ीब के रोशनी के मीनार की हैसियत से कोई भी ईरानी या अरब शाही ख़ान्दान उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता. ये बरमकी उस वक़्त बौद्ध मज़हब स इसलाम में दाख़िल हुए थे और इन्हीं की कोशिश से अ.बों और भारतीयों में गहरा तहज़ीबी रिश्ता .कायम हुआ था. इन्हीं की कोशिशों से इसलामी तहज़ीब ने दिल खोलकर भारती तहज़ीब की देन को दोनों हाथों से .कबूल किया.

जब मुसलमानों ने सन् 707 ईसवी में सिन्ध .फतह किया तो उन्होंने देखा कि मुल्क बौद्धों और ब्राह्मण हुक्म-रानों में बँटा हुआ है और ब्राह्मण धीरे-धीरे बौद्धों को पछाड़ते जा रहे हैं. ब्राह्मणों और अरबों की जंग में बौद्धों ने अरबों का साथ दिया और इस तरह से अरबों की सिन्ध .फतह को आसान बना दिया. सिन्ध .फतह करने के बाद अबुल क़ासिम ने ऐलान किया कि भारत के बाशिन्दे भी एक .ख़ुदा की परिस्तिश करते हैं और उनके मन्दिर भी ईसाईयों के गिरजों, यहूदियों के सिनागागों और मागियों के आतिशकदों की तरह हैं और उसी तरह से ये लोग अहले किताब हैं जिस तरह से ईसाई और यहूदी." 6 सिन्ध विजय के बाद से ही अरबों और भारतीयों में एक ऐसी मज़बूत

باثبوت او: تفصیل سے لکھاہے اور جس کا بعد کے مصنفوں نے بھی سند کے طور پر حوالہ دیا ہے . اِن کے علاوہ ابن رستاح (903 عیسوی) ابوظرزلف(943 عیسوی)' اسٹاخری (951 عیسوی) مسعودی (945 عیسوی) مطاهر ابن طاهر' البیرونی ی (999 عیسوی)' ابن بطوطه (943 عیسوی) حمداللہ مصطفیٰ اور بعد کے دوسرے مسلم تاریخ دانوں نے اُس وقت کے هندستان کے بارے میں نہایت قیمتی تاریخی' تجارتی' جغرافیائی اور سماجی جانکاری کی باتیں اپنی کتابوں میں درج کی هیں .

عباسی یا عربی تہذیب نے یونانی اور بھارتی آریہ تہذیب سے هی وجود پایا . عرب عباسی تہذیب کی بیرونی شکل حالانکہ سیمیٹک اور ایرانی تھی لیکن اُس کا سائنسی اور روحانی گیان' اُس کی ویدک اور اُس کی فلسفی پر گہرا بھارتی اور بعد میں یونانی اثر پڑا . اُس کے عربی ڈھانچے میں بھارتی روح ظاہر هو رهی تھی . سندھ کی فتح کے بعد بھارت کی مالی دولت کے ساتھ ساتھ بھارت کی روحانی دولت بھی خلیفہ کے دربار میں پہنچی . بھارتی یونیورسٹیوں میں تکشلا میں ضرور مسلم طالب علم رہے هوں گے . کاشمیر اُس زمانے میں تہذیب کا خاص مرکز تھا جہاں ایرانی بودھ طلبا تعلیم حاصل کرنے آیا کرتے تھے . عباسی تہذیب کو خلیفہ کے برمکی (بودھ) وزیروں نے جو عظمت اور شان دی وہ بلاشک بےمثال ہے . قانون اور انصاف کے وزیروں کی حیثیت سے اور تہذیب کے روشنی کے مینار کی حیثیت سے کوئی بھی ایرانی یا عرب شاهی خاندان اُن کا مقابلہ نہیں کر سکتا . یہ برمکی اُس وقت بودھ مذهب سے اِسلام میں داخل هوئے تھے اور انہیں کی کوشش سے عربوں اور بھارتیوں میں گہرا تہذیبی رشتہ قائم هوا تھا . انہیں کی کوششوں سے اسلامی تہذیب نے دل کھول کر بھارتی تہذیب کی دین کو دونوں هاتھوں سے قبول کیا .

جب مسلمانوں نے سن 707 عیسوی میں سندھ فتح کیا تو انہوں نے دیکھا کہ ملک بودھوں اور براهمن حکمرانوں میں بٹا هوا ہے اور براهمن دھیرے دھیرے بودھوں کو پچھاڑتے جا رہے هیں . براهمنوں اور عربوں کی جنگ میں بودھوں نے عربوں کا ساتھ دیا اور اِس طرح سے عربوں کی سندھ فتح کو آسان بنا دیا . سندھ فتح کرنے کے بعد ابوالقاسم نے اعلان کیا کہ "بھارت کے باشندے بھی ایک خدا کی پرستش کرتے هیں اور اُن کے مندر بھی عیسائیوں کے گرجوں' یہودیوں کے سناگاگوں اور ماگیوں کے آتشکدوں کی طرح هیں اور اُسی طرح سے یہ لوگ اهل کتاب هیں جس طرح سے عیسائی اور یہودی ." 6 سندھ وجئے کے بعد سے هی عربوں اور بھارتیوں میں ایک ایسی مضبوط

निशाने .क़दम एक ऊँचे काले पत्थर पर नक़्श है. यह निशान पत्थर पर इतने अन्दर धँस गया है कि अब तक ज्यों का त्यों .क़ायम है. यह निशान सवा आठ .फुट लम्बा है. 8 इस सच्चाई को साबित करने के लिये कि हिन्दुस्तान सब मुल्कों का सरताज है इस तरह की दलीलें आख़िरी सबूत की तरह पेश की जाती थीं. इन बातों से मुसलमान हिन्दुस्तान के और .ज़्यादा क़रीब आते थे और उसे अपना पाक मुल्क समझकर उससे मोहब्बत करने लगते थे. लोग उस वक़्त तक रिवायतें नहीं गढ़ा करते जब तक कि उसके पीछे कोई ख़ास वजह न हो.

इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही धर्म-मन्दिर समझते थे. एक ज़माने में काबा, अरब और अरब के आस-पास के रहने वाले सभी धर्म मज़हब वालों का एक पाक मरकज़ था. नीचे के वाक़िये को नामुमकिन मानते हुए भी हमें उससे हैरत में नहीं आना चाहिये. बर्टन लिखता है—

"हिन्दू पंडित इस बात को ज़ोर के साथ कहते हैं कि मक्के में शिव और पार्वती 'कपोतेश्वर' और 'कपोतेश्वरी' की शकल में जलवा अफ़रोज़ हैं......कुछ मुसन्निफ़ों का कहना है कि हज़रत मोहम्मद के वक़्त मक्का के देवी-देवताओं में लकड़ी में खुदी हुई कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी के बुत थे जिन्हें अली ने पैग़म्बर के कन्धों पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था. 4

विलफ़ोर्ड लिखता है—

"हिन्दु कहते हैं कि मक्का या 'मोक्षेश' या 'मोक्षस्थान' में जो काला पत्थर या 'संग-ए-अस्वद' है वह 'मोक्षेश्वर' भगवान शिव के अवतार का निशान है. भगवान शिव और पार्वती अल-हेजाज़ के अपने भक्तों की पूजा से .ख़ुश होकर मोक्षेश्वर की शकल में मक्का में जलवागर हुये थे. 5

हमअसर मुसलमान सय्याहों और मुसन्निफ़ों ने भारत की उस वक़्त की हालत को अपने ग्रन्थों में दर्जकिया है. सिन्ध के इतिहास पर पहला ग्रन्थ 'छछ-नामा' है, जो बुनियादी शकल में अरबी में लिखा गया. वह मुसलिम तारीख़दानों की हिन्दुस्तान पर पहली तारीख़ी किताब है. 'छछ-नामा' के बाद इब्न .ख़ुरादादबेह ने सन् 815 ईसवी में हिन्दुस्तान के जुग़राफ़िये पर एक किताब लिखी. एक दूसरी किताब अबु ज़ाहिद ने सन् 916 ईसवी में लिखी जिसमें सुलेमान सौदागर की भारत और चीन की सियाहतों का हाल दर्ज है. इसमें हिन्दुस्तान की मज़हबी और समाजी हालतों पर बहुत तफ़सील के साथ रोशनी डाली गई है. इसी ज़माने का एक दूसरा तारीख़दाँ अबु ज़ाहिद अलबलख़ी (934 ईसवी) हैं जिसने हिन्दुस्तान की तारीख़ पर बहुत

نشانِ قدم ایک اُونچے کالے پتھر پر نقش ہے . یہ نشان پتھر پر اتنے اندر دھنس گیا ہے کہ اب تک جوں کا توں قائم ہے . یہ نشان سوا آٹھ فٹ لمبا ہے . 8 اِس سچائی کو ثابت کرنے کے لئے کہ ہندستان سب ملکوں کا سرتاج ہے اِس طرح کی دلیلیں آخری ثبوت کی طرح پیش کی جاتی تھیں . اِن باتوں سے مسلمان ہندستان کے اور زیادہ قریب آتے تھے اور اُسے اپنا پاک ملک سمجھ کر اُس سے محبت کرنے لگتے تھے . لوگ اُس وقت تک روایتیں نہیں گڑھا کرتے جب تک کہ اُس کے پیچھے کوئی خاص وجہ نہ ہو .

اِسی طرح ہندو بھی مسلمانوں کے کعبہ کو اپنا ہی دھرم مندر سمجھتے تھے . ایک زمانے میں کعبہ' عرب اور عرب کے آس پاس کے رہنے والے سبھی دھرم مذہب والوں کا ایک پاک مرکز تھا . نیچے کے واقعہ کو نامُمکن مانتے ہوئے بھی ہمیں اُس سے حیرت میں نہیں آنا چاہئے . برٹن لکھتا ہے—

"ہندو پنڈت اِس بات کو زور کے ساتھ کہتے ہیں کہ مکہ میں شو اور پاروتی 'کپوتیشور' اور 'کپوتیشوری' کی شکل میں جلوہ افروز ہیں...کچھ مصنفوں کا کہنا ہے کہ حضرت محمد کے وقت مکہ کے دیوی دیوتاؤں میں لکڑی میں کھدی ہوئی کپوتیشور اور کپوتیشوری کے بت تھے جنہیں علی نے پیغمبر کے کندھوں پر چڑھ کر نیچے گرا دیا تھا . 4

ول فورڈ لکھتا ہے—

"ہندو کہتے ہیں کہ مکہ یا 'موکشیش' یا 'موکش استھان' میں جو کالا پتھر یا 'سنگ اسود ہے وہ 'موکشیشور' بھگوان شو کے اوتار کا نشان ہے. بھگوان شو اور پاروتی الحجاز کے اپنے بھکتوں کی پوجا سے خوش ہوکر موکشیشور کی شکل میں مکہ میں جلوہ‌گر ہوئے تھے . 5

ہمعصر مسلمان سیاحوں اور مصنفوں نے بھارت کی اُس وقت کی حالت کو اپنے گرنتھوں میں درج کیا ہے . سندھ کے اتہاس پر پہلا گرنتھ 'چھچھ نامہ' ہے' جو بنیادی شکل میں عربی میں لکھا گیا . وہ مسلم تاریخ دانوں کی ہندستان پر پہلی تاریخی کتاب ہے . چھچھ‌نامہ' کے بعد ابن خُرداد بہ نے سن 815 عیسوی میں ہندستان کے جغرافیہ پر ایک کتاب لکھی . ایک دوسری کتاب ابوزاہد نے سن 916 عیسوی میں لکھی جس میں سلیمان سوداگر کی بھارت اور چین کی سیاحتوں کا حال درج ہے . اِس میں ہندستان کی مذہبی اور سماجی حالتوں پر بہت تفصیل کے ساتھ روشنی ڈالی گئی ہے . اِس زمانے کا ایک دوسرا تاریخ داں ابوزاہدالبلخی (934 عیسوی) ہے جس نے ہندستان کی تاریخ پر بہت

अरब सौदागरों का एक जत्था सिंहलद्वीप में 'आदम की चोटी' का सफ़र करने के लिले रवाना हुआ. क्रैंगानोर के बन्दरगाह में राजा चेरूमन पेरूमल ने इन सौदागरों का इसतक़बाल किया. सौदागरों ने पैग़म्बर मोहम्मद के ज़रिये चाँद के टुकड़े किये जाने की कहानी राजा को सुनाई. राजा ने इसलाम .क़ुबूल कर लिया और चुपचाप इन सौदागरों के साथ मदीने का सफ़र किया. वापस लौटते हुए रास्ते में उसका इन्तकाल हो गया. मरते वक़्त चेरूमन ने मुसलमानों को शाही .फ़रमान के ज़रिये मसजिदें बनवाने की इजाज़त दे दी. उसी के मुताबिक़ मलाबार में कई जगह मसजिदें बनाई गईं. बलाजरी भी सन् 842 ईसवी के .क़रीब पच्छिमी उत्तर भारत के एक राजा के इसलाम .क़ुबूल करने का वाक़्या सुनाता है. 2 बुज़ुर्ग बिन शहरयार और सौदागर सुलेमान, जो नवीं सदी में हिन्दुस्तान आये थे, लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के राजाओं के दिलों में मुसलमानों की तरफ़ बेहद अच्छा .ख़्याल मौजूद था.

पता नहीं कैसे मुसलमानों के दिलों में यह ऐतबार घर कर गया है कि इनसानी .क़ौम के पहले पैग़म्बर और पहले इनसान हज़रत आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद हिन्दुस्तान में सिंहलद्वीप में आकर उतरे. हिन्दुस्तान में जो .ख़ुशबूदार फूल और जड़ी बूटी भरी पड़ी है वे हज़रत आदम ही बहिश्त के 'बाग़े इरम' से यहाँ लाए थे. जिस पत्थर पर हज़रत आदम उतरे उस र उनके क़दमों का निशान आज तक मौजूद है. इसी पत्थर के निशान को सिंहल के बौद्ध भगवान बुद्ध के निशाने क़दम समझकर पूजते हैं. बाद के मुसलिम लेखकों ने दूसरे मुल्कों के मुक़ाबले में भारत की अज़मत पर इस बिना पर और .ज़्यादा ज़ोर दिया है कि हज़रत आदम इनसानी .क़ौम के पहले पैग़म्बर थे और अल्लाह ने अपना हुक्म सबसे पहले उन्हीं को सुनाया और आदम चूँकि उस वक़्त हिन्दुस्तान में थे इसलिये हिन्दुस्तान ही को सब से पहले हुक्मे .ख़ुदा सुनने का .फ़ख़्र हो सकता है व मुमकिन है कि शायद इसीलिये इसलाम के पैग़म्बर ने फ़रमाया है—"मैं हिन्दुस्तान से बहकर आई हुई अल्ला के वजूद की भीनी-भीनी ख़ुशबू सूँघ रहा हूँ." आम मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तान की सरज़मीन की पाकीज़गी की यह आख़िरी और ज़बरदस्त दलील है. इस तरह की रिवायतें क्यों शुरू हुईं इसकी मैं वजह नहीं खोज सका लेकिन फिर भी ये भारत के मुसलमानों के आम ऐतबार का जुज़ बनी हुई हैं. पढ़े-लिखे और समझदार लोग भी इन रिवायतों को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सच मानते हैं.

इब्न बतूता (1377 ई०) ने भी हज़रत आदम के इस पाक निशाने क़दम की ज़ियारत की थी. इस निशान को देखकर उसने लिखा है—"हज़रत आदम का यह पाक

عرب سوداگروں کا ایک جتھا سنگھل دیپ میں 'آدم کی چوٹی' کا سفر کرنے کے لئے روانہ ہوا ۔ کرنگانور کے بندرگاہ میں راجہ چیرومن پیرومل نے اِن سوداگروں کا استقبال کیا ۔ سوداگروں نے پیغمبر محمد کے ذریعہ چاند کے ٹکڑے کئے جانے کی کہانی راجہ کو سنائی ۔ راجہ نے اسلام قبول کر لیا اور چپ چاپ اِن سوداگروں کے ساتھ مدینے کا سفر کیا ۔ واپس لوٹتے ہوئے راستے میں اُس کا انتقال ہو گیا ۔ مرتے وقت چیرومن نے مسلمانوں کو شاہی فرمان کے ذریعہ مسجدیں بنوانے کی اجازت دے دی ۔ اُسی کے مطابق ملابار میں کئی جگہ مسجدیں بنائی گئیں ۔ بلاجری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پچھمی اتر بھارت کے ایک راجہ کے اِسلام قبول کرنے کا واقعہ سناتا ہے ۔ 2 بزرگ بن شہریار اور سوداگر سلیمان' جو نویں صدی میں ہندستان آئے تھے' لکھتے ہیں کہ ہندستان کے راجاؤں کے دلوں میں مسلمانوں کی طرف بےحد اچھا خیال موجود تھا ۔

پتہ نہیں کیسے مسلمانوں کے دلوں میں یہ اعتبار گھر کر گیا ہے کہ اِنسانی قوم کے پہلے پیغمبر اور پہلے اِنسان حضرت آدم بہشت سے نکالے جانے کے بعد ہندستان میں سنگھل دیپ میں آکر اترے ۔ ہندستان میں جو خوشبودار پھول اور جڑی بوٹی بھری پڑی ہے وے حضرت آدم ہی بہشت کے 'باغ ارم' سے یہاں لائے تھے جس پتھر پر حضرت آدم اُترے اُس پر اُن کے قدموں کا نشان آج تک موجود ہے ۔ اِسی پتھر کے نشان کو سنگھل کے بودھ بھگوان بدھ کے نشان قدم سمجھ کر پوجتے ہیں ۔ بعد کے مسلم لیکھکوں نے دوسرے ملکوں کے مقابلے میں بھارت کی عظمت پر اِس بنا پر اور زیادہ زور دیا ہے کہ حضرت آدم انسانی قوم کے پہلے پیغمبر تھے اور اللہ نے اپنا حکم سب سے پہلے انہیں کو سنایا اور آدم چونکہ اُس وقت ہندستان میں تھے اِس لئے ہندستان ہی کو سب سے پہلے حکم خدا سننے کا فخر ہو سکتا ہے و ممکن ہے کہ شاید اِسی لئے اسلام کے پیغمبر نے فرمایا ہے—"میں ہندستان سے بہہ کر آئی ہوئی اللہ کے وجود کی بھینی بھینی خوشبو سونگھ رہا ہوں ." عام مسلمانوں کے لئے ہندستان کی سرزمین کی پاکیزگی کی یہ آخری اور زبردست دلیل ہے ۔ اِس طرح کی روایتیں کیوں شروع ہوئیں اِس کی میں وجہ نہیں کھوج سکا لیکن پھر بھی یہ بھارت کے مسلمانوں کے عام اعتبار کا جز بنی ہوئی ہیں ۔ پڑھے لکھے اور سمجھدار لوگ بھی اِن روایتوں کو لفظ بہ لفظ سچ مانتے ہیں ۔

اِبن بطوطہ (1377 عیسوی) نے بھی حضرت آدم کے پاک نشان قدم کی زیارت کی تھی ۔ اِس نشان کو دیکھ کر اُس نے لکھا ہے—"حضرت آدم کا یہ پاک

.ख़ुशबुओं से मुअत्तर हैं." लेकिन हिन्दुस्तान के बारे में सही सही जानकारी हासिल करने की पहली कोशिश शायद ख़लीफ़ा उसमान के ज़माने में की गई. उसमान ने 624 और 664 ईसवी के बीच हकीम बिन जबाला को मुक़र्रर किया कि वह पता लगाकर हिन्दुस्तान के बारे में सही-सही .ख़बरें ख़लीफ़ा को दे. जबाला ने हिन्दुस्तान आकर यहाँ के बारे में एक रिपोर्ट (Thaghar-al Hind) तैयार करके .ख़लीफ़ा की ख़िदमत में पेश की. 1. इस बात के भी बहुत से सबूत मिलते हैं कि सातवीं सदी ईसवी के शुरूआत में ईरान से लगे हुए हिन्दुस्तान के सूबों के साथ अरब सौदागरों का तिजारती रिश्ता .क़ायम था और वे जाटों और मदरों से वाक़िफ़ थे, चूँकि हिन्दुस्तान के इन हिस्सों पर एक वक़्त ईरानियों की हुकूमत थी इसलिये इन हिस्सों के हिन्दुस्तानी .कबीलों और ईरानियों के बीच .क़रीबी रिश्ता रहा होगा. जब ईरान ने इसलाम .क़ुबूल किया तो तिजारती रिश्ते के साथ-साथ वह नज़दीकी और ज़्यादा बढ़ी होगी. एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिये कि एक ज़माने में .ख़ुरासान, तुर्किस्तान और ईरान में बौद्ध मज़हब बेहद फैला हुआ था और बौद्ध मज़हब के पैरो इराक़, मोसल और शाम की सरहद तक फैले हुये थे. इन मुल्कों के बाशिन्दों ने हालाँकि बौद्ध मज़हब की जगह इसलाम .क़ुबूल कर लिया था फिर भी उनके दिलों में हिन्दुस्तान के लिये एक मोहब्बत और इज़्ज़त का ख़याल ज़रूर रहा होगा.

जबकि आपस के ताल्लुक़ात बहुत थोड़े थे तब भी मुसलमान हिंदुस्तान को दुनिया का सब से .ज़्यादा तहज़ीब याफ़्ता मुल्क समझकर उसकी बेहद क़द्र और इज़्ज़त करने लगे थे. सबूत के तौर पर हिन्दुस्तान की तारीफ़ में इसलाम के पैग़म्बर और उसके मशहूर पैरोकारों की रिवायतें लफ़्ज़-ब लफ़्ज़ पेश की जाती थीं. इस तरह की रिवायतों की सचाई पर थोड़ा बहुत मत भेद हो सकता है लेकिन यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि शुरू ज़माने के इसलाम के अदब में हिन्दुस्तान की बेहद तारीफ़ भरी पड़ी है.

उस वक़्त के अरब सौदागरों ने गुजरात के बल्हर राजाओं और मलाबार के सामुरी राजाओं को अपनी तरफ़ बेहद मेहरबानी और दोस्ती से भरा हुआ पाया. समन्दर के किनारे-किनारे उन्हें अपनी बस्तियाँ बसाने और मसजिदें बनवाने की इजाज़त थी. इन मुसलमानों ने हिन्दू लड़कियों से ही शादी की जिनकी मिली जुली औलादें मलाबार में 'मोपला' और कोंकण में 'हट्टिया' के नाम से मशहूर हुईं. अगर हम मलाबार के राजा चेरुमन पेरुमल के इसलाम .क़ुबूल करने की आम .फ़हम रिवायत मान लें तो हमें हिन्दुस्तान की मुसलिम नौआबादियों का वक़्त पैग़म्बर की ज़िन्दगी के ही .क़रीब मानना पड़ेगा. रिवायत यह है कि

خوشبوؤں سے معطر ہیں ." لیکن ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح جانکاری حاصل کرنے کی پہلی کوشش شاید خلیفہ عثمان کے زمانے میں کی گئی۔ عثمان نے 624 اور 664 عیسوی کے بیچ حکیم بن جبالہ کو مقرر کیا کہ وہ پتہ لگاکر ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح خبریں خلیفہ کو دے۔ جبالہ نے ہندستان آکر یہاں کے بارے میں ایک رپورٹ (Thaghar-al Hind) تیار کر کے خلیفہ کی خدمت میں پیش کی ۔ 1 اِس بات کے بھی بہت سے ثبوت ملتے ہیں کہ ساتویں صدی عیسوی کے شروعات میں ایران سے لگے ہوئے ہندستان کے صوبوں کے ساتھ عرب سوداگروں کا تجارتی رشتہ قائم تھا اور وے جاٹوں اور مدروں سے واقف تھے ۔ چونکہ ہندستان کے اِن حصوں پر ایک وقت ایرانیوں کی حکومت تھی اِس لئے اِن حصوں کے ہندستانی قبیلوں اور ایرانیوں کے بیچ قریبی رشتہ رہا ہوگا ۔ جب ایران نے اِسلام قبول کیا توتجارتی رشتے کے ساتھ ساتھ یہ نزدیکی اور زیادہ بڑھی ہوگی ۔ ایک بات ہمیں اور دھیان میں رکھنی چاہئے کہ ایک زمانے میں خراسان، ترکستان اور ایران میں بودھ مذہب بےحد پھیلا ہوا تھا اور بودھ مذہب کے پیرو اعراق، موصل اور شام کی سرحد تک پھیلے ہوئے تھے ۔ اِن ملکوں کے باشندوں نے حالانکہ بودھ مذہب کی جگہہ اسلام قبول کر لیا تھا پھر بھی اُن کے دلوں میں ہندستان کے لئے ایک محبت اور عزت کا خیال ضرور رہا ہوگا ۔

جب کہ آپس کے تعلقات بہت تھوڑے تھے تب بھی مسلمان ہندستان کو دنیا کا سب سے زیادہ تہذیب یافتہ ملک سمجھ کر اُس کی بےحد قدر اور عزت کرنے لگے تھے ۔ ثبوت کے طور پر ہندستان کی تعریف میں اِسلام کے پیغمبر اور اُن کے مشہور پیروکاروں کی روایتیں لفظ بہ لفظ پیش کی جاتی تھیں ۔ اِس طرح کی روایتوں کی سچائی پر تھوڑا بہت مت بھید ہو سکتا ہے لیکن یہ بات دعوے کے ساتھ کہی جا سکتی ہے کہ شروع زمانے کے اِسلام کے ادب میں ہندستان کی بےحد تعریف بھری پڑی ہے ۔

اُس وقت کے عرب سوداگروں نے گجرات کے بلہر راجاؤں اور ملابار کے سامری راجاؤں کو اپنی طرف بےحد مہربانی اور دوستی سے بھرا ہوا پایا ۔ سمندر کے کنارے کنارے انہیں اپنی بستیاں بسانے اور مسجدیں بنوانے کی اجازت تھی ۔ اِن مسلمانوں نے ہندو لڑکیوں سے ہی شادی کی جن کی ملی جلی اولادیں ملابار میں 'موپلا' اور کوکن میں 'ھٹیا' کے نام سے مشہور ہوئیں ۔ اگر ہم ملابار کے راجہ چیرومن پیرومل کے اِسلام قبول کرنے کی عام فہم روایت مان لیں تو ہمیں ہندستان کی مسلم نو آبادیوں کا وقت پیغمبر کی زندگی کے ہی قریب ماننا پڑیگا۔ روایت یہ ہے کہ

तुर्कों का हिन्दुस्तान में आना एक उतना ही अजीब-ओ-ग़रीब .क़ुदरती वाक़ेया है जितना तूफ़ानों का एक जगह से दूसरी जगह मँडराना ! तुर्कों ने आकर हिन्दुस्तान को उसकी जड़ों तक हिला दिया और लोगों को झकझोर कर नये इमकिनात के लिए जगाकर तैयार और बाख़बर कर दिया. ये बदलाव अपने आप में .फ़ायदेमन्द या नुक़सानदेह हैं इसका .फ़ैसला मैं नहीं कर सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस बदलाव ने भारत की समाजी बुनियादों को ही बदल दिया. आर्यों के हमले ने भारत की समाजी ज़िन्दगी को जिस तरह जड़ से हिला दिया था तुर्कों का हमला इससे थोड़ा ही कुछ कम रहा. लेकिन तूफ़ान के बाद सुकून लाज़िमी है. ज़लज़ले के बाद दोबारा तामीर ज़रूरी है. जब नदियों का मेल होता है तो दोनों नदियों की धारायें गरजते हुए टकराती हैं लेकिन जल्द ही वे .ख़ामोश होकर रल मिलकर एक धारा में बहने लग जाती हैं. इलाहाबाद के बाद गङ्गा जमुना की धारा में कोई .फ़र्क़ नहीं रह जाता. इसी तरह हिन्दू और मुसलमान आपस में टकराकर एक इन्सानी संगम में मिले थे और फिर उनकी तहज़ीबें रल मिलकर भारतीय तहज़ीब की अटूट धारा बनकर बहने लगी थीं कि जिसने सनत और हिरफ़त, कारीगरी और साइन्स, अदब और शायरी, मुसव्विरी और बुत तराशी—सभी मैदानों को सरसब्ज़ और हरा भरा कर दिया था. आज हम फिर एक बार ज़लील तरीक़ों के ज़रिये तहज़ीब की उस अटूट धारा के टुकड़े-टुकड़े करने की, जमुना की धारा को गंगा की धारा से अलग करने की शर्मनाक कोशिश कर रहे हैं.

भारत में तुर्कों के हमले के तीन सौ बरस पहले से मुसलमानों में भारत की अज़ीम तहज़ीब और उसके साइन्स के लामहदूद ज़ख़ीरे को समझने और उसकी तरफ़ इज़्ज़त का इज़हार करने की लगातार कोशिश हो रही थी. भारत और अरब के बीच बहुत पुराने ज़माने से तिजारती ताल्लुक़ात चले आ रहे थे लेकिन मौजूदा ताल्लुक़ात का सिरा हम उसी वक़्त से जोड़ सकते हैं जब अरबों ने अपने मशरिक़ी हकूमत में तहज़ीब के नये नये मरकज़ क़ायम किये. ख़लीफ़ा उमर के ज़माने तक इसलामी दुनिया को हिन्दुस्तान के बारे में सच्ची जानकारी थी. हिन्दुस्तान के समुद्री किनारों के बारे में अरब और ईरानी मल्लाहों को थोड़ी बहुत वाक़फ़ियत थी और वे हिन्दुस्तान की तिजारती दौलत की तारीफ़ के गीत गाया करते थे. जब ख़लीफ़ा उमर ने एक अरब मल्लाह से हिन्दुस्तान के बारे में पूछा तो वह तारीफ़ के पुल बाँधने लगा कि—"हिन्दुस्तान के दरिया मोतियों से भरे हैं और उसके पहाड़ों में हीरे जवाहरात की खानें हैं और उसके पेड़ पौधे

ترکوں کا ہندستان میں آنا ایک اتنا ہی عجیب و غریب قدرتی واقعہ ہے جتنا طوفانوں کا ایک جگہ سے دوسری جگہ منڈرانا ! ترکوں نے آکر ہندستان کو اُس کی جڑوں تک ہلا دیا اور لوگوں کو جھنجھوڑ کر نئے امکانات کے لئے جگا کر تیار اور باخبر کر دیا ۔ یہ بدلاؤ اپنے آپ میں فائدہ مند یا نقصان‌دہ ہیں اِس کا فیصلہ میں نہیں کر سکتا' لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ اِس بدلاؤ نے بھارت کی سماجی بنیادوں کو ہی بدل دیا۔ آریوں کے حملے نے بھارت کی سماجی زندگی کو جس طرح جڑ سے ہلا دیا تھا ترکوں کا حملہ اُس سے تھوڑا ہی کچھ کم رہا ۔ لیکن طوفان کے بعد سکون لازمی ہے ۔ زلزلے کے بعد دوبارہ تعمیر ضروری ہے ۔ جب ندیوں کا میل ہوتا ہے تو دونوں ندیوں کی دھارائیں گرجتے ہوئے ٹکراتی ہیں لیکن جلد ہی وہ خاموش ہو کر رل مل کر ایک دھارا میں بہنے لگ جاتی ہیں۔ الہ‌آباد کے بعد گنگا جمنا کی دھارا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا ۔ اِسی طرح ہندو اور مسلمان آپس میں ٹکرا کر ایک اِنسانی سنگم میں ملے تھے اور پھر اُن کی تہذیبیں رل مل کر بھارتی تہذیب کی اٹوٹ دھارا بن کر بہنے لگی تھیں کہ جس نے صنعت اور حرفت' کاریگری اور سائنس' ادب اور شاعری' مصوری اور بت تراشی—سبھی میدانوں کو سرسبز اور ہرا بھرا کر دیا تھا ۔ آج ہم پھر ایک بار ذلیل طریقوں کے ذریعے تہذیب کی اُس اٹوٹ دھارا کے ٹکڑے ٹکڑے کرنے کی' جمنا کی دھارا کو گنگا کی دھارا سے الگ کرنے کی شرمناک کوشش کر رہے ہیں ۔

بھارت میں ترکوں کے حملہ کے تین سو برس پہلے سے مسلمانوں میں بھارت کی عظیم تہذیب اور اُس کے سائنس کے لامحدود ذخیرے کو سمجھنے اور اُس کی طرف عزت کا اظہار کرنے کی لگاتار کوشش ہو رہی تھی ۔ بھارت اور عرب کے بیچ بہت پرانے زمانے سے تجارتی تعلقات چلے آرہے تھے لیکن موجودہ تعلقات کا سرا ہم اُسی وقت سے جوڑ سکتے ہیں جب عربوں نے اپنے مشرقی حکومت میں تہذیب کے نئے نئے مرکز قائم کئے ۔ خلیفہ عمر کے زمانے تک اسلامی دنیا کو ہندستان کے بارے میں سچی جانکاری تھی ۔ ہندستان کے سمندری کناروں کے بارے میں عرب اور ایرانی ملاحوں کو تھوڑی بہت واقفیت تھی اور وہ ہندستان کی تجارتی دولت کی تعریف کے گیت گایا کرتے تھے ۔ جب خلیفہ عمر نے ایک عرب ملاح سے ہندستان کے بارے میں پوچھا تو وہ تعریف کے پل باندھنے لگا کہ—"ہندستان کے دریا موتیوں سے بھرے ہیں اور اُس کے پہاڑوں میں ہیرے جواہرات کی کھانیں ہیں اور اُس کے پیڑ پودے

हेन्दू-मुसलमानों के तहज़ीबी मेल-जोल की शुरूआत

डाक्टर लतीफ़ वुख़्तरी एम० ए०, डी० फ़िल

मुसलमान तुर्कों के पंजाब आने के एक सदी बाद ही हिन्दू और मुसलमानों के तहज़ीबी मेल-जोल की पहली दाग़बेल मिली-जुली बोली के शकल में पड़ी. हिन्दी और फ़ारसी ने मिलकर उर्दू बोली को जन्म दिया. मिली-जुली बोली की पैदायश इस बात को ज़ाहिर करती है कि उस वक़्त तक हिन्दू और मुसलमानों में एक मिला-जुला बाहमी ख़्याल हमारी समाजी, सियासी और दिमाग़ी ज़िन्दगी के हर मैदान में गहराई के साथ पैदा हो रहा था. इस मिले-जुले ख़्याल ने तहज़ीबी एकता की गहरी छाप हमारी कारीगरी, हमारे अदब और हमारे मज़हब के ऊपर छोड़ी है.

भारत के इस तहज़ीबी एकता के खोज से भरे हुए मुताले की अब तक बहुत थोड़ी सी कोशिश की गई है. इस बारे में जो चन्द किताबें छपी हुई हैं उनमें मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी की 'अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात' 'डाक्टर डी० आर० भंडारकर की 'The Slow Progress of Islam in India' 'डाक्टर ताराचन्द की 'The Influence of Islam on Indian Culture' और एक यूरपी आलिम की किताब Scriptorum Arabum de Rebus Indicis loci et Opuscula Inedita' वग़ैरा ख़ास हैं. पिछले सैकड़ों बरस में इन्सानी बेहतरी के पुजारी कई मुसलमान सन्तों, सियासतदानों और आलिमों ने हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों के मिलने से जो उलझनें पैदा हो गई थीं उनके मोहब्बत से भरे हुए हल खोजने में बहुत सा ग़ौर खोज किया है. हिन्दुस्तानी आलिमों के ज़रिये इनकी नेक कोशिशों को जितनी अहमियत दी जानी चाहिये उतनी अहमियत नहीं दी गई. अहमियत देना तो दूर रहा दोनों फ़रीक़ों के आलिम ग़ैर तारीख़ी और झूठी दलीलों के ज़रिये मिली-जुली भारती तहज़ीब को टुकड़े-टुकड़े करने के और हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक दूसरे से जुदा करने की ख़राब और बुरी कोशिशें कर रहे हैं. हिन्दू और मुसलमानों ने सैकड़ों बरस तक जिस हिन्दुस्तानी तहज़ीब को इतना वसी बनाया है उन्हीं के नाम लेवा आज शर्मनाक तरीक़ों से उसकी धज्जियाँ उड़ाने में मशग़ूल हैं.

ھندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی شروعات

ڈاکٹر لطیف دوکری ایم. اے. ڈی. فل.

مسلمان ترکوں کے پنجاب آنے کے ایک صدی بعد ھی ھندو اور مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی پہلی داغ بیل ملی، جلی بولی کے شکل میں پڑی. ھندی اور فارسی نے مل کر اُردو بولی کو جنم دیا . ملی جلی بولی کی پیدائش اِس بات کو ظاھر کرتی ھے کہ اُس وقت تک ھندو اور مسلمانوں میں ایک ملا جلا باھمی خیال ھماری سماجی، سیاسی اور دماغی زندگی کے ھر میدان میں گہرائی کے ساتھ پیدا ھو رھا تھا . اِس ملے جلے خیال نے تہذیبی ایکتا کی گہری چھاپ ھماری کاریگری، ھمارے ادب اور ھمارے مذھب کے اُوپر چھوڑی ھے .

بھارت کے اِس تہذیبی ایکتا کے کھوج سے بھرے ھوئے مطالعہ کی اب تک بہت تھوڑی سی کوشش کی گئی ھے . اِس بارے میں جو چاند کتابیں چھپی ھوئی ھیں اُن میں مولوی سید سلیمان ندوی کی 'عرب اور ھند کے تعلقات' ڈاکٹر ڈی. آر. بھنڈار کر کی 'The Slow Progress of Islam in India, ڈاکٹر تاراچند کی 'The Influence of Islam on Indian Culture' اور ایک یورپی عالم کی کتاب 'Scriptorum Arabum de Rebus Indicis loci et Opuscula Inedita' وغیرہ خاص ھیں۔ پچھلے سیکڑوں برس میں انسانی بہتری کے پجاری کئی مسلمان سنتوں، سیاستدانوں اور عالموں نے ھندستان میں ھندو اور مسلمانوں کے ملنے سے جو الجھنیں پیدا ھو گئی تھیں. ان کے محبت سے بھرے ھوئے حل کھوجنے میں بہت سا غور خوض کیا ھے . ھندستانی عالموں کے ذریعہ اِن کی نیک کوششوں کو جتنی اھمیت دی جانی چاھئے اتنی اھمیت نہیں دی گئی . اھمیت دینا تو دور رھا دونوں فریقوں کے عالم غیر تاریخی اور جھوٹی دلیلوں کے ذریعہ ملی جلی بھارتی تہذیب کو ٹکڑے ٹکڑے کرنے کے اور ھندو اور مسلمانوں کے دلوں کو ایک دوسرے سے جدا کرنے کی خراب اور بری کوششیں کر رھے ھیں . ھندو اور مسلمانوں نے سیکڑوں برس تک جس ھندستانی تہذیب کو اتنا وسیع بنایا ھے اُنھیں کے نام لیوا آج شرمناک طریقوں سے اُس کی دھجیاں اُڑانے میں مشغول ھیں .

अब रहज़न कहलाने लगा है. आज का इन्सान जिन नित्य नए तजरबों से गुज़र रहा है उनकी बिना पर उसे कहना पड़ता है :

कितने शिक्षक ऐसे हैं इनमें जो भक्षक हैं मूल में !
कितने धर्मात्मा ऐसे हैं ऊपर से जो पापी है भीतर से !
कितने प्रेमधारी हिंसाकारी हैं और कर्मचारी अत्याचारी हैं !

इख़लाक़ी तौर पर अन्याय और अत्याचार से तोबा करके, पाप का दामन गंगाजल से धोकर, दुई की बू मन से निकालकर और भगवान का भय दिल में रखकर अपना नैतिक सुधार करना चाहिये. वरना जब इन्सानों की दुनिया बसेगी तो ऐसे लोग उस दायरे से ख़ारिज समझे जाएंगे.

अन्त से बेख़बर रहने वाले ज़ीहोश नहीं बेहोश होते हैं. समय ही इनको होश में ला सकेगा. तब तक यह लत-पथ ही रहेंगे. हमने बहुत कुछ देखा इस उलट फेर में, कल से लेकर आज तक और आज से लेकर आगे तक.

नागों को धार्मिक संसार में बड़ा मान मिलता है और दूध का उनको दान मिलता है, उनकी पूजा भी होती है, लेकिन हर देश और हर हृदय में नहीं. हर देश और हर मन का चलन जुदा होता है. कहीं यह पूजा जाता है, कहीं पाला जाता है, कहीं खाया जाता है, कहीं मारा जाता है—अपने अपने मन की बात है, किसी के मन पर किसी का बस नहीं. मन भी देश की मानिन्द आज़ाद होता है जैसे आज़ाद हुकूमत ! मन ज़ोर जब्र से कभी क़ाबू में नहीं लाया जा सकता. मन पर विजय रही है हमेशा प्रेम की.

कहने को एक साँप है आस्तीन में लेकिन उसकी फ़ौज और फ़ौज कितनी रेंगती फिर रही है आस पास तनज़ीम के साथ, जैसे कि संघ हो साँपों का और घेरा डालकर क़ैद में ले रखा हो धैर्य और निर्भीकता की एक अतम और महान चट्टान को. उनकी लकीरें और निशान, उनके क्रास और जाल दर्शन शास्त्र का काम देते हैं, सोचने समझने वालों के लिये और भविष्य वाणियों के लिये.

अगर साँप मारना हिंसा है या मना है आपके मत में तो यह छोड़े भी जा सकते हैं, लेकिन इनको आज़ाद करने के दो ही साधन हैं. या तो डाल दो "श्री शंकर" के गले में इनको, या फिर दे दो यह सब साँप सियासी सँपेरों को जो राजनीतिक बीन पर प्रेम के राग अलापकर और तमाशा उनका दिखाकर खाते कमाते फिरें नगर नगर, प्रान्त प्रान्त, पथ पथ, ग्राम ग्राम.

اب رهزن کهلانے لگا هے . آج کا انسان جن نتیه نئے تجربوں سے گذر رها هے اُن کی بنا پر اُسے کهنا پڑتا هے :

کتنے شکشک ایسے هیں اِن میں جو بهکشک هیں مول میں !
کتنے دهرماتما ایسے هیں اُوپر سے جو پاپی هیں بهیتر سے !
کتنے پریم دهاری هنساکاری هیں اور کتنے کرمچاری اتیاچاری هیں !

اخلاقی طور پر انیائے اور اتیاچار سے توبه کر کے، پاپ کا دامن گنگا جل سے دهو کر، دوئی کی بو من سے نکال کر اور بهگوان کا بهے دل میں رکھ کر، اپنا نیتک سدهار کرنا چاهئے . ورنه جب انسانوں کی دنیا بسے گی تو ایسے لوگ اُس دائرے سے خارج سمجهے جائیں گے .

انت سے بےخبر رهنے والے ذی هوش نهیں بے هوش هوتے هیں . سمے هی اِن کو هوش میں لا سکیگا . تب تک یه لتهه پته هی رهیں گے . هم نے بهت کچھ دیکها اِس اُلٹ پهیر میں، کل سے لیکر آج تک اور آج سے لیکر آگے تک .

ناگوں کو دهارمک سنسار میں بڑا مان ملتا هے اور دودھ کا اُن کو دان ملتا هے . اُن کی پوجا بهی هوتی هے، لیکن هر دیش اور هر هردے میں نهیں . هر دیش اور هر من کا چلن جدا هوتا هے . کهیں یه پوجا جاتا هے، کهیں پالا جاتا هے، کهیں کهایا جاتا هے، کهیں مارا جاتا هے—اپنے اپنے من کی بات هے، کسی کے من پر کسی کا بس نهیں . من بهی دیش کی مانند آزاد هوتا هے جیسے آزاد حکومت ! من زور جبر سے کبهی قابو میں نهیں لایا جا سکتا . من پر وجے رهی هے همیشه پریم کی .

کهنے کو ایک سانپ هے آستین میں لیکن اُس کی پودھ اور فوج کتنی رینگتی پهر رهی هے آس پاس تنظیم کے ساتھ، جیسے که سنگھ هو سانپوں کا، اور گهیرا ڈال کر قید میں لے رکها هو دهیریه اور نربهیکتا کی ایک اتم اور مهان چٹان کو . اُن کی لکیریں اور نشان، اِن کے کراس اور جال درشن شاستر کا کام دیتے هیں، سوچنے سمجهنے والوں کے لئے اور بهوشیه وانیوں کے لئے .

اگر سانپ مارنا هنسا هے یا منع هے آپ کے مت میں تو یه چهوڑے بهی جا سکتے هیں، لیکن اِن کو آزاد کرنے کے دو هی سادهن هیں . یا تو ڈالدو "شری شنکر" کے گلے میں اِن کو، یا پهر دیدو یه سب سانپ سیاسی سپیروں کو، جو راجنیتک بین پر پریم کے راگ الاپ کر اور تماشا اُن کا دکها کر کهاتے کماتے پهریں نگر نگر، پرانت پرانت، پتھ پتھ، گرام گرام .

किसी भी जात या नाम का हो, किसी भी भेस या भेद का हो, दुश्मन से अपनी हिफ़ाज़त में देरी केवल ग़फ़लत का ही नतीजा होती है. पर कुछ डर और सहम का भी कारण होता है. सहमे रहने से शत्रु साहस पाता है. शत्रु या दुश्मन को कभी हक़ीर न समझना चाहिये. साँप का बच्चा साँप ही कहलाता है. नाग की औलाद नाग ही होती है आख़िर.

सामाजिक राजनीति की तरह "नागिक नीति" में भी बदले का भाव होता है जिसकी मुद्दत बारह बरस तक कही जाती है. लेकिन राजनीतिक नाग का बदला शताब्दियों तक चलता है और चलता ही रहता है. वह तो सिर्फ़ एक से बदला लेता है और यह नसलों तक ज़हर उगलता रहता है साम्प्रदायिकता का; अपने दुश्मन को पकड़ने या क़ैद करने के लिये नागों के पास हड्डियों की गिरहबन्द रस्सियाँ होती हैं. और बलिदान का पद देने के लिये ज़हर का जाम तैयार रहता है. इन कालों के पास केवल मीठी छुरी होती है मगर ज़हर की बुझी !

महात्मा गाँधी पर हमला करने वाला कौन था ? वह एक नाग ही तो था जिसने उनको डसा.

मगर दुनिया उसे दूसरे नाम से जानती है. दुनिया की नज़रों में वह इन्सान ही था जिसने इन्सान की जान ली.

अब भी कितने ऐसे हिंसक हैं जो नुमायशी रूप और लिबास में अहिंसक हैं मगर उनको उपदेश देने का बड़ा शौक़ है. न देखें बड़ा न देखें मौक़ा, न देखें विद्वान न देखें सभ्य, बदतमीज़ी शुरू कर देते हैं.

अपना सुधार और निर्माण करने से पहले दूसरे के घरों की ताक झाँक बड़ी हद तक बेहूदा जसारत है. सेवा और सुधार के काम में तमीज़ और तहज़ीब पहली चीज़ है. पहले अपना मन साफ़ करें और अपना दामन धोवें. पहले अपनी अन्तर आत्मा को जवाब दे लें फिर आगे बढ़ें.

मानते हैं हम कि प्रेम इन्सानियत का सन्देश है. और एकता का केन्द्र ही सही मुक़ाम है इन्सानियत का. लेकिन इसी मुक़ाम पर प्रेम और एकता का गला काटा जाता है और इन्सानियत का ख़ून किया जाता है. कितना दुख होता है यह कहते कि इसी प्रेमिक और अहिंसक वातावरण में कितने बेगुनाह शूट किये गए, कितनों को ज़हर दिया गया, कितने साज़िशों का शिकार हुए और कितनों को "डोज़ आफ़ डेथ" दिया गया. यह वह सच्चाइयाँ हैं जिनसे कोई इनकार नहीं कर सकता और जिनको तारीख़ ने समेट कर अपने दामन में महफ़ूज़ कर रखा है.

आज शिक्षक और उपदेशक इतने ही सस्ते शब्द हो गए हैं जैसे लीडर और नेता के शब्द हलके और बेवज़न हो गए हैं. इनके अर्थ तक अब पलट गए हैं. रहबर

کسی بھی جات یا نام کا ہو، کسی بھی بھیس یا بھید کا ہو، دشمن سے اپنی حفاظت میں دیری کیول غفلت کا ہی نتیجہ ہوتی ہے۔ پر کچھ ڈر اور سہم کا بھی کارن ہوتا ہے۔ سہمے رہنے سے شترو ساہس پاتا ہے۔ شترو یا دشمن کو کبھی حقیر نہ سمجھنا چاہئے۔ سانپ کا بچہ سانپ ہی کہلاتا ہے۔ ناگ کی اولاد ناگ ہی ہوتی ہے آخر۔

سماجک راجنیتی کی طرح "ناگک نیتی" میں بھی بدلے کا بھاؤ ہوتا ہے جس کی مدت بارہ برس تک کہی جاتی ہے۔ لیکن راجنیتک ناگ کا بدلہ شتابدیوں تک چلتا ہے اور چلتا ہی رہتا ہے۔ وہ تو صرف ایک سے بدلہ لیتا ہے اور یہ نسلوں تک زہر اُگلتا رہتا ہے سمپردائکتا کا؛ اپنے دشمن کو پکڑنے یا قید کرنے کے لئے ناگوں کے پاس ہڈیوں کی گرہ بند رسیاں ہوتی ہیں۔ اور بلیدان کا پد دینے کے لئے زہر کا جام تیار رہتا ہے۔ اِن کالوں کے پاس کیول میٹھی چھری ہوتی ہے مگر زہر کی بجھی!

مہاتما گاندھی پر حملہ کرنے والا کون تھا؟ وہ ایک ناگ ہی تو تھا جس نے اُن کو ڈسا۔

مگر دنیا اُسے دوسرے نام سے جانتی ہے۔ دنیا کی نظروں میں وہ انسان ہی تھا جس نے انسان کی جان لی۔

اب بھی کتنے ایسے ہنسک ہیں جو نمائشی روپ اور لباس میں اہنسک ہیں مگر اُن کو اُپدیش دینے کا بڑا شوق ہے۔ نہ دیکھیں بڑا نہ دیکھیں موقعہ نہ دیکھیں ودوان نہ دیکھیں سبھیہ، بدتمیزی شروع کر دیتے ہیں۔

اپنا سدھار اور نرمان کرنے سے پہلے دوسروں کے گھروں کی تاک جھانک بڑی حد تک بیہودہ جسارت ہے۔ سیوا اور سدھار کے کام میں تمیز اور تہذیب پہلی چیز ہے۔ پہلے اپنا من صاف کریں اور اپنا دامن دھوئیں۔ پہلے اپنی انتر آتما کو جواب دے لیں پھر آگے بڑھیں۔

مانتے ہیں ہم کہ پریم انسانیت کا سندیش ہے۔ اور ایکتا کا کیندر ہی صحیح مقام ہے انسانیت کا۔ لیکن اِسی مقام پر پریم اور ایکتا کا گلا کاٹا جاتا ہے اور انسانیت کا خون کیا جاتا ہے۔ کتنا دکھ ہوتا ہے یہ کہتے کہ اسی پریمک اور اہنسک واتاورن میں کتنے بےگناہ شوٹ کئے گئے، کتنوں کو زہر دیا گیا، کتنے سازشوں کا شکار ہوئے اور کتنوں کو "ڈوز آف ڈیتھ" دیا گیا۔ یہ وہ سچائیاں ہیں جن سے کوئی انکار نہیں کر سکتا اور جن کو تاریخ نے سمیٹ کر اپنے دامن میں محفوظ کر رکھا ہے۔

آج شکشک اور اُپدیشک اِتنے ہی سستے شبد ہو گئے ہیں جیسے لیڈر اور نیتا کے شبد ہلکے اور بےوزن ہو گئے ہیں۔ اِن کے ارتھ تک اب پلٹ گئے ہیں۔ رہبر

घात में लगी रहती हैं. घात और काट का असर सर्प की सन्तान को विरसे में मिलता है.

नाग के सम्बन्ध में हमने "गुण गान" के शब्दों के बारे में कुछ खोज की है. इस खोज के अनुसार हम "गान" के मानी नाग के लेते हैं. गान को उल्टा करके देखो तो मालूम होगा कि गान ही से नाग ने जन्म लिया है. इसी तरह "गुण" से नाग का अर्थ निकलता है. वह नग ही तो है जो नाग के मणि से निकल कर राज के ताज को जगमगाता और शोभा देता है—कहने को तो यह एक कीड़ा है मगर मणि का हीरा है.

भारत में नाग और नागिन देवी देवता माने जाते हैं. इनमें राजा भी होता है जिसको "वासुकी" कहते हैं.

आजकल विश्व मित्रता के कारण देश और अन्तर देश भाई-भाई का नारा बुलन्द है. इसी राजनीतिक नीति के अनुसार अमरीका और भारत में भी बहनापा शुरू हो गया है. मगर यह नाता हमको खटकता है. अमरीका का "मिल्क पाउडर" भारती नागिन के स्वभाव और मिजाज को अनुकूल नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह हमेशा से शुद्ध दूध के आदी रहे हैं. यह बात अच्छी तरह अनुभव में आ चुकी है कि सियासी भाई एतबारी भाई नहीं होते, इसलिये कि सियासत खुद एतबारी चीज नहीं.

यूँ तो साँपों की सैकड़ों क़िस्में हैं लेकिन भारत में इनकी दो जातें खास हैं—धार्मिक और राजनैतिक.

धार्मिक अहिंसक होते हैं और राजनैतिक हिंसक.

आजकल राजनीतिक काले अधिक उबल पड़े हैं देश के भाग-भाग में, बस्ती-बस्ती और गाँव-गाँव में. यही काले ज्यादा कटीले और जियादा जहरीले होते हैं.

यह बात याद रखने की है कि धार्मिक नाग अहिंसक ही नहीं रहता सदा. डस भी लेता है अचानक. मगर उसका दोष नहीं. वह तो उसकी फ़ितरत है.

नाग जब डसता है तो हिंसक कहलाता है और जब हँसता है तो अहिंसक होता है. उस समय वह कितना सुन्दर और प्रेमी मालूम होता है! उसका डसना जितना खतरनाक है, उसका हँसना भी खतरे से खाली नहीं. वह हँसते-हँसते जान लेता है और खेलते-खेलते जाम पी जाता है किसी के भी प्राण का, उसपर भरोसा ग़लत. भरोसे की चीज तो मनुष्य भी नहीं; वह तो फिर आखिर कीड़ा है.

मनुष्य भी डसता है अवश्य, पर सर्प और मनुष्य के डसने डसने में अन्तर है. भाव भाव में अन्तर है.

सर्प डसता है अपनी जात बाहर किसी भी प्राणी को, और मनुष्य डसता है अपनी ही जात को, यानी आदमी आदमी को. यही इसकी वह विशेषता है जिसके कारण इसने बरबरता को जीता है और विजय प्राप्त की है हैवानों की .खू .खसलत पर.

گھات میں لگی رہتی ہیں۔ گھات اور کاٹ کا اثر سرپ کی سنتان کو ورثہ میں ملتا ہے۔

ناگ کے سمبندھ میں ہم نے "گن گان" کے شبدوں کے بارے میں کچھ کھوج کی ہے۔ اِس کھوج کے انوسار ہم "گان" کے معنی ناگ کے لیتے ہیں۔ گان کو اُلٹا کر کے دیکھو تو معلوم ہوگا کہ گان ہی سے ناگ نے جنم لیا ہے۔ اِسی طرح "گن" سے نگ کا ارتھ نکلتا ہے۔ وہ نگ ہی تو ہے جو ناگ کے من سے نکلکر راج کے تاج کو جگمگاتا اور شوبھا دیتا ہے—کہنے کو تو یہ ایک کیڑا ہے مگر من کا ہیرا ہے۔

بھارت میں ناگ اور ناگن دیوی دیوتا مانے جاتے ہیں۔ اِن میں راجا بھی ہوتا ہے جس کو "واسکی" کہتے ہیں۔

آجکل وشومترتا کے کارن دیش اور انتر دیش بھائی بھائی کا نعرہ بلند ہے۔ اِسی راجنیتک نیتی کے انوسار امریکہ اور بھارت میں بھی بہناپا شروع ہو گیا ہے۔ مگر یہ ناتا ہم کو کھٹکتا ہے۔ امریکہ کا "ملک پوڈر" بھارتی ناگن کے سبھاؤ اور مزاج کو انوکول نہیں پڑیگا' کیونکہ وہ ہمیشہ سے شدھ دودھ کے عادی رہے ہیں۔ یہ بات اچھی طرح انوبھو میں آچکی ہے کہ سیاسی بھائی اعتباری بھائی نہیں ہوتے' اِس لئے کہ سیاست خود اعتباری چیز نہیں۔

یوں تو سانپوں کی سینکڑوں قسمیں ہیں لیکن بھارت میں اِن کی دو جاتیں خاص ہیں—دھارمک اور راجنیتک۔

دھارمک اہنسک ہوتے ہیں اور راجنیتک ہنسک۔

آجکل راجنیتک کالے ادھک اُبل پڑے ہیں دیش کے بھاگ بھاگ میں' بستی بستی اور گاؤں گاؤں میں۔ یہی کالے زیادہ کٹیلے اور زیادہ زہریلے ہوتے ہیں۔

یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ دھارمک ناگ اہنسک ہی نہیں رہتا سدا۔ ڈس بھی لیتا ہے اچانک۔ مگر اُس کا دوش نہیں۔ وہ تو اُس کی فطرت ہے۔

ناگ جب ڈستا ہے تو ہنسک کہلاتا ہے اور جب ہنستا ہے تو اہنسک ہوتا ہے۔ اُس سمے وہ کتنا سندر اور پریمی معلوم ہوتا ہے! اُس کا ڈسنا جتنا خطرناک ہے اُس کا ہنسنا بھی خطرے سے خالی نہیں۔ وہ ہنستے ہنستے جان لیتا ہے اور کھیلتے کھیلتے جام پی جاتا ہے کسی کے بھی پران کا' اُس پر بھروسہ غلط۔ بھروسے کی چیز تو منشیہ بھی نہیں؛ وہ تو پھر آخر کیڑا ہے۔

منشیہ بھی ڈستا ہے اوشیہ' پر سرپ اور منشیہ کے ڈسنے ڈسنے میں انتر ہے۔ بھاؤ بھاؤ میں انتر ہے۔

سرپ ڈستا ہے اپنی جات باہر کسی بھی پرانی کو' اور منشیہ ڈستا ہے اپنی ہی جات کو' یعنی آدمی آدمی کو۔ یہی اِس کی وہ وشیشتا ہے جس کے کارن اِس نے بربرتا کو جیتا ہے اور وجے پراپت کی ہے حیوانوں کی خو خصلت پر۔

आस्तीन में साँप

भाई अब्दुल हलीम अनसारी, आरटिस्ट

जैसे अमन में जंग—रंग में भंग—मन्दिर में पाप—यह केवल सियासत की बात कि आसतीन में साँप.

सियासत हमेशा सेवा और प्रेम का दम भरती रहती है. कितनी सुन्दर होती हैं उसकी भावनाएं और कितने लुभावने होते हैं उसके प्रेम भाषण सियासी स्टेज पर.

जैसे किसी पिक्चर हाउस के फ़िल्मी परदे पर झूठी मुहब्बत के बनावटी अदाकार!

जैसे समाज सुधार के नाटक और प्रेम प्यार के झूटे किरदार!

सफ़ेद आस्तीन की लम्बी गुफा में रहने वाला सर्प राजनीति की बीन पर प्रेम की रागिनी से कितना आनन्द लेता है और गोल कुन्डल पर बैठा पहरा देता है. केवल उसके फुंकार की दहशत और विष का भय मनमानी कराने के लिये काफ़ी होता है. इनसानियत के साथ प्रेम और हमदर्दी के कारण हमारी यह शुभ कामना कभी-कभी दिल से निकले बिना नहीं रहती कि उस आसतीन का झिटक देना ही उचित है.

जैसे धन के ढेर पर साँप नाथ लहराते हैं, इसी तरह राज्य के संघ पर नाग नाथ पहरा देते हैं. राज्य का भन्डार केवल धन का ही नहीं होता. उसका भन्डार भिन्न भिन्न प्रकार का होता है. यह कहना अनुचित नहीं कि आज के समय जबकि नए-नए टैक्सों की भरमार है, भूमि का कण-कण भन्डार है और मनुष्य का अंश-अंश धन है राज्य के निकट.

जान की रक्षा सब से अधिक अक़लमन्दी की बात है और शत्रु की मित्रता बड़ी नादानी!

एक शत्रु को जियादा दिन मुहलत देने से एक के दो होते हैं, और दो के चार. अब भी कितने रंग बिरंग के सर्प छुपे हुए हैं, मतभेद के सूराखों में, साम्प्रदायिकता के ग़ारों में, और राजनीति के पिटारों में. इनकी ज़बान का बारीक और लहरदार करेन्ट ऐटम से कम नहीं, इसलिये कि जान लेना दोनों का मक़सद है.

एक नागिन सैकड़ों अन्डे देती है, उन अन्डों से सैकड़ों बच्चे निकालती है. उनसे कितनी नसलें बनती हैं. कितनी पीढ़ियां चलती हैं जो रेंगती फिरती हैं धरती के ऊपर भी और भीतर भी और फुंकारती रहती हैं इधर उधर, जिससे वातावरण ज़हरीला होता है—कितने ही ग़ाफ़िल और लापरवाह लोग ख़तरों के घेरे में आ जाते हैं. साँपों की रस्सी के जाले में बँध जाते हैं. नई नसलें उनको अपनी निगरानी में रखते हुए अपनी-अपनी

آستین میں سانپ

بھائی عبدالحلیم انصاری آرٹسٹ

جیسے امن میں جنگ — رنگ میں بھنگ — مندر میں پاپ — یہ کیول سیاست کی بات کہ آستین میں سانپ۔

سیاست ہمیشہ سیوا اور پریم کا دم بھرتی رہتی ہے۔ کتنی سندر ہوتی ہیں اُس کی بھاؤنائیں اور کتنے لبھاؤنے ہوتے ہیں اُس کے پریم بھاشن سیاسی اِسٹیج پر۔

جیسے کسی پکچر ہاؤس کے فلمی پردے پر جھوٹی محبت کے بناوٹی اداکار!

جیسے سماج سدھار کے ناٹک اور پریم پیار کے جھوٹے کردار۔

سفید آستین کی لمبی گپھا میں رہنے والا سرپ راجنیتی کی بین پر پریم کی راگنی سے کتنا آنند لیتا ہے اور گول کنڈل پر بیٹھا پہرا دیتا ہے۔ کیول اُس کے پھنکار کی دہشت اور وش کا بھے من مانی کرانے کے لئے کافی ہوتا ہے۔ اِنسانیت کے ساتھ پریم اور ہمدردی کے کارن ہماری یہ شبھ کامنا کبھی کبھی دل سے نکلے بنا نہیں رہتی کہ اُس آستین کا جھٹک دینا ہی اُچت ہے۔

جیسے دھن کے ڈھیر پر سانپ ناتھ لہراتے ہیں، اِسی طرح راجیہ کے سنگھ پر ناگ ناتھ پہرہ دیتے ہیں۔ راجیہ کا بھنڈار کیول دھن کا ہی نہیں ہوتا۔ اُس کا بھنڈار بھن بھن پرکار کا ہوتا ہے۔ یہ کہنا انوچت نہیں کہ آج کے سمے جب کہ نئے نئے ٹیکسوں کی بھرمار ہے۔ بھومی کا کن کن بھنڈار ہے اور منشیہ کا انش انش دھن ہے راجیہ کے نکٹ۔

جان کی رکشا سب سے ادھک عقلمندی کی بات ہے اور شترو کی مترتا بڑی نادانی!

ایک شترو کو زیادہ دن مہلت دینے سے ایک کے دو ہوتے ہیں، اور دو کے چار۔ اب بھی کتنے رنگ برنگ کے سرپ چھپے ہوئے ہیں، مت بھید کے سوراخوں میں، سامپردایکتا کے غاروں میں، اور راجنیتی کے پٹاروں میں۔ اِن کی زبان کا باریک اور لہردار کرینٹ ایٹم سے کم نہیں، اِس لئے کہ جان لینا دونوں کا مقصد ہے۔

ایک ناگن سیکڑوں انڈے دیتی ہے، اُن انڈوں سے سیکڑوں بچے نکالتی ہے۔ اُن سے کتنی نسلیں بنتی ہیں۔ کتنی پیڑھیاں چلتی ہیں جو رینگتی پھرتی ہیں دھرتی کے اوپر بھی اور بھیتر بھی۔ اور پھنکارتی رہتی ہیں اِدھر اُدھر، جس سے واتاورن زہریلا ہوتا ہے — کتنے ہی غافل اور لاپرواہ لوگ خطروں کے گھیرے میں آجاتے ہیں، سانپوں کی رسی کے جالے میں بندھ جاتے ہیں۔ نئی نسلیں اُن کو اپنی نگرانی میں رکھتے ہوئے اپنی اپنی

हेरात की घाटी में 'ताजिकों' की काफ़ी बड़ी आबादी है. ताजिक मुल्क के बहुत पुराने बाशिन्दे हैं और अफ़ग़ानों के बाद इन्हीं की आबादी सब से ज़्यादा है. आजकल यह ज़्यादातर अफ़ग़ानिस्तान के शुमाल में रहते हैं ख़ासकर हेरात सूबे में जहाँ वे कुल आबादी के 34 फ़ीसदी हैं; काबुल सूबा (28.8 फ़ीसदी), कत्ताघान-बदख़शाँ सूबा (46फ़ीसदी) मज़ार शरीफ़ सूबे में (23.7 फ़ीसदी). वे हिन्दूकुश, गोरबन्द, पंजशेर, नेजराब, नूरस्तान और ख़ोगर की पहाड़ियों में भी रहते हैं.

ताजिक मेहनतकश आदमी हैं. लेकिन वे ज़्यादातर किसान हैं और ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर काम करते हैं. यह लोग चेरीकर कहलाते हैं और बहुत ग़रीबी में रहते हैं.सूखी या ताज़ा मलबरी ही उनकी ख़ूराक है. बहुत से गाँव में ज्वार का दलिया, जिसमें घास भी मिली रहती है, बहुत ज़ायक़े से खाया जाता है. हरीरूद और बालामरग़ाब की घाटियों में और उनके जनूब में भी किसानों को लकड़ी के हलों से ज़मीन जोतते हुए देखा जा सकता है.

किसान अफ़ग़ानिस्तान की आबादी के 70 फ़ीसदी हैं, लेकिन उनको सिर्फ़ दो-तिहाई हैक्टर ज़मीन फ़ी शख़्स मिलती है.

खेती की जाने वाली ज़मीन का रक़बा 15,00,000 है, जिसमें से 9,00,000 बड़े ज़मींदारों के पास है, बाक़ी मुल्लाओं के पास है. 60 फ़ीसदी किसानों के पास या तो कोई ज़मीन नहीं है और किसी के पास है भी तो बहुत कम.

'लतीफ़न्दया' नामी इलाक़ों में, जोकि शुमाली अफ़ग़ानिस्तान में हैं, हज़ारों हैक्टर, जिनमें कि साझेदार लोग काम करते हैं, उन्हें ग़ल्ले का दर नवाँ गट्ठा मिलता है. यह लोग अपना नवाँ हिस्सा या अच्छी फ़सल होने पर पाँचवा हिस्सा पाने के लिये शबो रोज़ काम करते हैं, कुदालियों से ज़मीन खोदते हैं. इस तरह के क़ानूनों से खेती की तरक़्क़ी नहीं हो सकती.

अफ़ग़ानिस्तान की ज़िन्दगी इसी तरह चलती रहती है लेकिन ख़ाना बदोशों के तम्बुओं में पुराना अमन ही क़ायम है. हर नये अप्रैल के महीने में ग्वाले और उनके जानवरों के झुन्ड अपने सफ़र के लिये रवाना होते हैं, जैसा कि सदियों से करते आये हैं. हर बसन्त को यह जफ़ाकश और मेहनतकश क़ाफ़िला शुमाल की जानिब कूच करता है, जबकि ख़िज़ाँ उसे वापस अपने पहले की जगह पर ले आती है.

ہرات کی گھاٹی میں 'تاجکوں' کی کافی بڑی آبادی ہے۔ تاجک ملک کے بہت پرانے باشندے ہیں اور افغانوں کے بعد اِنہیں کی آبادی سب سے زیادہ ہے۔ آجکل یہ زیادہ تر افغانستان کے شمال میں رہتے ہیں خاصکر ہرات صوبہ میں جہاں وے کل آبادی کے 34 فیصدی ہیں؛ کابل صوبہ (28.8 فیصدی)، کتاگھان بدخشان صوبہ (46 فیصدی) مزارِ شریف صوبہ میں (23.7 فیصدی)۔ وے ہندوکش، گوربند، پنجشیر، نیجراب، نورستان اور کھوگر کی پہاڑیوں میں بھی رہتے ہیں۔

تاجک محنت کش آدمی ہیں۔ لیکن وے زیادہ تر کسان ہیں اور زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں پر کام کرتے ہیں۔ یہ لوگ چیریکر کہلاتے ہیں اور بہت غریبی میں رہتے ہیں۔ سوکھی یا تازہ ملبری ہی اُن کی خوراک ہے۔ بہت سے گاؤں میں جوار کا دلیا، جس میں گھاس بھی ملی رہتی ہے، بہت ذایقہ سے کھایا جاتا ہے۔ ہری‌رود اور بالامرغب کی گھاٹیوں میں اور اُن کے جنوب میں بھی کسانوں کو لکڑی کے ہلوں سے زمین جوتتے ہوئے دیکھا جا سکتا ہے۔

کسان افغانستان کی آبادی کے 70 فیصدی ہیں، لیکن اُن کو صرف دو تہائی ہیکٹر زمین فی شخص ملتی ہے۔

کھیتی کی جانے والی زمین کا رقبہ 15,00,000 ہے، جس میں سے 9,00,000 بڑے زمینداروں کے پاس ہے، باقی ملاؤں کے پاس ہے۔ 60 فیصدی کسانوں کے پاس یا تو کوئی زمین نہیں ہے اور کسی کے پاس ہے بھی تو بہت کم۔

'طیفادیہ' نامی علاقوں میں، جو کہ شمالی افغانستان میں ہیں، ہزاروں ہیکٹر، جن میں کہ ساجھےدار لوگ کام کرتے ہیں انہیں غلہ کا در نواں گٹھا ملتا ہے۔ یہ لوگ اپنا نواں حصہ یا اچھی فصل ہونے پر پانچواں حصہ پانے کے لئے شب و روز کام کرتے ہیں، کدالیوں سے زمین کھودتے ہیں۔ اِس طرح کے قانونوں سے کھیتی کی ترقی نہیں ہو سکتی۔

افغانستان کی زندگی اِسی طرح چلتی رہتی ہے لیکن خانہ‌بدوشوں کے تمبوؤں میں پرانا امن ہی قایم ہے۔ ہر نئے اپریل کے مہینے میں گوالے اور اُن کے جانوروں کے جھنڈ اپنے سفر کے لئے روانہ ہوتے ہیں، جیسا کہ صدیوں سے کرتے آئے ہیں۔ ہر بسنت کو یہ جفاکش اور محنت کش قافلہ شمال کی جانب کوچ کرتا ہے، جب کہ خزاں اُسے واپس اپنے پہلے کی جگہہ پر لے آتی ہے۔

मशरिक़ी अफ़ग़ान जातियों ने अपने खास क़िस्म के जम्हूरी पंचायती शक्ल को क़ायम रखा है—मगर मग़रिबी जातियों, खासकर ग़िल्ज़ाई और दुर्रानी फ़िरक़ों का क़बीली तआवुन टूट रहा है और उनमें अमीरों और जागीरदारों का ज़ोर बढ़ रहा है. यह जातियाँ अब खानाबदोशी छोड़कर सिंचाई वाली ज़मीन पर आबाद हो रही हैं. क़बीलों के ऊँचे खान्दान तमाम ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं और क़बीले के सरदार बन जाते हैं. यह ऊँचा तबक़ा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है. इससे क़बीले वालों को नुक़सान है. यह सरदार खान उन गड़रियों से ऊन ख़रीद लेते हैं जिन्हें उन्होंने उधार देकर क़र्ज़दार बना दिया है. यह खान सरकार के लिये टैक्स भी वसूल करते हैं.

क़न्धार से .फ़राह तक का सफ़र गर्मियों के दिनों में बरदाश्त नहीं किया जा सकता क्योंकि गर्मी बहुत सख्त पड़ती है. मगर बसन्त की शुरूआत में यह ज़िले बहुत .खुशनुमा हो जाते है. गरिश्क के नज़दीक गहरी हिल्मन्द घाटी को यह सड़क पार करती है. 'दिलाराम' नामी जगह के पास से याक़ुआ नामी रेगिस्तान शुरू होता है. इधर अब खानाबदोशों के तम्बू भी बहुतायत से लगने लगे हैं.

फ़राह नामी सूबाई दारुलसल्तनत, जिसको पहले फ़ेद्रा कहते थे, पहले एक तहज़ीबी मरकज़ था. इसके जनूब में रुस्तम का मशहूर शहर निमरोज़ है. पुराने ज़माने में यह हिस्सा सीस्तान के नाम से मशहूर था, यहाँ बहुत सी सिंचाई की नहरें थीं और यहाँ की खेती भी बढ़ी चढ़ी थी. इसका सबसे .ज़्यादा उरूज यूनानियों के वक़्त में हुआ था.

लेकिन मंगोलों ने सब कुछ बरबाद कर दिया. आख़िरी हमला तैमूर लन्ग के ज़रिये किया गया, जिसने हिलमन्द दरिया के सब पुश्तों और सब सिंचाई की नहरों को बरबाद कर दिया. नतीजा यह हुआ कि रेगिस्तान सीस्तान को पार कर तमाम इलाक़े में फैल गया और आज .फ़राह की हालत अज़हद क़ाबिले रहम है.

फ़राह से शुमाल की तरफ़ जाते हुए, हम काले तम्बुओं (खानाबदोशों) के इलाक़े को छोड़कर उन ज़िलों में दाखिल होते हैं जहाँ पश्तो नामी अफ़ग़ानी ज़बान बहुत कम सुन पड़ती है.

हम एक पहाड़ी सड़क पर चलकर शुमाली अफ़ग़ानिस्तान चले जाते हैं, जहाँ हम हेरात की ज़रख़ेज़ घाटी में रुकते हैं. अफ़ग़ानिस्तान का चौथा नम्बर का शहर हेरात इस घाटी के ठीक वस्त में है, जो लम्बाई में 120 क्लोमीटर और चौड़ाई में 30 क्लोमीटर है.

हेरात की पुरानी शान चली गई है. शहर की आबादी आज 25,000 आदमियों से .ज़्यादा नहीं है, लेकिन यह एक पुश्तैनी रिवायत है कि मंगोलों के हमले के पहले हेरात की आबादी दस लाख थी.

مشرقی افغانی جاتیوں نے اپنے خاص قسم کے جمہوری پنچایتی شکل کو قایم رکھا ہے—مگر مغربی جاتیوں' خاص کر غلزائی اور درانی فرقوں کا قبیلی تعاون ٹوٹ رہا ہے اور ان میں امیروں اور جاگیرداروں کا زور بڑھ رہا ہے . یہ جاتیاں اب خانہ بدوشی چھوڑ کر سنچائی والی زمین پر آباد ہو رہی ہیں . قبیلوں کے اونچے خاندان تمام زمین پر قبضہ کر لیتے ہیں اور قبیلے کے سردار بن جاتے ہیں . یہ اونچا طبقہ دھیرے دھیرے بڑھتا جا رہا ہے . اس سے قبیلے والوں کو نقصان ہے . یہ سردار خان ان گڈریوں سے اون خرید لیتے ہیں جنہیں انہوں نے ادھار دیکر قرضدار بنا دیا ہے . یہ خان سرکار کے لئے ٹیکس بھی وصول کرتے ہیں .

قندھار سے فراح تک کا سفر گرمیوں کے دنوں میں برداشت نہیں کیا جا سکتا کیونکہ گرمی بہت سخت پڑتی ہے . مگر بسنت کی شروعات میں یہ ضلعے بہت خوشنما ہو جاتے ہیں . گرشک کے نزدیک گہری ہلمند گھاٹی کو یہ سڑک پار کرتی ہے . 'دلارام' نامی جگہہ کے پاس سے یاقوہ نامی ریگستان شروع ہوتا ہے . ادھر اب خانہ بدوشوں کے تمبو بھی بہوتایت سے لگنے لگے ہیں .

فراح نامی صوبائی دارالسلطنت' جس کو پہلے فیدرہ کہتے تھے' پہلے ایک تہذیبی مرکز تھا . اس کے جنوب میں رستم کا مشہور شہر نمروز ہے . پرانے زمانے میں یہ حصہ سیستان کے نام سے مشہور تھا' یہاں بہت سی سنچائی کی نہریں تھیں اور یہاں کی کھیتی بھی بڑھی چڑھی تھی . اس کا سب سے زیادہ عروج یونانیوں کے وقت میں ہوا تھا .

لیکن منگولوں نے سب کچھ برباد کر دیا . آخری حملہ تیمور لنگ کے ذریعہ کیا گیا' جس نے ہلمند دریا کے سب پشتوں اور سب سنچائی کی نہروں کو برباد کر دیا. نتیجہ یہ ہوا کہ ریگستان سیستان کو پار کر تمام علاقے میں پھیل گیا اور آج فراح کی حالت ازحد قابل رحم ہے .

فراح سے شمال کی طرف جاتے ہوئے' ہم کالے تمبوؤں (خانہ بدوشوں) کے علاقے کو چھوڑ کر ان ضلعوں میں داخل ہوتے ہیں جہاں پشتو نامی افغانی زبان بہت کم سن پڑتی ہے .

ہم ایک پہاڑی سڑک پر چل کر شمالی افغانستان چلے جاتے ہیں' جہاں ہم ہرات کی زرخیز گھاٹی میں رکتے ہیں. افغانستان کا چوتھا نمبر کا شہر ہرات اسی گھاٹی کے ٹھیک وسط میں ہے' جو لمبائی میں 120 کلو میٹر اور چوڑائی میں 30 کلومیٹر ہے .

ہرات کی پرانی شان چلی گئی ہے . شہر کی آبادی آج 25,000 آدمیوں سے زیادہ نہیں ہے' لیکن یہ ایک پشتینی روایت ہے کہ منگولوں کے حملہ کے پہلے ہرات کی آبادی دس لاکھ تھی .

दुनिया में ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँकि अफ़ग़ानिस्तान की तरह बाशिन्दों की ख़ाना बदोश ज़िन्दगी में बदलाव हुए हों, तमाम साल भर जानवरों के झुन्ड के झुन्ड चरते रहते हैं और मुल्क की चौथाई आबादी हमेशा चरागाह ही ढूँढने में मशग़ूल रहती है. गर्मी के मोसम की गरमी जनूब के चरागाहों को सुखा देती है, जिससे हज़ारों अफ़ग़ान शुमाल से जनूब और मशरिक़ से मग़रिब तक हर साल चरागाहों की तलाश में भटकते रहने पर मजबूर होते हैं. भेड़ों, बकरों, और ऊँटों के बड़े-बड़े झुन्ड सड़कों में भरे रहते हैं और उनके साथ उनका स्याह तम्बू और सीधा सादा सामान भी रहता है. अपने 'ख़ानों' और बड़े-बूढ़ों की देख-रेख में यह क़ाफ़िले हमेशा चलते फिरते रहते हैं.

जब ख़िज़ाँ आती है तो यह क़ाफ़िले अपने जाड़ों की चरागाहों की तरफ़ वापस चले जाते हैं. हरेक क़बीले और फ़िरक़े के अपने ख़ास रास्ते हैं, और उन लोगों की ख़राबी होती है जो दूसरे क़बीलों के चरागाहों को छीनने की कोशिश करते हैं. अच्छे चरागाहों की कमी के सबब से कई ज़िलों में इस तरह के हथियार बन्द झगड़े होते रहते हैं जहाँ पर हमलावरों के ख़िलाफ़ हथियारों का इस्तेमाल किया जाता है.

यह ख़ानाबदोश धीरे-धीरे घूमते हैं—क़स्बों में ऊन, चमड़ा और फ़र बेचते हैं और बदले में रूई का कपड़ा, बारूद, कारतूस और राइफ़ल ख़रीदते हैं.

ज़्यादातर लोग हथियार रखते हैं. ज़िन्दगी उनके लिये आराम की चीज़ नहीं है और वे हमेशा चौकन्ने रहते हैं. उनकी मुश्किलात में उनकी बहादुर अफ़ग़ान औरतें, माँ और बच्चे भी उनका साथ देते हैं. अपने शहर की बहनों की तरह गाँव की अफ़ग़ानी औरतें अपनी ख़ानाबदोशी में पर्दे का इस्तेमाल नहीं करतीं.

अफ़ग़ान एक ख़ूबसूरत और मेहनतकश क़ौम है. वे लम्बे मज़बूत पट्ठों वाले, नपे तुले सिडौल क़द के और घुँघराले बालों वाले होते हैं.

अफ़ग़ान अपनी आज़ादी की मोहब्बत के लिये मशहूर हैं. बूढ़े अपनी लड़ी गई पुरानी लड़ाइयों को बयान करने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं.

अफ़ग़ानिस्तान ने बरतानिया से तीन लड़ाइयाँ लड़ीं. 1838-42 की जंग में अंग्रेज़ी फ़ौजें हारीं. दूसरी लड़ाई 1878-80 में हुई. इस जंग के नतीजे की शकल में अफ़ग़ानिस्तान बरतानिया के पूरे क़ब्ज़े में नहीं तो मातेहती में तो आ ही गया. सन 1919 में लड़ी गई तीसरी जंग से, जिसमें अफ़ग़ानिस्तान के साथ सोवियत रूस की फ़ौजें भी थीं, अफ़ग़ानिस्तान को आज़ादी मिल गई.

دنیا میں ایسا کوئی ملک نہیں ہے جہاں کہ افغانستان کی طرح باشندوں کی خانہ بدوش زندگی میں بدلاؤ ہوئے ہوں، تمام سال بھر جانوروں کے جھنڈ کے جھنڈ چرتے رہتے ہیں اور ملک کی چوتھائی آبادی ہمیشہ چراگاہ ہی ڈھونڈھنے میں مشغول رہتی ہے ۔ گرمی کے موسم کی گرمی جنوب کے چراگاہوں کو سکھا دیتی ہے، جس سے ہزاروں افغان شمال سے جنوب اور مشرق سے مغرب تک ہر سال چراگاہوں کی تلاش میں بھٹکتے رہنے پر مجبور ہوتے ہیں ۔ بھیڑوں، بکروں اور اونٹوں کے بڑے بڑے جھنڈ سڑکوں میں بھرے رہتے ہیں اور اُن کے ساتھ ہزاروں آدمی چلتے رہتے ہیں ۔ اُن کے ساتھ اُن کا سیاہ تمبو اور سیدھا سادہ سامان بھی رہتا ہے ۔ اپنے 'خانوں' اور بڑے بوڑھوں کی دیکھ ریکھ میں یہ قافلے ہمیشہ چلتے پھرتے رہتے ہیں ۔

جب خزاں آتی ہے تو یہ قافلے اپنے جاڑوں کی چراگاہوں کی طرف واپس چلے جاتے ہیں ۔ ہر ایک قبیلے اور فرقے کے اپنے خاص راستے ہیں، اور اُن لوگوں کی خرابی ہوتی ہے جو دوسرے قبیلوں کے چراگاہوں کو چھیننے کی کوشش کرتے ہیں ۔ اچھے چراگاہوں کی کمی کے سبب سے کئی ضلعوں میں اِس طرح کے ہتھیار بند جھگڑے ہوتے رہتے ہیں، جہاں پر حملہ آوروں کے خلاف ہتھیاروں کا اِستعمال کیا جاتا ہے ۔

یہ خانہ بدوش دھیرے دھیرے گھومتے ہیں—قصبوں میں اون، چمڑا اور فر بیچتے ہیں اور بدلے میں روئی کا کپڑا، بارود، کارتوس اور رائفل خریدتے ہیں ۔

زیادہ تر لوگ ہتھیار رکھتے ہیں ۔ زندگی اُن کے لئے آرام کی چیز نہیں ہے اور وے ہمیشہ چوکنے رہتے ہیں ۔ اُن کی مشکلات میں اُن کی بہادر افغان عورتیں، ماں اور بچے بھی اُن کا ساتھ دیتے ہیں ۔ اپنے شہر کی بہنوں کی طرح گاؤں کی افغانی عورتیں اپنی خانہ بدوشی میں پردے کا اِستعمال نہیں کرتیں ۔

افغان ایک خوبصورت اور محنت کش قوم ہے ۔ وے لمبے مضبوط پٹھوں والے، نپے تلے سڈول قد کے اور گھنگھرالے بالوں والے ہوتے ہیں ۔

افغان اپنی آزادی کی محبت کے لئے مشہور ہیں ۔ بوڑھے اپنی لڑی گئی پرانی لڑائیوں کو بیان کرنے کے لئے ہمیشہ تیار رہتے ہیں ۔

افغانستان نے برطانیہ سے تین لڑائیاں لڑیں ۔ 42-1838 کی جنگ میں انگریزی فوجیں ہاریں ۔ دوسری لڑائی 80-1878 میں ہوئی ۔ اِس جنگ کے نتیجے کی شکل میں افغانستان برطانیہ کے پورے قبضے میں نہیں تو ماتحتی میں تو آ ہی گیا ۔ سن 1919 میں لڑی گئی تیسری جنگ سے، جس میں افغانستان کے ساتھ ہی سوویت روس کی فوجیں بھی تھیں، افغانستان کو آزادی مل گئی ۔

ग़ज़नी पहले चंगेज़खाँ के ज़रिये और बाद को अमीर हुसेन के ज़रिये बरबाद कर दिया गया था. इस चोट से कमज़ोर होकर शहर का ज़वाल हो चला है, उसकी पुरानी चमक-दमक के आख़िरी निशान कुछ टूटी हुई शानदार क़ब्रें और एक पुराना क़िला ही रह गये हैं.

ग़ज़नी सूबे में अफ़ग़ान क़ौम का 16,25,000 आबादी वाला ग़िलज़ाई फ़िरक़ा रहता है. हज़ाराजात तक सारा ग़ज़नी का पठार इन्हीं जातियों से बसा है, जिनका पेशा ज़राअत और गोदाम इकट्ठे करना है, मगर वहाँ मिट्टी की बहुत कमी है और ग़िलज़ाइयों में से एक हिस्सा हर साल ख़ानाबदोशी के लिए भारत की तरफ़ निकल जाता है. और भी जनूब की एक और बड़ी, फैली हुई घाटी में मुल्क का पुराना दारुलसल्तनत क़न्धार है. यहाँ की हरारत सदा जाड़ों में भी पानी जमने की हरारत से ज़्यादा नहीं घटती. क़न्धार जनूबी और जनूबी-मग़रिबी अफ़ग़ानिस्तान का एक बड़ा तिजारती मरक़ज़ है. काबुल जाने वाली सड़कों और हरात को भारत से मिलाने वाले रास्तों का भी यह मरक़ज़ है.

क़न्धार और फ़राह सूबे जिनके ज़रख़ेज़ नख़लिस्तान हेलमन्द, अरग़न्दाब और फ़राहरूद की घाटियों में हैं, 14,40,000 आबादी वाले दुर्रानी फ़िरक़े के हैं—जोकि मुल्क के हकूमत करने वाले अफ़ग़ान फ़िरक़ों में से सब से ज़बरदस्त हैं. इसी फ़िरक़े में से हकूमत करने वालों और ऊँचे ओहदों के सरकारी काम करने वालों को छाँटा जाता है.

ग़ज़नी से कन्धार जाने वाली सड़क से गुज़रने पर हम किसानों को अपने छोटे से खेतों को अपने लकड़ी के हलों से जोतते या पत्थर और लकड़ी की कुदालियों से खोदते देख सकते हैं. सारे जनूबी अफ़ग़ानिस्तान की (हज़ाराजात की पहाड़ी तलहटियों को छोड़कर) खेती सिंचाई के ऊपर मुनहसिर है, मगर सिंचाई बड़े ही पुराने तरीक़ों से होती है, वे पुराने बाँध, जिन्होंने यहाँ सिंचाई से बड़े-बड़े ज़रख़ेज़ नख़लिस्तान बना दिये थे, अब नहीं रहे. नये बाँध बनाये भी नहीं जा रहे हैं. एरिया और एराकोशिया के तवारीख़ी मशहूर शहरों के आज खंडहर ही वहाँ नज़र आते हैं, पुरानी बस्तियों के खंडहर भी रेत से पटे जा रहे हैं.

क़न्धार से फ़राह जाने वाली सड़क पर भेड़ों के बड़े-बड़े झुन्ड चरते हैं. काली पगड़ी और ढीले लबादे पहने अफ़ग़ान गड़रिये उन्हें चराया करते हैं.

मुल्क की माली ज़िन्दगी में जानवरों का पाला जाना भी ख़ास अहमियत रखता है क्योंकि उसके ज़रिये बहुत सा कच्चा सामान जैसे ऊन, चमड़ा और काराकुल दरामद के लिये पैदा होता है.

غزنی پہلے چنگیز خاں کے ذریعے اور بعد کو امیر حسین کے ذریعے برباد کر دیا گیا تھا ۔ اِس چوٹ سے کمزور ہو کر شہر کا زوال ہو چلا ہے، اُس کی پرانی چمک دمک کے آخری نشان کچھ ٹوٹی ہوئی شاندار قبریں اور ایک پرانا قلعہ ہی رہ گئے ہیں ۔

غزنی صوبے میں افغان قوم کا 16, 25,000 آبادی والا غلزائی فرقہ رہتا ہے ۔ ہزارہ جات تک سارا غزنی کا پٹھار اِنہیں جاتیوں سے بسا ہے، جن کا پیشہ زراعت اور گودام اِکٹھے کرنا ہے، مگر وہاں مٹی کی بہت کمی ہے اور غلزائیوں میں سے ایک حصہ ہر سال خانہ بدوشی کے لئے بھارت کی طرف نکل جاتا ہے ۔ اور بھی جنوب کی ایک اور بڑی، پھیلی ہوئی گھاٹی میں ملک کا پرانا دارالسلطنت قندھار ہے ۔ یہاں کی حرارت سدا جاڑوں میں بھی پانی جمنے کی حرارت سے زیادہ نہیں گھٹتی ۔ قندھار جنوبی اور جنوبی-مغربی افغانستان کا ایک بڑا تجارتی مرکز ہے ۔ کابل جانے والی سڑکوں اور ہرات کو بھارت سے ملانے والے راستوں کا بھی یہ مرکز ہے ۔

قندھار اور فراہ صوبے جن کے زرخیز نخلستان ہیلمند، ارغنداب اور فرا-رود کی گھاٹیوں میں ہیں، 14,40,000 آبادی والے درانی فرقے کے ہیں—جو کہ ملک کے حکومت کرنے والے افغان فرقوں میں سے سب سے زبردست ہیں ۔ اِسی فرقے میں سے حکومت کرنے والوں اور اونچے عہدوں کے سرکاری کام کرنے والوں کو چھانٹا جاتا ہے ۔

غزنی سے قندھار جانے والی سڑک سے گذرنے پر ہم کسانوں کو اپنے چھوٹے سے کھیتوں کو اپنے لکڑی کے ہلوں سے جوتتے یا پتھر اور لکڑی کی کدالیوں سے کھودتے دیکھ سکتے ہیں ۔ سارے جنوبی افغانستان کی (ہزارہ جات کی پہاڑی تلہٹیوں کو چھوڑ کر) کھیتی سنچائی کے اوپر منحصر ہے، مگر سنچائی بڑے ہی پرانے طریقوں سے ہوتی ہے، وے پرانے باندھ، جنہوں نے یہاں سنچائی سے بڑے بڑے زرخیز نخلستان بنا دیئے تھے، اب نہیں رہے ۔ نئے باندھ بنائے بھی نہیں جا رہے ہیں ۔ ایریا اور ایراکوشیا کے تواریخی مشہور شہروں کے آج کھنڈر ہی وہاں نظر آتے ہیں، پرانی بستیوں کے کھنڈر بھی ریت سے پٹے جا رہے ہیں ۔

قندھار سے فراہ جانے والی سڑک پر بھیڑوں کے بڑے بڑے جھنڈ چرتے ہیں ۔ کالی پگڑی اور ڈھیلے لبادے پہنے افغان گڈریے انہیں چرایا کرتے ہیں ۔

ملک کی مالی زندگی میں جانوروں کا پالا جانا بھی خاص اہمیت رکھتا ہے کیونکہ اُس کے ذریعے بہت سا کچا سامان جیسے اون، چمڑا اور کاراقل درآمد کے لئے پیدا ہوتا ہے ۔

अफ़ग़ान जातियाँ ख़ास तौर पर जनूब की तरफ़ पाई जाती हैं, जबकि हिन्दूकुश के शुमाल में मुक़ीम मुल्क के बाक़ी हिस्से में, अफ़ग़ान शुमार में कम व थोड़े ही हैं.

अफ़ग़ानी चार ख़ास हिस्सों में बँटे हैं—शरबानी, ग़िल्ज़ाई, कैरलानी और गरश्त. इनमें से भी हर शाख़ कई फ़िरक़ों, ख़ान्दानों और बड़े या छोटे क़बीलों में तक़सीम हो गई है. मग़रिबी गिरोह के ख़ान्दानी क़बीलों का हुकूमतीइन्तज़ाम पुश्तैनी 'ख़ान' नामी अफ़सर करते हैं. लेकिन मशरिक़ी कैरलानी गिरोह आज भी बड़े बूढ़ोंके पचायती गिरोह जिन्हें 'जिर्गा' कहा जाता है, क़बीलों की तनज़ीम करते हैं.

अफ़ग़ानिस्तान एक शाही ख़ुदमुख़्तार मुल्क है. यहाँ का शाह, जो साथ ही साथ तमाम फ़ौजी दस्तों का कमान्डर-इन-चीफ़ भी है, यहाँ का सब से ऊँचा हाकिम है. यहाँ की पार्लीमेंट में दो चेम्बर, एक हकूमती मजलिस, जिसके नुमाइन्दे रियाया चुनती है और एक सिनेट होता है जिसके मेम्बर ख़ान्दानी अमीरों और सरदारों में से शाह की राय के मुताबिक़ चुने जाते हैं.

क़ानून के ज़रिये पार्लीमेंट को बिल पेश करने व पास करने की आज़ादी है. उसके ज़रिये सरकारी क़ानून भी बनाये जाते हैं और सुलहनामों को मंज़ूर करने का हक़ भी उसी को है. दूसरे लफ़्ज़ों में पार्लीमेंट को क़ानून बनाकर वज़ीरों को उनके मुताबिक़ हकूमत के लिये ज़िम्मेदार बनाना है. पर अस्लियत में क़ानूनी मजलिस में ऐसे क़ायदे भी हैं, जिन्होंने पार्लीमेंट की ताक़तों को महदूद कर दिया है जैसे कि क़ानून में यह भी है कि हकूमती नुमाइन्दों की मजलिस के फ़ैसले सरकारी पालिसी या इस्लाम के ख़िलाफ़ नहीं होने चाहियें. पार्लीमेंट सरकार के ऊपर अदम ऐतमाद की तजवीज़ नहीं पास कर सकती और न वज़ीरों की मजलिस के इस्तीफ़े की ही मांग कर सकती है. तमाम वज़ीर वज़ीर आज़म की राय से शाह के ज़रिये क़ायम किये या निकाले जाते हैं.

इस वक़्त ज़ाहिरा तौर पर अफ़ग़ानिस्तान ने भारती हद के 'आज़ाद क़बीलों' की हिफ़ाज़ती पालिसी को छोड़ दिया है. इन क़बीलों के कुछ सरदारों का यह ऐतबार है कि बरतानिया ने अफ़ग़ानिस्तान को उनके ख़िलाफ़ करने के लिये कुछ माली रियायतें दी हैं जिनमें अफ़ग़ान माल के भारत से होकर गुज़रने देने की मंज़ूरी और उस मुल्क से ज़्यादा तिजारत करने की मंज़ूरी भी शामिल है.

अगर यहाँ पर देखा जाये कि अफ़ग़ानिस्तान की ज़्यादातर दरामद भारती हद के अन्दर से ही होती है तो राय मज़कूर दुरुस्त मालूम देती है.

काबुल से जनूब की तरफ़ मुड़कर, कुछ घन्टों के सफ़र के बाद ग़ज़नी नामी सूबे के ग़ज़नी नामी मरकज़ में ही पहुँचते हैं. महमूद ग़ज़नवी के वक़्त में ग़ज़नी ही मुल्क का दारुलसल्तनत था. उसकी शोहरत की शुरूआत दसवीं सदी में ही हो गई थी, जबकि वह जनूबी-मशरिक़ी ईरान की सियासत का मरकज़ था.

افغان جاتیاں خاص طور پر جنوب کی طرف پائی جاتی ہیں، جب کہ ہندوکش کے شمال میں مقیم ملک کے باقی حصے میں، افغان شمار میں کم و تھوڑے ہی ہیں ۔

افغانی چار خاص حصوں میں بٹے ہیں—شربانی، غلزائی، کیرلانی اور گرشت ۔ ان میں سے بھی ہر شاخ کئی فرقوں، خاندانوں اور بڑے یا چھوٹے قبیلوں میں تقسیم ہو گئی ہے ۔ مغربی گروہ کے خاندانی قبیلوں کا حکومتی انتظام پشتینی 'خان' نامی افسر کرتے ہیں ۔ لیکن مشرقی کیرلانی گروہ میں آج بھی بڑے بوڑھوں کے پنچایتی گروہ جنھیں 'جرگہ' کہا جاتا ہے، قبیلوں کی تنظیم کرتے ہیں ۔

افغانستان ایک شاہی خودمختار ملک ہے ۔ یہاں کا شاہ جو ساتھ ہی ساتھ تمام فوجی دستوں کا کمانڈر-ان-چیف بھی ہے، یہاں کا سب سے اونچا حاکم ہے ۔ یہاں کی پارلیمنٹ میں دو چیمبر، ایک حکومتی مجلس، جس کے نمائندے رعایا چنتی ہے اور ایک سینیٹ ہوتا ہے جس کے ممبر خاندانی امیروں اور سرداروں میں سے شاہ کی رائے کے مطابق چنے جاتے ہیں ۔

قانون کے ذریعہ پارلیمینٹ کو بل پیش کرنے و پاس کرنے کی آزادی ہے ۔ اس کے ذریعہ سرکاری قانون بھی بنائے جاتے ہیں اور صلحناموں کو منظور کرنے کا حق بھی اسی کو ہے ۔ دوسرے لفظوں میں پارلیمنٹ کو قانون بنا کر وزیروں کو ان کے مطابق حکومت کے لئے ذمہ دار بنانا ہے ۔ پر اصلیت میں قانونی مجلس میں ایسے قاعدے بھی ہیں، جنھوں نے پارلیمنٹ کی طاقتوں کو محدود کر دیا ہے جیسے کہ قانون میں یہ بھی ہے کہ حکومتی نمائندوں کی مجلس کے فیصلے سرکاری پالیسی یا اسلام کے خلاف نہیں ہونے چاہئیں ۔ پارلیمینٹ سرکار کے اوپر عدم اعتماد کی تجویز نہیں پاس کر سکتی اور نہ وزیروں کی مجلس کے استعفے کی ہی مانگ کر سکتی ہے ۔ تمام وزیر وزیر اعظم کی رائے سے شاہ کے ذریعہ قایم کئے یا نکالے جاتے ہیں ۔

اس وقت ظاہرہ طور پر افغانستان نے بھارتی حد کے 'آزاد قبیلوں' کی حفاظتی پالیسی کو چھوڑ دیا ہے ۔ ان قبیلوں کے کچھ سرداروں کا یہ اعتبار ہے کہ برطانیہ نے افغانستان کو ان کے خلاف کرنے کے لئے کچھ مالی رعایتیں دی ہیں جن میں افغان مال کے بھارت سے ہو کر گذرنے دینے کی منظوری اور اس ملک سے زیادہ تجارت کرنے کی منظوری بھی شامل ہے ۔

اگر یہاں پر دیکھا جائے کہ افغانستان کی زیادہ تر درآمد بھارتی حد کے اندر سے ہی ہوتی ہے تو رائے مذکور درست معلوم دیتی ہے ۔

کابل سے جنوب کی طرف مڑکر، کچھ گھنٹوں کے سفر کے بعد غزنی نامی صوبہ کے غزنی نامی مرکز میں ہی پہونچتے ہیں ۔ محمود غزنوی کے وقت میں غزنی ہی ملک کا دارالسلطنت تھا ۔ اس کی شہرت کی شروعات دسویں صدی میں ہی ہو گئی تھی، جب کہ وہ جنوبی مشرقی ایران کی سیاست کا مرکز تھا ۔

जनूब की तरफ़ यह सूबा जनूबी इलाक़े के हिस्से से मिला हुआ है जिसमें अफ़ग़ानी पहाड़ी बाशिन्दों की,जाजी, मनाल, जाद्रन, दुर्वेशखेल, वज़ीरी वग़ैरा जातियाँ बस्ती हैं. इन पहाड़ी गाँवों में बड़ी ग़रीबी है. यहाँ की मिट्टी की तोल सोने के बराबर है, क्योंकि लोग उसे हाथ और सर में भर और रखकर ऊँचे पहाड़ों में अपने चट्टानी खेतों तक ले गये हैं. अपने इस अन्थक मेहनत से भी लोगों का गुज़र नहीं होती और क़बीले के क़बीले .ख़ूराक हासिल करने के लिये भारत की तरफ़ चल पड़ते हैं.

मशरिक़ी और जनूबी सूबा उन जंगजू अफ़ग़ान जातियों के रहने के इलाक़े हैं जोकि कोह सुलेमान से इधर चली आई हैं. शुमाल और मग़रिब की तरफ़ बढ़कर इन जातियों ने बाहरी हमलावरों के रास्ते को रोक दिया और पहली अफ़ग़ान रियासत की बुनियाद डाली. जनूबी हद के पार भी कई ज़िले हैं जोकि अफ़ग़ानों से आबाद हैं. यह क़बीले, जोकि अपने मुल्क से अलग कर दिये गये हैं, 'आज़ाद क़बीलों के इलाक़े' नामी अपनी ख़ास ज़मीन में रहते हैं. एक सदी से वे अंग्रेज़ों के ज़रिये जीते जाने की कोशिशों का मुक़ाबला करते रहे हैं. कितने ही छोटे-छोटे फ़ौजी दस्ते इनको दबाने के लिये भेजे जा चुके हैं; चन्दे इकट्ठे किये जा चुके हैं और उनके सरदारों को रिश्वत देकर फोड़ लेने की कोशिश भी हुई है, पर उनके हिफ़ाज़ती मोर्चे को कभी नहीं तोड़ा जा सका.

अफ़ग़ानिस्तान में आने वाले मुसाफ़िर यहाँ की जातियों और बाशिन्दों में फैली हुई बदइन्तज़ामी को देखकर दंग रह जाते हैं. यह इस मुल्क की जुग़राफ़ियायी हालत का ही नतीजा नहीं है, जिसने कि पिछले दिनों में कई तरह की जातियों के लिये रास्ता बनाया. इसका सबब कुछ हद तक बरतानवी नौ-आबादयाती पालिसी भी है, जिसने इस मुल्क की हदों को भी क़ायम किया. बरतानिया अफ़ग़ानिस्तान को एक बफ़र (रुकावटी) रियासत बनाने पर तुला हुआ था. इस तरह उसकी हदों में ऐसे ज़िले भी हैं जहाँ तुर्कमानी, उज़बेक व ताजी जातियाँ रहती हैं, जबकि जनूब में 40 लाख से ज़्यादा (41, 78,500) अफ़ग़ानी रियाया अपने मुल्क से अलग करके हिन्दुस्तान और बलोचिस्तान में मिला दी गई है. यह हिस्सा आज़ाद क़बीलों का और बन्नू, पेशावर, कोहाट, डेरा इस्माईल ख़ाँ और भारती हज़ारा के शुमाली सरहदी सूबे में है.

अफ़ग़ानिस्तान में रहने वाली ख़ास जातियाँ अफ़ग़ान (44,84,562), ताजी (21,06,000), उज़बेक (8,02,000) और हज़ारा (8,67,000) हैं. बाक़ी रियाया तुर्कमानियों और दूसरी ग़ैर जातियाँ जैसे नूरस्तान, तैमिनी, फ़र्ज़कोह, जमशेदी, तैमूरी, बलोची, अरब, हिन्दुस्तानी, तुर्की, यहूदी, क्ज़ाली, कुर्द और कपचाक लोगों से बनी है.

جنوب کی طرف یہ صوبہ جنوبی علاقے کے حصے سے ملا ہوا ہے جس میں افغانی پہاڑی باشندوں کی جاجی، مثال، جادرن، درویش خیل، وزیری وغیرہ جاتیاں بستی ہیں۔ ان پہاڑی گاؤں میں بڑی غریبی ہے۔ یہاں کی مٹی کی تول سونے کے برابر ہے، کیونکہ لوگ اسے ہاتھ اور سر میں بھر اور رکھ کر اونچے پہاڑوں میں اپنے کھیتوں تک لے گئے ہیں۔ اپنے اس انتھک محنت سے بھی لوگوں کی گذر نہیں ہوتی اور قبیلے کے قبیلے خوراک حاصل کرنے کے لئے بھارت کی طرف چل پڑتے ہیں۔

مشرقی اور جنوبی صوبہ ان جنگجو افغان جاتیوں کے رہنے کے علاقے ہیں جو کہ کوہ سلیمان سے اِدھر چلی آئی ہیں۔ شمال اور مغرب کی طرف بڑھ کر اِن جاتیوں نے باہری حملہ آوروں کے راستے کو روک دیا اور پہلی افغان ریاست کی بنیاد ڈالی۔ جنوبی حد کے پار بھی کئی ضلعے ہیں جو کہ افغانوں سے آباد ہیں۔ یہ قبیلے، جو کہ اپنے ملک سے الگ کر دیئے گئے ہیں، 'آزاد قبیلوں کے علاقے' نامی اپنی خاص زمین میں رہتے ہیں۔ ایک صدی سے وے انگریزوں کے ذریعہ جیتے جانے کی کوششوں کا مقابلہ کرتے رہے ہیں۔ کتنے ہی چھوٹے چھوٹے فوجی دستے اِن کو دبانے کے لئے بھیجے جا چکے ہیں؛ چندے اِکٹھے کئے جا چکے ہیں اور اُن کے سرداروں کو رشوت دیکر پھوڑ لینے کی کوششیں بھی ہوئی ہیں، پر اُن کے حفاظتی مورچے کو کبھی نہیں توڑا جا سکا۔

افغانستان میں آنے والے مسافر یہاں کی جاتیوں اور باشندوں میں پھیلی بدانتظامی کو دیکھ کر دنگ رہ جاتے ہیں۔ یہ اِس ملک کی جغرافیائی حالت کا ہی نتیجہ نہیں ہے، جس نے کہ پچھلے دنوں میں کئی طرح کی جاتیوں کے لئے راستہ بنایا۔ اِس کا سبب کچھ حد تک برطانوی نوآبادیاتی پالیسی بھی ہے، جس نے اِس ملک کی حدوں کو بھی قایم کیا۔ برطانیہ افغانستان کو ایک بفر (روکاوٹی) ریاست بنانے پر تلا ہوا تھا۔ اِس طرح اُس کی حدوں میں ایسے ضلعے بھی ہیں جہاں ترکمانی، ازبیک و تازی جاتیاں رہتی ہیں، جب کہ جنوب میں 40 لاکھ سے زیادہ (41,78,500) افغانی رعایا اپنے ملک سے الگ کر کے ہندستان اور بلوچستان میں ملا دی گئی ہے۔ یہ حصہ آزاد قبیلوں کا اور بنو، پیشاور، کوہاٹ، ڈیرہ اِسمعیل خاں اور بھارتی ہزارہ کے شمالی مغربی سرحدی صوبہ میں ہے۔

افغانستان میں رہنے والی خاص جاتیاں افغان (44'84'562)، تازی (21'06'000)، ازبیک (8, 0 2,000) اور ہزارہ (8, 67, 000) ہیں۔ باقی رعایا ترکمانیوں اور دوسری غیر جاتیوں جیسے نورستان، طیملی، فرز کوہ، جمشیدی، تیموری، بلوچی، عرب، ہندستانی، ترکی، یہودی، کھانی، کرد اور قپچاک لوگوں سے بنی ہے۔

हिन्दुकुश का बड़ा पहाड़ मुल्क को दो हिस्सों में तक़सीम कर देता है—शुमाली और जनूबी, जिनमें कि जुग़राफ़ियायी और आबादी से ताल्लुक़ रखने वाला फ़र्क़ है. मुल्क के सब से बड़े ज़राअती नख़लिस्तान शुमाली अफ़ग़ानिस्तान में ही हैं, जहाँ दरजनों जातियाँ और फ़िरक़े आबाद हैं. यही हिस्सा जनूबी अफ़ग़ानिस्तान को ख़ूराक देता है जोकि चट्टानी और अफ़ग़ान जातियों से बसी ऊसर ज़मीन है।

सब से ऊँचे कोहिस्तान शुमाल-मशरिक़ में हैं, जहाँ कि समन्दर की सतह से तीन या चार हज़ार मीटर तक की ऊँचाई के बहुत से दर्रे हैं. हिन्दूकुश कोह अबाबा के नाम से आगे फैलकर आमू दरिया और सिंध के बीच के मैदान में पानी बाँटने वाले का काम करता है. वस्ती अफ़ग़ानिस्तान 'हज़ार जत' नाम के सख़्त पहाड़ी हिस्से से बना व घिरा है. मग़रिब की तरफ़ कोह अबाबा की पहाड़ी तीन सिलसिलों में बँट जाती है जोकि धीरे-धीरे लक़वा, हलमन्द और रेगिस्तान की चट्टानी और बालूदार ज़मीन में तब्दील हो जाती है.

अफ़ग़ानी जातियों की पैदाइशी जगह भारत सुलेमान पहाड़ियों के उस पार है. ब्लोचिस्तान चुग़ताई के पहाड़ों के जनूब में है.

यह पहाड़ी सिलसिले मुल्क को अलग-अलग हिस्सों में तक़सीम कर देते हैं, गोकि हाल ही में बनी सड़कों ने अलग अलग सूबों को एक धागे में बाँधने में मदद दी है—लेकिन हालत में सुधार नहीं हुआ है. शुमाली और जनूबी हिस्सों को मिलाने वाली एक ख़ास कड़ी ख़ाना-बदोश अफ़ग़ान जातियाँ हैं, जोकि हर साल मुल्क को पार करती हैं और जनूब से शुमाल हेरात, मेमाना और कथाग़ान-बदख़शाँ के सूबों की तरफ़ जाती हैं.

अफ़ग़ानिस्तान का मशरिक़ी सूबा भारती सरहद से मिला हुआ है. इस सूबे का वस्त जलालाबाद का मैदान है. यहाँ की आब-हवा गरम है, जहाँकि खजूर व गन्ने की खेती होती है. काबुल और कोनार नदियों की घाटियाँ बहुत घनी आबाद हैं; पर शुमाल की तरफ़ नूरस्तान नामी पहाड़ है जो क अभी तक दुश्वारगुज़ार ही है.

नदी की घाटियों को छोड़कर इस सूबे की सारी ज़मीन ज़रख़ेज़ नहीं है और खेती सिर्फ़ पहाड़ों पर बिखरे हुए अलग अलग खेतों पर ही होती है.

मशरिक़ी सूबों की आबादी अफ़ग़ान जातियों से बनी है जोकि कोहयानी, शनवारी, मोहमन्द, सफ़ी वग़ैरा नस्ल की हैं. इनमें से कुछ जातियाँ अभी भी ग़ारों में रहती हैं. सूबाई मरकज़ जलालाबाद ही यहां का एक क़स्बा है. पेशावर से काबुल जाने वाले रास्ते पर आबाद यह जगह काबुल के अमीर तबक़े के लोगों की जाड़ों के रहने की जगह है. इसके छोटे शहरों में बहुत से ख़ूबसूरत बाग़ीचों से घिरे हुए शाही महल भी हैं.

هندوکش کا بڑا پہاڑ ملک کو دو حصوں میں تقسیم کر دیتا هے—شمالی اور جنوبی، جن میں که جغرافیائی اور آبادی سے تعلق رکھنے والا فرق هے . ملک کے سب سے بڑے زراعتی نخلستان شمالی افغانستان میں هی هیں، جهاں درجنوں جاتیاں اور فرقے آباد هیں. یہی حصه جنوبی افغانستان کو خوراک دیتا هے جو که چٹانی اور افغان جاتیوں سے بسی اوسر زمین هے .

سب سے اونچے کوهستان شمال . مشرق میں هیں، جهاں که سمندر کی سطح سے تین یا چار هزار میٹر تک کی اونچائی کے بہت سے درے هیں . هندو کش، کوه ابابا کے نام سے آگے پھیل کر آمو دریا اور سندھ کے بیچ کے میدان میں پانی بانٹنے والے کا کام کرتا هے . وسطی افغانستان 'هزار جت' نام کے سخت پہاڑی حصه سے بنا و گھرا هے. مغرب کی طرف کوه ابابا کی پہاڑی تین سلسلوں میں بٹ جاتی هے جو که دھیرے دھیرے لقوہ، هلمند اور ریگستان کی چٹانی اور بالودار زمین میں تبدیل هو جاتی هے .

افغانی جاتیوں کی پیدایشی جگهه بھارت سلیمان پہاڑیوں کے اُس پار هے . بلوچستان چغتائی کے پہاڑوں کے جنوب میں هے .

یه پہاڑی سلسلے ملک کو الگ الگ حصوں میں تقسیم کر دیتے هیں، گو که حال هی میں بنی سڑکوں نے الگ الگ صوبوں کو ایک دھاگے میں باندھنے میں مدد دی هے—لیکن حالت میں سدھار نہیں هوا هے . شمالی اور جنوبی حصوں کو ملانے والی ایک خاص کڑی خانه‌بدوش افغان جاتیاں هیں، جو که هر سال ملک کو پار کرتی هیں اور جنوب سے شمال هرات، میمانه اور کتھاگھان . بدخشاں کے صوبوں کی طرف جاتی هیں .

افغانستان کا مشرقی صوبه بھارتی سرحد سے ملا هوا هے . اِس صوبه کا وسط جلال آباد کا میدان هے. یہاں کی آب هوا گرم هے، جہاں که کھجور و گنّے کی کھیتی هوتی هے . کابل اور کونار ندیوں کی گھاٹیاں بہت گھنی آباد هیں؛ پر شمال کی طرف نورستان نامی پہاڑ هے جو که ابھی تک دشوار گذار هی هے .

ندی کی گھاٹیوں کو چھوڑ کر اِس صوبه کی ساری زمین زرخیز نہیں هے اور کھیتی صرف پہاڑوں پر بکھرے هوئے الگ الگ کھیتوں پر هی هوتی هے .

مشرقی صوبوں کی آبادی افغان جاتیوں سے بنی هے جو که کوهیانی، شنواری، موهمند، صفی وغیرہ نسل کی هیں . اِن میں سے کچھ جاتیاں ابھی بھی غاروں میں رهتی هیں . صوبائی مرکز جلال آباد هی یہاں کا ایک قصبه هے . پشاور سے کابل جانے والے راستے پر آباد یه جگهه کابل کے امیر طبقے کے لوگوں کی جاڑوں کے رهنے کی جگهه هے . اس کے چھوٹے شہروں میں بہت سے خوبصورت باغیچوں سے گھرے هوئے شاهی محل بھی هیں .

हमारा पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान

प्रोफ़ेसर क़ज़लबाश ख़ाँ

अफ़ग़ानिस्तान एशिया के ठीक दरमियान उस जगह पर आबाद है जहाँकि बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ मिलकर हिन्दुस्तान की तरफ़ एक पहाड़ी सिलसिला बनकर मुड़ जाती हैं.

अफ़ग़ानिस्तान ग्वालों और किसानों का मुल्क है. आज भी यहाँ की क़रीब-क़रीब चौथाई जनता ख़ाना-बदोश है.

अफ़ग़ानिस्तान का रक़बा 6,,55,000 मुरब्बा (वर्ग) क़लोमीटर है पर उसकी आबादी95,00,000 से ज़्यादा नहीं है. मुसल्लस मगर शुमाल मशरिक़ की तरफ़ कुछ तंग हद लिये हुए, अफ़ग़ानिस्तान के शुमाल में सोवियत रूस का तुर्कमानिया, उज़बैक और ताजी जम्हूरियत, मग़रिब में ईरान और जनूब व जनूब-मशरिक़ में भारत और ब्लोचिस्तान हैं.

मौजूदा अफ़ग़ानिस्तान के संगठन से पहिले, जोकि अठारहवीं सदी में किया गया, यह मुल्क कई हिस्सों में मुनक़सिम था, जिसकी तवारीख़ मुख़तलिफ़ थी. इसकी जुग़राफ़ियाई हालत ने इस सारे इलाक़े को वस्ती-मशरिक़ से दूर दराज़ मशरिक़ को मिलाने वाले मरकज़ का रुतबा देकर दुनिया की ख़ास शाहराहों में ख़ास जगह दे दी है. एक वक़्त था जबकि योरप और ऐशिया से बड़ी-बड़ी फ़ौजों और आबादियों ने इस मुल्क के अन्दर से गुज़र कर हिन्दुस्तान में क़दम रखा. अफ़ग़ानिस्तान में पार्थी, हूण, और सक जातियाँ आईं; मेसिडोन के सिकन्दर आज़म ने भी इस मुल्क को फ़तह किया. चंगेज़ख़ाँ के गिरोहों, तैमूर लंग की फ़ौजों और इस्लाम क़ायम करने वाली अरब फ़ौजों ने भी इस देश पर वक़तन् फ़वक़तन् क़ब्ज़ा किया. मशरिक़ से लेकर मग़रिब तक और शुमाल से लेकर जनूब तक बस्तियाँ बनती और बरबाद होती रहीं. कोई भी ऐसा हमला नहीं हुआ जिसके नतीजे के बाइस यहाँ नये आदमियों की कोई नई बस्ती आबाद न हुई हो. यहाँ से बड़ी-बड़ी सलतनतों के उरूज के सितारे का दौर शुरू हुआ और यहीं से वे ज़वाल के तवारीख़ी निशान से बनकर ग़ायब भी हो गये.

अपनी ज़मीन के 4/5 हिस्से के पहाड़ियों से घिरे होने के सबब अफ़ग़ानिस्तान एक पहाड़ी मुल्क है. इसलिये यहाँ की रिआया का बड़ा हिस्सा बड़ी या छोटी घाटियों में, नदियों के किनारे या शुमाल व शुमाल - मग़रिब के तंग सरहदी मैदानों में क़याम करता था.

ھمارا پڑوسی افغانستان

پروفیسر قزلباش خاں

افغانستان ایشیا کے ٹھیک درمیان اُس جگہ پر آباد ھے جہاں کہ بڑی بڑی پہاڑیاں مل کر ھندستان کی طرف ایک پہاڑی سلسلہ بن کر مڑ جاتی ھیں ۔

افغانستان گوالوں اور کسانوں کا ملک ھے ۔ آج بھی یہاں کی قریب قریب چوتھائی جنتا خانہ بدوش ھے ۔

افغانستان کا رقبہ 6,55'000 مربع (ورگ) کیلومیٹر ھے پر اُس کی آبادی 95,00,000 سے زیادہ نہیں ھے ۔ مثلث مگر شمال مشرق کی طرف کچھ تنگ حد لئے ھوئے' افغانستان کے شمال میں سوویت روس کا ترکمانیہ' اُزبیک اور تاجی جمہوریت' مغرب میں ایران' اور جنوب و جنوب مشرق میں بھارت اور بلوچستان ھیں ۔

موجودہ افغانستان کے سنگٹھن سے پہلے' جوکہ اٹھارویں صدی میں کیا گیا' یہ ملک نئی حصوں میں منقسم تھا' جس کی تواریخ مختلف تھی ۔ اِس کی جغرافیائی حالت نے اِس سارے علاقہ کو وسطی مشرق سے دور دراز مشرق کو ملانے والے مرکز کا رتبہ دیکر دنیا کی خاص شاہراھوں میں خاص جگہہ دے دی ھے ۔ ایک وقت تھا جبکہ یورپ اور ایشیا سے بڑی بڑی فوجوں اور آبادیوں نے اِس ملک کے اندر سے گذر کر ھندستان میں قدم رکھا ۔ افغانستان میں پارتھی' ھن اور سک جاتیاں آئیں؛ میسیڈون کے سکندر اعظم نے بھی اِس ملک کو فتح کیا ۔ چنگیز خاں کے گروھوں' تیمور لنگ کی فوجوں اور اسلام قایم کرنے والی عرب فوجوں نے بھی اِس دیش پر وقتاً فوقتاً قبضہ کیا ۔ مشرق سے لیکر مغرب تک اور شمال سے لیکر جنوب تک بستیاں بنتی اور برباد ھوتی رھیں ۔ کوئی بھی ایسا حملہ نہیں ھوا جس کے نتیجے کے باعث یہاں نئے آدمیوں کی کوئی نئی بستی آباد نہ ھوئی ھو ۔ یہیں سے بڑی بڑی سلطنتوں کے عروج کے ستارے کا دور شروع ھوا اور یہیں سے وے زوال کے تواریخی نشان سے بن کر غایب بھی ھو گئے ۔

اپنی زمین کے 4|5 حصہ کے پہاڑیوں سے گھرے ھونے کے سبب افغانستان ایک پہاڑی ملک ھے ۔ اِس لئے یہاں کی رعایا کا بڑا حصہ بڑی یا چھوٹی گھاٹیوں میں' ندیوں کے کنارے یا شمال و شمال مغرب کے تنگ سرحدی میدانوں میں قیام کرتا تھا ۔

अगस्त 1957 اگست

क्या किस से	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1. हमारा पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान —प्रोफ़ैसर क़ज़लबाश ख़ाँ	... 47 ...	1. ہمارا پڑوسی افغانستان —پروفیسر قزلباش خاں
2. आस्तीन में साँप —भाई अब्दुल हलीम अनसारी आरटिस्ट	... 55 ...	2. آستین میں سانپ —بھائی عبدالحلیم انصاری آرٹسٹ
3. हिन्दू मुसलमानों के तहज़ीबी मेल जोल की शुरूआत —डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए० डी० फ़िल०	... 59 ...	3. ہندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی شروعات —ڈاکٹر لطیف دفتری ایم اے ڈی فل
4. सिख मज़हब का दरमियानी रास्ता —प्रोफ़ैसर तेजासिंह एम० ए०	... 70 ...	4. سکھ مذہب کا درمیانی راستہ —پروفیسر تیجا سنگھ ایم اے
5. हमारी राय— शान्ति युद्ध; आजकल की सरकारें—सुन्दरलाल	... 79 ...	5. ہماری رائے— شانتی یدھ؛ آجکل کی سرکاریں—سندر لال

जिल्द 24 جلد   नम्बर 2 نمبر

अगस्त 1957 اگست

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
145' مٹھی گنج' الہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

...r, NAYA HIND

इस नम्बर के ख़ास लेख | اِس نمبر کے خاص

हमारा पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान
—प्रोफ़ैसर क़ज़लबाश ख़ाँ

ہمارا پڑوسی افغانستان
—پروفیسر قزلباش خاں

आस्तीन में साँप
—भाई अब्दुल हलीम अनसारी
आरटिस्ट

آستین میں سانپ
—بھائی عبدالحلیم انصاری
آرٹسٹ

हिन्दू मुसलमानों के तहज़ीबी मेल जोल
की शुरूआत
—डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी
एम० ए० डी० फ़िल०

ہندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول
کی شروعات
—ڈاکٹر لطیف دفتری
ایم۔ اے۔ ڈی۔ فل۔

सिख मज़हब का दरमियानी रास्ता
— प्रोफ़ेसर तेजासिंह एम० ए०

سکھ مذہب کا درمیانی راستہ
—پروفیسر تیجا سنگھ ایم۔ اے۔

और अपने अहंकार को भूलकर गाँव गाँव में ज़मीन की मालकियत मिटाने में, गाँव गाँव का ग्रामदान कराने में जुट जायें. अगामी दूसरी अक्तूबर को ही, बापू-जयन्ती के दिन इस काम की पूर्ति हो सकती है. सन्तावन भाई का आशीर्वाद हमारे साथ है. भगवान खुद हमारे साथ है.

22. 6. 57 —सुरेश रामभाई

اور اپنے اہنکار کو بھول کر گاؤں گاؤں میں زمین کی ملکیت مٹانے میں، گاؤں گاؤں کا گرامدان کرانے میں جٹ جائیں. آگامی دوسری اکتوبر کو ہی، باپو جینتی کے دن اس کام کی پورتی ہو سکتی ہے . سنتاون مائی کا آشیرواد ہمارے ساتھ ہے . بھگوان خود ہمارے ساتھ ہے .

—سریش رام بھائی 22 .6 .57

जैसे बच्चों के काम करके उनको सही श्रद्धांजलि दे सकेंगे? वह तो अपनी कायरता का, अपनी निर्बलता का, अपनी लाचारी का ही प्रतीक होगा. वीर पुरुषों की औलाद अगर हमारे जैसी डरपोक व कायर निकली तो फिर औलाद कहलाने के अपने दावे को ही खो बैठेगी.

लेकिन नहीं, हमें हिम्मत नहीं हारनी है. जमीन की मालकियत मिटाने का काम उतना मुश्किल नहीं है जितना कि भास होता है. जमीन की मालकियत की दीवारें ढह रही हैं, जो बाक़ी हैं वे भी हिल रही हैं. एक-दो नहीं, दस-बीस नहीं, सौ-सवासौ नहीं—ढाई हजार गाँव में जमीन की मालकियत मिट चुकी है! मिट चुकी है!! मिट चुकी है!!! हमेशा के लिये खत्म. पुराने जमाने की एक सत्यता रह गई है. उन गाँवों में उसका कोई अस्तित्व नहीं बचा. तो जो बात ढाई हजार गाँवों में हो सकती है, वह देश के कुल के कुल साढ़े पाँच लाख गाँवों में क्यों नहीं हो सकती? क्या उन ढाई हजार गाँवों के लोग देवता या फ़रिश्ते हैं और बाक़ी के उनसे गये बीते हैं?

नहीं, नहीं, कमी केवल अपने पुरुषार्थ की है, बल्कि हम कहेंगे कि कमी अपनी श्रद्धा की है. जो श्रद्धा हमारे पूर्वजों को अंग्रेजों की हुकूमत मिटाने में थी, वह हमको जमीन की मालकियत मिटाने में अभी तक नहीं आई है. श्रद्धा कोई पर्दा नहीं है जो इधर-उधर डोले. श्रद्धा दीवार की तरह है जो या तो गिरी है या खड़ी है. या तो है या नहीं है. अपना दिल टटोल कर हम देखें कि हम कहाँ है, वह श्रद्धा हम में कितनी है, है भी कि नहीं?

जहाँ हमारे अन्दर वह श्रद्धा आई, जमीन की मालकियत मिटने की आवश्यकता और 'अनिवार्यता पर यक़ीन आया कि देखते देखते यह मालकियत टूट कर चकनाचूर हो जायेगी. जिस तरह सदियों का अंधेरा एक छोटा-सा चिराग़ क्षण भर में ख़त्म कर देता है, उसी तरह सदियों की जमीन का व्यक्तिगत स्वामित्व एक दिन में, निश्चित घड़ी पर ख़त्म हो सकता है. फिर यह तीसरी चीज नहीं जो अनहोनी हो. संतों ने कहा है "सबै भूमि गोपाल की". पिछले दो-ढाई सौ साल में हम इस पाठ को भूल से गये थे. इसे फिर से याद कर उस पर अब अमल कर डालना है. देखते देखते यह मालकियत मिट जायेगी और अपने मुरब्बी बुजुर्गों को हम सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे.

यही है सत्तावन माई की असली पूजा करने की विधि. सत्तावन के छ: महीने पूरे हो रहे हैं, छ: ही बचे हैं. 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि ले'—अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब भी सब चीज संभल सकती है. हम अब चेत जायें और सब मिलकर—अपने जाति-भेद, भाषा-भेद, पक्ष-भेद

جیسے بچوں کے کام کر کے اُن کو صحیح شردھانجلی دے سکیں گے؟ وہ تو اپنی کایرتا کا، اپنی نربلتا کا، اپنی لاچاری کا ہی پرتیک ہوگا. ویر پرشوں کی اولاد اگر ہمارے جیسی ڈرپوک و کایر نکلی تو پھر اولاد کہلانے کے اپنے دعوے کو ہی کھو بیٹھے گی.

لیکن نہیں، ہمیں ہمت نہیں ہارنی ہے. زمین کی مالکیت مٹانے کا کام اُتنا مشکل نہیں ہے جتنا کہ بھاس ہوتا ہے. زمین کی مالکیت کی دیواریں ڈھہ رہی ہیں، جو باقی ہیں وہ بھی ہل رہی ہیں. ایک دو نہیں، دس بیس نہیں، سو سوا سو نہیں— ڈھائی ہزار گاؤں میں زمین کی مالکیت مٹ چکی ہے! مٹ چکی ہے!! مٹ چکی ہے!!! ہمیشہ کے لئے ختم. پرانے زمانے کی ایک ستیتا رہ گئی ہے. اُن گاؤں میں اُس کا کوئی نہیں استتو نہیں بچا. تو جو بات ڈھائی ہزار گاؤں میں ہو سکتی ہے، وہ دیش کے کل کے ساڑھے کل پانچ لاکھ گاؤں میں کیوں نہیں ہو سکتی؟ کیا اُن ڈھائی ہزار گاؤں کے لوگ دیوتا یا فرشتے ہیں اور باقی اُن سے گئے بیتے ہیں؟

نہیں، نہیں، کمی کیول اپنے پرشارتھ کی ہے. بلکہ ہم کہیں گے کمی اپنی شردھا کی ہے. جو شردھا ہمارے پوروجوں کو انگریزوں کی حکومت مٹانے میں تھی، وہ ہمکو زمین کی مالکیت مٹانے میں ابھی تک نہیں آئی ہے. شردھا کوئی پردا نہیں ہے جو اِدھر اُدھر ڈولے. شردھا دیوار کی طرح ہے جو یا گری ہے یا کھڑی ہے. یا تو ہے یا نہیں ہے. اپنا دل ٹٹول کر ہم دیکھیں کہ ہم کہاں ہیں، وہ شردھا ہم میں کتنی ہے، ہے بھی کہ نہیں؟

جہاں ہمارے اندر وہ شردھا آئی، زمین کی مالکیت مٹنے کی آوشیکتا اور انیوارتا پر یقین آیا کہ دیکھتے دیکھتے یہ مالکیت ٹوٹ کر چکنا چور ہو جائیگی. جس طرح صدیوں کا اندھیرا ایک چھوٹا سا چراغ چھن بھر میں ختم کر دیتا ہے، اُسی طرح صدیوں کی زمین کا ویکتی گت سوامتو ایک دن میں، ایک نشچت گھڑی پر ختم ہو سکتا ہے. پھر یہ تیسری چیز نہیں جو انہونی ہو. سنتوں نے کہا ہے "سبے بھومی گوپال کی." پچھلے دو ڈھائی سو سال میں ہم اِس پاٹھ کو بھول سے گئے تھے. اُسے پھر سے یاد کر اُس پر اب عمل کر ڈالنا ہے. دیکھتے دیکھتے یہ مالکیت مٹ جائیگی اور اپنے مربی بزرگوں کو ہم سچی شردھانجلی ارپت کر سکیں گے.

یہی ہے ستاون مائی کی اصلی پوجا کرنے کی ودھی. ستاون کے چھ مہینے پورے ہو رہے ہیں، چھ ہی بچے ہیں. "بیتی تاہی بسار دے، آگے کی سدھ لے"—ابھی کچھ نہیں بگڑا ہے، اب بھی سب چیز سنبھل سکتی ہے. ہم اب چیت جائیں اور سب مل کر—اپنے جاتی بھید، بھاشا بھید، پکش بھید

पहुंचाकर गाँव गाँव में पहुंचा दे. तभी समाज बलवान होगा और हर इन्सान में भी आत्म-शक्ति निखर उठेगी. क्या व्यक्ति, क्या समाज, दोनों गुणवान बनेंगे.

सवाल है कि यह हो कैसे ? बहुत ही कठिन सवाल है कि गाँव गाँव किस तरह बलवान और ख़ुद मुख़्तयार बने. ज़रा ध्यानपूर्वक विचार करेंगे तो सहज पता चलेगा कि देश भर में, गांव गांव के अन्दर जिस चीज ने हमको निस्तेज और निर्वीर्य बना दिया है, जिसके कारण हममें न आत्म-सम्मान बचा है न सहृदयता, जिसकी वजह से हमने आत्म विश्वास और मानवता को उठा कर मानो ताक़ पर रख दिया है, वह है धरती को व्यक्तिगत स्वामित्व या निजी मालकियत. व्यक्तिगत स्वामित्व के अहंकार से भू-स्वामी भू-माता की अपने हाथ से सेवा करना अनादर ही नहीं, अधर्म समझता है. दूसरी तरफ़ व्यक्तिगत स्वामित्व के पूर्ण अभाव में, भूमिहीन मज़दूरों की भू-सेवा निष्प्राण और जड़ बन गई है, और जब तक ज़मीन की यह निजी मालकियत क़ायम रहती है, जब तक ज़मीन की ख़रीद बिरी चलती है. जब तब धरती माता की पुत्रवत् उपासना कुल औलाद नहीं करती, तब तक कैसा स्वराज्य, कैसी स्वाधीनता और कैसी श्रद्धांजलि !!!

इस वास्ते सत्तावन माई की पूजा के लिये सबसे पहली ज़रूरत इस बात की है कि धरती माता व्यक्तिगत स्वामित्व के बन्धनों से मुक्त होनी चाहिये. उसकी ख़रीद-बिक्री सदा-सर्वदा के लिये बन्द होनी चाहिये. उसका इन्साफ़ से और एक राय से गाँव गाँव में फिर से बंटवारा होना चाहिये. देश में न कोई भूमिहीन रहे न भूमि-स्वामी. सब भूमि-पुत्र बनें. पुत्र बनकर माता की यथा शक्ति सेवा करें और प्रेम से एक दूसरे का सहयोग लें. अगर हम ऐसा न करके, इधर-उधर की बीसियों बातें करें, सैकड़ों कार्य-क्रम रचें, व्याख्यान झाड़ें, फूल मालायें स्मारकों को पहनायें तो उसका कोई असर न हमारे जीवन पर पड़ेगा, न समाज पर पड़ेगा और न उन पवित्र आत्माओं को संतोष ही होगा. इन छुट-पुट कामों में अपनी ताक़त न ख़र्च कर हमको अपनी पूरी ताक़त बुनियादी और पहला काम करने में लगानी चाहिये.

ज़ाहिर बात है कि काम मुश्किल है. दूर दूर से देखने में नामुमकिन भी लगता है. लेकिन क्या अंग्रेज़ी राज को निकाल बाहर कर देना भी कोई आसान काम था ? जिस अंग्रेज़ की परछाईं देखकर ही हम भाग खड़े होते थे, उसका शासन उखाड़ फेंकना कोई हँसी-खेल था ? वीर आसान काम के लिये नहीं, मुश्किल काम करने के लिये पैदा होते हैं. तो जिन वीरों ने अंग्रेज़ी राज्य से मुक्ति के जैसा मुश्किल काम उठाया, क्या हम केवल फूल-माला या व्याख्यान देना

چہونچا کر گاؤں گاؤں میں پہنچادے ۔ تبھی سماج بلوان ہوگا اور ہر انسان میں بھی آتم شکتی نکھر اٹھے گی۔ کیا ویکتی، کیا سماج، دونوں گنوان بنینگے ۔

سوال ہے کہ یہ ہو کیسے ؟ بہت ہی کٹھن سوال ہے کہ گاؤں گاؤں کس طرح بلوان اور خود مختار بنے ۔ ذرا دھیان پوروک وچار کریں گے تو سہج پتہ چلیگا کہ دیش بھر میں گاؤں گاؤں کے اندر جس چیز نے ہم کو نس تیج اور نرویریہ بنا دیا ہے، جس کے کارن ہم میں نہ آتم سمان بچا ہے نہ سہردیتا، جس کی وجہ سے ہم نے آتم وشواس اور مانوتا کو اٹھا کر مانو طاق پر رکھ دیا ہے، وہ ہے دھرتی کا ویکتی گت سوامتو یا نجی مالکیت ۔ ویکتی گت سوامتو کے اہنکار سے بھوسوامی بھو ماتا کی اپنے ہاتھ سے سیوا کرنا انادر ہی نہیں، ادھرم سمجھتا ہے ۔ دوسری طرف ویکتی گت سوامتو کے پورن ابھاؤ میں، بھومی ہین مزدوروں کی بھو سیوا نشپران اور جڑ بن گئی ہے ۔ اور جب تک زمین کی یہ نجی ملکیت قایم رہتی ہے، جب تک زمین کی خرید بکری چلتی ہے، جب تک دھرتی ماتا کی پتروت اپاسنا کل اولاد نہیں کرتی، تب تک کیسا سوراجیہ، کیسی سوادھینتا اور کیسی شردھانجلی !!!

اِس واسطے ستاون مائی کی پوجا کے لئے سب سے پہلی ضرورت اِس بات کی ہے کہ دھرتی ماتا ویکتی گت سوامتو کے بندھنوں سے مکت ہونی چاہئے ۔ اُس کی خرید بکری سدا سروداکے لئے بند ہونی چاہئے ۔ اُس کا انصاف سے اور ایک رائے سے گاؤں گاؤں میں پھر سے بٹوارہ ہونا چاہئے۔ دیش میں نہ کوئی بھومی ہین رہے نہ بھومی سوامی ۔ سب بھومی پتر بنیں ۔ پتر بن کر ماتا کی یتھا شکتی سیوا کریں اور پریم سے ایک دوسرے کا سہیوگ لیں ۔ اگر ہم ایسا نہ کر کے، اِدھر اُدھر کی بیسیوں باتیں کریں، سیکڑوں کاریہ کرم رچیں، ویاکھیان جھاڑیں، پھول مالائیں اِسمارکوں کو پہنائیں تو اس کا کوئی اثر نہ ہمارے جیون پر پڑیگا، نہ سماج پر پڑیگا اور نہ اُن پوتر آتماؤں کو سنتوش ہی ہوگا ۔ اِن چھٹ پٹ کاموں میں اپنی طاقت نہ خرچ کر ہم کو اپنی پوری طاقت بنیادی اور پہلا کام کرنے میں لگانی چاہئے ۔

ظاہر بات ہے کہ کام مشکل ہے، دور دور سے دیکھنے میں ناممکن بھی لگتا ہے ۔ لیکن کیا انگریزی راج کو نکال باہر کر دینا بھی کوئی آسان کام تھا ؟ جس انگریز کی پرچھائیں دیکھ کر ہی ہم لوگ بھاگ کھڑے ہوتے تھے، اُس کا شاسن اُکھاڑ پھینکنا کوئی ہنسی کھیل تھا ؟ ویر آسان کام کے لئے نہیں، مشکل کام کرنے کے لئے پیدا ہوتے ہیں ۔ تو جن ویروں نے انگریزی راج سے مکتی کے جیسا مشکل کام اُٹھایا، کیا ہم کیول پھول مالا یا ویاکھیان دینا

सत्तावन माई की पूजा कैसे हो ?

पिछली दस मई से देश भर में, खासकर हिन्दी भाषा-भाषी इलाक़े में, सन् 1857 के अपने प्रातः स्मरणीय शहीदों, वीरों और योद्धाओं के प्रति श्रद्धांजलि की धूम मची है. शहरों में तो इस कार्यक्रम को मनाने के लिये सभायें होती हैं, जुलूस निकलते हैं, स्मारकों पर फूल-मालायें चढ़ायी जाती हैं. लेकिन दूर देहात में इस श्रद्धांजलि ने सत्तावन माई की पूजा का नाम लिया है. आजकल देहातों में चेचक की यानी देवी माई का ज़ोर वैसे ही है, माई की पूजा होती है. इसी तरह दशहरे पर काली माई की और दूसरे मौक़ों पर दूसरी माईयों की पूजा होती है. तो सत्तावन शताब्दि समारोह भी माई बनकर सामने आ रहा है. मगर इस पूजा का अभी कोई ठोस शकल नहीं निकल पाई है. पर धीरे-धीरे वह शकल निकल भी आयेगी. क्या शकल निकलेगी, कोई नहीं कह सकता—पर उसकी दिशा क्या हो, इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव यहाँ पर नम्रतापूर्वक पेश किये जा रहे हैं.

अपने बुज़ुर्गों को श्रद्धांजलि अर्पित करना हर किसी का धर्म है. वह पूजा सचमुच अपने समाधान और सन्तोष के लिये होती है. फिर, जब हमारे जैसे देश में, जो आत्मा को शरीर, मन और बुद्धि से अलग मानता हो, इस पूजा का प्रयोजन अपने हित के लिये ही है, न कि दिवंगत पूज्य आत्माओं के लिये. और कौन नहीं जानता कि आत्मा की शान्ति सद्गुण के विकास में, सद्भावना के निर्माण में है. इसलिये सच्ची श्रद्धांजलि वही है जिससे पूजा करने वाले आदमी या समाज के अन्दर सद्गुण या सद्भावना जाग जावे. अगर ऐसा नहीं होता तो सारी पूजा बाहरी आडम्बर बन जायेगी और ढकोसला साबित होगी. सत्तावन माई की पूजा इस दृष्टि को ध्यान में रखकर ही होनी चाहिये.

जाहिर है कि सन सत्तावन में जो बीड़ा उठाया गया वह था स्वाधीनता के लिये. किस की स्वाधीनता ? देश भर की—देश भर के गांव गांव में रहने वाले हर बच्चे की. अंग्रेज़ी सरकार उसमें सबसे बड़ी बाधा थी, इसलिये उसको हटाना पहला ज़रूरी काम समझा गया. इसी कामना ने स्वराज्य का नाम लिया. 1857 में हमारी वीर आत्माओं ने जो बीज बोया, 1947 में उसमें फल आया और देश को स्वराज्य मिला. देश स्वाधीन हुआ. लेकिन कहने की ज़रूरत नहीं कि इस स्वाधीनता का अर्थ केवल यही है कि शक्ति व शासन का पारसल लंदन से छुड़ाकर दिल्ली ले आया गया. देश का नियंत्रण, संचालन, संयोजन आदि सब कुछ दिल्ली से होता है. गाँव वहीं के वहीं हैं. इस तरह देश ज़रूर स्वाधीन है, पर गाँव पराधीन है. सत्तावन माई की वही पूजा सार्थक कही जायेगी जो इस पराधीनता को मिटाये—यानी शक्ति व शासन के पार्सल को दिल्ली से

ستاون مائی کی پوجا کیسے ہو ؟

پچھلی دس مئی سے دیش بھر میں' خاص کو ھندی بھاشا بھاشی علاقے میں' سن 1857 کے اپنے پراتہ اسمرنیہ شہیدوں؛ ویروں اور یودھاؤں کے پرتی شردھا نجلی کی دھوم مچی ھے . شہروں میں تو اِس کاریہ کرم کو منانے کے لئے سبھائیں ھوتی ھیں؛ جلوس نکلتے ھیں' سمارکوں پر پھول مالائیں چڑھائی جاتی ھیں . لیکن دور دیہات میں اِس شردھا نجلی نے ستاون مائی کی پوجا کا نام لیا ھے . آجکل دیہاتوں میں چیچک کا یعنی دیوی مائی کا زور ویسے ھی ھے' مائی کی پوجا ھوتی ھے . اِسی طرح دسہرے پر کالی مائی کی اور دوسرے موقعوں پر دوسری مائیوں کی پوجا ھوتی ھے . تو ستاون شتابدی سماروہ بھی مائی بن کر سامنے آ رھا ھے . مگر اِس پوجا کی ابھی کوئی ٹھوس شکل نہیں نکل پائی ھے . پر دھیرے دھیرے وہ شکل نکل بھی آئیگی . کیا شکل نکلے گی' کوئی نہیں کہہ سکتا— پر اُس کی دشا کیا ھو' اِس سمبندھ میں کچھ سوجھاؤ یہاں پر نمرتا پوروک پیش کئے جا رھے ھیں .

اپنے بزرگوں کو شردھا نجلی ارپت کرنا ھر کسی کا دھرم ھے . وہ پوجا سچ مچ اپنے سمادھان اور سنتوش کے لئے ھوتی ھے . پھر' جب ھمارے جیسے دیش میں' جو آتما کو شریر' من اور بدھی سے الگ مانتا ھو' اِس پوجا کا پریوجن اپنے ھت کے لئے ھی ھے' نہ کہ دِونگت پوجیہ آتماؤں کے لئے . اور کون نہیں جانتا کہ آتما کی شانتی سدگن کے وکاس میں' سد بھاؤنا کے نرمان میں ھے . اِس لئے' سچی شردھا نجلی وھی ھے جس سے پوجا کرنے والے آدمی یا سماج کے اندر سدگن یا سد بھاؤنا جاگ جائے . اگر ایسا نہیں ھوتا تو ساری پوجا باھری آڈمبر بن جائیگی اور ڈھکوسلا ثابت ھوگی . ستاون مائی کی پوجا اِس درشٹی کو دھیان میں رکھ کر ھی ھونی چاھئے .

ظاھر ھے کہ سن ستاون میں جو بیڑا اٹھایا گیا وہ تھا سوادھینتا کے لئے. کس کی سوادھینتا ؟ دیش بھر کی— دیش بھر کے گاؤں گاؤں میں رھنے والے ھر بچے کی . انگریزی سرکار اُس میں سب سے بڑی بادھا تھی' اِس لئے اُس کو ھٹانا پہلا ضروری کام سمجھا گیا . اِسی کامنا نے سوراجیہ کا نام لیا . 1857 میں ھماری ویر آتماؤں نے جو بیج بویا' 1947 میں اس میں پھل آیا اور دیش کو سوراجیہ ملا . دیش سوادھین ھوا . لیکن کہنے کی ضرورت نہیں کہ اِس سوادھینتا کا ارتھ کیول یہی ھے کہ شکتی و شاسن کا پارسل لندن سے چھڑا کر دلی لے آیا گیا. دیش کا نینترن' سنچالن' سنیوجن آدی سب کچھ دلی سے ھوتا ھے. گاؤں وھیں کے وھیں ھیں. اِس طرح دیش ضرور سوادھین ھے' پر گاؤں پرادھین ھے . ستاون مائی کی وھی پوجا سارتھک کہی جائیگی جو اِس پرادھینتا کو مٹائے— یعنی شکتی و شاسن کے پارسل کو دلی سے

ہندستان کی دولت بڑھی ہے !

پچھلے پانچ برسوں میں پہلی پنچسالہ یوجنا کے ذریعہ ہندستان کی آمدنی میں کچھ نہ کچھ اضافہ ہوا ہے . ماہروں کا خیال ہے کہ ہر فرد پیچھے یہ اضافہ ملک کی مالی ترقی کو ظاہر کرتا ہے . ماہر ظاہر جب کوئی بات کرتا ہے تو ملک کیسے اس کی سچائی سے انکار کر سکتا ہے ؟ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے جنرل سیکریٹری آچاریہ اگروال بھی اِس سچائی سے انکار نہیں کرتے لیکن وہ کہتے ہیں کہ دولت کے اِس اضافے سے ملک کے امیروں کی تجوریاں اور زیادہ بھری ہیں . وہ بڑے درد کے ساتھ کہتے ہیں کہ "امیر زیادہ امیر ہوتے جا رہے ہیں اور غریب دنوں دن زیادہ غریب ہوتے جا رہے ہیں . امیروں اور غریبوں کا یہ فرق دنوں دن بڑھتا جا رہا ہے ." اگر اِسی رفتار سے یہ فرق بڑھتا گیا تو ملک میں سماج وادی سماج کیسے قایم ہوگا ؟ ایک اور جب کہ اُتپادن بڑھا ہے دوسری اور لوگوں کی خریداری کی طاقت دنوں دن گھٹتی جا رہی ہے . دوسری پنچسالہ یوجنا کو پورا کرنے کے لئے اور زیادہ دھن کی ضرورت ہے . اِس دھن کا ایک بڑا حصہ ٹیکسوں سے ہی اکٹھا کرنا پڑیگا . ماہر کہتے ہیں کہ جنتا کو خوشحال بنانے کے لئے یہ ٹیکس ضروری ہیں . اور جنتا ان ٹیکسوں کے بوجھ سے دن بدن زندگی کے بنیادی اسٹر سے بھی نیچے گرتی جا رہی ہے .

ہمیں تسلی ہے کہ اِس مسئلے پر وہ لوگ بھی اب سنجیدہ طور پر غور کرنے لگے ہیں جو اِس دردناک کیفیت کے لئے ذمہ دار ہیں .

—وی. نا. پانڈے

हिन्दुस्तान की दौलत बढ़ी है !

पिछले पाँच बरसों में पहली पंचसाला योजना के ज़रिये हिन्दुस्तान की आमदनी में कुछ न कुछ इज़ाफ़ा हुआ है माहिरों का ख़याल है कि हर फ़र्द पीछे यह इज़ाफ़ा मुल्क की माली तरक़्क़ी को ज़ाहिर करता है. माहिर जब कोई बात करता है तो मुल्क कैसे उसकी सचाई से इनकार कर सकता है ? आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी आचार्य अग्रवाल भी इस सचाई से इनकार नहीं करते लेकिन वे कहते हैं कि दौलत के इस इज़ाफ़े से मुल्क के अमीरों की तिजोरियाँ और ज्यादा भरी हैं. वे बड़े दर्द के साथ कहते हैं कि "अमीर ज्यादा अमीर होते जा रहे हैं और ग़रीब दिनों दिन ज्यादा ग़रीब होते जा रहे. अमीरों और ग़रीबों का यह फ़र्क़ दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है." अगर इसी रफ़्तार से यह फ़र्क़ बढ़ता गया तो मुल्क में समाजवादी समाज कैसे क़ायम होगा ? एक ओर जबकि उत्पादन बढ़ा है दूसरी ओर लोगों की ख़रीदारी की ताक़त दिनों दिन घटती जा रही है. दूसरी पंचसाला योजना को पूरा करने के लिये और ज्यादा धन की ज़रूरत है. इस धन का एक बड़ा हिस्सा टैक्सों से ही इकट्ठा करना पड़ेगा. माहिर कहते हैं कि जनता को ख़ुशहाल बनाने के लिये ये टैक्स ज़रूरी हैं. और जनता इन टैक्सों के बोझ से दिन बदिन ज़िन्दगी के बुनियादी स्तर से भी नीचे गिरती आ रही है.

हमें तसल्ली है कि इस मसले पर वे लोग भी अब संजीदा तौर पर ग़ौर करने लगे हैं जो इस दर्दनाक कैफ़ियत के लिये ज़िम्मेवार हैं.

—वि. ना. पांडे

एक टोली होगी. तुम्हें उनका ख्याल होगा ! तुम्हें बेग़ानों और ओहदों से प्यार होगा ! ज़रा सोचो तो सही. समाज के बेशुमार जीव जिनकी माएँ बहिनें तड़प-तड़प कर प्राण दे रही हैं, जिनके बच्चे रोटी के टुकड़ों के न मिलने पर सीधे स्वर्ग चले जाते हैं, तो सोचो ! अगर समाज को उठाने के काम में, उसे चेतनमय कर डालने में अगर कष्ट आ पड़ें, जेलों की हवा खानी पड़े, अगर तुम्हें फाँसी का डर भी दिखाया जावे तो इतना याद रक्खो, हमारे समाज के हज़ारों लाखों को इस नरक से बचाने के काम में अगर तुम सहायक हो सको तो तुम चेतनामय हो, उठ चुके हो.

ऐसी कठिनाई में याद करो राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी को, दरिद्र नारायण के उस सच्चे पुजारी को, ग़रीब हिन्दुस्तानियों के उस सच्चे वकील को, अपने आत्म बल से तोपों का मुक़ाबला करने वाले उस फ़क़ीर को. उनका रास्ता तुम्हारा रास्ता रहे, उनका प्रेम भरा दिल तुम्हारा दिल हो तो तुम अजय हो.

आज का समाज जिसमें अभी ,शोषण है, दोहन है, ग़रीबी है, उसमें पिसने वाले, उसको भुगतने वाले बेशुमार साथियो उठो ! इसलिये कि तुम्हारा काम आज उठना है, तुम्हारा काम आज इन्सानियत की स्थापना करना है, पर उसका रास्ता क्या हो ? उसका रास्ता यही है कि समाज को उठने दो. ठेकेदारों को इजारेदारों को, समाज की इजारेदारी से अलग करो, अपने प्रेम और बलिदान के सहारे अलग करो ! क्यों ? इसलिये कि अब तुम भी सोच सकने का माद्दा रखते हो, और पहले भी तुम में माद्दा था, पर उस समय उसपर परदा था !पर्दे हटा दो, लम्बी नींद से जाग उठो, और उठकर एक काम करो ! पैसे कि ग़ुलामी और छीना झपटी से इनसान को मुक्त करो ! शोषण का—मेहनत के शोषण का—रास्ता बन्द करो, विचार की आज़ादी दो ! यही पुन्य काम है ! समाज की क़ुरूपता को मिटा दो !

उठो, मेहनत का लाभ उसे उठाने दो जिसकी मेहनत है, जिसका जिस्म है, जिसकी मशक़्क़त है !

ایک ٹولی ہوگی . تمھیں اُن کا خیال ہو گا ! تمھیں بیگانوں اور عہدوں سے پیار ہوگا ! ذرا سوچو تو سہی . سماج کے بےشمار جیو جن کی مائیں بہنیں تڑپ تڑپ کر پران دے رہی ہیں جن کے بچے روٹی کے ٹکڑوں کے نہ ملنے پر سیدھے سورگ چلے جاتے ہیں' تو سوچو ! اگر سماج کو اٹھانے کے کام میں' اُسے چیتن مے کر ڈالنے میں اگر کشٹ آپڑیں' جیلوں کی ہوا کھانی پڑے' اگر تمھیں پھانسی کا ڈر بھی دکھایا جاوے تو اتنا یاد رکھو' ہمارے سماج کے ہزاروں لاکھوں کو اِس نرک سے بچانے کے کام میں اگر تم سہایک ہو سکو تو تم چیتنا مے ہو' اُٹھ چکے ہو !

ایسی کٹھنائی میں یاد کرو راشٹر پتا مہاتما گاندھی کو' دردنرائن کے اُس سچے پجاری کو' غریب ہندستانیوں کے اُس سچے وکیل کو' اپنے آتم بل سے توپوں کا مقابلہ کرنیوالے اُس فقیر کو . ان کا راستہ تمھارا راستہ رہے' اُن کا پریم بھرا دل تمھارا دل ہو تو تم اجئے ہو .

آج کا سماج جس میں ابھی شوشن ہے' دوھن ہے' غریبی ہے' اُس میں پسنے والے' اُس کو بھگتنے والے بےشمار ساتھیو اُٹھو ! اس لئے کہ تمھارا کام آج اٹھنا ہے' تمھارا کام آج انسانیت کی استھاپنا کرنا ہے' پر اُس کا راستہ کیا ہو ؟ اُس کا راستہ یہی ہے کہ سماج کو اٹھنے دو . ٹھیکیداروں کو' اجارے داروں کو سماج کی اِجاریداری سے الگ کرو' اپنے پریم اور بلیدان کے سہارے الگ کرو ! کیوں ؟ اس لئے کی اب تم بھی سوچ سکنے کا مادہ رکھتے ہو' اور پہلے بھی تم میں مادہ تھا' پر اُس سمئے اُس پر پردہ تھا ! پردے ہٹا دو' لمبی نیند سے جاگ اُٹھو' اور اُٹھ کر ایک کام کرو ! پیسے کی غلامی اور چھینا جھپٹی سے انسان کو مکت کرو . شوشن کا — محنت کے شوشن کا — راستہ بند کرو' وچار کی آزادی دو ! یہی پن کام ہے ! سماج کی کوروپتا کو مٹا دو !

اُٹھو ! محنت کا لابھ اسے اٹھانے دو جس کی محنت ہے' جس کا جسم ہے' جس کی مشقت ہے !

पर मैं भूल गया, तुम भी तो आज भूखे हो ! बेकार हो. बेकसी के मजार पर खड़े हो ! पर भूखे मरना, गुलामी स्वीकार करना, यह भी तो हिंसा है ! चोरी करना, समाज की रोटी छीनना, बहुत बड़ी हिंसा है ! दूसरों की मेहनत पर जीवित रहना, पिस्सू और खटमलों की कोटि में आता है ! पर पिस्सू और खटमल जानवरों की गिनती में हैं और तुम आदमी हो ! विशवास के साथ उठो, इस जघन्य अपराध को छोड़ दो !

उठो ! जवानो विश्वास करो ! अब इनसान गुलाम नहीं रहनेवाला है, उठो, अब मेहनत करके भी आदमी भूखा नहीं सोने वाला है ! धोखादेही और यह असत्यता का व्यापार अब मरजाने वाला है. यह महाजनी सभ्यता का समाज, दम घोंटू समाज अब मर जानेवाला है ! उठो ! आज इन्सान की आज़ादी की रोटी और मकान की बात पर उठो ! यह माँग अटपटी नहीं, यह माँग ज़ियादा नहीं ! इतना तो सबका हक़ है कि आदमी का बेटा, आदमी की तरह ही रह सके, वह मजबूरियों का मारा जानवरपन को अंगीकार न करले ! जवानो ! तुम्हारी जवानी ज़िन्दाबाद !

उठो ! लेखको ! बहुत लिखा जा चुका है प्रेम और इश्क़ के थोथे क़िस्सों पर, अपनी क़लम को अब मोड़ दो. तुम्हारे सामने ही दम तोड़ते अनाथ बच्चों, माताओं और दुखिया समाज की तरफ़ ! मानता हूँ, इसमें तुम्हें कठिनाई होगी, पर याद करो, टाल्सटाय को, याद करो गोर्की को, और याद करो अभी-अभी ही मरे हमारे साहित्य के देवता प्रेमचन्द को ! प्रेमचन्द ने जो कुछ लिखा, वह बेजोड़ है ! पर प्रेमचन्द आज अमर है, हाँ जासूसी कहानियाँ लिख जानेवालों को ज़माना याद न रख सकेगा ! हिन्दुस्तान के जागीरदारों के द्वारा शोषित किसान आज प्रेमचन्द पर गर्व कर सकता है, विधवाएँ, व बीच के दरजे के पिसे हुए जवान आज भी प्रेमचन्द को याद करके उठ सकते हैं. क्योंकि प्रेमचन्द उन किसानों का था, उन ग़रीबों का था, जिनका कोई न था ! प्रेमचन्द ने आत्मा न बेची, गुलामी को तोड़ फेंका, साहित्य की धारा उसने वहाँ मोड़ दी जहाँ समाज का अकिंचन वर्ग, समाज का सर्वहारा वर्ग, सो रह था ! उठो, लिखना हो तो लिखो उनपर जो सताए हुए हैं, जो घबराए हुए हैं, जो पीड़ित हैं. तुम पीड़ामय हो जाओ, अपनी वाणी और क़लम को उनके ऊपर न्योछावर कर दो ! यही तुम्हारा उठना है !

पर तुम्हारी एक दलील हो सकती है कि यह सब शायद कुछ सरकारी लोगों को पसन्द न होगा, यह सब समाज का वह वर्ग पसन्द न करेगा जोकि आज पढ़ लिख सकता है. और इस जगह आकर मुझे रोना आजाता है. हाँ, तुम्हारे भी माँ होगी, बहिन होगी, पत्नी होगी, फुदकने वाले बच्चों की

پر میں بھول گیا، تم بھی تو آج بھوکے ہو! بیکار ہو. بیکسی کے مزار پر کھڑے ہو! پر بھوکے مرنا، غلامی سوئیکار کرنا، یہ بھی تو ہنسا ہے! چوری کرنا، سماج کی روٹی چھیننا، بہت بڑی ہنسا ہے! دوسروں کی محنت پر جیوت رہنا، پسو اور کھٹملوں کی کوٹی میں آتا ہے! پر پسو اور کھٹمل جانوروں کی گنتی میں ہیں اور تم آدمی ہو! وشواس کے ساتھ اُٹھو، اس جگھنیہ اپرادھ کو چھوڑ دو!

اٹھو! جوانو وشواس کرو! اب انسان غلام نہیں رہنے والا ہے، اٹھو، اب محنت کر کے بھی آدمی بھوکا نہیں سونے والا ہے! دھوکادیہی اور یہ استیتا کا ویاپار اب مر جانے والا ہے. یہ مہاجنی سبھیتا کا سماج، دم گھونٹو سماج اب مر جانے والا ہے! اٹھو! آج انسان کی آزادی کی روٹی اور مکان کی بات پر اٹھو! یہ مانگ اٹپٹی نہیں، یہ مانگ زیادہ نہیں! اتنا تو سب کا حق ہے کہ آدمی کا بیٹا، آدمی کی طرح ہی رہ سکے، وہ مجبوریوں کا مارا جانور پن کو انگیکار نہ کر لے! جوانو! تمہاری جوانی زندہ باد!

اٹھو! لیکھکو! بہت لکھا جا چکا ہے پریم اور عشق کے تھوتھے قصوں پر، اپنی قلم کو اب موڑ دو. تمہارے سامنے ہی دم توڑتے اناتھ بچوں، ماتاؤں اور دکھیا سماج کی طرف! مانتا ہوں، اس میں تمہیں کٹھنائی ہوگی. پر یاد کرو، ٹالسٹائے کو، یاد کرو گورکی کو، اور یاد کرو ابھی ابھی ہی مرے ہمارے ساہتیہ کے دیوتا پریم چند کو! پریم چند نے جو کچھ لکھا، وہ بےجوڑ ہے! پر پریم چند آج امر ہے، ہاں جاسوسی کہانیاں لکھ جانے والوں کو زمانہ یاد نہ رکھ سکیگا! ہندستان کے جاگیرداروں کے دوارا شوشت کسان آج پریم چند پر گرو کر سکتا ہے، ودھوائیں، و بیچ کے درجے کے پسے ہوئے جوان آج بھی پریم چند کو یاد کر کے اٹھ سکتے ہیں. کیونکہ پریم چند اُن کسانوں کا تھا، ان غریبوں کا تھا، جن کا کوئی نہ تھا! پریم چند نے آتما نہ بیچی، غلامی کو توڑ پھینکا، ساہتیہ کی دھارا اس نے وہاں موڑ دی جہاں سماج کا آکنچن ورگ، سماج کا سروہارا ورگ سو رہا تھا. اٹھو! لکھنا ہو تو لکھو ان پر جو ستائے ہوئے ہیں، جو گھبرائے ہوئے ہیں، جو پیڑت ہیں. تم پیڑا مے ہوجاؤ، اپنی وانی اور قلم کو اُن کے اوپر نچھاور کر دو! یہی تمہارا اُٹھنا ہے!

پر تمہاری ایک دلیل ہو سکتی ہے کہ یہ سب شاید کچھ سرکاری لوگوں کو پسند نہ ہوگا، یہ سب سماج کا وہ ورگ پسند نہ کریگا جو کہ آج پڑھ لکھ سکتا ہے. اور اس جگہ آکر مجھے رونا آجاتا ہے. ہاں، تمہارے بھی ماں ہوگی، بہن ہوگی، پتنی ہوگی، پھدکنے والے بچوں کی

उठो ! मोटे मोटे गद्दों पर, रुई के बिछौनों पर, पंखों की ठंडी हवा के नीचे, खसकी टट्टियों की महकती हवा के नीचे, कुरसी तोड़ धनकुबेर ! थैलियों के मालिक ! बैंक के रक्षक, उठो ! अनाज का भाव मँहगा करने के लिये नहीं; इसलिये भी नहीं कि सट्टे और फाटके में गरीबों की तक़दीर के साथ खिलवाड़ करो ! इसलिये भी नहीं कि चोर बाजारी, और रुपयों का ढेर जमा करो, पर इसलिये उठो कि तुम्हें समाज की अगुआई करनी है, शोषण की, ख़ून चूसने की कला से आज़ाद होना है और सबको आज़ाद करना है ! इनसान और समाज एक दूसरे के पूरक हैं. इनसान को आज़ादी दो, इनसान को रोटी मिलने दो, उसे रोटी बाँटो मत, वह तो ख़ुद रोटी पैदा करता है. फिर उसे तुम क्या रोटी बाँटोगे ! उसे मकान दो, क्योंकि वह ख़ुद मकान बनाता है. यह सब होने दो, समाज अपने आप बढ़ेगा. उठो ! इनसान की आज़ादी के नाम पर समाज में फैली हुई इन खन्दकों और खाइयों को पाट दो ! शोषण के शेष-नागो ! आज फुफकारना बन्द करो, कमजोरों को काटना रोक दो ! उठो ! तुम्हारा समाज बदल रहा है, इनसान और आज का धर्म, मजहब, विश्वास बदल रहा है ! उस बदलते हुए इनसान, विश्वास और समाज सबका साथ दो ! अपनी मानसिक ग़ुलामी के हटाने के लिये दिमाग़ के रोशनदान खोल दो, फिर तुम महसूस करोगे सड़क पर पड़े भूखों की कराहट, खेत में बिलखते पेट की रोटी की माँग ! पर एक को उठाकर दूसरे को न गिराओ—सबका धर्म है उठना ! उठो ! इस विश्वास के साथ उठो कि इनसान को उठना है, इसलिये उठना है कि वह पतन की सीमा लाँघ चुका है, वह आत्महत्या करने पर उतारू है आज ! पर क्या तुम जानते हो कि भेड़ियों को उपदेश देने से ख़ून की तृप्ति नहीं होती, उन्हें ख़ून की ही चाह होती है ! तो शर्म करो, तुम इनसान हो, भेड़िये नहीं. अपनी सभ्यता और संस्कृति पर आज बहुत गर्व करते हो, तुम जीव दया धर्म के प्रचारक हो, इस भेड़ियेपन से आज़ाद होओ ! शोषण का जामा उतार फेंको ! उठो ! सबको उठने दो ! उठना सब का अधिकार है.

जवानो उठो ! तुम्हारा यह सबसे बड़ा काम है ! तुम तो सृष्टि के खम्भे हो ! उठो ! हर देश की लाज है तुम पर ! विधवाओं की आहों को सुनकर उठो, बेबसी की मारी माँ की चीख सुनकर उठो ! उठो ! इन्सानियत को भी शर्मा देने वाली वेश्या कहलाने वाली माँ बहिनों की लाज की ख़ातिर उठो ! उठो ! शोषण की चक्की के पाटों से पिस रहे समाज को आगे बढ़ाकर शोषण मुक्त कर देने का काम तुम पर है, आओ उठो ! घुटने मत टेको ! ईमान मत बेचो ! आओ, ग़ुलामी को स्वीकार मत करो !

اٹھو! موٹے موٹے گدوں پر، روئی کے بچھونوں پر، پنکھوں کی ٹھنڈی ہوا کے نیچے، خس کی ٹٹیوں کی مہکتی ہوا کے نیچے، کرسی توڑ دھن کوبیر! تھیلیوں کے مالک! بینک کے رکشک، اٹھو! اناج کا بھاؤ مہنگا کرنے کے لئے نہیں ہے، اس لئے بھی نہیں کہ سٹے اور پھاٹکے میں غریبوں کی تقدیر کے ساتھ کھلواڑ کرو! اس لئے بھی نہیں کہ چور بازاری، اور روپیوں کا ڈھیر جمع کرو، پر اس لئے اٹھو کہ تمہیں سماج کی اگوائی کرنی ہے، شوشن کی، خون چوسنے کی کلا سے آزاد ہونا ہے اور سب کو آزاد کرنا ہے! انسان اور سماج ایک دوسرے کے پورک ہیں۔ انسان کو آزادی دو، انسان کو روٹی ملنے دو، اسے روٹی بانٹو مت، وہ تو خود روٹی پیدا کرتا ہے۔ پھر اسے تم کیا روٹی بانٹوگے؟ اسے مکان دو، کیونکہ وہ خود مکان بناتا ہے۔ یہ سب ہونے دو، سماج اپنے آپ بڑھے گا۔ اٹھو! انسان کی آزادی کے نام پر سماج میں پھیلی ہوئی ان خندقوں اور کھائیوں کو پاٹ دو! شوشن کے شیش ناگو! آج پھپھکارنا بند کرو، کمزوروں کو کاٹنا روک دو! اٹھو! تمہارا سماج بدل رہا ہے، انسان اور آج کا دھرم، مذہب، وشواس بدل رہا ہے! اس بدلتے ہوئے انسان، وشواس اور سماج سب کا ساتھ دو! اپنی مانسک غلامی کے ہٹانے کے لئے دماغ کے روشندان کھول دو، پھر تم محسوس کروگے سڑک پر پڑے بھوکوں کی کراہٹ، کھیت میں بلکھتے پیٹ کی روٹی کی مانگ! پر ایک کو اٹھا کر دوسرے کو نہ گراؤ—سب کا دھرم ہے اٹھنا! اٹھو! اس وشواس کے ساتھ اٹھو کہ انسان کو اٹھنا ہے، اس لئے اٹھنا ہے کہ وہ پتن کی سیما لانگھ چکا ہے، وہ آتم ہتیا کرنے پر اتارو ہے آج! پر کیا تم جانتے ہو کہ بھیڑیوں کو اپدیش دینے سے خون کی ترپتی نہیں ہوتی، انہیں خون کی ہی چاہ ہوتی ہے! تو شرم کرو، تم انسان ہو، بھیڑیے نہیں، اپنی سبھیتا اور سنسکرتی پر آج بہت گرو کرتے ہو، تم جیو دیا دھرم کے پرچارک ہو، اس بھیڑیے پن سے آزاد ہوؤ! شوشن کا جامہ اتار پھینکو! اٹھو! سب کو اٹھنے دو! اٹھنا سب کا ادھیکار ہے۔

جوانو اٹھو! تمہارا یہ سب سے بڑا کام ہے! تم تو سرشٹی کے کھمبے ہو! اٹھو! ہر دیش کی لاج ہے تم پر! ودھواؤں کی آہوں کو سن کر اٹھو، بےبسی کی ماری ماں کی چیخ کو سن کر اٹھو! اٹھو! انسانیت کو بھی شرما دینے والی ویشیا کہی جانے والی ماں بہنوں کی لاج کی خاطر اٹھو! اٹھو! شوشن کی چکی کے پاٹوں سے پس رہے سماج کو آگے بڑھا کر شوشن مکت کر دینے کا کام تم پر ہے، آؤ اٹھو! گھٹنے مت ٹیکو! ایمان مت بیچو! آؤ، غلامی کو سوئیکار مت کرو!

अब पठान ने उसे बताया कि मेरी गर्दन पर तलवार का एक हाथ मारो." बनिये ने कहा—"अच्छा", और तलवार चपटी करके उसकी गर्दन पर धीरे से मारी. इस पर बिगड़ कर पठान ने कहा—"भई तुम तो बिलकुल अनाड़ी मालूम होते हो. क़त्ल करना एक ज़रा सी बात है, वह भी तुम नहीं जानते !"

बनिये ने तलवार फेंक दी और कहा—"भई, मैंने तेरी उँगलियों से खून तो बहा दिया. खून बहने से तेरे बाप की बात पूरी हो गई."

اب پٹھان نے اسے بتایا کہ "میری گردن پر تلوار کا ایک ہاتھ مارو۔ بنیے نے کہا—"اچھا" اور تلوار چپٹی کرکے اسکی گردن پر دھیرے سے ماری۔ اس پر بگڑ کر پٹھان نے کہا—"بھئی تم تو بالکل اناڑی معلوم ہوتے ہو۔ قتل کرنا ایک ذرا سی بات ہے، وہ بھی تم نہیں جانتے !"

بنیے نے تلوار پھینک دی اور کہا—"بھائی، میں نے تیری انگلیوں سے خون تو بہا دیا۔ خون بہنے سے تیرے باپ کی بات پوری ہو گئی۔"

उठो !

एक अहिन्दी भाषी भाई

उठो ! क्यों ? इसलिये कि बहुत सो चुके हो ! पर सोना, और उठना तो नित्य का काम है ! नहीं, मैं तुम्हारी चेतना को जगाना चाहता हूँ, मैं तुम्हें झकझोर देना चाहता हूँ ! क्यों ? तुम जागते हुए भी सो रहे हो ! यह नींद नहीं—तन्द्रा है. यह जब आदमी पर छा जाती है, तो आदमी सो जाता है, और फिर समाज भी सो जाता है.

आज उठने की बेला है, बलिदान की घड़ी है· उठो ! पूजा का सामान बाँध लो ! पर सामान नहीं, बाँधना नहीं, पूजा भी नहीं—यह सब पुराना हो चुका ! आज सामान बांधो नहीं, उसको बिखेर दो ! बाँटने की भी आवश्यकता नहीं, सबको पाने दो ! पूजा की थाली को आज मन्दिर में नहीं वहाँ जाने दो, जहाँ भूख की छटपटाहट है, लाचारगी का मातम है, मौत का तांडव नाच है !

उठो ! पूजा करो इन्सान की, वही देवता है, नरनारायन है, वही राज है, वही बनाने वाला है; मजदूरी के संसार का, मेहनत की दुनिया का, गगन-चुम्बी महलों और अटारियों का, बड़े-बड़े धन के बखारों का !

उठो ! कारखाने की चिमनी के धुएँ में दम तोड़कर मर जाने वाले मजदूर उठो ! जेठ की दुपहरी में पसीने में लथपथ भूखे किसानों उठो ! मेहनत की चट्टान से लड़ने वाले भगवान के प्यारे, उठो ! ओह ! तुम सोए ही कब ! हाँ, तुम सोए नहीं, पर बेबसी से हार खाकर पड़ गये, तुम सोए नहीं, चोटों की मार से घायल हो कर तन्द्रामय हो गये !

اُٹھو !

ایک ہندی بھاشی بھائی

اٹھو ! کیوں ؟ اس لئے کہ بہت سو چکے ہو ! پر سونا، اور اٹھنا تو نت کا کام ہے ! نہیں، میں تمہاری چیتنا کو جگانا چاہتا ہوں، میں تمہیں جھکجھور دینا چاہتا ہوں ! کیوں ؟ تم جاگتے ہوئے بھی سو رہے ہو ! یہ نیند نہیں—تندرا ہے۔ یہ جب آدمی پر چھا جاتی ہے، تو آدمی سو جاتا ہے، اور پھر سماج بھی سو جاتا ہے۔

آج اٹھنے کی بیلا ہے، بلیدان کی گھڑی ہے، اٹھو ! پوجا کا سامان باندھ لو ! پر سامان نہیں، باندھنا نہیں، پوجا بھی نہیں—یہ سب پرانا ہو چکا ! آج سمان باندھو نہیں، اسکو بکھیر دو ! بانٹنے کی بھی آوشیکتا نہیں، سب کو پانے دو ! پوجا کی تھالی کو آج مندر میں نہیں، وہاں جانے دو، جہاں بھوک کی چھٹپٹاہٹ ہے، لاچارگی کا ماتم ہے، موت کا تانڈو ناچ ہے !

اٹھو ! پوجا کرو انسان کی، وہی دیوتا ہے، نرنرائن ہے، وہی راج ہے، وہی بنانے والا ہے، مزدوروں کے سنسار کا، محنت کی دنیا کے، گگن چمبی محلوں اور اٹاریوں کا، بڑے-بڑے دھن کے بکھاروں کا !

اٹھو ! کارخانے کی چمنی کے دھوئیں میں دم توڑ کر مر جانے والے مزدور اٹھو ! جیٹھ کی دوپہری میں پسینے میں لتھ پتھ بھوکے کسان اٹھو ! محنت کی چٹان سے لڑنے والے بھگوان کے پیارے اٹھو ! آوہ ! تم سوئے ہی کب ! ہاں تم سوئے نہیں، پر بے بسی سے ہار کھا کر پڑ گئے، تم روئے نہیں، چوٹوں کی مار سے گھائل ہوکر تندرا مے ہو گئے !

लिये उनके पास पहुँचा और बोला—"लो, मारो मुझे इस से." सेठ जी ने डर के मारे दोनों हाथों से आँखें मूँद लीं और दुहाई देने लगे.

पठान के समझाने-बुझाने पर जब सेठ जी के होश ज़रा ठिकाने आये, तो पठान ने उनसे माफ़ी माँगी और कहा—"भाई, तू तो मेरी जान का मालिक है. तू अभी मेरी गर्दन काट ले. इतनी दूर से चलकर जिस काम के लिये तू आया है, वह तू पूरा कर."

अब सेठ जी की समझ में आया कि दर असल मामला उल्टा है. सेठ जी सोच में पड़ गये कि क्या जवाब दें? अगर इनकार करते हैं, तो .ख़ैर नहीं, और मंज़ूर करते हैं तो क़त्ल का गुनाह होता है. कहने लगे—"अच्छा भाई, कुछ ठहर कर तुम्हें मारूँगा, क्योंकि मैं नहीं जानता, तुम हो कौन? तुम्हारे घर पर चलकर पहले तुम्हारे भाई से पूछ लूँ, फिर मारूँगा."

भाई का नाम सुनते ही पठान ने कहा—"उस दुश्मन का मेरे सामने नाम न लो. हाँ, अगर घर पर चलकर मारना चाहते हो, तो चलो, वहीं सही."

दोनों घर आये. सेठ जी ने कहा—"भाई, मैं तुझे तब मारूँगा जब कि तू अपने भाई से मेल कर ले, वर्ना सब यही कहेंगे कि मैंने तुझे तेरे भाई के झगड़े के सबब मार डाला. तेरे भाई से भी लोग यही कहेंगे कि आपसी झगड़े के सबब अपने मुँह बोले धर्म भाई को बुलवाकर उससे सगे भाई को मरवा डाला. जो तू मेरी बात नहीं माने तो फिर तू ही मुझे मार डाल."

हारकर पठान अपने भाई से जाकर मिला. दोनों में सुलह हो गई. आख़िर में छोटे भाई ने सेठ से कहा कि "अब तू मुझे मार डाल, ताकि मेरे बाप की बात भी पूरी हो जाय." पर सेठ ने पहले दिन तो यह बहाना बताया कि आज सुलह का दिन है, इसलिये मरना-मारना ठीक नहीं. दूसरे दिन सेठ जी ने कहा—"भाई, मैंने तुझे माफ़ किया. अब तू भी मेरी जान बख़्श."

छोटे भाई ने कहा—"यह नहीं हो सकता. तुम मेरी जान बख़्श कर मुझे नालायक़ बेटा कहलवाओगे? यह किसे नहीं मालूम कि तुम्हारे आते ही मैं तुम्हें मारने को दौड़ा था? यह हो नहीं सकता कि तुम मेरा .ख़ून न करो. मैं अपने बाप की बात को किसी तरह टालने न दूँगा."

वह किसी तरह भी न माना और ख़ंजर बनिये के हाथ में देकर, गर्दन झुकाकर आगे बढ़ा. बनिये ने उसकी उँगली में ख़ंजर की नोक लगाई. वह बिगड़कर बोला—"यह तुम क्या कर रहे हो?" बनिये ने हँसकर कहा—तुम्हें क़त्ल करता हूँ." उसने कहा—"तुम भी बड़े अजीब आदमी हो." इस पर बनिया बोला—फिर मुझे बताओ, मैं तो यह सब क़त्ल-वत्ल के झगड़े जानता नहीं."

لئے اُن کے پاس پہنچا اور بولا—"لو، مارو مجھے اِس سے." سیٹھ جی نے ڈر کے مارے دونوں ہاتھوں سے آنکھیں موند لیں اور دہائی دینے لگے.

پٹھان کے سمجھانے-بجھانے پر جب سیٹھ جی کے ہوش ذرا ٹھکانے آئے' تو پٹھان نے اُن سے معافی مانگی اور کہا— "بھائی' تو تو میری جان کا مالک ہے. تو ابھی میری گردن کاٹ لے. اتنی دور سے چل کر جس کام کے لئے تو آیا ہے' وہ تو پورا کر."

اب سیٹھ جی کی سمجھ میں آیا کہ دراصل معاملہ الٹا ہے. سیٹھ جی سوچ میں پڑ گئے کہ کیا جواب دیں؟ اگر انکار کرتے ہیں' تو خیر نہیں' اور منظور کرتے ہیں' تو قتل کا گناہ ہوتا ہے. کہنے لگے—"اچھا بھائی' کچھ ٹھہر کر تمہیں مارونگا' کیونکہ میں نہیں جانتا' تم ہو کون؟ تمہارے گھر پر چل کر پہلے تمہارے بھائی سے پوچھ لوں' پھر مارونگا."

بھائی کا نام سنتے ہی پٹھان نے کہا—"اُس دشمن کا میرے سامنے نام نہ لو. ہاں' اگر گھر پر چل کر مارنا چاہتے ہو' تو چلو' وہیں سہی."

دونوں گھر آئے. سیٹھ جی نے کہا—"بھائی' میں تجھے تب مارونگا جب کہ تو اپنے بھائی سے میل کر لے' ورنہ سب یہی کہینگے کہ میں نے تجھے تیرے بھائی کے جھگڑے کے سبب مار ڈالا. تیرے بھائی سے بھی لوگ یہی کہینگے کہ آپسی جھگڑے کے سبب اپنے منہ-بولے دھرم-بھائی کو بلوا کر اُس سے سگے بھائی کو مروا ڈالا. جو تو میری بات نہیں مانے تو پھر تو ہی مجھے مار ڈال."

ہار کر پٹھان اپنے بھائی سے جا کر ملا. دونوں میں صلح ہو گئی. آخر میں چھوٹے بھائی نے سیٹھ سے کہا کہ اب تو مجھے مار ڈال' تاکہ میرے باپ کی بات بھی پوری ہو جائے." پر سیٹھ نے پہلے دن تو یہ بہانہ بتایا کہ آج صلح کا دن ہے' اس لئے مرنا مارنا ٹھیک نہیں. دوسرے دن سیٹھ جی نے کہا—"بھئی' میں نے تجھے معاف کیا. اب تو بھی میری جان بخش."

چھوٹے بھائی نے کہا—"یہ نہیں ہو سکتا. تم میری جان بخش کر مجھے نالائق بیٹا کہلواؤگے؟ یہ کسے نہیں معلوم کہ تمہارے آتے ہی میں تمہیں مارنے کو دوڑا تھا؟ یہ ہو نہیں سکتا کہ تم میرا خون نہ کرو. میں اپنے باپ کی بات کو کسی طرح ٹالنے نہ دونگا."

وہ کسی طرح بھی نہیں مانا اور خنجر بنیے کے ہاتھ میں دے کر' گردن جھکا کر آگے بڑھا. بنیے نے اُس کی انگلی میں خنجر کی نوک لگائی. وہ بگڑ کر بولا—"یہ تم کیا کر رہے ہو؟" بنیے نے ہنس کر کہا—"تمہیں قتل کرتا ہوں." اُس نے کہا—"تم بھی بڑے عجیب آدمی ہو." اِس پر بنیا بولا—"پھر مجھے بتاؤ' میں تو یہ سب قتل-وتل کے جھگڑے جانتا نہیں."

पठान बोला—"भाई, और तो कोई बात नहीं, सिवाय इसके कि तुम्हें उसके हमले का ख़तरा है."

सेठ जी ने कहा—"हाँ, और कोई बात नहीं."

पठान बोला—"फिर तुम बेधड़क मेरे साथ चलो. किसी बात की फ़िक्र मत करो. ज़रा भी न घबराओ, वह अगर मेरा एक मेहमान मार डाले तो मैं उसके दो मेहमान मार डालूँगा. तुम चलो, देखें अगर वह तुम्हारा बाल भी बीका करे."

उसने सेठ जी को लाख समझाया कि उन्हें अपने बारे में डरने की क़तई ज़रूरत नहीं, पर उनकी समझ में कुछ नहीं आया. पठान ने उनकी बड़ी मिन्नत .ख़ुशामद की, मगर सब बेकार. सेठ जी वहाँ से दूर जाकर ऐसी जगह ठहरे कि उसके ज़ालिम भाई को उसका पता न चले. लोटा, डोर और चादर भी गँवाई, पर जान बची लाखों पाये.

पठान के छोटे भाई ने लोटा-डोर के साथ एक चादर भी पाई, जिसमें एक गाँठ लगी थी. उसने उसे खोला, तो उसमें से उसके बाप का ख़त निकला, जिसमें सेठ जी को लिखा था कि आप आकर मेरे छोटे लड़के को मार अपने भाई के .ख़ून का बदला लें. था वह सपूत. ख़त पढ़कर बहुत सोच विचार में पड़ गया. आख़िर तै किया कि वह अपने बाप की बात पूरी करके ही दम लेगा. उसने सोचा, सेठ दर असल मुझे मार ही डालने को आया था. लेकिन वह तो मेरे बाप का बुलाया हुआ आया था और मैंने उल्टा उसे ही मार डाला होता ! बड़ा ग़ज़ब होता. .ख़ैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है. सेठ जी को तलाश कर फ़ौरन उनके हाथों क़त्ल हो जाना चाहिये. वह तो बदला लेने आवें और मैं जान चुराऊँ, यह पठान के लड़के को शोभा नहीं देता.

पठान सेठ जी का पता लगाने में रात भर हैरान होता रहा. सुबह होते-होते वह ठीक जगह पर पहुँच गया. सेठ जी उस वक़्त जंगल गये थे. वह भी उधर हो गया. सेठ जी उधर से लौट ही रहे थे कि सामने पठान का भाई आता हुआ दिखाई दिया. उसे देखते ही सेठ जी सरपट भागे तो वह भी उनके पीछे ख़ंजर हाथ में लिये यह कहता हुआ भागा कि "प्यारे भाई, तुझे क़सम है, भाग मत, मुझे मार डाल और मेरे बाप की बात पूरी कर." मगर जनाब, वहाँ होश किसे, कौन सुने और कौन समझे ? पठान हाथ में ख़ंजर लिये चीख़ता ही रहा. उसने सोचा, वे निकल न जायें, वर्ना उसके बाप की बात अधूरी रह जायगी. वह और तेज़ी से उनके पीछे भागने लगा. न वह खाई देखता और न ख़न्दक़. भागते-भागते सेठ जी के पैर थक गये थे और साँस फूल रही थी. आख़िर बेचारे गिर ही तो पड़े. उनके गिरते ही पठान ख़ंजर हाथ में

پٹھان بولا—"بھائی، اور تو کوئی بات نہیں، سوائے اِس کے کہ تمہیں اس کے حملے کا خطرہ ہے ."

سیٹھ جی نے کہا—"ہاں، اور کوئی بات نہیں ."

پٹھان بولا—"پھر تم بےدھڑک میرے ساتھ چلو . کسی بات کی فکر مت کرو . ذرا بھی نہ گھبراؤ، وہ اگر میرا ایک مہمان مار ڈالے تو میں اس کے دو مہمان مار ڈالونگا . تم چلو، دیکھیں اگر وہ تمہارا بال بھی بیکا کرے ."

اُس نے سیٹھ جی کو لاکھ سمجھایا کہ انہیں اپنے بارے میں ڈرنے کی قطعی ضرورت نہیں، پر ان کی سمجھ میں کچھ نہیں آیا . پٹھان نے ان کی بڑی منت خوشامد کی، مگر سب بیکار . سیٹھ جی وہاں سے دور جاکر ایسی جگہ ٹھہرے کہ اُس کے ظالم بھائی کو اس کا پتہ نہ چلے . لوٹا ڈور اور چادر بھی گنوائی، پر جان بچی لاکھوں پائے .

پٹھان کے چھوٹے بھائی نے لوٹا ڈور کے ساتھ ایک چادر بھی پائی، جس میں ایک گانٹھ لگی تھی . اس نے اسے کھولا، تو اُس میں سے اس کے باپ کا خط نکلا، جس میں سیٹھ جی کو لکھا تھا کہ آپ آکر میرے چھوٹے لڑکے کو مار اپنے بھائی کے خون کا بدلہ لیں . تھا وہ سپوت . خط پڑھ کر بہت سوچ وچار میں پڑ گیا . آخر طے کیا کہ وے اپنے باپ کی بات پوری کر کے ہی دم لے گا . اس نے سوچا، سیٹھ دراصل مجھے مار ہی ڈالنے کو آیا تھا . لیکن وہ تو میرے باپ کا بلایا ہوا آیا تھا، اور میں نے الٹا اسے ہی مار ڈالا ہوتا ! بڑا غضب ہوتا . خیر، اب بھی کچھ نہیں بگڑا ہے . سیٹھ جی کو تلاش کر فوراً ان کے ہاتھوں قتل ہو جانا چاہئے . وہ تو بدلہ لینے آویں اور میں جان چراؤں، یہ پٹھان کے لڑکے کو شوبھا نہیں دیتا .

پٹھان سیٹھ جی کا پتہ لگانے میں رات بھر حیران ہوتا رہا . صبح ہوتے ہوتے وہ ٹھیک جگہ پر پہنچ گیا . سیٹھ جی اُس وقت جنگل گئے تھے . وہ بھی ادھر ہی گیا . سیٹھ جی ادھر سے لوٹ ہی رہے تھے کہ سامنے پٹھان کا بھائی آتا ہوا دکھائی دیا . اسے دیکھتے ہی سیٹھ جی سرپٹ بھاگے تو وہ بھی ان کے پیچھے خنجر ہاتھ میں لئے یہ کہتا ہوا بھاگا کہ "پیارے بھائی تجھے قسم ہے، بھاگ مت، مجھے مار ڈال اور میرے باپ کی بات پوری کر." مگر جناب، وہاں ہوش کسے، کون سنے اور کون سمجھے ؟ پٹھان ہاتھ میں خنجر لئے چیختا ہی رہا. اُس نے سوچا، وے نکل نہ جائیں، ورنہ اُس کے باپ کی بات ادھوری رہ جائیگی . وہ اور تیزی سے ان کے پیچھے بھاگنے لگا . نہ وہ کھائی دیکھتا اور نہ خندق . بھاگتے بھاگتے سیٹھ جی کے پیر تھک گئے تھے اور سانس پھول رہی تھی . آخر بیچارے گر ہی تو پڑے . اُن کے گرتے ہی پٹھان خنجر ہاتھ میں

इधर बदकिस्मती से सेठजी पर उनके गाँव में आफ़त आई. हाफ़िज़ रहमत ख़ाँ बड़ा अच्छा हाकिम था. रिआया उससे निहायत ख़ुश थी. मजाल नहीं जो रिआया पर कोई ज़ुल्म हो. पर नवाबी जो हुई तो सरकारी अफ़सरों ने चुन-चुनकर रुपये वाले सेठ-साहूकारों को डरा-धमका कर रुपया ऐंठना शुरू किया और उन्हें इतना परेशान किया कि वे देश छोड़-छोड़कर पठानों की हकूमत में बसने लगे. मगर पठानों के पास अब रह ही क्या गया था ? सेठजी ने सोचा—चलो, अब उस शहर में चलकर रहें जहाँ हमारा धर्म-भाई पठान रहता है. चादर और लोटा-डोर कंधे पर रखकर सेठजी चल खड़े हुए. पठान का नाम तो मालूम था ही, पता मालूम न था, सो सोचा, किसी से पूछकर मालूम कर लेंगे.

बाजार में जा ही रहे थे कि अचानक वह पठान धर्म-भाई मिल गया. दोनों बड़े प्रेम से मिले, पठान बोला—"चलो हमारे घर चल कर ठहरो." उन्होंने कहा—"तुम को बेकार तकलीफ़ होगी !" पर पठान न माना और ले आकर अपने घर में टिकाया और .ख़ुद उनके खाने-पीने का सामान लेने चला गया.

सेठ जी तो लम्बी सफ़र के मारे थक गये थे और दूसरे ठहरे बिल्कुल कमज़ोर. सामने आँगन में कुँआ जो दिखाई पड़ा तो सोचा—चलो हाथ-मुँह धो लें. बस लोटा-डोर लेकर चल पड़े उधर ही. उनकी समझ में न आया कि बीच आँगन में यह रस्सी कैसे तनी है. कुँए पर पहुँचे और लगे पानी निकाल कर हाथ-मुँह धोने.

पठान का भाई छत पर बैठा था. उसने आव देखा न ताव, खंजर लेकर नीचे उतरा और सेठ जी पर झपटा. सेठ जी ने देखा कि एक खूनी आदमी एक खंजर हाथ में लिये उन्हें मारने आ रहा है, तो लोटा डोर वहीं छोड़ सर पर पैर रखकर भागे. पठान भी बड़ी तेजी से दौड़ा उनके पीछे पर वे साफ़ निकल गये. बद हवास वे भागे जा रहे थे कि सामने से पठान का बड़ा भाई—उनका दोस्त—आता हुआ मिल गया. वह उनके लिये खाने-पीने का सामान लेकर लौट रहा था. सेठ जी को इस बुरी तरह भागते और परेशान देखा तो बोला—"अरे भाई, कहाँ भागे जा रहे हो आख़िर ? ख़ैर तो है ? माजरा क्या है ?"

"ख़ैर ? कैसी ख़ैर ? यहाँ तो जान पर बन आई है"—सेठ जी बोले. उन्होंने सारी घटना कह सुनाई और भागने पर उतर आए.

पठान ने कहा—अरे, तुम उधर गये ही क्यों ? तुम्हें रस्सी नहीं लांघनी चाहिये थी."

सेठ जी ने कहा—"जो कुछ हुआ, सो हुआ, मगर अब मैं वहाँ नहीं आने का."

اِدھر بدقسمتی سے سیٹھ جی پر ان کے گاؤں میں آفت آئی ۔ حافظ رحمت خاں بڑا اچھا حاکم تھا ۔ رعایا اس سے نہایت خوش تھی ۔ مجال نہیں، جو رعایا پر کوئی بھی ظلم ہو ۔ پر نوابی جو ہوئی تو سرکاری افسروں نے چن چن کر روپئے والے سیٹھ ساہوکاروں کو ڈرا دھمکا کر روپیہ اینٹھنا شروع کیا اور اُنھیں اِتنا پریشان کیا کہ وے دیش چھوڑ چھوڑ کر پٹھانوں کی حکومت میں بسنے لگے ۔ مگر پٹھانوں کے پاس اب رہ ہی کیا گیا تھا ؟ سیٹھ جی نے سوچا—چلو، اب اس شہر میں چل کر رہیں جہاں ہمارا دھرم بھائی پٹھان رہتا ہے ۔ چادر اور لوٹا ڈور کندھے پر رکھ کر سیٹھ جی چل کھڑے ہوئے ۔ پٹھان کا نام تو معلوم تھا ہی، پتہ معلوم نہ تھا، سو سوچا، کسی سے پوچھ کر معلوم کرلینگے ۔

بازار میں جا ہی رہے تھے کہ اچانک وہ پٹھان دھرم بھائی مل گیا ۔ دونوں بڑے پریم سے ملے ۔ پٹھان بولا—"چلو، ہمارے گھر چل کر ٹھہرو ۔" انھوں نے کہا—"تم کو بیکار تکلیف ہوگی !" پر پٹھان نہ مانا اور سیٹھ جی کو لے جاکر اپنے گھر میں ٹکایا اور خود اُن کے کھانے پینے کا سامان لینے چلا گیا ۔

سیٹھ جی ایک تو لمبے سفر کے مارے تھک گئے تھے اور دوسرے ٹھہرے بالکل کمزور ۔ سامنے آنگن میں کنواں جو دکھائی پڑا تو سوچا—چلو، ہاتھ منھ دھو لیں ۔ بس، لوٹا ڈور لے کر چل پڑے اُدھر ہی ۔ اُن کی سمجھ میں نہ آیا کہ بیچ آنگن میں یہ رسی کیسی تنی ہے ۔ رسی باندھ کر وے کنوئیں پر پہنچے اور لگے پانی نکال کر ہاتھ منھ دھونے ۔

پٹھان کا بھائی سامنے چھت پر بیٹھا تھا ۔ اُس نے آؤ دیکھا نہ تاؤ، خنجر لے کر نیچے اترا اور سیٹھ جی پر جھپٹا ۔ سیٹھ جی نے دیکھا کہ ایک خونی آدمی ایک خنجر ہاتھ میں لئے انھیں مارنے آ رہا ہے، تو لوٹا ڈور وہیں چھوڑ سر پر پیر رکھ کر بھاگے ۔ پٹھان بھی بڑی تیزی سے دوڑا ان کے پیچھے؛ پر وے صاف نکل گئے ۔ بدحواس وے بھاگے جا رہے تھے کہ سامنے پٹھان کا بڑا بھائی—اُن کا دوست— آتا ہوا مل گیا ۔ وہ ان کے لئے کھانے پینے کا سامان لیکر لوٹ رہا تھا ۔ سیٹھ جی کو اِس بری طرح بھاگتے اور پریشان دیکھا، تو بولا—"ارے بھائی کہاں بھاگے جا رہے ہو آخر ؟ خیر تو ہے ؟ ماجرا کیا ہے ؟"

"خیر ؟ کیسی خیر ؟ یہاں تو جان پر بن آئی ہے"—سیٹھ جی بولے ۔ اُنھوں نے ساری گھٹنا کہہ سنائی اور بھاگنے پر اُتر آئے ۔

پٹھان نے کہا—"ارے، تم ادھر گئے ہی کیوں ؟ تمھیں رسی نہیں لانگھنی چاہیے تھی ۔"

سیٹھ جی نے کہا—"جو کچھ ہوا، سو ہوا، مگر اب میں وہاں نہیں جانے کا ۔"

नहीं." उसी रात पठान ने जाकर चुपचाप बनिये के भाई को मार डाला. लौटकर पठान ने सेठजी को यह खुशख़बरी सुनाई, फिर कहा—"अब उन क़र्ज़दारों का भी नाम बताओ, जिन्होंने उसके बरग़लाने से तुम्हारा रुपया मार लिया है."

"हाय भाई! हाय" ······ कहते हुए बनिया पछाड़ खाकर गिरा और गिड़गिड़ा कर बोला "यह तुमने क्या किया?" पठान घबराया कि माजरा क्या है? उसने कहा—"भाई बात क्या है? मैंने अगर तुम्हारे भाई को मारकर बुरा किया, तो तुम मेरे भाई को मार डालो. चलो, क़िस्सा ख़त्म. अब रोने-धोने से क्या हासिल? यह कहकर उसने सेठजी का हाथ पकड़ा और कहा कि "चलो मेरे घर अपने भाई के .ख़ून का बदला लेने."

सेठजी ने सोचा, ग़नीमत यही है कि इसको रुख़सत किया जाय. उन्होंने उसे कुछ रुपया नक़द देकर रुख़सत किया और सोचा कि चलो, आफ़त कटी, पठान ने चलते-चलते कहा कि, "मैं अपने बाप और भाई से मिलकर बदला लेने के लिये तुमको ख़बर दूँगा."

पठान को घर छोड़े साल भर हो गया था. इसलिये उसके बाप ने समझा कि शायद मर-खप गया होगा. उसे फिर घर लौटा देखकर बुड्ढे को .ख़ुशी हुई. पठान ने बनिये के यहाँ का सारा क़िस्सा अपने बाप से कह सुनाया. उसके बाप ने कहा—"पठान की बात नहीं जाना चाहिये." और दोनों बदले के लिये राज़ी हो गये. .ख़ुद उसके भाई ने कहा कि मुझे .ख़ुशी से जान देना मंजूर है सेठजी आकर .ख़ुशी से अपने भाई के बदले में मुझे मार डालें."

पठान के बाप ने एक चिट्ठी सेठजी को आकर बदला लेने के लिये लिखा. उसमें अपने लड़के के साथ की गई उसकी मेहरबानी का शुक्रिया अदा किया और लिखा कि दूसरा बेटा हाज़िर है, जब .ख़ुशी हो, आकर उसे अपने भाई के .ख़ून के बदले में मार डालो.

बाप-बेटों ने महीनों इन्तज़ार किया, मगर न तो सेठजी आए और न उनका कोई जवाब ही आया, महीनों तक उन्होंने अपने कई काम रोक रखे और यह मान लिया कि छोटा बेटा अब मरने वाला है, लेकिन सेठजी की कुछ .ख़बर न आई. आख़िर में सब नाउम्मीद हो गये.

थोड़े दिनों में पठान भाइयों का बाप मर गया. जायदादकी बाट पर दोनों भाइयों में बड़ा झगड़ा हुआ. घर का भी बँटवारा हो गया. आधा छोटे भाई को मिला और आधा बड़े को. बीच आँगन में चारपाई की अदवान खोलकर इस सिरे से उस सिरे तक ज़मीन पर खूँटी गाड़ कर बाँध दी गई. यही घर के दो भागों की हद बनी थी. 'अगर एक दूसरे की सरहद में क़दम रखते, तो बस जंग!

نہیں ." اسی رات پٹھان نے جاکر چپ چاپ بنیے کے بھائی کو مار ڈالا . لوٹ کر پٹھان نے سیٹھ جی کو یہ خوشخبری سنائی' پھر کہا—"اب اُن قرضداروں کا بھی نام بتاؤ جنہوں نے اس کے ورغلانے سے تمہارا روپیہ مار لیا ہے ."

"ہائے بھائی ! ہائے"······ کہتے ہوئے بنیا پچھاڑ کھا کر گرا اور گڑگڑا کر بولا کہ "یہ تم نے کیا کیا ؟ پٹھان گھبرایا کہ ماجرا کیا ہے ؟ اس نے کہا—"بھئی' بات کیا ہے؟ میں نے اگر تمہارے بھائی کو مار کر برا کیا' تو تم میرے بھائی کو مار ڈالو . چلو' قصہ ختم . اب رونے دھونے سے کیا حاصل ؟" یہ کہہ کر اس نے سیٹھ جی کا ہاتھ پکڑا اور کہا کہ "چلو میرے گھر اپنے بھائی کے خون کا بدلا لینے ."

سیٹھ جی نے سوچا' غنیمت یہی ہے کہ اُس کو رخصت کیا جائے . انہوں نے اُسے کچھ روپیہ نقد دے کر رخصت کیا اور سوچا کہ چلو' آفت ٹلی . پٹھان نے چلتے چلتے کہا کہ "میں اپنے باپ اور بھائی سے ملکر بدلا لینے کے لئے تم کو خبر دونگا ."

پٹھان کو گھر چھوڑے سال بھر ہو گیا تھا . اِس لئے اس کے باپ نے سمجھا کہ شاید مر کھپ گیا ہوگا . اُسے پھر گھر لوٹا دیکھ کر بڈھے کو خوشی ہوئی . پٹھان نے بنیئے کے یہاں کا سارا قصہ اپنے باپ سے کہہ سنایا . اس کے باپ نے کہا—"پٹھان کی بات نہیں جانی چاہیئے ." اور دونوں بدلے کے لئے راضی ہو گئے . خود اُس کے بھائی نے کہا کہ "مجھے خوشی سے جان دینا منظور ہے . سیٹھ جی آکر خوشی سے اپنے بھائی کے بدلے میں مجھے مار ڈالیں ."

پٹھان کے باپ نے ایک چٹھی سیٹھ جی کو آکر بدلہ لینے کے لئے لکھا . اس میں اپنے لڑکے کے ساتھ کی گئی اس کی مہربانی کا شکریہ ادا کیا اور لکھا کہ دوسرا بیٹا حاضر ہے' جب خوشی ہو' آکر اسے اپنے بھائی کے خون کے بدلے میں مار ڈالو .

باپ بیٹوں نے مہینوں انتظار کیا' مگر نہ تو سیٹھ جی آئے اور نہ ان کا کوئی جواب ہی آیا . مہینوں تک انہوں نے اپنے کئی کام روک رکھے اور یہ مان لیا کہ چھوٹا بیٹا اب مرنے والا ہے لیکن سیٹھ جی کی کچھ خبر نہ آئی . آخر کو سب ناامید ہو گئے .

تھوڑے دن میں پٹھان بھائیوں کا باپ مر گیا . جائیداد کی بانٹ پر دونوں بھائیوں میں بڑا جھگڑا ہوا . گھر کا بھی بٹوارا ہو گیا . آدھا چھوٹے بھائی کو ملا اور آدھا بڑے کو . بیچ آنگن میں چارپائی کی ادوائن کھول کر اِس سرے سے اُس سرے تک زمین پر کھونٹی گاڑ کر باندھ دی گئی . یہی گھر کے دو بھاگوں کی حد بنی تھی . "اگر ایک دوسرے کی سرحد میں قدم رکھ دے' تو بس جنگ !

ख़ात्मा हो जाये कि उधर से एक बनिया आ निकला. बनिया टट्टू पर कहीं से अनाज बेचकर आ रहा था. उसने दूर से देखा और क़रीब आते हुए डरा; मगर आख़िरकार आया, तो गीदड़ ज़रा हट गये. उसने देखा कि .ख़ाँ साहब के पैर गीदड़ों ने नोच डाले हैं. ख़ाँ साहब ने बनिये से कहा—"भाई या तो तुम मुझे मार डालो, नहीं तो इन गीदड़ों से बचाओ." पहले तो वह बहुत डरा, मगर फिर उससे न रहा गया. उसने पठान को अपने टट्टू पर अनाज की बोरियों में छिपाकर लाद लिया, ताकि कोई देख न सके. सोचा, कहीं लेजाकर छोड़ दूँगा, मगर यह डर था कि कहीं कोई देख न ले, क्योंकि नवाब और अंग्रेज़ों के आदमी रुहेलों और उनके साथियों का बराबर पीछा कर रहे थे. जंगल में छोड़ने से ख़ाँ साहब की जान का ख़तरा था और बस्ती में ले जाने ने ख़ुद उसको मुश्किल में फँस जाने का ख़तरा था. आदमी वह रहमदिल था. सोचा घर ही ले चलो. और छिपाकर ख़ाँ साहब को अपने घर ले आया.

बनिये की बीबी ख़ाँ साहब को देखकर घबराई कि यह क्या नई आफ़त घर ले आये. लेकिन बनिये ने कहा कि इसकी सेवा करो और इसे छिपाकर रखो. पठान को घर के अन्दर एक कोठरी में छिपाकर रखा और चुपके से उसकी मरहम पट्टी और इलाज कराया गया. महीनों में जाकर कहीं पठान अच्छा हुआ. पठान ने जब चलने की बात कही, तो बनिये ने कहा, "अभी तुम कमज़ोर हो, ज़रा दूध-घी खाकर मोटे-ताज़े हो लो, तब जाना." पठान मान गया और वहीं रहकर ख़ूब दूध-घी खाने लगा.

(2)

पठान को इस बात का बड़ा ख़्याल था कि बनिये ने उसकी जान बचाई है. उसने बनिये को अपना धर्म-भाई बना लिया. वह दिन-रात इसी सोच में रहता कि बनिये की भलमनसाहत का क्या बदला चुकाऊँ? उसके क़र्ज़ से कैसे छुटकारा पाऊँ? पठान अच्छा हो चुका था और जाने ही वाला था कि एक अजीब मामला पेश हुआ. बनिये का एक भाई था, जिससे उसकी लड़ाई थी, इसलिये कि वे एक दूसरे का ग्राहक तोड़ते और बिगाड़ते रहते थे. एक रोज़ बनिया बड़ा उदास था. उसे उदास देखकर पठान ने पूछा—"सेठजी, मामला क्या है? आप ग़मगीन क्यों हैं?" उसने बताया कि "मेरे अपने भाई से दुश्मनी है. उसने जीना मुश्किल कर रखा है. सारे क़र्ज़दारों को बरग़ला दिया है कि बक़ीया क़र्ज़ मत अदा करो. मेरे ख़िलाफ़ उसने पार्टी बना ली है. कई बरसों से तंग तो करता ही था, पर अब तो मुझे बिलकुल तबाह करने पर तुला है और समझ में नहीं आता कि अभी क्या-क्या करेगा?" पठान ने बनिये को दिलासा दिया और कहा, "घबराओ

خاتمہ ہو جائے کہ اُدھر سے ایک بنیا نکلا ۔ بنیا ٹٹو پر کہیں سے اناج بیچ کر آرہا تھا ۔ اُس نے دور سے دیکھا اور قریب آتے ہوئے ڈرا؛ مگر آخرکار آیا، تو گیدڑ ذرا ہٹ گئے ۔ اُس نے دیکھا کہ خاں صاحب کے پیر گیدڑوں نے نوچ ڈالے ہیں ۔ خاں صاحب نے بنیے سے کہا—"بھائی یا تو تم مجھے مار ڈالو، نہیں تو اِن گیدڑوں سے بچاؤ ۔" پہلے تو وہ بہت ڈرا، مگر پھر اُس سے نہ رہا گیا ۔ اُس نے پٹھان کو اپنے ٹٹو پر اناج کی بوریوں میں چھپا کر لاد لیا، تاکہ کوئی دیکھ نہ سکے ۔ سوچا، کہیں لے جاکر چھوڑ دونگا، مگر یہ بھی ڈر تھا کہ کہیں کوئی دیکھ نہ لے، کیونکہ نواب اور انگریزوں کے آدمی روہیلوں اور اُن کے ساتھیوں کا برابر پیچھا کر رہے تھے ۔ جنگل میں چھوڑنے سے خاں صاحب کی جان کا خطرہ تھا اور بستی میں لے جانے میں خود اُس کو مشکل میں پھنس جانے کا خطرہ تھا ۔ آدمی وہ رحم دل تھا ۔ سوچا گھر ہی لے چلو ۔ اور چھپا کر خاں صاحب کو اپنے گھر لے آیا ۔

بنیے کی بی بی خاں صاحب کو دیکھ کر گھبرائی کہ یہ کیا نئی آفت گھر لے آئے ۔ لیکن بنیے نے کہا کہ اِس کی سیوا کرو اور اِسے چھپا کر رکھو ۔ پٹھان کو گھر کے اندر ایک کوٹھری میں چھپا کر رکھا اور چپکے سے اُن کی مرہم پٹی اور علاج کرایا گیا ۔ مہینوں میں جاکر کہیں پٹھان اچھا ہوا ۔ پٹھان نے جب چلنے کی بات کہی، تو بنیے نے کہا، "ابھی تم کمزور ہو، ذرا دودھ گھی کھا کر موٹے تازے ہو لو، تب جانا ۔" پٹھان مان گیا اور وہیں رہ کر خوب دودھ گھی کھانے لگا ۔

(2)

پٹھان کو اِس بات کا بڑا خیال تھا کہ بنیئے نے اُس کی جان بچائی ہے ۔ اُس نے بنیے کو اپنا دھرم بھائی بنا لیا ۔ وہ دن رات اِسی سوچ میں رہتا کہ بنیے کی بھلمنساہت کا کیا بدلہ چکاؤں ۔ اس کے قرض سے کیسے چھٹکارا پاؤں ؟ پٹھان اچھا ہو چکا تھا اور جانے ہی والا تھا کہ ایک عجیب معاملہ پیش ہوا ۔ بنیے کا ایک بھائی تھا، جس سے اس کی لڑائی تھی، اِس لئے کہ وے ایک دوسرے کے گراھک توڑتے اور بگاڑتے رہتے تھے ۔ ایک روز بنیا بڑا اُداس تھا ۔ اسے اُداس دیکھ کر پٹھان نے پوچھا—"سیٹھ جی، معاملہ کیا ہے ؟ آپ غمگین کیوں ہیں ؟" اس نے بتایا کہ "میرے اپنے بھائی سے دشمنی ہے ۔ اُس نے جینا مشکل کر رکھا ہے ۔ سارے قرضداروں کو ورغلا دیا ہے کہ بقیہ قرض مت ادا کرو ۔ میرے خلاف اس نے پوری پارٹی بنا لی ہے ۔ کئی برسوں سے تنگ تو کرتا تھا، پر اب تو مجھے بالکل تباہ کرنے پر تلا ہے اور سمجھ میں نہیں آتا کہ ابھی کیا کیا کرے گا ؟" پٹھان نے بنیے کو دلاسہ دیا اور کہا، "گھبراؤ

ख़ून का बदला !

मिरजा अज़ीमबेग चुग़ताई

सन 1761 की पानीपत की लड़ाई के बाद यू० पी० में रुहेलों का ज़ोर हुआ. वे 'गंगोत्री से गंग' इलाक़े के मालिक हो गये. रुहेलों की हुकूमत सरदारों के हाथ में थी, जिनका मुखिया था हाफ़िज रहमत ख़ाँ. हाफ़िज़ रहमत ख़ाँ एक जंगजू और अच्छे हाकिम थे. वे अपने हिन्दू वज़ीर की मदद से मस्जिद में बैठकर हुकूमत का सारा काम करते थे. रिआया भी उनसे ख़ुश थी.

जब अवध के नवाब और रुहेलों में अनबन हो गई, तब रहमत ख़ाँ ने अवध के नवाब को जंग के लिये ललकारा और बुरी तरह हराया. तब नवाब ने अंग्रेज़ों की मदद ली. अंग्रेज़ों और रहमत में वैसे तो सुलह थी; मगर अंग्रेज़ों ने रुहेलों का बढ़ता हुआ ज़ोर तोड़ने का यह अच्छा मौक़ा देख सुलह को बालाए ताक़ रख दिया. उन्हें डर था कि अकेले अवध के नवाब को .फ़ुरसत के वक़्त यह आसानी से भून खायेंगे. लिहाज़ा अवध के नवाब से रुपया लेकर वे उसकी तरफ़ से मगर अपने मतलब के लिये, लड़ने आ गये.

अवध और अंग्रेज़ों की फ़ौजें रुहेलों की तरफ़ बढ़ीं. उधर से हाफ़िज़ रहमत भी अपने रुहेला सरदारों को लेकर बढ़ा. दुजोड़ा के मैदान में दोनों तरफ़ की फ़ौजों में घमासान जंग हुई. उस जंग में रुहेले बड़ी बहादुरी से लड़े और जीत गये; मगर दुश्मन का पीछा करने के बदले वे उनके कैम्प लूटने लगे, और रहमत ख़ाँ उन्हें रोकते ही रह गये. अंग्रेज़ी .फ़ौज, जो खेतों में छुप गई थी, लौटी और जमा होकर .फ़ौरन रुहेलों पर टूट पड़ी. पाँसा उलट पड़ा. जीत के बदले रुहेलों की हार हुई. हाफ़िज़ रहमत ख़ाँ मैदान से न हटे और बड़ी बहादुरी से लड़कर कट मरे.

रुहेलों की तरफ़ से लड़ने वालों में दो पठान भाई भी आये थे, जिनमें से एक तो लड़ते-लड़ते मारा गया और दूसरा घायल होकर मैदान में अधमरा पड़ा था. असल में यह तीन भाई थे. इनका बाप ज़िन्दा था. उसने एक भाई को रोककर और दो भाइयों को लड़ने के लिये भेज दिया था.

रात का वक़्त था. गीदड़ और कुत्ते मैदान में लाशों को खा रहे थे और घायल .ख़ाँ साहब पड़े-पड़े अपने को गीदड़ों से बचा रहे थे. मगर गीदड़ बड़े चालाक थे. उन्हें नोच-नोचकर भागते थे. इस तरह सुबह हो गई और गीदड़ बदस्तूर ख़ाँ साहब को नोचते रहे. क़रीब था कि उनका

خون کا بدلہ !

مرزا عظیم بیگ چغتائی

سن 1761 کی پانی پت کی لڑائی کے بعد یو. پی. میں روہیلوں کا زور ہوا ۔ وہ 'گنگوتری سے گنگ' علاقے کے مالک ہو گئے ۔ روہیلوں کی حکومت سرداروں کے ہاتھ میں تھی' جن کا مکھیا تھا حافظ رحمت خاں ۔ حافظ رحمت خاں ایک جنگجو اور اچھے حاکم تھے ۔ وہ اپنے ہندو وزیر کی مدد سے مسجد میں بیٹھ کر حکومت کا سارا کام کرتے تھے ۔ رعایا بھی اُن سے خوش تھی ۔

جب اودھ کے نواب اور روہیلوں میں ان بن ہو گئی' تب رحمت خاں نے اودھ کے نواب کو جنگ کے لئے للکارا اور بری طرح ہرایا ۔ تب نواب نے انگریزوں کی مدد لی ۔ انگریزوں اور رحمت میں ویسے تو صلح تھی؛ مگر انگریزوں نے روہیلوں کا بڑھتا ہوا زور توڑنے کا یہ اچھا موقع دیکھ صلح کو بالائے طاق رکھ دیا ۔ انہیں ڈر تھا کہ اکیلے اودھ کے نواب کو فرصت کے وقت یہ آسانی سے بھون کھائیں گے ۔ لہٰذا اودھ کے نواب سے روپیہ لے کر وہ اُس کی طرف سے مگر اپنے مطلب کے لئے' لڑنے آ گئے ۔

اودھ اور انگریزوں کی فوجیں روہیلوں کی طرف بڑھیں ۔ ادھر سے حافظ رحمت بھی اپنے روہیلا سرداروں کو لے کر بڑھا ۔ دجوڑا کے میدان میں دونوں طرف کی فوجوں میں گھماسان جنگ ہوئی ۔ اُس جنگ میں روہیلے بڑی بہادری سے لڑے اور جیت گئے؛ مگر دشمن کا پیچھا کرنے کے بدلے وہ اُن کے کیمپ لوٹنے لگے' اور رحمت خاں اُنہیں روکتے ہی رہ گئے ۔ انگریزی فوج' جو کھیتوں میں چھپ گئی تھی' لوٹی اور جمع ہو کر فوراً روہیلوں پر ٹوٹ پڑی ۔ پانسہ الٹ پڑا ۔ جیت کے بدلے روہیلوں کی ہار ہوئی ۔ حافظ رحمت خاں میدان سے نہ ہٹے اور بڑی بہادری سے لڑ کر کٹ مرے ۔

روہیلوں کی طرف سے لڑنے والوں میں دو پٹھان بھائی بھی آئے تھے' جن میں سے ایک تو لڑتے لڑتے مارا گیا اور دوسرا گھائل ہو کر لڑائی کے میدان میں ادھ مرا پڑا تھا ۔ اصل میں یہ تین بھائی تھے ۔ اِن کا باپ زندہ تھا ۔ اُس نے ایک بھائی کو روک کر اور دو بھائیوں کو لڑنے کے لئے بھیج دیا تھا ۔

رات کا وقت تھا ۔ گیدڑ اور کتے میدان میں لاشوں کو کھا رہے تھے ۔ اور گھائل خاں صاحب پڑے پڑے اپنے کو گیدڑوں سے بچا رہے تھے ۔ مگر گیدڑ بڑے چالاک تھے ۔ انہیں نوچ نوچکر بھاگتے تھے ۔ اِس طرح صبح ہو گئی اور گیدڑ بدستور خاں صاحب کو نوچتے رہے ۔ قریب تھا کہ اُن کا

आफ़ताबों के सिलसिले

श्री सलाम मछलीशहरी

ज़मीं पर अगर देवता कुछ न होते
तो इन्सान शायद परीशाँ ही रहता.
नज़ारे तो होते, बहारें तो होतीं,
मगर गुलशने फ़िक्र वीराँ ही रहता.
हक़ीक़त का मफ़हूम१ वाज़े न होता
अगर दिलनशीं कल्पनायें न होतीं,
कोई ख़ास मंज़र निखर ही न पाता
जो उसके लिये कुछ फ़िज़ायें न होतीं.
हक़ीक़त की इन ज़ूफ़िशाँ२ मंज़िलों में
हसीं ख़्वाब अब मुस्कराने लगे हैं,
बज़ुर्गों ने जो दीप रौशन किए थे
वही दीप फिर जगमगाने लगे हैं.
कला और संगीत के दीप फिर से
मुक़द्दम३ फ़िज़ाओं में जलने लगे हैं,
ज़हे४ अहदे हाज़िर कि "हाफ़िज़" के बरबत५ पे
"मीरा" के नग़मे मचलने लगे हैं.
मुबारिक कि वादीये गंगोजमन में
कला को नई ज़िन्दगी मिल रही है,
मुबारिक कि फिर "तूतीये हिन्द ख़ुसरो"
के अफ़कार६ की रौशनी मिल रही है.
नई रौशनी में नये ताज महलों,
अजन्ताओं का जन्म होने लगा है,
हमारे कला मन्दिरों से क़रीब आ.
रूठा हुआ धर्म होने लगा है,
मिली है ज़ियाबार७ ताबीर८ जिसकी
वही ख़्वाब पहले भी देखा गया था,
मुबारिक वतन की सहर९ कह रही है
कि यह आफ़ताबों का एक सिलसिला था.

آفتابوں کے سلسلے

شری سلام مچھلی شہری

زمیں پر اگر دیوتا کچھ نہ ہوتے'
تو انساں شاید پریشاں ہی رہتا'
نظارے تو ہوتے' بہاریں تو ہوتیں'
مگر گلشن فکر ویراں ہی رہتا۔
حقیقت کا مفہوم واضح نہ ہوتا
اگر دلنشیں کلپنائیں نہ ہوتیں'
کوئی خاص منظر نکھر ہی نہ پاتا
جو اُس کے لئے کچھ فضائیں نہ ہوتیں۔
حقیقت کی اِن ضوفشاں منزلوں میں
حسیں خواب اب مسکرانے لگے ہیں'
بزرگوں نے جو دیپ روشن کئے تھے
وہی دیپ پھر جگمگانے لگے ہیں۔
کلا اور سنگیت کے دیپ پھر سے
مقدم فضاؤں میں جلنے لگے ہیں'
زہے عہد حاضر کہ "حافظ" کے بربط پہ
"میرا" کے نغمے مچلنے لگے ہیں۔
مبارک کہ وادیٔ گنگ و جمن میں
کلا کو نئی زندگی مل رہی ہے'
مبارک کہ پھر "طوطیٔ ہند خسرو"
کے افکار کی روشنی مل رہی ہے۔
نئی روشنی میں نئے تاج محلوں'
اجنتاؤں کا جنم ہونے لگا ہے'
ہمارے کلا مندروں سے قریب آج
روٹھا ہوا دھرم ہونے لگا ہے۔
ملی ہے ضیابار تعبیر جس کی
وہی خواب پہلے بھی دیکھا گیا تھا'
مبارک وطن کی سحر کہہ رہی ہے
کہ یہ آفتابوں کا ایک سلسلہ تھا۔

नोट :—यह नज़्म 19 मई 1957 को इदाराये निज़ामिया, दिल्ली में यौम ख़ुसरो के मुबारिक मौक़े पर पढ़ी गई.

نوٹ :— یہ نظم 19 مئی 1957 کو ادارۂ نظامیہ' دلی میں یوم خسرو کے مبارک موقع پر پڑھی گئی۔

---

१. मतलब, २. चमकदार, ३. पहले की, ४. बलिहारी, ५. एक प्रकार का बाजा, ६. कार्यों, ७. चमकदार, ८. फल ९. प्रभात.

कहा कि मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ. यह मालूम होता था कि वे डरा रहे थे. मगर थोड़ी देर में वे समझ की बातें करने लगे. हरेक को दुआ दी और आख़िरी रुख़सत ली.

....जब सुबह मैंने उन्हें बिस्तर पर पड़े देखा तो वे मरे हुए नहीं मालूम होते थे. उनके चेहरे पर ख़ामोशी थी. उनकी पेशानी पर अब भी वही शान मौजूद थी, लेकिन वह शख़्सियत कहाँ थी, सिर्फ़ एक बेजान खोल बाक़ी रह गया था.

उनका इन्तक़ाल 80 बरस की उम्र में हुआ. उनके साथ एक नसल का ख़ात्मा हो गया. वह उन लोगों में से थे जिनको हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी ख़ूब याद थी, जिसे हमारे अंग्रेज़ तारख़ीदाँ सन् 1857 ईस्वी का ग़दर कहते हैं. उन्होंने अपने भाइयों, प्यारों, बुज़ुर्गों और हमवतनों को बदर्दी से क़त्ल होते देखा. हर रोज़ भागने वालों की लाशें खंडहरों और गाँवों में पड़ी मिलती थीं और हर रोज़ वे एक क़तार में खड़े किये जाते और उनके सर काट लिये जाते. उन्होंने औरतों को बेआबरू होते हुए, बच्चों को कुचले जाते और हज़ारों को भूखों मरते देखा था. उन्होंने बादशाह को गिरफ़्तार होते हुए और मुल्क से निकाले जाते देखा था. उनकी आँखों के सामने शहज़ादे ज़बह किये गये और उनके सर दिल्ली दरवाज़े पर लटकाये गये, जो अब भी ख़ूनी दरवाज़े के नाम से मशहूर है. उन्होंने अपने वतन और अपने शहर पर अंग्रेज़ों को क़ाबिज़ होते देखा. उनके हाथों उन्होंने हिन्दुस्तान की तहज़ीब और उसकी अज़मत को ख़ाक में मिलते हुए देखा था.

फिर क्या ताज्जुब कि अंग्रेज़ों के लिये उनके दिल में नफ़रत थी और इस क़द्र कि हम भी इतनी नफ़रत नहीं कर सकते. उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे को, जब उन्होंने अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू किया, घर से निकाल दिया और उनको अपने चचा के घर पनाह लेनी पड़ी, ताकि वे अपना पढ़ना जारी रख सकें. अंग्रेज़ों की हर चीज़ के साथ इस क़द्र नफ़रत ग़ालिबन उनके बढ़े हुए तास्सुब की बिना पर थी. लेकिन आज हम इसको समझ सकते हैं और पसन्द करते हैं. उनके बेटों की नसल ऐसी थी जो ग़ालिबन न अंग्रेज़ों से नफ़रत करते थे और न मोहब्बत ही करते थे. वे अंग्रेज़ों के नीचे काम करते थे, क्योंकि अंग्रेज़ इनको मुलाज़िमत देते थे. लेकिन अब पहिये ने पूरा चक्कर ले लिया. आज हमारा मुल्क आज़ाद है. यह ऐसी आज़ादी है जो पहले नहीं हासिल हो सकती थी, जिसका अन्दाज़ा भी हमारे बुज़ुर्ग न कर सकते थे.

کہا کہ میں تمہارے پاس آ رہا ہوں ۔ یہ معلوم ہوتا تھا کہ وے ڈرا رہے تھے ۔ مگر تھوڑی دیر میں وے سمجھ کی باتیں کرنے لگے ۔ ہر ایک کو دعا دی اور آخری رخصت لی ۔

......جب صبح میں نے انہیں بستر پر پڑے دیکھا تو وے مرے ہوئے نہیں معلوم ہوتے تھے ۔ اُن کے چہرے پر خاموشی تھی ۔ اُن کی پیشانی پر اب بھی وہی شان موجود تھی، لیکن وہ شخصیت کہاں تھی، صرف ایک بےجان خول باقی رہ گیا تھا ۔

اُن کا انتقال 80 برس کی عمر میں ہوا ۔ اُن کے ساتھ ایک نسل کا خاتمہ ہو گیا ۔ وہ اُن لوگوں میں سے تھے جن کو ہندوستان کی جنگ آزادی خوب یاد تھی، جسے ہمارے انگریز تاریخ داں سن 1857 عیسوی کا غدر کہتے ہیں ۔ انہوں نے اپنے بھائیوں، پیاروں، بزرگوں اور ہموطنوں کو بیدردی سے قتل ہوتے دیکھا ۔ ہر روز بھاگنے والوں کی لاشیں کھنڈروں اور گاؤں میں پڑی ملتی تھیں اور ہر روز وے ایک قطار میں کھڑے کئے جاتے اور اُن کے سر کاٹ لئے جاتے ۔ انہوں نے عورتوں کو بےآبرو ہوتے ہوئے، بچوں کو کچلے جاتے اور ہزاروں کو بھوکوں مرتے دیکھا تھا ۔ انہوں نے بادشاہ کو گرفتار ہوتے ہوئے اور ملک سے نکالے جاتے دیکھا تھا ۔ ان کی آنکھوں کے سامنے شہزادے ذبح کئے گئے اور ان کے سر دلی دروازے پر لٹکائے گئے، جو اب بھی خونی دروازے کے نام سے مشہور ہے، انہوں نے اپنے وطن اور اپنے شہر پر انگریزوں کو قابض ہوتے دیکھا ۔ اُن کے ہاتھوں انہوں نے ہندستان کی تہذیب اور اس کی عظمت کو خاک میں ملتے ہوئے دیکھا تھا ۔

پھر کیا تعجب کہ انگریزوں کے لئے اُن کے دل میں نفرت تھی اور اِس قدر کہ ہم بھی اِتنی نفرت نہیں کر سکتے ۔ انہوں نے اپنے سب سے بڑے بیٹے کو، جب انہوں نے انگریزی پڑھنا شروع کیا، گھر سے نکال دیا اور ان کو اپنے چچا کے گھر پناہ لینی پڑی، تاکہ وے اپنا پڑھنا جاری رکھ سکیں ۔ انگریزوں کی ہر چیز کے ساتھ اِس قدر نفرت غالباً ان کے بڑھے ہوئے تعصب کی بنا پر تھی ۔ لیکن آج ہم اس کو سمجھ سکتے ہیں اور پسند کرتے ہیں اُن کے بیٹوں کی نسل ایسی تھی جو غالباً نہ انگریزوں سے نفرت کرتے تھے اور نہ محبت ہی کرتے تھے ۔ وے انگریزوں کے نیچے کام کرتے تھے، کیونکہ انگریز اِن کو ملازمت دیتے تھے ۔ لیکن اب پہئے نے پورا چکر لے لیا ہے ۔ آج ہمارا ملک آزاد ہے ۔ یہ ایسی آزادی ہے جو پہلے نہیں حاصل ہو سکتی تھی، جس کا اندازہ بھی ہمارے بزرگ نہ کر سکتے تھے ۔

उनके प्यारों को दिखाते हैं. दादा अब्बा का बूढ़ा और कमज़ोर जिस्म सिसकियों से काँप रहा है.

लोग क़ब्र में मिट्टी डाल रहे हैं. दादा अब्बा अपने काँपते हुए हाथों में थोड़ी सी मिट्टी उठाते हैं. कहार डोली को क़ब्र के क़रीब ले जाते हैं. आँखों से दो क़तरे आँसू के उस ताज़ा मिट्टी पर गिर पड़ते हैं जो वे हाथों में लिये हुए हैं. वे बेबसी से हाथों की मिट्टी क़ब्र में गिरा देते हैं और चेहरा ढक लेते हैं.

❀ ❀ ❀

बेटे की मौत के तीन बरस बाद दादा और ज़िन्दा रहे, हालाँकि वे ज़िन्दगी से थककर आजिज़ हो गये थे. वे अक्सर रोते थे, लेकिन उनका ख़ात्मा बहुत ख़ामोशी से हुआ. उन पर एक मर्तबा फ़ालिज गिर ही चुका था. एक मर्तबा और गिरा. उनका दाहिना हाथ और दाहिना पाँव पहले ही बेकार था, अबकी बार बाएँ हाथ और पैर पर असर हुआ.

मरने से कुछ पहले वे बहुत चिड़चिड़े हो गये थे और हर तीमारदार को उनकी ख़फ़गी का सामना करना पड़ता था. सिर्फ़ एक बूढ़ी मामा उनको चुप करा सकती थी और उनकी तबियत के मुआफ़िक़ काम कर सकती थी. दादा अब्बा अपने लड़के के मरने के बाद ज़नानख़ाने में पहुँचा दिये गये थे. यह मामा भी अपनी जवानी के ज़माने से हमारे ही यहाँ मुलाज़िम थी और लोग कहते थे कि वह दादा की दाश्ता थी. इनसे एक लड़का भी हुआ था, जो बचपन में ही मर गया था. वही दादा की रोक थाम कर सकती थी, क्योंकि न तो वह उनकी बातों की परवाह करती और न उनके मिज़ाज की. यह देखकर तकलीफ़ होती कि वह अपने बूढ़े मालिक से कितनी बेपरवाही से पेश आती है. दादा अपनी कमज़ोर आवाज़ में कुछ कहते, लेकिन वह न सुनती. अगर कोई उसे कहता कि सुनो देखो क्या माँग रहे हैं, तो वह जवाब देती:—

"उनकी यही आदत है. उनको किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं. वे सिर्फ़ मुझे परेशान करते हैं"... लेकिन किसी का कुछ बस न चलता क्योंकि वही उन्हें ख़ामोश कर सकती थी. फिर इसमें शक नहीं कि अब वह सब बोझ महसूस कर रहे थे.

वह रात में शान्ति के साथ गुज़र गये. उनकी ज़ुबान आख़िरी वक़्त तक उनके क़ाबू में रही और मौत से कुछ पहले उन्होंने सबको दुआएँ दीं और अपने तमाम प्यारों को, जो वहाँ नहीं थे या मर गये थे, याद किया.

मौत से कुछ ही पहले वह ग़फ़लत में थे और कुछ बड़बड़ाते थे. एक मर्तबा उन्होंने किसी को मुख़ातिब किया, जो अर्सा हुआ मर चुका था और उससे बुलन्द आवाज़ में

اُن کے پیاروں کو دکھاتے ہیں ۔ دادا ابا کا بوڑھا اور کمزور جسم سسکیوں سے کانپ رہا ہے ۔

لوگ قبر میں مٹی ڈال رہے ہیں ۔ دادا ابا اپنے کانپتے ہوئے ہاتھوں میں تھوڑی سی مٹی اُٹھاتے ہیں ۔ کہار ڈولی کو قبر کے قریب لے جاتے ہیں ۔ آنکھوں سے دو قطرے آنسو کے اس تازہ مٹی پر گر پڑتے ہیں جو وے ہاتھوں میں لئے ہوئے ہیں ۔ وے بےبسی سے ہاتھوں کی مٹی قبر میں گرا دیتے ہیں اور چہرا ڈھک لیتے ہیں ۔

❀ ❀ ❀

بیٹے کی موت کے تین برس بعد دادا اور زندہ رہے، حالانکہ وے زندگی سے تھک کر عاجز ہوگئے تھے ۔ وے اکثر روتے تھے، لیکن اُن کا خاتمہ بہت خاموشی سے ہوا ۔ اِن پر ایک مرتبہ فالج گر ہی چکا تھا ۔ ایک مرتبہ اور گرا ۔ اِن کا داہنا ہاتھ اور داہنا پاؤں پہلے ہی بیکار تھا، اب کی بار بائیں ہاتھ اور پیر پر اثر ہوا ۔

مرنے سے کچھ پہلے وے بہت چڑچڑے ہو گئے تھے اور ہر تیماردار کو اُن کی خفگی کا سامنا کرنا پڑتا تھا ۔ صرف ایک بوڑھی ماما ان کو چپ کرا سکتی تھی اور اُن کی طبیعت کے موافق کام کر سکتی تھی ۔ دادا ابا اپنے لڑکے کے مرنے کے بعد زنان خانے میں پہنچا دیئے گئے تھے ۔ یہ ماما بھی اپنی جوانی کے زمانہ سے ہمارے ہی یہاں ملازم تھی اور لوگ کہتے تھے کہ وہ دادا کی داشتہ تھی ۔ اِن سے ایک لڑکا بھی ہوا تھا، جو بچپن ہی میں مر گیا تھا ۔ وہی دادا کی روک تھام کر سکتی تھی، کیونکہ نہ تو وہ اُن کی باتوں کی پرواہ کرتی اور نہ اُن کے مزاج کی ۔ یہ دیکھ کر تکلیف ہوتی کہ وہ اپنے بوڑھے مالک سے کتنی بےپرواہی سے پیش آتی ہے ۔ دادا اپنی کمزور آواز میں کچھ کہتے، لیکن وہ نہ سنتی ۔ اگر کوئی اسے کہتا کہ سنو دیکھو کیا مانگ رہے ہیں، تو وہ جواب دیتی—

"اِن کی یہی عادت ہے ۔ اُن کو کسی چیز کی ضرورت نہیں ۔ وے صرف مجھے پریشان کرتے ہیں..." لیکن کسی کا کچھ بس نہ چلتا کیونکہ وہی اُنہیں خاموش کر سکتی تھی ۔ پھر اِس میں شک نہیں کہ اب وہ سب بوجھ محسوس کر رہے تھے ۔

وہ رات میں شانتی کے ساتھ گذر گئے ۔ اُن کی زبان آخری وقت تک اُن کے قابو میں رہی اور موت سے کچھ پہلے اُنہوں نے سب کو دعائیں دیں اور اپنے تمام پیاروں کو، جو وہاں نہیں تھے یا مر گئے تھے، یاد کیا ۔

موت سے کچھ ہی پہلے وہ غفلت میں تھے اور کچھ بڑبڑاتے تھے ۔ ایک مرتبہ اُنہوں نے کسی کو مخاطب کیا، جو عرصہ ہوا مر چکا تھا اور اُس سے بلند آواز میں

वे 70 बरस के थे जब मेरे वालिद, जो उनके छठे बेटे थे, बीमार हुए. हर तरह का इलाज किया गया. तमाम डाक्टरों और हकीमों ने जवाब दे दिया. बहुत से मौलवियों ने अपने अक़्ली गद्दे लड़ाए और अपने तजुर्बे के मुताबिक़ जादू टोने और आसेब वग़ैरा का इलाज किया; मगर उनकी हालत ख़राब होती गई.

शुरू-शुरू में तो वालिद दादा अब्बा के साथ मकान के मरदाने हिस्से में ही रहते थे, क्योंकि इसी में सहूलियत थी. दूसरे पुराने ज़माने के लोग .जनानख़ाने में ज़्यादा देर तक रहना पसन्द न करते थे. दादा के सूफ़ी और फ़क़ीर दोस्त आते और दुआएँ माँगते. मगर उनकी हालत रोज़ बरोज़ ख़राब होती गई. तब वह मकान के अन्दर पहुँचा दिये गये, ताकि उनकी तीमारदारी अच्छी तरह हो सके. दादा पर फ़ालिज गिर चुका था और वह हर दूसरे तीसरे अपने बेटे को देखने एक छोटी सी चारपाई पर चार आदमियों की मदद से लाये जाते और कुछ घन्टे गुज़र जाने के बाद वह उसी तरह बाहर ले जाये जाते.

वालिद की हालत जब और ख़राब हो गई, तो ताज़ा हवा के ख़ातिर उन्हें कोठे पर ले जाया गया, दादा अब्बा ने देखा कि उनकी हालत मायूस करने वाली है और वे जब उन्हें देखने के लिये कोठे पर लाये गये, तो .जीने की तंगी की वजह से बड़ी दिक़्क़त हुई. यह देखकर कि उनके लाने लेजाने में कितनी दिक़्क़त होती है; वह फूटकर रो पड़े. मैंने उन्हें ज़िन्दगी में पहले पहले रोते देखा. वे एक बेबस और बूढ़े आदमी के ख़ामोश और दर्द से भरे आँसू थे. उन्होंने ज़ुबान से कुछ न कहा लेकिन सब समझ गये कि वे बहुत मायूस हैं.

आख़िर एक दिन वालिद का इन्तक़ाल हो गया. मुझे याद है कि दादा अपने पलंग पर पड़े रोते थे. मेरे सामने उस वक़्त की उनकी तस्वीर है—वे ज़ार-ज़ार रो रहे हैं. उनकी सिसकियों से पलंग हिल रहा है. यह एक बूढ़े आदमी की सिसकियाँ हैं, जो महसूस करता है कि उसकी हस्ती अब दुनिया में सिर्फ़ एक .फ़ुज़ूल की मद है.

मुझे याद है कि फिर वे जनाज़े के पीछे-पीछे एक डोली में क़ब्रिस्तान ले जाये गये. उनकी आँखें सुर्ख़ थीं. वे सिसकियाँ लेते और ज़िन्दगी के .फ़ना होने की शिकायत करते. अपनी इस बेचारगी पर रोते कि बेटे के जनाज़े को कन्धा भी न दे सकते थे. मैयत क़ब्र में उतारी जा रही है. खोदी हुई मिट्टी के ढेर पर दादा .अब्बा डोली में बैठे हुए हैं. लेकिन वह क़ब्र के अन्दर नहीं देख सकते, क्योंकि उनके आगे आदमियों की भीड़ है.

भीड़ छँटती है. मैयत क़ब्र में है. कहार डोली को क़ब्र तक लाते हैं. लोग मरहूम वालिद का चेहरा आख़िरी बार

وے 70 برس کے تھے جب میرے والد، جو اُن کے چھٹے بیٹے تھے، بیمار ہوئے۔ ہر طرح کا علاج کیا گیا۔ تمام ڈاکٹروں اور حکیموں نے جواب دے دیا۔ بہت سے مولویوں نے اپنے عقلی گدے لڑائے اور اپنے تجربہ کے مطابق جادو ٹونے اور آسیب وغیرہ کا علاج کیا؛ مگر اُن کی حالت خراب ہوتی گئی۔

شروع شروع میں تو والد دادا ابا کے ساتھ مکان کے مردانے حصے میں ہی رہتے تھے؛ کیونکہ اِسی میں سہولیت تھی۔ دوسرے پرانے زمانے کے لوگ زنانخانہ میں زیادہ دیر تک رہنا پسند نہ کرتے تھے۔ دادا کے صوفی اور فقیر دوست آتے اور دعائیں مانگتے۔ مگر اُن کی حالت روز بروز خراب ہوتی گئی۔ تب وہ مکان کے اندر پہنچا دیئے گئے، تاکہ ان کی تیمارداری اچھی طرح ہو سکے۔ دادا پر فالج گر چکا تھا اور وہ ہر دوسرے تیسرے اپنے بیٹے کو دیکھنے ایک چھوٹی سی چارپائی پر چار آدمیوں کی مدد سے لائے جاتے اور کچھ گھنٹے گذر جانے کے بعد وہ اُسی طرح باہر لے جائے جاتے۔

والد کی حالت اب اور خراب ہو گئی، تو تازہ ہوا کے خاطر انہیں کوٹھے پر لے جایا گیا۔ دادا ابا نے دیکھا کہ اُن کی حالت مایوس کرنے والی ہے اور وے جب اُنہیں دیکھنے کے لئے کوٹھے پر لائے گئے، تو زینے کی تنگی کی وجہ سے بڑی دقت ہوئی۔ یہ دیکھ کر کہ اُن کے لانے لے جانے میں کتنی دقت ہوتی ہے؛ وہ پھوٹ کر رو پڑے۔ میں نے اُنہیں زندگی میں پہلے پہل روتے دیکھا۔ وے ایک بے بس اور بوڑھے آدمی کے خاموش اور درد سے بھرے آنسو تھے۔ اُنہوں نے زبان سے کچھ نہ کہا لیکن سب سمجھ گئے کہ وے بہت مایوس ہیں۔

آخر ایک دن والد کا اِنتقال ہو گیا۔ مجھے یاد ہے دادا اپنے پلنگ پر پڑے روتے تھے۔ میرے سامنے اُس وقت کی اُن کی تصویر ہے—وے زار زار رو رہے ہیں۔ اُن کی سسکیوں سے پلنگ ہل رہا ہے۔ یہ ایک بوڑھے آدمی کی سسکیاں ہیں، جو محسوس کرتا ہے کہ اُس کی ہستی اب دنیا میں صرف ایک فضول کی مد ہے۔

مجھے یاد ہے کہ پھر وے جنازے کے پیچھے پیچھے ایک ڈولی میں قبرستان لے جائے گئے۔ اُن کی آنکھیں سرخ تھیں۔ وے سسکیاں لیتے اور زندگی کے فنا ہونے کی شکایت کرتے۔ اپنی اِس بےچارگی پر روتے کہ بیٹے کے جنازہ کو کندھا بھی دے سکتے تھے۔ میت قبر میں اُتاری جا رہی ہے۔ کھودی ہوئی مٹی کے ڈھیر پر دادا ابا ڈولی میں بیٹھے ہوئے ہیں۔ لیکن وہ قبر کے اندر نہیں دیکھ سکتے، کیونکہ اُن کے آگے آدمیوں کی بھیڑ ہے۔

بھیڑ چھنٹتی ہے۔ میت قبر میں ہے۔ کہار ڈولی کو قبر تک لاتے ہیں۔ لوگ مرحوم والد کا چہرہ آخری بار

लाता. इस दरमियान में दादा अब्बा हमारा सबक़ दोहराते या हरूफ़ कहलाते. और जब हम में से कोई सबक़ भूल जाता, तो हम सब डर जाते, क्योंकि दादा अब्बा को ग़ुस्सा आ जाता और वे बिगड़ने लगते, हालाँकि आम तौर पर वे मेहरबान रहते.

एक मर्तबा मैं और कुछ मेरे बड़े भाइयों ने बड़ी चची का एक रुपया चुरा लिया. दरअसल रुपया लुढ़क गया था और हमने चुपके से उसे उठा लिया था. हमने उसको जाकर भुना लिया और उसके चौंसठ पैसे कर लिये. हमने दो पैसे के बिस्कुट और मिठाई ख़रीदी. उस ज़माने में चीज़ें काफ़ी सस्ती मिलती थीं, और बाक़ी पैसों को पोशीदा जगह पर रख दिया. लेकिन किसी ने उसको देख लिया. अब तो हम सब बहुत डरे कि कहीं दादा को इसका पता न चल जाये. ,लेकिन जिस बात से डरते थे वही हुई. दादा अब्बा को बेहद ग़ुस्सा आया और उन्होंने कहा कि मैं तुम सबको मार डालूँगा. उन्होंने अपनी तलवार के निकाले जाने का हुक्म दिया, जो एक बड़े लकड़ी के सन्दूक़ में बन्द रहती थी. यह सन्दूक़ एक अंधेरी कोठरी में रखा हुआ था, जिसके अंदर जाने के लिये लालटैन की ज़रूरत पड़ती थी; तब उन्होंने मेरे बड़े भाइयों को बुलाया और उनकी आँखों के सामने तलवार चमकाई. दोनों ने पाजामे में पेशाब कर दिया और ख़ौफ़ के मारे उनका रंग उड़ गया. शायद मेरे कमसिन होने के ख़्याल से उन्होंने मुझको तलवार से नहीं धमकाया, लेकिन उनकी आवाज़ ही मेरे हवास उड़ा देने के लिये क्या कम थी. हम सबने वादा किया कि आइन्दा चोरी न करेंगे और अच्छे लड़कों की तरह रहेंगे.

मगर जब हम चाय के लिये भूखे कुत्तों की तरह दादा अब्बा के चारों तरफ़ बैठे रहते थे. तो हमको कोई ख़ौफ़ नहीं होता था. वह आम तौर से मज़े मज़े की बातें करते, मोहब्बत से पेश आते और कहानियाँ सुनाते. जब चाय तैयार हो जाती, तो उसको वह चीनी की छोटी प्यालियों में डालते. यह चीनी के प्याले आजकल की प्यालियों की तरह न थे, यह बहुत ख़ूबसूरत असली चीनी के थे. इनमें दस्ता न था. उनका पेंदा तंग और मुंह चौड़ा था. चाय दूर से महकती थी. अक्सर बेसबरी में हम अपने होंठ हिला लेते थे. हमको छोटे-छोटे, फूले फूले बिस्कुट दिये जाते, जिनको हम चाय में डबोकर चमचे से खाते. चाय ऐसी मज़ेदार होती थी कि उसके बाद कभी ऐसी मज़ेदार चाय पी ही नहीं और न मैं इसका मज़ा कभी चख सकूँगा.

दादा की चन्द और बातें मुझे याद हैं. यह याद एक अच्छे मज़्ज़ूब आदमी की है, जिसे ज़िन्दगी के बोझ ने ख़त्म कर दिया.

لاتا ۔ اِس درمیان میں دادا ابا ہمارا سبق دہراتے یا حروف کہلاتے ۔ اور جب ہم ہم سے کوئی سبق بھول جاتا‘ تو ہم سب ڈر جاتے‘ کیونکہ دادا ابا کو غصہ آجاتا اور وے بگڑنے لگتے‘ حالانکہ عام طور پر وے مہربان رہتے ۔

ایک مرتبہ میں اور کچھ میرے بڑے بھائیوں نے بڑی چچی کا ایک روپیہ چرا لیا ۔ دراصل روپیہ لڑھک گیا تھا اور ہم نے چپکے سے اُسے اُٹھا لیا تھا ۔ ہم نے اُس کو جاکر بھنا لیا اور اُس کے چونسٹھ پیسے کر لئے ۔ ہم نے دو پیسے کے بسکٹ اور مٹھائی خریدی۔ اُس زمانے میں چیزیں کافی سستی ملتی تھیں؛ اور باقی پیسوں کو پوشیدہ جگہ پر رکھ دیا ۔ لیکن کسی نے اِن کو دیکھ لیا ۔ اب تو ہم سب بہت ڈرے کہ کہیں دادا کو اِس کا پتہ نہ چل جائے ۔ لیکن جس بات سے ڈرتے تھے وہی ہوئی ۔ دادا ابا کو بےحد غصہ آیا اور اُنہوں نے کہا کہ میں تم سب کو مار ڈالونگا ۔ اُنہوں نے اپنی تلوار کے نکالے جانے کا حکم دیا‘ جو ایک بڑے لکڑی کے صندوق میں بند رہتی تھی ۔ یہ صندوق ایک اندھیری کوٹھری میں رکھا ہوا تھا‘ جس کے اندر جانے کے لئے لالٹین کی ضرورت پڑتی تھی؛ تب اُنہوں نے میرے بڑے بھائیوں کو بلایا اور اُن کی آنکھوں کے سامنے تلوار چمکائی ۔ دونوں نے پاجامے میں پیشاب کر دیا اور خوف کے مارے اُن کا رنگ اُڑ گیا۔ شاید میرے کمسن ہونے کے خیال سے اُنہوں نے مجھکو تلوار سے نہیں دھمکایا‘ لیکن اُن کی آواز ہی میرے حواس اُڑا دینے کے لئے کیا کم تھی ۔ ہم سب نے وعدہ کیا کہ آئندہ چوری نہ کریں گے اور اچھے لڑکوں کی طرح رہینگے ۔

مگر جب ہم چائے کے لئے بھوکے کتوں کی طرح دادا ابا کے چاروں طرف بیٹھے رہتے ‘ تو ہم کو کوئی خوف نہیں ہوتا تھا۔ وہ عام طور سے مزے مزے کی باتیں کرتے‘ محبت سے پیش آتے اور کہانیاں سناتے ۔ جب چائے تیار ہو جاتی‘ تو اُس کو وہ چینی کی چھوٹی پیالیوں میں ڈالتے ۔ یہ چینی کے پیالے آجکل کی پیالیوں کی طرح نہ تھے ۔ یہ بہت خوبصورت اصلی چینی کے تھے ۔ اِن میں دستہ نہ تھا ۔ اُن کا پیندا تنگ اور منہ چوڑا تھا ۔ چائے دور سے مہکتی تھی اکثر بےصبری میں ہم اپنے ہونٹ ہلالیتے تھے ۔ ہم کو چھوٹے چھوٹے پھولے پھولے بسکٹ دیئے جاتے‘ جن کو ہم چائے میں ڈبو کر چمچے سے کھاتے ۔ چائے ایسی مزیدار ہوتی تھی کہ اُس کے بعد کبھی ایسی مزیدار چائے پی ہی نہیں اور نہ میں اِس کا مزا کبھی چکھ سکونگا ۔

دادا کی چند اور باتیں مجھے یاد ہیں ۔ یہ یاد ایک اچھے مجذوب آدمی کی ہے‘ جسے زندگی کے بوجھ نے ختم کر دیا ۔

था और उनमें से बदबू आती थी. फ़र्श को भी गन्दा कर देता और अपनी उँगली को गन्दगी में तर करके सूँघता, मगर लोग उसे पागल न समझते. उनके ख़याल में वह एक मज्ज़ूब था.

दादा के पास और भी फ़क़ीर आया करते थे. लेकिन वे कुछ एक दो तो थे नहीं. चुनांचे मैं बहुतों से नावाक़िफ़ था.

दादा की सब से ज़्यादा दिलपसन्द चीज़ उनकी मज़ेदार दवाइयाँ थी. यह दवाइयाँ वे हम लोगों को बाँटते थे. दिलचस्पी के साथ वे उन्हें बनाते थे. सब लड़कों में, जो मेरे भाई होते थे, मैं ही सब से छोटा था और मुझको सबसे ज़्यादा चाहते थे. इसलिये सब लड़के मुझको दादा अब्बा के पास चूरन लेने के लिये भेजते. मैं बेधड़क उनके पास चला जाता और कहता—"दादा अब्बा, मुझे ज़रासा चूरन दे दीजिये."

वे मोहब्बत से मुस्कुराते और अपने पुराने नौकर को, जो बरसों से उनकी ख़िदमत में रहा करता था, पुकारते—"ग़फ़ूर, उस बोतल को अलमारी से निकाल ला."

ग़फ़ूर, जो अपने स्वामी की तरह ख़ुद भी बूढ़ा हो गया था, लड़खड़ाता हुआ अलमारी तक जाता और ग़लती से दूसरी बोतल उठा लाता.

"यह नहीं, दूसरी बोतल जो मैंने तुमसे कहा था"—दादा अब्बा ऊँची आवाज़ कर के कहते. फिर बोतल से एक चुटकी चूरन निकालकर मेरी हथेली पर रख देते.

"थोड़ा सा और दादा अब्बा?"

"बस अब नहीं, यह ज़्यादा नहीं खाया जाता."

"लेकिन फ़लाँ फ़लाँ भाई भी माँग रहे हैं"—मैं गिड़गिड़ा कर कहता और वे कुछ चुटकियाँ चूरन और दे देते. मैं उसे ज़ुबान से चाटता हुआ बाहर निकल जाता. मेरे भाई बाहर की तंग गली में मेरा इन्तज़ार करते और दौड़कर मुझे पकड़ लेते.

लेकिन चाय पीने में हम सब को बड़ा मज़ा आता. शाम को हम सब चार या पाँच लड़के, जो पाँच सात साल की उम्र के थे, दादा अब्बा के बड़े कमरे में जमा हो जाते. कभी कभी हम लोग बुलाए जाते और कभी ख़ुद से पहुँच जाते. दादा अब्बा आराम करते और सोते होते और हम सब अपनी छोटी छोटी मुट्ठियों से उनके पाँव पर मुक्कियाँ लगाते. तब ग़फ़ूर 'समावार' जलाता. मुझे नहीं मालूम कि क्यों उस ज़माने में चाय तैयार करने के लिये समावार इस्तेमाल किये जाते थे, ग़फ़ूर समावार लाता और पास रखता. जब पानी सनसनाने लगता तो दादा अब्बा इसमें दारचीनी और इलायची डाल देते ताकि उसमें ख़ुशबू आजाय. वे किसी दूसरे को चाय न बनाने देते. जब चाय तैयार हो रही होती, तो ग़फ़ूर चीनी के प्याले और चमचे

تھا اور اُن میں سے بدبو آتی تھی ۔ وہ فرش کو بھی گندا کر دیتا اور اپنی اُنگلی کو گندگی میں تر کر کے سونگھتا ۔ مگر لوگ اُسے پاگل نہ سمجھتے ۔ اُن کے خیال میں وہ ایک مجذوب تھا ۔

دادا کے پاس اور بھی فقیر آیا کرتے تھے ۔ لیکن وے کچھ ایک دو تو تھے نہیں ۔ چنانچہ میں بہتوں سے ناواقف تھا ۔

دادا کی سب سے زیادہ دل پسند چیز اُن کی مزیدار دوائیاں تھیں ۔ یہ دوائیاں وے ہم لوگوں کو بانٹتے تھے ۔ چاہ کے ساتھ وے اِنہیں بناتے تھے ۔ سب لڑکوں میں' جو میرے بھائی ہوتے تھے' میں ہی سب سے چھوٹا تھا اور مجھکو سب سے زیادہ چاہتے تھے ۔ اِس لئے سب لڑکے مجھ کو دادا ابا کے پاس چورن لینے کے لئے بھیجتے ۔ میں بے دھڑک اُن کے پاس چلا جاتا اور کہتا—"دادا ابا' مجھے ذرا سا چورن دے دیجئے ۔"

وے محبت سے مسکراتے اور اپنے پرانے نوکر کو جو برسوں سے اُن کی خدمت میں رہا کرتا تھا پکارتے—"غفور' اُس بوتل کو الماری سے نکال لا ۔"

غفور جو اپنے سوامی کی طرح خود بھی بوڑھا ہو گیا تھا لڑکھڑاتا ہوا الماری تک جاتا اور غلطی سے دوسری بوتل اُٹھا لاتا ۔

"یہ نہیں' دوسری بڑی بوتل جو میں نے تم سے کہا تھا—" دادا ابا اُونچی آواز کر کے کہتے ۔ پھر بوتل سے ایک چٹکی چورن نکال کر میری ہتھیلی پر رکھ دیتے ۔

"تھوڑا سا اور دادا ابا ؟"

"بس اب نہیں' یہ زیادہ نہیں کھایا جاتا ۔"

"لیکن فلاں فلاں بھائی بھی مانگ رہے ہیں—" میں گڑگڑا کر کہتا اور وے کچھ چٹکیاں چورن اور دے دیتے ۔ میں اُسے زبان سے چاٹتا ہوا باہر نکل جاتا ۔ میرے بھائی باہر کی تنگ گلی میں میرا انتظار کرتے ہوتے اور دوڑ کر مجھے پکڑ لیتے ۔

لیکن چائے پینے میں ہم سب کو بڑا مزا آتا تھا ۔ شام کو ہم سب چار یا پانچ لڑکے' جو پانچ سات سال کی عمر کے تھے' دادا ابا کے بڑے کمرے میں جمع ہو جاتے ۔ کبھی کبھی ہم لوگ بلائے جاتے اور کبھی خود سے پہنچ جاتے ۔ دادا ابا آرام کرتے اور سوتے ہوتے اور ہم سب اپنی چھوٹی چھوٹی مٹھیوں سے اُن کے پاؤں پر مکیاں لگاتے۔ تب غفور 'سمادار' جلاتا۔ مجھے نہیں معلوم کہ کیوں اُس زمانے میں چائے تیار کرنے کے لئے سمادار استعمال کئے جاتے تھے ۔ غفور سمادار لاتا اور پاس رکھتا۔ جب پانی سنسنانے لگتا تو دادا ابا اِس میں دار چینی اور الائچی ڈال دیتے تا کہ اُس میں خوشبو آجائے۔ وے کسی دوسرے کو چائے نہ بنانے دیتے ۔ جب چائے تیار ہو رہی ہوتی' تو غفور چینی کے پیالے اور چمچے

मज्ज़ूब कहना चाहिये. यह वे लोग हैं जिन पर रूहानियत का एक ऐसा दौरा आता है, जिसके कारन उन पर एक ख़ास रंग छा जाता है. वे दुनिया से मुँह मोड़ लेते हैं. कहा जाता है कि दुनिया का कारख़ाना सूफ़ियों की बदौलत चल रहा है. हर सूफ़ी का एक ख़ास हल्क़ए असर होता है. यह लोग बेग़रज़ फ़क़ीर होते हैं और सूफ़ियाना ज़िन्दगी बसर करते हैं. कोई उनके रुतबे को नहीं जानता; लेकिन वह अपने असर वाले हल्के की देख भाल करते हैं. हम मामूली लोग उनको नहीं जान सकते. सिर्फ़ ऊँचे दर्जे के सूफ़ी उनको पहचान सकते हैं.

बहुत से ऐसे लोग हमारे घर आया करते थे, हालाँकि दादा कोई सूफ़ी नहीं थे. अलबत्ता वह सूफ़ियों और फ़क़ीरों की क़द्र बहुत किया करते थे. मगर उनके सूफ़ी दोस्त सब के सब कीमिया बनाने में बहुत दिलचस्पी लेते थे. वह अजीबो ग़रीब जड़ी बूटियों के नायाब नुस्ख़े रखते थे और साँपों वग़ैरह के बारे में उनको बड़ी जानकारी थी. मेरे दादा भी साँपों के बारे में बहुत कुछ जानते थे और उन्हें हाथ से पकड़ लेते थे.

बाज़ और दूसरी तरह के फ़क़ीर भी हमारे घर आया करते थे. उनमें एक चालीस बरस की उम्र का अंधा था. वह 'अंधा हाफ़िज़' के नाम से मशहूर था. वह हमेशा नंगा और गन्दगी में लुथड़ा हुआ रहता. उसकी ढाढ़ी की तरह सर और जिस्म के बाल भी उलझे रहते. वह हमेशा हाथ में एक बड़ी लाठी लिये रहता और हमारे घर पर आम तौर पर रात को डोली में बैठकर आता. वह शायद ही कभी सोता और सारी रात, चाहे जाड़ा हो या गर्मी, इधर उधर घूमा करता था. लोग उसे बहुत पहुँचा हुआ फ़क़ीर समझते. असली मज्ज़ूब ! उनके ख़्याल में उसे इल्मेग़ैब भी हासिल था. वह बहुत बचपने से मज्ज़ूब हो गया था और कहा जाता है कि उसने बहुत सी करामातें भी दिखाई थीं. वह कभी कोई ज़बानी बात न कहता. उसकी गुफ़्तगू सदा उलझी हुई होती थी. जब लोग उससे अपने मुसतक़बिल की बात पूछते या कोई ख़ास मुश्किल मामला समझना चाहते तो सवाल को अपने दिमाग़ में लेकर हाफ़िज़ जी के पास बैठ जाते और अक्सर उसकी उलझी हुई बात चीत और इशारों में अपने सवाल का जवाब पा लेते.

जंगे अज़ीम के ज़माने में अंधे हाफ़िज़ पर ग़ुस्से और ग़ज़ब की हालत तारी रहती और वह अपना डन्डा ज़मीन पर बार बार पटकता. जब तक वह घर में रहता किसी फ़िक्र में इधर उधर घूमता फिरता और एक घड़ी भर भी दम न लेता. लोग कहते कि वह जंग का सब हाल जानता है कि इस वक़्त कहाँ लड़ाई हो रही है, कौन जीत रहा है और कौन हार रहा है. मैं कभी नहीं भूल सकता कि वह अपनी ही गन्दगी में लुथड़ा हुआ फ़र्श पर पड़ा रहता

مجذوب کہنا چاہئے ۔ یہ وے لوگ ہیں، جن پر روحانیت کا ایک ایسا دورہ آتا ہے، جس کے کارن اُن پر ایک خاص رنگ چھا جاتا ہے ۔ وے دنیا سے منھ موڑ لیتے ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ دنیا کا کارخانہ صوفیوں کی بدولت چل رہا ہے ۔ ہر صوفی کا ایک خاص حلقۂ اثر ہوتا ہے ۔ یہ لوگ بےغرض فقیر ہوتے ہیں اور صوفیانہ زندگی بسر کرتے ہیں ۔ کوئی ان کے رتبہ کو نہیں جانتا؛ لیکن وہ اپنے اثر والے حلقہ کی دیکھ بھال کرتے ہیں ۔ ہم معمولی لوگ اُن کو نہیں جان سکتے ۔ صرف اُونچے درجے کے صوفی اُن کو پہچان سکتے ہیں ۔

بہت سے ایسے لوگ ہمارے گھر آیا کرتے تھے، حالانکہ دادا کوئی صوفی نہیں تھے ۔ البتہ وہ صوفیوں اور فقیروں کی قدر بہت کیا کرتے تھے مگر اُن کے صوفی دوست سب کے سب کیمیا بنانے میں بہت دلچسپی لیتے تھے ۔ وہ عجیب و غریب جڑی بوٹیوں کے نایاب نسخے رکھتے تھے اور سانپوں وغیرہ کے بارے میں اُن کو بڑی جانکاری تھی ۔ میرے دادا بھی سانپوں کے بارے میں بہت کچھ جانتے تھے اور اُنھیں ہاتھ سے پکڑ لیتے تھے ۔

بعض اور دوسری طرح کے فقیر بھی ہمارے گھر آیا کرتے تھے ۔ اُن میں ایک چالیس برس کی عمر کا اندھا تھا ۔ وہ اندھا حافظ کے نام سے مشہور تھا ۔ وہ ہمیشہ ننگا اور گندگی میں لتھڑا ہوا رہتا۔ اُس کی داڑھی کی طرح سر اور جسم کے بال بھی الجھے رہتے ۔ وہ ہمیشہ ہاتھ میں ایک بڑی لاٹھی لئے رہتا اور ہمارے گھر پر عام طور پر رات کو ڈولی میں بیٹھ کر آتا ۔ وہ شاید ہی کبھی سوتا اور ساری رات، چاہے جاڑا ہو یا گرمی، اِدھر اُدھر گھوما کرتا تھا ۔ لوگ اُسے بہت پہنچا ہوا فقیر سمجھتے ۔ اصلی مجذوب ! اُن کے خیال میں اُسے علمِ غیب بھی حاصل تھا ۔ وہ بہت بچپنے سے مجذوب ہو گیا تھا اور کہا جاتا ہے کہ اُس نے بہت سی کراماتیں بھی دکھائی تھیں ۔ وہ کبھی کوئی زبانی بات نہ کہتا ۔ اُس کی گفتگو سدا اُلجھی ہوئی ہوتی تھی ۔ جب لوگ اُس سے اپنے مستقبل کی بات پوچھتے یا کوئی خاص مشکل معاملہ سمجھنا چاہتے تو سوال کو اپنے دماغ میں لے کر حافظ جی کے پاس بیٹھ جاتے اور اکثر اُس کی اُلجھی ہوئی بات چیت اور اشاروں میں اپنے سوال کا جواب پا لیتے ۔

جنگ عظیم کے زمانے میں اندھے حافظ پر غصہ اور غضب کی حالت طاری رہتی اور وہ اپنا ڈنڈا زمین پر بار بار پٹکتا ۔ جب تک وہ گھر میں رہتا کسی فکر میں اِدھر اُدھر گھومتا پھرتا اور ایک گھڑی بھر بھی دم نہ لیتا ۔ لوگ کہتے کہ وہ جنگ کا سب حال جانتا ہے کہ اِس وقت کہاں لڑائی ہو رہی ہے، کون جیت رہا ہے اور کون ہار رہا ہے ۔ میں کبھی نہیں بھول سکتا کہ وہ اپنی ہی گندگی میں لتھڑا ہوا فرش پر پڑا رہتا

में कभी कामयाबी नहीं हुई, अलबत्ता माँ से मुझे मालूम हुआ था कि मेरे नाना, जो मेरे दादा के चचेरे भाई थे, एक मर्तबा कामयाब हो गये थे. किसी फ़क़ीर ने उन्हें एक शीशी में कोई चीज़ दी थी, जिसके ज़रिये उन्होंने एक ताँबे के पैसे को सोने में बदल दिया था और जिससे मेरी माँ के लिये सोने की बालियाँ बना ली गई थीं. इसके बाद उन्होंने इसको सन्दूक़ में बंद करके रख दिया. लेकिन उनके दोस्त क़लन्दर शाह सूफ़ी को जब यह मालूम हुआ कि मेरे नाना के हाथ कीमिया लग गई है, तो उन्होंने इसको बरबाद करने का हुक्म दिया; क्योंकि इससे आदमी लालची हो जाता है और उसका दिल ख़ुदा और सूफ़ियों की तरफ़ से फिर जाता है. मेरी माँ को, जो इस वक़्त बहुत छोटी थीं, इस नायाब चीज़ के बरबाद हो जाने का बड़ा दुख हुआ, जो ताँबे को सोने में बदल देती थी—लेकिन मेरे नाना, जो एक सूफ़ी बुज़ुर्ग थे और क़लन्दरशाह से मोहब्बत करते थे, आपस के ताल्लुक़ात को बिगाड़ना न चाहते थे और उन्होंने क़लन्दर शाह की दिलशिकनी के डर से दौलत की कुञ्जी को बरबाद कर दिया—दोस्ती के ख़ातिर कौन अपनी दौलत के एक हिस्से की भी क़ुरबानी गवारा करेगा और फिर आजकल ?

मुझे अपने दादा के एक दोस्त ख़ूब याद हैं. उनका नाम नादिरशाह था. वे फ़क़ीर थे. हमेशा एक काला कम्बल लपेटे रहा करते थे. वे बूढ़े थे मगर शानदार. जब कभी हम उनकी मौजूदगी में घर से बाहर निकलते, तो वे हमारे सर पर हाथ फेरते और हमको आशीर्वाद और दुआ देते. वे दादा के सब से ज्यादा गहरे दोस्त थे, उनकी ख़ातिर दादा अब्बा बहुत कुछ कर डालते. जब कभी किसी परेशानी में फँसे होते तो फ़ौरन नादिरशाह को बुलाते. उन्होंने मुझको कुछ तावीज़ दिये थे, जो दस ग्यारह बरस की उम्र में चाँदी के खोल में सिले हुए मेरे गले में पड़े रहते.

दादा के एक और कीमियागर दोस्त थे. लेकिन मैं उनसे घबराता था क्योंकि वे मुझे दोबारा ख़तना का डर दिलाकर धमकाते थे. हालाँकि यह सब मज़ाक़ ही मज़ाक़ था, लेकिन मैं सहम जाता था. एक दिन उन्होंने मेरा कान काट खाया. वे एक लड़के की कहानी सुना रहे थे, जिसने अपने बाप के दोस्त की तरफ़ से बेपरवाही बरती थी. उन बुज़ुर्ग ने उस वक़्त तो कुछ न कहा, लेकिन एक दिन लड़के को बुलाया और उसके कान में कुछ कहने के बहाने से झुककर उसके कान की लौ काट ली. उन्होंने वाक़ेआ बताते बताते मेरा कान भी काट खाया. मैं सोचता हूँ कि कहीं मैंने तो कभी जानते हुए उनकी तरफ़ से बेपरवाही नहीं बरती थी.

इसी तरह और बहुत से लोग अक्सर मेरे दादा से मिलने आया करते थे—बहुत से गम्भीर और पागल क़िस्म के लोग. लेकिन इनको पागल कहना हिमाक़त होगी. उनको

میں کبھی کامیابی نہیں ہوئی، البتہ ماں سے مجھے معلوم ہوا تھا کہ میرے نانا، جو میرے دادا کے چچیرے بھائی تھے، ایک مرتبہ کامیاب ہو گئے تھے ۔ کسی فقیر نے انہیں ایک شیشی میں کوئی چیز دی تھی، جس کے ذریعے اُنہوں نے ایک تانبے کے پیسے کو سونے میں بدل دیا تھا اور جس سے میری ماں کے لئے سونے کی بالیاں بنا لی گئی تھیں ۔ اِس کے بعد اُنہوں نے اِس کو صندوق میں بند کر کے رکھ دیا ۔ لیکن اُن کے دوست قلندر شاہ صوفی کو جب یہ معلوم ہوا کہ میرے نانا کے ہاتھ کیمیا لگ گئی ہے، تو اُنہوں نے اِس کو برباد کرنے کا حکم دیا؛ کیونکہ اِس سے آدمی لالچی ہو جاتا ہے اور اُس کا دل خدا اور صوفیوں کی طرف سے پھر جاتا ہے ۔ میری ماں کو، جو اُس وقت بہت چھوٹی تھیں، اِس نایاب چیز کے برباد ہوجانے کا بڑا دکھ ہوا، جو تانبے کو سونے میں بدل دیتی تھی — لیکن میرے نانا جو ایک صوفی بزرگ تھے اور قلندر شاہ سے محبت کرتے تھے، آپس کے تعلقات کو بگاڑنا نہ چاہتے تھے اور اُنہوں نے قلندر شاہ کی دل شکنی کے ڈر سے دولت کی کنجی کو برباد کر دیا ۔ دوستی کے خاطر کون اپنی دولت کے ایک حصہ کی بھی قربانی گوارا کرے گا اور پھر آجکل ؟

مجھے اپنے دادا کے ایک دوست خوب یاد ہیں ۔ اُن کا نام نادرشاہ تھا ۔ وے فقیر تھے ۔ ہمیشہ ایک کالا کمبل اوڑھے رہا کرتے تھے ۔ وے بوڑھے تھے مگر شاندار ۔ جب کبھی ہم اُن کی موجودگی میں گھر سے باہر نکلتے، تو وے ہمارے سر پر ہاتھ پھیرتے اور ہم کو آشیرواد اور دعا دیتے ۔ وے دادا کے سب سے زیادہ گہرے دوست تھے ۔ اُن کی خاطر دادا ابا بہت کچھ کر ڈالتے ۔ جب کبھی کسی پریشانی میں پھنسے ہوتے تو فوراً نادرشاہ کو بلاتے ۔ اُنہوں نے مجھ کو کچھ تعویز دیئے تھے، جو دس گیارہ برس کی عمر میں چاندی کے خول میں سلے ہوئے میرے گلے میں پڑے رہتے ۔

دادا کے ایک اور کیمیا گر دوست تھے ۔ لیکن میں اُن سے گھبراتا تھا، کیونکہ وے مجھے دوبارہ ختنہ کا ڈر دلا کر دھمکاتے تھے ۔ حالانکہ یہ سب مذاق ہی مذاق تھا، لیکن میں سہم جاتا تھا ۔ ایک دن اُنہوں نے میرا کان کاٹ کھایا ۔ وے ایک لڑکے کی کہانی سنا رہے تھے، جس نے اپنے باپ کے دوست کی طرف سے بےپرواہی برتی تھی ۔ اُن بزرگ نے اُس وقت تو کچھ نہ کہا، لیکن ایک دن لڑکے کو بلایا اور اُس کے کان میں کچھ کہنے کے بہانے سے جھک کر اُس کے کان کی لو کاٹ لی ۔ اُنہوں نے واقعہ بتاتے بتاتے میرا کان بھی کاٹ کھایا ۔ میں سوچتا ہوں کہ کہیں میں نے تو کبھی جانتے ہوئے اُن کی طرف سے بےپرواہی نہیں برتی تھی ۔

اِسی طرح اور بہت سے لوگ اکثر میرے دادا سے ملنے آیا کرتے تھے — بہت سے گمبھیر اور پاگل قسم کے لوگ ۔ لیکن اِن کو پاگل کہنا حماقت ہوگی ۔ اُن کو

बालों के लच्छे थे. वे इस उम्दगी से कटे हुए होते थे कि उनका किनारा एक तलवार की तेज़ बाढ़ की तरह मालूम होता थी. वे एक ताक़तवर फ़ौजी की तरह तनकर एक सीध चलते थे और उनकी हल्के रंग की कामदार टोपी उनके सर पर ज़रा आड़ी रखी रहती थी. उनकी निगाहों और आवाज़ में बड़ा रोब और दबदबा था.

गर्मियों के ज़माने में वे हमेशा तनज़ेब का अँगरखा पहनते थे, जो इस तरह बना होता था कि एक तरफ़ का सीना खुला रहता था. (उस ज़माने में नीचे दूसरा कपड़ा पहनने का रिवाज न था.) जाड़े में वे जामेदार का अँगरखा पहनते थे, जिसमें आम तौर पर स्याह ज़मीन पर सफ़ेद सादे फूल बने होते थे. वे चुस्त मोहरी का चूड़ीदार पाजामा पहनते, पैरों में धुंधले शोख़ रंग का जूता होता, जिसपर सुनहरे काम का एक फूल बना होता और जिसकी नोक ऊपर को मुड़ी होती. इस पर जब वे अँगरखा पहन कर खड़े होते तो बेहद शानदार मालूम होते, कभी-कभी जाड़ों में वे साफ़ा बाँधते थे, जिसके पेंच बहुत कसे हुए होते थे और उनकी एक भौं को ढक लेते थे. इससे वे चुस्त तो बहुत मालूम होते, लेकिन ख़ौफ़नाक से हो जाते.

वह ज़नानख़ाने में सिवाय खाने के वक़्त के बहुत कम आते थे. वे अपनी चाय ख़ुद बनाया करते थे. जब कभी वे घर में आते तो अपने आने की ख़बर देने के लिये ज़ोर से खखारते ताकि औरतों में अचानक न पहुँच जायें. उनकी आवाज़ सुनते ही बालिग़ लड़कियाँ, बहुएँ और दूसरी बीबियाँ अपने दुपट्टे सभालकर सरों को ढक लेतीं और अदब से बैठ जातीं. बच्चे ख़ामोश होकर भाग जाते. उनकी चाल में तो रानाई हमेशा से थी, यहाँ तक कि 76 बरस की उम्र में उन पर लक़वा गिरा; इसके बाद से वे बराबर बिस्तर पर पड़े रहते. या तो किसी से बातें किया करते या अकेले ग़म खाया करते; लेकिन उनकी निगाहों और आवाज़ में अब भी वही रोब दाब था. उनके शौक़ कीमिया, मछली का शिकार, पुराने चीनी के बरतनों का भंडार जमा करना, दवायें तैयार करना वग़ैरा थे. हर तरह के फ़क़ीर और सूफ़ी उनके पास आया करते और घन्टों उनसे नायाब जड़ी बूटियों के मुताल्लिक़ बातें किया करते. मकान का मरदाना हिस्सा पौधों से भरा हुआ था और उनमें छोटे बड़े अजीब-अजीब पत्तियों के काँटेदार पौधे थे, जो एक कीमियागर के साज़ और सामान का हिस्सा होते हैं. अलमारियों में बहुत से पत्थर, हर क़िस्म की दवायें, ख़ुश्कज़दी बूटियाँ और फूल भरे हुए थे.

दादा अब्बा अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े भी तजुर्बा किया करते और हमेशा नये नुस्ख़े की तलाश में रहते, रोज़ शाम को नौकर जामा मस्जिद जाया करता और नई बूटियाँ लाता. लेकिन जहाँतक मुझको याद है, उनको सोना बनाने

میرے دادا ابا !

بالوں کے لچھے تھے ۔ وے اِس عمدگی سے کٹے ہوئے ہوتے تھے کہ اُن کا کنارہ ایک تلوار کی تیز باڑھ کی طرح معلوم ہوتی تھی ۔ وے ایک طاقتور فوجی کی طرح تن کر ایک سیدھ میں چلتے تھے اور اُن کی ہلکے رنگ کی کام‌دار ٹوپی اُن کے سر پر ذرا آڑی رکھی رہتی تھی ۔ اُن کی نگاہوں اور آواز میں بڑا رعب اور دبدبہ تھا ۔

گرمیوں کے زمانے میں وے ہمیشہ تنزیب کا انگرکھا پہنتے تھے‘ جو اِس طرح بنا ہوتا تھا کہ ایک طرف کا سینہ کھلا رہتا تھا ۔ (اُس زمانے میں نیچے دوسرا کپڑا پہننے کا رواج نہ تھا) ۔ جاڑے میں وے جامہ دار کا انگرکھا پہنتے تھے‘ جس میں عام طور پر سیاہ زمین پر سفید سادے پھول بنے ہوتے تھے ۔ وے چست موہری کا چوڑیدار پاجامہ پہنتے‘ پیروں میں دھندلے شوخ رنگ کا جوتا ہوتا‘ جس پر سنہرے کام کا ایک پھول بنا ہوتا اور جس کی نوک اوپر کو مڑی ہوتی ۔ اِس پر جب وے انگرکھا پہن کر کھڑے ہوتے‘ تو بےحد شاندار معلوم ہوتے‘ کبھی کبھی جاڑوں میں وے صافہ باندھتے تھے‘ جس کے پیچ بہت کسے ہوتے تھے اور اُن کی ایک بھوں کو ڈھک لیتے تھے ۔ اِس سے وے چست تو بہت معلوم ہوتے‘ لیکن خوفناک سے ہو جاتے ۔

وہ زنانخانے میں سوائے کھانے کے وقت کے بہت کم آتے تھے ۔ وے اپنی چائے خود بنایا کرتے تھے ۔ جب کبھی وے گھر میں آتے‘ تو اپنے آنے کی خبر دینے کے لئے زور سے کھکھارتے‘ تاکہ عورتوں میں اچانک نہ پہنچ جائیں ۔ اُن کی آواز سنتے ہی بالغ لڑکیاں‘ بہوئیں اور دوسری بیبیاں اپنے دوپٹے سنبھال کر سروں کو ڈھک لیتیں اور ادب سے بیٹھ جاتیں ۔ بچے خاموش ہو کر بھاگ جاتے ۔ اُن کی چال میں تو رعنائی ہمیشہ سے تھی‘ یہاں تک کہ 76 برس کی عمر میں اُن پر لقوہ گرا؛ اِس کے بعد سے وے برابر بستر پر پڑے رہتے ۔ یا تو کسی سے باتیں کیا کرتے یا اکیلے غم کھایا کرتے؛ لیکن اُن کی نگاہوں اور آواز میں اب بھی وہی رعب داب تھا ۔ اُن کے شوق‘ کیمیا‘ مچھلی کا شکار‘ پرانے چینی کے برتنوں کا بھنڈار جمع کرنا‘ دوائیں تیار کرنا وغیرہ تھے ۔ ہر طرح کے فقیر اور صوفی اُن کے پاس آیا کرتے تھے اور گھنٹوں اُن سے نایاب جڑی بوٹیوں کے متعلق باتیں کیا کرتے ۔ مکان کا مردانہ حصہ پودوں سے بھرا ہوا تھا اور اِن میں چھوٹے بڑے عجیب عجیب پتیوں کے کانٹے دار پودے تھے‘ جو ایک کیمیاگر کے ساز اور سامان کا حصہ ہوتے ہیں ۔ الماریوں میں بہت سے پتھر‘ ہر قسم کی دوائیں‘ خشک جڑی بوٹیاں اور پھول بھرے ہوئے تھے ۔

دادا ابا اپنے بستر پر پڑے پڑے بھی تجربہ کیا کرتے اور ہمیشہ نئے نسخے کی تلاش میں رہتے‘ روز شام کو نوکر جامع مسجد جایا کرتا اور نئی بوٹیاں لاتا ۔ لیکن جہاں تک مجھکو یاد ہے‘ اُن کو سونا بنانے

मेरे बचपन की सब से ज़्यादा जीती जागती तस्वीर मेरे दादा की याद है. वे एक बड़ी भारी उम्र के बुज़ुर्ग थे और उन लोगों में से थे जो अब क़रीब क़रीब नायाब हैं. बर्तानिवी साम्राज के दौर दौरे और आमदनी और खर्च के पूँजीवादी तरीक़ों के शुरू होने के साथ ही जागीरदारी ज़माने के इस तरह के लोग अब बहुत कम नज़र आते हैं. कभी-कभी देहली या लखनऊ जैसे शहर की किसी तंग गली में हमें ऐसे दो-चार लोग दिखाई दे जाते हैं. वे अपने आस पास की चीज़ से मुँह मोड़ लेते हैं और मग़रिबी तहज़ीब और ख़्याल को मंज़ूर करने से परहेज़ करते हैं. सड़कों पर चलते हुए शायद उनको ख़ुद झेंप मालूम होती है. वह अपने को कुछ बीते हुए ज़माने का महसूस करते हैं. ग़ालिबन वह तहज़ीब के इस नये दौर को पसन्द नहीं करते, जो उनपर लाद दिया गया है. लेकिन फिर भी वे अपना सर ऊँचा रखते हैं, शायद यह सोचकर कि वे भी कभी कुछ थे और उनकी आँखों ने भी बहुत कुछ देखा है. इन्होंने अभी अपने लिबास को नहीं छोड़ा है और अब भी मलमल का अँगरखा और पुराने तर्ज़ के सुर्ख़ रंग के जूते पहने नज़र आते हैं. उनकी दाढ़ियाँ बनी सँवरी और चढ़ी हुई होती हैं, या बड़ी शान से सीनों पर गिरी रहती हैं. उनकी दाढ़ियाँ मौलवियों की उन दाढ़ियों से जुदा होती हैं, जो गंदी और उलझी हुई होती हैं और जिनमें कोई .ख़ूबसूरती और शान नहीं होती. पुराने शरीफ़ों की दाढ़ी में एक शान होती थी. वे पट्टे रखते थे, उनमें तेल लगाकर कंघी से सँवारते थे और बीच से माँग निकालते थे. देहली में वे कड़ी दीवार की गोल कामदार टोपियाँ पहनते और लखनऊ में सफ़ेद चिकन की छोटी-छोटी टोपियाँ, जो उनके सर पर बीचो बीच बड़ी सफ़ाई से रखी रहतीं.

लखनऊ वालों की आदत और तर्ज़ तरीक़े में कुछ ज़नानापन पाया जाता. उनकी चाल ढाल में एक ज़नाना लोच होता, जैसा पुराने .ज़माने की मोहज़्ज़िब तवाइफ़ों में पाया जाता था. जब वे सलाम करते, तो उनकी पतली कमर बल खा जाती, उनके हाथों में एक नाचने वाली की सी अदा आजाती. ऐसा मालूम होता है कि ऊपर गर्दन के ख़म और नीचे हाथों की अदा को मिलाकर वे हवा में एक मेहराब बना रहे हैं. इसके बरख़िलाफ़ देहली के लोगों में मरदानगी ज़्यादा है. मैं यहाँ पुराने शरीफ़ों का ज़िक्र कर रहा हूँ.

मेरे दादा का क़द छै .फ़ुट दो इंच था. वह बड़े डील डौल के थे और उनकी रोबदार शख़्सियत थी. उनकी दाढ़ी सफ़ेद थी और बीच में से इधर-उधर चढ़ी रहती थी. उनका सर गंजा था, मगर चारों तरफ़ सफ़ेद और नरम

میرے بچپن کی سب سے زیادہ جیتی جاگتی تصویر میرے دادا کی یاد ہے ۔ وے ایک بڑی بھاری عمر کے بزرگ تھے اور اُن لوگوں میں سے تھے، جو اب قریب قریب نایاب ہیں۔ برطانوی سامراج کے دور دورے اور آمدنی اور خرچ کے پونجی وادی طریقوں کے شروع ہونے کے ساتھ ہی جاگیرداری زمانے کے اِس طرح کے لوگ اب بہت کم نظر آتے ہیں ۔ کبھی کبھی دهلی یا لکھنؤ جیسے شہر کی کسی تنگ گلی میں ہمیں ایسے دو چار لوگ دکھائی دے جاتے ہیں ۔ وے اپنے آس پاس کی چیز سے منھ موڑ لیتے ہیں اور مغربی تہذیب اور خیال کو منظور کرنے سے پرہیز کرتے ہیں ۔ سڑکوں پر چلتے ہوئے شاید اُن کو خود جھینپ معلوم ہوتی ہے ۔ وہ اپنے کو کچھ بیتے ہوئے زمانے کا محسوس کرتے ہیں ۔ غالباً وہ تہذیب کے اِس نئے دور کو پسند نہیں کرتے، جو ان پر لاد دیا گیا ہے ۔ لیکن پھر بھی وے اپنا سر اونچا رکھتے ہیں، شاید یہ سوچ کر کہ وے بھی کبھی کچھ تھے اور اِن کی آنکھوں نے بھی بہت کچھ دیکھا ہے ۔ اِنھوں نے ابھی اپنے لباس کو نہیں چھوڑا ہے اور اب بھی ململ کا انگرکھا اور پرانے طرز کے سرخ رنگ کے جوتے پہنے نظر آتے ہیں ۔ اُن کی داڑھیاں بنی سنوری اور چڑھی ہوئی ہوتی ہیں، یا بڑی شان سے سینوں پر گری رہتی ہیں ۔ اُن کی داڑھیاں مولویوں کی اُن داڑھیوں سے جدا ہوتی ہیں، جو گندی اور اُلجھی ہوئی ہوتی ہیں اور جن میں کوئی خوبصورتی اور شان نہیں ہوتی ۔ پرانے شریفوں کی داڑھی میں ایک شان ہوتی تھی ۔ وے پٹے رکھتے تھے، اُن میں تیل لگا کر کنگھی سے سنوارتے تھے اور بیچ سے مانگ نکالتے تھے ۔ دهلی میں وے کڑی دیوار کی گول کامدار ٹوپیاں پہنتے اور لکھنؤ میں سفید چکن کی چھوٹی چھوٹی ٹوپیاں، جو اُن کے سر پر بیچوں بیچ بڑی صفائی سے رکھی رہتیں ۔

لکھنؤ والوں کی عادت اور طرز طریقے میں کچھ زنانہ پن پایا جاتا ۔ اُن کی چال ڈھال میں ایک زنانہ لوچ ہوتا، جیسا پرانے زمانے کی مہذب طوائفوں میں پایا جاتا تھا ۔ جب وے سلام کرتے، تو اُن کی پتلی کمر بل کھا جاتی، اُن کے ہاتھوں میں ایک ناچنے والی کی سی ادا آجاتی۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اوپر گردن کے خم اور نیچے ہاتھوں کی ادا کو ملا کر وے ہوا میں ایک محراب بنا رہے ہیں ۔ اِس کے برخلاف دهلی کے لوگوں میں مردانگی زیادہ ہے ۔ میں یہاں کے پرانے شریفوں کا ذکر کر رہا ہوں

میرے دادا کا قد چھ فٹ دو انچ تھا۔ وہ بڑے ڈیل ڈول کے تھے اور اُن کی رعب‌دار شخصیت تھی۔ اُن کی داڑھی سفید تھی اور بیچ میں سے اِدھر اُدھر چڑھی رہتی تھی ۔ اُن کا سر گنجا تھا، مگر چاروں طرف سفید اور نرم

मेरे दादा अब्बा

[सन् 1857 के ज़माने के लोगों का एक ख़ाका]

प्रोफ़ेसर अहमद अली एम. ए.

ज़िन्दगी एक दरिया की तरह बहती है और उसके बहाव को कोई नहीं रोक सकता. जब हम ज़िन्दगी के एक ख़ास दौर से गुज़रते हैं, तो उसके बहाव को देख नहीं सकते, क्योंकि हम ख़ुद उसकी रौ में बहते होते हैं, उसके भँवर में फँसे हुए खिंचे-खिंचे चले जाते हैं और हमको ज़िन्दगी का यह बहाव महसूस तक नहीं होता. दरख़्त हवा में झूमते हैं. उनकी नाचती हुई परछाँइयाँ सतह पर अपना अक्स डालती हैं और उनकी पत्तियाँ सर धुनती दिखाई देती है. जीवन की सतह पर हमारी मिसाल भी इन्हीं थरथराती हुई परछाइयों की तरह है—मगर दरिया बहता जाता है, हमारी परछाइयों से लापरवाह और पत्तियों के नाच की तरफ़ बग़ैर रुख़ किये.

कभी-कभी हमें यह ख़्याल आता है कि हम क्या हैं और क्या हो सकते थे, लेकिन जब तूफ़ान सर से गुज़र जाता है, तब हम अपनी नज़र उसपर जमा सकते हैं. उसी वक़्त हम ख़्यालों से आज़ाद होकर उसकी तफ़सीली जाँच कर सकते हैं.

ज़िन्दगी एक झूमता हुआ दरख़्त है, जिसकी तस्वीर कोई कैमरा नहीं उतार सकता. हम तो सिर्फ़ उसकी ज़िन्दगी ही महसूस कर सकते है. उसके लुभावने नाच से लुत्फ़ उठा सकते हैं.

गुज़र जाने के बाद ही हम चीज़ों की कल्पना और उनकी जाँच कर सकते हैं. उनकी ख़ूबसूरती को जान सकते हैं. उसकी ज़बरदस्त गहराई को महसूस कर सकते हैं.

यादद्दाश्त में तूफ़ान की याद नहीं रहती. राजनैतिक उथल पुथल का निशान तक नहीं होता और हम पर आज-कल जो गुज़र रही है, उसकी याद हम से बहुत दूर होती है. खाने कमाने के लिये कशमकश, इनसानियत का शानदार जीवन-संग्राम और अपनी हालत की बहतरी और हक़ के लिये जंग, हमारी याददाश्त से सब बहुत दूर होते हैं. याद दिल के सारे ज़ख़्मों को भर देती है. सब मत भेद मिट जाते हैं क्योंकि याद, जो थके हुए दिलों को लोरियाँ देकर सुला देती है, इन्साफ़ को अज़ीज़ है.

میرے دادا ابا

[سن 1857 کے زمانے کے لوگوں کا ایک خاکہ]

پروفیسر احمد علی، ایم اے۔

زندگی ایک دریا کی طرح بہتی ہے اور اس کے بہاؤ کو کوئی نہیں روک سکتا۔ جب ہم زندگی کے ایک خاص دور سے گزرتے ہیں، تو اُس کے بہاؤ کو دیکھ نہیں سکتے، کیونکہ ہم خود اُس کی رو میں بہتے ہوتے ہیں، اُس کے بھنور میں پھنسے ہوئے کھنچے کھنچے چلے جاتے ہیں اور ہم کو زندگی کا یہ بہاؤ محسوس تک نہیں ہوتا۔ درخت ہوا میں جھومتے ہیں۔ اُن کی ناچتی ہوئی پرچھائیاں سطح پر اپنا عکس ڈالتی ہیں اور اُن کی پتیاں سر دھنتی ہوئی دکھائی دیتی ہیں۔ جیون کی سطح پر ہماری مثال بھی انہیں تھرتھراتی ہوئی پرچھائیوں کی طرح ہے—مگر دریا بہتا جاتا ہے، ہماری پرچھائیوں سے لاپرواہ اور پتیوں کے ناچ کی طرف بغیر رخ کئے۔

کبھی کبھی ہمیں یہ خیال آتا ہے کہ ہم کیا ہیں اور کیا ہو سکتے تھے، لیکن جب طوفان سر سے گزر جاتا ہے، تب ہم اپنی نظر اُس پر جما سکتے ہیں۔ اُسی وقت ہم خیالوں سے آزاد ہو کر اُس کی تفصیلی جانچ کر سکتے ہیں۔

زندگی ایک جھومتا ہوا درخت ہے، جس کی تصویر کوئی کیمرا نہیں اُتار سکتا۔ ہم تو صرف اُس کی زندگی ہی محسوس کر سکتے ہیں۔ اُس کے لبھاونے ناچ سے لطف اُٹھا سکتے ہیں۔

گزر جانے کے بعد ہی ہم چیزوں کی کلپنا اور اُن کی جانچ کر سکتے ہیں اُن کی خوبصورتی کو جان سکتے ہیں۔ اُس کی زبردست گہرائی کو محسوس کر سکتے ہیں۔

یادداشت میں طوفان کی یاد نہیں رہتی۔ راجنیتک اُتھل پتھل کا نشان تک نہیں ہوتا اور ہم پر آجکل جو گزر رہی ہے، اُس کی یاد ہم سے بہت دور ہوتی ہے۔ کھانے کمانے کے لئے کشمکش، انسانیت کا شاندار جیون سنگرام اور اپنی حالت کی بہتری اور حق کے لئے جنگ، ہماری یادداشت سے سب بہت دور ہوتے ہیں۔ یاد دل کے سارے زخموں کو بھر دیتی ہے، سب مت بھید مٹ جاتے ہیں کیونکہ یاد، جو تھکے ہوئے دلوں کو لوریاں دے کر سلا دیتی ہے، انصاف کو عزیز ہے۔

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

افلاس

ڈاکٹر اثر مینائی

کل سر راہ زمانے نے تماشا دیکھا،
ایک انسان کو فاقوں سے تڑپتا دیکھا۔

پیٹ تلوار کی مانند کھنچا پیٹھ تلک،
ایسی تصویر کہ تھا لرزہ براندام فلک۔

زندگی کرب سے دم توڑ رہی تھی ایسے،
راہ الفت میں تڑپتا ہوا بسمل جیسے۔

ایسی تصویر کا ہر شخص تماشائی تھا،
مرتا انسان بھی زندوں کا مگر بھائی تھا۔

موت کا تھا یہ تقاضا کہ رگ جاں نہ رہے،
وحشی تانے ہوئے تلوار کہ انساں نہ رہے۔

بہر امداد کوئی دست حمیت نہ بڑھا،
اور بسمل کا ادھر خاتمہ بالخیر ہوا۔

میرے دل پر وہ اثر تھا کہ زباں تھی خاموش،
مضمحل ہو گئے اعضا کہ رہا کوئی نہ ہوش۔

کتنے مفلس یونہی روزانہ گذر جاتے ہیں،
یعنی افلاس سے بےموت ہی مر جاتے ہیں۔

کشمکش ہائے جنوں چاہئے جینے کے لئے،
ایک طوفان ہے درکار سفینے کے لئے۔

وہ جنوں خیزئی پیہم جو سلاسل توڑے،
موج طوفان ہے جو سینۂ ساحل توڑے۔

عقل بیدار ہے انسان سمجھدار ہے آج
اپنے بس میں ہے 'اثر' ایسی تباہی کا علاج

इफ़लास

डाक्टर असर मीनाई

कल सरे राह१ ज़माने ने तमाशा देखा,
एक इन्सान को फ़ाक़ों से तड़पता देखा.

पेट तलवार की मानिन्द खिंचा पीठ तलक,
ऐसी तस्वीर कि था लर्ज़ा बरअन्दाम२ फ़लक३.

ज़िन्दगी कर्ब४ से दम तोड़ रही थी ऐसे,
राहे उल्फ़त५ में तड़पता हुआ बिस्मिल६ जैसे.

ऐसी तस्वीर का हर शख़्स तमाशाई था,
मरता इन्सान भी ज़िन्दों का मगर भाई था.

मौत का था ये तक़ाज़ा७ कि रगे जाँ८ न रहे,
वहशी९ ताने हुए तलवार कि इन्साँ न रहे.

बहरे इम्दाद१० कोई दस्ते हमैयत११ न बढ़ा,
और बिस्मिल का उधर ख़ात्मा बिल्ख़ैर१२ हुआ.

मेरे दिल पर वह असर था कि ज़ुबाँ थी ख़ामोश,
मुज़्महिल१३ हो गए आज़ा१४ कि रहा कोई न होश.

कितने मुफ़लिस१५ यों ही रोज़ाना गुज़र जाते हैं,
यानी इफ़लास१६ से बेमौत ही मर जाते हैं.

कशमकशहाए१७ जुनूँ चाहिये जीने के लिये,
एक तूफ़ान है दरकार१८ सफ़ीने१९ के लिये.

वो जुनूँ ख़ेज़िये२० पैहम२१ जो सलासिल२२ तोड़े,
मौजे तूफ़ान है जो सीनए साहिल२३ तोड़े.

अक़्ल बेदार२४ है इन्सान समझदार है आज
अपने बस में है 'असर' ऐसी तबाही का इलाज

१—मार्ग में, २—थर्राया हुआ, ३—आकाश, ४—बेचैनी, ५—प्रेम, ६—घायल, ७ लगादा, ८—प्राण की नस, ९—जङ्गली, १०—सहायता के लिये, ११—सहायता का हाथ, १२—मृत्यु, १३—ढीले, १४—अंग, १५—निर्धन, १६—निर्धनता, १७—खींच तान, १८—आवश्यकता, १९—बेड़ा, २०—पागलपन, २१—लगातार, २२—बंधन, २३—तट २४—जाग्रत.

यह वह पृष्ठ भूमि थी जिसपर सन् 1857 की आ.जादी की क्रान्ति का सिरजन हुआ. एक भोजपुरी कवि इसकी तस्वीर खींचता हुआ कहता है:—

बड़ा अकाल रोग देसवा मा बाटे,
बिपता के बादल गड़गड़ बोले।
दुखवा के नदिया अगम जल पनिया,
जुलम के हउवा सन् सन् डोले।

और तब यह ग्रामकवि साहस बटोरकर पेशीनगोई करता है कि.—

अब तोर नइया न बचिहे बिदेसिया,
'राम नाम सत्त' अब नदिया में होले।

आज जब हम सन् 1857 की आ.जादी की लड़ाई का सौ साला जश्न, शताब्दी समारोह, मना रहे हैं तो वह पेशीनगोई कितना सच बनी हुई है.

[इस लेख के लिखने में हमें भाई प्रकाश चन्द्र जी गुप्त, श्री मिठाई लाल जायसवाल, श्री सुरेश सिंह, श्री वचनेश और श्रीमती सुशीला देवी आदि से अनमोल सहायता मिली —लेखक]

गुलामी के साथ मानवता की मित्रता

श्री अब्दुलहलीम अन्सारी

आजादी आगई, आजादी आने के मानी .गुलामी चली गई. लेकिन मालूम ऐसा होता है कि .गुलामी के साथ मानवता भी गई. क्या .गुलामी ऐसी ही अच्छी चीज़ थी कि मानवता जैसी शुद्ध और सुन्दर चीज़ को वह अपने साथ ले जाये या मानवता .खुद उसके साथ हो गई केवल उसकी अच्छाई, के कारण—होगी उसमें जरूर कोई .खूबी और अच्छाई वरना मानवता को तो आजादी का ही साथदेना चाहिये था.बिना मानवता के आजादी कैसी सूनी सूनी और बेरौनक़ सी है ! कितना भयानकपन है उसके वातावरन में !

मानवता ने अपने असर से .गुलामी को इन्सानियत के क़ालिब में ढाला था. तहज़ीब का जामा पहनाया था. जब .गुलामी मानवता,के रङ्ग रूप में अच्छी तरह ढल गई तो इसने उससे दोस्ती गाँठी. इसकी दोस्ती भी दो सौ बरस पुरानी और तारीख़ी दोस्ती थी. इस पुरानी दोस्ती के नाते यह उसके साथ हो ली. दोस्ती का हक़ भी अदा किया और मशरिक़ी रवादारी को भी निभाया. हम ऐसा ख़याल भी नहीं कर सकते थे मगर यह एक नये प्रकार का अनुभव जो हम को हुआ है उसकी बिना पर कोई शक और शंका की गुन्जाइश नहीं रह जाती है अब.

یہ وہ پرشٹھ بھومی تھی جس پر سن 1857 کی آزادی کی کرانتی کا سرجن ہوا ۔ ایک بھوجپوری کوی اِس کی تصویر کھینچتا ہوا کہتا ہے :—

بڑا اکال روگ دیسوا ما باٹے،
بپتا کے بادل گڑ گڑ بولے !
دکھوا کے ندیا اگم جل پنیا،
جلم کے ہووا سن سن ڈولے !

اور تب یہ گرام کوی ساہس بٹور کر پیشینگوئی کرتا ہے کہ :—

اب تور نیا نہ بچیہے بدیسیا،
'رام نام ست' اب ندیا میں ہولے !

آج جب ہم سن 1857 کی آزادی کی لڑائی کا سوسالہ جشن، شتابدی سماروہ منا رہے ہیں تو وہ پیشینگوئی سچ بنی ہوئی ہے ۔

[اس لیکھ کے لکھنے میں ہمیں بھائی پرکاش چندر جی گپت شری مٹھائی لال جیسوال، سری، سریش سنگھ، شری وچنیش شریمتی سوشیلا دیوی آدی سے انمول سہایتا ملی— لیکھک]

غلامی کے ساتھ مانوتا کی مترتا

شری عبدالحلیم انصاری

آزادی آ گئی ۔ آزادی آنے کے معنی غلامی چلی گئی ۔ لیکن معلوم ایسا ہوتا ہے کہ غلامی کے ساتھ مانوتا بھی گئی ۔ کیا غلامی ایسی ہی اچھی چیز تھی کہ مانوتا جیسی شدھ اور سندر چیز کو وہ اپنے ساتھ لے جائے یا مانوتا خود اُس کے ساتھ ہو گئی کیول اُس کی اچھائی کے کارن—ہوگی اُس میں ضرور کوئی خوبی اور اچھائی، ورنہ مانوتا کو تو آزادی کا ہی ساتھ دینا چاہئے تھا ۔ بنا مانوتا کے آزادی کیسی سونی سونی اور بےرونق سی ہے ! کتنا بھیانک پن ہے اِس کے واتاورن میں !

مانوتا نے اپنے اثر سے غلامی کو اِنسانیت کے قالب میں ڈھالا تھا ۔ تہذیب کا جامہ پہنایا تھا ۔ جب غلامی مانوتا کے رنگ روپ میں اچھی طرح ڈھل گئی تو اِس نے اُس سے دوستی گانٹھی ۔ اِس کی دوستی بھی دو سو برس پرانی اور تاریخی دوستی تھی ۔ اِس پرانی دوستی کے ناتے یہ اُس کے ساتھ ہو لی ۔ دوستی کا حق بھی ادا کیا اور مشرقی رواداری کو بھی نبھایا ۔ ہم ایسا خیال بھی نہیں کر سکتے تھے مگر یہ ایک نئے پرکار کا انوبھو جو ہم کو ہوا ہے اُس کی بنا پر کوئی شک اور شنکا کی گنجائش نہیں رہ جاتی ہے اب ۔

होइ गइले कंगाल हो बिदेसी तोरे रजवा में । टेक ।
सोनवा के थाली डइवाँ जेवना जेंवत रहलीं,
कठवा के डोकिया के होइ गइल मुहाल हो ॥बिदेसी तोरे०॥
भारत के लोग आज दाना बिना तरसे भैया ।
लन्दन के कुत्ता उड़ावें मज़ा माल हो ॥ बिदेसी तोरे० ॥

ऐसी अकाल की सूरत में सन् 57 की तहरीक शुरू हुई. उसे दबाने के लिये कम्पनी की सरकार ने जो .जुल्म और अनीति की उससे तहरीक तो दब गई, हिन्दुस्तानियों के दिल में डर तो बैठ गया लेकिन भुखमरी दूर न हो सकी. रसराज कवि कहते हैं :—

ग़दर ग़नीम ,ग़ुबार उठयो, सतावन में सिगरे जग जानी।
केते अनीति अनीति कियो, सब हिन्द प्रजा हिय में भय मानी ॥

देश की उस समय की हालत पर समकालीन कवि 'प्रेम धन' लिखते हैं:—

भागो भागो अब काल पड़ा है भारी
भारत पे घेरी घटा बिपत की कारी.
सब गये बनज-व्यापार इतैं सो भागी,
उद्यम पौरुष नहि दिये बनाय अभागी.
अब बची खुची खेती हूँ खिसकन लागी,
चारहुँ दिसि लागी है मँहगी की आगी,
सुनिये चिलायँ सब परजा भई भिखारी,
भागो भागो अब काल पड़ा है भारी.

अंगरेज़ी राज में भारत की दरिद्रता की एक दूसरी झाँकी भारतेन्दु के शब्दों में देखें:—

कल के कलबल छलन सों छले इतै के लोग,
नित नित धन सों घटत है, बाढ़त हैं दुःख सोग.
मारकीन मलमल बिना चलत कछू नहिं काम,
परदेसी जुलहान के मानहु भए ग़ुलाम.
बस्त्र काँच काग़ज़ क़लम चित्र खिलौने आदि,
आवत सब परदेस सों नितहिं जहाज़न लादि.

उस .जमाने के बंगाली देशभक्त बजाय क्रान्ति के महज़ लेकचर और तक़रीरों के .जरिये देश की हालत सुधारने पर एतक़ाद रखते थे. उनपर फब्ती कसते हुए प्रतापनारायन मिश्र कहते हैं:—

सर्वस लिये जात अंगरेज़,
हम केवल 'लयकचर' के तेज.
श्रम बिनु बातें का करती हैं,
कहुँ टेटकन गाजें टरती हैं.
अपनो काम आपने ही हाथ भल होई,
परदेशिन परधर्मा ते आशा नहिं कोई.

ھوئی گیلے کنگال ھو بدیسی تورے رجوا میں؛ ٹیک ۔
سونوا کے تھالی جھوان جیونا جیلوت رھلیں'
کٹھوا کے ڈوکیا کے ھوئی گئول محال ھو ۔ ودیسی تورے...
بھارت کے لوگ آج دانا بنا ترسے بھیا'
لندن کے کتا اڑاویں مجا مال ھو ۔ ودیسی تورے ۔

ایسی اکال کی صورت میں سن 57 کی تحریک شروع ھوئی۔ اسے دبانے کے لئے کمپنی کی سرکار نے جو ظلم اور انیتی کی اس سے تحریک تو دب گئی' ھندستانیوں کے دل میں ڈر تو بیٹھ گیا لیکن بھکمری دور نہ ھو سکی ۔ رسراج کوی کہتے ھیں :—

غدر غنیم غبار اٹھیو' ستاون میں سگرے جگ جانی'
کیتے انیتی انیتی کیو' سب ھند پرجا ھیئے میں بھئے مانی ۔

دیش کی اس سمے کی حالت پر سمکالین کوی 'پریم دھن' لکھتے ھیں :—

بھاگو بھاگو اب کال پڑا ھے بھاری'
بھارت پر گھیری گھٹا بپت کی کاری ۔
سب گئے بنج ویاپار اتیں سو بھاگی'
ادیم پوروش نسی دیئے بنائے ابھاگی ۔
اب بچی کھچی کھیتی ھوکھسکن لاگی'
چار ھوں دس لاگی ھے مہنگی کی آگی ۔
سنیئے چلائیں سب پرجا بھئی بھکاری'
بھاگو بھاگو اب کال پڑا ھے بھاری ۔

انگریزی راج میں بھارت کی دردرتا کی ایک دوسری جھانکی بھارتیندو کے شبدوں میں دیکھیں :—

کل کے کلبل چھلن سوں چھلے اتے کے لوگ'
نت نت دھن سوگھٹت ھے' باڑھت ھیں دکھ سوگ ۔
مارکین ململ بنا چلت کچھو نہیں کام'
پردیسی جلھن کے مانھو بھئے غلام ۔
وستر کانچ کاغذ قلم چتر کھلونے آدی'
اوت سب پردیس سوں نت ھیں جہازن لادی ۔

اس زمانے کے بنگالی دیش بھگت بجائے کرانتی کے محض لیکچر اور تقریروں کے ذریعے دیش کی حالت سدھارنے پر اعتقاد رکھتے تھے ۔ ان پر پھبتی کستے ھوئے پرتاپ نارائن مشر کہتے ھیں :—

سربس لئے جات انگریز'
ھم کیول 'لکچر' کے تیز ۔
شرم بن باتیں کا کرتی ھیں'
کہوں ٹیٹکن گاجیں ٹرتی ھیں ۔
اپنو کام اپنے ھی ھاتھ بھل ھوئی'
پردیشن پردھرمی تے آشا نہیں کوئی ۔

"जिस मजबूती और धीरज के साथ तात्या इस बग़ावत की रहनुमाई कर रहा है वह सचमुच हैरतनाक है. वह हमारा सबसे चतुर शत्रु साबित हुआ. पिछले एक बरस से उसने मध्य भारत और मध्य प्रदेश में तहलका मचा रखा है. वह हमारे फ़ौजी पड़ावों को रौंद डालता है, खज़ानों को लूट लेता है और हमारी मैगज़ीनों को खाली कर देता है. उसने .फौजें जमा की और खोई हैं. लड़ाइयाँ लड़ी हैं और हारी हैं, तोपें हासिल की हैं और उन्हें खोया है. उसके .फौजी कूच इतने तेज़ होते हैं जैसे बिजली कौंध जाय. अठवारों वह तीस-तीस और चालीस-चालीस मील के हिसाब से कूच करता है, कभी नर्मदा के इस पार और कभी उस पार. हमारी दर्जनों फ़ौजों के कभी वह बीच से निकल जाता है, कभी पीछे से, कभी दायें से और कभी बायें से, कभी घाटियों से और कभी दलदलों से. हमारी एक लाख .फौज उसे पकड़ने की कोशिश कर रही है पर वह हाथ नहीं आता."

जाहिर है ऐसा अद्भुत वीर कवियों के लिये प्रेरणा का स्रोत बन जाता. लेकिन अफ़सोस है अब तक हमें सिवाय एक कविता के तात्या से सम्बन्धित कोई समकालीन कविता नहीं मिली. कवि ने, जो कानपुर का निवासी है, भारत वासियों से तात्या की पुकार अर्ज़ की है. कवि के शब्दों में तात्या कहते हैं कि एक कमान, एक झंडा, एक हुक्म या अनुशासन का पालन करने से ही देश का उद्धार हो सकता है. हम देश का मान बचाने के लिये अपनी जानों को गँवाने के लिये तैयार रहें तभी विदेशियों का संहार होगा और तभी सच्ची शान्ति या अमन क़ायम होगा. गीत के बोल हैं :—

सुनो वीरो, तात्या की पुकार हो !
एकै निसनवाँ हो रामा,
एकै कमनवाँ हो रामा,
एकै हुकुमवा हो रामा,
तबै देसवा के होई उद्धार हो !
जाये परनवा हो रामा
बचै देसुआ के मानवा हो, रामा,
तबै छाई अमनवा हो रामा,
तबै होई फिरंगिया संहार हो !

सन् 1757 की प्लासी की लड़ाई के बाद 1857 तक ईस्ट इन्डिया कम्पनी की आर्थिक या इक़्तसादी नीति ने सारे देश को कङ्गाल बना दिया था. आये दिन भुखमरी और मौत सर पर नाच रही थी. सन 1765 में जब से दीवानी के अधिकार कम्पनी को मिले थे उसकी लगान नीति ने अनगिनत किसानों को खेत छोड़कर भाग जाने पर मजबूर कर दिया था. उद्योग-धन्धे नष्ट हो रहे थे और क़हत सर पर मंडरा रहा था. देश की इस आर्थिक स्थिति की तस्वीर खींचते हुए एक कवि कहता है :—

"جس مضبوطی اور دھیرج کے ساتھ تاتیا اِس بغاوت کی ہدایت کر رہا ہے وہ سچ مچ حیرتناک ہے. وہ ہمارا سب سے چتر شترو ثابت ہوا. پچھلے ایک برس سے اُس نے مدھیہ بھارت اور مدھیہ پردیش میں تہلکہ مچا رکھا ہے. وہ ہمارے فوجی پڑاؤں کو روند ڈالتا ہے، خزانوں کو لوٹ لیتا ہے اور ہماری میگزینوں کو خالی کر دیتا ہے. اُس نے فوجیں جمع کیں اور کھوئی ہیں، لڑائیاں لڑی ہیں اور ہاری ہیں، توپیں حاصل کی ہیں اور اُنہیں کھویا ہے. اُس کے فوجی کوچ اِتنے تیز ہوتے ہیں جیسے بجلی کوندہ جائے. اٹھواروں وہ تیس تیس اور چالیس چالیس میل کے حساب سے کوچ کرتا ہے، کبھی نرمدا کے اِس پار اور کبھی اُس پار. ہماری درجنوں فوجوں کے کبھی وہ بیچ سے نکل جاتا ہے، کبھی پیچھے سے اور کبھی دائیں سے اور کبھی بائیں سے، کبھی گھاٹیوں سے اور کبھی دلدلوں سے. ہماری ایک لاکھ فوج اُسے پکڑنے کی کوشش کر رہی ہے پر وہ ہاتھ نہیں آتا."

ظاہر ہے ایسا ادبھت ویر کویوں کے لئے پریرنا کا سروت بن جاتا. لیکن افسوس ہے اب تک ہمیں سوائے ایک کویتا کے تاتیا سے سمبندھت کوئی سمکالین کویتا نہیں ملی. کوی نے، جو کانپور کا نواسی ہے، بھارت واسیوں سے تاتیا کی پکار عرض کی ہے. کوی کے شبدوں میں تاتیا کہتے ہیں کہ ایک کمان، ایک جھنڈا، ایک حکم یا انوشاسن کا پالن کرنے سے ہی دیش کا اُدھار ہو سکتا ہے. ہم دیش کا مان بچانے کے لئے اپنی جانوں کو گنوانے کے لئے تیار رہیں تبھی ودیشیوں کا سنگھار ہوگا اور تبھی سچی شانتی یا امن قایم ہوگا. گیت کے بول ہیں :—

سنو ویرو، تاتیا کی پکار ہو !
ایکے نسنوا ہو راما،
ایکے کمنوا ہو راما،
ایکے حکموا ہو راما،
تبے دیسوا کے ہوئی اُدھار ہو !
جائے پرنوا ہو راما،
بچے دیسوا کے منوا ہو راما،
تبے چھائی امنوا ہو راما،
تبے ہوئی فرنگیا سنہار ہو !

سن 1757 کی پلاسی کی لڑائی کے بعد 1857 تک ایسٹ انڈیا کمپنی کی آرتھک یا اقتصادی نیتی نے سارے دیش کو کنگال بنا دیا تھا. آئے دن بھکمری اور موت سر پر ناچ رہی تھی. سن 1765 میں جب سے دیوانی کے ادھیکار کمپنی کو ملے تھے اُس کی لگان نیتی نے انگنت کسانوں کو کھیت چھوڑ کر بھاگ جانے پر مجبور کر دیا تھا. اُدیوگ دھندے نشٹ ہو رہے تھے اور قحط سر پر منڈرا رہا تھا. دیش کی اِس آرتھک استھتی کی تصویر کھینچتے ہوئے ایک کوی کہتا ہے :—

मध्य भारत पर अंग्रेज़ों ने जब फिर से क़ब्ज़ा किया और नतीजे में देशवासियों को ज़ुल्म सहने पड़े, उसे मालवी लोक गीतों में एक 'आफ़त' और 'काली बदली' कहकर याद किया गया है :—

देस पर आफ़त आइगी हो,
देस पर आफ़त आइगी हो,
डुबो फिरंगी राज,
बादली काली छाइगी हो.

आज़ादी की जंग में जब अपनी ताक़त को काफ़ी नहीं समझा गया तो देवी देवताओं की मदद के लिये भी दुआ माँगी गई. इस तरह की एक मिसाल हमें मध्यप्रदेश के कवि के बोल में मिलती है. बाबू कुँअरसिंह के प्रोत्साहन से जबलपुर के गोंड राजा शंकर शाह और उनके जेठे कुमार मैदाने जङ्ग में कूद पड़े. कवि उनकी कामयाबी के लिये कालीमाई से प्रार्थना करता है और कहता है कि शंकर शाह का एक एक सिपाही ऐसा ताक़तवर बन जाय कि हज़ार दुश्मनों का मुक़ाबला कर सके. बोल के शब्द हैं :—

तू है शत्रु विनाशिन माई!
कर शत्रू संहार मइया!
शंकरशाह है दास तिहारा
दास का रखले मान मइया!
आज फ़िरंगी बचने न पाये
गह कर में तलवार मइया!
शंकर का एक एक सिहहिया
कर तू उसे हज़ार मइया!
माँ कालिका बने रणचन्डी
बहे रुधिर की धार मइया!
अब देरी का काम नहीं है
भारत करे पुकार मइया!
सुनकर आर्त गुहार मइया
अब तू ले अवतार मइया!

कालिका ने कवि की पुकार सुनी या नहीं लेकिन बलिदान की देवी ने शंकरशाह की पुकार सुनी. जबलपुर के परेड के मैदान में शंकरशाह और उनका पुत्र और सैकड़ों देशभक्त सैनिक तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिये गये. जिन लोगों ने उस नज़ारे को देखा है वे स्वीकार करते हैं कि शंकरशाह और उनके साथी जब तोप के मुँह से उड़ाये गये तो उनके ओठों पर मुस्कुराहट थी.

इतिहास लेखक सर जान के के अनुसार तात्याटोपे, जिनका असली नाम रामचन्द्र पाण्डुरङ्ग था, सन् 57 के स्वाधीनता संग्राम के क़ाबिल से क़ाबिल सलाहकारों में से थे. आज़ादी की लड़ाई शुरू होने से लेकर अपनी फाँसी के दिन तक, यानी 18 अप्रैल सन् 1859 तक तात्या बिना रुके और बिना थके अंग्रेज़ी हुकूमत से मोरचा लेते रहे. 17 जनवरी सन् 1859 को लन्दन टाइम्स ने लिखा था :—

مدهیه بھارت پر انگریزوں نے جب پھر سے قبضه کیا اور نتیجے میں دیش واسیوں کو ظلم سہنے پڑے' اُسے مالوی لوک گیتوں میں ایک 'آفت' اور 'کالی بدلی' کہکر یاد کیا گیا هے :—

دیس پر آفت آئیگئی هو'
دیس پر آفت آئیگی هو'
ڈوبو پھرنگی راج'
بادلی کالی چھئے گی هو.

آزادی کی جنگ میں جب اپنی طاقت کو کافی نہیں سمجھا گیا تو دیوی دیوتاؤں کی مدد کے لئے بھی دعا مانگی گئی. اِس طرح کی ایک مثال همیں مدهیه پردیش کے کوی کے بول میں ملتی هے. بابو کنور سنگھ کے پروتساهن سے جبلپور کے گونڈ راجه شنکر شاه اور اُن کے جیٹھے کمار میدان جنگ میں کود پڑے. کوی اُن کی کامیابی کے لئے کالی مائی سے پرارتھنا کرتا اور کہتا هے که شنکر شاه کا ایک ایک سپاهی ایسا طاقتور بن جائے که هزار دشمنوں کا مقابلہ کر سکے. بول کے شبد هیں :—

تو هے شترو وناشن مائی
کر شترو سنگھار میا!
شنکرشاه هے داس تہارا
داس کا رکھ لے مان میا!
آج فرنگی بچنے نه پائے
گہه کر میں تلوار میا!
شنکر کا ایک ایک سپهیا
کر تو اُسے هزار میا!
ماں کالکا بنے رن چنڈی
بہے رودهر کی دهار میا!
اب دیری کا کام نہیں هے
بھارت کرے پکار میا!
سن کر آرت گوهار میا
اب تو لے اوتار میا!

کالکا نے کوی کی پکار سنی یا نہیں لیکن بلیدان کی دیوی نے شنکر شاه کی پکار سنی. جبلپور کے پریڈ کے میدان میں شنکر شاه اور اُن کا پتر اور سیکڑوں دیش بھکت سینک توپ کے منه سے باندهکر اُڑا دیئے گئے. جن لوگوں نے اُس نظارے کو دیکھا هے وہ سویکار کرتے هیں که شنکر شاه اور اُن کے ساتھی جب توپ کے منه سے اُڑائے گئے تو اُن کے هونٹھوں پر مسکراهٹ تھی.

اِتہاس لیکھک سرجان کے کے انوسار تانتیا ٹوپے' سنگرام کے قابل سے قابل سپهسالاروں میں سے تھے. آزادی کی لڑائی شروع هونے سے لیکر اپنی پھانسی کے دن تک' یعنی 18 اپریل سن 1859 تک تانتیا بنا رکے اور بنا تھکے انگریزی حکومت سے مورچه لیتے رهے. 17 جنوری سن 1859 کو لندن ٹائمس نے لکھا تھا :—

राजस्थान में सन् 1857 की आज़ादी की तहरीक के नेता आउवा जागीर के ठाकुर .ख़ुशालसिंह थे. मारवाड़ के उस ख़ित्ते में, होली के मौक़े पर, आउवा ठाकुर के यश-गान की पुरानी धुन अब भी सुनाई देती है :—

ढोल बाजे, थाली बाजे, भेलो बाजे बाँकियो,
अजंट ने ओ मारने दरवाजे नाकियो,
जू´झै आउवो.
है ओ जूँझै आउवो, आउवो मुल्कों में चावो ओ,
जूँझै आउवो.

25 अगस्त सन् 1857 को एरनपुरा और डीसा की हिन्दुस्तानी फ़ौजों ने बग़ावत करदी और मारवाड़ से होकर कूच शुरू किया. इन फ़ौजों ने .ख़ुशहालसिंह को अपना नेता और कमाण्डर बनाया. जोधपुर के राजा ने पोलिटिकल एजेंट, सर हेनरी लारेन्स को फ़ौजी मदद भेजी. देशभक्त ठिकानेदारों में आसोप-गूलर, आलनियावास, लांबिया और भिवालिया और सामन्तों में मेवाड़ के सलुम्बर व रूपनगर के सामन्तों ने .ख़ुशालसिंह का साथ दिया. जोधपुर का पोलिटिकल एजेंट कैप्टेन मेसन .फ़ौज लेकर आउवा गया लेकिन मारा गया. अंग्रेज़ी सेना ने आउवा पर फिर धावा बोला लेकिन .ख़ुशालसिंह के आगे उसकी एक न चली. दुश्मन के दो हज़ार सैनिक काम आये. अंगरेज़ों की इस हार ने आउवा को सन् 57 के आज़ाद हिन्दुस्तान के नक़्शे में चमका दिया. अजमेर, नसीराबाद, नीमच और मऊ की छावनियों को हिन्दुस्तानी .फ़ौजों ने आज़ादी का बिगुल बजाकर आउवा की तरफ़ कूच किया. लेकिन इन .फ़ौजों के पहुँचने के पहिले ही तीसरी बार के ज़बर्दस्त हमले में महाराजा जोधपुर की मदद से आउवा की पुरानी गढ़ी धूल में मिला दी गई. .ख़ुशहालसिंह ने जङ्गलों में पैठकर छापामार लड़ाई का तरीक़ा अख़्तियार किया. कोठारिया के रावत जोधसिंह ने .ख़ुशहालसिंह का पूरा साथ दिया. राजस्थान के तत्कालीन चारण कवियों ने .ख़ुशहालसिंह की कीर्ति को गाँव-गाँव में पहुँचा दिया. उन्हीं का एक दोहा देखें :—

थिर रण अड़ियाँ योगणो, नवपुर पूगो नाम,
आउवो खुसियाल हल, गावे गाँमो गाँव.

.ख़ुशालसिंह के साथ साथ जोधसिंह की भी तारीफ़ राजस्थानी कवियों ने गाई. बानगी का एक छप्पय सुनें :—

मारे दोय अजंट खून मरधर रो कीनो,
फिर फौजां बहुं ओर जोर अंगरेजां दीनो
मगरां बिच फिरतो, सहर सलूम्बर आयो,
सवणां रावत सुणैं, कथन नराकार के वायो.
पलटिया देय दूजी दसा, सगा सरब ही पलटिया !
कम धम खुसाल चांपा-तिलक, रावत जोधे राखिया.

راجستھان میں سن 1857 کی آزادی کی تحریک کے نیتا آؤوا جاگیر کے ٹھاکر خوشحال سنگھ تھے۔ مارواڑ کے اس خطہ میں، ہولی کے موقع پر، آؤوا ٹھاکر کے یش گان کی پرانی دھن اب بھی سنائی دیتی ہے :—

ڈھول باجے، تھالی باجے، بھیلو باجے بانکیو،
اجنٹ نے او مارنے دروازے ناکیو .
جونجھے آؤوو .
ہے او جونجھے آؤوو، آؤوو ملکاں میں چاوو او،
جونجھے آؤوو .

25 اگست سن 1857 کو ایرنپورہ اور ڈیسا کی ہندستانی فوجوں نے بغاوت کردی اور مارواڑ سے ہو کر کوچ شروع کیا۔ ان فوجوں نے خوشحال سنگھ کو اپنا نیتا اور کمانڈر بنایا۔ جودھپور کے راجا نے پولیٹکل ایجنٹ، سر ہینری لارینس، کو فوجی مدد بھیجی، دیش بھکت ٹھکانیداروں آسوپ میں گولر، آلنیاواس، لامبیا اور بھوالیا اور سامنتوں میں میواڑ کے سلومبر و روپ نگر کے سامنتوں نے خوشحال سنگھ کا ساتھ دیا۔ جودھپور کا پولیٹکل ایجنٹ کیپٹن میسن فوج لیکر آؤوا گیا لیکن مارا گیا۔ انگریزی سینا نے آؤوا پر پھر دھاوا بولا لیکن خوشحال سنگھ کے آگے اس کی ایک نہ چلی۔ دشمن کے دو ہزار سینک کام آئے۔ انگریزوں کی اِس ہار نے آؤوا کو سن 57 کے آزاد ہندستان کے نقشہ میں چمکا دیا۔ اجمیر، نصیرآباد، نیمچ اور مئو کی چھاونیوں کی ہندستانی فوجوں نے آزادی کا بگل بجا کر آؤوا کی طرف کوچ کیا۔ لیکن اِن فوجوں کے پہونچنے کے پہلے ہی تیسری بار کے زبردست حملہ میں مہاراجہ جودھپور کی مدد سے آؤوا کی پرانی گڑھی دھول میں ملا دی گئی۔ خوشحال سنگھ نے جنگلوں میں پیٹھ کر چھاپا مار لڑائی کا طریقہ اختیار کیا۔ کوٹھاریا کے راوت جودھ سنگھ نے خوشحال سنگھ کا پورا ساتھ دیا۔ راجستھان کے تتکالین چارن کویوں نے خوشحال سنگھ کی کیرتی کو گاؤں گاؤں میں پہونچا دیا۔ انہیں کا ایک دوہا دیکھیں :—

تھر رن اڑیاں یوگنے، نوپور پوگو نام،
آؤوو کھوسیال ہل، گاوے گامو گام .

خوشحال سنگھ کے ساتھ ساتھ جودھ سنگھ کی بھی تعریف راجستھانی کویوں نے گائی۔ بانگی کا ایک چھپیہ سنیں :—

مارے دویہ اجنٹ کھون مرو دھر روکینو،
پھر پھوجاں چھوں اور جور انگریجاں دینو .
منگراں بچ پھرتو، سہر سلومبر آیو،
سرونا راوت سنیں، کتھن نرکار کے وایو .
پلٹیا دیو دوجی دسا، سگا سرب ہی پلٹیا،
کم دھم کھو سال چانپا تلک، راوت جودھے راکھیا .

सगरे सिपहियों को पेड़ा जलेबी, अपने चबाई गुड़धानी,
अरे झाँसी वाली रानी, खूब लड़ी मरदानी,
छोड़ मोरचा भागे फिरंगी ढूँढ़ेहु मिलै नहिं पानी,
अरे झाँसी वाली रानी, खूब लड़ी मरदानी.

उस जमाने के इसी तरह के एक गीत के बोल पर श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी मशहूर कविता लिखी है:—

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी!

इसी कविता के वज़न पर एक दूसरे आधुनिक कवि ने कुँअरसिंह पर एक तराना लिखा :—

मस्ती की थी छिड़ी रागिनी आज़ादी का गाना था!
भारत के कोने कोने में होता यही तराना था!
उधर खड़ी थी लक्ष्मीबाई और पेशवा नाना था!
इधर बिहारी वीर बाँकुड़ा खड़ा हुआ मस्ताना था!
अस्सी बरसों की हड्डी में जागा जोश पुराना था!
सब कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मरदाना था!

1857 के कुछ बरस पहले राजस्थान की अदबी या साहित्यिक दुनिया में बूँदी के महाकवि सूर्यमल भीसण सूरज की तरह चमक रहे थे. उन्होंने राजस्थान के राजाओं, सरदारों और जागीरदारों को जगाने के लिये अपनी मशहूर किताब 'वीर सतसई' की रचना की. सन् 1856 में उन्होंने एक ख़त में ठाकुर फूलसिंह को लिखा :—"···म्हारो वचन राज याद रखोगा कि जै अबके अंग्रेज रह्यो तो ईं को गायो ही पूरा करसी. जमी को ठाकर कोई भी न रहसी. सब ईसाई हो जासी. तींसों दूरन्देसी विचारै तो फ़ायदो कोई कै भी नहीं, परन्तु आपणा आछो दिन होय तो विचारै और राज जिसो सुहृत म्हारे होय तो बड़ाई तरीकै लिखी जावै, तींसूँ थोड़ी में बहुत जाण लेसी."

'वीर सतसई' में उन्होंने बेख़ौफ़ होकर राजाओं से कहा :—

इक डंकी गिण एकरी, भूले कुल साभाव,
सूरों आलस ऐस में, अकज गुमाई आव.

यानी तुमने तो विदेशियों की फ़रमाबरदारी को ही सब कुछ मान लिया. आज़ादी का अपना रास्ता भूलकर उनके बताये हुये रास्ते को ही अपना रास्ता समझ लिया. अरे ओ शूरवीरो! तुमने आलस और ऐशो आराम में ही अपनी उम्र खो दी!

ارے جھانسی والی رانی، خوب لڑی مردانی ۔
چھوڑ مورچہ بھاگے پھرنگی، ڈھونڈھے ملے ناھیں پانی،
ارے جھانسی والی رانی، خوب لڑی مردانی ۔

اِس زمانے کے اِسی طرح کے ایک گیت کے بول پر شریمتی سبھدرا کماری چوھان نے اپنی مشہور کویتا لکھی ھے :—

سنگھاسن ھل اُٹھے راج ونشوں نے بھرکٹی تانی تھی،
بوڑھے بھارت میں بھی آئی پھر سے نئی جوانی تھی،
گمی ھوئی آزادی کی قیمت سب نے پہچانی تھی،
دور فرنگی کو کرنے کی سب نے من میں ٹھانی تھی،
چمک اُٹھی سن ستاون میں وہ تلوار پرانی تھی،
بندیلے ھربولوں کے مکھ ھم نے سنی کہانی تھی،
خوب لڑی مردانی وہ تو جھانسی والی رانی تھی!

اِسی کویتا کے وزن پر ایک دوسرے آدھونک کوی نے کنور سنگھ پر ایک ترانہ لکھا :—

مستی کی تھی چھڑی راگنی آزادی کا گانا تھا،
بھارت کے کونے کونے میں ھوتا یہی ترانا تھا،
اُدھر کھڑی تھی لکشمی بائی اور پیشوا نانا تھا،
اِدھر بہاری ویر بانکرا کھڑا ھوا مستانا تھا،
اسی برسوں کی ھڈی میں جاگا جوش پرانا تھا،
سب کہتے ھیں کنور ویر سنگھ بھی بڑا ویر مردانا تھا ۔

1857 کے کچھ برس پہلے راجستھان کی ادبی یا ساھتیک دنیا میں بوندی کے مہاکوی سوریہ مل بھیشن سورج کی طرح چمک رہے تھے ۔ اُنھوں نے راجستھان کے راجاؤں، سرداروں اور جاگیرداروں کو جگانے کے لئے اپنی مشہور کتاب 'ویرست سئی' کی رچنا کی ۔ سن 1856 میں اُنھوں نے ایک خط میں ٹھاکر پھول سنگھ کو لکھا :—"......مھارو وچن راج یاد راکھو گا کہ جے اب کے انگریز رھیوتو اِس کو گایوھی پورو کرسی ۔ جمیں کو ٹھاکر کوئی بھی نہ رھسی ۔ سب عیسائی ھو جاسی ۔ تھیسوں دوراندیسی وچارے تو فایدو کوئی کے بھی نہیں، پرنتو اپنا آچھو دن ھوئے تو وچارے اور راجیہ جسو سوھت مھارے ھوئے تو بڑائی ترو کے لکھی جاوے، تھیسوں تھوڑی میں بہت جان لیسی ۔"

'ویرست سئی' میں اُنھوں نے بےخوف ھو کر راجاؤں سے کہا :—

اک ڈنکی گن ایکری، بھولے کل سابھاو،
سوراں آلس ایس میں، اکج گمائی آؤ ۔

یعنی تم نے تو ودیشیوں کی فرمانبرداری کو ھی سب کچھ مان لیا ۔ آزادی کا اپنا راستہ بھول کر اُن کے بتائے ھوئے راستے کو ھی اپنا راستہ سمجھ لیا ۔ ارے شور ویرو! تم نے آلس اور عیش و آرام میں ھی اپنی عمر کھو دی!

करते हैं. उनके बिहार पहुँचने पर एक के बाद एक मशहूर अंगरेज कमान्डरों के मातहत अङ्गरेजी सेनायें उन्हें हराने के लिये भेजी जाती हैं. कप्तान डनवर, मेजर आयर, मेजर मिलमैन, कर्नल डेम्स, लार्ड मार्क, जनरल लगर्ड, जनरल डगलस, और जनरल लीग्रैंड—सब को जिल्लत के साथ हारकर पीछे हटना पड़ा. इनमें से एक मोरचे का ज़िक्र करते हुये एक अंगरेज कमान्डर ख़ुद लिखता है—"हम मैदान छोड़कर भागे. कुँअर सिंह पीछे से बराबर हमला करते रहे. हमारी जिल्लत की कोई हद नहीं रही, हमारी बिपता का वारापार न रहा. हममें से किसी में शर्म तक बाक़ी न रही. जिधर जिसका सींग समाया वह उधर भागा. ज़ाहिर है ऐसा रणबाँकुरा बहादुर बीर कवियों का ध्यान अपनी तरफ़ खींचता. भोजपुरी में दर्जनों कविताएँ हैं जो कुँअर सिंह पर लिखी गई है. कवि शेखावत के बोल देखें:—

जानत सकल जहान बाबू कुँअरसिंह मरदान को,
शेखावत कहत बखान जेहि बिधि लड्यो फिरंग से.

चरबी के कारतूस का ज़िक्र करते हुये कुँअर सिंह अपने भाई अमर सिंह से जो कुछ कहते हैं वह एक दूसरे कवि के बोल में देखें :—

लिखि लिखि पतिया के भेजलन कुँअरसिंह,
ए सुन अमर सिंह, अमर सिंह भाय हो राम!
चमवा के टोंटवा दाँत से हो काटे कि,
छतरी के धरम नसाय हो राम!!
बाबू कुँअरसिंह औ भाई अमरसिंह,
दोनों अपने हैं भाय हो राम!
बतिया के कारन से बाबू कुँअरसिंह,
फिरंगी से रेढ़ बढ़ाय हो राम!!

बाबू कुँअरसिंह की तरह महारानी लक्ष्मीबाई भी पिछली एक सदी से आज़ादी के दीवानों के लिये उम्मीदों का सरचश्मा साबित हुई हैं. रानी लक्ष्मीबाई ने मैदाने जङ्ग में आठ आठ अंगरेजी सेनाओं का बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया. एक तरफ़ मशहूर अंगरेज जनरैल और दूसरी तरफ़ बाईस बरस की रानी! मगर उसने वह बहादुरी दिखाई कि बड़े से बड़े अंगरेज सूरमा के दाँत खट्टे कर दिये. आख़ीर में ग्वालियर के मैदान में रानी लड़ते लड़ते खेत रही मौत की देवी ने रानी के गले में जयमाला डाली. भारत की विविध भाषाओं के कवियों को रानी ने अपनी ओर खींचा है. बुंदेलखंड के गाँव-गाँव में चारणों और हरबोलों ने रानी की कीर्ति गाथा गई है. इनमें से एक गीत की लाइनें ये हैं :—

ख़ूब लड़ी मरदानी, अरे झाँसी वाली रानी,
बुरजन बुरजन तोपें लगाय दईं, गोला चलाए आसमानी,
अरे झाँसी वाली रानी, ख़ूब लड़ी मरदानी.

کرتے ھیں ۔ اُن کے بہار پہونچنے پر ایک کے بعد ایک مشہور انگریز کمانڈروں کے ماتحت انگریزی سینائیں اُنھیں ہرانے کے لئے بھیجی جاتی ھیں ۔ کپتان ڈنور، میجر آیر، میجر ملمین، کرنل ڈیمس، لارڈ مارک، جنرل لیگرینڈ، جنرل ڈگلس، اور جنرل لیگریلڈ—سب کو ذلت کے ساتھ ھار کر پیچھے ھٹنا پڑا ۔ ان میں سے ایک مورچے کا ذکر کرتے ھوئے ایک انگریز کمانڈر خود لکھتا ھے—"ھم میدان چھوڑ کر بھاگے ۔ کنور سنگھ پیچھے سے برابر حملہ کرتے رھے ۔ ھماری ذلت کی کوئی حد نہ رھی ۔ ھماری بپتا کا وارا پار نہ رھا ۔ ھم سے کسی میں شرم تک باقی نہ رھی ۔ جدھر جس کا سینگ سمایا وہ اُدھر بھاگا ۔ ظاھر ھے ایسا رن بانکڑا بہادر ویر کویوں کا دھیان اپنی طرف کھینچتا ۔ بھوجپوری میں درجنوں کویتائیں ھیں جو کنور سنگھ پر لکھی گئی ھیں ۔ کوی شیکھاوت کے بول دیکھیں :—

جانت سکل جہان بابو کنور سنگھ مردان کو،
شیکھاوت کہت بکھان جیہی بدھی لڑیو پھرنگ سے ۔

چربی کے کارتوس کا ذکر کرتے ھوئے کنور سنگھ اپنے بھائی امر سنگھ سے جو کچھ کہتے ھیں وہ ایک دوسرے کوی کے بول میں دیکھیں :—

لکھ لکھ پتیا کے بھیجلن کنور سنگھ،
اے سن امر سنگھ، امر سنگھ بھائے ھو رام!
چمڑا کے ٹوڑوا دانت سے ھو کاٹے کہ،
چھتری کے دھرم نسائے ھو رام!!
بابو کنور سنگھ او بھائی امر سنگھ،
دونوں اپنے ھیں بھائے ھو رام،
بتیا کے کارن سے بابو کنور سنگھ،
پھرنگی سے ریڑھ بڑھائے ھو رام!!

بابو کنور سنگھ کی طرح مہارانی لکشمی بائی بھی پچھلی ایک صدی سے آزادی کے دیوانوں کے لئے امیدوں کا سرچشمہ ثابت ھوئی ھیں ۔ رانی لکشمی بائی نے میدان جنگ میں آٹھ آٹھ انگریزی سیناؤں کا بہادری کے ساتھ مقابلہ کیا ۔ ایک طرف مشہور انگریز جرنیل اور دوسری طرف 22 برس کی رانی! مگر اُس نے وہ بہادری دکھائی کہ بڑے سے بڑے انگریز سورما کے دانت کھٹے کر دیئے ۔ آخر میں گوالیر کے میدان میں رانی لڑتے لڑتے کھیت رھی ۔ موت کی دیوی نے رانی کے گلے میں جے مالا ڈالی ۔ بھارت کی وودھ بھاشاؤں کے کویوں کو رانی نے اپنی اور کھینچا ھے ۔ بندیلکھنڈ کے گاؤں گاؤں میں چارنوں اور ھربولوں نے رانی کی کیرتی گاتھا گائی ھے ۔ ان میں سے ایک گیت کی لائنیں یہ ھیں :—

خوب لڑی مردانی، ارے جھانسی والی رانی،
برجن برجن توپیں لگائے دئیں، گولا چلائے آسمانی،
ارے جھانسی والی رانی، خوب لڑی مردانی ۔
سبکرے سپاھیوں کو پیڑا جلیبی، اپنے چبائی گڑدھانی،

मौत से तुम्हारे पिता को बड़ा रंज होगा." लाल प्रताप सिंह ने जवाब दिया :—"चाचा जी, मैं अपने पिता को जानता हूँ. मेरे मरने पर नहीं बल्कि मेरे लौट जाने पर उन्हें दुख होगा. आप मोह में पड़कर मुझे फ़र्ज अदा करने से न रोकें." यह कहकर वह बहादुर नौजवान तलवार लेकर दुश्मनों पर टूट पड़ा और लड़ते-लड़ते वीर गति पाई. चाँदे की इस मशहूर लड़ाई का बखान उस समय के जन कवि प्राग ने अपने इस छन्द में किया है:—

श्रीमान लाल प्रताप चाँदे में जुर्यो रनधीर है,
बाँके बिसेने बंश के संग में सिपाही वीर है !
पायो हुकुम जब लाल को, धायो मनी है काल को,
लीन्हों चहूँ दिसि घेर कै दीन्हों समुरचा फेरि कै !
बिछुआ कटारी ढाल है, कर में गहयो करवाल है,
लीन्हों तमंचा तमकि कै बरछी छबीली काल है !
माधो बड़ो रनधीर है, पहिरे केसरिया चीर है,
मारयो मरो मैदान में मुरक्यो न मुरचा वीर है !
गोरे झुके चहुँओर से, धावा करें बहु ज़ोर से,
तोपें जंजालें छूटतीं अरि अंगना सर कूटतीं !
मुहरा परयो परताप को डर कौन बैरिन ताप को,
ऐसो प्रतापी लाल है प्रकट्यो जो बैरिन काल है !
भूषन बिसेने बंस को छौना रह्यो मानो हँस को,
हुक्मी रह्यो हनुमन्त को ध्यायो सदा श्रीकन्त को !
सो चलि गयो सुरधाम को करिगयो जग में नाम को,
बिरुदावली यह छन्द है कवि प्राग करत प्रबन्ध है !

सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम के महारथियों में जगदीशपुर के 80 बरस के बाबू कुँअर सिंह का नाम हमेशा इज्ज़त से लिया जायगा. जिस समय दानापुर की हिन्दुस्तानी सेना जगदीशपुर पहुँची बूढ़े कुँअर सिंह ने फ़ौरन अपने महल से निकल कर इस सेना की कमान हाथ में ले ली. उस दिन से लेकर 26 अप्रैल सन् 1858 तक, यानी अपनी शानदार मौत के दिन तक, कुँअर सिंह एक फ़तहयाब सेनापति के रूप में उस इनक़लाब की जङ्ग में हिस्सा लेते हुये दिखाई देते हैं. शाहाबाद, आरा, आजमगढ़, गाजीपुर विजय करते हुये कुँअर सिंह रीवाँ की सरहद तक पहुँच जाते हैं. उनकी इस विजय-यात्रा से बनारस में बैठा हुआ लार्ड कैनिंग घबरा जाता है. जबलपुर के राजा शंकरशाह कुँअरसिंह का पैग़ाम मिलते ही मैदान में उतर आते हैं. रीवाँ से कुँअर सिंह कालपी पहुँचते हैं. वहाँ तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, राव साहब, नाना साहब से उनकी मुलाक़ात होती है. कालपी से कुँअर सिंह लखनऊ आते हैं. बेगम हज़रत महल से मुलाक़ात करते हैं और तब वापस आरा पहुँचते हैं. सैकड़ों मील के इस जङ्गी कूच में अंगरेजी फ़ौजों की हिम्मत नहीं पड़ती कि वे कुँअर सिंह से मोरचा लें. कुँअर सिंह वापस बिहार पहुँच कर दोबारा जगदीशपुर पर क़ब्ज़ा

موت سے تمھارے پتا کو بڑا رنج ہوگا۔" لال پرتاپ نے جواب دیا :—
"چاچا جی میں اپنے پتا کو جانتا ہوں۔ میرے مرنے پر نہیں بلکہ میرے لوٹ جانے پر انہیں دکھ ہوگا۔ آپ موہ میں پڑ کر مجھے فرض ادا کرنے سے نہ روکیں۔" یہ کہکر وہ بہادر نوجوان تلوار لیکر دشمنوں پر ٹوٹ پڑا اور لڑتے لڑتے ویر گتی پائی۔ چاندے کی اِس مشہور لڑائی کا بکھان اُس کے سمے کے جن کوی پراگ نے اپنے اِس چھند میں کیا ہے :—

شریمان لال پرتاپ چاندے میں جریو رندھیر ہے،
بانکے بسنے بنش کے سنگ میں سپاہی ویر ہے !
پایو حکم جب لال کو، دھایو منی ہے کال کو،
لینو چہوں دس گھیر کے دینہو سمورچا پھیر کے !
بچھوا کٹاری ڈھال ہے، کر میں گہیو کروال ہے،
لینو طمنچہ تمک کے برچھی چھبیلی کال ہے !
مادھو بڑو رندھیر ہے، پہرے کیسریا چیر ہے،
ماریو مرو میدان میں مرکیو نہ مورچا ویر ہے !
گورے جھکے چہوں اور سے، دھاوا کریں بہو جور سے،
توپیں جنجالیں چھٹتیں اری انگنا سر کوٹتیں !
موہرا پریو پرتاپ کو ار کون بیرن تاپ کو،
ایسے پرتاپی لال ہے پرکٹیو جو بیرن کال ہے !
بھوشن بسینے بنس کو چھونا رہیو مانو ہنس کو،
حکمی رہیو ہنومنت کو دھیایو سدا شری کنت کو !
سو چلی گیو سر دھام کو کری گیو جگ نام کو،
بردا ولی یہ چھند ہے کوی پراگ کرت پربندھ ہے !

سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام کے مہارتھیوں میں جگدیش پور کے اسی برس کے بابو کنور سنگھ کا نام ہمیشہ عزت سے لیا جائیگا۔ جس سمے داناپور کی ہندستانی سینا جگدیش پور پہونچی بوڑھے کنور سنگھ نے فوراً اپنے محل سے نکل کر اُس سینا کی کمان ہاتھ میں لے لی۔ اُس دن سے لیکر 26 اپریل سن 1858 تک، یعنی اپنی شاندار موت کے دن تک کنور سنگھ ایک فتحیاب سیناپتی کے روپ میں اُس انقلاب کی جنگ میں حصہ لیتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ شاہاباد، آرہ، اعظم گڈھ، غازی پور وجے کرتے ہوئے کنور سنگھ ریواں کی سرحد تک پہنچ جاتے ہیں۔ اُن کی اِس وجے یاترا سے بنارس میں بیٹھا ہوا لارڈ کیننگ گھبرا جاتا ہے۔ جبلپور کے راجہ شنکر شاہ کنور سنگھ کا پیغام ملتے ہی میدان میں اُتر آتے ہیں۔ ریواں کے کنور سنگھ کالپی پہونچتے ہیں۔ وہاں تاتیا ٹوپے، لکشمی بائی، راؤ صاحب نانا صاحب سے اُن کی ملاقات ہوتی ہے۔ کالپی سے کنور سنگھ لکھنؤ آتے ہیں۔ بیگم حضرت محل سے ملاقات کرتے ہیں اور تب واپس آرہ پہونچتے ہیں۔ سیکڑوں میل کے اِس جنگی کوچ میں انگریزی فوجوں کی ہمت نہیں پڑتی کہ یہ کنور سنگھ سے مورچہ لیں۔ کنور سنگھ واپس بہار پہونچکر دوبارہ جگدیش پور پر قبضہ

राजा बखानौं मैं गोंडा के देवी बक्स महाराज रहे,
असी चार चौरासी कोस माँ आको डंका बाजि रहे !
गोंडा से पाती गै झाँसी, झाँसी के राजा रामलला,
साथ हमारा दीजै राजा, हमरे राज माँ चोर हला !
कहीं कहीं का चलैं साँड़िया, कहीं कहीं चलते हाथी,
देस-देस औ गाँव-गाँव में, राजा लिख भेजी पाती !
यकदम से धावन पहुँच गया मानो यक़ीन है,
गोंडा सहर से झाँसी मंज़िल तीन है !
गोंडा सहर से पलटन चलिगै लमती कहँ तकाय रहे,
तम्मुक ऊपर तम्मू गड़िगै तम्मू-तम्मू छाइ रहे !
जाय फ़ौज लमती माँ पहुँची मार-मार डिंडियाय रहे,
पक्का यक-यक मन का गोला साँचा माँहि ढराय रहे !
फ़ौज के मानसिंह औ तोप के पुरैया,
दागै तोप दइउ अस गरजै फाटि करारा नैया !
हज़ारों गोरा बहि गये चिल्लाते बप्पा दैया,
अंगरेज़ कै नेम बोलो राजा धनिधनि तोरी मैया !
भागि चलो बिलाइत साहब राजा से पार न पैया,
भैया परमेसुर का लम्बा हाथ !

सन् 57 के इतिहास में कालाकाँकर की भी एक ख़ास जगह है. जिस वक्त आज़ादी की जङ्ग चल रही थी कालाकाँकर की हुकूमत राजा हनुवन्त सिंह के हाथों में थी. अवध के नवाब के यहाँ उनका ख़ास मान दान था. एक ओर वह अंगरेज़ों के पक्के शत्रु और बेगम हज़रत महल के वफ़ादार जागीरदार लेकिन दूसरी ओर उन्होंने 32 असहाय अंगरेज़ औरतों और बच्चों को अपने महल में शरण देकर उन्हें सुरक्षित इलाहाबाद भिजवा दिया. बेगम हज़रत महल ने राजा हनुवन्त सिंह के सुपुर्द किया कि जब अंगरेज़ी फ़ौज सुलतानपुर से लखनऊ की ओर बढ़े तो राजा हनुवंतसिंह अमेठी की फौजों के साथ मिलकर उससे मोरचा लें.

राजा हनुवन्तसिंह के जेठे बेटे 26 बरस के लाल प्रताप सिंह कलाकाँकर की सेना के सेनापति थे. राजा ने अपने बेटे को मोरचे के लिये रवाना किया. अपनी जवान बीवी और आठ बरस के बेटे को छोड़कर प्रताप सिंह चले. उनको अकेले जाते देखकर उनके चाचा माधो सिंह भी उनके साथ हो लिये. सुलतानपुर में चाँदा नामक मुक़ाम पर अंगरेज़ी फौज के साथ उनकी घमासान लड़ाई हुई. उस लड़ाई का उस ज़माने के एक कवि ने इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र किया है :—

कालाकाँकर के बिसेनवा रे,
चाँदे गाड़े बा निसनवा रे !

अंगरेज़ी फ़ौज की तादाद बहुत ज़्यादा थी. हालत बिगड़ती देखकर चाचा ने कहा—"बेटा ! मैं दुश्मनों की बाढ़ को रोकता हूँ तुम कालाकाँकर वापस चले जाओ, तुम्हारी

راجا بکھانو میں گونڈہ کے دیوی بکس مہاراج رہے،
اسی چار چوراسی کوس ماں جاکو ڈنکا باج رہے !
گونڈا سے پاتی گئی جھانسی، جھانسی کے راجا رام للا
ساتھ ہمارا دیجے راجا، ہمرے راج ماں چور ہلا !
کہیں کہیں کا چلیں سانڑیا، کہیں کہیں چلتے ہاتھی،
دیس دیس او گاؤں گاؤں میں، راجا لکھ بھیجی پاتی !
یکدم سے دھاون پہونچ گیا مانو یقین ہے،
گونڈا سہر سے جھانسی منزل تین ہے !
گونڈا سہر سے پلٹن چلگئے لمتی کہں تکائے رہے،
تمک اوپر تمو گڑیگئے تمو تمو چھائے رہے !
جائے فوج لمتی ماں پہونچی مار مار ڈنڈ یائے رہے،
پکا یک یک من کا گولا سانچا مانہی ڈھرائے رہے !
فوج کے مان سنگھ او توپ کے پوریا،
داگے توپ دیو اس گرجے پھاٹی جھرارا نیا !
ہزاروں گورا بہی گے چلاتے بپا دیا،
انگریج کئے نیم بولو راجا دھن دھن توری میا !
بھاگ چلے بلائت صاحب راجا سے پار نہ پیا،
بھیا پرمیسور کا لمبا ہاتھ !

سن 57 کے اتہاس میں کالا کانکر کی بھی ایک خاص جگہہ ہے۔ جس وقت آزادی کی جنگ چل رہی تھی کالاکانکر کی حکومت راجا ہنونت سنگھ کے ہاتھوں میں تھی۔ اودھ کے نواب کے یہاں اُن کا خاص مان دان تھا۔ ایک اور وہ انگریزوں کے پکے شترو اور بیگم حضرت محل کے وفادار جاگیردار لیکن دوسری اور انہوں نے 32 اسہائے انگریز عورتوں اور بچوں کو اپنے محل میں شرن دیکر انہیں سرکشت الہ آباد بھجوا دیا۔ بیگم حضرت محل نے راجا ہنونت سنگھ کے سپرد کیا کہ جب انگریزی فوج سلطانپور سے لکھنؤ کی اور بڑھے تو راجا ہنونت سنگھ امیٹھی کی فوجوں کے ساتھ ملکر اُس سے مورچا لیں۔

راجا ہنونت سنگھ کے جیٹھے بیٹے 26 برس کے لال پرتاپ سنگھ کالا کانکر کی سینا کے سیناپتی تھے۔ راجا نے اپنے بیٹے کو مورچہ کے لئے روانہ کیا۔ اپنی جوان بیوی اور آٹھ برس کے بیٹے کو چھوڑ کر پرتاپ سنگھ چلے۔ اُن کو اکیلے جاتے دیکھ کر اُن کے چاچا مادھو سنگھ بھی اُن کے ساتھ ہو لئے۔ سلطانپور میں چاندا نامک مقام پر انگریزی فوج کے ساتھ اُن کی گھماسان لڑائی ہوئی۔ اُس لڑائی کا اُس زمانہ کے ایک کوی نے ان لفظوں میں ذکر کیا ہے :—

کالاکانکر کے بسنوا رے،
چاندے گاڑے بانسنوا رے !

انگریزی فوج کی تعداد بہت زیادہ تھی۔ حالت بگڑتی دیکھ کر چاچا نے کہا—" بیٹا ! میں دشمنوں کی باڑھ کو روکتا ہوں تم کالا کانکر واپس چلے جاؤ۔ تمہاری

जै हैं फूट फूट सी तमाम तोप तोड़वालो,
कुटि जैहैं क़ाबिल कमाल फ़ौज बाना ते.
टूटि जैहे देश को दिमाग़, ज़ोर छूटि जैहै,
लूटि जैहे लाखन को माल तोप खाना ते.
भौन कवि कहत खोदाय की खबर करौ,
पीछे पछतावगे खराब खून खाना ते,
बैरिन की बनिता सिखावतीं एकान्त कन्त,
कीजिए न रारि बेनीमाधव बक्स राना ते.

अंगरेज़ औरतें अपने पतियों को एकान्त में समझाती हैं कि--"साजन ! बेनीमाधो बक्स राना से लड़ाई न छेड़िये !"

बेरुआगढ़ संडीला के नज़दीक एक जागीर थी. गुलाब सिंह उसके दीवान थे. 1857 के इनक़लाब के शुरू होते ही गुलाब सिंह नाना साहब से जा मिले कानपुर में उन्होंने नाना साथ अंगरेज़ों से लड़ाई लड़ी. फिर अपनी फ़ौज के साथ गुलाब सिंह ने लखनऊ में अंगरेज़ी फ़ौज से मोरचा लिया. फिरंगी उनके ख़ून के प्यासे बन गये. एक दिन जब वे अपनी गढ़ी में लौटे तो अंगरेज़ी सेना ने उन्हें रातों रात आ घेरा. गुलाब सिंह ऐसे लड़े कि अंगरेज़ी फ़ौज को पीछे हटना पड़ा. उनके उस युद्ध को एक कवि ने अपनी जानदार कविता में बयान करते हुये कहा है :—

गुलाब सिंह ऐसे लड़े,
जैसे लंका में लड़े हनुमान !

शिकस्त खाई हुई अंगरेज़ी फ़ौज फिर मोरचा-बन्दी करके बेरुआगढ़ आती है. अंगरेज़ी फ़ौज का कमानदार गुलाब सिंह से बातें करना चाहता है. वह गुलाब सिंह को मिलने की दावत देता है. इस घटना पर एक कवि के बोल हैं —

राजा गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूँ,
एक बार दरश दिखावा रे !
अपनी गढ़ी से यह बोले गुलाब सिंह,
सुन रे साहब मोरी बात रे !
पैदल भी मारे, सवार भी मारे,
मारी तोरी फ़ौज बेहिसाब रे !
बाँके गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूँ,
एक बार दरश दिखावा रे !

घमासान मोरचे के बाद रात के अँधेरे में अपने एक बहादुर पासी साथी कल्यान को लेकर गुलाब सिंह ने गढ़ी छोड़ दी. बेरुआगढ़ के पीछे बाँस का घना वन था. वहीं से गुलाब सिंह जो ग़ायब हुये तो फिर उनका पता नहीं चला.

राना बेनीमाधव सिंह और गुलाब सिंह की तरह गोंडा के राजा देवी बक्स सिंह भी इतनी बहादुरी के साथ अंगरेज़ी सेनाओं से लड़े कि उन्होंने अपनी वीरता से जन-मन को मोह लिया. उनकी तारीफ़ करते हुए एक समकालीन कवि कहता है :—

جئی ھیں پھوٹ پھوٹ سی تمام توپ توڑوالو'
کوٹ جئی ھیں قابل کمال فوج بانا تے .
ٹوٹ جئی ھے دیش کو دماغ' زور چھوٹ جئی ھے'
لٹ جئی ھے لاکھن کو مال توشہ خانا تے .
بھون کوی کہت خدائے کی خبر کرو'
پیچھے پچھتاؤگے خراب خون خانا تے .
بیرن کی بنیتا سکھاوتیں ایکانت کنت'
کیجئے نہ رار بینی مادھو بکس رانا تے !

انگریزی عورتیں اپنے پتیوں کو ایکانت میں سمجھاتی ھیں کہ—"ساجن ! بینی مادھو بکس رانا سے لڑائی نہ چھیڑیئے !"

بیرواگڑھ سنڈیلہ کے نزدیک ایک جاگیر تھی . گلاب سنگھ اُس کے دیوان تھے . 1857 کے انقلاب کے شروع ھوتے ھی گلاب سنگھ نانا صاحب سے جا ملے . کانپور میں اُنھوں نے نانا کے ساتھ انگریزوں سے لڑائی لڑی . پھر اپنی فوج کے ساتھ گلاب سنگھ نے لکھنؤ میں انگریزی فوج سے مورچہ لیا . فرنگی اُن کے خون کے پیاسے بن گئے . ایک دن جب وے اپنی گڑھی میں لوٹے تو انگریزی سینا نے اُنھیں راتوں رات آ گھیرا . گلاب سنگھ ایسے لڑے کہ انگریزی فوج کو پیچھے ھٹنا پڑا . اُن کے اِس یدھ کو ایک کوی نے اپنی جاندار کویتا میں بیان کرتے ھوئے کہا ھے :—

گلاب سنگھ ایسے لڑے'
جیسے لنکا میں لڑے ھنومان !

شکست کھائی ھوئی انگریزی فوج پھر مورچہ بندی کر کے بیرواگڑھ آتی ھے . انگریزی فوج کا کمانداز گلاب سنگھ سے باتیں کرنا چاھتا ھے . وہ گلاب سنگھ کو ملنے کی دعوت دیتا ھے . اِس گھٹنا پر ایک کوی کے بول ھیں :—

راجا گلاب سنگھ رھیا تیری ھیروں'
اک بار درش دکھاوا رے !
اپنی گڑھی سے یہ بولے گلاب سنگھ'
سن رے صاحب موری بات رے !
پیدل بھی مارے' سوار بھی مارے'
ماری توری فوج بےحساب رے !
بانکے گلاب سنگھ رھیا تیری ھیروں'
ایک بار درش دکھاوا رے !

گھماسان مورچے کے بعد رات کے اندھیرے میں اپنے ایک بہادر پاسی ساتھی کلیان کو لیکر گلاب سنگھ نے گڑھی چھوڑ دی . بیرواگڑھ کے پیچھے بانس کا گھنا بن تھا . وھیں سے جو گلاب سنگھ غایب ھوئے تو پھر اُن کا پتا نہیں چلا .

رانا بینی مادھو سنگھ اور گلاب سنگھ کی طرح گونڈا کے راجا دیوی بکس سنگھ بھی اِتنی بہادری کے ساتھ انگریزی سیناؤں سے لڑے کہ اُنھوں نے اپنی ویرتا سے جن من کو موہ لیا . اُن کی تعریف کرتے ھوئے ایک سمکالین کوی کہتا ھے :—

रायबरेली ज़िले के हमीर गाँव का निवासी एक दूसरा कवि बजरंग ब्रह्मभट्ट राना की तारीफ़ में कहता है :—

हिम्मत हाकिम को हजारन में देखि आयो,
खेदिके हटायो अंगरेज हू सकाना है !
जाको तेज तीखन तपत महि मन्डल में
हरिगे उलूक से न लागत ठिकाना है !
कहै बजरंग बैस वंश अवतंस भयो
कम्पनी विलाइत सकल बिलखाना है !
नेक न डेराना छीन लीन्ह्यो तोपखाना
बीर बाँधे बीर बाना बैसराना बिरमदाना है !

बैसवाड़ा के इस वीर राना बेनीमाधव सिंह की शूर-वीरता की तारीफ़ करते हुये एक तीसरा कवि ज्वालाराय कहता है :—

चण्डिका के चेले बैस लरत हैं अकेले फ़ौजें
आया लीना घेरि गोला खूब ही बजायो है !
मारे जरनैल औ कंडेलन को क़ैद कीन्हे,
मारे कप्तान गोरा भेंट ही चढ़ायो है !
राजन में राजा महाराजा बेनीमाधव बक्स,
लरी है लराई अंगरेज चढ़ि आयो है !
कहत कवि ज्वालाराय राजन को काम कीन्हो,
बिना अन्न पानी गोला खूब ही बजायो है !

अवध के कवियों की बानी, ऐसा मालूम होता है, मानो राना बेनीमाधव सिंह की तारीफ़ करते हुये थकती नहीं. सर कालिन कैम्बेल की फ़ौजों ने लखनऊ पर क़ब्ज़ा कर लिया था. बेगम हज़रत महल ने आकर राना के यहाँ शरण ली. अपनी मलका महारानी को राना अगर शरण न देते तो दूसरा कौन देता ? सर कालिन ने राना की बहादुरी की तारीफ़ करते हुये उनसे हथियार डालने के लिये कहा. यह भी वादा किया कि राना को उनकी सब जागीर लौटा दी जायगी मगर आज़ादी के उस दीवाने ने ब्रिटिश कमाण्डर-इन-चीफ़ के इस पैग़ाम को हिक़ारत के साथ ठुकरा दिया. एक चौथा कवि राना का गुनगान करते हुये कहता है :—

राना बहादुर सिपाही अवध माँ, धूम मचाई मोरे राम रे !
लिख लिख चिठिया लाट ने भेजी, आन मिलो राना भाई रे !
जंगी खिलत लन्दन से मँगा दूं, अवध मा सूबा बनाई रे !
जवाब सवाल लिखा राना ने, हमसे न करो चतुराई रे !
जब तक प्रान रहैं तन भीतर, तुम कन खोद बहाई रे !

बैसवारा के मशहूर कवि भौन, जिनका ज़िक्र महाकवि 'निराला' ने अपने एक लेख "भौनु कवि" में किया है 1857 में 32 बरस के थे. राना बेनीमाधव बक्स के वे साथी और क़द्रदानों में से थे. राना की शूरवीरता की तारीफ़ करते हुये भौन लिखते हैं :—

نظموں اور چھندوں میں سن اٹھارہ سو ستاون

رائے بریلی ضلع کے ہمیر گاؤں کا نواسی ایک دوسرا کوی بجرنگ برہم بھٹ رانا کی تعریف میں کہتا ہے :—

ہمت کو حاکم ہجارن میں دیکھ آیو
کھید کے ہٹایو انگریج ہو سکانا ہے !
جاکو تیج تیکھن تپت مہی منڈل میں
ہریگے الوک سے نہ لاگت ٹھکانا ہے !
کہے بجرنگ بیس بنس اوتنس بھیو
کمپنی بلائت سکل بلانا ہے !
نیک نہ ڈرانا چھین لینہیو توپکھانا
بیر باندھےبیر بانا بیسرانا برمدانا ہے !

بیسواڑہ کے اس ویر رانا بینی مادھو سنگھ کی شور ویرتا کی تعریف کرتے ہوئے ایک تیسرا کوی جوالا رائے کہتا ہے :—

چنڈیکا کے چیلے بیس لڑتے ہیں اکیلے فوجے
آیا لینا گھیری گولا کھوب ہی بجایو ہے ،
مارے جرنیل او کنڈیل کو کید کینھو
مارے کپتان گورا بھینٹ ہی چڑھایو ہے !
راجن میں راجا مہاراجہ بینی مادھو بکس
لڑی ہے لڑائی انگریز چڑھیایو ہے !
کہت کوی جوالا رائے راجن کو کام کینھو
بنا ان پانی گولا کھوب ہی بجایو ہے !

اودھ کے کویوں کی بانی، ایسا معلوم ہوتا ہے، مانو رانا بینی مادھو سنگھ کی تعریف کرتے ہوئے تھکتی نہیں۔ سر کالن کیمبل کی فوجوں نے لکھنؤ پر قبضہ کر لیا تھا۔ بیگم حضرت محل نے آکر رانا کے یہاں شرن لی۔ اپنی ملکہ مہارانی کو رانا اگر شرن نہ دیتے تو دوسرا کون دیتا ؟ سر کالن نے رانا کی بہادری کی تعریف کرتے ہوئے اُن سے ہتھیار ڈالنے کو کہا۔ یہ بھی وعدہ کیا کہ رانا کو اُن کی سب جاگیر لوٹا دی جائیگی مگر آزادی کے اس دیوانے نے برٹش کمانڈر-ان-چیف کے اس پیغام کو حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا۔ ایک چوتھا کوی رانا کا گن گان کرتے ہوئے کہتا ہے :—

رانا بہادر سپاہی اودھ ما، دھوم مچائی مورے رام رے !
لکھ لکھ چٹھیا لاٹ نے بھیجین، آن ملو رانا بھائی رے !
جنگی کھلت لندن سے منگادوں اودھ ما صوبا بنائی رے !
جواب سوال لکھا رانا نے، ہم سے نہ کرو چترائی رے !
جب تک پران رہیں تن بھیتر، تم کن کھود بہائی رے !

بیسوارہ کے مشہور کوی بھون، جن کا ذکر مہا کوی 'نرالا' نے اپنے ایک لیکھ 'بھونو کوی' میں کیا ہے 1857 میں 32 برس کے تھے۔ رانا بینی مادھو بکس کے وے ساتھی اور قدردانوں میں سے تھے۔ رانا کی شور ویرتا کی تعریف کرتے ہوئے بھون لکھتے ہیں :—

इस ख़ौफ़नाक .ज़ुल्मो-सितम के बाद अहले वतन की जो कैफ़ियत हुई उसे बयान करते हुये दाग़ कहते हैं:—

.जमीं के हाल पै अब आसमान रोता है;
हर इक फ़िराक़े मकीं में मकान रोता है!
बरंगे बूए गुल अहले चमन, चमन से चले;
ग़रीब छोड़ के अपना वतन, वतन से चले;
मुक़ामे अम्न जो ढूँढ़ा तो राह भी न मिली;
ये क़हर था कि .ख़ुदा की पनाह भी न मिली!

दिल्ली के वीराने को बयान करते हुये हज़रते दाग़ की आख़री नज़्म है: -

ये वो जगह है जहाँ बेकसी भी डर जाये;
ये वो जगह है अजल ख़ौफ़ खाके मर जाये!
कहाँ तक आह लिखूँ इसका हाले बरबादी;
लिखूँ कहाँ तलक इस आसमाँ की जल्लादी!
किसी को क़ैदे मेहन से नहीं है आज़ादी;
कि दाग़ दाग़ है हर दिल हरेक फ़रियादी!

उर्दू .ज़ुबान के उस वक़्त के और भी बहुत से शायरों ने 1857 पर अपने जज़बात का इज़हार किया है. हमने तो सिर्फ़ नमूने के तौर पर यहाँ ये चन्द कलाम पेश किये हैं.

(2)

जिस तरह दिल्ली की वीरानगी ने उर्दू के मशहूर शायरों के दिलों में एक दर्द और तड़प पैदा की वैसे अवध में स्वतंत्रता की लड़ाई हिन्दी के महाकवियों की भावनाओं को न छू सकी. हाँ गाँव के कवि का दिल सूरमाओं की बहादुरी और आज़ादी की तड़प को देखकर मचल पड़ा. उसने शंकरगढ़ के बहादुर राना बेनीमाधव सिंह, गोंडा के राजा देवी बकस सिंह, राजस्थान के सुजान सिंह, सँडीला के गुलाब सिंह, जगदीशपुर के बाबू कुंअर सिंह और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई को छन्दों का हार पहनाया.

वीरता और शूरता के इन गीतों का सबसे बड़ा ख़ज़ाना हमें अवध में मिलता है. राना बेनीमाधव सिंह की गिनती सन् सत्तावन के बड़े से बड़े वीरों और शहीदों में की जाती है. दुलारे अपनी अटपटी बानी में राना की तारीफ़ करते हुये कहता है:—

अवध मा राना भयो मरदाना!
पहिल लड़ाई भई बक्सर मा सेमरी के मैदाना,
उहाँ से कूच भयो पुरवा को तबै लाट घबराना!
नक्की मिले मानसिंग मिलिगे मिले सुदर्शन काना,
छत्री वंश एक ना मिलिहै जाने सकल जहाना!
भाय, भतीज औ कुटुम्ब-कबीला सबको करौं सलामा,
तुम तो जाय गोरन ते मिलिगै हमहू को भगवाना!
हाथ में भाला बगल सिरोही घोड़ा चलै मस्ताना,
कहै दुलारे सुनु पिय प्यारे राना उत्तर कियो पयाना!

اِس خوفناک ظلم و ستم کے بعد اہل وطن کی جو کیفیت ہوئی اُسے بیان کرتے ہوئے داغ کہتے ہیں :—

زمیں کے حال پہ اب آسمان روتا ہے؛
ہر ایک فراق مکیں میں مکان روتا ہے!
برنگ بوئے گل اہل چمن، چمن سے چلے؛
غریب چھوڑ کے اپنا وطن، وطن سے چلے!
مقام امن جو ڈھونڈا تو راہ بھی نہ ملی؛
یہ قہر تھا کہ خدا کی پناہ بھی نہ ملی!

دلی کے ویرانے کو بیان کرتے ہوئے حضرت داغ کی آخری نظم ہے :—

یہ وہ جگہہ ہے جہاں بیکسی بھی ڈر جائے؛
یہ وہ جگہہ ہے اجل خوف کھا کے مر جائے!
کہاں تک آہ لکھوں اِس کا حال بربادی؛
لکھوں کہاں تلک اِس آسماں کی جلادی!
کسی کو قید محن سے نہیں ہے آزادی؛
کہ داغ داغ ہے ہر دل ہر ایک فریادی!

اُردو زبان کے اُس وقت کے اور بھی بہت سے شاعروں نے 1857 پر اپنے جذبات کا اظہار کیا ہے. ہم نے تو صرف نمونے کے طور پر یہاں یہ چند کلام پیش کئے ہیں.

(2)

جس طرح دلی کی ویرانگی نے اُردو کے مشہور شاعروں کے دلوں میں ایک درد اور تڑپ پیدا کی ویسے اودھ میں سوتنترتا کی لڑائی ہندی کے مہاکویوں کی بھاوناؤں کو نہ چھو سکی. ہاں گاؤں کے کوی کا دل سورماؤں کی بہادری اور آزادی کی تڑپ کو دیکھ کر مچل پڑا. اُس نے شنکرگڑھ کے بہادر رانا بینی مادھو سنگھ، گونڈا کے راجا دیوی بکس سنگھ، راجستھان کے سجان سنگھ، سنڈیلا کے گلاب سنگھ، جگدیش پور کے بابو کنور سنگھ اور جھانسی کی رانی لکشمی بائی کو چھندوں کا ہار پہنایا.

ویرتا اور شورتا کے ان گیتوں کا سب سے بڑا خزانہ ہمیں اودھ میں ملتا ہے. رانا بینی مادھو سنگھ کی گنتی سن ستاون کے بڑے سے بڑے ویروں اور شہیدوں میں کی جاتی ہے. دلارے اپنی اٹپٹی بانی میں رانا کی تعریف کرتے ہوئے کہتا ہے :—

اودھ ما رانا بھیو مردانا!
پہلی لڑائی بھئی بکسر ماں سمری کے میدانا؛
اُہاں سے کوچ بھیو پروا کو تبے لاٹ گھبرانا!
نکمی ملے مان سنگھ مل گے ملے سدرشن کانا؛
چھتری باس ایک نا ملہے جانے سکل جہانا!
بھائی، بھتیج او کٹمب کبیلا سبکو کروں سلاما؛
تم تو جائے گورن تے ملیگے ہم ہو کا بھگوانا!
ہاتھ ما بھالا بگل سروہی گھوڑا چلے مستانا؛
کہے دلارے سن پیہ پیارے رانا اُتر کیو پیانا!

दिल्ली शहर की अदबियात और शायराना महफ़िल पर हसरत उँडेलते हुये हाली कहते हैं :—

कभी ऐ इल्मो हुनर घर था तुम्हारा दिल्ली;
हमको भूले हो तो घर भूल न जाना हरगिज़ !
शायरी मर चुकी अब ज़िन्दा न होगी यारो;
याद कर करके उसे जी न कुढ़ाना हरगिज़ !
ग़ालिबो शेफ़्तओ नय्यरो आज़ुर्दा-ओ ज़ौक़,
अब दिखायेगा ये शक्लें न ज़माना हरगिज़ !
बज़्मे मातम तो नहीं, बज़्मे सख़ुन है हाली;
याँ मुनासिब नहीं रो रोके रुलाना हरगिज़ !

दाग़ और 1857

महाकवि दाग़, जो सन् 1857 में कुल छब्बीस बरस के नौजवान थे और जिन्होंने दिल्ली का बनाव-सिंगार देखा था, और जिनके देखते-देखते दिल्ली एक उजड़ा दयार बना दी गई, दर्द से भरकर कहते हैं :—

फ़लक ज़मीनो मलायक जनाब थी दिल्ली,
बहिश्तो ख़ुल्द में भी इन्तख़ाब थी दिल्ली !
जवाब काहे को था लाजवाब थी दिल्ली;
मगर ख़याल से देखा तो ख़्वाब थी दिल्ली !
ये शहर वो है कि हिन्दोस्तान का दिल था;
ये शहर वह है कि सारे जहान का दिल था!

मगर दिल्ली जब उजड़ा दयार बन गई तो दाग़ फ़रमाते हैं :—

ख़ुदापरस्ती के बदले जफ़ा परस्ती है;
जो मालेमस्त थे अब उनको फ़ाक़ेमस्ती है !
बजाय अब्रे करम मुफ़लिसी बरसती है;
बतंग जीने से हैं ऐसी तंगदस्ती है !

इस मुफ़लिसी के लिये फ़लक़ पर इल्ज़ाम मढ़ते हुये दाग़ फ़रमाते हैं :—

फ़लक़ ने क़हरो ग़ज़ब ताक-ताक कर डाला;
तमाम पर्दए नामूस चाक कर डाला !
यकायक एक जहाँ को हलाक कर डाला;
ग़रज़ कि लाख का घर उसने ख़ाक कर डाला !

इस सब कैफ़ियत के लिये सितमगर के ज़ुल्मो-सितम को हसरत के साथ बयान करते हुये दाग़ कहते हैं :—

खिलाया ज़हर सितमगर ने पान के बदले;
पिलाया ख़ूने जिगर पेचवान के बदले !
नसीब दार हुई है निशान के बदले;
मिला न गोर गढ़ा भी मकान के बदले !
ज़ुबाने तेग़ से पुरशिश है दादख़ाहों की;
रसन है, तौक़ है, गरदन है बेगुनाहों की !

دلی شہر کی ادبیات اور شاعرانہ محفل پر حسرت انڈیلتے ہوئے حالی کہتے ہیں :—

کبھی اے علم و ہنر گھر تھا تمہارا دلی؛
ہمکو بھولے ہو تو گھر بھول نہ جانا ہرگز !
شاعری مر چکی اب زندہ نہ ہوگی یارو؛
یاد کر کر کے اسے جی نہ کڑھانا ہرگز !
غالب و شیفتہ و نیر و آزردہ و ذوق؛
اب دکھائے گا یہ شکلیں نہ زمانہ ہرگز !
بزم ماتم تو نہیں بزم سخن ہے حالی؛
یاں مناسب نہیں رو رو کے رلانا ہرگز !

داغ اور 1867

مہا کوی داغ، جو سن 1867 میں کل چھبیس برس کے نوجوان تھے اور جنہوں نے دلی کا بناؤ سنگار دیکھا تھا، اور جن کے دیکھتے دیکھتے دلی ایک اجڑا دیار بنا دی گئی، درد سے بھر کر کہتے ہیں :—

فلک زمین ملائک جناب تھی دلی؛
بہشت و خلد میں بھی انتخاب تھی دلی !
جواب کاہے کو تھی لاجواب تھی دلی؛
مگر خیال سے دیکھا تو خواب تھی دلی !
یہ شہر وہ ہے کہ ہندوستان کا دل تھا؛
یہ شہر وہ ہے کہ سارے جہان کا دل تھا !

مگر دلی جب اجڑا دیار بن گئی تو داغ فرماتے ہیں :—

خداپرستی کے بدلے جفا پرستی ہے؛
جومال مست تھے اب انکو فاقہ مستی ہے !
بجائے ابرکرم مفلسی برستی ہے؛
بتنگ جینے سے ہیں ایسی تنگدستی ہے !

اِس مفلسی کے لئے فلک پر الزام مڑھتے ہوئے داغ فرماتے ہیں :—

فلک نے قہر و غضب تاک تاک کر ڈالا؛
تمام پردۂ ناموس چاک کر ڈالا !
یکایک ایک جہاں کو ہلاک کر ڈالا؛
غرض کہ لاکھ کا گھر اس نے خاک کر ڈالا !

اِس سب کیفیت کے لئے ستمگر کے ظلم و ستم کو حسرت کے ساتھ بیان کرتے ہوئے داغ کہتے ہیں :—

کھلایا زہر ستمگر نے پان کے بدلے؛
پلایا خون جگر پیچوان کے بدلے !
نصیب دار ہوئی ہے نشان کے بدلے؛
ملا نہ گور گڑھا بھی مکان کے بدلے !
زبان تیغ سے پرشش ہے داد خواہوں کی؛
رسن ہے، طوق ہے، گردن ہے بےگناہوں کی !

चौक जिसको कहें वो मक़तल है;
सर बना है नमूना ज़िन्दाँ का!
शहर देहली का ज़र्रा ज़र्रा ख़ाक;
तिश्नए ख़ूँ है हर मुसलमाँ का!
कोई वाँ से न आ सके याँ तक;
आदमी वाँ न जा सके याँ का!
मैंने माना कि मिल गए फिर क्या;
वही रोना तनो दिलो जाँ का!
गाह जलकर किया किये शिकवा;
सोज़िशे दाग़हाय पिनहाँ का!
गाह रोकर कहा किये बाहम;
माजरा दीदहाए गिरियाँ का!

दिल्ली के क़त्ले आम पर हसरत का इज़हार करते हुये ग़ालिब ने लिखा है :—

एक अहले दर्द ने सुनसान जो देखा क़फ़स;
यूँ कहा आती नहीं क्यों अब सदाये अन्दलीब!
बालो पर दो चार दिखला कर कहा सय्याद ने;
ये निशानी रह गई है अब बजाये अन्दलीब!

हाली और 1857

ग़ालिब के शागिर्द मौलाना अल्ताफ़ हुसेन हाली, जो पहले 'शैफ़्ता' की शागिर्दी में थे और 1857 में 21 बरस के थे, दिल्ली को मरहूम या स्वर्गीय का ख़िताब देकर शायरों से कहते हैं :—

जितने रमने थे तेरे हो गए वीराँ ऐ इश्क़;
आके वीरानों में अब घर न बसाना हरगिज़!
कूच सब कर गये दिल्ली से तेरे क़द्रशनास;
क़द्र याँ आके अब अपनी न गँवाना हरगिज़!
तज़किरा दिल्लिए मरहूम का ऐ दोस्त न छेड़;
न सुना जायगा हमसे ये फ़िसाना हरगिज़!
दास्ताँ गुल की ख़िज़ाँ में न सुनाए बुलबुल;
हँसते हँसते हमें ज़ालिम न रुलाना हरगिज़!

आबादियाँ गिराकर दिल्ली को वीराना बना दिया गया. कला और अदब की नायाब यादगारें धूल में मिला दी गईं. इस कैफ़ियत का चश्मदीद हाल बयान करते हुये हाली लिखते हैं:—

लेके दाग़ आएगा सीने पे बहुत ऐ सय्याद;
देख इस शहर के खँडहर में न जाना हरगिज़!
चप्पे चप्पे पे हैं याँ गौहरे यक्ता तहे ख़ाक;
दफ़्न होगा कहीं इतना न ख़ज़ाना हरगिज़!
वो तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूल गये;
ऐसा बदला है न बदलेगा ज़माना हरगिज़!
जिसको ज़ख़्मों के हवादिस से अछूता समझें;
नज़र आता नहीं कोई भी घराना हरगिज़!

چوک جس کو کہیں وہ مقتل ھے؛
سر بنا ھے نمونہ زنداں کا!
شہر دھلی کا ذرہ ذرہ خاک؛
تشنۂ خوں ھے ہر مسلماں کا!
کوئی واں سے نہ آسکے یاں تک؛
آدمی واں نہ جا سکے یاں کا!
میں نے مانا کہ مل گئے پھر کیا؛
وھی رونا تن و دل و جاں کا!
گاہ جل کر کیا کیئے شکوہ؛
سوزش داغہائے پنہاں کا!
گاہ روکر کہا کئے باہم؛
ماجرا دیدھائے گریاں کا!

لی کے قتل عام پر حسرت کا اظہار کرتے ہوئے غالب نے لکھا

ایک اہل درد نے سنسان جو دیکھا قفس؛
یوں کہا آتی نہیں کیوں اب صدائے عندلیب!
بال و پر دو چار دکھلا کر کہا صیاد نے؛
یہ نشانی رہ گئی ھے اب بجائے عندلیب!

اور 1857

الب کے شاگرد مولانا الطاف حسین حالی، جو پہلے 'شیفتہ' گردی میں تھے اور 1857 میں 21 برس کے تھے، دلی کو یا مرحومہ کا خطاب دے کر شاعروں سے کہتے ھیں :—

جتنے رمنے تھے ترے ہو گئے ویراں اے عشق؛
آ کے ویرانوں میں اب گھر نہ بسانا ہرگز!
کوچ سب کرگئے دلی سے ترے قدرشناس؛
قدر یاں آکے اب اپنی نہ گنوانا ہرگز!
تذکرہ دلئی مرحوم کا اے دوست نہ چھیڑ؛
نہ سنا جائے گا ہم سے یہ فسانہ ہرگز!
داستاں گل کی خزاں میں نہ سنائے بلبل؛
ہنستے ہنستے ہمیں ظالم نہ رلانا ہرگز!

بادیاں گرا کر دلی کو ویرانہ بنا دیا گیا. کلا اور ادب کی یادگاریں دھول میں ملا دی گئیں. اس کیفیت کا چشم ال بیان کرتے ہوئے حالی لکھتے ھیں :—

لے کے داغ آئیگا سینے پہ بہت اے صیاد؛
دیکھ اس شہر کے کھنڈر میں نہ جانا ہرگز!
چپہ چپہ پہ ھیں یاں گوہر یکتا تہ خاک؛
دفن ہوگا کہیں اتنا نہ خزانہ ہرگز!
وہ تو بھولے تھے ہمیں ہم بھی انہیں بھول گئے؛
ایسا بدلا ھے نہ بدلے گا زمانہ ہرگز!
جسکو زخموں کے حوادث سے اچھوتا سمجھیں؛
نظر آتا نہیں کوئی بھی گھرانا ہرگز!

भी नहीं था. उन्होंने बड़ी हसरत के साथ अपने दाहिने हाथ की हथेली को देखकर कहा :—

फूल लाया है माली डाली में;
कुछ लकीरें हैं दस्ते ख़ाली में !

अपने महान मुग़ल पूर्वजों के बड़प्पन का अहसास बहादुरशाह के दिल में था. वह अपने को मुग़ल सल्तनत की एक टूटी हुई क़ब्र की तरह मानते थे. इस ख़याल को ज़ाहिर करते हुये ज़फ़र ने लिखा है :—

वो जो टूटी क़ब्र का था निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया !

एक जगह दिल्ली की आज़ादी और बरबादी का चित्र खींचते हुये उन्होंने लिखा है :—

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसू ने जला दिया;
उसे आह दामने बाद ने सरे शाम से ही बुझा दिया !

कितनी हसरत है इस कलाम में ! 1857 के वाक़यात पर बहादुरशाह की नज़्मों से काफ़ी रोशनी पड़ती है. अपने पुरदर्द हक़ीक़ते हाल के बारे में वे ख़ुद कहते हैं :—

न पूछ मुझसे 'ज़फ़र' मेरी तू हक़ीक़ते हाल;
अगर कहूँगा अभी तुझको मैं रुला दूँगा !

लेकिन दिल के दर्द से कोई यह न समझे कि उनमें बहादुरी की कमी हो गई थी. वे दुश्मन की संगदिली के मुताल्लिक़ कहते हैं :—

बेवफ़ा तुझसे शिकायत है सितम की बेजा;
कीजिये उससे जो आगाह वफ़ा से कुछ हो !
सर रहे या न रहे जान बचे या न बचे;
मुँह न मोड़ेंगे तेरी तेग़े जफ़ा से कुछ हो !

सन् 1857 में दिल्ली की जो कैफ़ियत थी उस पर शहन्शाह के कुछ शेर ये हैं :—

आज देहली में जो उसकी अजब सैर हो गई;
तलवार चलते चलते रही ख़ैर हो गई !
काबा के सिम्त हमने किया मुँह पए नमाज़;
बरगश्ता नीअत अपनी सूए दैर हो गई !
बेगानगी का दिल के गिला क्या है इश्क़ में;
जब जान भी न अपनी रही ग़ैर हो गई !
आशिक़ को जब दिखाई फ़िरंगी पिसर ने तोप;
पाया न कुछ वो कहने कि बस फ़ैर हो गई !
ज़ंजीर कट गई मेरी वहशत से क्या 'ज़फ़र';
जल्दी अलग वो चूम के जो पैर हो गई !

ग़ालिब और 1857

दिल्ली में ख़ास तौर पर मुसलमानों के ऊपर जो ज़ुल्म ढाये गये उसका ज़िक्र अब शायरों के सरताज ग़ालिब से सुनें, जो सन् 1857 में पूरे साठ बरस के थे :—

بھی نہیں تھا ۔ اُنھوں نے بڑی حسرت کے ساتھ اپنے داہنے ہاتھ کی ہتھیلی کو دیکھ کر کہا :—

پھول لایا ہے مالی ڈالی میں؛
کچھ لکیریں ہیں دست خالی میں !

اپنے مہان مغل پوروجوں کے بڑپن کا احساس بہادر شاہ کے دل میں تھا ۔ وہ اپنے کو مغل سلطنت کی ایک ٹوٹی ہوئی قبر کی طرح مانتے تھے ۔ اِس خیال کو ظاہر کرتے ہوئے ظفر نے لکھا ہے :—

وہ جو ٹوٹی قبر کا تھا نشاں اُسے ٹھوکروں سے مٹا دیا !

ایک جگہ دلی کی آزادی اور بربادی چتر کا کھینچتے ہوئے اُنھوں نے لکھا ہے :—

پس مرگ میرے مزار پر جو دیا کسو نے جلا دیا؛
اُسے آہ دامن باد نے سر شام ہی سے بجھا دیا !

کتنی حسرت ہے اُس کلام میں ! 1857 کے واقعات پر بہادرشاہ کی نظموں سے کافی روشنی پڑتی ہے۔ اپنے پردرد حقیقت حال کے بارے میں وے خود کہتے ہیں :—

نہ پوچھ مجھسے 'ظفر' میری تو حقیقت حال؛
اگر کہونگا ابھی تجھ کو میں رلادوں گا !

لیکن دل کے درد سے کوئی یہ نہ سمجھے کہ اُن میں بہادری کی کمی ہو گئی تھی ۔ وے دشمن کی سنگدلی کے متعلق کہتے ہیں :—

بےوفا تجھسے شکایت ہے ستم کی بےجا؛
کیجئے اُس سے جو آگاہ وفا سے کچھ ہو !
سر رہے یا نہ رہے جان بچے یا نہ بچے؛
منھ نہ موڑینگے تری تیغ جفا سے کچھ ہو !

سن 1857 میں دلی کی جو کیفیت تھی اُس پر شہنشاہ کے کچھ شعر یہ ہیں :—

آج دهلی میں جو اُس کی عجب سیر ہوگئی؛
تلوار چلتے چلتے رہی خیر ہو گئی !
کعبہ کے سمت ہم نے کیا منھ پئے نماز؛
برگشتہ نیت اپنی سوئے دیر ہو گئی !
بیگانگی کا دل کے گلہ کیا ہے عشق میں؛
جب جان بھی نہ اپنی رہی غیر ہو گئی !
عاشق کو جب دکھائی فرنگی پسر نے توپ؛
پایا نہ کچھ وہ کہنے کہ بس فیر ہو گئی !
زنجیر کٹ گئی میری وحشت سے کیا 'ظفر'؛
جلدی الگ وہ چوم کے جو پیر ہو گئی !

غالب اور 1857

دلی میں خاص طور پر مسلمانوں کے اوپر جو ظلم ڈھائے گئے اُن کا ذکر اب شاعروں کے سرتاج غالب سے سنیں' جو سن 1857 میں پورے ساٹھ برس کے تھے :—

कफ़स में है क्या फ़ायदा शोरो ग़ुल से;
असीरो करो कुछ रिहाई की बातें!
'ज़फ़र' अब ज़माना बुरा आ गया है;
जिधर देखा हैं वाँ बुराई की बातें!

फ़ौज के कमानदारों ने जब एक दूसरे पर तोहमतें मढ़नी शुरू कीं तो उन्हें नसीहत देते हुये शहन्शाह ने कहा :—

न थी हाल की जब हमें अपने ख़बर;
रहे देखते औरों के ऐबो हुनर!
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र;
तो निगाह में कोई बुरा न रहा!
'ज़फ़र' आदमी उसको न जानियेगा;
वह हो कैसा ही साहिबे फ़हमो ज़का;
जिसे ऐश में यादे ख़ुदा न रही
जिसे तैश में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा!

14 सितम्बर 1857 के बाद दिल्ली की जनता पर इतने सितम ढाये गये कि बहादुरशाह का कवि हृदय भी ग़म से चाक चाक हो गया. मुसलमानों को तो ख़ास तौर पर खोज खोजकर सूली पर लटकाया जाता. एक नज़्म में शहन्शाह ने उसे यूँ बयान किया है :—

गई यकबयक जो हवा पलट, नहिं दिल को अपने क़रार है;
करूँ ग़म सितम का मैं क्या बया, मेरा सीना ग़म से फ़िगार है.
ये रियाया हिन्द तबाह हुई, कहो क्या न इनपे जफ़ा हुई;
जिसे देखा हाकिमे वक़्त ने, कहा ये भी क़ाबिले दार है!
कहीं ऐसा भी है सितम सुना, कि दी फाँसी लाखों को बेगुनाह,
बले कलमा गोयों के तर्फ़ से, अभी दिल में उनके ग़ुबार है!

जंगे आज़ादी के सबसे बड़े नेता की हैसियत से शहन्शाह बहादुरशाह को आज़ादी की सबसे भारी क़ीमत चुकानी पड़ी. शहन्शाह के 24 बेटे और पोते क़त्ल कर दिये गये और उनके सर ख़ूनी दरवाज़े पर लटका दिये गये. उन सब दर्दनाक घटनाओं पर अपने दिल की कैफ़ियत शहन्शाह ने यूँ बयान किया है :—

रिन्द हूँ मैं या ज़ाहिद हूँ, या सूफ़ी हूँ या मैकश हूँ;
आलिम हूँ या जाहिल हूँ, या मोमिन हूँ या तरसा हूँ!
कैसा रंज व कैसी राहत, किसकी शादी किसका ग़म;
ये भी नहीं मालूम मुझे, मैं जीता हूँ या मरता हूँ!

शहन्शाह बहादुरशाह, उनकी चहेती बेगम ज़ीनत महल और युवराज जवाँबख़्त को क़ैद करके रंगून भेज दिया गया. वहाँ बेहद ग़रीबी में शहन्शाह को अपने आख़री दिन काटने पड़े. रंगून में उनकी 83वीं सालगिरह के दिन एक माली तोहफ़े के तौर पर फूलों की डाली सजा कर लाया, शहन्शाह के पास इनाम देने के लिये कुछ

قفس میں ہے کیا فائدہ شور و غل سے؛
اسیرو کرو کچھ رہائی کی باتیں!
'ظفر' اب زمانہ برا آگیا ہے؛
جدھر دیکھو ہیں واں برائی کی باتیں!

فوج کے کمانداروں نے جب ایک دوسرے پر تہمتیں مڑھنی شروع کیں تو انھیں نصیحت دیتے ہوئے شہنشاہ نے کہا :—

نہ تھی حال کی جب ہمیں اپنے خبر؛
رہے دیکھتے اوروں کے عیب و ہنر!
پڑی اپنی برائیوں پہ جو نظر؛
تو نگاہ میں کوئی برا نہ رہا!
'ظفر' آدمی اس کو نہ جانیے گا؛
وہ کیسا ہی ہو صاحب فہم و ذکا!
جسے عیش میں یاد خدا نہ رہی؛
جسے طیش میں خوف خدا نہ رہا!

14 ستمبر 1857 کے بعد دلی کی جنتا پر اتنے ستم ڈھائے گئے کہ بہادر شاہ کا کوی ہردئے بھی غم سے چاک چاک ہو گیا۔ مسلمانوں کو تو خاص طور پر کھوج کھوج کر سولی پر لٹکایا جاتا۔ ایک نظم میں شہنشاہ نے اسے یوں بیان کیا ہے :—

گئی یک بیک جو ہوا پلٹ، نہیں دل کو اپنے قرار ہے؛
کروں غم ستم کا میں کیا بیاں، میرا سینہ غم سے فگار ہے!
یہ رعایا ہند تباہ ہوئی، کہو کیا نہ ان پہ جفا ہوئی؛
جسے دیکھا حاکم وقت نے، کہا یہ بھی قابل دار ہے!
کہیں ایسا بھی ہے ستم سنا، کہ دی پھانسی لاکھوں کو بےگناہ
ولے کلمہ گویوں کے طرف سے، ابھی دل میں اُن کے غبار ہے!

جنگ آزادی کے سب سے بڑے نیتا کی حیثیت سے شہنشاہ بہادرشاہ کو سب سے بھاری آزادی کی قیمت چکانی پڑی۔ شہنشاہ کے 24 بیٹے اور پوتے قتل کر دیئے گئے اور اُن کے سر خونی دروازے پر لٹکا دیئے گئے۔ اُن سب دردناک گھٹناؤں پر اپنے دل کی کیفیت شہنشاہ نے یوں بیان کیا ہے :—

رند ہوں میں یا زاہد ہوں، یا صوفی ہوں یا میکش ہوں؛
عالم ہوں یا جاہل ہوں، یا مومن ہوں یا ترسا ہوں!
کیسا رنج و کیسی راحت، کس کی شادی کس کا غم؛
یہ بھی نہیں معلوم مجھے، میں جیتا ہوں یا مرتا ہوں!

شہنشاہ بہادرشاہ، ان کی چہیتی بیگم زینت محل اور یوراج جواں بخت کو قید کر کے رنگون بھیج دیا گیا۔ وہاں بےحد غریبی میں شہنشاہ کو اپنے آخری دن کاٹنے پڑے۔ رنگون میں اُن کی 83 ویں سالگرہ کے دن ایک مالی تحفہ کے طور پر پھولوں کی ڈالی سجا کر لایا۔ شہنشاہ کے پاس انعام دینے کے لئے کچھ

नज्मों और छन्दों में सन अठारह सौ सत्तावन

क्या क्या करे है आशिक़े नाकाम पर सितम;
ख़ौफ़े ख़ुदा कुछ उस बुते ख़ुदकाम को नहीं!
रिन्दों पे तानाज़न है अबस वाइज़ ऐ 'ज़फ़र';
कोई किसी के जानता अंजाम को नहीं!

जंगे आज़ादी में शामिल होने के लिये जब शहन्शाह ज़फ़र ने अपना दावतनामा देशी राजाओं के पास भेजा तो बीकानेर के राजा ने उसे बिना पढ़े ही फाड़ दिया. इस पर शहन्शाह ने लिखा :—

किया ख़त टुकड़े-टुकड़े तुमने तो क़ासिद से लेते ही;
मुनासिब था कि पढ़वाकर हक़ीक़त यक क़लम सुनते!

झींद के राजा ने तो शहन्शाह का ख़त लेजाने वाले क़ासिद को ही गोली से उड़ा दिया. इसपर ज़फ़र का एक शेर है :—

ढूँढा निशाँ जो हमने .क़ासिद का उस शहर में;
कुछ पाये सर के टुकड़े और कुछ बदन के टुकड़े!

अंगरेज़ी .फ़ौजों ने दिल्ली के क़िले का मोहासरा जारी कर दिया था. बक़रीद के त्यौहार के दिन जामा मसजिद में मुअज़्ज़िज़ शहरियों की .क़ुर्बानी की गई. इसपर शहन्शाह ने लिखा :—

मुबारकबाद हम देते हैं उनको ईदे .क़ुर्बां की;
गले पे रखके ख़ंजर जबकि वह तकबीर पढ़ते हैं!

अपने प्यारे पोते के .क़त्ल पर शहन्शाह ने हसरत के साथ लिखा :—

एक वो क्या बल्कि उस से रोज़ लाखों बेगुनाह;
.क़त्ल होते हैं तेरे ऐ अरबिदा जो हाथ से!
यह नहीं रंगे हिना छुट जाय जो दो रोज़ में;
हश्र तक छूटेगा आशिक़ का न लोहू हाथ से!

दिल्ली के पतन के बाद बेगुनाहों के .क़त्ल का जो सिलसिला चला उसपर शहन्शाह ज़फ़र ने लिखा :—

जहाँ में सबको इबरत हो गई उस दिन से ऐ क़ातिल;
सरे बाज़ार तूने लाशाऐ मक़तूल खींचा है!
हज़ारों बेगुनाहों को सितमगर इश्क़ में तूने;
यहाँ सूली पे बेदस्तूर, बेमामूल खींचा है!

दिल्ली में आज़ादी की जंग चलाने के लिये एक जंगी कौंसिल बना दी गई थी जिसके सदर ख़ुद शहन्शाह थे. कौंसिल के मेम्बरान आपस में एक दूसरे की बुराई करते और एक दूसरे की टाँगें घसीटते. इसपर उन्हें लानत-मलामत करते हुये शहन्शाह ने लिखा :—

नहीं तुमको ज़ेबा बुराई की बातें;
भलों को हैं लाज़िम भलाई की बातें!
ग़ज़ब है कि दिल में तो रक्खो कुदूरत;
करो मुंह पे हमसे सफ़ाई की बातें!

نظموں اور چھندوں میں سن اٹھارہ سو ستاون

کیا کیا کرے ہے عاشق ناکام پر ستم؛
خوف خدا کچھ اس بت خودکام کو نہیں!
رندوں پہ طعنہ زن ہے عبث واعظ اے 'ظفر'؛
کوئی کسی کے جانتا انجام کو نہیں!

جنگ آزادی میں شامل ہونے کے لئے جب شہنشاہ ظفر نے اپنا دعوت نامہ دیشی راجاؤں کے پاس بھیجا تو بیکانیر کے راجہ نے اسے بنا پڑھے ہی پھاڑ دیا. اس پر شہنشاہ نے لکھا :—

کیا خط ٹکڑے ٹکڑے تم نے تو قاصد سے لیتے ہی؛
مناسب تھا کہ پڑھواکر حقیقت یک قلم سنتے!

جھیند کے راجہ نے تو شہنشاہ کا خط لے جانےوالے قاصد کو ہی گولی سے اڑا دیا. اس پر ظفر کا ایک شعر ہے :—

ڈھونڈا نشاں جو ہم نے قاصد کا اس شہر میں؛
کچھ پائے سر کے ٹکڑے اور کچھ بدن کے ٹکڑے!

انگریزی فوجوں نے دلی کے قلعے کا محاصرہ جاری کر دیا تھا. بقرعید کے تہوار کے دن جامع مسجد میں معزز شہریوں کی قربانی کی گئی. اس پر شہنشاہ نے لکھا :—

مبارکباد ہم دیتے ہیں ان کو عید قرباں کی؛
گلے پر رکھ کے خنجر جبکہ وہ تکبیر پڑھتے ہیں!

اپنے پیارے پوتے کے قتل پر شہنشاہ نے حسرت کے ساتھ لکھا :—

ایک وہ کیا بلکہ اس سے روز لاکھوں بےگناہ؛
قتل ہوتے ہیں تیرے اے اربدا جو ہاتھ سے!
یہ نہیں رنگ حنا چھٹ جائے جو دو روز میں؛
حشر تک چھوٹے گا عاشق کا نہ لوہو ہاتھ سے!

دلی کے پتن کے بعد بےگناہوں کے قتل کا جو سلسلہ چلا اس پر شہنشاہ ظفر نے لکھا :—

جہاں میں سب کو عبرت ہوگئی اس دن سے اے قاتل؛
سرے بازار تونے لاشۂ مقتول کھینچا ہے!
ہزاروں بےگناہوں کو ستمگر عشق میں تونے؛
یہاں سولی پہ بےدستور، بےمعمول کھینچا ہے!

دلی میں آزادی کی جنگ چلانے کے لئے ایک جنگی کونسل بنا دی گئی تھی جس کے صدر خود شہنشاہ تھے. کونسل کے ممبران آپس میں ایک دوسرے کی برائی کرتے اور ایک دوسرے کی ٹانگیں گھسیٹتے. اس پر انہیں لعنت ملامت کرتے ہوئے شہنشاہ نے لکھا :—

نہیں تمکو زیبا برائی کی باتیں؛
بھلوں کو ہیں لازم بھلائی کی باتیں!
غضب ہے کہ دل میں تو رکھو کدورت؛
کرو منہ پہ ہم سے صفائی کی باتیں!

को एक दरजे तक घटा दिया था. गवर्नर जनरल कैनिंग उस रही सही शान को भी खत्म करने की साज़िशों में लगा हुआ था. दिल्ली के इर्द-गिर्द के शासन में भी बहादुरशाह की कोई राय न ली जाती थी. यहाँ तक कि क़िले के बाहर क़िले के सैनिकों के लिये बहादुरशाह को, जिसे नक़्शे के मुताबिक नई बैरकें तामीर करना पसन्द था, अंगरेज रेज़ीडेन्ट ने उन्हें उस तरह तामीर न करने दिया. बहादुरशाह से कौन किस वक़्त मुलाक़ात करे इसमें भी रेज़ीडेन्ट दख़ल देने की जुरअत करता था. अपनी उस वक़्त की दिली कैफ़ियत को बहादुरशाह ने एक नज़्म में यूँ बयान किया है :—

दिया बनाने न मुझको मकाँ मकाँ के क़रीब;
बसाये लोग उन्होंने जहाँ तहाँ के क़रीब!
निकलते हर दहने मू से हैं इस क़दर शोले;
फटकता कोई नहीं तेरे तुफ़्ता जाँ के क़रीब!
फ़लक के नीचे फ़लक और इक नया बन जाए;
जो पहुँचे दूदे जिगर मेरा आसमाँ के क़रीब!
कहे है तू कि फटकता नहीं यहाँ कोई;
खड़ा था कौन तेरे आज आस्ताँ के क़रीब!
वो हूँ मैं तायरे आतिश नफ़स कि थर्राये;
जो आये बर्क़ कभी मेरे आशियाँ के क़रीब!
क़फ़स से छूटके जब हम असीर ऐ सय्याद;
चमन में पहुँचे तो दिन आ गए ख़िज़ाँ के क़रीब!

जिस समय नाना धुन्धपन्त और अज़ीमुल्लाख़ाँ ने शहन्शाह से आज़ादी की जंग में शिरकत करने के लिये कहा तो बहादुरशाह ने अपनी रज़ामन्दी नीचे लिखी नज़्म में ज़ाहिर की :—

जाँ फ़िदा करने को हाज़िर हैं कहो तुम जिस दम;
हम हैं जिस काम के, मौजूद हैं उस काम से वक़्त!
गरचे रिंदाने तहीदस्त हैं मानिन्द गदा;
वक़्त के अपने हैं जमशेद मगर जाम के वक़्त!

इस बीच गवर्नर जनरल के रवइये और रेज़ीडेन्ट के बर्ताव से बहादुरशाह का दिल, फ़िरंगियों की तरफ़, रहा-सहा भी टूट गया. अपनी उस भावना को बहादुरशाह ने इन सतरों में अदा किया है :—

कहें क्या इन बुतों से ऐ 'ज़फ़र' हम हालेदिल अपना;
ये काफ़िर हैं नहीं इक बात अल्ला की क़सम सुनते!
न करता नूह के तूफ़ाँ का कोई ज़िक्र भी हरगिज़,
अगर मरदुम हमारा माजराए चश्मे नम सुनते!
न लेते नाम उल्फ़त का कभी उल्फ़त के जाइन्दे;
जो मेरा सब्र सुनते औ' तेरे ज़ुल्मो सितम सुनते!

बहादुरशाह का दिल ज़िल्लत से तड़प उठा. शहन्शाह की दिली कैफ़ियत इन शेरों में ग़ौर करें :—

کو ایک درجہ تک گھٹا دیا تھا ۔ گورنر جنرل کیننگ اُس رہی سہی شان کو بھی ختم کرنے کی سازشوں میں لگا ہوا تھا۔ دلی کے اِرد گرد کے شاسن میں بھی بہادر شاہ کی کوئی رائے نہ لی جاتی تھی ۔ یہاں تک کہ قلعے کے باہر قلعے کے سپاہیوں کے لئے بہادر شاہ کو، جسے نقشہ کے مطابق نئی بیرکیں تعمیر کرنا پسند تھا، انگریز ریذیڈینٹ نے انہیں اُس طرح تعمیر نہ کرنے دیا ۔ بہادر شاہ سے کون کس وقت ملاقات کرے اُس میں بھی ریذیڈینٹ دخل دینے کی جرات کرتا تھا ۔ اپنی اُس وقت کی دلی کیفیت کو بہادرشاہ نے ایک نظم میں یوں بیان کیا ہے :—

دیا بنانے نہ مجھکو مکاں مکاں کے قریب،
بسائے لوگ اُنھوں نے جہاں تہاں کے قریب!
نکلتے ہر دہن مو سے ہیں اِس قدر شعلے،
پھٹکتا کوئی نہیں تیرے تفتہ جاں کے قریب!
فلک کے نیچے فلک اور اک نیا بن جائے،
جو پہنچے دود جگر میرا آسماں کے قریب!
کہے ہے تو کہ پھٹکتا نہیں یہاں کوئی؛
کھڑا تھا کون ترے آج آستاں کے قریب!
وہ ہوں میں طائر آتش نفس کہ تھرائے؛
جو آئے برق کبھی میرے آشیاں کے قریب!
قفس سے چھوٹ کے جب ہم اسیر اے صیاد؛
چمن میں پہنچے تو دن آگئے خزاں کے قریب!

جس سمئے نانا دھندپنت اور عظیم اللہ خاں نے شہنشاہ سے آزادی کی جنگ میں شرکت کرنے کے لئے کہا تو بہادر شاہ نے اپنی رضامندی نیچے لکھی نظم میں ظاہر کی :—

جاں فدا کرنے کو حاضر ہیں کہو تم جس دم؛
ہم ہیں جس کام کے، موجود ہیں اُس کام کے وقت!
گرچہ رندان تہی دست ہیں مانند گدا؛
وقت کے اپنے ہیں جمشید مگر جام کے وقت!

اِس بیچ گورنر جنرل کے رویئے اور ریذیڈینٹ کے برتاؤ سے بہادر شاہ کا دل، فرنگیوں کی طرف، رہا سہا بھی ٹوٹ گیا ۔ اپنی اُس بھاؤنا کو بہادر شاہ نے اِن سطروں میں ادا کیا ہے :—

کہیں کیا اِن بتوں سے اے 'ظفر' ہم حال دل اپنا؛
یہ کافر ہیں نہیں اک بات اللہ کی قسم سنتے!
نہ کرتا نوح کے طوفاں کا کوئی ذکر بھی ہرگز؛
اگر مردم ہمارا ماجرائے چشم نم سنتے!
نہ لیتے نام الفت کا کبھی الفت کے جوئندے؛
جو میرا صبر سنتے او ترے ظلم و ستم سنتے!

بہادر شاہ کا دل ذلت سے تڑپ اُٹھا، شہنشاہ کی دلی کیفیت اِن شعروں میں غور کریں :—

नज़्मों और छन्दों में
सन् अठारहसौ सत्तावन

विश्वम्भरनाथ पांडे

सन् 1857 की तारीख़ को किस नाम से पुकारा जाय— इस पर इतिहास लिखने वालों की राय में काफ़ी मतभेद है. कोई उसे 'बग़ावत' के नाम से पुकारता है तो कोई 'जंगे आज़ादी' के नाम से; लेकिन इससे किसी को इनकार नहीं कि फ़िरंगी हुकूमत को मुल्क से ख़त्म करने की वह एक शानदार कोशिश थी. सरकारी ख़रीतों, फ़ौजी अफ़सरों की चिट्ठियों, इतिहासकारों की किताबों, सैलानियों, के रोज़नामचों, कम्पनी के देशी अफ़सरों की याददाश्तों, गवरनर जनरल के ऐलानों, पार्लिमेन्ट की बहसों, नेताओं के इश्तहारों और शाही फ़रमानों में हमें 1857 की एक सरसरी झाँकी मिलती है. सन् 1857 की क्रान्तिकारी तहरीक मुल्क की ख़ुद्दारी की भावनाओं, रूहानी तड़पनों, उम्मीदों और मायूसियों, कामयाबियों और नकामयाबियों, हारों और जीतों पर तेज़ रोशनी डालती है. मुल्क की हैसियत से हमारी ख़ूबियों और हमारी कमज़ोरियों को भी सन् 57 की तहरीक नुमायाँ कर देती है. इतिहासकारों की तरह उस ज़माने के हमारे शायरों और गाँव के कवियों ने भी हमारी आज़ादी और हमारी बरबादी की, हमारी उमंगों और हमारी बिपता की पुरजोश और पुरदर्द तसवीर खींची है.

उन्नीसवीं सदी उर्दू के मशहूर शायरों की माँ कही जाती है. दिल्ली के आख़री बादशाह बहादुरशाह ख़ुद एक ऊँचे दरजे के शायर थे. वे 'ज़फ़र' के नाम से शायरी करते थे. 'ज़ौक़' 'ग़ालिब', 'दाग़', 'हाली'—सब मुग़ल दरबार के मशहूर शायर थे. इनमें ज़ौक़ का इन्तक़ाल तो 1857 के पहले हो गया था लेकिन ग़ालिब, दाग़ और हाली 1857 में मौजूद थे. 1857 पर इनकी पुरदर्द नज़्में हमें अब तक मिलती हैं. दिल्ली की तरह हिन्दू राजाओं के दरबार भी कवियों को खुले दिल से बढ़ावा देते थे. इन कवियों ने 1857 के नेताओं की कीर्ति-कहानी अपने पुरजोश छन्दों में बयान की है. आइये स्वाधीनता-संग्राम की शताब्दी के मौक़े पर हम अपने उस ज़माने के शायरों और कवियों के कलामों और छन्दों में बलिदान और त्याग के उस अद्भुत नज़ारे के दर्शन करें.

1857 के वाक़यात पर ख़ुद बहादुरशाह 'ज़फ़र' के कलामों से काफ़ी रोशनी पड़ती है. बेंटिङ्क और डलहौज़ी के रवइये ने मुग़ल शहन्शाह के मान और दरबार की शान

نظموں اور چھندوں میں
سن اٹھارہ سو ستاون

وشومبھر ناتھ پانڈے

سن 1857 کی تاریخ کو کس نام سے پکارا جائے— اِس پر اِتہاس لکھنے والوں کی رائے میں کافی مت بھید ہے . کوئی اُسے 'بغاوت' کے نام سے پکارتا ہے تو کوئی 'جنگ آزادی' کے نام سے ؛ لیکن اُس سے کسی کو انکار نہیں کہ فرنگی حکومت کو ملک سے ختم کرنے کی وہ ایک شاندار کوشش تھی . سرکاری خریطوں' فوجی افسروں کی چٹھیوں' اِتہاسکاروں کی کتابوں' سیلانیوں کے روزنامچوں' کمپنی کے دیشی افسروں کی یادداشتوں' گورنر جنرل کے اعلانوں' پارلیمنٹ کی بحثوں' نیتاؤں کے اعلانوں اور شاہی فرمانوں میں ہمیں 1857 کی ایک سرسری جھانکی ملتی ہے . سن 1857 کی کرانتکاری تحریک ملک کی خودداری کی بھاؤناؤں' روحانی تڑپنوں' امیدوں اور مایوسیوں' کامیابیوں اور ناکامیابیوں' ہاروں اور جیتوں پر تیز روشنی ڈالتی ہے . ملک کی حیثیت سے ہماری خوبیوں اور ہماری کمزوریوں کو بھی سن 57 کی تحریک نمایاں کر دیتی ہے. اتہاسکاروں کی طرح اُس زمانے کے ہمارے شاعروں اور گاؤں کے کویوں نے بھی ہماری آزادی اور ہماری بربادی کی' ہماری اُمنگوں اور ہماری بپتا کی پرجوش اور پر درد تصویر کھینچی ہے .

اُنیسویں صدی اُردو کے مشہور شاعروں کی ماں کہی جاتی ہے . دلی کے آخری بادشاہ بہادر شاہ خود ایک اُونچے درجے کے شاعر تھے' وے 'ظفر' کے نام سے شاعری کرتے تھے . 'ذوق' 'غالب' 'داغ' 'حالی'—سب مغل دربار کے مشہور شاعر تھے . اُن میں ذوق کا انتقال تو 1857 کے پہلے ہو گیا تھا لیکن غالب' داغ اور حالی 1857 میں موجود تھے. 1857 پر اُن کی پر درد نظمیں ہمیں اب تک ملتی ہیں . دلی کی طرح ہندو راجاؤں کے دربار بھی کویوں کو کھلے دل سے بڑھاوا دیتے تھے . اِن کویوں نے 1857 کے نیتاؤں کی کیرتی کہانی اپنے پر جوش چھندوں میں بیان کی ہے . آئیے سوادھینتا سنگرام کی شتابدی کے موقع پر ہم اپنے اُس زمانے کے شاعروں اور کویوں کے کلاموں اور چھندوں میں بلیدان اور تیاگ کے اُس ادبھت نظارے کے درشن کریں .

1857 کے واقعات پر خود بہادر شاہ 'ظفر' کے کلاموں سے کافی روشنی پڑتی ہے . بینٹنک اور ڈلہوزی کے رویہ نے مغل شہنشاہ کے نام اور دربار کی شان

जुलाई 1957 جولائی

जिल्द 24 جلد नम्बर 1 نمبر

जुलाई 1957 جولائی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

नज़्मों और छन्दों में सन् अठारह सौ सत्तावन — نظموں اور چھندوں میں سن اٹھارہ سو ستاون

—विश्वम्भरनाथ पांडे — وشومبھر ناتھ پانڈے—

मेरे दादा अब्बा ! — میرے دادا ابا !

—प्रोफ़ेसर अहमद अली एम० ए० — پروفیسر احمد علی ایم۔اے۔—

आफ़ताबों के सिलसिले (कविता) — آفتابوں کے سلسلے (کویتا)

—श्री सलाम मछलीशहरी — شری سلام مچھلی شہری—

ख़ून का बदला (कहानी) — خون کا بدلہ ! (کہانی)

—मिरज़ा अज़ीमबेग चुग़ताई — مرزا عظیم بیگ چغتائی—

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد